यजुर्वेद

डा. रेखा व्यास
एम.ए. (संस्कृत), पी-एच.डी.

प्राक्कथन

सामान्यतया द्वितीय वेद के रूप में प्रसिद्ध यजुर्वेद की रचना ऋग्वेदीय ऋचाओं के मिश्रण से हुई मानी जाती है, क्योंकि ऋग्वेद के ६६३ मंत्र यथावत यजुर्वेद में भी प्राप्त होते हैं. फिर भी यह नहीं कहा जा सकता है कि दोनों एक ही ग्रंथ हैं. ऋग्वेद के मंत्र पद्यात्मक हैं, जबकि यजुर्वेद के गद्यात्मक—'गद्यात्मको यजुः '. साथ ही अनेक मंत्र ऋग्वेद से भिन्न भी हैं.

वस्तुतः यजुर्वेद एक पद्धति ग्रंथ है, जो पौरोहित्य प्रणाली में यज्ञ आदि कर्म संपन्न कराने के लिए संकलित हुआ था. इसीलिए आज भी विभिन्न संस्कारों एवं यज्ञीय कर्मों के अधिकांश मंत्र यजुर्वेद के ही होते हैं. यज्ञ आदि कर्मों से संबंधित होने के कारण यजुर्वेद अपेक्षाकृत अधिक जनप्रिय रहा है.

यूं तो यजुर्वेद की १०१ शाखाएं बताई जाती हैं, किंतु मुख्यतयाः दो शाखाएं ही अधिक प्रसिद्ध हैं—कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद. इन्हें क्रमशः तैत्तिरीय एवं वाजसनेयी संहिताएं भी कहा जाता है. इन में से तैत्तिरीय संहिता अपेक्षाकृत अधिक पुरानी मानी जाती है, वैसे दोनों में प्रायः एक ही सामग्री है. हां, उन के क्रम में कुछ अंतर है. शुक्ल यजुर्वेद अपेक्षाकृत अधिक क्रमबद्ध है. इस में कुछ ऐसे भी मंत्र हैं, जो कृष्ण यजुर्वेद में नहीं हैं.

यजुर्वेद दो संहिताओं में कब और कैसे विभाजित हो गया—यह तो प्रामाणिक रूप में उपलब्ध नहीं है, हां, इस संदर्भ में एक रोचक कथा अवश्य प्रचलित है—

> कहा जाता है कि वेदव्यास के शिष्य वैशंपायन के २७ शिष्य थे. उन में से सर्वाधिक मेधावी थे याज्ञवल्क्य. एक बार वैशंपायन ने किसी यज्ञ के लिए अपने सभी शिष्यों को आमंत्रित किया. उन में से कुछ शिष्य यज्ञ कर्म में पूर्णतया कुशल नहीं थे.
>
> अतः याज्ञवल्क्य ने उन अकुशल शिष्यों का साथ देने से मना कर दिया. इस से शिष्यों में आपसी विवाद उठ खड़ा हुआ. तब वैशंपायन ने याज्ञवल्क्य से अपनी सिखाई हुई विद्या वापस मांगी. याज्ञवल्क्य ने भी आवेश में तुरंत यजुर्वेद का वमन कर दिया. विद्या के कण कृष्ण वर्ण के रक्त से सने हुए थे.

यह देख कर दूसरे शिष्यों ने तीतर बन कर उन कणों को चुग लिया. इन शिष्यों द्वारा विकसित होने वाली यजुर्वेद की शाखा तैत्तिरीय संहिता कहलाई.

इस घटना के बाद याज्ञवल्क्य ने सूर्य की उपासना की और उन से पुनः यजुर्वेद प्राप्त किया. सूर्य ने वाज (अश्व) बन कर याज्ञवल्क्य को यजुर्वेद की शिक्षा दीक्षा दी थी, इसलिए यह शाखा वाजसनेयी कहलाई.

यह कहानी कितनी सच है और कितनी झूठ, यह बता पाना असंभव है. कुछ विद्वान् इसे कपोलकल्पित कहते हैं और कुछ मिथ. कुछ भी हो, इतना निश्चित है कि यजुर्वेद ज्ञान (वेद) की वह शाखा (भाग) है, जिस में यज्ञीय कर्मों का वर्चस्व है, जिस के बल पर धर्म के धंधेबाजों ने सदियों से जनसामान्य को बेवकूफ बना कर स्वार्थ साधे और आज भी यही हो रहा है.

आज जब देश में संस्कृत के ज्ञाताओं की संख्या नगण्य रह गई है, उन में भी वैदिक संस्कृत जानने वाले तो और भी कम हैं, तब यह आवश्यक हो गया है कि अन्य वेदों (वैदिक ग्रंथों) के साथसाथ यजुर्वेद का भी सरल हिंदी में अनुवाद प्रस्तुत किया जाए, ताकि साधारण पाठक भी समझ सकें कि यज्ञ, सामाजिक संस्कार आदि कर्मों की कथित महत्ता प्रतिपादित करने वाले इस वेद के मंत्रों का वास्तविक अर्थ और अभिप्राय क्या है?

चूंकि आरंभ से ही यजुर्वेद को यज्ञीय कर्मों से संबद्ध माना गया है, इसलिए प्रायः सभी प्राचीन आचार्यों ने इस के मंत्रों के अर्थ यज्ञीय कर्मों के संदर्भ में ही किए हैं. इन आचार्यों में उवट (१०४० ई.) और महीधर (१५८८ ई.) के भाष्य प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं, जिन्होंने शुक्ल यजुर्वेद पर भाष्य लिखे थे. वे भाष्य आज भी उपलब्ध और विभिन्न विद्वानों द्वारा स्वीकृत हैं. यहां तक कि आचार्य उवट का भाष्य देख कर ही आचार्य सायण ने भी यजुर्वेद के भाष्य पर अपनी कलम नहीं चलाई है.

अतः यजुर्वेद के प्रस्तुत अनुवाद में आचार्य उवट के अनुवाद को ही आधार बनाया गया है. इस में प्रायः उन्हीं अर्थों को अपनाया गया है, जो उवट को अभीष्ट थे. अनुवाद की भाषा सरल एवं सुबोध रखने का प्रयास किया गया है, ताकि साधारण पाठक भी विषय को आसानी से समझ सकें.

प्रकाशक

विषय सूची

पूर्वार्ध

पहला अध्याय	३१-३८
दूसरा अध्याय	३९-४५
तीसरा अध्याय	४६-५५
चौथा अध्याय	५६-६३
पांचवां अध्याय	६४-७३
छठा अध्याय	७४-८२
सातवां अध्याय	८३-९३
आठवां अध्याय	९४-१०६
नौवां अध्याय	१०७-११५
दसवां अध्याय	११६-१२४
ग्यारहवां अध्याय	१२५-१३९
बारहवां अध्याय	१४०-१५९
तेरहवां अध्याय	१६०-१७०
चौदहवां अध्याय	१७१-१८०
पंद्रहवां अध्याय	१८१-१९४
सोलहवां अध्याय	१९५-२०६
सत्रहवां अध्याय	२०७-२२३
अठारहवां अध्याय	२२४-२३८
उन्नीसवां अध्याय	२३९-२५४
बीसवां अध्याय	२५५-२६९

उत्तरार्ध

इक्कीसवां अध्याय	२७०-२८३
बाईसवां अध्याय	२८४-२९१
तेईसवां अध्याय	२९२-३०३
चौबीसवां अध्याय	३०४-३११
पच्चीसवां अध्याय	३१२-३२१
छब्बीसवां अध्याय	३२२-३२६
सत्ताईसवां अध्याय	३२७-३३३
अट्ठाईसवां अध्याय	३३४-३४३
उनतीसवां अध्याय	३४४-३५४
तीसवां अध्याय	३५५-३६०
इकतीसवां अध्याय	३६१-३६४
बत्तीसवां अध्याय	३६५-३६७
तैंतीसवां अध्याय	३६८-३८३
चौंतीसवां अध्याय	३८४-३९४
पैंतीसवां अध्याय	३९५-३९८
छत्तीसवां अध्याय	३९९-४०२
सैंतीसवां अध्याय	४०३-४०७
अड़तीसवां अध्याय	४०८-४१३
उनतालीसवां अध्याय	४१४-४१६
चालीसवां अध्याय	४१७-४१९

पूर्वार्ध

पहला अध्याय

विषय	मंत्र	पृष्ठ
मनुष्यों के स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना	१-२	३१
सविता देव की कृपा	३-४	३१-३२
अग्नि से व्रतशील बनाने की प्रार्थना	५	३२
सामर्थ्यवान परमेश्वर की स्तुति	६-१०	३२-३३
अग्नि की उपासना	११	३३
जल देव की स्तुति	१२-१४	३३-३४
यज्ञ में काम आने वाले साधन शम्य का वर्णन	१५-१७	३४
अग्नि की स्तुति	१८	३५
यज्ञ का आसन	१९	३५
हवि की प्रशंसा	२०	३५
ओषधियों में मधुरता की कामना	२१	३५
पुरोडाश बनाने की विधि	२२	३६
मनुष्यों का उत्साहवर्धन	२३	३६
प्रकाश फैलाने वाले सविता देव की प्रशंसा	२४	३६
पृथ्वी और सविता की स्तुति	२५	३६
शत्रुओं से मुक्ति के लिए प्रार्थना	२६	३६-३७
कल्याणकारी यज्ञवेदिका	२७	३७
परमेश्वर की महिमा का गुणगान	२८-२९	३७
अदिति देव का स्वरूप	३०	३८
सविता देव की स्तुति	३१	३८

दूसरा अध्याय

समिधा की पवित्रता	१	३९
यज्ञ जल एवं कुश की विशेषता	२	३९

विश्वावसु की प्रशंसा	३	३९
अग्नि की प्रमुखता	४	४०
देवताओं के लिए आसन	५	४०
जुहू यज्ञस्थान आदि	६	४ ०
अन्नदाता अग्नि की स्तुति	७-९	४०-४१
इंद्र से धन देने का अनुरोध	१०	४१
यज्ञ के रक्षक सविता देव की उपासना	११-१२	४१
सविता और बृहस्पति की स्तुति	१३	४२
अग्नि की बढ़ोतरी के लिए समिधा	१४-१६	४२
अग्नि की परिधि	१७	४२-४३
अग्नि, इंद्र आदि देवगणों की वंदना	१८-२८	४३-४५
पितरों की स्तुति	२९-३३	४५
जलधाराओं से पितरों को तृप्त करने की प्रार्थना	३४	४५

तीसरा अध्याय

यजमानों से निवेदन	१-२	४६
अग्नि की स्तुति	३-१९	४६-४९
गायों की स्तुति	२०-२२	४९
अग्नि की स्तुति	२३-२६	४९-५०
इड़ा देवी के पधारने का आग्रह	२७	५०
ब्रह्मणस्पति देव की उपासना	२८-३०	५०-५१
मित्र अर्यमन आदि देवों की स्तुति	३१-३३	५१
इंद्र की स्तुति	३४	५१
सविता देव से बुद्धि को प्रेरित करने का आग्रह	३५-३६	५१
बहुरूपा अग्नि की स्तुति	३७-४०	५१-५२
गृह प्रवेश संबंधी मंत्र	४१-४३	५२
मरुद्गणों की स्तुति	४४	५२
पापों से मुक्त होने के लिए यज्ञ	४५	५३
इंद्र की स्तुति	४६-४७	५३
अवभृथ (यज्ञ के अंत में) स्नान संबंधी मंत्र	४८	५३
दर्वि देवी की उपासना	४९	५३
इंद्र यजमान संवाद	५०	५३
इंद्र की उपासना	५१-५२	५४
पितरों से निवेदन	५३-५६	५४
रुद्र की स्तुति	५७-६१	५४-५५

तीन अवस्थाएं	६२	५५
शिव से कल्याण कामना	६३	५५

चौथा अध्याय

जल की महिमा का वर्णन	१-३	५६
सविता देव से पवित्र करने का अनुरोध	४	५६-५७
इच्छापूर्ति के लिए देवताओं का आह्वान	५	५७
यज्ञ के संकल्प की प्रेरणा	६-७	५७
सविता देव की प्रार्थना	८-९	५७-५८
यज्ञमेखला से ऊर्जा प्रदान करने का निवेदन	१०	५८
अग्नि से याचना	११	५८
अमृत स्वरूप जल	१२	५८
बुरे कामों से रक्षा के लिए अग्नि की उपासना	१३-१५	५९
यज्ञ में आराधनीय देव अग्नि की स्तुति	१६-१८	५९-६०
मंत्र वाणी का स्वरूप	१९	६०
वाग् देवी की स्तुति	२०-२३	६०-६१
सोम के लिए निवेदन	२४	६१
सविता देव की उपासना	२५	६१
सोम का स्वरूप	२६-२७	६१-६२
अग्नि की स्तुति	२८-३०	६२
वरुण देव की स्तुति	३१-३२	६२
सोम, मित्र व वरुण आदि से यज्ञ में आने का निवेदन	३३-३७	६३

पांचवां अध्याय

अग्नि की स्तुति	१	६४
शकल की स्तुति	२	६४
अग्नि की स्तुति	३-६	६४-६५
सोम की स्तुति	७	६५
अग्नि का स्वरूप	८	६५-६६
पृथ्वी की स्तुति	९	६६
उत्तरवेदिका का स्वरूप	१०-१३	६६-६७
यजमान और यज्ञ	१४	६७
विष्णु के तीन पैर	१५	६७
पृथ्वी का स्वरूप	१६	६७
देवगण और यज्ञ	१७	६७-६८

विष्णु की स्तुति	१८-२१	६८
सविता से सहायता के लिए प्रार्थना	२२	६८-६९
अनिष्टकारी प्रयोगों को उखाड़ फेंकना	२३	६९
विशाल गर्त एवं विष्णु की प्रतिष्ठा	२४-२५	६९
सविता देव की स्तुति	२६	६९-७०
गूलर की लकड़ी से सृष्टि विस्तार की कामना	२७-२८	७०
इंद्र की स्तुति	२९-३०	७०
अग्नि की स्तुति	३१-३२	७०-७१
ब्रह्मासन का स्वरूप	३३	७१
अग्नि की स्तुति	३४-३८	७१-७२
सविता की प्रशंसा	३९	७२
अग्नि की स्तुति एवं उन का स्वरूप	४०-४१	७२-७३
यूपवृक्ष की स्तुति एवं स्वरूप	४२-४३	७३

छठा अध्याय

यज्ञ साधनों की महत्ता	१-२	७४
विष्णु धाम का निरूपण	३-५	७४-७५
यज्ञ की सर्वव्यापकता	६	७५
सर्वगुण संपन्न त्वष्टा	७	७५
पशुओं की मुक्ति	८	७५
संतुष्टि के लिए यज्ञ	९	७५-७६
यज्ञ एवं पशुओं की स्तुति	१०-१२	७६
आचरण शुद्धि का आग्रह	१३-१५	७६-७७
त्यागे हुए तृण की निंदा	१६	७७
याजक और यजमान	१७-१९	७७-७८
अंगअंग में इंद्र की व्यापकता	२०	७८
हवि के विस्तार की कामना	२१	७८-७९
वरुण की कृपा की इच्छा	२२	७९
हवि की श्रेष्ठता	२३	७९
अग्नि की महत्ता	२४	७९
यज्ञ की सफलता के लिए प्रार्थना	२५	७९
जल, अग्नि तथा सोम की स्तुतियां	२६-३६	७९-८१
इंद्र की स्तुति	३७	८२

सातवां अध्याय

सोम की स्तुति	१-३	८३
सोम तथा यजमानों की रक्षा के लिए इंद्र से प्रार्थना	४	८३
इंद्र का विस्तार	५	८३-८४
सुभव का स्वयं प्रकाश	६	८४
वायु की स्तुति	७	८४
इंद्र और वायु से सोमरस पीने का आग्रह	८	८४
मित्र और वरुण की स्तुति	९-१०	८४-८५
अश्विनी देवों की उपासना	११	८५
इंद्र के गुणों का वर्णन	१२-१३	८५
सोम की शक्ति	१४	८५-८६
इंद्र के लिए यज्ञ	१५	८६
प्रसन्नतादायक जल वर्षा	१६	८६
सोम से अनुरोध	१७	८६
श्रेष्ठ संतान और धन के लिए देव प्रार्थना	१८	८६
दिव्य देव	१९	८६-८७
यज्ञ के लिए ग्रहों का आमंत्रण	२०	८७
सर्वसंतोष कारक सोमरस	२१	८७
दीर्घ जीवन की कामना से सोमपान	२२-२३	८७-८८
अग्नि की प्रशंसा	२४	८८
ध्रुव नाम से प्रसिद्ध सोम	२५-२६	८८
वर्चस्व की कामना	२७-२८	८८-८९
सर्वव्यापी सोम	२९	८९
सोम का ग्रहण	३०-३२	८९-९०
विश्वे देव का आह्वान	३३-३४	९०
सोम की रक्षा के लिए इंद्र व मरुद् देव से प्रार्थना	३५	९०-९१
इंद्र की स्तुति	३६-३७	९१
जल बरसाने वाले मरुद्गण	३८	९१
इंद्र की महानता	३९-४०	९१-९२
सूर्य की सर्वज्ञता	४१	९२
मित्र देव का वर्णन	४२	९२
अग्नि की स्तुति	४३-४४	९२-९३
देवकृपा	४५-४६	९३
कामना का महत्त्व	४७-४८	९३

आठवां अध्याय

सोमरस की रक्षा के लिए विष्णु से प्रार्थना	१	९४
इंद्र की उपासना	२	९४
कल्याणकारक आदित्य देव की स्तुति	३-५	९४-९५
सुख के लिए सविता से प्रार्थना	६-७	९५
सोम की स्तुति	८-१२	९५-९६
पाप से मुक्त करने की याचना	१३	९६
वर्चस्व की कामना	१४-१६	९६-९७
सविता देव की उपासना	१७	९७
देवों के लिए सुगम यज्ञ सदन	१८	९७
अग्नि से हवि ग्रहण करने की प्रार्थना	१९-२०	९७
शुद्ध वायु के लिए प्रार्थना	२१	९७
यज्ञ देव की स्तुति	२२	९७-९८
वरुण की उपासना	२३	९८
असुरों से यज्ञ की रक्षा	२४	९८
सोम की स्तुति	२५-२७	९८-९९
गर्भ एवं जरायु की पूर्णता एवं विविधता	२८-३०	९९
मरुद्गण की स्तुति	३१-३२	९९
सोलह कलाओं वाले इंद्र की स्तुति	३३-३७	९९-१००
वर्चस्ववान अग्नि	३८	१००-१०१
इंद्र और सोम की स्तुति	३९-४१	१०१
महिमाशालिनी देवी की स्तुति	४२	१०२
गोवध निषेध	४३	१०२
इंद्र की स्तुति	४४	१०२
वाचस्पति की स्तुति	४५	१०२
विश्वकर्मा की उपासना	४६	१०२-१०३
सोम का वर्णन	४७-५०	१०३
गायों की स्तुति	५१	१०३-१०४
सोम की स्तुति	५२	१०४
इंद्र की स्तुति	५३	१०४
विभिन्न देवों की स्तुति	५४-६१	१०४-१०६
यज्ञ का विस्तार	६२	१०६
पशु व अन्नादि की याचना	६३	१०६

नौवां अध्याय

सविता देव की स्तुति	१	१०७

सोम और सोम पात्र का वर्णन	२-४	१०७-१०८
हविष्यान्न से पूर्ण रथ की स्थापना	५	१०८
यज्ञ वृद्धि की कामना	६	१०८
बलवान अग्नि का वर्णन	७-९	१०८-१०९
सत्यमार्ग के प्रेरक सविता देव की स्तुति	१०	१०९
बृहस्पति की विजय कामना	११-१२	१०९-११०
युद्ध में विजय की कामना	१३-१९	११०-१११
सुख एवं आयु वृद्धि की कामना	२०-२१	१११
पृथ्वी की उपासना	२२	१११-११२
सोम का राजत्व	२३	११२
परमात्मा की स्तुति	२४-२७	११२
अग्नि देव की स्तुति	२८	११३
इच्छापूर्ति की कामना	२९	११३
विभिन्न विजयों का वर्णन	३०-३४	११३-११४
देवों और दिशाओं के लिए आहुतियां	३५-३६	११४-११५
अग्नि से शत्रुओं को हराने का निवेदन	३७	११५
सुख एवं समृद्धि के लिए प्रार्थना	३८-४०	११५

दसवां अध्याय

राष्ट्रदायी जल की महत्ता	१-४	११६-११७
विभिन्न देवों के लिए आहुति समर्पण	५	११७-११८
कुशों की पवित्रता	६	११८
जल की स्थापना	७-८	११८
यज्ञ स्थल की रक्षा के लिए प्रार्थना	९-१५	११८-१२०
मित्र और वरुण की स्तुति	१६	१२०
यजमान का अभिषेक	१७	१२०
शक्ति प्राप्ति के लिए प्रार्थना	१८	१२०
जलधाराओं का वर्णन	१९	१२०-१२१
प्रजापति से प्रार्थना	२०	१२१
इंद्र देव से ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रार्थना	२१-२२	१२१
आहुति समर्पण	२३	१२१
परमात्मा की स्तुति	२४-२५	१२२
सुखदायी आसन	२६	१२२
व्रतधारी यजमान	२७-२८	१२२
अग्नि की महिमा का वर्णन	२९	१२२-१२३

प्रेरणादायक देव	३०	१२३
हवि की परिपक्वता के लिए प्रार्थना	३१	१२३
प्रजा के कल्याण के लिए सोम ग्रहण	३२	१२३
इंद्र रक्षक अश्विनीकुमार	३३-३४	१२३-१२४

ग्यारहवां अध्याय

सविता देव की प्रशंसा	१-११	१२५-१२७
अग्नि की स्तुति	१२	१२७
पुरोहित और यजमान के लाभ की कामना	१३	१२७
रक्षा के लिए इंद्र का आह्वान	१४	१२७
वाजिन तथा अग्नि की स्तुति एवं महिमा	१५-३८	१२७-१३१
पृथ्वी की स्तुति	३९	१३१
अग्नि की महिमा और स्तुति	४०-४९	१३१-१३३
जल देव की स्तुति	५०-५२	१३३
कल्याणकारी अग्नि	५३	१३३-१३४
रुद्रगणों द्वारा पृथ्वी की रचना	५४-५५	१३४
देवमाता सिनीवाली देवी	५६-५७	१३४
उखा देव की स्तुति	५८-६१	१३४-१३६
ऐश्वर्य की कामना	६२	१३६
उखा की स्तुति	६३-६५	१३६
अग्नि के लिए आहुति समर्पण	६६	१३६-१३७
परमेश्वर के लिए आहुति समर्पण	६७	१३७
उखा देव की स्तुति	६८-६९	१३७
पराक्रम में बढ़ोतरी के लिए अग्नि की स्तुति	७०-८३	१३७-१३९

बारहवां अध्याय

सूर्य की महिमा का वर्णन	१-३	१४०
सविता देव का विस्तार	४	१४०-१४१
अग्नि की महिमा	५-११	१४१-१४२
बंधन दूर करने के लिए वरुण से प्रार्थना	१२	१४२
अग्नि का जन्म एवं विस्तार	१३-४४	१४२-१४७
यमदूतों से आग्रह	४५	१४७
उषा देवी से प्रार्थना	४६	१४७

अग्नि का वर्चस्व	४७-५४	१४८-१४९
स्वर्गिक जल से शोभायमान सोम	५५	१४९
वाणी विस्तार	५६	१४९
इंद्र की स्तुति	५७	१४९
अग्नि की स्तुति	५८-६०	१४९-१५०
उखा की मुक्ति कामना	६१	१५०
निर्ऋत देवी की उपासना	६२-६५	१५०-१५१
इंद्र की स्तुति	६६-६७	१५१
हल जोतने के लिए किसानों का आह्वान	६८-७२	१५१-१५२
ईश्वर से कृपा की कामना	७३	१५२
विभिन्न देवों के लिए आहुतियां	७४	१५२
ओषधि वर्णन	७५-१०१	१५२-१५६
प्रथम जन्मा के लिए आहुति	१०२	१५६
पृथ्वी की स्तुति	१०३	१५६
बहुगुणी अग्नि	१०४-१११	१५६-१५८
सोम की स्तुति	११२-११३	१५८
अग्नि की स्तुति	११४-११७	१५८-१५९

तेरहवां अध्याय

अग्नि की महिमा	१	१६०
सृष्टि की उत्पत्ति एवं विकास	२-५	१६०-१६१
सर्पों को नमन	६-८	१६१
अग्नि की स्तुति	९-१६	१६१-१६२
देवी की उपासना	१७-१९	१६२-१६३
दूर्वा की स्तुति	२०-२१	१६३
इंद्र, अग्नि और बृहस्पति की स्तुति	२२-२३	१६३
प्रजापति की स्तुति	२४	१६३-१६४
पारस्परिक सहयोग की कामना	२५	१६४
प्रकृति में माधुर्य की कामना	२६-२९	१६४
कूर्म की वंदना	३०-३२	१६४-१६५
विष्णु एवं इंद्र की एकता	३३	१६५
उखा का वर्णन	३४-३५	१६५
अग्नि की उपासना	३६-५४	१६५-१६९
विभिन्न उत्पत्तियां	५५-५८	१६९-१७०

चौदहवां अध्याय

इष्टकाओं की प्रतिष्ठा एवं महिमा	१-८	१७१-१७३
प्रजापति द्वारा गायत्री छंद से मूर्धन्य ब्राह्मणों की उत्पत्ति	९	१७३
प्रजापति द्वारा जानवरों की उत्पत्ति	१०	१७३-१७४
इष्टका स्थापित करने का अनुरोध	११	१७४
इष्टका की स्तुति	१२-१४	१७४
मास वर्णन	१५	१७५
इष्टका से रक्षा की कामना	१६-२७	१७५-१७८
विभिन्न देवलोकों की उत्पत्ति	२८-३१	१७८-१८०

पंद्रहवां अध्याय

अग्नि की स्तुति	१	१८१
अग्नि से शत्रु के नाश की कामना	२-३	१८१
अग्नि की स्थापना	४-५	१८१-१८२
सत्य के लिए रश्मियों का प्रचारप्रसार	६	१८२-१८३
इष्टका की स्तुति	७-१४	१८३-१८५
रक्षा के लिए अग्नि से प्रार्थना	१५	१८५
रक्षा के लिए विश्वकर्मा से प्रार्थना	१६	१८५
आदित्य देव का वर्णन	१७	१८६
अग्नि देव की स्तुति एवं स्वरूप निरूपण	१८-६०	१८६-१९३
इंद्र की स्तुति	६१	१९३
अग्नि परम इष्ट है	६२-६५	१९३-१९४

सोलहवां अध्याय

रुद्र देव की उपासना तथा वर्णन	१-५	१९५
विभिन्न दिशाओं में फैली शक्तियां	६	१९५-१९६
रुद्र देव से रक्षा के लिए प्रार्थना	७-१६	१९६-१९७
रुद्र देव व गणपति आदि के लिए नमन	१७-४६	१९७-२०३
रुद्र देव का स्वरूप निरूपण	४७-६४	२०३-२०६
रुद्र देव के लिए नमन	६५-६६	२०६

सत्रहवां अध्याय

अग्नि से कल्याणकारी होने के लिए कामना	१-१६	२०७-२०९

परम शक्ति की उत्पत्ति एवं विकास	१७-२१	२०९-२१०
विश्वकर्मा की स्तुति	२२-२३	२१०-२११
परम तत्त्व की विवेचना	२४-३२	२११-२१२
इंद्र की वीरता	३३-३५	२१२-२१३
बृहस्पति देव की उपासना	३६	२१३
इंद्र व वरुण आदि देवों का पराक्रम	३७-४९	२१३-२१५
अग्नि की स्तुति	५०	२१५
इंद्र की स्तुति	५१	२१५
अग्नि से कल्याण कामना	५२-५५	२१५-२१६
यज्ञ की महत्ता	५६-५७	२१६
सूर्य देव की उपासना	५८-६०	२१६-२१७
इंद्र की स्तुति	६१-६४	२१७
अग्नि की महिमा एवं उपासना	६५-७३	२१७-२१९
सविता देव की स्तुति	७४	२१९
अग्नि की स्तुति	७५-७७	२१९
यज्ञ में देवों का आह्वान	७८	२२०
अग्नि का स्वरूप	७९-८५	२२०-२२१
मरुद्गण की सेना	८६	२२१
घी की धाराएं	८७-९८	२२१-२२३
अग्नि की स्तुति	९९	२२३

अठारहवां अध्याय

यज्ञ के सर्वविध फलीभूत होने की कामना	१-२७	२२४-२३०
विभिन्न महीनों के लिए आहुति समर्पण	२८	२३०
देवत्व प्राप्ति की कामना	२९	२३०
पृथ्वी तथा प्रकृति की अनुकूलता हेतु प्रार्थना	३०-३४	२३०-२३१
अग्नि एवं सविता देव से कृपा की कामना	३५-३८	२३१-२३२
रक्षा के लिए सूर्य से प्रार्थना	३९-४०	२३२
गंधर्वों के लिए आहुति अर्पण	४१-४३	२३२-२३३
प्रजापति के लिए आहुति अर्पण	४४-४५	२३३
तेजस्विता के लिए अग्नि से प्रार्थना	४६-४८	२३३-२३४
वरुण देव की वंदना	४९	२३४
सूर्य के लिए स्वाहा	५०	२३४
अग्नि की स्तुति	५१-५७	२३४-२३५

परम शक्ति की वंदना	५८-६०	२३५-२३६
बहुरूपा अग्नि	६१-६७	२३६-२३७
शत्रु विनाश के लिए इंद्र का आह्वान	६८-७१	२३७
विश्व कल्याण के लिए अग्नि से प्रार्थना	७२-७७	२३७-२३८

उन्नीसवां अध्याय

ओषध देव की स्तुति	१	२३९
सोम सिंचन	२	२३९
इंद्र सखा वायु की शुद्धता	३	२३९
सोम की स्तुति	४-५	२३९-२४०
किसान और अन्न	६	२४०
सोम से प्रार्थना	७-९	२४०
शक्ति की उपासना	१०	२४०-२४१
कल्याणकारी मातापिता	११	२४१
यज्ञ का विस्तार	१२	२४१
सोम का स्वरूप	१३-१६	२४१
यज्ञ व कुशा आदि से प्राप्ति	१७-२०	२४२
धान व लपसी आदि सोम का रूप हैं	२१-२३	२४२-२४३
ॠचाओं के विविध रूप	२४-२५	२४३
यज्ञ के विभिन्न अवयवों से प्राप्तियां	२६-३१	२४३-२४४
सोम निरूपण	३२-३५	२४४-२४५
पितरों के लिए आहुतियां	३६-३७	२४५
अग्नि का पवित्र स्वरूप	३८-४२	२४५-२४६
सविता व विश्वे देवी आदि से पवित्रता के लिए प्रार्थना	४३-४४	२४६
पितृ एवं देव मार्ग	४५-४७	२४६
बढ़ोतरी के लिए अग्नि से प्रार्थना	४८	२४६-२४७
रक्षा एवं कल्याण के लिए पितृ वंदना	४९-५१	२४७
सोम की स्तुति	५२-५४	२४७-२४८
पितरों का आह्वान	५५-६३	२४८-२४९
अग्नि की उपासना	६४-७०	२४९-२५०
इंद्र की स्तुति	७१	२५०
सोम आदि से उपलब्धियां	७२-७९	२५०-२५२
तनमन के विविध अवयवों की उत्पत्ति	८०-९३	२५२-२५४
सरस्वती देवी और अश्विनीकुमार	९४	२५४
शक्तिवर्धक सोमरस	९५	२५४

बीसवां अध्याय

वेदिका स्वरूप निरूपण	१-४	२५५
बल व पुरुषार्थ की कामना	५-१०	२५५-२५६
रक्षा के लिए देवों से प्रार्थना	११	२५६-२५७
परस्पर संयोजन की कामना	१२-१३	२५७
पापों से मुक्ति की कामना	१४-१७	२५७-२५८
जल संचरण	१८-२२	२५८
बढ़ोतरी के लिए अग्नि से याचना	२३-२४	२५९
ज्ञानमय लोक पाने की इच्छा	२५-२६	२५९
ओषधियों का रस	२७-२८	२५९
इंद्र की स्तुति	२९	२५९-२६०
मरुद्गण की स्तुति	३०	२६०
अध्वर्यु की स्तुति	३१	२६०
प्राणियों के अधिपति की उपासना	३२	२६०
ओषधि रूप रस	३३-३५	२६०
वृत्रहंता इंद्र	३६-४०	२६०-२६१
उषा की वंदना	४१	२६१
इंद्र की स्थापना	४२	२६१-२६२
विघ्न दूर करने के लिए तीन देवियों से प्रार्थना	४३	२६२
त्वष्टा देव की स्तुति	४४	२६२
रक्षा के लिए इंद्र का आह्वान	४५-५४	२६२-२६४
समिधा से अग्नि प्रज्वलन	५५	२६४
तन रक्षक अश्विनीकुमार	५६	२६४
ओषधि से युक्त सोमरस	५७	२६४
सरस्वती के माध्यम से इंद्र का आह्वान	५८	२६४
सरस्वती द्वारा सोम का हरण	५९	२६४
सरस्वती द्वारा स्वर्ग और पृथ्वीलोकों का दोहन	६०	२६४
इंद्र के लिए विशेष बल का समय	६१	२६५
रक्षा के लिए त्रिदेव से प्रार्थना	६२	२६५
ओषधि से युक्त सोम	६३	२६५
मधुर रस का दोहन	६४-६५	२६५
सरस्वती द्वारा नमुचि से हवि प्राप्त करना	६६-६८	२६५-२६६
सरस्वती तथा अश्विनीकुमारों द्वारा इंद्र को हवि अर्पण	६९	२६६
इंद्र द्वारा हविपति की रक्षा	७०	२६६

इंद्र द्वारा नमुचि से रक्षा	७१	२६६
वरुण देव का आह्वान	७२	२६६
अश्विनीकुमारों द्वारा यजमान के पराक्रम की वृद्धि	७३	२६६
देवों से यज्ञ में पधारने का अनुरोध	७४	२६६-२६७
अश्विनीकुमारों की स्तुति	७५-७७	२६७
अग्नि द्वारा सोम को ग्रहण करना	७८-७९	२६७
अश्विनीकुमारों से प्रार्थना	८०-८३	२६८
सरस्वती देवी की उपासना	८४-८६	२६८
यज्ञ में इंद्र देव का आह्वान	८७-९०	२६८-२६९

उत्तरार्ध

इक्कीसवां अध्याय

वरुण देव की उपासना	१-२	२७०
अग्नि देव की स्तुति	३-४	२७०
अदिति देवी की स्तुति तथा आह्वान	५-६	२७०-२७१
मित्र और वरुण देव की आराधना	७-११	२७१-२७२
रक्षा के लिए अग्नि से प्रार्थना	१२-१५	२७२
बल एवं आयु वृद्धि की याचना	१६-२८	२७२-२७४
सर्व कल्याण के लिए यज्ञ की कामना	२९-५६	२७४-२८२
देवगणों द्वारा पराक्रम धारण	५७-५८	२८२
देवगणों को सोम की भेंट	५९-६०	२८२
देवगणों का आह्वान	६१	२८३

बाईसवां अध्याय

तेजोमय देव की उपासना	१	२८४
यज्ञ से ज्ञान की वृद्धि	२	२८४
अग्नि से देवताओं तक पहुंचने की प्रार्थना	३-४	२८४
प्रजापति की संतुष्टि के लिए अभिषेक	५	२८४-२८५
विभिन्न देवों के लिए आहुति अर्पण	६-८	२८५-२८६
सविता देव की स्तुति	९-१४	२८६
अग्नि की महिमा एवं वंदना	१५-१९	२८६-२८७
विभिन्न देवों के लिए आहुति अर्पण	२०	२८७-२८८
संसार के नायक	२१	२८८

ब्राह्मणों की स्तुति	२२	२८८
विभिन्न देवों एवं कर्मों के लिए स्वाहा	२३-३४	२८८-२९१

तेईसवां अध्याय

परमात्मा की उत्पत्ति	१	२९२
परमात्मा और प्रजापति के लिए हवि का विधान	२-४	२९२-२९३
यज्ञ के साधनों का संयोजन	५	२९३
यज्ञ रूपी अश्व	६-८	२९३
ब्रह्मा होता संवाद	९-१२	२९३-२९४
अग्नि को नमन	१३	२९४
यज्ञ रूपी रथ की प्रशंसा	१४	२९४
यज्ञ ऊर्जा की महिमा	१५	२९४-२९५
परम शक्ति की अनश्वरता	१६	२९५
विजय के लिए ऊर्जा	१७	२९५
अंबा की स्तुति	१८	२९५
गणपति का आह्वान	१९	२९५-२९६
यज्ञ शक्ति और देव शक्ति	२०	२९६
दुष्टों का दमन करने वाली परम शक्ति	२१	२९६
शक्तिशाली जल	२२	२९६
यज्ञ के बारे में निरर्थक बातें न करें	२३	२९६
पूर्वजों की प्रसन्नता	२४	२९६
कम बोलने की सलाह	२५	२९६
राष्ट्र के लिए प्रजापति से प्रार्थना	२६-२७	२९७
पाप भेदक यज्ञाग्नि	२८	२९७
परमानंददायी गतिविधियां	२९	२९७
अपनी हानि से दुःख	३०-३१	२९७-२९८
यज्ञ देव की कृपा	३२	२९८
यज्ञाग्नि की शांति	३३-३७	२९८-२९९
सोम का आह्वान	३८	२९९
सुखदाता परमात्मा की वंदना	३९-४४	२९९-३००
ब्रह्मा होता संवाद	४५-४८	३००
विष्णु के तीन पैर	४९-५०	३००-३०१
पंचमहाभूतों में परम पुरुष का रमण	५१-५२	३०१
ब्रह्मा होता संवाद	५३-६५	३०१-३०३

चौबीसवां अध्याय

विभिन्न देवी देवताओं के लिए अलगअलग जीव जंतु	१-४०	३०४-३११

पच्चीसवां अध्याय

विभिन्न अंगों से देवी की प्रसन्नता	१	३१२
विभिन्न देवों के लिए आहुति अर्पण	२-३	३१२-३१३
अस्थि और देव	४-६	३१३-३१४
शारीरिक अंगों से देवों का संबंध	७-९	३१४
देवों के लिए हवि का विधान	१०-१३	३१५
कल्याण व रक्षा की कामना	१४-२२	३१५-३१७
सृष्टि की अनश्वरता	२३	३१७
देवों का पराक्रम	२४	३१७
यज्ञ का प्रिय पदार्थ पुरोडाश	२५-२६	३१७
यज्ञ से इच्छित उद्देश्यों की प्राप्ति	२७-२८	३१७-३१८
यज्ञ के हित साधक कार्य	२९	३१८
यज्ञ पशु पर नियंत्रण	३०	३१८
यज्ञ पशु के अंग देवों को समर्पित	३१-३४	३१८-३१९
पुरोडाश की परिपक्वता	३५-३७	३१९
यज्ञ के अश्व का व्यवहार एवं शृंगार	३८-४१	३१९-३२०
कालगत विभाजन	४२	३२०
अश्व की स्तुति	४३-४५	३२०-३२१
इंद्र तथा अन्य देवों की उपासना	४६-४७	३२१

छब्बीसवां अध्याय

अग्नि आदि देवों से अनुकूलता के लिए प्रार्थना	१-२	३२२
बृहस्पति देव की उपासना	३	३२२-३२३
इंद्र देव की स्तुति	४-५	३२३
अग्नि देव की स्तुति	६-९	३२३-३२४
इंद्र की स्तुति	१०-११	३२४
अग्नि से अन्न व बल की याचना	१२-१३	३२४
यज्ञ विस्तार की कामना	१४	३२४-३२५
ब्राह्मणों में बुद्धि	१५	३२५
सोम की स्तुति	१६-१९	३२५

अग्नि की स्तुति	२०-२२	३२५-३२६
सोमरस की रक्षा करना	२३	३२६
देव पत्नियों से हवि ग्रहण की प्रार्थना	२४	३२६
मददायी व रक्षक सोम	२५-२६	३२६

सत्ताईसवां अध्याय

अग्नि की उपासना	१-७	३२७-३२८
बृहस्पति देव तथा सविता देव की स्तुति	८-९	३२८
सूर्य की आराधना	१०	३२८
अग्नि और उन की दिव्य देवियों का आह्वान	११-२४	३२९-३३०
जल की अपारता	२५-२६	३३०-३३१
वायु की स्तुति	२७-३४	३३१-३३२
इंद्र देव की स्तुति	३५-४१	३३२-३३३
अग्नि से रक्षा की कामना	४२-४५	३३३

अट्ठाईसवां अध्याय

इंद्र की उपासना	१-६	३३४-३३५
अश्विनीकुमारों के लिए यज्ञ	७	३३५
तीन देवियों के लिए यज्ञ	८	३३५
त्वष्टा देव की महिमा का गान	९	३३५
शांतिदाता वनस्पति देव	१०	३३६
विभिन्न देवों के लिए आहुति अर्पण	११	३३६
इंद्र के लिए यज्ञ कामना	१२-१३	३३६
उषा देवी और रात्रि देवी के लिए यज्ञ की कामना	१४-१८	३३६-३३७
इंद्र के लिए यज्ञ कामना	१९	३३८
वनस्पति देव के लिए यज्ञ की कामना	२०	३३८
वैभव के लिए यज्ञ कामना	२१	३३८
अग्नि के लिए यज्ञ कामना	२२	३३८
अग्नि द्वारा होता का वरण	२३	३३८-३३९
अग्नि और इंद्र आदि के लिए यज्ञ	२४-४६	३३९-३४३

उनतीसवां अध्याय

अग्नि की स्तुति	१-३	३४४

अदिति की विशालता	४-५	३४४
रात्रि और उषा देवी का वर्णन	६	३४५
अग्नि और वायु की वंदना	७	३४५
भारती देवी से यज्ञ की रक्षा की कामना	८	३४५
त्वष्टा देव के लिए यज्ञ कामना	९	३४५
वनस्पति देव से प्रार्थना	१०	३४५
अग्रगामी अग्नि	११	३४५
मेघ देव की महिमा	१२	३४६
इंद्र देव का रथ	१३	३४६
मेघ देव के तीन बंधन	१४-१७	३४६
वायु की स्तुति	१८	३४७
अर्वन देव की स्तुति	१९-२४	३४७-३४८
अग्नि की स्तुति	२५-२८	३४८
कुशों का सुखासन	२९	३४८
दिव्य द्वार वाली देवियां	३०	३४९
दिव्य कार्य करने वाली देवियां	३१	३४९
विराट् यज्ञ के दो दिव्य होता	३२	३४९
तीन देवियों का आह्वान	३३	३४९
त्वष्टा देव का पूजन	३४	३४९
यजमानों से निवेदन	३५	३४९
अग्नि की स्तुति	३६-३७	३४९-३५०
वीरों के लिए विजय कामना	३८-४६	३५०-३५१
रक्षा के लिए देवों से प्रार्थना	४७	३५१
बाणों से कल्याण कामना	४८	३५१
चाबुक, रथ व दुंदुभि आदि युद्ध साधनों का वर्णन	४९-५७	३५१-३५३
विभिन्न देवताओं से संबंध	५८-६०	३५३-३५४

तीसवां अध्याय

सविता देव की स्तुति	१-४	३५५
चारों वर्णों के कर्तव्य	५	३५५
उपयुक्त संबंधों की विवेचना	६-२२	३५५-३६०

इकतीसवां अध्याय

परम पुरुष का वर्णन	१-३	३६१

परम पुरुष के तीन पैर	४	३६१
विराट् की उत्पत्ति	५-७	३६१-३६२
पृथ्वी तथा अन्य जीवों की उत्पत्ति	८-१८	३६२-३६३
प्रजापति की महिमा	१९	३६३-३६४
परम पुरुष से इच्छा पूर्ति करने का अनुरोध	२०-२२	३६४

बत्तीसवां अध्याय

परम पुरुष का वर्णन	१-६	३६५-३६६
परम पुरुष की शक्ति	७	३६६
परम पुरुष की व्यापकता एवं अमरता	८-१४	३६६-३६७
बुद्धि की कामना	१५	३६७
ब्रह्मज्ञान की कामना	१६	३६७

तैंतीसवां अध्याय

अग्नि की स्तुति और महिमा का गान	१-१७	३६८-३७०
इंद्र देव का ध्यान	१८	३७१
यज्ञ रक्षक सूर्य की किरणें	१९	३७१
श्रेष्ठ कार्य हेतु देवों से अनुरोध	२०	३७१
स्वर्ग और पृथ्वीलोकों के संरक्षक सोम	२१	३७१
इंद्र का गुणगान	२२-३०	३७१-३७३
सर्व प्रकाशक सूर्य	३१	३७३
भरणपोषण कर्ता वरुण	३२	३७३
दिव्य अश्विनीकुमार	३३	३७३
कल्याणकारी सविता	३४	३७३
शत्रुनाशी इंद्र	३५	३७३
सूर्य की महानता	३६-४४	३७३-३७५
इंद्र, वायु, अग्नि व बृहस्पति आदि देवों का आह्वान	४५-५४	३७५-३७६
वैभवशाली पुरोहित	५५	३७६-३७७
इंद्र से सोमरस पीने का आग्रह	५६	३७७
मित्र और वरुण का ध्यान	५७	३७७
अश्विनीकुमारों से सोमपान का आग्रह	५८	३७७
श्रेष्ठ वर्णीय मंत्रों से देवस्तुति	५९	३७७
अग्नि का गुणगान	६०-६१	३७७

सोम के लिए यजमानों से संबोधन	६२	३७८
इंद्र की स्तुति	६३-६७	३७८
सुमति के लिए आदित्य से प्रार्थना	६८	३७८-३७९
सविता देव से घरों की रक्षा की कामना	६९	३७९
सोमरस के लिए पुरोहित से प्रार्थना	७०-७१	३७९
यज्ञ की पूर्णता के लिए देवों से प्रार्थना	७२	३७९
यज्ञ के लिए पुरोहितों का आह्वान	७३	३७९
सोम की पवित्रता	७४	३७९
यज्ञ के लिए अग्नि का वरण	७५	३७९-३८०
इंद्र की महिमा	७६-८३	३८०-३८१
सविता देव की आराधना	८४	३८१
वायु देव की आराधना	८५	३८१
इंद्र का आह्वान	८६-८७	३८१
अश्विनीकुमारों से आगमन का अनुरोध	८८-८९	३८२
चमकदार सोम देव	९०	३८२
बुद्धि के देवता को हवि देना	९१	३८२
वैश्वानर की वंदना	९२	३८२
पैर रहित उषा देवी की गति	९३	३८२
वैभव पाने के लिए देव वंदना	९४	३८२-३८३
इंद्र आदि देवों की महिमा	९५-९७	३८३

चौंतीसवां अध्याय

कल्याणकारी संकल्पों की आधारशिला मन	१-६	३८४-३८५
इंद्र की स्तुति	७	३८५
अनुमति देवी से प्रार्थना	८-९	३८५
सिनीवाली देवी	१०	३८५
पांच रूपों वाली सरस्वती	११	३८५
प्रथम पूजनीय अग्नि की स्तुति	१२-१५	३८५-३८६
इंद्र की स्तुति	१६-१९	३८६-३८७
शत्रुजयी सोम का वर्णन	२०-२३	३८७-३८८
सविता देव की स्तुति	२४-२५	३८८
सूर्य देव की महिमा	२६	३८८
सविता देव के अनुकरण की कामना	२७	३८८
अश्विनीकुमारों से यज्ञस्थलों में पधारने की कामना	२८-३०	३८८-३८९
सविता देव की प्रशंसा	३१	३८९

रात्रि देवी की प्रशंसा	३२	३८९
उषा देवी की प्रशंसा	३३	३८९
प्रातःकाल विभिन्न देवों का आह्वान	३४-३५	३८९-३९०
भग देव की स्तुति	३६	३९०
सूर्य देव की कृपा से धनवान होने की कामना	३७	३९०
भग देव का आह्वान	३८-३९	३९०
प्रभात वेला से कल्याण कामना	४०	३९०
पूषा देव से बुद्धि को श्रेष्ठ कार्यों में लगाने की कामना	४१-४२	३९१
विष्णु द्वारा विश्व धारण	४३-४४	३९१
स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक	४५	३९१
देवों से शत्रु पराजय की कामना	४६	३९१
देवताओं सहित अश्विनीकुमारों से आने का अनुरोध	४७	३९१-३९२
मरुद्‌गणों की स्तुति	४८	३९२
दिव्य सृष्टि	४९	३९२
स्वर्णमय धन	५०-५१	३९२
चिरायु कामना से रक्षा बंधन	५२	३९२
सभी देवों की स्तुति	५३-५४	३९३
शरीर में विद्यमान सात प्राण व सात ऋषि	५५	३९३
देवत्व धारण के लिए ब्रह्मणस्पति का आह्वान	५६	३९३
मंत्रों में देवों का वास	५७	३९३
संसार के नियंत्रक देवगण	५८	३९४

पैंतीसवां अध्याय

देवपुत्रों का लोक	१-३	३९५
पीपल और पलाश वृक्षों पर वास करने वाली ओषधियां	४	३९५
सुखदायी पृथ्वी का आह्वान	५	३९५
प्रजापति से जलधारा के लिए प्रार्थना	६	३९५-३९६
मृत्यु का पथ	७	३९६
सर्वकल्याणकारी कामना	८-१०	३९६
पापकर्मों को दूर हटाने का आग्रह	११	३९६
जल एवं ओषधियों से मैत्री	१२	३९६-३९७
बछड़े का आह्वान	१३	३९७
प्रकाशमय स्वर्गलोक	१४	३९७
मर्यादा रूपी परिधि	१५	३९७

अग्नि की स्तुति	१६-२०	३९७-३९८
पृथ्वी देवी से सुख प्रदान करने की प्रार्थना	२१	३९८
अग्नि के लिए आहुति अर्पण	२२	३९८

छत्तीसवां अध्याय

नेत्रों और कानों की सामर्थ्य प्राप्त करने की कामना	१	३९९
बृहस्पति देव से विभिन्न दोष दूर करने का आग्रह	२	३९९
स्वयंभू शक्तिमान परमात्मा	३-४	३९९
इंद्र से धन की कामना	५-७	३९९-४००
विश्व की शोभा इंद्र	८	४००
इंद्र, वरुण, अग्नि व मित्र आदि देवों की स्तुति	९-११	४००
जल और पृथ्वी से कल्याण कामना	१२-१६	४०१
स्वर्गलोक और अंतरिक्षलोक	१७	४०१
परमात्मा की स्तुति	१८-१९	४०१-४०२
अग्नि की स्तुति	२०	४०२
परमात्मा की स्तुति	२१-२२	४०२
जल व ओषधियों आदि से मैत्री कामना	२३	४०२
हितकारी सूर्य	२४	४०२

सैंतीसवां अध्याय

सविता देव की स्तुति	१	४०३
सर्वविद परमात्मा	२	४०३
दिव्य शक्तियों को यज्ञ में आने के लिए आमंत्रण	३	४०३
दिव्य यज्ञ में अग्नि शिरोधार्य	४-६	४०३-४०४
यज्ञ में विभिन्न देवी देवताओं का आह्वान	७	४०४
अग्नि की स्तुति	८	४०४
परमात्मा की स्तुति	९	४०५
सुरक्षा के लिए सामर्थ्यशाली देव की अर्चना	१०-११	४०५
पृथ्वी देवी की स्तुति	१२	४०६
मरुद्गणों के लिए आहुति अर्पण	१३	४०६
परमात्मा बुद्धि के पिता हैं	१४-१७	४०६-४०७
सर्वरक्षक सूर्य देव	१८	४०७
परमात्मा की स्तुति	१९-२१	४०७

अड़तीसवां अध्याय

यज्ञ ऊर्जा को ग्रहण करना	१	४०८
इड़ा एवं सरस्वती देवी का आह्वान	२	४०८
पोषक यज्ञ ऊर्जा	३	४०८
अश्विनी व इंद्र आदि देवों के लिए आहुति	४	४०८
सरस्वती देवी का दिव्य ज्ञान	५	४०८
इंद्र देव की गायत्री छंद से स्तुति	६	४०९
वायु के लिए आहुति अर्पण	७	४०९
इंद्र देव के लिए आहुति	८	४०९
यम देव के लिए आहुति	९	४०९
यज्ञ विस्तार के लिए रसमयी आहुतियां	१०	४१०
सुखशांति के लिए आहुति अर्पण	११	४१०
अश्विनीकुमारों से यज्ञ की रक्षा करने की प्रार्थना	१२-१३	४१०
परब्रह्म से प्रजा की रक्षा के लिए आग्रह	१४	४१०
विभिन्न देवों के लिए आहुति अर्पण	१५	४१०-४११
दिव्य गुण वाली परम शक्ति	१६	४११
अग्नि की स्तुति	१७-१८	४११
परम शक्ति की स्तुति	१९-२०	४११-४१२
यज्ञ देव का आह्वान एवं उन की स्तुति	२१-२८	४१२-४१३

उनतालीसवां अध्याय

समृद्धि एवं कल्याण के लिए देवों को आहुतियां	१-७	४१४-४१५
विभिन्न शारीरिक अंगों से देवों की प्रसन्नता	८-९	४१५-४१६
विभिन्न देवों के लिए आहुतियां	१०-१३	४१६

चालीसवां अध्याय

ईश्वर की आराधना	१	४१७
कर्म करते हुए सौ वर्षों तक जीने की इच्छा	२	४१७
अजन्मा ईश्वर एक है	३-४	४१७
परम शक्ति की व्यापकता	५-८	४१७-४१८
सृजन और विनाश	९-१२	४१८

विद्या से अमृत तत्त्व की प्राप्ति	१३-१४	४१८-४१९
ओम् का स्मरण	१५	४१९
अग्नि से श्रेष्ठ मार्ग पर ले जाने का अनुरोध	१६	४१९
आकाश में ओम् रूप में ब्रह्म	१७	४१९

पूर्वार्ध

पहला अध्याय

इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण ऽ
आप्यायध्वमघ्न्या ऽ इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽ अयक्ष्मा मा व स्तेन ऽ ईशत
माघश ꣳ सो ध्रुवा ऽ अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून्पाहि.. (१)

हे मनुष्यो! सविता देव आप को ऊर्जस्वी बनाने की कृपा करें. वायु आप को स्वस्थ बनाने की कृपा करें. आप सभी श्रेष्ठता को प्राप्त कीजिए. आप सभी कर्म की ओर प्रेरित होइए. आप अपना यज्ञ भाग इंद्र देव को भेंट कीजिए. ईश्वर आप को श्रेष्ठ संतान प्रदान करें. आप ईश्वर की कृपा से निरोगी हों. आप यक्ष्मा (क्षय) जैसे घातक रोगों से दूर हों. दुष्ट और चोर लोग आप के भाग्य विधाता (निर्णायक) न बन जाएं. आप को श्रेष्ठ संरक्षण मिले. आप दुष्टों से दूर रहें. आप परमेश्वर की छत्रच्छाया में रहें. आप गोपति हों. सज्जन यजमानों की बढ़ोतरी हो. आप के पशु धन की रक्षा हो. (१)

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मो ऽ सि विश्वधा ऽ असि.
परमेण धाम्ना दृ ꣳह स्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्.. (२)

हे मनुष्यो! आप वस्तुओं को पवित्र करने के माध्यम (बनाने वाले) हों. आप स्वर्गलोक, पृथ्वी, पालक, ऊष्मा व विश्वधारक हैं. आप अपने परम तेज से दृढ़ बनिए. आप के यज्ञपति (यज्ञ में मददगार) भी कठोर न हों. (२)

वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्.
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः.. (३)

आप पवित्र वसु, सैकड़ों, हजार धाराओं वाले व पवित्र करने वाले हैं. हे मनुष्यो! सविता देव पवित्र करने वाले हैं. वे अपनी सैकड़ों धाराओं से आप को पवित्र बनाने की कृपा करें. आप इस के बाद और किस कामधेनु को दुहना चाहते हैं ? अर्थात् उन की इतनी कृपा हो जाने के बाद और किस कामना की पूर्ति बाकी रह जाती है. (३)

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः.
इन्द्रस्य त्वां भाग ꣳ सोमेनातनच्मि विष्णो हव्य ꣳ रक्ष.. (४)

हे मनुष्यो! वह (सविता देव की कृपा) पूर्ण आयु देने वाली है. सभी कर्म करने में समर्थ है. सभी को धारण करने की शक्ति रखती है. इंद्र के भाग में सोमरस मिला कर हवि तैयार करते हैं. विष्णु हवि की रक्षा करने की कृपा करें. (४)

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्. इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि.. (५)

हे अग्नि! आप संकल्पशील हैं. आप हमें भी व्रतशील बनाने की कृपा कीजिए. आप की कृपा से हम यह धन (व्रत रूपी) और असत्य से सत्य को पा सकें. (५)

कस्त्वा युनक्ति स त्वा युनक्ति कस्मै त्वा युनक्ति तस्मै त्वा युनक्ति.
कर्मणे वां वेषाय वाम्.. (६)

हे मनुष्यो! किस ने आप को नियुक्त किया है? किसलिए आप को नियुक्त किया गया है? परमेश्वर ने आप को नियुक्त किया है. श्रेष्ठ कर्म में नियुक्त किया है. (६)

प्रत्युष्ट ꣳ रक्षः प्रत्युष्टा ऽ अरातयो निष्टप्त ꣳ रक्षो निष्टप्ता ऽ अरातयः.
उर्वन्तरिक्षमन्वेमि.. (७)

हे मनुष्यो! आप यज्ञ और उस के साधनों की रक्षा कीजिए. निकृष्ट राक्षस नष्ट हो गए हैं. अन्य विकार भी समाप्त हो गए हैं. अब हवि आदि अंतरिक्ष में पहुंचने वाली वस्तुएं (बिना बाधा के) अंतरिक्ष में जाने की कृपा करें. (७)

धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः.
देवानामसि वह्नितम ꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्.. (८)

हे परमेश्वर! आप सामर्थ्यवान हैं. आप अपनी सामर्थ्य से धूर्तों का नाश कीजिए. जो हम सभी को दुःख पहुंचाते हैं. आप उन पापियों और दुष्टात्माओं का नाश कीजिए जिन का सभी नाश करना चाहते हैं. आप देवों में सर्वाधिक तेजस्वी, शक्तिदाता, पूर्णतादायी और देवताओं को आमंत्रित करने वाले हैं. (८)

अह्रुतमसि हविर्धानं दृ ꣳ हस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्.
विष्णुस्त्वा क्रमतामुरु वातायापहत ꣳ रक्षो यच्छन्तां पञ्च.. (९)

हे मनुष्यो! आप देव शक्ति धारण कर सकते हैं. आप हवि धारण करते हैं. आप दृढ़ हैं. आप और आप के यज्ञ के सहयोगी किसी के प्रति कठोर न बनें. विष्णु व विशाल वायुमंडल (पर्यावरण) आप पर कृपा करें. आप की पंचेंद्रियां श्रेष्ठ कार्यों में लगें. (९)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
अग्नये जुष्टं गृह्णाम्यग्नीषोमाभ्यां जुष्टं गृह्णामि.. (१०)

हे परमेश्वर! आप ने सविता देव और अन्य देवों को जना है. अश्विनी देव बाहु से हवि ग्रहण करते हैं. पूषा देव हाथों से हवि ग्रहण करते हैं. अध्वर्यु (पुरोहित) अग्नि की (को भेंट करने के लिए) प्रिय हवि ग्रहण करते हैं. पुरोहित अग्नि और सोम को भेंट करने के लिए उन्हें प्रिय लगने वाले पदार्थ ही ग्रहण करते हैं. (१०)

भूताय त्वा नारातये स्वरभिविख्येषं दृ ꣳ हन्तां दुर्याः पृथिव्यामुर्वन्तरिक्षमन्वेमि.
पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्या ऽ उपस्थेग्ने हव्य ꣳ रक्ष.. (११)

हे अग्नि! आप अदिति के पुत्र हैं. यज्ञकुंड पृथ्वी (माता) की नाभि है. उस में हम ने हवि स्थापित की है. आप उस हवि की रक्षा करने की कृपा कीजिए. आप को मनुष्य के कल्याण के लिए स्थापित किया गया है. हमें अपने में व्याख्यायित (मौजूद) परम शक्ति का अनुभव हो. दुष्टों का विनाश हो. हम अंतरिक्ष और पृथ्वी पर बिना किसी बाधा के घूमफिर (विचर) सकें. (११)

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः.
देवीरापो अग्रेगुवो अग्रेपुवो ग्र ऽ इममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपति ꣳ सुधातुं यज्ञपतिं देवयुवम्.. (१२)

हे जल देव! इंद्र ने वृत्र का नाश करने के लिए (सहयोग हेतु) आप को चुना. आप ने वृत्रासुर के नाश में इंद्र का वरण किया. आप ने वृत्रासुर के नाश में इंद्र का सहयोग किया. आप अग्नि के प्रिय हैं. हम अग्नि के लिए आप को परिष्कृत (शुद्ध) करते हैं. आप सोम के प्रिय हैं. हम सोम के लिए आप को परिष्कृत करते हैं. हम देवताओं से संबंधित कार्यों के लिए आप को शुद्ध करते हैं. (१२)

युष्मा इन्द्रोवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्ये प्रोक्षिताः स्थ.
अग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षाम्यग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि. दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देवयज्यायै यद्वोशुद्धाः पराजघ्नुरिदं वस्तच्छुन्धामि.. (१३)

हे जल देव! हम देव संबंधी यज्ञ कार्यों के लिए आप को शुद्ध करते हैं. यज्ञ के अशुद्ध उपकरण भी ग्रहण करने योग्य नहीं होते. अशुद्ध जल भी यज्ञ में ग्रहण नहीं किया जाता. (१३)

शर्मास्यवधूत ꣳ रक्षोवधूता ऽ अरातयो दित्यास्त्वगसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु.
अद्रिरसि वानस्पत्यो ग्रावासि पृथुबुध्नः प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु.. (१४)

सुख के आसन से राक्षसों, दुष्टों व दैत्यों को दूर कर दिया गया है. आसन पृथ्वी पर आवरण है. पृथ्वी माता उस आसन को स्वीकार करने की कृपा करें. आप पत्थर की तरह मजबूत हैं. आप का आधार भी पत्थर की तरह मजबूत है. आप

वनस्पति से निर्मित हैं. पृथ्वी माता आप को धारण करने की कृपा करें. (१४)

अग्नेस्तनूरसि वाचो विसर्जनं देववीतये त्वा गृह्णामि बृहद्ग्रावासि वानस्पत्य:
स ऽ इदं देवेभ्यो हवि: शमीष्व सुशमि शमीष्व.
हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि.. (१५)

हे मनुष्यो! हवि को मंत्रों के साथ (अग्नि में) देवताओं के लिए विसर्जित किया जाता है. हे हवि! आप अग्नि देव का शरीर हो. हवि को तैयार करने वाला ओखल और मूसल विशाल (बड़े) पत्थर और वनस्पति से तैयार किया जाता है. इन से देवताओं के लिए हवि तैयार की जाती है. देवताओं को हवि भेंट करने के लिए मूसल ग्रहण किया जाता है. मूसल श्रेष्ठ हवि तैयार कर के देवताओं को सुख प्रदान करें. हे मूसल! आप हवि तैयार करने के लिए आइए (पधारिए). (१५)

कुक्कुटोसि मधुजिह्व ऽ ꣳ इषमूर्जमावद त्वया वय ꣳ संघात ꣳ संघातं जेष्म
वर्षवृद्धमसि प्रति त्वा वर्षवृद्धं वेत्तु परापूत ꣳ रक्ष: परापूता ऽ अरातयोपहत ꣳ रक्षो
वायुर्वो विविनक्तु देवो व: सविता हिरण्यपाणि: प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना.. (१६)

हे शम्य (यज्ञ में काम आने वाला साधन)! आप कुक्कुट हैं यानी मुरगे की तरह जागरूक रहने वाले हैं. आप मधुर जीभ वाले (मीठा बोलने वाले) हैं. आप हमें ऊर्जस्वी बनाने और बल प्रदान करने की कृपा कीजिए. आप की कृपा से हम संघातों (संघर्षों) में दृढ़ता व संघातों में विजय प्राप्त करें. हे सूप! हे हवि! आप प्रतिवर्ष बरसात से बढ़ोतरी पाते हैं. यज्ञ बरसात की बढ़ोतरी करते हैं. यज्ञ देव आप को स्वीकार करने की कृपा करें. आप को पूरी तरह पवित्र बना लिया गया है. अशुद्धियों से आप की रक्षा कर ली गई है. शत्रुओं को दूर कर दिया गया है. वायु आप की रक्षा करें. वे आप के माध्यम से हवि को शुद्ध (फटकने) करने की कृपा करें. सविता देव अपने सोने के बिना छेद वाले हाथों से आप को ग्रहण करने की कृपा करें. (१६)

धृष्टिरस्यपाग्ने अग्निमामादं जहि निष्क्रव्याद ꣳ सेधा देवयजं वह.
ध्रुवमसि पृथिवीं दृ ꣳ ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य
वधाय.. (१७)

हे उपवेष देव (यज्ञ में काठ का पात्र जो अग्नि धारण करता है)! आप धैर्यवान हैं. आप देवताओं के लिए किए जाने वाले यज्ञ (अग्नि) को वहन करने की कृपा कीजिए. आप कच्ची चीजों और मांस को पकाने वाली अग्नि छोड़ दीजिए अर्थात् आप इन दोनों अग्नियों को धारण मत कीजिए. आप यज्ञ-अग्नि (गार्हपत्य) को धारण करने की कृपा कीजिए. आप ध्रुव (स्थिर) हैं. आप पृथ्वी पर दृढ़ता से बने रहने की कृपा कीजिए. आप ब्राह्मणों, क्षत्रियों व श्रेष्ठ जाति वालों को धारण करते हैं. हम शत्रुओं के वध के लिए आप को धारण करते हैं. (१७)

अग्ने ब्रह्म गृभ्णीष्व धरुणमस्यन्तरिक्षं दृ ꣳ ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि
सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय.
धर्त्रमसि दिवं दृ ꣳ ह ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि सजातवन्युपदधामि भ्रातृव्यस्य वधाय.
विश्वाभ्यस्त्वाशाभ्य ऽ उपदधामि चित: स्थोर्ध्वचितो भृगूणामङ्गिरसां तपसा
तप्यध्वम्.. (१८)

हे अग्नि! आप ब्राह्मणों को धारण करते हैं. आप अंतरिक्ष को दृढ़ बनाते हैं. आप ब्राह्मणों, क्षत्रियों व श्रेष्ठ जाति वालों को धारण करते हैं. हम शत्रुओं का वध करने के लिए आप को धारण करते हैं. आप सभी को चेतना देते हैं. आप हमें ऊर्ध्वगामी, स्थिरचित्त तथा भृगु और अंगिरस ऋषि के तप की तरह तेजस्वी बनाने की कृपा कीजिए. (१८)

शर्मास्यवधूत ꣳ रक्षोवधूता अरातयो दित्यास्त्वगसि प्रति त्वादितिर्वेत्तु.
धिषणासि पर्वती प्रति त्वादित्यास्त्वग्वेत्तु दिव: स्कम्भनीरसि धिषणासि पार्वतेयी
प्रति त्वा पर्वती वेत्तु.. (१९)

यज्ञ का आसन सुखदायी है. इस आसन से राक्षसों व दुष्टों को हटाया गया है. यह पृथ्वी का आवरण है. इसलिए पृथ्वी इसे अपना जाने. हे सिल (पत्थर)! आप पर्वत से उत्पन्न कर्मशक्ति हैं. इसलिए पृथ्वी आप को अपना जाने. हे शय्ये! आप स्वर्गलोक की रोक हैं. हे लोढ़े! आप घर्षण (रगड़) करने वाले हैं. आप सिल की पुत्री के समान हैं. इसलिए सिल आप को अपना जाने (१९).

धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा.
दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो व: सविता हिरण्यपाणि: प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण
पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोसि.. (२०)

हे हविधान्य! आप देवताओं को तृप्त कीजिए. आप प्राण, उदान (प्राणवायु) व्यान (शरीर में रहने वाली एक वायु) को धारण करते हैं. आप दीर्घायु देते हैं. पृथ्वी आप को धारण करती है. आप दूध रूप में अमृत हैं. सविता देव छिद्र रहित सोने के हाथों से आप को धारण करने की कृपा करें. (२०)

देवस्य त्वा सवितु: प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
सं वपामि समाप ऽ ओषधीभि: समोषधयो रसेन.
स ꣳ रेवतीर्जगतीभि: पृच्यन्ता ꣳ सं मधुमतीर्मधुमतीभि: पृच्यन्ताम्.. (२१)

सविता देव! आप प्रकाश पैदा करते हैं. उस प्रकाश में अश्विनी देव ओषधियों को अपने बाहुओं से बढ़ाते हैं. पूषा देव अपने हाथों से ओषधियों को बढ़ाते हैं. ओषधियां ओषधियों के रस से सिंच जाएं. वे संसार को अपने रस से सींचें और मधुरता प्राप्त करें. वे मधुरतायुक्त जल प्रवाहों से सिंच जाएं. (२१)

जनयत्यै त्वा संयौमीदमग्नेरिदमग्नीषोमयोरिषे त्वा घर्मोसि विश्वायुरुरुप्रथा ऽ उरु प्रथस्वोरु ते यज्ञपतिः प्रथतामग्निष्टे त्वचं मा हि ꣳ सीद्देवस्त्वा सविता श्रपयतु वर्षिष्ठेधि नाके.. (२२)

पानी और पिसे हुए चावल को मिलाया जाता है. फिर उसे अग्नि में पकाया जाता है. इस क्रिया से पुरोडाश (यज्ञ में आहुति देने के लिए पकाई गई टिकिया) बनाया जाता है. पुरोडाश यजमान को दीर्घायु व ऊर्जस्वी बनाता है. वह यजमान के यश को और फैलाता है. उसे अग्नि और सोम के लिए तैयार किया जाता है. सविता देव स्वर्गलोक की अग्नि से पुरोडाश पकाने की कृपा करें. (२२)

मा भेर्मा संविक्था ऽ अतमेरुर्यज्ञोतमेरुर्यजमानस्य प्रजा भूयात् त्रिताय त्वा द्विताय त्वैकताय त्वा.. (२३)

हे मनुष्यो! डरो मत. पीछे मत हटो. यज्ञ कार्य यजमान को संकट मुक्त करने वाला होता है. एक गुनी, दो गुनी और तीन गुनी कितनी ही प्रजा हो सभी को संकट मुक्त करने वाला होता है. (२३)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
आददेध्वरकृतं देवेभ्य ऽ इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणः सहस्रभृष्टिः शततेजा वायुरसि तिग्मतेजा द्विषतोवधः.. (२४)

हे सविता! आप दुनिया के लिए प्रकाश फैलाते हैं. हम अश्विनी देव की बाहुओं और पूषा देव के हाथों से आप को धारण करते हैं. हम देवताओं की तृप्ति के लिए यज्ञ करते हैं. आप इंद्र देव की दाहिनी भुजा हैं. आप अपने तेज से हजारों विकारों को जला देने वाले वायु हैं. आप अत्यंत प्रकाश युक्त व तीक्ष्ण तेजवान हैं. आप दोषियों का नाश करने की सामर्थ्य रखते हैं. (२४)

पृथिवि देवयजन्योषध्यास्ते मूलं मा हि ꣳ सिषं व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्या ꣳ शतेन पाशैर्योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्.. (२५)

हे पृथ्वी माता (देव)! आप में उपजने वाली ओषधियों को हमारे कारण नुकसान न पहुंचे. देवताओं के लिए हवन किया जा रहा है. उस के लिए (खोद कर) मिट्टी हटाई गई है. हे मिट्टी! आप गायों के बाड़े में जाइए. स्वर्गलोक आप पर अपनी कृपा बरसाए. हे सविता! आप पृथ्वी पालक हैं. आप हम से द्वेष करने वालों को अपने सैकड़ों पाशों से बांध दीजिए व उन्हें मुक्त मत कीजिए. (२५)

अपाररुं पृथिव्यै देवयजनाद्वध्यासं व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां पृथिव्या ꣳ शतेन पाशैर्योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्.
अररो दिवं मा पप्तो द्रप्सस्ते द्यां मा स्कन् व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्बधान

देव सवित: परमस्यां पृथिव्या ꣳ शतेन पाशैर्योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्.. (२६)

हम ने दुष्ट अररु नामक शत्रु को पृथ्वी से दूर कर दिया है. मिट्टी को निकाल कर जगह साफ कर दी है. अब उस मिट्टी से निवेदन करते हैं कि वह गायों के बाड़े में जाए. स्वर्गलोक पृथ्वी पर पर्याप्त बरसात करने की कृपा करे. सविता सिरजनहार हैं. वे हम से द्वेष करने वालों को सैकड़ों बंधनों से बांध दें और उन्हें कभी मुक्त न करें. (२६)

गायत्रेण त्वा छन्दसा परिगृह्णामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि.
जागतेन त्वा छन्दसा परिगृह्णामि.
सुक्ष्मा चासि शिवा चासि स्योना चासि सुषदा चास्यूर्जस्वती चासि पयस्वती च.. (२७)

हे मनुष्यो! हम यज्ञवेदिका को गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती छंदों वाली प्रार्थनाओं से रचते हैं. यज्ञवेदिका दर्शनीय, कल्याणकारिणी, ऊर्जस्विनी व अमृतवती है. (२७)

पुरा क्रूरस्य विसृपो विरप्शिन्नुदादाय पृथिवीं जीवदानुम्.
यामैरयँश्चन्द्रमसि स्वधाभिस्तामु धीरासो अनुदिश्य यजन्ते.
प्रोक्षणीरासादय द्विषतो वधोसि.. (२८)

हे परमेश्वर! आप वीरों के और क्रूर युद्धों में वीर यजमानों के सर्वस्व हैं. आप पृथ्वी पर जीवन दान व दानअनुदान की कृपा कीजिए. धीर पृथ्वी को चंद्रमा की ओर प्रेरित करने के उद्देश्य से स्वधा (यज्ञ में दी जाने वाली आहुति) के द्वारा यज्ञ करते हैं. हे याजको! आप यज्ञ में काम आने वाले साधनों को अपने पास ले कर बैठिए. ईश्वर हम से द्वेष करने वालों का वध करने की कृपा करें. (२८)

प्रत्युष्ट ꣳ रक्ष: प्रत्युष्टा ऽ अरातयो निष्टप्त ꣳ रक्षो निष्टप्ता ऽ अरातय:.
अनिशितोसि सपत्नक्षिद्वाजिनं त्वा वाजेध्यायै सम्मार्ज्मि.
प्रत्युष्ट ꣳ रक्ष: प्रत्युष्टा ऽ अरातयो निष्टप्त रक्षो निष्टप्ता ऽ अरातय:.
अनिशितासि सपत्नक्षिद्वाजिनीं त्वा वाजेध्यायै सम्मार्ज्मि.. (२९)

राक्षसों व शत्रुओं को नष्ट कर दिया गया है. हम पूर्णतया रक्षित हैं. अब हमें पत्नी सहित यज्ञ करने के लिए प्रवृत्त होना चाहिए. हमारे साधन भले ही उतने पैने नहीं हैं, परंतु उन्होंने राक्षसों और शत्रुओं को नष्ट कर दिया है. हमें पूरी तरह सुरक्षित बना लिया है. हम पत्नी सहित अन्न व बल की प्राप्ति के लिए यज्ञ करते हैं. हम अन्न व बल का ध्यान करते हुए आप को सम्मार्जित करते हैं. (२९)

अदित्यै रास्नासि विष्णोर्वेष्पोस्यूर्जे त्वादब्धेन त्वा चक्षुषावपश्यामि.
अग्नेर्जिह्वासि सुहूर्देवेभ्यो धाम्ने धाम्ने मे भव यजुषे यजुषे.. (३०)

हे अदिति देव! आप रसमय, विष्णु के वास स्थल व ऊर्जस्वी हैं. हम कमल जैसे नेत्रों से बारबार आप को देखते हैं. आप अग्नि की जीभ, देवताओं के निवास स्थल व सर्वत्र व्यापक हैं. हे यजमानो! आप धामधाम पर ऐसे देव को पुकारें व आमंत्रित करें. (३०)

सवितुस्त्वा प्रसव ऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः.
सवितुर्वः प्रसव ऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः.
तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि (३१)

सविता ने यज्ञ साधनों को उत्पन्न किया है. बिना छेद वाली पवित्र सूर्य की किरणों से इन यज्ञ-साधनों को शुद्ध करते हैं. आप तेजस्वी, चमकीले, अमृत देवताओं के प्रिय तथा अधृष्ट (विनयी) हैं. आप देवताओं के लिए किए जा रहे इस यज्ञ के प्रमुख साधन हैं. (३१)

दूसरा अध्याय

कृष्णोस्याखरेष्ठोग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बर्हिषे त्वा जुष्टां प्रोक्षामि बर्हिरसि स्रुग्भ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि.. (१)

हे समिधा! हम यज्ञ में इष्ट होने के कारण आप को पवित्र करते हैं. हे वेदिका! यज्ञ के लिए आप भी आवश्यक हैं. आप को भी (प्रक्षालित कर के) पवित्र करते हैं. हे कुशा (यज्ञ में प्रयोग आने वाली घास)! आप को भी हम (प्रक्षालित कर के) पवित्र करते हैं. (१)

अदित्यै व्युन्दनमसि विष्णोः स्तुपोस्यूर्णम्म्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थां देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानां पतये स्वाहा.. (२)

हे यज्ञजल! आप अदिति (पृथ्वी) को सींचते हैं. आप ओषधियों को सींचते हैं. हे स्तूप के आकार वाले कुशो! देवताओं के लिए नरम (कोमल) आसन के रूप में आप को फैलाया जाता है. हे यजमानो! आप देवताओं, पृथ्वीपति, पृथ्वीपालक और प्राणियों आदि के लिए आहुति अर्पित कीजिए. (२)

गन्धर्वस्त्वा विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽ ईडितः.
इन्द्रस्य बाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽ ईडितः.
मित्रावरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तां ध्रुवेण धर्मणा विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिड ऽ ईडितः.. (३)

विश्वावसु गंधर्व यज्ञ की परिधियों (घेरों) की रक्षा करने की कृपा करें. यजमान के सभी प्रकार के अनिष्ट (अमंगल) के निवारण के लिए अग्नि और यज्ञ की परिधियों की उपासना करते हैं. यज्ञपरिधि इंद्र की दाईं भुजा है. यजमान को संरक्षण देने वाली है. यजमान के सब प्रकार के अनिष्ट (अमंगल) निवारण के लिए अग्नि और यज्ञ की परिधि की उपासना करते हैं. मित्र और वरुण उत्तर से धर्म के साथ यज्ञ की परिधि को धारण करने की कृपा करें. हम यजमान के सभी प्रकार के अनिष्ट (अमंगल) का निवारण करने के लिए अग्नि और यज्ञ की परिधि की उपासना करते हैं. (३)

वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्त ंठ्ठ समिधीमहि. अग्ने बृहन्तमध्वरे.. (४)

हे अग्नि! आप यज्ञ में प्रमुख हैं. आप विशाल, तेजस्वी, कवि व भूत और भविष्य को जानने वाले हैं. हम समिधा से आप को प्रज्वलित करते हैं. (४)

समिदसि सूर्यस्त्वा पुरस्तात् पातु कस्याश्चिदभिशस्त्यै.
सवितुर्बाहू स्थ ऽ ऊर्णम्म्रदसं त्वा स्तृणामि स्वासस्थं देवेभ्य ऽ आत्वा वसवो रुद्रा ऽ आदित्याः सदन्तु.. (५)

हे समिधा! सूर्य आप की रक्षा करने की कृपा करे. हे कुश! सूर्य आप की रक्षा करने की कृपा करे. समिधा और कुश दोनों ही सविता देव की दोनों भुजाएं हो जाएं. हम यजमान भेड़ के बालों से बने आसन को बिछा रहे हैं. ये आसन हम देवताओं के लिए बिछाते हैं ताकि देवता सुखपूर्वक विराज सकें. वसु, रुद्र व आदित्य पधार कर आसन पर विराजने की कृपा करें. (५)

घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिय ंठ्ठ सद ऽ आसीद घृताच्यस्युपभृन्नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिय ंठ्ठ सद ऽ आसीद् घृताच्यसि ध्रुवा नाम्ना सेदं प्रियेण धाम्ना प्रिय ंठ्ठ सद ऽ आसीद प्रियेण धाम्ना प्रिय ंठ्ठ सद ऽ आसीद.
ध्रुवा असदन्नृतस्य योनौ ता विष्णो पाहि पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपतिं पाहि मां यज्ञन्यम्.. (६)

जुहू नामक यज्ञ साधन को घी प्रिय है. (घी) घृत-सिंचन के बाद वह प्रिय धाम (यज्ञस्थान) पर पधारने की कृपा करें. वह यजमानों को घृत देने की कृपा करें. उपभृत नामक यज्ञ साधन को (घी) घृत-सिंचन के बाद वह प्रिय धाम (यज्ञस्थान) पर पधारने की कृपा करें. ध्रुव नामक यज्ञ साधन को घी प्रिय है. घृत-सिंचन के बाद वह अपने प्रिय धाम (यज्ञस्थान) पर पधारने की कृपा करें. हे विष्णु! आप यज्ञस्थान पर पधारने व विराजने की कृपा कीजिए. आप यज्ञ, साधनों, उसे करने वालों और उस के सहायकों की रक्षा कीजिए. (६)

अग्ने वाजजिद्वाजं त्वा सरिष्यन्तं वाजजित ंठ्ठ सम्मार्ज्मि.
नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यः सुयमे मे भूयास्तम्.. (७)

हे अग्नि! आप अन्नदाता हैं. शक्तिमान लोग अन्न की प्राप्ति हेतु आप को सम्मार्जित (शुद्ध) करते हैं. हम आहुति के साथ देवताओं व पितरों को नमस्कार करते हैं. आप हमारे लिए कल्याणकारी होने की कृपा कीजिए. (७)

अस्कन्नमद्य देवेभ्य ऽ आज्य ंठ्ठ संभ्रियासमङ्घ्रिणा विष्णो मा त्वावक्रमिषं वसुमतीमग्ने ते च्छायामुपस्थेषं विष्णोः स्थानमसीत ऽ इन्द्रो वीर्यमकृणोदूर्ध्वोध्वर ऽ आस्थात्.. (८)

हे अग्नि! हम देवताओं को अर्पित करने के लिए पवित्र (शुद्ध) घी ले कर आए हैं. हे अग्नि! इंद्र ने अपने बल से यज्ञ की प्रतिष्ठा बढ़ाई. विष्णु ने अपने बल

से यज्ञ को उन्नति दी. आप अन्नदाता हैं. आप यज्ञ स्थल पर विराजमान हैं. हम आप की छत्रच्छाया में रहना चाहते हैं. हम सदैव यज्ञस्थल की पवित्रता को बनाए रखेंगे.(८)

अग्ने वेर्होत्रं वेर्दूत्यमवतां त्वां द्यावापृथिवी अव त्वं द्यावापृथिवी स्विष्टकृद्देवेभ्य ऽ इन्द्र ऽ आज्येन हविषा भूत्स्वाहा सं ज्योतिषा ज्योतिः.. (९)

हे अग्नि! आप यज्ञ की व्यवस्था और विधान को अच्छी तरह जानते हैं. आप देवताओं के दूत हैं. आप पृथ्वीलोक से स्वर्गलोक तक आहुति पहुंचाने की कृपा करते हैं. आप पृथ्वीलोक व स्वर्गलोक की रक्षा करने की कृपा कीजिए. इंद्र अन्य देवताओं सहित घी की हवि से तृप्त व ज्योति से ज्योति में एकाकार होने की कृपा करें. (९)

मयीदमिन्द्र ऽ इन्द्रियं दधात्वस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम्.
अस्माक ꣳ सन्त्वाशिषः सत्या नः सन्त्वाशिष ऽ उपहूता पृथिवी मातोपमां पृथिवी माता ह्वयतामग्निराग्नीध्रात्स्वाहा.. (१०)

हे इंद्र! आप हमें इंद्रमय बनाने की कृपा कीजिए. आप हमारे लिए धन धारण करने, हमें धनवान बनाने, आशीर्वाद प्रदान करने व हमारी आशाएं फलीभूत करने की कृपा कीजिए. आप हमें आशीर्वाद दीजिए. पृथ्वी माता के समान है. हम ने पृथ्वी माता की उपासना की है. हम यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित करते हैं. आप हमें अपने जैसा तेजोमय बनाएं. हम आप को लोकहित के लिए आहुति समर्पित करते हैं. (१०)

उपहूतो द्यौष्पितोप मां द्यौष्पिता ह्वयतामग्निराग्नीध्रात्स्वाहा.
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
प्रतिगृह्णाम्यग्नेष्ट्वास्येन प्राश्नामि.. (११)

हे यजमानो! हम ने स्वर्गलोक के पिता को अपने समीप (पास) आमंत्रित किया है. हम ने उस के पिता की उपासना की है. हम अग्नि का आह्वान करते हैं. आहुति हमारा कल्याण करने की कृपा करे. सविता देव ने आहुति उपजाई है. अश्विनीकुमार अपनी भुजाओं से इस हवि को ग्रहण करते हैं. पूषा देव दोनों हाथों से यज्ञ के इस अन्न को ग्रहण करते हैं. सभी देव अग्नि के मुख से अन्न ग्रहण करने (खाने) की कृपा करें. (११)

एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे.
तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव.. (१२)

हे सविता! हम आप के लिए इस विशाल यज्ञ का अनुष्ठान करते हैं. आप यज्ञपति हैं. आप इस यज्ञ की व हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (१२)

मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमं दधातु.
विश्वे देवास ऽ इह मादयन्तामो ३ म्प्रतिष्ठ.. (१३)

हे सविता! आप अपने वेगवान मन से घी का सेवन कीजिए. बृहस्पति देव इस यज्ञ का विस्तार करने व इस को धारण करने की कृपा करें. यह यज्ञ सभी देवताओं को आनंदित करने की कृपा करे. दोनों देव हमें प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. (१३)

एषा ते अग्ने समित्तया वर्धस्व चा च प्यायस्व.
वर्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषीमहि.
अग्ने वाजजिद्वाजं त्वा ससृवा ꣳ सं वाजजित ꣳ सम्मार्ज्मि.. (१४)

हे अग्नि! यह आप की बढ़ोतरी के लिए समिधा है. आप अपनी बढ़ोतरी के साथ हमारी भी बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. हम आप की बढ़ोतरी करते हैं. हम अपनी बढ़ोतरी पाते हैं. अग्नि अन्न उपजाते हैं. हम आप का सम्मार्जन करते हैं अर्थात् आप को जल से सींचते हैं. (१४)

अग्नीषोमयोरुज्जितिमनूज्जेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि.
अग्नीषोमौ तमपनुदतां योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेनापोहामि.
इन्द्राग्न्योरुज्जितिमनूज्जेषं वाजस्य मा प्रसवेन प्रोहामि.
इन्द्राग्नी तमपनुदतां योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मो वाजस्यैनं प्रसवेनापोहामि.. (१५)

हे अग्नि! हम वैसी ही विजयश्री पाना चाहते हैं, जैसी विजय सोम और अग्नि ने प्राप्त की है. अग्नि और सोम उन को दूर हटा दें जो हम से द्वेष करते हैं. वे उन को दूर हटा दें जिन से हम द्वेष करते हैं. हम अन्न से उस विजय के लिए प्रेरणा पाते हैं. (१५)

वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वादित्येभ्यस्त्वा संजानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्.
व्यन्तु वयोक्त ꣳ रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह.
चक्षुष्पा ऽ अग्नेसि चक्षुर्मे पाहि.. (१६)

वसुगणों, रुद्रगणों और आदित्यगणों को ये तीन परिधियां अर्पित की जाती हैं. मित्रगण और वरुण स्वर्गलोक एवं पृथ्वीलोक की वर्षा से उन की रक्षा करने की कृपा करें. पक्षी घी वाली हवि को खा कर मरुद्गणों का अनुकरण करने की कृपा करें. किरणों की तरह स्वर्गलोक में पहुंचने का अनुकरण करने की कृपा करें. अग्नि हमारे यज्ञ व हमारे नेत्रों के रक्षक हैं. वे हमारे यज्ञ व हमारे नेत्रों की रक्षा करें. (१६)

यं परिधिं पर्यधत्था ऽ अग्ने देव पणिभिर्गुह्यमानः.
तं त ऽ एतमनु जोषं भराम्येष नेत्त्वदपचेतयाता ऽ अग्नेः प्रियं पाथोपीतम्.. (१७)
(*मेत्त्वदपचेतयाता वै. य. अ.)

हे अग्नि! प्राणियों से बचाव के लिए आप के चारों ओर परिधि बनाई जाती

है. वह परिधि आप के अनुरूप है. वह परिधि गुप्त है. अग्नि इस परिधि को भरनेपूरने की कृपा करें. अग्नि के लिए प्रिय पाथेय समर्पित किया गया है. वे उन्हें स्वीकार करने की कृपा करें. (१७)

स ॐ स्रवभागा स्थेषा बृहन्तः प्रस्तरेष्ठाः परिधेयाश्च देवाः.
इमां वाचमभि विश्वे गृणन्त ऽ आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्व ॐ स्वाहा वाट्.. (१८)

हे देवगण! आप अपने आश्रम व अपनी परिधि (मर्यादा) में रहने की कृपा करें. हम आप सब की वाणी से वंदना करते हैं. आप कुश के आसन पर विराजिए और आनंदित होइए. आप सभी के लिए स्वाहा. (१८)

घृताची स्थो धुर्यौ पात ॐ सुम्ने स्थः सुम्ने मा धत्तम्.
यज्ञ नमश्च त ऽ उप च यज्ञस्य शिवे संतिष्ठस्व स्विष्टे मे संतिष्ठस्व.. (१९)

हे दो देव (जुहू और उपभृत)! आप दोनों घी से पूर्ण होइए. आप दोनों अच्छे मन वाले हो कर स्थित रहिए. आप हम लोगों के लिए अच्छा मन धारण करने की कृपा कीजिए. यज्ञ व उस के देव उपभृत को नमस्कार. आप हमारा कल्याण करने की भी कृपा कीजिए. आप हमारे इष्ट देव हैं. आप प्रतिष्ठित होने और हमें सुख प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१९)

अग्नेदब्धायोशीतम पाहि मा दिद्योः पाहि प्रसित्यै पाहि दुरिष्ट्यै पाहि दुरद्मन्या अविषं नः पितुं कृणु. सुषदा योनौ स्वाहा वाडग्नये संवेशपतये स्वाहा सरस्वत्यै यशोभगिन्यै स्वाहा.. (२०)

हे अग्नि! आप हमें शत्रुओं, शस्त्रों व दूषित (विषैले) भोजन से बचाइए. आप भोजन के उन विषैले तत्त्वों को दूर करने की कृपा कीजिए. आप का मूल स्थान सुखद हो. आप के लिए स्वाहा. आप के संरक्षण में रहने वालों, देवी तथा यश की बहन सरस्वती के लिए स्वाहा. (२०)

वेदोसि येन त्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोभवस्तेन मह्यं वेदो भूयाः.
देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित. मनसस्पत ऽ इमं देव यज्ञ ॐ स्वाहा वाते धाः.. (२१)

हे देवगण! आप ज्ञानमय हैं. आप हमें भी ज्ञानवान बनाने की कृपा कीजिए. आप हमारे लिए ज्ञान स्वरूप होइए. हम आप के गुण गाते हैं. आप मन के पालक हैं. यह यज्ञ देवों को समर्पित है. आप के लिए स्वाहा. वायु इस यज्ञ को धारण कर के इस का विस्तार करने की कृपा करें. (२१)

संबर्हिरङ्क्ता ॐ हविषा घृतेन समादित्यैर्वसुभिः सम्मरुद्भिः.
समिन्द्रो विश्वदेवोभिरङ्क्तां दिव्यं नभो गच्छतु यत् स्वाहा.. (२२)

हे इंद्र! कुश के समूह को घी युक्त करते हैं. कुश के समूह को घी युक्त कर के

समर्पित करते हैं. कुश के समूह विश्व के साथ दिव्य नभ, अरिष्यगण व वसुगणों के साथ दिव्य नभ तक जाएं. उन के लिए स्वाहा. (२२)

कस्त्वा विमुञ्चति स त्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुञ्चति तस्मै त्वा विमुञ्चति.
पोषाय रक्षसां भागोसि.. (२३)

कौन आप को छोड़ता है? किसलिए आप को छोड़ता है? वह आप को अन्य (याजकों और उन के परिजनों) के लिए छोड़ता है. जो भाग अवशिष्ट है, वह राक्षसों के पोषण के लिए है. (२३)

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा स ꣳ शिवेन.
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्.. (२४)

हम वर्चस्वी हों. हम दूध से अपने तन को पोषित करें. हमारे मन कल्याणमयी भावनाओं से युक्त हों. हमारे लिए धन धारण करने की कृपा करें. हमारे शरीर में जो भी कमी हो, वह पूरी करने की कृपा करें. (२४)

दिवि विष्णुर्व्यक्र ꣳ स्त जागतेन छन्दसा ततो निर्भक्तो योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मोन्तरिक्षे विष्णुर्व्यक्र ꣳ स्त त्रैष्टुभेन छन्दसा ततो निर्भक्तो योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः पृथिव्यां विष्णुर्व्यक्र ꣳ स्त गायत्रेण छन्दसा ततो निर्भक्तो योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मोस्मादन्नादस्यै प्रतिष्ठाया ऽ अगन्म स्वः सं ज्योतिषाभूम.. (२५)

विष्णु ने जगती छंद से स्वर्गलोक में पूरा भ्रमण किया है. उन्होंने जो हम से द्वेष करते हैं और जिन से हम द्वेष करते हैं, उन का नाश कर दिया है. उन्होंने त्रिष्टुप् का नाश कर दिया है. वे गायत्री छंद पृथ्वी से समाप्त करने की कृपा करें. अन्न से ऐसे शत्रुओं को हटा दिया गया है. हम स्वर्गलोक को पाएं तथा ज्योति संपन्न हो जाएं. (२५)

स्वयंभूरसि श्रेष्ठो रश्मिर्वर्चोदा ऽ असि वर्चो मे देहि. सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते.. (२६)

आप स्वयं भू, श्रेष्ठ भू, किरणमय भू व वर्चस्वी भू हैं. हम सूर्य की परिक्रमा के अनुसार ही परिक्रमा करते हैं. (२६)

अग्ने गृहपते सुगृहपतिस्त्वयाग्नेहं गृहपतिना भूयास ꣳ सुगृहपतिस्त्वं मयाग्ने गृहपतिना भूयाः.
अस्थूरि णौ गार्हपत्यानि सन्तु शत ꣳ हिमाः सूर्यस्यावृतमन्वावर्ते.. (२७)

हे अग्नि! आप घर के व अच्छे के स्वामी हैं. आप की कृपा से हम भी गृहपति व अच्छे गृहपति बनें. आप की कृपा से हम भी बारंबार अच्छे गृहपति बनें. हम अच्छे गृहस्थ हों. हम सौ वर्षों तक यज्ञ कर्म करें. हम सूर्य की परिक्रमा के अनुरूप अनुशासन का पालन करें. (२७)

अग्ने व्रतपते व्रतमचारिषं तदशकं तन्मेराधी दमहं य ऽ एवास्मि सोस्मि.. (२८)

हे अग्नि! आप व्रतपति हैं. हम भी आप के व्रतों के अनुसार चल कर सामर्थ्यवान बनते हैं. आप ने हमारी आकांक्षाएं फलीभूत की हैं. हम जैसे यज्ञ करते समय थे (यज्ञफल प्राप्त हो जाने पर भी) हम वैसे ही हैं. (२८)

अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा सोमाय पितृमते स्वाहा.
अपहता ऽ असुरा रक्षा ꣳ सि वेदिषदः.. (२९)

पितरों के लिए आहुति पहुंचाने वाले अग्नि के लिए स्वाहा. पितरों के साथी सोम के लिए स्वाहा. यज्ञ की वेदी से असुर और राक्षसगण दूर हो गए हैं. (२९)

ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना ऽ असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति.
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्.. (३०)

जो असुर रूप बदल कर या अन्य रूप में आ कर पितरों के लिए अर्पित आहुति को खा जाते हैं, आप इस तरह अपना भरणपोषण करने वाले नीच कार्य करने वाले राक्षसों को लोक से दूर करने की कृपा कीजिए. (३०)

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्.
अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत.. (३१)

जैसे बैल अपना भाग प्राप्त कर के मदमस्त हो जाते हैं, पुष्ट हो जाते हैं, वैसे ही पितृगण अपना भाग पा कर पुष्ट एवं मदमस्त हो जाते हैं. (३१)

नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वास ऽ आधत्त.. (३२)

पितरों के रस रूप को नमन. पितरों के शुष्क रूप को नमन. पितरों के जीवन रूप को नमन. पितरों के अन्न रूप को नमन. पितरों के पोषक रूप को नमन. पितरों के उत्साह रूप को नमन. पितरों के क्रोध रूप को नमन. पितरों के मन्यु रूप को नमन. हम पितरों को घर, वस्त्र आदि समर्पित करते हैं. पितर भी हमारे लिए घर, वस्त्र आदि धारण करने की कृपा करें. (३२)

आधत्त पितरो गर्भं कुमारं पुष्करस्त्रजम्. यथेह पुरुषोसत्.. (३३)

हे पितृगण! आप गर्भ में ही बालक के लिए अजस्र (भरपूर) पोषण प्रदान करने की कृपा कीजिए जिस से वह वीर बन सके. (३३)

ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्. स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्.. (३४)

ऊर्जा वहन करने वाली व ऊर्जामयी करने वाली, दूधमयी तथा अन्नमयी करने वाली जलधाराएं पितरों को तृप्त करने की कृपा करें. (३४)

तीसरा अध्याय

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्. आस्मिन् हव्या जुहोतन.. (१)

हे यजमानो! आप समिधा से अग्नि को प्रज्वलित करने व उस को जगाने की कृपा कीजिए. हे यजमानो! आप अतिथि से अग्नि को प्रज्वलित करने व उस में हवि प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१)

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन. अग्नये जातवेदसे.. (२)

हे यजमानो! आप समिधाओं से अच्छी तरह प्रज्वलित सर्वज्ञ अग्नि में पवित्र घी की आहुति प्रदान करने की कृपा कीजिए. (२)

तं त्वा समिद्भिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि. बृहच्छोचा यविष्ठ्य.. (३)

हे अग्नि! हम आप को समिधाओं व घी से प्रज्वलित कर बढ़ाते हैं. आप विशाल जौमयी ज्वालाओं से ऊंचे और प्रकाशित होने की कृपा कीजिए. (३)

उप त्वाग्ने हविष्मतीर्घृताचीर्यन्तु हर्यत. जुषस्व समिधो मम.. (४)

हे अग्नि! हवि एवं घृत वाली आहुतियां आप तक पहुंचें, आप का मन हरें. आप हमारे द्वारा भेंट की गई समिधाओं को स्वीकार करने की कृपा करें. (४)

भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा.
तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे.. (५)

हे अग्नि! आप भू, भुव (अंतरिक्ष) और स्वर्गलोक में विद्यमान हैं. पृथ्वी यज्ञ करने के लिए श्रेष्ठ स्थान प्रदान करती है. हम उसी पृथ्वी पर यज्ञ करने के लिए उस से पूर्व यज्ञ-वेदिका पर अग्नि को स्थापित करते हैं. हम अन्न से बल और स्वर्गलोक से दिव्यता धारण करें. हम पृथ्वी के समान महिमा प्राप्त करें. (५)

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन् मातरं पुरः. पितरं च प्रयन्त्स्वः.. (६)

अग्नि देव सर्वत्र भ्रमणशील व बहुरंगी लपटों वाले हैं. वह पृथ्वी माता के पास आसन पर विराजमान हैं. यज्ञ में वह प्रयत्नपूर्वक स्वर्गलोक पिता के पास पहुंच गए हैं. (६)

अन्तश्चरति रोचनास्य प्राणादपानती. व्यख्यन् महिषो दिवम्.. (७)

अग्नि का तेज प्राणवायु और अपानवायु के रूप में सभी प्राणियों के भीतर संचरण करता है. वे अपने उस तेज को और फैलाते हुए स्वर्गलोक को प्रकाशित करते हैं. (७)

त्रि ꣳ शद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते. प्रति वस्तोरह द्युभिः.. (८)

वाणी रूप में अग्नि का तेज दस के तिगुने (यानी तीस) स्थानों पर शोभा पाता है अर्थात् वाणी दिनरात के तीस मुहूर्त और महीने के तीस दिन के रूप में शोभित होती है. सूर्य के लिए भी स्तुति के रूप में वाणी का तेज धारण किया जाता है. दिन में प्रकाश रूप में अग्नि के लिए वाणी के रूप में स्तोत्र उचारे जाते हैं. (८)

अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा.
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा.
ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा.. (९)

अग्नि प्रकाश है. प्रकाश अग्नि है. प्रकाश स्वरूप अग्नि के लिए हम आहुति प्रदान करते हैं. सूर्य प्रकाश है. प्रकाश सूर्य है. हम प्रकाश स्वरूप सूर्य के लिए आहुति प्रदान करते हैं. वाणी अग्नि है. अग्नि वाणी है. वाणी स्वरूप अग्नि के लिए आहुति प्रदान करते हैं. वाणी सूर्य रूप है. सूर्य वाणी रूप है. हम सूर्य को आहुति प्रदान करते हैं. प्रकाश सूर्य रूप है. सूर्य प्रकाश रूप है. हम सूर्य को आहुति प्रदान करते हैं. (९)

सजूर्देवेन सवित्रा सजू रात्र्येन्द्रवत्या.
जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा.
सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या.
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा.. (१०)

सविता देव सहित और इंद्रयुक्त रात्रि सहित अग्नि को आहुति प्रदान करते हैं. इन देवताओं से युक्त (जुड़े हुए) अग्नि इस आहुति को ग्रहण करने की कृपा करें. सविता देव सहित इंद्रयुक्त उषा देवी के साथ सूर्य के लिए यह आहुति प्रदान करते हैं. सूर्य इस आहुति को स्वीकार करने की कृपा करें. (१०)

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचे माग्नये. आरे अस्मे च शृण्वते.. (११)

हम यज्ञ के समीप प्रयास कर रहे हैं (जा रहे हैं). हम अग्नि के लिए मंत्र उचार रहे हैं. वे हमारे समीप आने की कृपा करें और मंत्रों को सुनने की कृपा करें. (११)

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम्. अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति.. (१२)

हे अग्नि! आप मूर्धन्य (सर्वोच्च), स्वर्गलोक में स्थित, इस पृथ्वी के स्वामी

और भरणपोषण करने वाले हैं. आप जल में प्राणदायी शक्ति डालते हैं व जीवों को जिलाते हैं. (१२)

उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधस: सह मादयध्यै.
उभा दाताराविषा ꣳ रयीणामुभा वाजस्य सातये हुवे वाम्.. (१३)

हे इंद्र! हे अग्नि! हम यजमान आप दोनों देवताओं को यज्ञ में आमंत्रित करते हैं. हम आप दोनों को आहुति भेंट करते हैं. हम आप की आराधना करते हैं. आप अन्नधनसहित हमें मदमस्त बनाइए. आप अन्न और धन के दाता हैं. हम आप दोनों को ही अन्न और धन पाने के लिए यज्ञ में आमंत्रित करते हैं. (१३)

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथा:.
तं जानन्नग्न ऽ आरोहाथा नो वर्धया रयिम्.. (१४)

हे अग्नि! आप बारबार उत्पन्न होने वाले हैं. इसलिए यज्ञ की समाप्ति पर आप पुनः गृहस्थ के यहां जन्म लें अर्थात् प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल प्रकट हों. बाद में पुनः यज्ञ के लिए हमें समृद्ध करें. (१४)

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्य:.
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशेविशे.. (१५)

हे अग्नि! आप प्रथम हैं. आप देवताओं को आमंत्रित करते हैं. आप यज्ञवान हैं. यज्ञ में पुरोहितों द्वारा आप की उपासना और स्थापना की जाती है. आप को आप्नवान और भृगु आदि ऋषियों ने समय-समय पर वनों में प्रज्वलित किया. आप विलक्षण हैं. (१५)

अस्य प्रत्नामनु द्युत ꣳ शुक्रं दुदुह्रे अह्रय:. पय: सहस्रासामृषिम्.. (१६)

अग्नि देव चिरकाल से हैं. हम उन की कांति का अनुसरण करना चाहते हैं. यजमान ने दूध, दही आदि हवि की सामग्री से हजारों यज्ञ करने वाले ऋषियों की भांति दूध दुहा है. (१६)

तनूपा ऽ अग्नेसि तन्वं मे पाह्यायुर्दा ऽ अग्नेस्यायुर्मे देहि वर्चोदा ऽ अग्नेसि वर्चो मे देहि.
अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म ऽ आपृण.. (१७)

हे अग्नि! आप पुरोहित के तन के रक्षक हैं. आप हमारे भी तन की रक्षा करने की कृपा कीजिए. हे अग्नि! आप आयु देने वाले हैं. आप हमें (दीर्घ) आयु प्रदान करने की कृपा कीजिए. हे अग्नि! आप वर्चस्व (प्रभाव) प्रदाता हैं. आप हमें वर्चस्व प्रदान करने की कृपा कीजिए. हे अग्नि! आप हमारे शरीर की न्यूनता (कमियां) दूर कर के उसे पूर्ण करने की कृपा कीजिए. (१७)

इन्धानास्त्वा शत ꣳ हिमा द्युमन्त ꣳ समिधीमहि.

वयस्वन्तो वयस्कृत ॐ सहस्वन्तः सहस्कृतम्.
अग्ने सपत्नदम्भनमदब्धासो अदाभ्यम्.
चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय.. (१८)

हे अग्नि! आप प्रकाशमान व धनवान हैं. आप की कृपा से यजमान सौ वर्ष की आयु पाते हैं. आप आयुष्मान हैं. आप हमें भी आयुष्मान बनाने की कृपा कीजिए. आप शक्तिमान हैं. हमें भी शक्तिमान बनाने की कृपा कीजिए. आप अदम्य हैं. आप हमें पत्नी सहित सौ वर्षों तक प्रकाशित रखने की कृपा कीजिए. आप विलक्षण हैं. आप हमें कल्याण के लिए अपनी शरण में रखने की कृपा कीजिए. (१८)

सं त्वमग्ने सूर्यस्य वर्चसागथाः समृषीणा ॐ स्तुतेन.
सं प्रियेण धाम्ना समहमायुषा सं वर्चसा सं प्रजया स ॐ रायस्पोषेण ग्मिषीय.. (१९)

हे अग्नि! आप सूर्य से प्रभावित हैं. आप ऋषियों की स्तुतियों से युक्त हैं.आप आहुतिमय हैं. आप अपने प्रिय धाम से आयु, वर्चस्व, संतान, धनधान्य पोषण सहित पधारने की कृपा कीजिए. (१९)

अन्धस्थान्धो वो भक्षीय महस्थ महो वो भक्षीयोर्जस्थोर्ज वो भक्षीय रायस्पोषस्थ रायस्पोषं वो भक्षीय.. (२०)

हे गौओ! आप अन्न स्वरूपा हैं. आप की कृपा से अन्न हमारे लिए खाने योग्य होता है. आप रस से युक्त हैं. आप की कृपा से घी, दूध आदि रसीली चीजें खाने योग्य होती हैं. आप आदरणीया हैं. हमें आदर योग्य बनाने की कृपा कीजिए. आप धनवती हैं. आप हमें धनी बनाने की कृपा कीजिए. आप बलवती हैं. आप हमें भी बलवान बनाइए. आप की कृपा से हम पुष्ट हों. (२०)

रेवती रमध्वमस्मिन्योनावस्मिन् गोष्ठेस्मिँल्लोकेस्मिन् क्षये. इहैव स्त मापगात.. (२१)

हे रेवती (धन वाली गौओ)! आप यज्ञ के समय यज्ञस्थल पर प्रसन्नता के साथ रहें. आप दुही जाने से पहले बाड़े में विचरें. आप सदैव यजमान की आंखों में रहें. आप यहीं निवास कीजिए. आप कहीं मत जाइए. (२१)

स ॐ हितासि विश्वरूप्यूर्जामाविश गौपत्येन.
उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्द्धिया वयम्.
नमो भरन्त ऽ एमसि.. (२२)

हे गौओ! आप बहुत रूपों वाली और ऊर्जस्वी (तेजस्वी) हैं. आप यजमान को गोपति बनाती हैं. हे अग्नि! आप दिनरात यजमान के पास निवास करते हैं. हम श्रद्धा से भर कर आप को नमन करते हैं. हम आप के पास आते हैं. (२२)

राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्. वर्धमान ॐ स्वे दमे.. (२३)

हे अग्नि! आप प्रकाशमान हैं. आप यज्ञों में शोभित होते हैं. आप स्वर्गलोक को भी प्रकाशित करते हैं. आप गोपति व अमर हैं. आप स्वयं यज्ञ में बढ़ोतरी पाते हैं. हम उपासना से आप के पास आते हैं. (२३)

स नः पितेव सूनवेग्ने सूपायनो भव. सचस्वा नः स्वस्तये.. (२४)

हे अग्नि! आप यजमानों के पास उसी तरह बने रहें जैसे पिता पुत्र के पास बना रहता है. आप हम यजमानों के कल्याण के लिए सदैव यजमानों के पास रहने की कृपा कीजिए. (२४)

अग्ने त्वं नो अन्तम ऽ उत त्राता शिवो भवा वरूथ्यः.
वसुरग्निर्वसुश्रवा ऽ अच्छा नक्षि द्युमत्तम ॐ रयिं दाः.. (२५)

हे अग्नि! आप हमारे पास हैं. आप पालक, रक्षक, कल्याणकारी व भावी पीढ़ियों के दाता हैं. आप घर दाता, विश्वविख्यात, धन और कीर्तिदाता हैं. हमारी आंख के तारे व धनदाता हैं. (२५)

तन्त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः.
स नो बोधि श्रुधी हवमुरुष्याणो अघायतः समस्मात्.. (२६)

हे अग्नि! आप पवित्रतम हैं. आप स्वर्गलोक को भी प्रकाशित करने वाले हैं. आप से हम अपने अच्छे मन के लिए कामना करते हैं. आप से हम अच्छे मित्रों के लिए इच्छा करते हैं. आप पापियों से हमें बचाइए. आप हमें जागृत कीजिए. आप हमारा निवेदन सुनिए. (२६)

इड ऽ एह्यदित ऽ एहि काम्या ऽ एत. मयि वः कामधरणं भूयात्.. (२७)

हे इड़ा देवी! व हे अदिति देवी! आप यहां पधारिए. आप यहां पधारने की इच्छा कीजिए. हे इच्छित गौ! आप हमारी इच्छाओं को पूरा करने के लिए यहां पधारिए. (२७)

सोमान ॐ स्वरणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते. कक्षीवन्तं य ऽ औशिजः.. (२८)

हे ब्रह्मणस्पति! आप सोम का सेवन करने वालों को प्रकाशमान कीजिए. जैसे उशीज के पुत्र कक्षीवान को आप ने महिमावान बनाया, वैसे ही आप हमें भी महिमावान बनाने की कृपा कीजिए. (२८)

यो रेवान्यो अमीवहा वसुवित्पुष्टिवर्द्धनः. स नः सिषक्तु यस्तुरः.. (२९)

हे ब्रह्मणस्पति! आप रोगहारी, धनवान, ऐश्वर्यदाता, पुष्टिवर्धक व जल्दी काम समाप्त करने वाले हैं. आप हमारे पास पधारने की कृपा कीजिए. (२९)

मा नः श ॐ सो अररुषो धूर्तिः प्रणङ् मर्त्यस्य. रक्षा णो ब्रह्मणस्पते.. (३०)

हे ब्रह्मणस्पति! आप हमारी रक्षा करने की कृपा कीजिए. हम पर धूर्त, अयज्ञी (यज्ञ न करने वालों) लोगों का बुरा असर न हो. (३०)

महि त्रीणामवोस्तु द्युक्षं मित्रस्यार्यम्णः. दुराधर्षं वरुणस्य.. (३१)

मित्र देवता, अर्यमन देवता और दुर्धर्ष (प्रबल प्रतापी) वरुण तीनों देव हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (३१)

नहि तेषाममा चन नाध्वसु वारणेषु. ईशे रिपुरघश ꣳ सः.. (३२)

राह, कठिन स्थान और घर आदि स्थानों में भी तीनों देवों की कृपा से पापी शत्रु असर नहीं डाल सकता. (३२)

ते हि पुत्रासो अदितेः प्र जीवसे मर्त्याय. ज्योतिर्यच्छन्त्यजस्रम्.. (३३)

वे तीनों देव अदिति देव के पुत्र हैं. वे मनुष्यों को दीर्घ जीवन और कभी क्षीण न होने वाली ज्योति प्रदान करते हैं. (३३)

कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे.
उपोपेन्नु मघवन् भूय ऽ इन्नु ते दानं देवस्य पृच्यते.. (३४)

हे इंद्र! आप अहिंसक हैं. यजमान हविदाता हैं. यजमान की धनदान से सेवा करते हैं. आप ऐश्वर्य से युक्त हैं. आप यजमान को अधिक धन दान करने वाले हैं. (३४)

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि. धियो यो नः प्रचोदयात्.. (३५)

सविता वरण करने योग्य व सौभाग्यवान हैं. हम उन की बुद्धिपूर्वक उपासना करते हैं. वे हमारी बुद्धि को प्रेरित करने की कृपा करें. (३५)

परि ते दूडभो रथोस्माँ २ अश्नोतु विश्वतः. येन रक्षसि दाशुषः.. (३६)

हे देवगण! आप चारों ओर से हमारी रक्षा करने की कृपा करें. हे देवगण! आप का रथ हमारी रक्षा करने की कृपा करे. हे देवगण! आप चारों ओर से हमारी रक्षा करने की कृपा करें, ताकि हमारे धन की रक्षा हो सके. (३६)

भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्या ꣳ सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः.
नर्य प्रजां मे पाहि श ꣳ स्य पशून्मे पाह्यथर्य पितुं मे पाहि.. (३७)

हे अग्नि! हम अच्छी संतान और अच्छे वीरों वाले हो जाएं. हम सुवीरों का अच्छे अन्न से पोषण करें. आप हमारी संतान, हमारे पशुओं व पालक की रक्षा करने की कृपा करें. (३७)

आ गन्म विश्ववेदसमस्मभ्यं वसुवित्तमम्.
अग्ने सम्राडभि द्युम्नमभि सह ऽ आ यच्छस्व.. (३८)

हे अग्नि! आप बुलाने योग्य व सर्वविद् हैं. आप हमारे लिए श्रेष्ठ धन धारण करने व हमारे पास आने की कृपा कीजिए. आप सम्राट् हैं. आप शोभा सहित पधारिए और हमें भी शोभा प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३८)

अयमग्निर्गृहपतिर्गार्हपत्य: प्रजाया वसुवित्तम:.
अग्ने गृहपतेभि द्युम्नमभि सह आ यच्छस्व.. (३९)

ये अग्नि गृहपति हैं. हमारी संतान के लिए धन देने वाले हैं. हे अग्नि! आप गृहपति हैं. आप शोभा सहित पधारिए और हमें भी शोभा प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३९)

अयमग्नि: पुरीष्यो रयिमान् पुष्टिवर्धन:.
अग्ने पुरीष्याभि द्युम्नमभि सह ऽ आ यच्छस्व... (४०)

यह अग्नि दक्षिण, धनवान व पुष्टिवर्धक है. हे अग्नि! आप वैभववर्धक हैं. आप शोभा सहित पधारिए और हमें भी शोभा प्रदान करने की कृपा कीजिए. (४०)

गृहा मा बिभीत मा वेपध्वमूर्जं बिभ्रत ऽ एमसि.
ऊर्जं बिभ्रद्व: सुमना: सुमेधा गृहानैमि मनसा मोदमान:.. (४१)

हे घर! भयभीत और कांपिए मत. हम ऊर्जस्वी (तेजवान) होने के लिए आप के पास आते हैं. हम ओज संपन्न हो कर आप में प्रविष्ट होते हैं. हम श्रेष्ठ बुद्धिमान दु:खहीन हो कर आप में प्रविष्ट होते हैं. (४१)

येषामध्येति प्रवसन्येषु सौमनसो बहु:. गृहानुपह्वयामहे ते नो जानन्तु जानत:.. (४२)

प्रवास के समय जिस के बारे में सोचते हैं, अच्छे मन से उस घर में प्रसन्नता से रह रहे हैं. घर के पास रहने वाले देवता ज्ञानी हैं. वे देवता हमारे इस भाव को जानने की कृपा करें. (४२)

उपहूता ऽ इह गाव ऽ उपहूता ऽ अजावय:.
अथो अन्नस्य कीलाल ऽ उपहूतो गृहेषु न:.
क्षेमाय व: शान्त्यै प्रपद्ये शिव ꣳ शग्म ꣳ शंयो: शंयो:.. (४३)

हमारे घर में सुख से रहने के लिए गायों, भेड़ों व बकरियों को सम्मान से बुलाया गया है. अन्न की समृद्धि हेतु हम इन का आह्वान करते हैं. हम कल्याण व अनिष्ट निवारण हेतु आप का आह्वान करते हैं. हम लौकिक और पारलौकिक सुख पाना चाहते हैं. (४३)

प्रघासिनो हवामहे मरुतश्च रिशादस:. करम्भेण सजोषस:.. (४४)

हे मरुद्गणो! आप शत्रुओं की हिंसा करने वाले व हवि का भक्षण करने वाले हैं. हे मरुद्गणो! आप दही मिश्रित सत्तू का भक्षण करने वाले हैं. (४४)

यद्ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये.
यदेनश्चकृमा वयमिदं तदवयजामहे स्वाहा.. (४५)

जो पाप हम ने गांव, जंगल और सभा में किए हैं हम उन से मुक्त होने के लिए यज्ञ करते हैं, उन के लिए स्वाहा. जो पाप हम ने इंद्रियों से किए हैं हम उन से मुक्त होने के लिए यज्ञ करते हैं, उन के लिए स्वाहा. (४५)

मो षू ण ऽ इन्द्रात्र पृत्सु देवैरस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन्नवयाः.
महश्चिद्यस्य मीढुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः.. (४६)

हे इंद्र! आप शक्तिमान और देवों का पक्ष लेने वाले हैं. आप हमारा नाश मत कीजिए. आप महान और हवि को ग्रहण करने वाले हैं. आप यज्ञ वाली हवि ग्रहण करते हैं. हम मरुद्गण की भी वाणी से वंदना करते हैं. (४६)

अक्रन् कर्म कर्मकृतः सह वाचा मयोभुवा.
देवेभ्यः कर्म कृत्वास्तं प्रेत सचाभुवः.. (४७)

कर्मकर्ता वाणी के साथ मंत्रपाठ का कर्म करने की कृपा करें. परस्पर प्रीतिपूर्वक रहने वाले यजमानगण देवताओं के अनुष्ठान कर के प्रस्थान करने की कृपा करें. (४७)

अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः.
अव देवैर्देवकृतमेनोयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि.. (४८)

हे जलप्रवाह! आप नीचे की ओर बहने वाले और बहुत तीव्र वेग वाले हैं. फिर भी धीमी गति से बहने की कृपा कीजिए. आप देवताओं के प्रति किए गए पाप धोने के लिए पधारे हैं. आप दुःखदायी शत्रुओं से हमारी रक्षा करने की कृपा कीजिए. (४८)

पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत. वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ्ँ शतक्रतो.. (४९)

हे दर्वि देवी! आप पास स्थित अन्न से परिपूर्ण होने की कृपा कीजिए. आप इंद्र की ओर जाने की कृपा कीजिए. वे सैकड़ों यज्ञ करने वाले हैं. हम हवि रूप अन्न रस को आपस में बेचें (आदानप्रदान करें). (४९)

देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे.
निहारं च हरासि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा.. (५०)

(इंद्र कहते हैं) हे यजमान! आप हमें हवि प्रदान कीजिए. हम आप को (सुफल) प्रदान करेंगे. आप निश्चित (रूप से) हवि धारण कीजिए. हम आप को अभीष्ट फल देंगे. (यजमान कहते हैं) हे इंद्र! हम निश्चय ही आप को हवि प्रदान करते हैं. आप भी हमारे लिए अन्न प्रदान कीजिए. आप के लिए स्वाहा. (५०)

अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽ अधूषत.
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी.. (५१)

हम ने यज्ञ में जो हवि पितरों के लिए प्रदान की है, उसे पितरों ने स्वीकार कर लिया है. स्वीकार कर के उस हवि का सेवन भी कर लिया है. स्वयं प्रकाशित ब्राह्मणों ने नई ऋचाओं से स्तुति शुरू कर दी. हे इंद्र! अब इस यज्ञ में पधारने के लिए 'हरी' नामक घोड़ों को रथ में जोतने की कृपा कीजिए. (५१)

सुसन्दृशं त्वा वयं मघवन्वन्दिषीमहि.
प्र नूनं पूर्णबन्धुर स्तुतो यासि वशाँ २ अनु योजा न्विन्द्र ते हरी.. (५२)

हे इंद्र! आप धनवान हैं. आप सभी को अच्छी और समान दृष्टि से देखते हैं. हम सब आप की उपासना करते हैं. आप निश्चय ही हम सभी के पूर्ण बंधु हैं. आप स्तुति करने वालों के वश में रहते हैं.आप उन की स्तुतियों का अनुकरण करते हैं. आप उन की इच्छा पूरी करने के लिए रथ में 'हरी' नामक घोड़ों को जोतने की कृपा कीजिए. (५२)

मनो न्वाह्वामहे नाराश ꣳ सेन स्तोमेन. पितॄणां च मन्मभिः.. (५३)

हम वीर पुरुषों की गाथाओं को गाने वाले मंत्रों से पितरों को आमंत्रित करते हैं. हम पितरों को मन से बार-बार आमंत्रित करते हैं. (५३)

आ न ऽ एतु मनः पुनः क्रत्वे दक्षाय जीवसे. ज्योक् च सूर्यं दृशे.. (५४)

हमारा यह मन (पितृलोक से) पुनः आए. यज्ञ कार्य के लिए जीवलोक में पधारने की कृपा करे. हम बारबार सूर्य का प्रकाश देख सकें. (५४)

पुनर्नः पितरो मनो ददातु दैव्यो जनः. जीवं व्रात ꣳ सचेमहि.. (५५)

पितृगण! पुनः हमारे मन को श्रेष्ठ कार्यों के लिए प्रेरित करने की कृपा करें. ताकि हम जीवों और घर वालों की सेवा कर सकें. (५५)

वय ꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः. प्रजावन्तः सचेमहि.. (५६)

हे पितरो! आप सोम व्रत वाले हैं. हम आप के प्रति पितृकार्यों में मन और तन लगाए हुए हैं. उसे धारण किए हुए हैं. हम संतानवान सचित्त आप की सेवा में लगे रहें. (५६)

एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राम्बिकया तं जुषस्व स्वाहैष ते रुद्र भाग ऽ आखुस्ते पशुः.. (५७)

हे रुद्र! यह आप का भाग है. आप अपनी पत्नी अंबिका के साथ इसे ग्रहण करने की कृपा कीजिए. आप के लिए स्वाहा. हे रुद्र! यह भाग आप के पशु चूहे के लिए अर्पित है. (५७)

अव रुद्रमदीमह्यव देवं त्र्यम्बकम्.
यथा नो वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्यवसाययात्.. (५८)

रुद्र देव व त्र्यंबक को हम लोगों की रक्षा करनी चाहिए. वे हमारे लिए आयुकारी (बढ़ोतरी करने वाले), श्रेयकारी व व्यवसायों की बढ़ोतरी करने वाले हों. (५८)

भेषजमसि भेषजं गवेश्वाय पुरुषाय भेषजम्. सुखं मेषाय मेष्यै.. (५९)

हे रुद्र! आप रोग निवारक ओषधि की भांति कष्ट निवारक हैं. आप हमारे घोड़ों के लिए ओषधि प्रदान कीजिए. आप हमारे व्यक्तियों के लिए ओषधि प्रदान कीजिए. हम अपने भेड़ और अन्य पशुओं की आप से कुशलता चाहते हैं. (५९)

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्.
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्
त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्.
उर्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः.. (६०)

हे रुद्र! आप तीन दृष्टियों वाले हैं. हम आप की उपासना करते हैं. आप जीवन में सुगंध फैलाने व पौष्टिकता बढ़ाने वाले हैं. हमें संरक्षण प्रदान करते हैं. हम सांसारिक बंधनों से, वृक्ष से अलग हुए फल की भांति अलग हो जाएं; पर अमरता से नहीं. (६०)

एतत्ते रुद्रावसं तेन परो मूजवतोतीहि.
अवततधन्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा ऽ अहि ꣳ सन्नः शिवोतीहि.. (६१)

हे रुद्र! आप अपने बचे हुए हवि-भाग को साथ ले कर मूंजवत पर्वत पार कर जाइए. आप अपना धनुष कपड़ों से ढक दीजिए. आप कल्याण करने वाले हैं. आप पर्वत को पार कर के पधार जाइए. (६१)

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्. यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्.. (६२)

जमदग्नि की तीन अवस्थाएं हैं. कश्यप की तीन अवस्थाएं हैं. देवताओं की तीन अवस्थाएं हैं. हमारी भी (वैसी ही) तीन अवस्थाएं हों. (६२)

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हि ꣳ सीः.
नि वर्त्तयाम्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय.. (६३)

आप का नाम ही शिव (कल्याणकारी) है. धारदार शस्त्र आप के पिता हैं. आप को हमारा नमन. आप हमें कभी कष्ट न दें. हम आयु, अन्न, प्रजनन, धन व पोषण के लिए आप से निवेदन करते हैं. हम अच्छी संतान एवं अच्छे वीर्य के लिए आप से निवेदन करते हैं. (६३)

चौथा अध्याय

एदमगन्म देवयजनं पृथिव्या यत्र देवासो अजुषन्तविश्वे.
ऋक्सामाभ्या ꣳ सन्तरन्तो यजुर्भी रायस्पोषेण समिषा मदेम.
इमा ऽ आप: शमु मे सन्तु देवीरोषधे त्रायस्व स्वधिते मैन ꣳ हि ꣳ सी:.. (१)

जिस यज्ञ स्थान पर सारे देवता प्रसन्न होते हैं, हम सभी यजमान उसी स्थल पर इकट्ठे हुए हैं. ऋग्वेद और सामवेद के मंत्रों से हम यज्ञ के पार जाते हैं. यजुर्वेद के मंत्रों से यज्ञ करते हुए हम धन और पोषण प्राप्त करते हैं. ये जल हमारे लिए शांतिदायी हों. दिव्य गुणों वाली ओषधियां हमें रोगों से बचाएं. ये अस्त्रशस्त्र (अनावश्यक) हिंसाकारी न हों. (१)

आपो अस्मान्मातर: शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्व: पुनन्तु.
विश्व ꣳ हि रिप्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्य: शुचिरा पूत एमि.
दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा ꣳ शग्मां परि दधे भद्रं वर्णं पुष्यन्.. (२)

जल हमारी मां है. जल हमें शोधित (शुद्ध) करने की कृपा करे. घी से जो जल झरता है, वह हमें पवित्र करने की कृपा करे. प्रवाहित होता हुआ जल सभी पापों को धो दे. जल से हम शुद्ध और पवित्र होते हैं. हे रेशमी वस्त्र! आप दीक्षातपस देव का शरीर हो. आप कोमल, सुखद, कल्याणकारी व श्रेष्ठ (सुंदर) रंग वाले हैं. हम आप को (यज्ञ में) धारण करते हैं. (२)

महीनां पयोसि वर्चोदा ऽ असि वर्चो मे देहि.
वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा ऽ असि चक्षुर्मे देहि.. (३)

आप गायों का दूध हैं. आप वर्चस्व (चमक) देने वाले हैं. आप हमें वर्चस्व प्रदान कीजिए. आप वृत्र की आंख की पुतली हैं. आप आंख देने वाले हैं. आप हमें आंख प्रदान कीजिए. (३)

चित्पतिर्मा पुनातु वाक्पतिर्मा पुनातु देवो मा सविता पुनात्वच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभि:.
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्काम: पुने तच्छकेयम्.. (४)

आप चित्त (मन) के पति (स्वामी) हैं. आप हमें पवित्र कीजिए. आप वाणी के स्वामी हैं. आप हमें पवित्र बनाइए. दोष (छिद्रों) से रहित सविता देव हमें पवित्र करने की कृपा करें. सूर्य अपनी किरणों से हमें पवित्र बनाएं. हे पवित्रपति! हम आप के पुत्र हैं. हम पवित्र हो कर अपनी मनोकामना पूर्ण करें, ताकि हम और अधिक यज्ञ करने योग्य हो सकें. (४)

आ वो देवास ऽ ईमहे वामं प्रयत्यध्वरे. आ वो देवास ऽ आशिषो यज्ञियासो हवामहे.. (५)

हे देवताओ! हम इस यज्ञ के आरंभ में अपनी इच्छापूर्ति के लिए आप को आमंत्रित करते हैं. हे देवताओ! हम याज्ञिक (यज्ञ करने वाले) आशीर्वाद और यज्ञ फल की प्राप्ति के लिए आप का आह्वान करते हैं. (५)

स्वाहा यज्ञं मनसः स्वाहोरोरन्तरिक्षात्स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या ꣳ स्वाहा वातादारभे स्वाहा.. (६)

हे यज्ञ देव! हम मन से यज्ञ करते हैं. उन के लिए स्वाहा. अंतरिक्षलोक, स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक के लिए स्वाहा. हम वायु को यज्ञ के आरंभ में ही आहुति अर्पित करते हैं. (६)

आकूत्यै प्रयुजेग्नये स्वाहा मेधायै मनसेग्नये स्वाहा दीक्षायै तपसेग्नये स्वाहा सरस्वत्यै पूष्णेग्नये स्वाहा.
आपो देवीर्बृहतीर्विश्वशम्भुवो द्यावापृथिवी उरो अन्तरिक्ष.
बृहस्पतये हविषा विधेम स्वाहा.. (७)

अग्नि यज्ञ के संकल्प की प्रेरणा देने वाले हैं. उन के लिए स्वाहा. अग्नि यज्ञ की बुद्धि देते हैं. यज्ञ करने में मन को प्रेरित करते हैं. अग्नि के लिए स्वाहा. दीक्षा और तप की सिद्धि हेतु अग्नि को यह आहुति दी जाती है. सरस्वती देवी के लिए स्वाहा. पूषा देव के लिए स्वाहा. अग्नि के लिए स्वाहा. हे जल देव! आप के लिए स्वाहा. संसार के पालक शंभु देव के लिए स्वाहा. स्वर्गलोक के लिए स्वाहा. पृथ्वीलोक के लिए स्वाहा. विशाल अंतरिक्षलोक के लिए स्वाहा. हम बृहस्पति के लिए हवि समर्पित करते हैं. उन के लिए स्वाहा. (७)

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम्.
विश्वो राय ऽ इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा.. (८)

सविता देव सभी देवों का नेतृत्व करने वाले हैं. वे वरेण्य (श्रेष्ठ) गुणों वाले हैं. हम उन की मित्रता पाना चाहते हैं. हम उन से सभी प्रकार के वैभव चाहते हैं. हम सब के लिए उन से धन प्राप्ति की चाह रखते हैं. हम स्वर्गदायी वैभव (यशस्वी) चाहते हैं. हम प्रजा का पोषण करने के लिए धन चाहते हैं. सविता देव के लिए स्वाहा. (८)

ऋक्सामयोः शिल्पे स्थस्ते वामारभे ते मा पातमास्य यज्ञस्योदृचः.
शर्मासि शर्म मे यच्छ नमस्ते अस्तु मा मा हि ꣳ सीः.. (९)

हे ऋग्वेद के देव! हे सामवेद के देव! हे शिष्य स्थित देव! हम यज्ञ में गाई गई ऋचाओं से आप का स्पर्श करते (आप तक पहुंचते) हैं. आप ऋचाओं का गान करते समय हमारी रक्षा करने की कृपा कीजिए. आप आश्रय (सुख) दाता हैं. आप हमें आश्रय (सुख) देने की कृपा कीजिए. आप को नमस्कार है. आप हमें कष्ट मत दीजिए. (९)

ऊर्गस्याङ्गिरस्यूर्णम्रदा ऊर्जं मयि धेहि.
सोमस्य नीविरसि विष्णोः
शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि.
उच्छ्रयस्व वनस्पत ऽ ऊर्ध्वो मा पाह्य ꣳ हस ऽ आस्य यज्ञस्योदृचः.. (१०)

हे यज्ञमेखला! आप अंगों को ऊर्जा प्रदान करती हैं. आप मुझे ऊर्जा धारण कराइए. आप सोम की नीवी हो. आप विष्णु को भी सुख प्रदान करती हैं. आप यजमानों को भी सुख प्रदान कीजिए. आप इंद्र की योनि हैं. आप खेती को समृद्धि दीजिए. आप वनस्पति को उन्नतिवान बनाइए. हमें यज्ञ की ऋचाएं गाते समय पाप से बचाने की कृपा कीजिए. (१०)

व्रतं कृणुताग्निर्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः.
दैवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधां यज्ञवाहस ꣳ सुतीर्था नो ऽ असद्वशे.
ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्षक्रतवस्ते नोवन्तु ते नः पान्तु तेभ्यः स्वाहा.. (११)

हे यजमानो! अग्नि ब्रह्म व यज्ञ हैं. आप उन के प्रति व्रत का पालन कीजिए. वनस्पतियां यज्ञ के योग्य हैं. हम बुद्धि की देवी को मानते हैं. हम सुख व मनोकामना की पूर्ति के लिए उपासना करते हैं. हम यज्ञवाही वाणी धारण करना चाहते हैं. श्रेष्ठ बुद्धि हमारे वश में रहे. जो देव मन में (संकाय आदि) उपजाते हैं, (संकल्पादि में) मन को लगाते हैं, जो देव दक्ष संकल्प वाले हैं, वे देव यज्ञ में रक्षा करने की कृपा करें. वे देव हमारी रक्षा करने की कृपा करें. उन सभी देवों के लिए स्वाहा. (११)

श्वात्राः पीता भवत यूयमापो अस्माकमन्तरुदरे सुशेवाः.
ता ऽ अस्मभ्यमयक्ष्मा ऽ अनमीवा ऽ अनागसः स्वदन्तु देवीरमृता ऽ ऋतावृधः.. (१२)

हे देव! आप जल रूप हैं. हम आप का सेवन करते हैं. आप हमारे पेट के भीतर (पुष्टिकारक हो कर) सुख दीजिए. हमारे लिए जल क्षयरोगकारी न हों. जल हमारी सामान्य (रोजमर्रा की) दिक्कतों (बाधाओं) को दूर करने वाले, दिव्य, अमृत स्वरूप एवं स्वादिष्ट हो.यज्ञ में ऋत (सत्य) की बढ़ोतरी करने वाले हों. (१२)

इयं ते यज्ञिया तनूरपो मुञ्चामि न प्रजाम्.
अ ꣳ होमुचः स्वाहाकृताः पृथिवीमाविशत पृथिव्या सम्भव.. (१३)

हे यज्ञ देव! पृथ्वी का शरीर यज्ञ करने योग्य है. हम इस में जल छोड़ते हैं. प्रजा (जनता) के लिए लाभदायी जल नहीं छोड़ते हैं. आप हमें इस पाप से मुक्त कीजिए. स्वाहा के रूप में छोड़ा गया जल पृथ्वी में प्रवेश कर के पृथ्वी की मिट्टी में मिल कर एकमेक हो जाए, आप ऐसी कृपा कीजिए. (१३)

अग्ने त्व ꣳ सु जागृहि वय ꣳ सु मन्दिषीमहि.
रक्षा णो ऽ अप्रयुच्छन् प्रबुधे नः पुनरकृधि.. (१४)

हे अग्नि! आप अच्छी तरह (भलीभांति) जागिए (प्रज्वलित होइए). हम यजमान भलीभांति नींद का आनंद लेते हैं. आप हमारी रक्षा व हमें प्रबुद्ध कीजिए. आप हमें विविध कामों में लगाइए. (१४)

पुनर्मनः पुनरायुर्म ऽ आगन् पुनः प्राणः पुनरात्मा म ऽ आगन् पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म ऽ आगन्.
वैश्वानरो अदब्धस्तनूपा ऽ अग्निर्नः पातु दुरितादवद्यात्.. (१५)

मन फिर से आ गया. आयु पुनः आ गई. पुनः प्राण प्राप्त हो गए. पुनः आत्मा प्राप्त हो गई. पुनः नेत्र मिल गए. पुनः कान मिल गए. हे अग्नि! आप सब का कल्याण चाहते हैं. आप शरीर के रक्षक हैं. आप का दमन नहीं किया जा सकता. हे अग्नि! आप हमें पापों व बुरे कामों से बचाएं. (१५)

त्वमग्ने व्रतपा ऽ असि देव ऽ आ मर्त्येष्वा त्वं यज्ञेष्वीड्यः.
रास्वेयत्सोमा भूयो भर देवो नः वसोर्दाता वस्वदात्.. (१६)

हे अग्नि! आप व्रतपालक देवताओं, मनुष्यों में पूजनीय एवं यज्ञ में आराधनीय (आराधना योग्य) हैं. हे सोम! आप हमें भरपूर धन दीजिए. आप हमें इतना धन दीजिए कि अपने साथसाथ हम लोगों का भी भला कर सकें. सविता देव धनदाता हैं. उन्होंने भी हमें बहुत धन देने की कृपा की है. (१६)

एषा ते शुक्र तनूरेतद्वर्चस्तया सम्भव भ्राजं गच्छ.
जूरसि धृता मनसा जुष्टा विष्णवे.. (१७)

हे अग्नि! आप चमकीले हैं. यह घी आप के शरीर को बढ़ा रहा है. चमकती और ऊपर उठती हुई आप की लपटें और ऊपर आकाश तक जाएं. हम ने मन से वाणी धारण की है. यह वाणी और अधिक वेगवान व विष्णु को संतुष्ट करने वाली हो. (१७)

तस्यास्ते सत्यसवसः प्रसवे तन्वो यन्त्रमशीय स्वाहा.
शुक्रमसि चन्द्रमस्यमृतमसि वैश्वदेवमसि.. (१८)

हे अग्नि! आप सत्य स्वरूप हैं. हम भी आप के उस सत्य स्वरूप को पाएं. अर्थात् आप इसे हमारे शरीर में भी उपजाइए. हम आप का यह अनुशासन (यंत्र) पा सकें. आप के लिए आहुति प्रदान करते हैं. आप चमकीले, चंद्र, अमृत व सब के देव हैं. (१८)

चिदसि मनासि धीरसि दक्षिणासि क्षत्रियासि यज्ञियास्यदितिरस्युभयतः शीर्ष्णी.
सा नः सुप्राची सुप्रतीच्येधि मित्रस्त्वा पदि बध्नीतां पूषाध्वनस्पात्विन्द्रायाध्यक्षाय.. (१९)

हे मंत्रवाणी! आप चित्त, मन, धीर, दक्षिण, क्षत्रिय व यज्ञ करने योग्य हैं. आप अदिति, दोनों ओर से सिर वाली पूर्व व पश्चिम दिशा वाली एवं मित्र हैं. आप के पैरों में (प्रेम भाव का) बंधन (बेड़ी) डालना चाहते हैं. इंद्र यज्ञ के अध्यक्ष हैं. हम उन्हें प्रसन्न करना चाहते हैं. हम पूषा देव से अनुरोध करते हैं कि वे यज्ञ के मार्ग की रक्षा करने की कृपा करें. (१९)

अनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्योनु सखा सयूथ्यः.
सा देवि देवमच्छेहीन्द्राय सोम ꣳ रुद्रस्त्वा वर्त्तयतु स्वस्ति सोमसखा पुनरेहि.. (२०)

हे वाग् देवी! आप को इंद्र के लिए सोम लेने जाना है. इस के लिए आप को माता, पिता, भाई, बहन, मित्रगण और पड़ोसी अनुमति प्रदान करने की कृपा करें. सोम लेने के बाद रुद्र देव आप को हमारी ओर लाने व हमारा कल्याण करने की कृपा करें. आप सोमसखा को ले कर पुनः यहां आने की कृपा करें. (२०)

वस्व्यस्यदितिरस्यादित्यासि रुद्रासि चन्द्रासि.
बृहस्पतिष्ट्वा सुम्ने रम्णातु रुद्रो वसुभिरा चके.. (२१)

हे वाग् देवी! आप वसु, अदिति, रुद्र तथा चंद्र हैं. बृहस्पति रुद्र और वसुगण के साथ आप की रक्षा करने की कृपा करें. बृहस्पति आप के श्रेष्ठ मन में रमण करने की कृपा करें. (२१)

अदित्यास्त्वा मूर्द्धन्नाजिघर्मि देवयजने पृथिव्या ऽ इडायास्पदमसि घृतवत् स्वाहा.
अस्मे रमस्वास्मे ते बन्धुस्त्वे रायो मे रायो मा वय ꣳ रायस्पोषेण वियौष्म तोतो रायः.. (२२)

हे वाग् देवी! आप मूर्धन्य हैं. हम आप को देवताओं के यज्ञ में घी से भरी हुई हवि प्रदान करते हैं. आप पृथ्वी की श्रेष्ठ देवियों में स्थान रखती हैं. आप यह घी वाली आहुति स्वीकार कीजिए. आप धनवान हैं. आप अपने धन से हमें पोसिए. आप अपने धन से हमें वंचित मत कीजिए. हम आप के बंधु हैं. (२२)

समख्ये देव्या धिया सं दक्षिणयोरुचक्षसा.
मा म ऽ आयुः प्रमोषीर्मो ऽ अहं तव वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि.. (२३)

हे वाग् देवी! आप दक्षिणा के योग्य हैं. आप ने बुद्धिपूर्वक हमें देखा है. आप हमारी (सपरिवार) आयु क्षीण मत कीजिए यानी हमें दीर्घायु बनाइए. हे देवी! हम भी आप की आयु क्षीण न करें. आप की दया दृष्टि से हम वीर पुत्र पाएं. (२३)

एष ते गायत्रो भाग ऽ इति मे सोमाय ब्रूतादेष ते त्रैष्टुभो भाग ऽ इति मे सोमाय ब्रूतादेष ते जागतो भाग ऽ इति मे सोमाय ब्रूताच्छन्दोनामाना ꣳ साम्राज्यं गच्छेति मे सोमाय ब्रूतादास्माकोसि शुक्रस्ते ग्रह्यो विचितस्त्वा वि चिन्वन्तु.. (२४)

हे सोम! यह आप का गायत्री (छंद) का भाग है. यह सोम के लिए त्रिष्टुप् (छंद) का भाग है. यह हमारा सोम के लिए जगती (छंद) का भाग है. आप (पुरोहित) हमारी ओर से सोम के लिए यह निवेदन करें. आप सोम से यह भी निवेदन करें कि वह हमारे हैं. शुक्र आदि ग्रह उन के नियंत्रण में हैं. सोचविचार (चिंतन) कर के ही आप का चयन (ग्रहण) किया जाता है. (२४)

अभि त्यं देव ꣳ सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसव ꣳ रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्. ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा ऽ अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः. प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि.. (२५)

हे सविता देव! आप स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक के बीच में विराजमान हैं. आप विद्वान, सत्यवान व रत्नों के धाम हैं. आप विद्वानों द्वारा चाहे गए हैं. आप ऊंचाई की ओर जाने वाले, चमकदार, सुनहरे हाथों व श्रेष्ठ कार्यों वाले हैं. आप हम पर अपनी कृपा बनाए रखें. हम आप की अर्चना करते हैं. हम प्रजा के लिए आप की उपासना करते हैं. प्रजा सांस लेने में आप का अनुसरण करती है. आप भी प्रजा का अनुसरण करते हुए सांस लेने की कृपा करें. (२५)

शुक्रं त्वा शुक्रेण क्रीणामि चन्द्रं चन्द्रेणामृतममृतेन.
सग्मे ते गौरस्मे ते चन्द्राणि तपसस्तनूरसि प्रजापतेर्वर्णः
परमेण पशुना क्रीयसे सहस्रपोषं पुषेयम्.. (२६)

हे सोम! आप चमकीले हैं. हम आप को चमकते हुए सोने से खरीदते हैं (अपना बनाते हैं). आप चंद्रमा के समान मन प्रसन्न करने वाले हैं. आप अमृत जैसे हैं. गोरों और चमकते हुए तपस्वियों के शरीर प्रजापति के रंग जैसे हो जाएं. हम परम पशुधन से आप को खरीदते हैं. आप हजारों का पालनपोषण करने में समर्थ हैं. आप हमारा भी पालनपोषण कीजिए. (२६)

मित्रो न ऽ एहि सुमित्रध ऽ इन्द्रस्योरुमा विश दक्षिणमुशन्नुशन्त ꣳ स्योनः स्योनम्.
स्वान भ्राजाङ्घारे बम्भारे हस्त सुहस्त कृशानवेते वः सोमक्रयणास्तान्रक्षध्वं मा
वो दभन्.. (२७)

हे सोम! आप हमारे मित्र हैं. आप मित्रों का पालनपोषण करने वाले हैं. आप

हमारी ओर पधारने की कृपा करें. आप इंद्र देव की दाईं जंघा में प्रवेश करने की कृपा करें. आप सुखदायी, पाप के शत्रु, संसार के पालक, सुंदर हाथों वाले तथा कृश (दुर्बल) लोगों के पालक हैं. जिनजिन से सोम को खरीदा जा सकता है, आप उनउन की रक्षा करने की कृपा कीजिए. (२७)

परि माग्ने दुश्चरिताद्बाधस्वा मा सुचरिते भज.
उदायुषा स्वायुषोदस्थाममृताँ २ ऽ अनु.. (२८)

हे अग्नि! आप हमें पूरी तरह पाप से बचाने की कृपा करें. आप बुरे चरित्र वालों का वध कीजिए. आप सच्चरित्रवान को स्थापित करने की कृपा कीजिए. हम आप की उत्कृष्ट आयु से अपनी श्रेष्ठ आयु के लिए आप की अमरता का अनुसरण करते हैं. (२८)

प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्.
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु.. (२९)

हे अग्नि! हम उस मार्ग का अनुसरण करें जो मंगलमय व सुगम हो, जिस पथ पर जाने से द्वेषियों का पूरी तरह नाश हो और हमें धन की प्राप्ति हो. (२९)

अदित्यास्त्वगस्यदित्यै सद आसीद.
अस्तभ्नाद्द्यां वृषभो अन्तरिक्षममिमीत वरिमाणं पृथिव्याः.
आसीदद्विश्वा भुवनानि सम्राड्विश्वेत्तानि वरुणस्य व्रतानि.. (३०)

हे आसन! आप पृथ्वी की त्वचा जैसे हैं. आप यज्ञवेदी पर विराजने की कृपा कीजिए. बलवान वरुण स्वर्गलोक को माप लेते हैं. अंतरिक्षलोक को माप लेते हैं. पृथ्वीलोक को माप लेते हैं. वे सभी लोकों में व्याप्त हैं. उन के व्रत भलीभांति शोभते हैं. (३०)

वनेषु व्यन्तरिक्षं ततान वाजमर्वत्सु पय ऽ उस्त्रियासु.
हृत्सु क्रतुं वरुणो विक्ष्वग्निं दिवि सूर्यमदधात् सोममद्रौ.. (३१)

वरुण ने अंतरिक्ष को ताना. बल व गायों में दूध की बढ़ोतरी की. हृदय में यज्ञ शक्ति स्थापित की. अग्नि की स्थापना की. स्वर्गलोक में सूर्य को एवं पर्वत पर सोम को स्थापित किया. (३१)

सूर्यस्य चक्षुरारोहाग्नेरक्ष्णः कनीनकम्.
यत्रैतशेभिरीयसे भ्राजमानो विपश्चिता.. (३२)

हे वरुण देव! आप सूर्य के चक्षु हैं. आप अग्नि की आंख हैं. आप आंख की पुतली पर आरोहण की कृपा कीजिए. आप प्रकाशमान हैं. आप यहां शोभित होने की कृपा कीजिए. (३२)

उस्रावेतं धूर्षाहौ युज्येथामनश्रू अवीरहणौ ब्रह्मचोदनौ.
स्वस्ति यजमानस्य गृहान् गच्छतम्.. (३३)

हे देवताओ! आप यजमान का कल्याण करने के लिए उन के घरों की ओर जाने की कृपा कीजिए. आप भार वहन करने में समर्थ हैं. आप वीरों को सुख देते हैं. ब्रह्मज्ञान हेतु प्रेरक हैं. आप रथ में जुड़ने की कृपा कीजिए. (३३)

भद्रो मेसि प्रच्यवस्व भुवस्पते विश्वान्यभि धामानि.
मा त्वा परिपरिणो विदन् मा त्वा परिपन्थिनो विदन् मा त्वा वृका अघायवो विदन्.
श्येनो भूत्वा परापत यजमानस्य गृहान् गच्छ तन्नौ स ꣳ स्कृतम्.. (३४)

हे सोम! आप मेरा कल्याण कीजिए. आप भुवनपति हैं. आप विश्व के सभी धामों की ओर तेजी से प्रयाण (यात्रा) करते हैं. आप चोरों के ज्ञान का विषय मत होइए. यज्ञ के विरोधी लोग आप को न जान पाएं. सब ओर भ्रमण करने वाले आप को न जान पाएं. पापी भेड़िए आप को न जान सकें. आप बाज के समान जल्दी जाइए. आप यजमान के घरों की ओर प्रस्थान कीजिए. वहां भलीभांति सज्जित यज्ञशालाओं का प्रबंध है. (३४)

नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत ꣳ सपर्यत.
दूरेदृशे देवजाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्याय श ꣳ सत.. (३५)

मित्र देवता और वरुण देवता की आंखों से देखने वाले सूर्य को नमस्कार है. सूर्य प्रकाशमान, दूर दृष्टि वाले, देवता से उत्पन्न व स्वर्गलोक के पुत्र हैं. सूर्य के लिए नमन! यजमान को सूर्य के लिए यज्ञ करना चाहिए. यजमान को सूर्य के लिए स्तोत्र का पाठ करना चाहिए. (३५)

वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्यऋतसदन्यसि वरुणस्यऋ-
तसदनमसि वरुणस्यऋतसदनमासीद.. (३६)

हे शमी देव (यज्ञ में काम आने वाली लकड़ी)! आप वरुण का उत्थान करने वाले हैं. आप वरुण की गति के सर्जक (रचनाकार) हैं. आप उन्हें स्थिर करने वाले हैं. आप वरुण के यज्ञ का सदन, यज्ञ का बैठने का स्थान हैं. आप वरुण के यज्ञ के सदन में सुख से विराजने की कृपा कीजिए. (३६)

या ते धामानि हविषा यजन्ति ता ते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम्.
गयस्फानः प्रतरणः सुवीरो ऽ वीरहा प्र चरा सोम दुर्यान्.. (३७)

हे सोम! जो यजमान यज्ञ में आप के धाम का भजन करते हैं. वे सभी यज्ञ स्थान आप को प्राप्त हों. आप घरों को स्फारित (विस्तृत) करते हैं. आप पार लगाने वाले श्रेष्ठ वीर व कायरों के विनाशक हैं. आप हमारे यज्ञों में पहुंचने की कृपा कीजिए. (३७)

पांचवां अध्याय

अग्नेस्तनूरसि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूरसि विष्णवे त्वातिथेरातिथ्यमसि विष्णवे त्वा
श्येनाय त्वा सोमभृते विष्णवे त्वाग्नये त्वा रायस्पोषदे विष्णवे त्वा.. (१)

हे अग्नि! आप धनदाता, समृद्धि देने वाले व संसार के पालक हैं. हम विष्णु व सोम के लिए आप को ग्रहण करते हैं. हे सोम! आप अग्नि जैसे और उन्हीं की तरह ऊर्जस्वी हैं. आप यज्ञ में आए मेहमानों का स्वागतसत्कार करते हैं. आप सोमरस को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाने वाले श्येन पक्षी के समान हैं. (१)

अग्नेर्जनित्रमसि वृषणौ स्थ ऽ उर्वश्यस्यायुरसि पुरूरवा ऽ असि.
गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि त्रैष्टुभेन त्वा छन्दसा मन्थामि जागतेन त्वा छन्दसा
मन्थामि.. (२)

हे शकल! आप अग्नि के जनिता (जनने वाले) हैं. आप वृषण (वीर्यवान) में स्थित हैं. आप उर्वशी (के समान) हैं. आप आयु (के समान) हैं. आप पुरूरवा (के समान) हैं. मैं गायत्री छंद के साथ आप का मंथन करता हूं. मैं त्रिष्टुप् छंद के साथ आप का मंथन करता हूं. मैं जगती छंद के साथ आप का मंथन करता हूं. (२)

भवतं नः समनसौ सचेतसावरेपसौ.
मा यज्ञ ꣳ हि ꣳ सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः.. (३)

हे अग्नि! आप आलस्यरहित, समान व सावधान चित्त वाले हैं. आप हमारे यज्ञों में यजमानों की भी हिंसा मत होने दीजिए. आप यज्ञ के स्वामी हैं. आप आज से ही हमारा कल्याण करने की कृपा कीजिए. (३)

अग्नावग्निश्चरति प्रविष्ट ऽ ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपावा.
स नः स्योनः सुयजा यजेह देवेभ्यो हव्य ꣳ सदमप्रयुच्छन्त्स्वाहा.. (४)

हे यजमानो! आप ऋषियों के पुत्र जैसे हैं. अग्नि शाप से हमारी रक्षा करते हैं. अग्नि आह्वान के योग्य हैं. अग्नि यज्ञकुंड में प्रविष्ट हो चुके हैं. वे अग्नि हम पर कृपालु हों. हम देवताओं के लिए हवि प्रदान करते हैं. वे उस हवि को ग्रहण कर के उन देवताओं तक पहुंचाने की कृपा करें. (४)

आपतये त्वा परिपतये गृह्णामि तनूनप्त्रे शाक्वराय शक्वन ऽ ओजिष्ठाय.
अनाधृष्टमस्यनाधृष्यं देवानामोजो ऽ नभिशस्त्यभिशस्तिपा ऽ अनभिशस्तेन्यमञ्जसा
सत्यमुपगेष ॅं स्विते मा धाः.. (५)

हे अग्नि! हम यज्ञ कार्य के लिए आप को ग्रहण करते हैं. आप सर्वव्यापक हैं और ओजस्वी, सर्वसमर्थ, प्रशंसनीय घृणित (बुरे) कामों से हमारी रक्षा करते हैं. आप किसी को शाप नहीं देते. आप स्वयं भी अभिशप्त नहीं हैं. आप हमें सत्यमार्ग पर ले चलिए. आप हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ कामों में लगाने की कृपा कीजिए. आप हमारे आधार व रक्षक हैं. (५)

अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपा या तव तनूरिय ॅं सा मयि यो मम तनूरेषा सा त्वयि.
सह नौ व्रतपते व्रतान्यनु मे दीक्षां दीक्षापतिर्मन्यतामनु तपस्तपस्पतिः.. (६)

हे अग्नि! आप व्रत के पालनकर्ता हैं. आप का वह व्रत पालन करने वाला शरीर हमारे साथ एकाकार हो जाए. हे व्रतपति अग्नि! व्रतों का यजमान अनुकरण करने की कृपा करें. हम भी आप के साथ (आप जैसे) व्रतपति हो जाएं. सोम दीक्षापति हैं. सोम दीक्षा के पालनहार हैं. उन से हम एकाकार हो जाएं. आप तप के स्वामी हैं. हम तप करने वाले हैं. (आप की कृपा से) हम आप से एकाकार हो जाएं. (६)

अ ॅं शुर ॅं शुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनविदे.
आ तुभ्यमिन्द्रः प्यायतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व.
आप्याययास्मान्त्सखीन्त्सन्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय.
एष्टा रायः प्रेषे भगाय ऋतमृतवादिभ्यो नमो द्यावापृथिवीभ्याम्.. (७)

हे सोम! आप की सोमबेल इंद्र के लिए बढ़ोतरी पाने की कृपा करे. इंद्र धन वेत्ता (जानने वाले) हैं. वे आप को पी कर तृप्त हों. आप उन के पीने (सेवन) के लिए बढ़ोतरी पाने की कृपा करें. आप अपने सखा यजमान को तृप्त करने की कृपा करें. सोम का कल्याण हो. हम अपनी मेधा (बुद्धि) से सोम हेतु किए जा रहे यज्ञ और इन स्तुतियों को शीघ्र पूरा करें. आप हमारे लिए इष्ट (प्रिय) धन भेजने की कृपा कीजिए. अग्नि की कृपा से हम सत्यवादी हों. इंद्र की कृपा से हम अमरता प्राप्त करें. हम स्वर्गलोक को नमन करते हैं. हम पृथ्वीलोक को नमन करते हैं. (७)

या ते अग्ने ऽ यःशया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा.
उग्रं वचो अपावधीत्त्वेषं वचो अपावधीत्स्वाहा.
या ते अग्ने रजःशया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा.
उग्रं वचो अपावधीत्त्वेषं वचो अपावधीत्स्वाहा.
या ते अग्ने हरिशया तनूर्वर्षिष्ठा गह्वरेष्ठा.
उग्रं वचो अपावधीत्त्वेषं वचो अपावधीत्स्वाहा.. (८)

हे अग्नि! आप का शरीर लोहे व चांदी जैसा चमकीला है. आप का शरीर सोने जैसा सुनहरा है. आप के वचन उग्र हैं. आप मनोकामना पूरी करने वाले, गुफा व दुर्गम स्थान के वासी हैं. आप राक्षसों की कठोर आवाजों का नाश करने वाले एवं महिमावान हैं. आप गुफा हैं. आप के लिए आहुतियां भेंट करते हैं. (८)

तप्तायनी मेसि वित्तायनी मे ऽ स्यवतान्मा नाथितादवतान्मा व्यथितात्.
विदेदग्निर्नभो नामाग्ने अङ्गिर ऽ आयुना नाम्नेहि यो ऽ स्यां पृथिव्यामसि यत्ते ऽ नाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे विदेदग्निर्नभो नामाग्ने अङ्गिर ऽ आयुना नाम्नेहि यो द्वितीयस्यां पृथिव्यामसि यत्तेनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे विदेदग्निर्नभो नामाग्ने अङ्गिर ऽ आयुना नाम्नेहि यस्तृतीयस्यां पृथिव्यामसि यत्तेनाधृष्टं नाम यज्ञियं तेन त्वा दधे.
अनु त्वा देववीतये.. (९)

हे पृथ्वी! आप ऊर्जा व धन देने वाली हैं. हे पृथ्वी! आप हमें धृष्टता से बचाने की कृपा कीजिए. हे पृथ्वी! आप यज्ञ के योग्य हैं. 'नभ' नामक अग्नि आप की ओर उन्मुख होने की कृपा करें. अंगिरस अग्नि आयु प्रदान करें. यहां पधारने की कृपा करें. पृथ्वी द्वितीय व तृतीय स्थान में अवस्थित है. हम पृथ्वी पर यज्ञ करते हैं. हम देवताओं के लिए आप को पृथ्वी पर स्थापित करते हैं. (९)

सि ꣳ ह्यसि सपत्नसाही देवेभ्यः कल्पस्व सि ꣳ ह्यसि सपत्नसाही देवेभ्यः शुन्धस्व सि ꣳ ह्यसि सपत्नसाही देवेभ्यः शुम्भस्व.. (१०)

हे उत्तरवेदिका! आप सिंहिनी की तरह शत्रुनाशी हैं. आप देवताओं के लिए भी कल्पित होने वाली हैं. आप देवताओं के लिए शुद्ध होने की कृपा कीजिए. आप सिंहिनी की तरह शत्रुनाशी हैं. आप देवताओं के लिए शुद्ध होने की कृपा कीजिए. (१०)

इन्द्रघोषस्त्वा वसुभिः पुरस्तात्पातु प्रचेतास्त्वा रुद्रैः पश्चात्पातु मनोजवास्त्वा पितृभिर्दक्षिणतः पातु विश्वकर्मा त्वादित्यैरुत्तरतः पात्विदमहं तप्तं वार्बहिर्धा यज्ञान्निः सृजामि.. (११)

इंद्र वसुओं के साथ सब ओर से रक्षा करने की कृपा करें. वरुण रुद्रों के साथ पश्चिम से (आप की) रक्षा करने की कृपा करें. पितरों के साथ यम दक्षिण से रक्षा करने की कृपा करें. विश्वकर्मा आदित्यों के साथ उत्तर से रक्षा करने की कृपा करें. हम यज्ञ से आप को तृप्त करने वाला जल सिरजते हैं. (११)

सि ꣳ ह्यसि स्वाहा सि ꣳ ह्यस्यादित्यवनिः स्वाहा सि ꣳ ह्यसि ब्रह्मवनिः क्षत्रवनिः स्वाहा सि ꣳ ह्यसि सुप्रजावनी रायस्पोषवनिः स्वाहा सि ꣳ ह्यस्या वह देवान् यजमानाय स्वाहा भूतेभ्यस्त्वा.. (१२)

हे उत्तरवेदिके! आप सिंहिनी हैं. सिंहिनी के लिए स्वाहा. आप सिंहिनी हैं. आप

आदित्य को प्रसन्न करने वाली हैं. आप के लिए स्वाहा. आप सिंहिनी हैं. आप ब्राह्मणों को प्रसन्न करने वाली हैं. आप सिंहिनी हैं, आप क्षत्रियों को प्रसन्न करने वाली हैं. आप के लिए स्वाहा. आप सिंहिनी रूप हैं. आप अच्छी संतान देने व धन देने वाली हैं. आप के लिए स्वाहा. आप सिंहिनी हैं. आप यजमान के लिए देवताओं का आह्वान करने वाली हैं. प्राणियों के लिए आप को यह आहुति समर्पित है. (१२)

ध्रुवोसि पृथिवीं दृ ꣳ ह ध्रुवक्षिदस्यन्तरिक्षं दृ ꣳ हाच्युतक्षिदसि दिवं दृ ꣳ हाग्नेः पुरीषमसि.. (१३)

हे मध्यम परिधि! आप पृथ्वी को स्थिर करने की कृपा करें. आप स्थिर व अंतरिक्षवासी हैं. आप अंतरिक्ष को स्थिर बनाने की कृपा कीजिए. उत्तवेदिका स्वर्ग स्वरूप है. स्वर्गलोक को स्थिर बनाने की कृपा करें. हे अग्नि! आप सुगंधित वस्तुओं से स्वर्गलोक को सुगंधित करने की कृपा करें. (१३)

युञ्जते मन ऽ उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः.
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक ऽ इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः स्वाहा.. (१४)

ब्राह्मण यजमान अपना मन अपनी बुद्धि तथा सब कामों से अपने को हटा कर यज्ञ में लगाते हैं. होता यज्ञ को विशेष रूप से धारते हैं. सविता देव जाग्रत हैं. प्रशंसा प्राप्त हैं. सविता देव को सर्वविध अनुकूल करना चाहते हैं. सविता देव के लिए स्वाहा. (१४)

इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्. समूढमस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा.. (१५)

यह विष्णु विशेष रूप से सर्वत्र भ्रमण करते हैं (अर्थात् सर्वव्यापक हैं). विष्णु तीन प्रकार से तीन पैर धारण करते हैं यानी सब लोक इन के तीन पैरों में समाए हुए हैं. इन की चरणरज में लोक समाए हैं. विष्णु के लिए स्वाहा. (१५)

इरावती धेनुमती हि भूत ꣳ सूयवसिनी मनवे दशस्या.
व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते दाधर्त्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा.. (१६)

पृथ्वी धनवती व गोवती है. पृथ्वी यज्ञ साधन देने वाली है. विष्णु ने पृथ्वी को स्वर्गलोक से अलग कर के स्थिर बनाया है. उन्होंने किरणों से पृथ्वी को पूरी तरह व्याप्त किया है. पृथ्वी के लिए स्वाहा. (१६)

देवश्रुतौ देवेष्वा घोषतं प्राची प्रेतमध्वरं कल्पयन्ती ऊर्ध्वं यज्ञं नयतं मा जिह्वरतम्.
स्वं गोष्ठमा वदतं देवा दुर्ये आयुर्मा निर्वादिष्टं प्रजां मा निर्वादिष्टमत्र रमेथां वर्ष्मन् पृथिव्याः.. (१७)

हे देवो! आप दिव्य विधाओं में दक्ष हैं. आप देवताओं की सभा में यह घोषणा करने की कृपा करें कि देवगण यज्ञ को पूर्व दिशा में पहुंचाते हैं. वे यज्ञ को इष्ट

दिशा में पहुंचाते हैं. देवगण यज्ञ को फलीभूत करते हैं. देवगण यज्ञ को ऊंचाई पर पहुंचाते हैं. आगे गायों के बाड़े में (गोशाला में) घोषणा करने की कृपा करें कि देवता यजमान को आयु प्रदान करने की कृपा करें. देवता यजमान को निंदित न होने दें. देवता यजमान को सुखपूर्वक रहने का आशीर्वाद प्रदान करते हैं. देवगण पृथ्वी के इन स्थानों पर सुख से वास करने की कृपा करें. (१७)

विष्णोर्नुकं वीर्याणि प्रवोचं यः पार्थिवानि विममे रजा ꣳसि.
यो अस्कभायदुत्तर ꣳ सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा.. (१८)

हम यजमान विष्णु के अनुकरणीय कार्यों पराक्रमपूर्ण कार्यों का वर्णन करते हैं. उन की चरणरज में पृथ्वी आदि लोक वास करते हैं. वे हमें भयमुक्त करते हैं. वे लोकों को साधने वाले व सर्वव्यापक हैं. हम उन की प्रसन्नता के लिए हैं. काष्ठ देव आप की स्थापना करते हैं. (१८)

दिवो वा विष्ण ऽ उत वा पृथिव्या महो वा विष्ण ऽ उरोरन्तरिक्षात्.
उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा.. (१९)

हे विष्णु! आप स्वर्गलोक से हमें धन दें या हे विष्णु! आप पृथ्वीलोक से हमें धन से पूर्ण करें या हे विष्णु! आप विशाललोक से हमें धन दें या हे विष्णु! आप धन से पूर्ण करें या हे विष्णु! आप अपने दोनों हाथों से हमें धन से पूर्ण करें या हे विष्णु! आप दाएं या बाएं हाथ से हमें धन दे कर पूर्ण करें. विष्णु की प्रसन्नता के लिए हम काष्ठ देव को स्थापित करते हैं. (१९)

प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः.
यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा.. (२०)

विष्णु अपनी सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं. वे अपनी वीरता के कारण स्तुत्य हैं. वे सिंह व संवेग की तरह विचरण करते हैं वे पर्वत में वास करते हैं. इन के तीनों पैरों में सब आश्रय पाए हुए हैं. इन विष्णु के तीनों पैरों में सब लोक आश्रय पाए हुए हैं. (२०)

विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि.
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा.. (२१)

हे विष्णु! आप ललाट हैं. आप ललाट के दोनों भाग हैं. विष्णु सभी लोकों को व्यापक बनाते हैं. आप स्थिर हैं. आप ध्रुव हैं. हम विष्णु की प्रसन्नता के लिए काष्ठ देव की स्थापना करते हैं. (२१)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽ श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
आ ददे नार्यसी दमह ꣳ रक्षसां ग्रीवा अपिकृन्तामि.
बृहन्नसि बृहद्रवा बृहतीमिन्द्राय वाचं वद.. (२२)

सब देवताओं को सविता ने पैदा किया है. अश्विनी के बाहुओं से हम आप को स्वीकारते हैं. पूषा देव के हाथों हम आप को स्वीकारते हैं. आइए, आप हमें सहायता दीजिए. हम राक्षसों की गरदनें छेदते हैं, काटते हैं. आप विशाल व बहुत अधिक आवाज करने वाले हैं. आप इंद्र के लिए वाणी (मंत्र) दीजिए अर्थात् मंत्रपाठ कीजिए. (२२)

रक्षोहणं वलगहनं वैष्णवीमिदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे निष्ट्यो यममात्यो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे समानो यमसमानो निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सबन्धुर्यमसबन्धुर्निचखानेदमहं तं वलगमुत्किरामि यं मे सजातो यमसजातो निचखानोत्कृत्यां किरामि.. (२३)

राक्षसों का हनन करने वाले मंत्रपाठ कीजिए. अतिचार साधनों का नाश करने वाले मंत्रपाठ कीजिए. पोषणता देने वाले मंत्रपाठ कीजिए. अभिचार साधनों का नाश करने वाले मंत्रपाठ कीजिए. अनिष्ट निवारण हेतु मंत्रपाठ कीजिए. छिपा कर रखे हुए अनिष्टकर साधनों के नाश हेतु मंत्रपाठ कीजिए. छिपा कर रखे हुए अभिचार साधनों को हम खोद कर उखाड़ फेंकते हैं. हमारे सजातियों ने जो अनिष्टकारी प्रयोग किए हैं, हम उन्हें खोद कर उखाड़ फेंकते हैं. (२३)

स्वराडसि सपत्नहा सत्रराडस्यभिमातिहा जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्यमित्रहा.. (२४)

हे गर्त! स्वयं प्रकाशवान, शत्रुनाशी, यज्ञ सत्र तक रहने वाले, अभिमान नाशक, जनों के रक्षक व राक्षस हंता (मारने वाले) हैं. सभी के प्रकाशक और अमित्रों के नाशक हैं. (२४)

रक्षोहणो वो वलगहन: प्रोक्षामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोवनयामि वैष्णवान् रक्षोहणो वो वलगहनोवस्तृणामि वैष्णवान् रक्षोहणौ वां वलगहना ऽ उप दधामि वैष्णवी रक्षोहणौ वां वलगहनौ पर्यूहामि वैष्णवी वैष्णवमसि वैष्णवा स्थ.. (२५)

राक्षस नाश हेतु हम गड्ढा खोदते हैं. अभिचार नाश हेतु हम गड्ढा खोदते हैं. विष्णु को इन गड्ढों में अधिष्ठित करते हैं. उन के हेतु हम गड्ढों में जल छिड़कते हैं. उन के हेतु हम गड्ढों में कुश का आसन बिछाते हैं. वे राक्षस व अभिचार नाशक हैं. उन के हेतु हम गड्ढों में फलक (पटरा) रखते हैं. वे राक्षस व अभिचार नाशक हैं. उन के हेतु हम गड्ढों में मिट्टी व पत्थर बिछाते हैं. आप पालक हैं. हे विष्णु! स्थिर होने की कृपा करें. (२५)

देवस्य त्वा सवितु: प्रसवे ऽ श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
आददे नार्यसीदमह ꣳ रक्षसां ग्रीवा ऽ अपिकृन्तामि.
यवोसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीर्दिवे त्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्ताँल्लोका: पितृषदना: पितृषदनमसि.. (२६)

सविता देव सभी देवताओं को उत्पन्न करने वाले हैं. उन को अश्विनी देवताओं की बाहु से धारण करते हैं. उन को पूषा देवता के हाथों से धारण करते हैं. वे हमारे मन के अनुकूल होने की कृपा करें. हम राक्षसों की गरदन काट कर अलग करते हैं. उन का नाश करते हैं. आप यव हैं. हमें शत्रुओं से अलग करने की कृपा कीजिए. हम स्वर्गलोक, अंतरिक्ष व पृथ्वी हेतु आप का प्रेक्षण करते हैं. हम पृथ्वी के लिए स्थान को शुद्ध करते हैं. यह पितरों का सदन है. यह पितरों का निवास स्थान है. (२६)

उद्दिव ंॅ स्तभानान्तरिक्षं पृण दृ ंॅ हस्व पृथिव्यां द्युतानस्त्वा मारुतो मिनोतु मित्रावरुणौ ध्रुवेण धर्मणा.
ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि रायस्पोषवनि पर्यूहामि ब्रह्म दृ ंॅ ह क्षत्रं दृ ंॅ हायुर्दृ ंॅ ह प्रजां दृ ंॅ ह.. (२७)

हे उदुंबर शाखे (गूलर की लकड़ी)! स्वर्गलोक को ऊंचा उठाने, अंतरिक्षलोक को पूर्ण करने व पृथ्वीलोक को दृढ़ करने की कृपा कीजिए. मरुद्‌गण स्वर्गलोक का विस्तार करते हैं. (२७)

ध्रुवासि ध्रुवोयं यजमानोस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात्.
घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया.. (२८)

हे शाखा! आप ऊंचे आकाश तक जाइए. आप ध्रुव (स्थिर) होइए. यजमान इस घर में प्रजावान और पशु वाला हो. हम घी से स्वर्गलोक व पृथ्वी को पूरित कर दें. छप्पर से अनुरोध है कि वे हमें भी छत्रच्छाया प्रदान करने की कृपा करें. (२८)

परि त्वा गिर्वणो गिर ऽ इमा भवन्तु विश्वतः.
वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः.. (२९)

हे इंद्र! वाणीमय स्तुतियां आप को सब ओर से प्राप्त हों. वाणीमय स्तुतियां सब ओर से सब के लिए कल्याणमयी हों. हम आयु में बढ़ोतरी पाएं. आप की आयु का अनुकरण करें. आप हमारे यज्ञ से संतुष्ट एवं प्रसन्न होने की कृपा कीजिए. (२९)

इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोसि. ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि.. (३०)

हे रज्जु! आप इंद्र के लिए हो. उन के लिए स्थिर होने की कृपा कीजिए. आप उन से संबंधित हैं. आप सभी देवों से संबद्ध होने की कृपा कीजिए. (३०)

विभूरसि प्रवाहणो वह्निरसि हव्यवाहनः. श्वात्रोसि प्रचेतास्तुथोसि विश्ववेदाः.. (३१)

हे अग्नि! आप व्यापक, प्रवाहक, विविध स्वरूप, हवि वाहक व रक्षक हैं. अत्यंत चेतना संपन्न हैं.आप स्तुत्य और सर्वज्ञाता हैं. (३१)

उशिगसि कविरङ्घारिरसि बम्भारिरवस्यूरसि दुवस्वाञ्छुन्ध्यूरसि मार्जालीयः सम्राडसि कृशानुः परिषद्योसि पवमानो नभोसि प्रतक्वा मृष्टोसि हव्यसूदन ऽ ऋतधामसि स्वर्ज्योतिः.. (३२)

हे अग्नि! आप उशिक, कवि, शत्रुनाशक हैं. आप भरणपोषण कर्ता व अन्न की कामना करने वाले हैं. आप शुद्ध व पावक हैं. आप सम्राट् हैं, कृशानु हैं. आप सब ओर से यजमानों से घिरे हुए हैं. आप नभ व प्रदक्षिणा स्वरूप हैं. आप हवि को पकाने वाले, सत्य के धाम एवं स्वयं प्रकाशक हैं. (३२)

समुद्रोसि विश्वव्यचा ऽ अजोस्येकपादहिरसि बुध्न्यो वागस्यैन्द्रमसि सदोस्यृतस्य द्वारौ मा मा सन्ताप्तमध्वनामध्वपते प्र मा तिर स्वस्ति मेस्मिन्पथि देवयाने भूयात्.. (३३)

आप समुद्र, सर्वज्ञाता व अजन्मा हैं. आप एक पैर वाले हैं. आप जागरूक हैं. आप इंद्र से संबंधित हैं. आप वाणी स्वरूप हैं. आप हमारे घर में उपस्थित रहते हैं. आप यज्ञ वेदी पर विराजमान हैं. आप यज्ञ द्वार पर स्थापित हैं. आप मार्ग पति हैं. आप हमारा पथ प्रशस्त करने की कृपा करें. देवताओं के मार्ग हमारे लिए कल्याणकारी होने की कृपा करें. (३३)

मित्रस्य मा चक्षुषेक्षध्वमग्नयः सगराः सगरास्थ सगरेण नाम्ना रौद्रेणानीकेन पात माग्नयः पिपृत माग्नयो गोपायत मा नमो वोस्तु मा मा हि ꣳ सिष्ट.. (३४)

हे यज्ञ! आप हमें मित्रता की दृष्टि से देखने की कृपा करें. हे अग्नि! आप हमारा पथ प्रदर्शन करने की कृपा करें. आप भयंकर से भयंकर शत्रुओं व भयंकर सेना से हमारी रक्षा करने की कृपा करें. आप हमारा भरणपोषण करने की कृपा करें. आप से हमारा कुछ भी छिपा हुआ नहीं है. आप को हमारा नमस्कार है. आप किसी भी प्रकार की हिंसा न करें. (३४)

ज्योतिरसि विश्वरूपं विश्वेषां देवाना ꣳ समित्.
त्व ꣳ सोम तनूकृद्भ्यो द्वेषोभ्यान्यकृतेभ्य ऽ उरु यन्तासि वरूथ ꣳ स्वाहा जुषाणो अप्तुराज्यस्य वेतु स्वाहा.. (३५)

हे अग्नि! आप ज्योति व विश्व स्वरूप हैं. आप सब देवताओं की समिधा हैं. आप सोम से शत्रुओं का नाश करते हैं. आप असत् कार्यों का नाश करते हैं. आप हमें सुरक्षित स्थान पर ले जाने की कृपा कीजिए. आप बल संपन्न के लिए स्वाहा. आप अनेक आहुतियों से संपन्न हैं. आप ज्ञाता हैं. आप के लिए स्वाहा. (३५)

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्.
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम.. (३६)

हे अग्नि! आप हमें सुपथ व धनमार्ग पर ले जाने की कृपा कीजिए. आप विद्वान्

हैं. आप शत्रुओं से युद्ध करें. आप विद्वान् हैं. बारंबार आप को नमस्कार करते हैं. बारबार आप के लिए स्तोत्र उचारते हैं. हम आप से यज्ञ की रक्षा का निवेदन करते हैं. (३६)

अयं नो अग्निर्वरिवकृणोत्वयं मृधः पुर ऽ एतु प्रभिन्दन्.
अयं वाजाञ्जयतु वाजसातावय ꣳ शत्रूञ्जयतु जर्हृषाणः स्वाहा.. (३७)

यह अग्नि हमें वरण करने योग्य धन प्रदान करें. यह शत्रु नाश करते हुए हमारे सम्मुख पधारें. यह हमारे लिए अन्न जीतें. हमारे लिए बल जीतें. यह हमारे लिए शत्रुओं से जीतें. यह हमारी आहुति स्वीकारने की कृपा करें. (३७)

उरु विष्णो विक्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि.
घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा.. (३८)

अग्नि व्यापक, बलशाली व शत्रुनाशी हैं. वे मनुष्य को पराक्रमी बनाएं. वे घृत योनि हैं. वे घृत पीने व यजमान की बढ़ोतरी करने की कृपा करें. (३८)

देव सवितरेष ते सोमस्त ꣳ रक्षस्व मा त्वा दभन्.
एतत्त्वं देव सोम देवो देवाँ २ उपागा ऽ इदमहं मनुष्यान्त्सह रायस्पोषेण स्वाहा निर्वरुणस्य पाशान्मुच्ये.. (३९)

ये सविता हैं. यह सोम आप को भेंट किया जा रहा है. आप इस की रक्षा करने की कृपा कीजिए. आप को राक्षस कष्ट न पहुंचा पाएं. यह सोम दिव्यता को पा कर देवता से अधिष्ठित हैं. आप की कृपा से हम भी दिव्यता, धन व पशु प्राप्त करें. आप के लिए स्वाहा. आप को प्रदान की गई आहुति से हम वरुण के पाश से मुक्त हो चुके हैं. (३९)

अग्ने व्रतपास्त्वे व्रतपा या तव तनूर्मय्यभूदेषा सा त्वयि यो मम तनूस्त्वय्यभूदिय ꣳ सा मयि.
यथायथं नौ व्रतपते व्रतान्यनु मे दीक्षां दीक्षापतिरम ꣳ स्तानु तपस्तपस्पतिः.. (४०)

हे अग्नि! आप व्रतपालक हैं. आप हमारे व्रत की रक्षा करने की कृपा करें. व्रत करने से हमारा शरीर आप के शरीर जैसा हो जाए. आप के शरीर से एकाकार हो जाए. आप जिस तरह यथायोग्य श्रेष्ठ कार्यों का संपादन करते हैं, उसी तरह हमारे श्रेष्ठ कार्यों का संपादन करने की कृपा करें. आप दीक्षापति हैं. आप हमें दीक्षित करने की कृपा कीजिए. आप तपपति हैं. आप हमारे तप को स्वीकार करने की कृपा कीजिए. (४०)

उरु विष्णो विक्रमस्वोरु क्षयाय नस्कृधि.
घृतं घृतयोने पिब प्रप्र यज्ञपतिं तिर स्वाहा.. (४१)

हे अग्नि! आप बहुत व्यापक हैं. आप अतीव पराक्रमी हैं. आप शत्रुनाश हेतु

हमें शक्तिशाली बनाइए. आप मनुष्यों को पराक्रमी बनाइए. अग्नि अतीव व्यापक, बलशाली व शत्रुनाशी हैं. वे मनुष्य को पराक्रमी बनाएं. अग्नि घृतयोनि हैं. अग्नि घृत को पीने यजमान की बढ़ोतरी करने की कृपा करें. (४१)

अत्यन्याँ २ अगां नान्याँ २ उपागामर्वाक् त्वा परेभ्योविदं परोवरेभ्य:.
तं त्वा जुषामहे देव वनस्पते देवयज्यायै देवास्त्वादेवयज्यायैजुषन्तां विष्णवे त्वा.
ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैन ㇀ हि ㇀ सी:.. (४२)

हे यूपवृक्ष! आप की कृपा से हम उन वृक्षों को पाएं जिन से हम यज्ञ के खंभे बना सकें. जो वृक्ष यज्ञ (अथवा यज्ञस्तंभ) हेतु उपयोगी नहीं हैं, हम उन्हें न पाएं. दूर और पास के वृक्षों में हम ने आप को पास से पाया है. आप वन पालक व प्रकाशमान हैं. हम आप की सेवा करते हैं. ताकि हम देवताओं के लिए किए जाने वाले इस यज्ञ में आप का उपयोग कर सकें. हम आप को घी से सींचते हैं. हम ओषधि से आप की रक्षा का निवेदन करते हैं. कुल्हाड़ा आप की रक्षा करे. कोई भी इस यज्ञस्तंभ की हिंसा न करे. (४२)

द्यां मा लेखीरन्तरिक्षं मा हि ㇀ सी: पृथिव्या सम्भव.
अय ㇀ हि त्वा स्वधितिस्तेतिजान: प्रणिनाय महते सौभगाय.
अतस्त्वं देव वनस्पते शतवल्शो वि रोह सहस्रवल्शा वि वय ㇀ रुहेम.. (४३)

हे यूपवृक्ष! आप स्वर्गलोक को नुकसान न पहुंचाएं. हे यूपवृक्ष! आप अंतरिक्ष को नुकसान न पहुंचाएं. हे यूपवृक्ष! आप पृथ्वी पर उपजिए. तीक्ष्ण कुल्हाड़ा आप के सौभाग्य हेतु है. प्राणियों के महान सौभाग्य के लिए आप का उपयोग किया जा रहा है. आप की सैकड़ों शाखाओं की तरह हमारे वंश वृक्ष की शाखाएं भी बढ़ जाएं. (४३)

छठा अध्याय

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
आ ददे नार्यसी दमह ࣯ रक्षसां ग्रीवा ऽ अपि कृन्तामि.
यवोसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीर्दिवे त्वान्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वा शुन्धन्ताँल्लोकाः पितृषदनाः पितृषदनमसि.. (१)

हे यज्ञ साधनो! आप देवताओं के नायक हैं. हम आप को सविता द्वारा प्रेरित अश्विनीकुमारों की बांहों से ग्रहण करते हैं. हम आप को पूषा देव के हाथों से ग्रहण करते हैं, जो आर्य नहीं हैं. (आप आइए) आप उन राक्षसों की गरदनों पर प्रहार कीजिए. आप हमारे मित्र हैं. आप हमारे द्वेषियों को हम से दूर करने की कृपा कीजिए. हम स्वर्गलोक, अंतरिक्ष व पृथ्वी के लिए आप को पवित्र करते हैं. आप हमारे लिए पिता की तरह हैं. आप का घर हमारे लिए पिता के घर की तरह है. (१)

अग्रेणीरसि स्वावेश ऽ उन्नेतृणामेतस्य वित्तादधि त्वा स्थास्यति देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु सुपिप्पलाभ्यस्त्वौषधीभ्यः.
द्यामग्रेणास्पृक्ष ऽ आन्तरिक्षं मध्येनाप्राः पृथिवीमुपरेणादृ ࣯ हीः.. (२)

हे यज्ञ साधनो! आप अग्रणी हैं. आप अपनी जिम्मेदारी मान कर सब को उन्नति की ओर अग्रसर कीजिए. सविता देव जगत् के स्वामी हैं. वे आप को सुफल ओषधियों से भूषित करने की कृपा करें. आप स्वर्गलोक की ऊंचाइयों को छुएं. श्रेष्ठ विचारों से अंतरिक्षलोक को पूर्ण कर दीजिए. आप श्रेष्ठ कर्मों से पृथ्वी को ओतप्रोत करने की कृपा कीजिए. (२)

या ते धामान्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा ऽ अयासः.
अत्राह तदुरुगायस्य विष्णोः परमं पदमव भारि भूरि.
ब्रह्मवनि त्वा क्षत्रवनि रायस्पोषवनि पर्यूहामि.
ब्रह्म दृ ࣯ ह क्षत्रं दृ ࣯ हायुर्दृ ࣯ ह प्रजां दृ ࣯ ह.. (३)

विष्णु का जो धाम है, वह सूर्य की किरणों से प्रकाशित है. वह धाम सर्वव्यापक है. हम विष्णु के उस श्रेष्ठ धाम को पाने की इच्छा रखते हैं. आप

ब्राह्मणों व क्षत्रियों आदि को यथायोग्य धन और पोषण देते हैं. आप ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों को धन व संतान दीजिए. (३)

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे. इन्द्रस्य युज्यः सखा.. (४)

हे यजमानो! हम विष्णु से जुड़ें. हम उन के मित्र हो जाएं. उन के कामों को देखें. हम उन के व्रतों का पालन करें. (४)

तद्विष्णोः परमं पद ꣳ सदा पश्यन्ति सूरयः. दिवीव चक्षुराततम्.. (५)

शूरवीर सदैव विष्णु का परम पद स्वर्गलोक में छाए हुए प्रकाश के समान देखते हैं. (५)

परिवीरसि परि त्वा दैवीर्विशो व्ययन्तां परीमं यजमान ꣳ रायो मनुष्याणाम्.
दिवः सूनुरस्येष ते पृथिव्याँल्लोक ऽ आरण्यस्ते पशुः.. (६)

हे यज्ञ देव! आप सर्वव्यापक हैं. यजमान आप को कणकण में देखते हैं. आप दिन के पुत्र की तरह व्याप्त हैं. पृथ्वीलोक, वन प्रदेश, व पशु भी आप का ही विस्तार है. आप मनुष्यों को धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (६)

उपावीरस्युप देवान्दैवीर्विशः प्रागुरुशिजो वह्नितमान्.
देव त्वष्टर्वसु रम हव्या ते स्वदन्ताम्.. (७)

हे त्वष्टा देव! आप सर्जक हैं. आप समीप आए हुए की रक्षा करते हैं. आप की कृपा से प्रजा श्रेष्ठ गुणों से संपन्न हो जाए. आप दिव्य गुण संपन्न, तेजस्वी व समर्थ हैं. ये सभी गुण आप की कृपा से विद्वानों को प्राप्त हों. हम आप को रमणीय हवि प्रदान कर रहे हैं. आप उस का आस्वादन करने की कृपा कीजिए. (७)

रेवती रमध्वं बृहस्पते धारया वसूनि.
ऋतस्य त्वा देवहविः पाशेन प्रतिमुञ्चामि धर्षा मानुषः.. (८)

यज्ञ के आचार्यों ने उत्तम कोटि की हवि के लिए विशाल धाराओं के रूप में धन देने वाले जिन पशुओं को बांधा, उन पशुओं को अब हम मुक्त करते हैं. वे पशु हमें और हमारे यज्ञ के लिए दूध आदि के रूप में धन धारण करते रहें. हम समर्थ बनें. (८)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
अग्नीषोमाभ्यां जुष्टं नियुनज्मि.
अद्भ्यस्त्वौषधीभ्योनु त्वा माता मन्यतामनु पितानु भ्राता सगर्भ्योनु सखा सयूथ्यः.
अग्नीषोमाभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि.. (९)

सविता देव की कृपा से हम अश्विनीकुमारों व पूषा देव को दोनों बाहुओं से

ग्रहण करते हैं. अग्नि व सोम देव की संतुष्टि के लिए यज्ञ करते हैं. ओषधियां और जल शुद्धता का अनुकरण करें. (यज्ञ कार्य हेतु) माता अनुमति प्रदान करें. (यज्ञ कार्य हेतु) पिता अनुमति प्रदान करें. (यज्ञ कार्य हेतु) भाई अनुमति प्रदान करें. (यज्ञ कार्य हेतु) मित्र अनुमति प्रदान करें. हम अग्नि की संतुष्टि के लिए यज्ञ करते हैं. हम सोम की संतुष्टि के लिए यज्ञ करते हैं. (९)

अपां पेरुरस्यापो देवीः स्वदन्तु स्वात्तं चित्सद्देवहविः.
सन्ते प्राणो वातेन गच्छता १४ समङ्गानि यजत्रैः सं यज्ञपतिराशिषा.. (१०)

हे यज्ञ से जुड़े पशु देव! आप जल के रक्षक व दिव्य गुणों वाले हैं. आप सदैव हविमय रहने की कृपा करें. देव कृपा से यज्ञपति को आशीर्वाद मिले. हमारे प्राण वायु से भरे रहें. हम यज्ञीय अनुशासन का पालन करें. (१०)

घृतेनाक्तौ पशूँस्त्रायेथा १४ रेवति यजमाने प्रियं धा ऽ आ विश.
उरोरन्तरिक्षात्सजूर्देवेन वातेनास्य हविषस्त्मना यज समस्य तन्वा भव.
वर्षो वर्षीयसि यज्ञे यज्ञपतिं धाः स्वाहा देवेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा.. (११)

हे यज्ञ देव! आप घी आदि (हवि हेतु उपयोगी) देने वाले पशुओं की रक्षा करने की कृपा करें. यजमान के लिए ये पशु प्रिय हों. उन के प्रिय धाम में वास करें. ये पशु यजमान के अनुकूल हों. यजमान की रक्षा करने की कृपा कीजिए. इस यज्ञ में हवि से उस का विस्तार करने की कृपा करें. यज्ञपति बरसों तक जीएं. वे कल्याण करें. देवताओं के लिए स्वाहा. (११)

माहिर्भूर्मा पृदाकुर्नमस्त ऽ आतानानर्वा प्रेहि.
घृतस्य कुल्या ऽ उप ऋतस्य पथ्या ऽ अनु.. (१२)

हे यज्ञ देव! आप महान् हैं. आप यजमानों के प्रति हिंसक मत होना. आप महान् हैं. आप यजमानों के प्रति निर्दय मत होना. आप महान् हैं. आप यजमानों के प्रति क्रोधित मत होना. आप की कृपा से घी जल की भांति बहे. हम सत्य के पथ का अनुसरण करें. (१२)

देवीरापः शुद्धा वोढ्व १४ सुपरिविष्टा देवेषु सुपरिविष्टा वयं परिवेष्टारो भूयास्म.. (१३)

हे देवियो! आप शुद्ध हैं. आप प्राकृतिक रूप से शुद्ध हैं. आप देवताओं के लिए हवि वहन करने की कृपा करें. हवि उत्तम पात्र में है. आप उसे ग्रहण करने की कृपा कीजिए. इन की कृपा से हम भी कार्य करने वाले हों. (१३)

वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्राँस्ते शुन्धामि.. (१४)

हे याजक! हम यजमान आप की वाणी को शुद्ध करते हैं. यजमान आप के

प्राण को शुद्ध करते हैं. हम यजमान आप के नेत्रों को शुद्ध करते हैं. हम यजमान आप के कानों को शुद्ध करते हैं. हम यजमान आप की नाभि को शुद्ध करते हैं. हम यजमान आप की जननेंद्रिय को शुद्ध करते हैं. हम यजमान आप की गुदा को शुद्ध करते हैं. हम यजमान आप के चरित्र को शुद्ध करते हैं. (१४)

मनस्त ऽ आप्यायतां वाक्त ऽ आप्यायतां प्राणस्त ऽ आप्यायतां चक्षुस्त ऽ आप्यायता ꣳ श्रोत्रं त ऽ आप्यायताम्.
यत्ते क्रूरं यदास्थितं तत्त ऽ आप्यायतां निष्ट्यायतां तत्ते शुध्यतु शमहोभ्यः.
ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैन ꣳ हि ꣳ सीः.. (१५)

हे याजक! आप का मन प्रसन्न हो. आप की वाणी प्रसन्न हो. आप के प्राण प्रसन्न हों. आप के नेत्र प्रसन्न हों. आप के कान प्रसन्न हों. हे यजमान! आप की क्रूरता समाप्त हो. आप का स्वभाव स्थिर हो. हे याजक! आप का स्वभाव दृढ़ हो. आप का आचरण शुद्ध हो, हमें भी शुद्ध करे. ओषधियां रक्षा करें. आप इन्हें नष्ट होने से बचाइए. (१५)

रक्षसां भागोसि निरस्त ꣳ रक्ष ऽ इदमह ꣳ रक्षोभि तिष्ठामीदमह ꣳ रक्षोव बाध इदमह ꣳ रक्षोधमं तमो नयामि.
घृतेन द्यावापृथिवी प्रोर्णुवाथां वायो वे स्तोकानामग्निराज्यस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्.. (१६)

यज्ञ में त्यागा हुआ तिनका राक्षसों का भाग है. इसलिए हे परित्यक्त तृण! हम आप को दूर करते हैं. आप राक्षसी वृत्ति (स्वभाव) वाले हैं. आप पतन के गड्ढे में ही बैठे रहिए. आप बाधक व अधम हैं. हम आप को अंधकार में ले जाते हैं. यजमान द्वारा दी गई हवि से स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक परिपूर्ण हों. यजमान द्वारा दी गई हवि अग्निग्रहण करने की कृपा करें. अग्नि के लिए स्वाहा. नभ देव के लिए स्वाहा. वह हवि ऊंचे नभलोक तक पहुंचे. हवा के रूप में पूरे आकाशलोक में चली जाए. (१६)

इदमापः प्र वहतावद्यं च मलं च यत्.
यच्चाभिदुद्रोहानृतं यच्च शेपे अभीरुणम्.
आपो मा तस्मादेनसः पवमानश्च मुञ्चतु.. (१७)

हे जल देव! आप जिस तरह हमारे मल आदि को दूर करते हैं, उसी तरह यजमान के ईर्ष्या, झूठ, दोष आदि को दूर करें. जल तथा वायु हम को इन पापों से मुक्त करें. जल हम को पवित्र बनाने की कृपा करे. (१७)

सन्ते मनो मनसा सं प्राणः प्राणेन गच्छताम्.
रेडस्यग्निष्ट्वा श्रीणात्वापस्त्वा समरिणन्वातस्य त्वा ध्राज्यै पूष्णो र ꣳ ह्या ऊष्मणो व्यथिषत् प्रयुतं द्वेषः.. (१८)

याजक उन यजमानों के मन से युक्त हो. वह उन यजमानों के मन प्राण से युक्त हो. वह उन यजमानों के दिव्य प्राण से युक्त हो. अग्नि व जल देव आप को शोभा युक्त बनाने की कृपा करें. वायु देव की गति एवं सूर्य की ऊर्जा परिपक्व हो. सब के विकार व द्वेष नष्ट हों. (१८)

घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा.
दिशः प्रदिश ऽ आदिशो विदिश ऽ उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहाः.. (१९)

घी पीने वाले घी पीएं. वसा पीने वाले वसा पीएं. घी और वसा अंतरिक्ष के लिए हवि हों. घी और वसा दोनों के लिए स्वाहा. दिशा के लिए स्वाहा. प्रदिशा के लिए स्वाहा. शत्रु के लिए स्वाहा. अमर के लिए स्वाहा. सब के लिए स्वाहा. (१९)

ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे निदीध्यदैन्द्र ऽ उदानो अङ्गे अङ्गे निधीतः.
देव त्वष्टर्भूरि ते स ꣳ समेतु सलक्ष्मा यद्विषुरूपं भवाति.
देवत्रा यन्तमवसे सखायोनु त्वा माता पितरो मदन्तु.. (२०)

अंगअंग, प्राणप्राण व उदान में इंद्र विराजमान हैं. त्वष्टा इन सब की सुरक्षा करने की कृपा करें. इंद्र की शक्ति इन सब की सुरक्षा करने की कृपा करे. देव की शक्ति इन सब की रक्षा करने की कृपा करें. देव हमारे सखाओं का कल्याण करने की कृपा करें. देव हमारे मातापिता को आनंदित करने की कृपा करें. (२०)

समुद्रं गच्छ स्वाहान्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देव ꣳ सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दा ꣳ सि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्दि यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा.. (२१)

यजमान द्वारा दी गई हवि समुद्र तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि अंतरिक्ष तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि सविता देव तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि मित्र देव तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि वरुण देव तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि दिन देव तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि रात्रि देव तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि छंद तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि स्वर्गलोक तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि पृथ्वी लोक तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि यज्ञ देव तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि सोम तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि नभ देव तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि अग्नि तक जाए, कल्याणकारी हो. यजमान द्वारा दी गई हवि वैश्वानर तक जाए, कल्याणकारी हो. देवगण हमारे मन को हार्दिक दिव्यता प्रदान करें. अग्नि का धुआं सर्वत्र जाए. अग्नि की ज्योति और भस्म पृथ्वीलोक को

पूर्ण करें. अग्नि की ज्योति और भस्म अंतरिक्षलोक को परिपूर्ण करें. इन अग्नि के लिए स्वाहा. (२१)

मा ऽ पो मौषधीर्हि ꣳ सीर्धाम्नो धाम्नो राजँस्ततो वरुण नो मुञ्च.
यदाहुरघ्न्या ऽ इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च.
सुमित्रिया न ऽ आप ऽ ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु यो ऽ स्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः.. (२२)

यज्ञ में स्थित जल व ओषधि को अपनी जगह से मत हटाइए. यज्ञ में स्थित आप ओषधि को अपने स्थान पर रहने दीजिए. इन दोनों को वहीं सुशोभित होने दीजिए. वरुण देव हमें न छोड़ें. जो न मारने योग्य हैं, हम उन का वध न करें. हम वरुण देव की कृपा से शाप और पाप से मुक्त रहें. वे हमें न छोड़ें. जल और ओषधियां हमारी अच्छी मित्र हों. जिन से हम द्वेष रखते हैं, उन का नाश हो.जो हम से द्वेष रखते हैं, उन का नाश हो. (२२)

हविष्मतीरिमा ऽ आपोहविष्माँ २ आ विवासति.
हविष्मान् देवो अध्वरो हविष्माँ २ अस्तु सूर्यः.. (२३)

जल वाली नदियां हविष्मती हों. जल हविष्मान हो. देव हविष्मान हों. यज्ञ हविष्मान हो. सूर्य हविष्मान हो. (२३)

अग्नेर्वोपन्नगृहस्य सदसि सादयामीन्द्राग्न्योर्भागधेयी स्थ मित्रावरुणयोर्भागधेयी स्थ विश्वेषां देवानां भागधेयी स्थ.
अमूर्या ऽ उप सूर्ये याभिर्वा सूर्यः सह. ता नो हिन्वन्त्वध्वरम्.. (२४)

अग्नि देवताओं तक हवि भाग पहुंचाते हैं. वे इंद्र देव तक हवि भाग पहुंचाते हैं. वे मित्र देव तक हवि भाग पहुंचाते हैं. वे वरुण देव तक हवि भाग पहुंचाते हैं. वे सभी देवों तक हवि भाग पहुंचाते हैं. भाप बना कर जो जल सूर्य ऊपर बहुत समय तक साथ रखते हैं, उस जल से हमारे यज्ञ को सफल बनाने की कृपा करें. (२४)

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा.
ऊर्ध्वमिममध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ.. (२५)

हे देवगण! आप हृदय, मन, स्वर्ग और सूर्य में हैं. आप यज्ञ को ऊंचा उठाएं. यजमान को दिव्यता दें. यजमान को स्वर्ग दें.(२५)

सोम राजन् विश्वास्त्वं प्रजा ऽ उपावरोह विश्वास्त्वां प्रजा ऽ उपावरोहन्तु.
शृणोत्वग्निः समिधा हवं मे शृण्वन्त्वापो धिषणाश्च देवीः.
श्रोता ग्रावाणो विदुषो न यज्ञ ꣳ शृणोतु देवः सविता हवं मे स्वाहा.. (२६)

हे सोम! आप सब के राजा हैं. आप प्रजा पर अनुग्रह करने की कृपा करें. अग्नि

समिधा से प्रज्वलित हैं. अग्नि हमारी स्तुतियां सुनने की कृपा करें. हम उन के लिए हवि समर्पित करते हैं. जल देव हमारी स्तुतियां सुनने की कृपा करें. हम उन के लिए हवि समर्पित करते हैं. बुद्धि की देवी हमारी स्तुतियां सुनने की कृपा करें. हम उन के लिए हवि समर्पित करते हैं. विद्वान् यज्ञ में स्तुतियां पढ़ते हैं. सविता देव उन्हें सुनने की कृपा करें. उन के लिए यह आहुति समर्पित हैं. (२६)

देवीरापो अपां नपाद्यो व ऽ ऊर्मिर्हविष्य ऽ इन्द्रियावान् मदिन्तमः.
तं देवेभ्यो देवत्रा दत्त शुक्रपेभ्यो येषां भाग स्थ स्वाहा.. (२७)

दिव्य जल! आप के लहरदार प्रवाह इंद्रियों की शक्ति बढ़ाने वाले हैं. आप के लहरदार प्रवाह आनंददायी हैं. उस जल को देवों व रक्षक के लिए समर्पित कीजिए. उसे वीर्य बढ़ाने के लिए समर्पित कीजिए. इस में आप का भी एक भाग है. इन सब के लिए स्वाहा. (२७)

कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या ऽ उन्नयामि.
समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः.. (२८)

समुद्र तक पृथ्वी की उर्वरता के लिए आप को ऊपर की ओर उठाते हैं. इस जल के साथ जलों को मिला कर ओषधियां उत्पन्न होती हैं. ओषधियों को भी ओषधि के साथ मिलाया जाता है. (२८)

यमग्ने पृत्सु मर्त्यमवा वाजेषु यं जुनाः. स यन्ता शश्वतीरिषः स्वाहा.. (२९)

हे अग्नि! आप जिन यजमानों के पास से देवताओं तक हवि पहुंचाते हैं, वे लोग आप की कृपा से यज्ञ करते हैं. वे यजमान शाश्वत (स्थायी) और इष्ट धन को प्राप्त करते हैं. अग्नि के लिए स्वाहा. (२९)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
आ ददे रावासि गभीरमिममध्वरं कृधीन्द्राय सुषूतमम्.
उत्तमेन पविनोर्जस्वन्तं मधुमन्तं पयस्वन्तं निग्राभ्या स्थ देवश्रुतस्तर्पयत मा मनो मे.. (३०)

हम यजमान सूर्योदय के समय यज्ञ के साधन को अश्विनीकुमारों के हाथों में ग्रहण कराते हैं. अग्नि के लिए स्वाहा. पूषा देव के लिए स्वाहा. आप इच्छापूरक हैं. हम इंद्र देव के लिए यज्ञ करना चाहते हैं. हम उन के लिए यज्ञ को ऊर्जस्वी पदार्थों से पवित्र करते हैं. हम उन के लिए यज्ञ को रसीले और पवित्र पदार्थों से पवित्र करते हैं. वे हवि को भलीभांति ग्रहण करने की कृपा करें. आप हमें तृप्ति प्रदान करने की कृपा करें. (३०)

मनो मे तर्पयत वाचं मे तर्पयत प्राणं मे तर्पयत चक्षुर्मे तर्पयत श्रोत्रं मे तर्पयतात्मानं मे तर्पयत प्रजां मे तर्पयत पशून्मे तर्पयत गणान्मे तर्पयत गणा मे मा वितृषन्.. (३१)

हे जल समूह! आप हमारे मन, वचन, प्राण को तृप्त कीजिए. आप हमारे नेत्रों व कानों को तृप्त कीजिए. आप हमारी आत्मा, प्रजा को तृप्त कीजिए. आप हमारे पशुओं व हमारे सेवकों को तृप्त कीजिए. हम आप के बिना कभी भी प्यासे न हों. (३१)

इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवत ऽ इन्द्राय त्वादित्यवत ऽ इन्द्राय त्वाभिमातिघ्ने.
श्येनाय त्वा सोमभृतेग्नये त्वा रायस्पोषदे.. (३२)

हे सोम! हम इंद्र देव के लिए आप को ग्रहण करते हैं. हम वसुमान के लिए आप को ग्रहण करते हैं. हम रुद्र समान के लिए आप को ग्रहण करते हैं. हम आदित्य के समान के लिए आप को ग्रहण करते हैं. हम शत्रुनाशक के लिए आप को ग्रहण करते हैं.हे सोम! हम आप को पीने के लिए बाज की तरह झपटने वाले इंद्र देव के लिए ग्रहण करते हैं.हम भरणपोषण कर्ता के लिए बाज की तरह ग्रहण करते हैं. हम धनदाता, पोषणदाता अग्नि के लिए ग्रहण करते हैं. (३२)

यत्ते सोम दिवि ज्योतिर्यत्पृथिव्यां यदुरावन्तरिक्षे.
तेनास्मै यजमानायोरु राये कृध्यधि दात्रे वोच:.. (३३)

हे सोम! आप स्वर्गलोक व अंतरिक्षलोक तक फैले हुए हैं. आप दिव्य व प्रकाशमान हैं. आप यजमान के लिए धन धारिए, धन दीजिए, आप यजमान की सहायता कीजिए. (३३)

श्वात्रा स्थ वृत्रतुरो राधोगूर्ता ऽ अमृतस्य पत्नी:.
ता देवीर्देवत्रेमं यज्ञं नयतोपहूता: सोमस्य पिबत.. (३४)

देवियां (सोम रूपी) अमृत की पत्नी हैं वे कल्याणकारी वृत्र नाशक व धनदायक हैं. आप इस यज्ञ की रक्षा करें. आप इस यज्ञ का मार्ग निर्देशन करें. आप इस यज्ञ में सोमरस का पान करने की कृपा करें. (३४)

मा भेर्मा सं विक्था ऽ ऊर्जं धत्स्व धिषणे वीड्वी सती वीडयेथामूर्जं दधाथाम्.
पाप्मा हतो न सोम:.. (३५)

हे सोम! आप का रस निकालते समय आप को पत्थरों से कूटा जाता है. आप उस से भयभीत मत होइए. आप चंद्रमा जैसे शीतल और समर्थ हैं. आप सब के पाप और कपट दूर करने की कृपा कीजिए. (३५)

प्रागपागुदगधराक्सर्वतस्त्वा दिश ऽ आधावन्तु.
अम्ब निष्पर समरीर्विदाम्.. (३६)

हे सोम! आप पूर्व, पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण दिशा में अपने भाग को ग्रहण कर के दौड़ते हुए यज्ञ में आइए. आप इस तरह यज्ञ को भलीभांति जानने की कृपा कीजिए. (३६)

त्वमङ्ग प्रश ꣳ सिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम्.
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्डितेन्द्र ब्रवीमि ते वचः.. (३७)

हे इंद्र! आप प्रशंसित, शक्तिमान, दिव्य हैं व सुखदायी हैं. आप जैसा धनदायी कोई और देव नहीं है. हम आप के कृपा वचनों के आधार पर ही ऐसा कहते हैं. (३७)

सातवां अध्याय

वाचस्पतये पवस्व वृष्णो ऽ अ ꣳ शुभ्यां गभस्तिपूत:.
देवो देवेभ्य: पवस्व येषां भागोसि.. (१)

हे सोम! आप वाचस्पति के लिए पवित्र होइए. आप शक्तिशाली, शुभ एवं गर्भ से ही पवित्र हैं. आप जिन देवताओं का भाग हैं, उन के लिए प्रवाहित होइए. (१)

मधुमतीर्न ऽ इषस्कृधि यत्ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा स्वाहोर्वन्तरिक्षमन्वेमि.. (२)

हे सोम! आप मधुर धाराओं वाले हैं. आप हमारा इष्ट कीजिए. आप हमें जाग्रत कीजिए. जाग्रत सोम के लिए स्वाहा. सोम से सोम के लिए स्वाहा. यह आहुति अंतरिक्ष में विस्तार पाने की कृपा करे. (२)

स्वाङ्कृतोसि विश्वेभ्य ऽ इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्य: पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्यो देवा ꣳशो यस्मै त्वेडे तत्सत्यमुपरिप्लुता भङ्गेन हतो ऽ सौ फट् प्राणाय त्वा व्यानाय त्वा.. (३)

आप स्वयंभू हैं. आप सभी देवों के लिए स्वयं प्रकाशित हुए हैं. आप इंद्रियों के लिए स्वयं प्रकाशित हुए हैं. आप स्वर्गलोक के लिए स्वयं प्रकाशित हुए हैं. आप पृथ्वी के लिए स्वयं प्रकाशित हुए हैं. पवित्र मन वाले आप के लिए स्वाहा. अच्छी तरह उत्पन्न होने वाले सूर्य के लिए स्वाहा. मरीचि देवों के लिए स्वाहा. मर्यादा भंग करने वालों का नाश कीजिए. आप सत्य से ओतप्रोत हैं. हम प्राण और व्यान से आप की उपासना करते हैं. (३)

उपयामगृहीतोस्यन्तर्यच्छमघवन् पाहि सोमम्. उरुष्य राय ऽ एषो यजस्व.. (४)

हे इंद्र! सोम को कलश में ग्रहण कर लिया है. आप इस की रक्षा कीजिए. आप यजमानों को भरपूर वैभव दीजिए एवं उन की शत्रुओं से रक्षा कीजिए. (४)

अन्तस्ते द्यावापृथिवी दधाम्यन्तर्दधाम्युर्वन्तरिक्षम्.
सजूर्देवेभिरवरै: परैश्चान्तर्यामे मघवन् मादयस्व.. (५)

हे इंद्र देव! स्वर्गलोक में, पृथ्वीलोक पर एवं अंतरिक्षलोक में आप का ही

विस्तार है. अंतरिक्षलोक में आप देवताओं सहित अन्यों को (मनुष्यों को) मदमस्त बनाने की कृपा कीजिए. (५)

स्वाङ्कृतोसि विश्वेभ्य ऽ इन्द्रियेभ्यो दिव्येभ्यः पार्थिवेभ्यो मनस्त्वाष्टु स्वाहा त्वा सुभव सूर्याय देवेभ्यस्त्वा मरीचिपेभ्य ऽ उदानाय त्वा.. (६)

हे श्रेष्ठ जन्म वाले! आप सभी के लिए स्वयं प्रकाशित हुए हैं. आप इंद्रियों के लिए स्वयं प्रकाशित हुए हैं. आप देवताओं और मनुष्यों के मन के संतोष के लिए स्वयं प्रकाशित हुए हैं. आप को सूर्य के लिए (कलश में) ग्रहण किया जाता है. आप को मरीचि के लिए (कलश में) ग्रहण किया जाता है. आप को उदान (देवता) के लिए (उपयाम में) ग्रहण किया जाता है. (६)

आ वायो भूष शुचिपा ऽ उप नः सहस्रं ते नियुतो विश्ववार.
उपो ते अन्धो मद्यमयामि यस्य देव दधिषे पूर्वपेयं वायवे त्वा.. (७)

हे वायु! आप पवित्रता के रक्षक हैं. आप हजारों गुणों के आधार हैं. हम सोमरस से आप को आनंदित बनाते हैं. आप इस पेय को पहले भी पी चुके हैं. हम वायु के लिए इस पेय को धारण करते हैं. (७)

इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरागतम्.
इन्दवो वामुशन्ति हि.
उपयामगृहीतोसि वायव ऽ इन्द्रवायुभ्यां त्वैष ते योनिः सजोषोभ्यां त्वा.. (८)

हे इंद्र देव! हे वायु! आप दोनों के प्रयोग में लाने के लिए यह सोमरस आया है (लाया गया है). आप इस का सेवन कीजिए. हे सोम! आप को इंद्र देव के लिए कलश में ग्रहण किया है. वही आप का मूल स्थान है. आप को वायु के लिए कलश में ग्रहण किया है. वही आप का मूल स्थान है. हम उन्हीं दोनों की प्रसन्नता के लिए आप को ग्रहण करते हैं. (८)

अयं वां मित्रावरुणा सुतः सोम ऽ ऋतावृधा.
ममेदिह श्रुत ꣳ हवम्.
उपयामगृहीतो ऽ सि मित्रावरुणाभ्यां त्वा.. (९)

हे मित्र देव! हे वरुण देव! आप सत्य की वृद्धि करते हैं. हम आप के पुत्र आप दोनों के लिए इस सोमरस कलश में ग्रहण करते हैं. आप सोमरस का सेवन करने की कृपा कीजिए. (९)

राया वय ꣳ ससवा ꣳ सो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः.
तां धेनुं मित्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीमेष ते योनिर्ऋतायुभ्यां त्वा.. (१०)

हे मित्र देव! हे वरुण देव! आप हमें ऐसा धन दीजिए जो वापस हम से न जाए. उस धन को पा कर हम आनंदित हों. हमें ऐसी गाएं प्रदान कीजिए, जो हमें छोड़ कर कहीं नहीं जाएं. आप की इस कृपा से हम वैसे ही प्रसन्न होंगे, जैसे देवगण हवि पा कर प्रसन्न होते हैं, गाय आहार पा कर प्रसन्न होती है. ऋत (सत्य) व यज्ञ की आयु की बढ़ोतरी के लिए आप दोनों यज्ञशाला में अपने लिए निश्चित आसन पर विराजिए. (१०)

या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती.
तया यज्ञं मिमिक्षतम्. उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा.. (११)

हे अश्विनी देवो! आप मधुर वाणी से हमारे यज्ञ को सींचने की कृपा कीजिए. मधुर वाणी से हम ने भी यज्ञ को सींचा है. हम ने आप दोनों के लिए हवि को कलश में ग्रहण किया है. वही आप का मूल स्थान है. यज्ञ में आप अपने निर्धारित आसन पर विराजने की कृपा कीजिए. (११)

तं प्रत्नथा पूर्वथा विश्वथेमथा ज्येष्ठतातिं बर्हिषद ं्ठ स्वर्विदम्.
प्रतीचीनं वृजनं दोहसे धुनिमाशुं जयन्तमनु यासु वर्धसे.
उपयामगृहीतोसि शण्डाय त्वैष ते योनिर्वीरतां पाह्यपमृष्टः शण्डो देवास्त्वा शुक्रपाः प्रणयन्त्वनाधृष्टासि.. (१२)

इंद्र देव बारबार सोमरस को पीते हैं. सोमरस पोषक व आनंददायी है. इंद्र देव आत्मज्ञाता, ज्येष्ठ, कुश के आसन पर विराजते हैं. वे यजमानों के लिए धन का दोहन करते हैं और यजमानों के लिए धन की बढ़ोतरी करते हैं. वे वीर्यरक्षक हैं. उन के लिए सोमरस को कलश में ग्रहण किया गया है. वही उस की मूल योनि है. वे हमें दुष्टों से दूर करें तथा अपने लिए निर्धारित आसन पर विराजने की कृपा करें. (१२)

सुवीरो वीरान् प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम्.
सञ्जग्मानो दिवा पृथिव्या शुक्रः शुक्रशोचिषा निरस्तः
शण्डः शुक्रस्याधिष्ठानमसि.. (१३)

आप सुवीर हैं. आप वीरों को पैदा कीजिए. आप यजमान को धन से पोषित कीजिए. आप स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक को चमकाने वाले हैं. आप सर्वत्र प्रकाश से चमकाइए. आप प्रकाश के निवास स्थान हैं. आप उजड्डपन को नष्ट करने वाले हैं. (१३)

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम.
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः.. (१४)

हे सोम! आप अनंत शक्तिमान, श्रेष्ठ वीर्यवान व धन के पोषक हैं. हम आप

के लिए सदा हवि देने वाले हैं. विश्व पर वारने योग्य यह हमारी आद्य (पहली) संस्कृति हैं. वरुण, मित्र व अग्नि प्रथम देव हैं. (१४)

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्मा ऽ इन्द्राय सुतमा जुहोत स्वाहा.
तुम्पन्तु होत्रा मध्वो या: स्विष्टा या: सुप्रीता: सुहुता यत्स्वाहायाडग्नीत्.. (१५)

बृहस्पति देव प्रथम देवता हैं. ज्ञाता लोग इंद्र देव के लिए यज्ञ करें. स्वाहापूर्वक उन के लिए हवि प्रदान करने की कृपा करें. यजमान होता मधुर आहुति से उन्हें तृप्त करने की कृपा करें. होता सुप्रीतिकर आहुति से उन्हें तृप्त करें. यजमान उन के लिए अच्छी तरह आहुति अग्नि के पास पहुंचाने की कृपा करें. (१५)

अयं वेनश्चोदयत्पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायू रजसो विमाने.
इममपा ꣳ सङ्गमे सूर्यस्य शिशुं न विप्रा मतिभी रिहन्ति.
उपयामगृहीतोसि मर्काय त्वा.. (१६)

ये वेन देव बादलों के गर्भ में स्थित जल को बरसने के लिए प्रेरित करते हैं. चिरायु ज्योति वाले सूर्य का वंदन करते हैं. जल को पा कर यजमान ऐसे प्रसन्न होते हैं, जैसे लोग पुत्र को पा कर प्रसन्न होते हैं. विद्वान् बुद्धिपूर्वक सूर्य की उपासना करते हैं. आप को मर्क (राक्षस-विनाश) के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. (१६)

मनो न येषु हवनेषु तिग्मं विप: शच्या वनुथो द्रवन्ता.
आ य: शर्याभिस्तुविनृम्णो ऽ अस्याश्रीणीतादिशं गभस्तावेष ते योनि: प्रजा: पाह्यपमृष्टो मर्को देवास्त्वा मन्थिपा: प्रणयन्त्वनाधृष्टासि.. (१७)

यजमान हवनों में मन से भाग लेते हैं. द्रवित होने वाले सोमरस का मन से पान करते हैं. हम सोम से अनुरोध करते हैं कि हम संतानसहित शत्रुओं का विनाश करने में समर्थ हो सकें. हम मथानी की तरह उन्हें मथ दें. हम निर्भय हो कर देवत्व प्राप्त करें. देवगण हमें संरक्षण प्रदान करने की कृपा करें. (१७)

सुप्रजा: प्रजा: प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम्.
सञ्जग्मानो दिवा पृथिव्या मन्थी मन्थिशोचिषा निरस्तो मर्को मन्थिनोधिष्ठानमसि.. (१८)

हे देवगण! यजमान की संतान श्रेष्ठ हो. आप यजमान को श्रेष्ठ धन से पोसने की कृपा कीजिए. जैसे सूर्य स्वर्गलोक से पृथ्वी को प्रकाशित करते हैं. वैसे ही देवगण हमारे जीवन को प्रकाशित करने की कृपा करें. इन की कृपा से हम शत्रुओं को मथानी से मथने की तरह मथ दें. मर्क नामक असुर दु:ख का घर है. आप की कृपा से (तेज से) वह भी पलायन कर जाए. (१८)

ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ.
अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्.. (१९)

पृथ्वी और आकाश के बीच जो ग्यारह दिव्य देव स्थित हैं, वे सभी देव महिमावान हैं. वे ग्यारह ही देव इस यज्ञ को सफलतापूर्वक संपन्न कराने की कृपा करें. (१९)

उपयामगृहीतोस्याग्रयणोसि स्वाग्रयण:.
पाहियज्ञं पाहि यज्ञपतिं विष्णुस्त्वामिन्द्रियेण पातु विष्णुं त्वं पाह्यभि सवनानि पाहि.. (२०)

हे देवगण! आप के लिए सोमरस को कलश में ग्रहण किया गया है. आप यज्ञ में सर्वप्रथम ग्रहण किए जाने वाले हैं. आप यज्ञ में सर्वप्रथम बुलाए जाने वाले हैं. आप यज्ञ की रक्षा कीजिए. आप यज्ञपति को संरक्षण दीजिए. आप विष्णु की रक्षा कीजिए. उन की रक्षा करें. आप तीनों संध्याओं की रक्षा करने की कृपा कीजिए. (२०)

सोम: पवते सोम: पवतेस्मै ब्रह्मणेस्मै क्षत्रायास्मै सुन्वते यजमानाय पवत ऽ इष ऽ ऊर्जे पवतेद्भ्य ऽ ओषधीभ्य: पवते द्यावापृथिवीभ्यां पवते सुभूताय पवते विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य ऽ एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य:.. (२१)

सोमरस प्रवाहित होता है. पवित्र सोम इस में प्रवाहित होता है. ब्राह्मणों के लिए यह सोम प्रवाहित होता है. क्षत्रियों के लिए यह सोम प्रवाहित होता है. ऊर्जादायी के लिए यह सोम प्रवाहित होता है. ओषध के लिए यह सोम प्रवाहित होता है. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक के लिए यह सोम प्रवाहित होता है. अच्छे भरणपोषणकर्ता हेतु यह सोम प्रवाहित होता है. विश्व के लिए यह सोम प्रवाहित होता है. यह विश्व के लिए मूल स्थान है. सभी देव यज्ञशाला में अपने लिए निर्धारित स्थान पर विराजें. (२१)

उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा बृहद्वते वयस्वत ऽ उक्थाव्यं गृह्णामि.
यत्त ऽ इन्द्र बृहद्वयस्तस्मै त्वा विष्णवे त्वैष ते योनिरुक्थेभ्यस्त्वा देवेभ्यस्त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि.. (२२)

हे सोम! आप को इंद्र देव के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. आप को बृहद् देव के लिए उपयाम में ग्रहण किया गया है. आप उपयाम (कलश) हैं. हम उक्त मंत्रों से आप की उपासना करते हैं. यह उपयाम इंद्र देव का मूल स्थान है. यह उपयाम ब्रह्म देव व विष्णु का मूल स्थान है. हम यज्ञ में उक्त मंत्र से आप सब देवों की उपासना करते हैं. हम यज्ञ में श्रेष्ठ दीर्घ जीवन की कामना से आप को ग्रहण करते हैं. (२२)

मित्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राय त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राग्निभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्रावरुणाभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राबृहस्पतिभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामीन्द्राविष्णुभ्यां त्वा देवाव्यं यज्ञस्यायुषे गृह्णामि.. (२३)

हे सोम! मित्र और वरुण देव के लिए आप को ग्रहण किया गया है. दीर्घ आयु हेतु मित्र और वरुण देव के लिए आप को ग्रहण किया गया है. हे सोम! इंद्र देव के लिए आप को ग्रहण किया है. हम ने इंद्र देव और अग्नि के लिए आप को ग्रहण किया है. वरुण देव के लिए आप को ग्रहण किया गया है. हे सोम! बृहस्पति देव के लिए आप को ग्रहण किया गया है. हे सोम! विष्णु के लिए आप को ग्रहण किया गया है. (२३)

मूर्धानं दिवो ऽ अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽ आ जातमग्निम्.
कवि ꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः.. (२४)

हे अग्नि! आप स्वर्गलोक के सर्वोच्च स्थान पर चमकते हैं. आप पृथ्वी पर सूर्य की भांति चमकते हैं. आप वैश्वानर (आग) व सर्वज्ञ हैं. यजमान लोगों ने अग्नि को अरणिमंथन (लकड़ियों की रगड़) से प्रकट किया है. अग्नि देव हमारे अतिथि सम्राट् हैं. (२४)

उपयामगृहीतोसि ध्रुवोसि ध्रुवक्षितिर्ध्रुवाणां ध्रुवतमोच्युतानामच्युत क्षित्तम ऽ एष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा.
ध्रुवं ध्रुवेण मनसा वाचा सोममवनयामि.
अथा न ऽ इन्द्र इद्विशोसपत्नाः समनसस्करत्.. (२५)

हे सोम! आप ध्रुव (स्थिर) और पृथ्वी पर ध्रुव रहने वालों में अग्रगण्य हैं. आप ध्रुवतम के नाम से प्रसिद्ध हैं. आप सब का मूल स्थान व आश्रय स्थान हैं. ध्रुव मन वाले यजमान हम ध्रुव मन से वाणीपूर्वक आप को नमन करते हैं. इंद्र देव हम पत्नी और संतान सहित अच्छे मन से आप को नमन करते हैं. (२५)

यस्ते द्रप्सः स्कन्दति यस्ते ऽ अ ꣳ शुर्ग्रावच्युतो धिषणयोरुपस्थात्.
अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात्तं ते जुहोमि मनसा वषट्कृत ꣳ स्वाहा देवानामुत्क्रमणमसि.. (२६)

हे सोम! आप का जो अंश पत्थरों से टूटते समय, निचोड़ते और छानते समय इधरउधर गिर जाता है, जो यज्ञ में आहुति डालने के बाद अध्वर्यु के पास बच जाता है, हम उस पवित्र भाग को मन से इकट्ठा करते हैं. एकत्रित किए हुए इस अंश को अग्नि को समर्पित करते हैं. सोम को संकल्पपूर्वक स्वाहा. आप देवताओं को ऊर्ध्वगति प्रदान करने वाले हैं. (२६)

प्राणाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व व्यानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वोदानाय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व वाचे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व क्रतूदक्षाभ्यां मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व श्रोत्राय मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व चक्षुर्भ्यां मे वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्.. (२७)

आप हमारे प्राणों के लिए वर्चस्व (तेज) प्रदान कीजिए. आप हमारे व्यान के

लिए वर्चस्व प्रदान कीजिए. आप हमारे अपान के लिए वर्चस्व प्रदान कीजिए. आप हमारे उदान के लिए वर्चस्व प्रदान कीजिए. आप हमारे मन में वर्चस्व दीजिए. आप हमारी वाणी में वर्चस्व दीजिए. आप हमारे कर्म में वर्चस्व दीजिए. आप हमारे नेत्र में वर्चस्व दीजिए. आप हमारे कानों को वर्चस्व दीजिए. (२७)

आत्मने मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वौजसे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्वायुषे मे वर्चोदा वर्चसे पवस्व विश्वाभ्यो मे प्रजाभ्यो वर्चोदसौ वर्चसे पवेथाम्.. (२८)

आप हमारी आत्मा में वर्चस्व दीजिए. आप हमारे ओज में वर्चस्व दीजिए. आप हमारी आयु में वर्चस्व दीजिए. आप हमारी सारी प्रजा में वर्चस्व दीजिए. आप हमारी पृथ्वी के सभी साधनों को वर्चस्व दीजिए. (२८)

कोसि कतमोसि कस्यासि को नामासि.
यस्य ते नामामन्महि यं त्वा सोमेनातीतृपाम.
भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्या ꣳ सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः.. (२९)

हे सोम! आप कौन हैं ? आप कहां से हैं ? आप किस के हैं ? आप का क्या नाम है, जिसे जान कर हम आप को सोमरस से तृप्त कर सकें. आप सर्वत्र व्याप्त हैं. आप की कृपा से हम अच्छी संतान वाले, वीरों वालें हों एवं अच्छे पोषण से पुष्ट हों. (२९)

उपयामगृहीतोसि मधवे त्वोपयामगृहीतोसि माधवाय त्वोपयामगृहीतोसि शुक्राय त्वोपयामगृहीतोसि शुचये त्वोपयामगृहीतोसि नभसे त्वोपयामगृहीतोसि नभस्याय त्वोपयामगृहीतोसीषे त्वोपयामगृहीतोस्यूर्जे त्वोपयामगृहीतोसि सहसे त्वोपयामगृहीतोसि सहस्याय त्वोपयामगृहीतोसि तपसे त्वोपयामगृहीतोसि तपस्याय त्वोपयामगृहीतोस्य ꣳ हसस्पतये त्वा.. (३०)

हे सोम! आप को कलश में ग्रहण किया गया है. आप को मधु के लिए कलश से ग्रहण किया गया है. आप को माधव हेतु ग्रहण किया गया है. आप को शुक्र के लिए ग्रहण किया गया है. हे सोम! आप को पवित्रता के लिए ग्रहण किया गया है. आप को नभ हेतु ग्रहण किया गया है. आप को ऊर्जा हेतु ग्रहण किया गया है. हे सोम! आप को साहस के लिए ग्रहण किया गया है. हे सोम! आप को साहस से ग्रहण किया गया है. हे सोम! आप को तप के लिए ग्रहण किया गया है. हे सोम! आप को मर्यादा के लिए ग्रहण किया गया है. (३०)

इन्द्राग्नी ऽ आ गत ꣳ सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम्.
अस्य पातं धियेषिता.
उपयामगृहीतोसीन्द्राग्निभ्यां त्वैष ते योनिरिन्द्राग्निभ्यां त्वा.. (३१)

हे सोम! आप को इंद्र देव हेतु कलश में ग्रहण किया है. आप को अग्नि हेतु

उपयाम में ग्रहण किया है. आप को इंद्र देव की तृप्ति हेतु कलश में ग्रहण किया है. आप को अग्नि की तृप्ति हेतु कलश में ग्रहण किया है, कलश आप दोनों का मूल स्थान है. आप यज्ञशाला में निर्धारित स्थान पर विराजने की कृपा कीजिए. हम श्रेष्ठ वाणियों से आप की उपासना करते हैं. आप यज्ञ में अपना भाग स्वीकार कीजिए. (३१)

आ घा ये ऽ अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्.
येषामिन्द्रो युवा सखा.
उपयामगृहीतोस्यग्नीन्द्राभ्यां त्वैष ते योनिरग्नीन्द्राभ्यां त्वा.. (३२)

हे सोम! आप को इंद्र देव व अग्नि की तृप्ति हेतु विधिवत ग्रहण किया गया है. यज्ञस्थल में आप दोनों देवों का कुश का आसन निर्धारित है. इंद्र आप के मित्र हैं. वे युवा हैं. सोम को इंद्र देव और अग्नि दोनों के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. आप ही इंद्र और अग्नि दोनों का मूल स्थान हैं. (३२)

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास ऽ आगत.
दाश्वा ꣳ सो दाशुषः सुतम्.
उपयामगृहीतोसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य ऽ एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः.. (३३)

विश्व देव यज्ञ में पधारने की कृपा करें. वे यजमानों के संरक्षक व यजमानों के पालक हैं. वे हम सब के अनुरोध पर यज्ञशाला में सोमरस का पान करने के लिए पधारने की कृपा करें. सोमरस को विश्व देव की वृत्ति के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. यह आप का मूल स्थान है. आप सभी देवताओं के लिए यहां स्थिर होने की कृपा कीजिए. (३३)

विश्वे देवास ऽ आगत शृणुता म इम ꣳ हवम्.
एदं बर्हिर्निषीदत.
उपयामगृहीतोसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य ऽ एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः.. (३४)

हे विश्व देव! आप हमारी प्रार्थनाएं सुनिए. आप पधारने की कृपा कीजिए. हम आप से यहां कुश के आसन पर बैठने का अनुरोध करते हैं. आप उस आसन पर विराजने की कृपा कीजिए. आप को सभी देवताओं के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. यही आप का और देवताओं का मूल स्थान है. (३४)

इन्द्र मरुत्व ऽ इह पाहि सोमं यथा शार्याते ऽ अपिबः सुतस्य.
तव प्रणीती तव शूर शर्मन्ना विवासन्ति कवयः सुयज्ञाः.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा मरुत्वत ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते.. (३५)

हे इंद्र देव! हे मरुद् देव! आप सोम की रक्षा कीजिए. जैसे आप ने शर्याति के यज्ञ में सोमरस पीने की कृपा की, वैसे ही आप इस यज्ञ में पधारिए और सोमरस

पीने की कृपा कीजिए. आप शूरवीर, सुखदाता, श्रेष्ठ यज्ञ वाले एवं अच्छे कवि हैं. आप को इंद्र देव के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. आप को मरुद्‌गण देव के लिए उपयाम में ग्रहण किया गया है. वही आप का मूल स्थान है. आप मरुद्‌गण के साथ यहां स्थिर होने की कृपा कीजिए. (३५)

मरुत्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारिं दिव्य ꣳ शासमिन्द्रम्.
विश्वासाहमवसे नूतनायोग्र ꣳ सहोदामिह त ꣳ हुवेम.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा मरुत्वत ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते.
उपयामगृहीतोसि मरुतां त्वौजसे.. (३६)

हे इंद्र! आप हम यजमानों की विनती पर मरुद्वान हो कर पधारिए. मरुद्‌गण जल की वर्षा करने वाले एवं दिव्य हैं. आप को विश्वासपूर्वक आमंत्रित करते हैं. आप नूतन और उग्र हैं. आप साथसाथ रहते हैं. आप को इंद्र देव व मरुद्‌गण के लिए उपयाम में ग्रहण किया गया है. वही इंद्र देव और मरुद्‌गण का मूल स्थान है. ओज पाने के लिए आप को कलश में ग्रहण किया गया है. (३६)

सजोषा ऽ इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्.
जहि शत्रूँ २ ऽ रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः.
उपयाम गृहीतोसीन्द्राय त्वा मरुत्वत ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते.. (३७)

हे इंद्र देव! आप वृत्रासुर नाशक, शूरवीर, विद्वान् हैं. मरुद्‌गणों के साथ इस यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. आप शत्रुओं को दूर एवं उन का नाश कीजिए. आप हमें सब ओर से सुरक्षा प्रदान करने की कृपा कीजिए. आप को इंद्र देव व मरुद् देव के लिए कलश में ग्रहण किया है. वही इंद्र देव और मरुद्‌गण का मूल स्थान है. (३७)

मरुत्वाँ २ ऽ इन्द्र वृषभो रणाय पिबा सोममनुष्वधं मदाय.
आसिञ्चस्व जठरे मध्व ऽ ऊर्मिं त्व ꣳ राजासि प्रतिपत्सुतानाम्.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा मरुत्वत ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते.. (३८)

हे मरुद्‌गण! आप यजमानों के लिए जल, धन व अन्न बरसाते हैं. आप सोमरस पी कर आनंदित होइए. आप शत्रुओं से युद्ध कीजिए. सोमरस लहरदार व मीठा है. आप छक कर इस को पीजिए. आप तो सोमरस के राजा हैं. आप को इंद्र देव व मरुद्‌गण के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. वही इंद्र देव व मरुद्‌गण का मूल स्थान है. (३८)

महाँ २ ऽ इन्द्रो नृवदा चर्षणिप्रा ऽ उत द्विबर्हा ऽ अमिनः सहोभिः.
अस्मद्र्यग्वावृधे वीर्यायोरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत्.
उपयामगृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा.. (३९)

हे इंद्र! आप महान्, व्यापक, सर्वज्ञ, मनोकामना पूरक हैं. आप अपने सहयोगी देवों के साथ यज्ञ में पधारने व हमारा द्रव्य व पराक्रम बढ़ाने की कृपा कीजिए. आप हमारे कर्म विशाल बनाने की कृपा कीजिए. आप कर्मों के पोषक हैं. आप को महान् इंद्र देव के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. वही आप का मूल स्थान है. (३९)

महाँ २ ऽ इन्द्रो य ऽ ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमां २ ऽ इव. स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे.
उपयामगृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा.. (४०)

हे इंद्र देव! आप महान् और जल वर्षक हैं. आप हम पर ओज बरसाइए. आप उपासक यजमानों की बढ़ोतरी करते हैं. आप को महान् इंद्र देव के लिए उपयाम में ग्रहण किया गया है. वही आप का मूल स्थान है. (४०)

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः.
दृशे विश्वाय सूर्य ॐ स्वाहा.. (४१)

सूर्य सर्वज्ञ और दिव्य किरणें वहन करते हैं. वे अपनी किरणों की पताका फहराते हैं. वे प्राणिमात्र को दुनिया दिखाते हैं. उन के लिए स्वाहा. (४१)

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः.
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ॐ सूर्य ऽ आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा.. (४२)

मित्र देव वरुण देव और अग्नि देवता के नेत्र हैं. स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक तथा अंतरिक्षलोक में सूर्य प्रकाश फैलाते हैं. सूर्य जगत् की आत्मा हैं. इन सब देवों के लिए स्वाहा. सूर्य मित्र देव के नेत्र हैं. वे वरुण देव के नेत्र हैं. वे अग्नि के नेत्र हैं. वे देवताओं के नेत्र हैं. वे स्वर्गलोक को अपने प्रकाश से पूर्णतया प्रकाशित करते हैं. वे पृथ्वीलोक को अपने प्रकाश से पूर्णतया प्रकाशित करते हैं. वे अंतरिक्ष को अपने प्रकाश से पूर्णतया प्रकाशित करते हैं. वे जगत् की आत्मा हैं. उन सूर्य के लिए स्वाहा. (४२)

अग्ने नय सुपथा राये ऽ अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्.
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम स्वाहा.. (४३)

हे अग्नि! आप हमें अच्छे पथ की ओर ले जाइए और धन प्रदान कीजिए. आप हमें अच्छा विद्वान् बनाइए. आप हम से बुराइयों को दूर कीजिए. हम बारबार आप को नमन करते हैं. हम बारबार आप के लिए प्रार्थना करते हैं. आप के लिए स्वाहा. आप हमें सुपथ पर ले चलिए. आप हमें धन दीजिए. (४३)

अयं नो ऽ अग्निर्वरिवस्कृणोत्वयं मृधः पुर ऽ एतु प्रभिन्दन्.
अयं वाजाञ्जयतु वाजसातावय ॐ शत्रूञ्जयतु जर्हषाणः स्वाहा.. (४४)

हे अग्नि! हमारे दुश्मनों का भेद दीजिए व उन को हरा दीजिए. हमारे दुश्मनों के

नगर भेद दीजिए. हमारे दुश्मनों की जमा पूंजी हमें दे दीजिए. शत्रुओं को पराजित करने वाले अग्नि के लिए स्वाहा. (४४)

रूपेण वो रूपमभ्यागां तुथो वो विश्ववेदा विभजतु.
ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा वि स्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यतस्व सदस्यैः.. (४५)

हम अपने रूप से आप के रूप की ओर गमन करना चाहते हैं. देवगण सर्वज्ञ हैं. वे देवगण सभी के लिए सुख बांटने की कृपा करें. उन की कृपा से हम सत्य के पथ के पथिक बनें. जैसे चंद्र देव अंतरिक्ष से देखते हैं, वैसे ही हम भी दूर दृष्टिवान हों. (४५)

ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यमृषिमार्षेय ꣳ सुधातुदक्षिणम्.
अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातारमाविशत.. (४६)

देवताओं की कृपा से हम आज ब्राह्मणों, पिता, पितामह, ऋषि व आर्षगण से युक्त हों. आप दक्षिणा अच्छी तरह धारण करें. देवगण हमारे त्राता हैं. श्रेष्ठ दानदाता याजकों को श्रेष्ठ फल प्रदान करने की कृपा करें. (४६)

अग्नये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोमृतत्त्वमशीयायुर्दात्र ऽ एधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे रुद्राय त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोमृतत्त्वमशीय प्राणो दात्र ऽ एधि वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे बृहस्पतये त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोमृतत्त्वमशीय त्वग्दात्र ऽ एधि मयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे यमाय त्वा मह्यं वरुणो ददातु सोमृतत्त्वमशीय हयो दात्र ऽ एधि वयो मह्यं प्रतिग्रहीत्रे.. (४७)

हे अग्नि! आप हमें वरुण देव को देने की कृपा कीजिए. हम अमृत पान करें. आप आयुदाता हैं. आप की कृपा से हम दीर्घायु पाएं. आप हमें रुद्र देव को देने की कृपा कीजिए. आप हमें बृहस्पति देव को देने की कृपा कीजिए. आप हमें यम देव को देने की कृपा कीजिए. (४७)

कोदात्कस्मा ऽ अदात्कामोदात्कामायादात्.
कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते.. (४८)

कौन देता है ? किस को देता है ? कामना से ही कोई किसी को देता है. कामना से ही दान दिया और लिया जाता है. (संसार में) कामनाएं ही सब कुछ हैं. (४८)

आठवां अध्याय

उपयामगृहीतोस्यादित्येभ्यस्त्वा.
विष्ण ऽ उरुगायैष ते सोमस्त ꣳ रक्षस्व मा त्वा दभन्.. (१)

हे सोम देव! आदित्य देव की तरह आप को कलश में ग्रहण करते हैं. हे विष्णु! हम आप के लिए स्तोत्र गाते हैं. आप सोमरस व हमारी रक्षा कीजिए. कोई भी आप का दमन न कर सके. (१)

कदा चन स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे.
उपोपेन्नु मघवन् भूय ऽ इन्नु ते दानन्देवस्य पृच्यत ऽ आदित्येभ्यस्त्वा.. (२)

हे इंद्र देव! आप अहिंसक हैं. आप हमारे पास पधारिए. आप हवि को ग्रहण कीजिए. आप धनवान हैं. आप अपने दान से हमें भी धनवान बनाइए. हम आदित्यों जैसा स्नेह पाने के लिए इंद्र देव की उपासना करते हैं. (२)

कदा चन प्र युच्छस्युभे नि पासि जन्मनी.
तुरीयादित्य सवनं त ऽ इन्द्रियमातस्थावमृतन्दिव्यादित्येभ्यस्त्वा.. (३)

हे पात्र! हम आदित्य देव की प्रसन्नता के लिए आप को ग्रहण करते हैं. आदित्य देव शांतचित्त, आनंददाता तथा देवों और मनुष्यों का कल्याण करने वाले हैं. (३)

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः.
आ वोर्वाची सुमतिर्ववृत्याद ꣳ होश्चिद्या वरिवोवित्तरासदादित्येभ्यस्त्वा.. (४)

यज्ञ देवों के प्रति (लिए) हैं. हे अच्छे मन वाले आदित्यगण! आप हम सब के लिए सुखकारी हों. आप की प्राचीन और श्रेष्ठ मति हमें प्राप्त हो. इस से विपरीत बुद्धि वाले भी यज्ञ भाव में रुचि लें. आदित्य देव की प्रसन्नता के लिए सोम को ग्रहण करते हैं. (४)

विवस्वन्नादित्यैष ते सोमपीथस्तस्मिन् मत्स्व.
श्रदस्मै नरो वचसे दधातन यदाशीर्दा दम्पती वाममश्नुतः.
पुमान् पुत्रो जायते विन्दते वस्वधा विश्वाहारप ऽ एधते गृहे.. (५)

हे आदित्य! आप सोमरस पी कर प्रसन्न होइए. जो यजमान दंपती श्रेष्ठ वचनों

से इन की उपासना करते हैं, श्रद्धा रखते हैं उन के पुरुषार्थी पुत्र पैदा होते हैं. धनधान्य भरपूर रहते हैं. घर में सुखशांति रहती है. (५)

वाममद्य सवितर्वाममु श्वो दिवे दिवे वाममस्मभ्य ꣳ सावीः.
वामस्य हि क्षयस्य देव भूरेरया धिया वामभाजः स्याम.. (६)

हे सविता देव! हमारा आज सुखदायी हो. हमारा कल सुखदायी हो. हमारा प्रतिदिन सुखदायी हो. हम सुखदायी घर में रहें. हमारी बुद्धि सुखदायी हो. हम सदा सुख भोगने योग्य रहें. (६)

उपयामगृहीतोसि सावित्रोसि चनोधाश्चनोधा ऽ असि चनो मयि धेहि.
जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं भगाय देवाय त्वा सवित्रे.. (७)

हम ने कलश ग्रहण कर लिया है. सविता देव अन्नदाता हैं. वह हमें अन्न प्रदान करने की कृपा करें. आप हमारे लिए अन्न धारिए व यज्ञपति का यज्ञ पूरा कराइए. हम अपने सौभाग्य के लिए सविता देव की उपासना करते हैं. (७)

उपयामगृहीतोसि सुशर्मासि सुप्रतिष्ठानो बृहदुक्षाय नमः.
विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य ऽ एष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः.. (८)

हे सोम! आप को कलश में ग्रहण कर लिया है. आप सुखदाता, सुप्रतिष्ठित, विशाल व कर्तव्य पालक हैं. हम आप को नमन करते हैं. सभी देवों के लिए आप की स्थापना की जाती है. आप देवों के मूल स्थान हैं. (८)

उपयामगृहीतोसि बृहस्पतिसुतस्य देव सोम त ऽ इन्दोरिन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्रहाँ २ ऋध्यासम्.
अहं परस्तादहमवस्ताद्यदन्तरिक्षं तदु मे पिताभूत्.
अह ꣳ सूर्यमुभयतो ददर्शाहं देवानां परमं गुहा यत्.. (९)

हे सोम! आप बृहस्पति के पुत्र हैं. हम ने आप को उपयाम में ग्रहण कर लिया है. हम सोम को पत्नी के साथ ग्रहण करते हैं. हम उन की बढ़ोतरी करते हैं. अंतरिक्ष पिता तुल्य हैं. हम सब ओर से उन का संरक्षण पाए हुए हैं. हम दोनों ओर से सूर्य के दर्शन करें. हम देवताओं की परम गुहा के दर्शन करें. (९)

अग्ना ३ इ पत्नीवन्त्सजूर्देवेन त्वष्ट्रा सोमं पिब स्वाहा.
प्रजापतिर्वृषासि रेतोधा रेतो मयि धेहि प्रजापतेस्ते वृष्णो रेतोधसो रेतोधामशीय.. (१०)

हे अग्नि! आप पत्नी सहित त्वष्टा देव की भांति सोमपान कीजिए. हम आप के लिए आहुति समर्पित करते हैं. हे प्रजापति! आप वीर्य धारक हैं. आप हमें वीर्यवान बनाइए. आप पराक्रमी हैं. आप हमारे लिए पराक्रम धारिए. हम वीर्यवान व शक्तिशाली हों. (१०)

उपयामगृहीतोसि हरिरसि हारियोजनो हरिभ्यां त्वा.
हर्योर्धाना स्थ सहसोमा ऽ इन्द्राय.. (११)

हे सोम! आप को कलश में ग्रहण किया है. आप हरे रंग के हैं. आप योजन दूर से अपने घोड़ों की सहायता से पधारिए. आप इंद्र देव के साथ हरे रंग के घोड़ों वाले रथ पर पधारिए. (११)

यस्ते अश्वसनिर्भक्षो यो गोसनिस्तस्य त ऽ इष्टयजुष स्तुतस्तोमस्य
शस्तोक्थस्योपहूतस्योपहूतो भक्षयामि.. (१२)

हे सोम! आप उपासना योग्य हैं. हम बारबार आप को आमंत्रित करते हैं. हम उक्त मंत्र से आप की उपासना करते हैं. आप घोड़ों व गायों के प्रेरक हैं. हम यजुर्वेद के मंत्रों से आप की उपासना करते हैं. हम अपने अभीष्ट की पूर्ति चाहते हैं. (१२)

देवकृतस्यैनसोवयजनमसि मनुष्यकृतस्यैनसोवयजनमसि पितृकृतस्यैनसो-
वयजनमस्यात्मकृतस्यैनसोवयजनमस्येनस ऽ एनसोवयजनमसि.
यच्चाहमेनो विद्वाँश्चकार यच्चाविद्वाँस्तस्य सर्वस्यैनसोवयजनमसि.. (१३)

आप देवताओं के प्रति यज्ञ आदि से संबंधित पापों को दूर करने वाले हैं. आप यज्ञ आदि से संबंधित मनुष्य के पापों को दूर करने वाले हैं. पितरों के प्रति किए गए पापों को दूर करने वाले हैं. आप अपनेआप के प्रति किए गए पापों को दूर करने वाले हैं. आप जानेअनजाने में किए गए पापों को दूर करने वाले हैं. आप हमें सभी पापों से मुक्त करने की कृपा कीजिए. (१३)

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा स ꣳ शिवेन.
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्.. (१४)

हम वर्चस्वी, दूधपूर्ण, श्रेष्ठ शरीर वाले और मन से कल्याणकारी रहें. त्वष्टा देव हमारे लिए धन धारिए. आप हमें धन देने व कष्ट विहीन करने की कृपा कीजिए. (१४)

समिन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः स ꣳ सूरिभिर्मघवन्त्स ꣳ स्वस्त्या.
सं ब्रह्मणा देवकृतं यदस्ति सं देवाना ꣳ सुमतौ यज्ञियाना ꣳ स्वाहा.. (१५)

हे इंद्र देव! आप हमें अच्छा मन, इष्ट गाएं व वीरता वाली भावना दीजिए. आप हमें कल्याणकारी भावनाओं से भरिए. आप ब्राह्मणों द्वारा देवताओं के लिए किए गए कार्यों के प्रति श्रेष्ठ बुद्धि से जोड़िए. यजमानों की ओर से भेंट की गई आहुति स्वीकार कीजिए. (१५)

सं वर्चसा पयसा सं तनूभिरगन्महि मनसा स ꣳ शिवेन.
त्वष्टा सुदत्रो विदधातु रायोनुमार्ष्टु तन्वो यद्विलिष्टम्.. (१६)

हम वर्चस्वी, दूधपूर्ण, श्रेष्ठ शरीर वाले मन से कल्याणकारी रहें. त्वष्टा देव! हमारे लिए धन धारिए. आप हमें धन दीजिए. आप हमें कष्ट विहीन करने की कृपा कीजिए. (१६)

धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां प्रजापतिर्निधिपा देवो अग्निः.
त्वष्टा विष्णुः प्रजया स ꣳ रराणा यजमानाय द्रविणं दधात स्वाहा.. (१७)

हे सविता देव! आप धन धारणकर्ता हैं. हम आप के लिए यज्ञ करते हैं. प्रजापति निधिवान व पालक हैं. अग्नि, त्वष्टा देव विष्णु यजमान के लिए श्रेष्ठ संतान व धन धारने की कृपा करें. हम इन सब देवताओं के लिए आहुतियां भेंट करते हैं. (१७)

सुगा वो देवाः सदना ऽ अकर्म य ऽ आजग्मेद ꣳ सवनं जुषाणाः.
भरमाणा वहमाना हवी ꣳ ष्यस्मे धत्त वसवो वसूनि स्वाहा.. (१८)

हे देवो! यज्ञ सदन आप के लिए सुगम बना दिए हैं. आप आसानी से यज्ञ-सेवन करने का काम कर सकते हैं. आप के लिए पात्र हवि से भरे हैं. आप के लिए हवि वहन कर रहे हैं. आप हमारे लिए धन धारिए. ये सभी आहुतियां धन के लिए अर्पित हैं. (१८)

याँ २ आवह ऽ उशतो देव देवाँस्तान् प्रेरय स्वे अग्ने सधस्थे.
जक्षिवा ꣳ सः पपिवा ꣳ सश्च विश्वेसुं घर्म ꣳ स्वरातिष्ठतानु स्वाहा.. (१९)

हे अग्नि! आप ने जिन का आह्वान किया है, उन देवों को अपनेअपने स्थान पर प्रतिष्ठित करने की कृपा कीजिए. आप यज्ञ में दी गई हवि सारे यज्ञ की आहुतियां ग्रहण करने की कृपा कीजिए. हम आप के लिए आहुतियां अर्पित करते हैं. (१९)

वय ꣳ हि त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन्नग्ने होतारमवृणीमहीह.
ऋधगया ऽ ऋधगुताशमिष्ठाः प्रजानन् यज्ञमुपयाहि विद्वान्त्स्वाहा.. (२०)

हे अग्नि! जिस यज्ञ के लिए आप को यहां आमंत्रित किया गया है, उसे आप ने अच्छी तरह पूरा किया. इसलिए अब ज्ञान संपन्न आप अपने स्थान की ओर प्रस्थान करते हुए यह आहुति स्वीकार करें. (२०)

देवा गातुविदो गातुं वित्त्वा गातुमित.
मनसस्पत ऽ इमं देव यज्ञ ꣳ स्वाहा वाते धाः.. (२१)

हे देवतागण! आप यज्ञ के ज्ञाता हैं. आप अपने ज्ञात स्थान की ओर गमन कीजिए. आप मन के स्वामी हैं. इस यज्ञ में आप के लिए आहुति अर्पित करते हैं. आप हमारे लिए शुद्ध वायु धारिए. (२१)

यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा.
एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा.. (२२)

हे यज्ञ देव! आप यज्ञ की ओर जाइए. आप यज्ञपति को प्राप्त होइए. आप अपने मूल स्थान को जाइए. यह आप का यज्ञ है. आप यज्ञपति के पास जाइए. हम आप को आहुति भेंट करते हैं. हम हजारों वाणियों से आप की स्तुति करते हैं. आप सर्वाधिक वीर हैं. हम इस यज्ञ में आप के लिए आहुति अर्पित करते हैं. (२२)

माहिर्भूर्मा पृदाकुः. उरु ꣳ हि राजा वरुणश्चकार सूर्याय पन्थामन्वेतवा उ.
अपदे पादा प्रतिधातवेकरुतापवक्ता हृदयाविधश्चित्.
नमो वरुणायाधिष्ठितो वरुणस्य पाशः.. (२३)

आप पृथ्वी पर अजगर के समान खतरनाक मत बनिए. सूर्य के प्रस्थान के लिए वरुण देव मार्ग को सुगम बनाने की कृपा करें. वरुण देव जहां पैर न रखे जा सकते हैं, वहां भी मार्ग बना देते हैं, प्रतिघात कर देते हैं. हृदय के कष्ट दूर करते हैं. उन के पाश दुष्टनाशी हैं. वे प्रतिष्ठित देव हैं. हमारा उन्हें नमन. (२३)

अग्नेरनीकमप ऽ आ विवेशापां नपात् प्रतिरक्षन्नसुर्यम्.
दमेदमे समिधं यक्ष्यग्ने प्रति ते जिह्वा घृतमुच्चरण्यत् स्वाहा.. (२४)

हे अग्नि! आप जल में प्रवेश कीजिए. ताकि जलधार नीचे न गिर पाए. आप असुरों से यज्ञ की रक्षा कीजिए. आप समिधा को ग्रहण करने की कृपा कीजिए. आप की जिह्वा यज्ञ का घी धारण करने के लिए प्रेरित हो. हम अग्नि के लिए आहुति अर्पित करते हैं. (२४)

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः.
यज्ञस्य त्वा यज्ञपते सूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम यत् स्वाहा.. (२५)

हे सोम! आप का हृदय समुद्र व जलमय हैं. आप को हम वहां स्थापित करते हैं. आप की ओषधियां और जल हमारे लिए प्रवाहित होते रहें. हे यज्ञपति! हम आप के लिए सूक्त उचारते हैं. विधिविधानपूर्वक आहुति अर्पित करते हैं. आप के लिए नमन. (२५)

देवीराप ऽ एष वो गर्भस्त ꣳ सुप्रीत ꣳ सुभृतं बिभृत.
देव सोमैष ते लोकस्तस्मिञ्छं च वक्ष्व परि च वक्ष्व.. (२६)

हे दिव्य जल! यह सोमपात्र आप का गर्भ है. आप प्रेम से व इस का पोषण करते हुए ग्रहण करें. हे सोम! जल आप का लोक है. आप उस की इच्छा करिए. आप भी सुखी रहिए. हमें भी सुखी रखिए. संरक्षण दीजिए. (२६)

अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः.
अव देवैर्देवकृतमेनोयासिषमव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि.
देवाना ꣳ समिदसि.. (२७)

हे अवभृथ (स्नान यज्ञ)! आप निचुड़ने व निरंतर बहने वाले हैं. आप दैवकृपा से देवों के प्रति हमारे पाप दूर करने की कृपा कीजिए. आप मनुष्यों के प्रति किए गए हमारे पापों को दूर करने की कृपा कीजिए. आप परेशान करने वाले शत्रुओं को दूर करने की कृपा कीजिए. आप की कृपा से देवत्व बढ़ता है. (२७)

एजतु दशमास्यो गर्भो जरायुणा सह.
यथायं वायुरेजति यथा समुद्र ऽ एजति.
एवायं दशमास्यो अस्रज्जरायुणा सह.. (२८)

दस माह के गर्भ के जरायु के साथ जाइए. जैसे यह वायु जाती है, जैसे यह समुद्र जाता है, वैसे ही आप दस मास के जरायु के साथ उत्पन्न हुए. (२८)

यस्यै ते यज्ञियो गर्भो यस्यै योनिर्हिरण्ययी.
अङ्गान्यह्रुता यस्य तं मात्रा समजीगम ꣳ स्वाहा.. (२९)

हे देवी! इसी से आप का गर्भ यज्ञ से संबंधित भावनाएं रखने वाला है. आप की योनि इसी से स्वर्गमयी है. अंग अग्नि की तरह पवित्र हैं. मंत्रों से आप का पवित्र समागम होता है. आप के लिए यह आहुति समर्पित है. (२९)

पुरुदस्मो विषुरूप ऽ इतदुरन्तर्महिमानमानञ्ज धीरः.
एकपदीं द्विपदीं त्रिपदीं चतुष्पदीमष्टापदीं भुवनानु प्रथन्ता ꣳ स्वाहा.. (३०)

गर्भ दानी रूपवान, बुद्धिमान, महिमावान और धीर है. एक पद वाली, दो पद वाली, तीन पद वाली, चार पद वाली, आठ पद वाली, प्रार्थनाएं भुवनों में प्रसारित हों. आप के लिए यह आहुति समर्पित है. (३०)

मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः. स सुगोपातमो जनः.. (३१)

हे मरुद्गण! आप दिव्य व विशिष्ट हैं. आप लोगों के कष्ट दूर करते हैं. आप लोगों की गायों के अच्छे रक्षक हैं. (३१)

मही द्यौः पृथिवी च न ऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्. पिपृतां नो भरीमभिः.. (३२)

महान् पृथ्वी, स्वर्गलोक इस यज्ञ की रक्षा करने की कृपा करें. धन पिपासुओं (प्यासों) को भरपूर धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३२)

आ तिष्ठ वृत्रहन्रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी.
अर्वाचीन ꣳ सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा षोडशिन ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने.. (३३)

हे इंद्र देव! आप वृत्रनाशक हैं. आप के घोड़े संकेत मात्र से चलने वाले हैं. आप अपने ब्रह्मज्ञानी घोड़ों को रथ में जोतिए. प्राचीन सोम को पत्थर से कूटने पर

होने वाली ध्वनियों से आप का मन यज्ञ की ओर आकर्षित हो. हे सोम! आप को इंद्र देव के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. आप सोलह कलाओं वाले हैं. आप को इंद्र देव के लिए इस पात्र में लिया गया है. सोलह कलाओं वाले इंद्र देव के लिए आप को इस पात्र में ग्रहण किया गया है. (३३)

युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा.
अथा न ऽ इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा षोडशिन ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने.. (३४)

हे इंद्र! आप हरि नामक घोड़े हैं. आप शत्रुनाशी हैं. तेज गति वाले घोड़े आप को मनुष्यों के यज्ञ में लेने आते हैं. यजमान ऋषियों की श्रेष्ठ प्रार्थनाओं से आप की उपासना करते हैं. सोमरस को इंद्र देव के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. यह इंद्र देव के लिए मूल स्थान है. वे सोलह कलाओं वाले हैं. हम सोलह कलाओं वाले इंद्र के लिए आप को ग्रहण करते हैं. (३४)

इन्द्रमिद्धरी वहतोप्रतिधृष्टशवसम्.
ऋषीणां च स्तुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम्.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा षोडशिन ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा षोडशिने.. (३५)

हे इंद्र! आप शत्रुओं का नाश करने वाले और सोम पीने वाले हैं. तेज गति वाले दो घोड़े आप को यज्ञ स्थल तक ले जाते हैं. हे सोम! आप कलश में ग्रहण करने योग्य हैं. यह आप का आश्रय स्थल है. इसलिए हम सोलह कलाओं वाले इंद्र की प्रसन्नता हेतु आप को ग्रहण करते हैं. (३५)

यस्मान्न जातः परो अन्यो अस्ति य ऽ आविवेश भुवनानि विश्वा.
प्रजापतिः प्रजया स ꣳ रराणस्त्रीणि ज्योति ꣳ षि सचते स षोडशी.. (३६)

इंद्र देव से परम श्रेष्ठ और कोई देव नहीं है. वे सभी लोकों में व्यापक हैं. प्रजापति प्रजा के साथ रमण करते हैं. वे सोलह कलाओं वाले हैं. तीनों ज्योतियों को अपने में धारे हुए हैं. (३६)

इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च राजा तौ ते भक्षं चक्रतुरग्र ऽ एतम्.
तयोरहमनु भक्षं भक्षयामि वाग्देवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु सह प्राणेन स्वाहा.. (३७)

इंद्र सम्राट् हैं. वरुण देव राजा हैं. वे दोनों देव पहले भोग लगाते हैं. उस के बाद हम उस सामग्री का सेवन करते हैं. वाग् देवी प्राण के साथ जुड़ कर सोमरस तृप्ति देने की कृपा करें. हम उन के लिए आहुति भेंट करते हैं. (३७)

अग्ने पवस्व स्वपा ऽ अस्मे वर्चः सुवीर्यम्.
दधद्रयिं मयि पोषम्.

उपयामगृहीतोस्यग्नये त्वा वर्चस ऽ एष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे.
अग्ने वर्चस्विन्वर्चस्वाँस्त्वं देवेष्वसि वर्चस्वानहं मनुष्येषु भूयासम्.. (३८)

हे अग्नि! आप अपना काम करने में कुशल व पवित्र हैं. आप हमें पूरा वर्चस्व दीजिए. आप हमें श्रेष्ठ वीर्यवान बनाइए. आप हमारे लिए धन धारिए. आप हमें पोषण दीजिए. हे सोम! आप को अग्नि के लिए कलश में ग्रहण करते हैं. हम वर्चस्व के लिए आप को ग्रहण करते हैं. यह आप का मूल स्थान है. आप वर्चस्वियों में वर्चस्ववान देव हैं. हमें भी इसी तरह मनुष्यों में बारबार वर्चस्वी बनाइए. (३८)

उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपय:.
सोममिन्द्र चमू सुतम्.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वौजस ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वौजसे.
इन्द्रौजिष्ठौजिष्ठस्त्वं देवेष्वस्योजिष्ठोहं मनुष्येषु भूयासम्.. (३९)

हे इंद्र देव! आप ओज के साथ उठिए. आप सुंदर ठोड़ी वाले हैं. आप इस पेय का पान कीजिए. हे सोम! इंद्र के लिए आप को चुआ रहे हैं. सोम को इंद्र देव के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. यह इंद्र देव का मूल निवास है. हम ओज के लिए आप को ग्रहण करते हैं. इंद्र देव ओजवान हैं. वे देवताओं में ओजवान हैं, वैसे ही हम मनुष्यों में ओजवान हो जाएं. (३९)

अदृश्रमस्य केतवो वि रश्मयो जनाँ २ अनु.
भ्राजन्तो अग्नयो यथा.
उपयामगृहीतोसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनि: सूर्याय त्वा भ्राजाय.
सूर्य भ्राजिष्ठ भ्राजिष्ठस्त्वं देवेष्वसि भ्राजिष्ठोहं मनुष्येषु भूयासम्.. (४०)

अदृश्य रश्मियों (किरणों) की अग्निपताका अनुकरण करती है. वह मनुष्यों को नहीं दिखाई देती है. आप को सूर्य के लिए कलश में ग्रहण किया है. आप चमकते रहिए. कलश आप का मूल स्थान है. सूर्य प्रकाशमान है. वह देवों में प्रकाशमान है, वैसे ही हम मनुष्यों में प्रकाशमान हो जाएं. (४०)

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतव:.
दृशे विश्वाय सूर्यम्.
उपयामगृहीतोसि सूर्याय त्वा भ्राजायैष ते योनि: सूर्याय त्वा भ्राजाय.. (४१)

ये सूर्य की किरणें विश्वविख्यात हैं. ये दिव्यता वहन करती हैं. सूर्य की किरणें सारे संसार को दृष्टि प्रदान करती हैं. हे सोम! आप को कलश में ग्रहण किया है. आप को प्रकाशमान सूर्य के लिए ग्रहण किया है. यही आप का मूल स्थान है. आप सूर्य के लिए प्रकाशित होइए. (४१)

आजिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः.
पुनरूर्जा निवर्त्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः.. (४२)

हे महिमाशालिनी! आप इस कलश को पूरी तरह सूंघिए. इस के सोम आदि आप में प्रवेश करें. आप पुनः उस ऊर्जा को लौटाइए. वह ऊर्जा हमें हजारों धाराओं के रूप में मिले. हमें दुधारी गाएं व धन मिलें. (४२)

इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योते ऽ दिते सरस्वति महि विश्रुति.
एता ते अघ्न्ये नामानि देवेभ्यो मा सुकृतं ब्रूतात्.. (४३)

हे गोमाता! आप हवन में काम्य हैं. आप चंद्रमा और सूर्य की ज्योति की तरह हैं. आप सरस, पृथ्वी पर विख्यात व वध योग्य नहीं हैं. आप हमारे नाम से अच्छी वाणी से देवताओं को बुलाने के लिए बोलिए. (४३)

वि न ऽ इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः.
यो अस्माँ २ अभिदासत्यधरं गमया तमः.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा विमृध ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विमृधे.. (४४)

हे इंद्र देव! आप हमारे शत्रुओं व नीचों को मारिए. जो हमें दासता और अंधकार देना चाहते हैं. आप उन्हें अंधकार में ले जाइए. आप को इंद्र देव के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. आप यहां स्थित रहिए. यह आप का मूल स्थान है, आप यहां स्थित रहिए. (४४)

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम.
स नो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मण ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे.. (४५)

हे वाचस्पति! आप विश्व के कर्मों के सर्जक हैं. आप मन जैसे हैं. आज हम जो अन्न हवन कर रहे हैं. उसे स्वीकारिए. आप सज्जनता भरे काम करते हैं. आप विश्व का भरणपोषण करते हैं. आप को इंद्र देव के लिए कलश में ग्रहण किया है. आप को विश्वकर्मा के लिए कलश में ग्रहण किया है. यह आप का मूल स्थान है. आप को विश्वकर्मा इंद्र देव के लिए समर्पित किया जाता है. (४५)

विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्.
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा विश्वकर्मण ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा विश्वकर्मणे.. (४६)

हे विश्वकर्मा! हम हवि से आप की बढ़ोतरी करते हैं. आप दुःख दूर करने वाले हैं. आप यज्ञ के कर्ताधर्ता, अपूर्व, उग्र व विशेष आदरणीय हैं. हम आप का विशेष

आह्वान करते हैं. आप को इंद्र देव व विश्वकर्मा के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. यह आप का मूल स्थान है. आप को विश्वकर्मा के लिए स्थापित किया जाता है. (४६)

उपयामगृहीतोस्यग्नये त्वा गायत्रच्छन्दसं गृह्णामीन्द्राय त्वा त्रिष्टुप्छन्दसं गृह्णामि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जगच्छन्दसं गृह्णाम्यनुष्टुप्तेभिगरः.. (४७)

आप को इस अग्नि के लिए कलश में ग्रहण किया गया है. हम इंद्र देव के लिए गायत्री छंद से आप को ग्रहण करते हैं. हम आप को त्रिष्टुप् छंद से ग्रहण करते हैं. हम आप को सभी देवों के लिए ग्रहण करते हैं. हम आप को सभी देवों के लिए जगती छंद से ग्रहण करते हैं. हम आप के प्रति अनुष्टुप् छंद में वाणीमय स्तुति करते हैं. (४७)

व्रेशीनां त्वा पत्मन्ना धूनोमि कुकूननानां त्वा पत्मन्ना धूनोमि भन्दनानां त्वा पत्मन्ना धूनोमि मदिन्तमानां त्वा पत्मन्ना धूनोमि मधुन्तमानां त्वा पत्मन्ना धूनोमि शुक्रं त्वा शुक्र ऽ आ धूनोम्यह्नो रूपे सूर्यस्य रश्मिषु.. (४८)

हे सोम! हम जल बरसाने के लिए आप को कंपाते हैं. हम संसार के कल्याण के लिए आप को कंपाते हैं. हम मेघों के जल के लिए आप को कंपाते हैं. आप आनंददायी हैं. हम जल बरसाने के लिए आप को कंपाते हैं. आप मधुमान (मधुरता से लबालब भरे हुए हैं). हम आप को मधु (मधुरता) बरसाने के लिए कंपाते हैं. आप प्रकाशमान हैं. हम प्रकाश की वर्षा के लिए आप को कंपाते हैं. हम दिन स्वरूप सूर्य की किरणों के लिए आप को कंपाते हैं. (४८)

ककुभ ं रूपं वृषभस्य रोचते बृहच्छुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः सोमः सोमस्य पुरोगाः. यत्ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै त्वा गृह्णामि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा.. (४९)

सोम बलवान, प्रकाशमान, विशाल व प्रकाश के आगे गमन करने वाले हैं. सोम सोम के आगे गमन करने वाले अभयदाता व जाग्रत हैं. हम आप को ग्रहण करते हैं. इसीलिए हे सोम! हम आप के लिए आहुति भेंट करते हैं. (४९)

उशिक् त्वं देव सोमाग्नेः प्रियं पाथोपीहि वशी त्वं देव सोमेन्द्रस्य प्रियं पाथोपीह्यस्मत्सखा त्वं देव सोम विश्वेषां देवानां प्रियं पाथोपीहि.. (५०)

हे सोम! आप अग्नि का (मन भाता) आहार बनिए. आप पथ के भोजन के रूप में प्राप्त होइए. आप वंशवर्ती व सोम के प्रिय हैं. हे सोम! आप हमारे मित्र, आप सभी को प्रिय व सब के लिए तृप्तिदायी हैं. (५०)

इह रतिरिह रमध्वमिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा.
उपसृजन् धरुणं मात्रे धरुणो मातरं धयन्.
रायस्पोषमस्मासु दीधरत् स्वाहा.. (५१)

हे गौओ! इन यज्ञ करने वालों के प्रति आप की प्रीति बनी रहे. घी से भरी हुई यह आहुति आप के लिए अर्पित है. आप इसे अपने लिए धैर्य से ग्रहण कीजिए. जगत् को धारण करने वाली पृथ्वी माता के लिए जल धारण करें और उन के लिए उस जल को बरसाएं. आप हमारे लिए पौष्टिक धन धारिए. आप के लिए स्वाहा. (५१)

सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता ऽ अभूम.
दिवं पृथिव्या ऽ अध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः.. (५२)

हे सोम! आप यज्ञ की समृद्धि करने वाले हैं. आप की कृपा से हम प्रकाशित हों. आप की कृपा से हम अमरता पाएं. पृथ्वी से स्वर्गलोक तक आरोहण करें. हम देवताओं के ज्योतिर्मय लोक को देखने में समर्थ हों. (५२)

युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तं तमिद्धतं वज्रेण तं तमिद्धतम्.
दूरे चत्ताय छन्त्सद्गहनं यदिनक्षत्.
अस्माक ँ शत्रून्परि शूर विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वतः.
भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याम सुवीरा वीरैः सुपोषाः पोषैः.. (५३)

हे इंद्र देव! आप युवा, पर्वतवासी व श्रेष्ठ योद्धा हैं. आप शत्रुओं को पूरी तरह तपाइए और उन पर वज्र से प्रहार करिए. आप हमें शत्रुओं द्वारा घेरे जाने व छिपाए जाने से दूर ही रखिए. आप हमारे शत्रुओं पर सब ओर से आक्रमण कीजिए. आप पृथ्वी, स्वर्ग आदि सब जगह व्याप्त हैं. आप हमें अच्छी व श्रेष्ठ पराक्रमी संतान दीजिए. हमें वीर बनाइए और अच्छी तरह पुष्ट कीजिए. (५३)

परमेष्ठ्यभिधीतः प्रजापतिर्वाचि व्याहृतायामन्धो अच्छेतः.
सविता सन्यां विश्वकर्मा दीक्षायां पूषा सोमक्रयण्यामिन्द्रश्च.. (५४)

परमेष्ठी नामक यज्ञ में प्रजापति के लिए मंत्र से आहुति दी जा रही है. सोम के लिए अंधसा नामक मंत्र से आहुति दीजिए. सविता देव के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. विश्वकर्मा देव के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. पूषा देव के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. (५४)

इन्द्रश्च मरुतश्च क्रयायोपोत्थितोसुरः पण्यमानो मित्रः क्रीतो विष्णुः शिपिविष्ट ऽ ऊरावासन्नो विष्णुर्नरन्धिषः.. (५५)

खरीद के लिए इंद्र और मरुत् को उन के नाम से आहुति दीजिए. खरीद के लिए असुर के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. खरीदे हुए मित्र के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. गोद में बैठे विष्णु के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. अरु पर बैठे विष्णु के लिए नरंधिष मंत्र से आहुति दीजिए. (५५)

प्रोह्यमाणः सोम ऽ आगतो वरुण ऽ आसन्द्यामासन्नोग्निराग्नीध्र ऽ इन्द्रो हविर्धाने थर्वोपावह्रियमाणः.. (५६)

गाड़ी से लाए जाने वाले और आसन पर बैठे हुए सोम हेतु उन के नाम से आहुति दीजिए. अगिंध्र में स्थित सोम के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. इंद्र देव के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए अथवा नाम से ले जाए जा रहे सोम के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. (५६)

विश्वे देवा ऽ अ ᳪ शुषु न्युप्तो विष्णुराप्रीतपा ऽ आप्याय्यमानो यमः सूयमानो विष्णुः सम्भ्रियमाणो वायुः पूयमानः शुक्रः पूतः शुक्रः क्षीरश्रीर्मन्थी सक्तुश्रीः.. (५७)

विश्वे देव को उन के नाम से आहुति दीजिए. हमारे प्रति प्रेम रखने वाले और पालनहार विष्णु को उन के नाम से आहुति दीजिए. सोम से सींचे जा रहे यम को उन के नाम से आहुति दीजिए. सोम से अभिषिक्त किए जा रहे विष्णु को उन के नाम से आहुति दीजिए. पवित्र किए जा रहे वायु को उन के नाम से आहुति दीजिए. पवित्र शुक्र के लिए नाम से आहुति दीजिए. दूध में गूंधे हुए सोम के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. सत्तू मिला कर तैयार किए हुए सोम के लिए उन के नाम से आहुति दे कर शोभा बढ़ाइए. (५७)

विश्वे देवाश्चमसेषून्नीतोसुर्होमायोद्यतो रुद्रो हूयमानो वातोभ्यावृत्तो नृचक्षाः प्रतिख्यातो भक्षो भक्ष्यमाणः पितरो नाराश ᳪ साः.. (५८)

विश्वे देव के लिए चमस में रख कर आहुति दीजिए. मायावी असुर के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. रुद्र के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. घिर जाने पर वात देव के नाम से आहुति दीजिए. नृचक्ष के लिए उस के नाम से आहुति दीजिए. खाने से बचे हुए सोम हेतु उस के नाम से आहुति दीजिए. (५८)

सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोभ्यवह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतो ययोरोजसा
स्कभिता रजा ᳪ सि वीर्येभिर्वीरतमा शविष्ठा.
या पत्येते अप्रतीता सहोभिर्विष्णू अगन्वरुणा पूर्वहूतौ.. (५९)

स्नान के लिए तैयार (उद्यत) सोम सिंधु है. उन्हें उन के नाम से आहुति दीजिए. समुद्र (घड़े) में रखे हुए सोम के लिए उन के नाम से आहुति दीजिए. जल में व्याप्त सोम को उन के नाम से आहुति दीजिए. जिन दोनों देवों (वरुण-विष्णु) के ओज से ओजवान हैं, उन्हें उन के नाम से आहुति दीजिए. जिन के पराक्रम से पराक्रमी हैं. जिन की क्षमता से सामर्थ्यवान हैं, यज्ञ में प्रथम आहुति पाने वाले देवों के लिए यह आहुति अर्पित की जा रही है. (५९)

देवान्दिवमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु मनुष्यानन्तरिक्षमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु पितॄन्पृथिवीमगन्यज्ञस्ततो मा द्रविणमष्टु यं कं च लोकमगन्यज्ञस्ततो मे भद्रमभूत्.. (६०)

जो यज्ञ स्वर्ग में देवों के पास जाता है, वह यज्ञ (फल) हमें प्राप्त कराइए. हमें इष्ट द्रव्य (धन) प्राप्त कराइए. अंतरिक्ष को मिलने वाला यज्ञ फल मनुष्यों

को प्राप्त कराइए. पितरों और पृथ्वी वाला यज्ञ फल मनुष्यों को प्राप्त कराइए. इष्ट धन प्राप्त कराइए. जोजो यज्ञ फल जिसजिस लोक में गया है, उस से हमारा कल्याण हो. (६०)

चतुस्त्रि ठ्ठ शत्तन्तवो ये वितत्निरे य ऽ इमं यज्ञ ठ्ठ स्वधया ददन्ते.
तेषां छिन्न ठ्ठ सम्वेतद्दधामि स्वाहा घर्मो अप्येतु देवान्.. (६१)

चौंतीस देव जो इस यज्ञ का विस्तार करते हैं, जो यजमानों को पौष्टिक पदार्थ प्रदान करते हैं, उन देवताओं के लिए ये आहुतियां अर्पित हैं. यज्ञ जैसे कार्यों से हम जो धन धारण करते हैं, वह हम ऐसे ही शुभ कार्यों में खर्च करते हैं. यह आहुति देवों को तृप्त प्रसन्न करने की कृपा करे. (६१)

यज्ञस्य दोहो विततः पुरुत्रा सो अष्टधा दिवमन्वाततान.
स यज्ञ धुक्ष्व महि मे प्रजाया ठ्ठ रायस्पोषं विश्वमायुरशीय स्वाहा.. (६२)

हम यज्ञ का दोहन व उस का विस्तार करें. वह सभी का दुःख दूर करें. यह यज्ञ आठ प्रकार से (संपूर्ण ब्रह्मांड में) विस्तार पाए. यह यज्ञ स्वर्गलोक तक विस्तृत हो. यह यज्ञ हमें श्रेष्ठ संतान प्रदान करे. यह यज्ञ हमें धन प्रदान करे. यह यज्ञ हमें पोषकता दे. यह यज्ञ हमें पूर्णायु प्रदान करे. इस यज्ञ हेतु यह आहुति अर्पित है. (६२)

आ पवस्व हिरण्यवदश्ववत्सोम वीरवत्.
वाजं गोमन्तमा भर स्वाहा.. (६३)

हे सोम! आप आइए. आप इस यज्ञ को पवित्र करने की कृपा कीजिए. आप हमें सोना, घोड़े, गौ, धन आदि भरपूर वैभव दीजिए. आप के लिए हम यह आहुति अर्पित करते हैं. (६३)

नौवां अध्याय

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय.
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा.. (१)

हे सविता! हम आप की कृपा से इस यज्ञ को विधिवत पूरा करें. आप यज्ञपति को सौभाग्यवान बनाने की कृपा कीजिए. आप की किरणें दिव्य हैं. आप उन किरणों से हमारे अन्न को पवित्र कीजिए. हमारा वह अन्न वाचस्पति देव को भी बलवान बनाने वाला हो. वाचस्पति देव के लिए स्वाहा. वह अन्न हमें भी स्वादिष्ट लगे. (१)

ध्रुवसदं त्वा नृषदं मनःसदमुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्.
अप्सुषदं त्वा घृतसदं व्योमसदमुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्.
पृथिविसदं त्वान्तरिक्षसदं दिविसदं देवसदं नाकसदमुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्.. (२)

हे सोम! आप ध्रुव (स्थिर) रूप से प्रतिष्ठा प्राप्त हैं. आप मनुष्यों के मन में रमते हैं. आप इंद्र देव की योनि हैं. इंद्र देव भी आप को ग्रहण करते हैं. आप उपयाम (पात्र) में पधारिए. आप सर्वाधिक चाहे गए देव हैं. आप जल, घी व व्योम (आकाश) में वास करते हैं. हम आप को इंद्र के लिए ग्रहण करते हैं. आप इंद्र देव की योनि व इष्टतम हैं. आप बरतन में पधारने की कृपा कीजिए. आप पृथ्वी, अंतरिक्ष व स्वर्गलोक में निवास करते हैं. आप देवों के योग्य हैं. आप सोम को इंद्र देव के लिए ग्रहण करते हैं. आप इंद्र देव की योनि और आप इष्टतम हैं. (२)

अपा ꣳ रसमुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम्.
अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्.. (३)

हे सोम! आप जल और रसों के सार, सूर्य में समाए व जल के सार के भी सार हैं. उस रस को हम पात्र में ग्रहण करते हैं. हम आप को इंद्र देव के लिए बरतन में ग्रहण

करते हैं. हम आप को वायु के लिए बरतन में ग्रहण करते हैं. आप इंद्र देव के इष्टतम और इंद्र की योनि हैं. हम यजमान इंद्र देव के लिए आप को ग्रहण करते हैं. (३)

ग्रहा ऽ ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्.
तेषां विशिप्रियाणां वोहमिषमूर्ज ꣳ समग्रभमुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्.
सम्पृचौ स्थ: सं मा भद्रेण पृङ्क्तं विपृचौ स्थो वि मा पाप्मना पृङ्क्तं.. (४)

हे सोम और सोमरस के पात्रो! हम ऊर्जा पाने के लिए आप का आह्वान करते हैं. आप ब्राह्मणों की बुद्धि विस्तृत करते हैं. आप यजमानों के लिए ऊर्जस्वी रस को भलीभांति स्थापित करते हैं. हम आप दोनों को इंद्र देव के लिए उपयाम पात्र में स्थापित करते हैं. आप इंद्र देव की योनि हैं. आप दोनों इंद्र देव के अभीष्ट हैं. आप दोनों संपृक्त (साथसाथ) रह कर हमारा कल्याण व हमें सुख प्रदान कीजिए. आप दोनों पृथक् (अलग) रह कर हमें पापों से दूर करने की कृपा कीजिए. (४)

इन्द्रस्य वज्रोसि वाजसास्त्वयायं वाज ꣳ सेत्.
वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे.
यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश तस्यां नो देव: सविता धर्म ꣳ साविषत्.. (५)

आप इंद्र देव के वज्र और अन्नमय हैं. आप से यजमान को भी अन्न प्राप्त हो. हम अपनी (मंत्रमय) वाणी से धरती को अन्न उपजाने के लिए प्रेरित करते हैं. पृथ्वी को देवों की माता अदिति के समान प्रेरित करते हैं. सारा संसार (लोक) सविता देव के वश में है. सविता हमें धार्मिक बनाएं. वे हमें गतिशील बनाने की कृपा करें. (५)

अप्स्वन्तरमृतमप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तिष्वश्वा भवत वाजिन:.
देवीरापो यो व ऽ ऊर्मि: प्रतूर्ति: ककुन्मान् वाजसास्तेनायं वाज ꣳ सेत्.. (६)

जल के भीतर अमृत व ओषधियां हैं. हम उन का सेवन कर के घोड़े की तरह बलवान हो जाएं. हे जल समूह! आप की तरंगें ऊंची हैं और लहरें वेगशाली हैं. आप की ऊंचीऊंची तरंगें हमें अन्न प्रदान करने की कृपा करें. (६)

वातो वा मनो वा गन्धर्वा: सप्तवि ꣳ शति:.
ते अग्रेश्वमयुञ्जँस्ते अस्मिञ्जवमादधु:.. (७)

वायु, मन, गंधर्व आदि ने पहले ही सात से तिगुने यानी सत्ताईस घोड़े अपने साथ जोत लिए हैं. वे आगेआगे (जल्दीजल्दी) आ कर हमारे यज्ञ की बढ़ोतरी करने की कृपा करें. (७)

वातर ꣳ हा भव वाजिन्युज्यमान ऽ इन्द्रस्येव दक्षिण: श्रियैधि.
युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस ऽ आ ते त्वष्टा पत्सु जवं दधातु.. (८)

हे अग्नि! आप बलवान हैं. आप रथ में जुत कर वायु की तरह वेगवान बन जाइए. आप इंद्र देव के दक्षिणी भाग की शोभा बढ़ाने की कृपा कीजिए. आप को मरुद्गण रथ में जोतने की कृपा करें. त्वष्टा देव! आप पैरों में बल धारण कीजिए. (८)

जवो यस्ते वाजिन्निहितो गुहा यः श्येने परीत्तो अचरच्च वाते.
तेन नो वाजिन् बलवान् बलेन वाजजिच्च भव समने च पारयिष्णुः.
वाजिनो वाजजितो वाज ꣳ सरिष्यन्तो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत.. (९)

हे बलशाली! आप हमें भी अपने बल से बलवान बनाइए. हमें अपना वह वेग दे दीजिए जो आप के हृदय में है, श्येन पक्षी के उड़ने में है और वायु की गति में है. आप हमें बलवान बनाइए ताकि हम शत्रुओं के पार जा सकें. हे अन्न जीतने वाले! आप हमें बलदायी अन्न दीजिए. हम अन्न की चाह से बृहस्पति के भाग को सूंघ सकें. (९)

देवस्याह ꣳ सवितुः सवे सत्यसवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाक ꣳ रुहेयम्.
देवस्याह ꣳ सवितुः सवे सत्यसवस ऽ इन्द्रस्योत्तमं नाक ꣳ रुहेयम्.
देवस्याह ꣳ सवितुः सवे सत्यप्रसवसो बृहस्पतेरुत्तमं नाकमरुहम्.
देवस्याह ꣳ सवितुः सवे सत्यप्रसवस ऽ इन्द्रस्योत्तमं नाकमरुहम्.. (१०)

सविता देव की कृपा से हम सत्य मार्ग पर चल सकें. बृहस्पति के उत्तम स्वर्ग का आरोहण कर सकें. सविता देव की कृपा से हम सत्य मार्ग पर चल सकें. इंद्र देव के उत्तम स्वर्ग का आरोहण कर सकें. सत्य उपजाने वाले सविता देव की कृपा से हम बृहस्पति के श्रेष्ठ स्वर्ग में चढ़ गए. सत्य उपजाने वाले सविता देव की कृपा से इंद्र देव के श्रेष्ठ स्वर्ग में चढ़ गए. (१०)

बृहस्पते वाजं जय बृहस्पतये वाचं वदत बृहस्पतिं वाजं जापयत.
इन्द्र वाजं जयेन्द्राय वाचं वदतेन्द्रं वाजं जापयत.. (११)

हे बृहस्पति! आप विजय पाइए. हे यजमानो! आप बृहस्पति देव के लिए मंत्र गाइए. आप व बृहस्पति देव को और अधिक बल मिल सके, इस के लिए जप कीजिए. हे इंद्र देव! आप विजय पाइए. हे यजमानो! आप इंद्र देव के लिए मंत्र गाइए. इंद्र देव को और अधिक बल मिल सके, इस के लिए आप जप कीजिए. (११)

एषा वः सा सत्या संवागभूद्यया बृहस्पतिं वाजमजीजपताजीजपत बृहस्पतिं वाजं वनस्पतयो विमुच्यध्वम्.
एषा वः सा सत्या संवागभूद्ययेन्द्रं वाजमजीजपताजीजपतेन्द्रं वाजं वनस्पतयो विमुच्यध्वम्.. (१२)

हे वादको, वाद्य यंत्र बजाने वालो! आप एक साथ ऐसा स्वर निकालिए, जिस

से बृहस्पति देव की विजय हो. हे वनस्पतियो! हे वन के स्वामी! आप अपने घोड़े आदि छोड़ दीजिए. जिस से इंद्र देव की विजय हो सके. इस विजय के बाद हे सेनापतियो! आप घोड़े, हाथी आदि को आराम देने की कृपा कीजिए. (१२)

देवस्याह ँ्ँ सवितुः सवे सत्यप्रसवसो बृहस्पतेर्वाजजितो वाजं जेषम्.
वाजिनो वाजजितोध्वन स्कभ्नुवन्तो योजना मिमानाः काष्ठां गच्छत.. (१३)

सविता देव! सत्य मार्ग के प्रेरक व सभी को प्रकाशित करने वाले हैं. युद्ध में विजयी होने वाले बृहस्पति देव का बल पा कर हम भी युद्ध में विजय पाएं. हमारे बलशाली घोड़े बहुत वेगवान हैं. उन की कृपा से हम युद्ध में विजय पाते हैं. हम शत्रुओं का मार्ग रोक कर इन्हीं घोड़ों के कारण कोसों की दूरी नापते हैं. सीमा के पार पहुंच सकते हैं. (१३)

एष स्य वाजी क्षिपणिं तुरण्यति ग्रीवायां बद्धो अपिकक्ष ऽ आसनि.
क्रतुं दधिक्रा ऽ अनु स ँ्ँ सनिष्यदत्पथामङ्का ँ्ँ स्यन्वापनीफणत् स्वाहा.. (१४)

गरदन से लगाम, जीन आदि से बंधा हुआ यह घोड़ा वेग से चलता है. यह रास्ते की सभी बाधाओं को पार कर लेता है. यह यज्ञ का अनुकरण और घोड़े पर बैठा वीर शत्रुओं पर (सफलता से) प्रहार करता है. इस (अश्व) के लिए स्वाहा. (१४)

उत स्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः.
श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कसं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा.. (१५)

हे यजमानो! जो पराक्रमी है, जो तीर की तरह वेगवान है, जो घोड़े की तरह वेगशाली है, जो सत्यवादी है, जो बाज पक्षी की तरह वेगवान है, जिस घोड़े पर बैठ कर वीर युद्धों में शत्रुओं पर विजय पाता है, यह आहुति उसी के लिए समर्पित है. (१५)

शं नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः.
जम्भयन्तोहिं वृक ँ्ँ रक्षा ँ्ँ सि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः.. (१६)

बलवान घोड़े हमारे लिए सुखदायी हों. वे दैवी आहुतियों में और भी सुशोभित हों. ये घोड़े भेड़ियों की तरह आक्रमण करने वाले शत्रुओं को दूर करने की कृपा करें. सांप जैसे विश्वासघातियों से हमारी रक्षा करें. विघ्न करने वालों को हम से दूर करने की कृपा करें. (१६)

ते नो अर्वन्तो हवनश्रुतो हवं विश्वे शृण्वन्तु वाजिनो मितद्रवः.
सहस्रसा मेधसाता सनिष्यवो महो ये धन ँ्ँ समिथेषु जभ्रिरे.. (१७)

हे यजमानो! वीर घोड़े पर सवारी करने वाले हैं. वे बहुत अधिक वेगवान हैं. वे वीर हमारी वाणी को सुनने की कृपा करें. जो वीर हजारों को आनंद देते हैं, जो

वीर लोगों की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं, जो वीर यज्ञ के अधिष्ठाता हैं, वे वीर धनवान व महिमावान होते हैं. (१७)

वाजे-वाजे ऽ वत वाजिनो नो धनेषु विप्रा ऽ अमृता ऽ ऋतज्ञाः.
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः.. (१८)

हे अश्वो! आप बलवान हैं. ब्राह्मण, सत्य के ज्ञाता हमें धनधान्यमय बनाएं. हमारा पालनपोषण करने की कृपा करें. बलवान घोड़े मधुर रस पी कर मदमस्त हो कर तृप्त होते हुए देवयान पथ से आगे बढ़ने की कृपा करें. (१८)

आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे.
आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो अमृतत्त्वेन गम्यात्.
वाजिनो वाजजितो वाज ं्ठ ससृवा ं्ठ सो बृहस्पतेर्भागमवजिघ्रत निमृजानाः.. (१९)

स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक हमारी रक्षा के लिए पधारें. सभी देवता हमारी रक्षा के लिए आएं. मातापिता हमारी रक्षा के लिए आएं. हमें सोम रस के रूप में अमृत प्राप्त हो. युद्ध में जीतने वाले वीर और बलशाली हों. बृहस्पति देव के अन्न भाग को पवित्र मन से प्राप्त करने की कृपा कीजिए. (१९)

आपये स्वाहा स्वापये स्वाहापिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाहर्पतये स्वाहाह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैन ं्ठशिनाय स्वाहा विन ं्ठशिन ऽ आन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा.. (२०)

देवताओं की कृपा के लिए स्वाहा. अपने सुख के लिए स्वाहा. बारबार जन्म लेने वाले देवता के लिए स्वाहा. यज्ञ देव के लिए स्वाहा. वसु देव के लिए स्वाहा. दिनपति के लिए स्वाहा. मोहित करने वाले दिन के लिए स्वाहा. अंतगति तक पहुंचाने वाले अविनाशी हेतु स्वाहा. लोक के लिए स्वाहा. भुवनपति के लिए स्वाहा. अधिपति के लिए स्वाहा. (२०)

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ं्ठ श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्.
प्रजापतेः प्रजा ऽ अभूम स्वर्देवा ऽ अगन्मामृता ऽ अभूम.. (२१)

यज्ञ से हमारी आयु बढ़े. यज्ञ से हमारे प्राणों की बढ़ोतरी हो. यज्ञ से हमारी नेत्रज्योति बढ़े. यज्ञ से हमारी श्रवणशक्ति बढ़े. यज्ञ से हमारी पीठ बढ़े. यज्ञ से हमारे यज्ञ का विस्तार हो. हम प्रजापति की प्रजा हों. हम अपने में देवत्व पाएं. हम अमरता पाएं. (२१)

अस्मे वो ऽ अस्त्विन्द्रियमस्मे नृम्णमुत क्रतुरस्मे वर्चा ं्ठ सि सन्तु वः.
नमो मात्रे पृथिव्यै नमो मात्रे पृथिव्या ऽ इयं ते राड्यन्तासि यमनो ध्रुवोसि धरुणः.
कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा.. (२२)

पृथ्वी माता आप को नमस्कार. पृथ्वी माता के लिए नमस्कार. आप के धन हमें प्राप्त हों. आप की क्षमता, तेजस्विता व अनुशासन हमें प्राप्त हो. आप स्थिर और धारणशील हैं. हम कृषि और अपनी कुशल क्षेम के लिए आप की शरण में आते हैं. हम धन प्राप्ति व अपने पोषण के लिए आप की शरण में आते हैं. (२२)

वाजस्येमं प्रसवः सुषुवे ऽ ग्रे सोम ँ् राजानमोषधीष्वप्सु.
ता ऽ अस्मभ्यं मधुमतीर्भवन्तु वय ँ् राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः स्वाहा.. (२३)

सोम ओषधियों, जल समूह के राजा और बलवान हैं. परमपिता ने सब से पहले सोम को प्रकटाया. वे सोमरस वाली ओषधियां हमें मधुमान बनाएं. हम राष्ट्र को जागृत कर सकें. पुरोहितों के लिए स्वाहा. (२३)

वाजस्येमां प्रसवः शिश्रिये दिवमिमा च विश्वा भुवनानि सम्राट्.
अदित्सन्तं दापयति प्रजानन्त्स नो रयि ँ् सर्ववीरं नियच्छतु स्वाहा.. (२४)

परमात्मा ने अन्न उपजाया है. उन्होंने सारे लोकों को शरण दी है. उन्होंने स्वर्गलोक को शरण दी है. परमपिता देवताओं को आहुति प्रदान करने के लिए हमें धन प्रदान करने की कृपा करें. परमपिता हमें सर्वाधिक वीर संतति प्रदान करें. परमपिता (शुभ कार्यों) के लिए हमारी बुद्धि को प्रेरित करने की कृपा करें. (२४)

वाजस्य नु प्रसव ऽ आबभूवेमा च विश्वा भुवनानि सर्वतः.
सनेमि राजा परियाति विद्वान् प्रजां पुष्टिं वर्धयमानो अस्मे स्वाहा.. (२५)

परमपिता ने अन्न उपजाया. सारे लोकों को उपजाया. सब ओर से लोकों को उपजाया. परमपिता सर्वज्ञाता, विद्वान्, प्रजा पालक और बढ़ोतरी करने वाले हैं. उन परमपिता के लिए यह आहुति अर्पित है. (२५)

सोम ँ् राजानमवसेग्निमन्वारभामहे.
आदित्यान्विष्णु ँ् सूर्यं ब्रह्माणं च बृहस्पति ँ् स्वाहा.. (२६)

परमपिता ने हमारे लिए राजा, अग्नि आदि देवों को उपजाया. हम यज्ञ के आरंभ में उन देवताओं की उपासना करते हैं. आदित्य देवता के लिए स्वाहा. विष्णु देवता के लिए स्वाहा. सूर्य देवता के लिए स्वाहा. ब्रह्म देवता के लिए स्वाहा बृहस्पति देव के लिए स्वाहा. (२६)

अर्यमणं बृहस्पतिमिन्द्रं दानाय चोदय.
वाचं विष्णु ँ् सरस्वती ँ् सवितारं च वाजिन ँ् स्वाहा.. (२७)

हे परमात्मा! आप अर्यमा बृहस्पति और इंद्र देव को दान के लिए प्रेरित करने की कृपा कीजिए. विष्णु देव, सरस्वती देवी, सविता देव के लिए वाणी सहित स्वाहा. (२७)

अग्ने अच्छा वदेह नः प्रति नः सुमना भव.
प्र नो यच्छ सहस्रजित्त्व ॅं हि धनदा ऽ असि स्वाहा.. (२८)

हे अग्नि! आप हमारे प्रति अच्छा मन रखिए. आप हमारे लिए अच्छी तरह मार्ग निर्देश और उपदेश कीजिए. आप अकेले ही हजारों को जीत सकते हैं. आप धनदाता हैं. आप के लिए स्वाहा. (२८)

प्र नो यच्छत्वर्यमा प्र पूषा प्र बृहस्पतिः. प्र वाग्देवी ददातु नः स्वाहा.. (२९)

अर्यमा देव, पूषा देव, बृहस्पति देव व वाग् देवी हमारी अभिलाषा पूरी करें. हम आप सब को आहुतियां प्रदान करते हैं. (२९)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ.. (३०)

सविता देव सब को उपजाने वाले हैं. हम अश्विनीकुमार की बाहु और पूषा देव के हाथों से यज्ञ देव की ऊर्जा को धारण करते हैं. सरस्वती देवी वाणी से नियंत्रित करती हैं. बृहस्पति देव श्रेष्ठ साम्राज्य के नियंत्रक हैं, संचालक हैं. हम आप को सींचते हैं. (३०)

अग्निरेकाक्षरेण प्राणमुदजयत्तमुज्जेषमश्विनौ द्व्यक्षरेण द्विपदो मनुष्यानुदजयतां तानुज्जेषं विष्णुस्त्र्यक्षरेण त्रींल्लोकानुदजयत्तानुज्जेष ॅं सोमश्चतुरक्षरेण चतुष्पदः पशूनुदजयत्तानुज्जेषम्.. (३१)

अग्नि ने एक अक्षर से ऊर्ध्वगामी प्राण पर विजय हासिल की वैसे ही हम भी विजय पाएं. दो अक्षर से अश्विनीकुमारों ने दो पैरों वाले मनुष्यों को जीता. हम भी उस जीत का अनुकरण करें. विष्णु देव ने तीन अक्षरों से तीनों लोकों पर विजय पाई. हम भी उस जीत का अनुसरण करें. सोम ने चार अक्षरों से चौपायों को जीता, उसी प्रकार हम भी उन की कृपा से उस जीत का अनुकरण करें. (३१)

पूषा पञ्चाक्षरेण पञ्च दिश ऽ उदजयत्ता ऽ उज्जेष ॅं सविता षडक्षरेण षड्तूनुदजयत्तानुज्जेषं मरुतः सप्ताक्षरेण सप्त ग्राम्यान् पशूनुदजयँस्तानुज्जेषं बृहस्पतिरष्टाक्षरेण गायत्रीमुदजयत्तामुज्जेषम्.. (३२)

पूषा देवता ने पांच अक्षरों से पांचों दिशाओं पर विजय पाई, वैसे ही हम भी विजय पाएं. सविता देव ने छह अक्षरों से छह ऋतुओं पर विजय पाई, वैसे ही हम भी विजय पाएं. मरुद्गणों ने सात अक्षरों से सात गांवों और पशुओं पर विजय पाई. बृहस्पति देव ने आठ अक्षरों से गायत्री पर विजय पाई, उसी प्रकार हम भी विजय पाएं. (३२)

मित्रो नवाक्षरेण त्रिवृत ँ्ठ स्तोममुदजयत्तमुज्जेषं वरुणो दशाक्षरेण विराजमुदजयत्तामुज्जेषमिन्द्र ऽ एकादशाक्षरेण त्रिष्टुभमुदजयत्तामुज्जेषं विश्वेदेवा द्वादशाक्षरेण जगतीमुदजयँस्तामुज्जेषम्.. (३३)

मित्र देव ने नव अक्षर से ज्ञान, कर्म और भक्ति पर विजय पाई, उसी प्रकार हम भी उस पर विजय प्राप्त करें. वरुण देव ने दस अक्षरों से विराट् पर विजय पाई, हम भी उसी प्रकार विजय पाएं. इंद्र देव ने ग्यारह अक्षर से त्रिष्टुभ् पर विजय पाई, वैसे ही हम भी विजय प्राप्त करें. विश्व ने बारह अक्षर से जगती पर विजय पाई, हम भी वैसे ही विजय पाएं. (३३)

वसवस्त्रयोदशाक्षरेण त्रयोदश ँ्ठस्तोममुदजयँस्तमुज्जेष ँ्ठ रुद्राश्चतुर्दशाक्षरेण चतुर्दश ँ्ठ स्तोममुदजयँस्तमुज्जेषमादित्या: पञ्चदशाक्षरेण पञ्चदश ँ्ठ स्तोममुदजयँस्तमुज्जेषमदिति: षोडशाक्षरेण षोडश ँ्ठ स्तोममुदजयत्तमुज्जेषं प्रजापति: सप्तदशाक्षरेण सप्तदश ँ्ठ स्तोममुदजयत्तमुज्जेषम्.. (३४)

तेरह अक्षरों से वसुदेव ने त्रयोदश स्तोम को जीता, वैसे ही हम भी विजय प्राप्त करें. रुद्र देव ने चौदह अक्षरों के प्रभाव से चौदह स्तोम (गुणगान) पर विजय पाई, हम भी उस के प्रभाव से विजय पाएं. आदित्य देव ने पंद्रह अक्षरों के प्रभाव से पंद्रह स्तोत्रों पर विजय पाई, हम भी वैसे ही विजय पाएं. अदिति देवता ने सोलह स्तोम पर विजय पाई, हम भी उन पर विजय प्राप्त करें. सत्रह अक्षर से प्रजापति ने सत्रह स्तोम पर विजय पाई, हम भी उस विजय का अनुकरण करें. (३४)

एष ते निर्ऋते भागस्तं जुषस्व स्वाहाग्निनेत्रेभ्यो देवेभ्य: पुर: सद्भ्य: स्वाहा यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणासद्भ्य: स्वाहा विश्वदेवनेत्रेभ्यो देवेभ्य: पश्चात्सद्भ्य: स्वाहा मित्रावरुणनेत्रेभ्यो वा मरुन्नेत्रेभ्यो वा देवेभ्य ऽ उत्तरासद्भ्य: स्वाहा सोमनेत्रेभ्यो देवेभ्य ऽ उपरिसद्भ्यो दुवस्वद्भ्य: स्वाहा.. (३५)

हे पृथ्वी! यह आप का हिस्सा है. आप इसे स्वीकारिए. पृथ्वी माता के लिए स्वाहा. पूर्व दिशा का नेतृत्व करने वाले अग्नि के लिए स्वाहा. दक्षिणी दिशा का नेतृत्व करने वाले यम देव के लिए स्वाहा. पश्चिम दिशा में विश्व के लिए स्वाहा. उत्तर दिशा का नेतृत्व करने वाले मित्र और वरुण देव या मरुद्गणों के लिए स्वाहा. ऊपर और स्वर्गलोक में सोम के लिए स्वाहा. सभी देवगणों के लिए स्वाहा. (३५)

ये देवा ऽ अग्निनेत्रा: पुर:सदस्तेभ्य: स्वाहा ये देवा यमनेत्रा दक्षिणासदस्तेभ्य: स्वाहा ये देवा विश्वदेवनेत्रा: पश्चात्सदस्तेभ्य: स्वाहा ये देवा मित्रावरुणनेत्रा वा मरुन्नेत्रा वोत्तरासदस्तेभ्य: स्वाहा ये देवा: सोमनेत्रा ऽ उपरिसदो दुवस्वन्तस्तेभ्य: स्वाहा.. (३६)

अग्नि के साथ पूर्व दिशा का नेतृत्व करने वाले देवों के लिए स्वाहा. दक्षिण दिशा का नेतृत्व करने वाले यम देव के लिए स्वाहा. पश्चिम दिशा का नेतृत्व करने

वाले विश्वे देव सहित देवों के लिए स्वाहा. उत्तर दिशा का नेतृत्व करने वाले मित्रावरुण देव और मरुद्‌गण के लिए स्वाहा. ऊपर और स्वर्गलोक का नेतृत्व करने वाले सोम सहित अन्य देवों के लिए स्वाहा. (३६)

अग्ने सहस्व पृतना ऽ अभिमातीरपास्य.
दुष्टरस्तरन्नरातीर्वर्चोधा यज्ञवाहसि.. (३७)

हे अग्नि! आप शत्रुओं को हराइए. आप शत्रुओं का नाश कीजिए. हे अग्नि! आप को जीतना दुर्लभ है. हे अग्नि! आप मंत्रपूर्वक यज्ञ करने वाले यजमान को अन्न दीजिए. तेजस्वी बनाइए. (३७)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
उपा ꣳ शोर्वीर्येण जुहोमि हत ꣳ रक्षः स्वाहा रक्षसां त्वा वधायावधिष्म
रक्षोवधिष्मामुमसौ हतः.. (३८)

हे सविता देव! आप संसार को उपजाने वाले हैं. हम अश्विनीकुमारों की भुजाओं और पूषा देवता के हाथों से आप को हवि चढ़ाते हैं. आप ने शूरवीरता से शत्रुओं को खदेड़ा, मारा. जैसे यह राक्षस मारा गया वैसे ही शत्रु भी मारे जाएं. (३८)

सविता त्वा सवाना ꣳ सुवतामग्निर्गृहपतीना ꣳ सोमो वनस्पतीनाम्.
बृहस्पतिर्वाच ऽ इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्.. (३९)

हे सविता देव! आप यजमानों को यज्ञ के लिए प्रेरित करने की कृपा कीजिए. हे अग्नि! आप गृहपतियों को (यज्ञ के लिए) प्रेरित करने की कृपा कीजिए. सोम यजमानों को वनस्पति प्रदान करने की कृपा करें. बृहस्पति देव हमें वाणी प्रदान करने की कृपा करें. इंद्र देव हमें ज्येष्ठता (बड़ाई) प्रदान करें. रुद्र देव हमें पशु प्रदान करने की कृपा करें. मित्र देव हमें सत्यवादी बनाने की कृपा करें. वरुण देव हमें धर्म पालक बनाने की कृपा करें. (३९)

इमं देवा ऽ असपत्न ꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते
जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय.
इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽ एष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ
राजा.. (४०)

हे यजमानो! सोम राजा हैं. सोम हम ब्राह्मणों के राजा हैं. सोम अमुक पुत्र अमुक के पुत्र पर अपनी कृपा बनाए रखें. ये देवगण महान् क्षत्रिय जैसा बल पाने के लिए प्रेरित करें. महान् राज्य व महान जन राज्य के लिए प्रेरित करने की कृपा करें. हमें इंद्र देव जैसा समृद्धिशाली बनाने की कृपा करें. (४०)

दसवां अध्याय

अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नूर्जस्वती राजस्वश्चितानाः.
याभिर्मित्रावरुणावभ्यषिञ्चन्याभिरिन्द्रमनयन्नत्यरातीः.. (१)

देवताओं ने मधुर, ऊर्जस्वी, राजोचित व चेतना जगाने वाला जल ग्रहण किया. जिन जलों से मित्र, वरुण आदि देवताओं का अभिषेक किया तथा अन्य देवताओं ने जिन जलों से इंद्र देव का अभिषेक किया, हम यजमान उन जलों को ग्रहण करते हैं. ये जल शत्रुनाशक हैं. (१)

वृष्ण ऽ ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृष्ण ऽ ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहा वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि.. (२)

जलधाराएं लहरदार, बलवती, राष्ट्रदायिनी हैं. वे मुझे राष्ट्र प्रदान करें. इन के लिए स्वाहा. वे विशाल सेना वाली हैं. इन के लिए स्वाहा. वे राष्ट्रदायिनी हैं. इन के लिए स्वाहा. वे मुझे राष्ट्र प्रदान करें. इन के लिए स्वाहा. वे विशाल सेना वाली हैं. इन के लिए स्वाहा. वे विशाल राष्ट्रदायिनी हैं. इन के लिए स्वाहा. हमें राष्ट्र प्रदान करने की कृपा करें. (२)

अर्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहार्थेत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहौजस्वती स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्ताप: परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहाप: परिवाहिणी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्तापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां पतिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देह्यपां गर्भोसि राष्ट्रदा राष्ट्रं मे देहि स्वाहापां गर्भोसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि.. (३)

ये जल अर्थदायी हैं. हमें अर्थ प्रदान करने की कृपा करें. ये जल राष्ट्रदायी हैं. हमें राष्ट्र प्रदान करने की कृपा करें. इन के लिए स्वाहा. ये जल ऊर्जादायी हैं. हमें ऊर्जा प्रदान करने की कृपा करें. ये जल राष्ट्रदायी हैं. हमें राष्ट्र प्रदान करने की कृपा करें. ये जल पराक्रमदायी हैं. हमें पराक्रम प्रदान करें. ये जल राष्ट्रदायी हैं. हमें राष्ट्र प्रदान करें. इन के लिए स्वाहा. ये जल पराक्रमदायी हैं. हमें पराक्रम प्रदान करें. इन के लिए स्वाहा. ये जल सब जलों के पालकपोषक हैं तथा उन्हें अपने अधीन रखने में सक्षम हैं. हमें राष्ट्र प्रदान करें. इन के लिए स्वाहा. ये जल सब जलों

को गर्भ में रखते हैं. अपने शासन में रखने में सक्षम हैं. हमें राष्ट्र प्रदान करें. इन के लिए स्वाहा. (३)

सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यत्वचस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा सूर्यवर्चस स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा मान्दा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त व्रजक्षित स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा व्रजक्षित स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा वाशा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त शविष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शविष्ठा स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा शक्वरी स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त जनभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा जनभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त विश्वभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रं मे दत्त स्वाहा विश्वभृत स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्ताप: स्वराज स्थ राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै दत्त.

मधुमतीर्मधुमतीभि: पृच्यन्तां महि क्षत्रं क्षत्रियाय वन्वाना ऽ अनाधृष्टा: सीदत सहौजसो महि क्षत्रं क्षत्रियाय दधती:.. (४)

हे जल! आप सूर्य की त्वचा में स्थित हैं. आप राष्ट्रदायी हैं. आप हमें राष्ट्र प्रदान करें आप के लिए स्वाहा. हे जल! आप आनंददायी हैं. आप हमें आनंद प्रदान करने की कृपा करें. आप के लिए स्वाहा. हे जल! आप राष्ट्रदायी हैं. आप राष्ट्र प्रदान करने की कृपा करें. आप के लिए स्वाहा. हे जल! आप पशुपालक हैं. आप पशु प्रदान करने की कृपा करें. आप के लिए स्वाहा. हे जल! आप बलदायी हैं. आप बल प्रदान करने की कृपा करें. आप के लिए स्वाहा. हे जल! आप राष्ट्रदायी हैं. आप राष्ट्र प्रदान करने की कृपा करें. आप के लिए स्वाहा. हे जल! आप क्षमतादायी हैं. आप क्षमता प्रदान करने की कृपा करें. आप के लिए स्वाहा. हे जल! आप राष्ट्रदायी हैं. आप राष्ट्र प्रदान करने की कृपा करें. आप जनता का भरणपोषण करने वाले हैं. आप राष्ट्र प्रदान करें. आप के लिए स्वाहा. आप विश्व का भरणपोषण करने वाले हैं. आप राष्ट्र प्रदान करें. आप के लिए स्वाहा. आप हमें मधुरमधुर जलधाराओं में सींचने की कृपा करें. आप हमें क्षत्रियोचित बल प्रदान करने की कृपा करें. आप हमें साहस व बल प्रदान करने की कृपा करें. क्षत्रियोचित सामर्थ्य धारण करने की कृपा करें. यहां प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. (४)

सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे त्विषिर्भूयात्.

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा बृहस्पतये स्वाहेन्द्राय स्वाहा घोषाय स्वाहा श्लोकाय स्वाहा ऽ्ठ शाय स्वाहा भगाय स्वाहार्यम्णे स्वाहा.. (५)

जिस प्रकार सोम आदि देवता ऐश्वर्यवान हैं, हम भी वैसे ही ऐश्वर्यवान हो जाएं. अग्नि के लिए स्वाहा. सोम देव के लिए स्वाहा. सविता देव के लिए स्वाहा.

सरस्वती देवी के लिए स्वाहा. पूषा देव के लिए स्वाहा. बृहस्पति देव के लिए स्वाहा. इंद्र देव के लिए स्वाहा. घोष के लिए स्वाहा. श्लोक के लिए स्वाहा. घोष के लिए स्वाहा. ऐश्वर्य देव के लिए स्वाहा. सौभाग्य देवी के लिए स्वाहा. अर्यमा देव के लिए स्वाहा. सौभाग्य देव के लिए स्वाहा. (५)

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव ऽ उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः.
अनिभृष्टमसि वाचो बन्धुस्तपोजाः सोमस्य दात्रमसि स्वाहा राजस्वः.. (६)

आप पवित्रता में स्थित हैं. आप को विष्णु के लिए पवित्र किया जाता है. आप सविता देव से उत्पन्न होते हैं. पवित्र सूर्य की रश्मियों से छन कर जल आकाश में जाता है. आप को सूर्य पवित्र करने की कृपा करें. वाणी को पवित्र करने की कृपा करें. आप तपशक्ति प्रदाता हैं. आप सोम को राजोचित पात्रता प्रदान कर सकते हैं. आप के लिए स्वाहा. (६)

सधमादो द्युम्निनीराप ऽ एता ऽ अनाधृष्टा ऽ अपस्यो वसानाः.
पस्त्यासु चक्रे वरुणः सधस्थमपा ꣳ शिशुर्मातृतमास्वन्तः.. (७)

ये स्वर्गलोक के जल हैं. ये जल आनंददायी हैं. ये स्वर्गलोक के जल हैं. ये तेजस्विता प्रदान करने वाले हैं. ये स्वर्गलोक के जल हैं. ये उत्तम वास प्रदान करने वाले हैं. ये स्वर्गलोक के जल हैं. ये धारक हैं. ये स्वर्गलोक के जल हैं. ये माता की तरह पोषक हैं. हम यजमान सादर इन जलों को स्थापित करते हैं. (७)

क्षत्रस्योल्बमसि क्षत्रस्य जराय्वसि क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसीन्द्रस्य वार्त्रघ्नमसि मित्रस्यासि वरुणस्यासि त्वयायं वृत्रं वधेत्.
दृवासि रुजासि क्षुमासि पातैनं प्राञ्चं पातैनं प्रत्यञ्चं पातैनं तिर्यञ्चं दिग्भ्यः पात.. (८)

हे जल! आप क्षत्रियों के गर्भपोषक हैं. आप क्षत्रियों की गर्भ रक्षक झिल्ली हैं. आप इंद्र देव की नाभि हैं. आप वृत्रासुर के नाशक हैं. आप मित्र देव की तरह शत्रुओं का वध करते हैं. आप वरुण देव की तरह शत्रुओं का वध करते हैं. आप शत्रुओं को विदीर्ण देते हैं. आप शत्रुओं को पीड़ा देते हैं. आप शत्रुओं को डरा देते हैं. आप पूर्व दिशा से रक्षा करने की कृपा करें. आप पश्चिम दिशा से (इस यज्ञ की) रक्षा करने की कृपा करें. आप उत्तर दिशा से (इस यज्ञ की) रक्षा करने की कृपा करें. आप दक्षिण दिशा से (इस यज्ञ की) रक्षा करने की कृपा करें. (८)

आविर्मर्या आवित्तो अग्निर्गृहपतिरावित्त ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवा ऽ आवित्तौ मित्रावरुणौ
धृतव्रतावावित्तः पूषा विश्ववेदा ऽ आवित्ते द्यावापृथिवी
विश्वशम्भुवावावित्तादितिरुरुशर्मा.. (९)

सभी आर्य लोग (इस यज्ञ स्थल की) रक्षा करने की कृपा करें. गृहपति अग्नि (इस यज्ञ स्थल की) रक्षा करने की कृपा करें. यशस्वी इंद्र देव (इस यज्ञ

स्थल की) रक्षा करने की कृपा करें. ऐश्वर्यवान मित्र देव और वरुण देव (इस यज्ञ स्थल की) रक्षा करने की कृपा करें. व्रतधारी पूषा देव (इस यज्ञ स्थल की) रक्षा करने की कृपा करें. समस्त देव (इस यज्ञ स्थल की) रक्षा करने की कृपा करें. स्वर्गलोक (इस यज्ञ स्थल की) रक्षा करने की कृपा करें. पृथ्वी देवी विश्व का शुभ करने वाली है. (इस यज्ञ स्थल की) रक्षा करने की कृपा करें. सुखदायी अदिति माता शुभ करने वाली है. (इस यज्ञ स्थल की) रक्षा करने की कृपा करें. (९)

अवेष्टा दन्दशूकाः प्राचीमारोह गायत्री त्वावतु रथन्तर ꣳ साम त्रिवृत्स्तोमो वसन्त ऽ ऋतुर्ब्रह्म द्रविणम्.. (१०)

यज्ञ को हानि पहुंचाने वाले जीवजंतु नष्ट हो गए. आप पूर्व दिशा में आरोहण करने की कृपा कीजिए. गायत्री, रथंतर सोम व वसंत ऋतु आप की रक्षा करने की कृपा करें. ब्रह्म धन आप की रक्षा करने की कृपा करें. (१०)

दक्षिणामारोह त्रिष्टुप् त्वावतु बृहत्साम पञ्चदश स्तोमो ग्रीष्म ऽ ऋतुः क्षत्रं द्रविणम्.. (११)

आप दक्षिण दिशा में आरोहण करने की कृपा करें. त्रिष्टुप् रूपी धन आप की रक्षा करने की कृपा करें. बृहत्साम रूपी धन आप की रक्षा करने की कृपा करें. पंचदश स्तोम धन आप की रक्षा करने की कृपा करें. ग्रीष्म ऋतु रूपी व पौरुष रूपी धन आप की रक्षा करने की कृपा करें. (११)

प्रतीचीमारोह जगती त्वावतु वैरूप ꣳ साम सप्तदश स्तोमो वर्षा ऋतुर्विड् द्रविणम्.. (१२)

आप पश्चिम दिशा की ओर बढ़ने की कृपा करें. जगती रूपी धन आप की रक्षा करें. वैरूप सामरूपी, दश स्तोम रूपी व वर्षा ऋतु रूपी धन आप की रक्षा करें. (१२)

उदीचीमारोहानुष्टुप् त्वावतु वैराज ꣳ सामैकवि ꣳ श स्तोमः शरदृतुः फलं दविणम्.. (१३)

आप उत्तर दिशा की ओर बढ़ने की कृपा करें. अनुष्टुप् रूपी फलदायी धन आप की रक्षा करने की कृपा करें. वैराज साम रूपी फलदायी धन आप की रक्षा करने की कृपा करें. एकविंश स्तोम फलदायी धन आप की रक्षा करने की कृपा करें. शरद ऋतु रूपी फलदायी धन आप की रक्षा करने की कृपा करें. (१३)

ऊर्ध्वामारोह पङ्क्तिस्त्वावतु शाक्वररैवते सामनी त्रिणवत्रयस्त्रि ꣳ शौ स्तोमौ हेमन्तशिशिरावृतू वर्चो द्रविणं प्रत्यस्तं नमुचेः शिरः.. (१४)

आप ऊपर की ओर बढ़ने की कृपा करें. पंक्ति रूपी धन आप की रक्षा करें. शाक्वर रूपी धन आप की रक्षा करें. रैवत साम रूपी धन आप की रक्षा करें.

त्रिणव, त्रयस्त्रिंश, स्तोम रूपी, हेमंत व शिशिर ऋतु रूपी धन आप की रक्षा करें. अनाचारियों को समूल नष्ट करने की कृपा करें. (१४)

सोमस्य त्विषिरसि तवेव मे त्विषिर्भूयात्. मृत्योः पाह्योजोसि सहोस्यमृतमसि.. (१५)

आप सोम के प्रकाशक व बलशाली हैं. हमारा ऐश्वर्य भी आप के ऐश्वर्य जैसा हो जाए. आप मृत्यु से हमारी रक्षा करने की कृपा करें. हम आप के ही समान अमर हो जाएं. (१५)

हिरण्यरूपा ऽ उषसो विरोक ऽ उभाविन्द्रा ऽ उदिथः सूर्यश्च.
आरोहतं वरुण मित्र गर्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्रोसि वरुणोसि.. (१६)

हे मित्र देव! आप सोने जैसे रूप वाले हैं. हे वरुण! आप सोने जैसे रूप वाले हैं. हे मित्र देव! आप उषाओं को प्रकाशित करने वाले हैं. हे वरुण! आप उषाओं को प्रकाशित करने वाले हैं. आप दोनों सूर्य व चंद्र देव की तरह उदित होते हैं. हे मित्र देव!, हे वरुण देव! आप रथ पर चढ़ने की कृपा कीजिए. आप दोनों अदिति, दिति, मित्र व वरुण स्वरूप हैं. (१६)

सोमस्य त्वा द्युम्नेनाभिषिञ्चाम्यग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसेन्द्रस्येन्द्रियेण.
क्षत्राणां क्षत्रपतिरेध्यति दिद्यून् पाहि.. (१७)

हे यजमान! हम आप का सोम से अभिषेक करते हैं. हे यजमान! हम आप का अग्नि के तेज से अभिषेक करते हैं. हे यजमान! हम आप का सूर्य के वर्चस्व से अभिषेक करते हैं. हम आप का इंद्र देव के बल से अभिषेक करते हैं. आप क्षत्रियों में क्षत्रपति बनें. आप प्रजा के रक्षक बनें. (१७)

इमं देवा ऽ असपत्न ꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते
जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय.
इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽ एष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना
ꣳ राजा.. (१८)

हे देवगण! शत्रुनाश, श्रेष्ठ कार्य, महान् क्षत्रिय बल, महान् बड़प्पन व महान् जनराज्य हेतु हमें शक्ति प्रदान करने की कृपा करें. हे देवगण! महान् इंद्र देव जैसी क्षमता हेतु हमें शक्ति प्रदान करने की कृपा करें. हे देवगण! अमुक पिता के पुत्र व अमुक माता के पुत्र को शक्ति प्रदान करने की कृपा करें. प्रजा पालन हेतु हमें शक्ति प्रदान करने की कृपा करें. ये सोम हम ब्राह्मणों के राजा हैं. (१८)

प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिच ऽ इयानाः.
ता ऽ आववृत्रन्नधरागुदक्ता ऽ अहिं बुध्न्यमनु रीयमाणाः.
विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि.. (१९)

अभिषेक के समय बलवान सोम की धाराएं पर्वत की पीठ से बहने वाली जलधाराओं की तरह बहती हैं. जैसे जलधारा पर्वत को ढक कर के बहती है, वैसे ही सोम की धाराएं धन वैभव के पर्वत को ढक कर के बहती हैं. वैसे ही पृथ्वी विष्णु के प्रथम चरण में जीती गई. अंतरिक्ष विष्णु के द्वितीय चरण में जीता गया. स्वर्गलोक विष्णु के तृतीय चरण में जीता गया. (१९)

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव.
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्त्वयममुष्य पितासावस्य पिता वय ँ स्याम पतयो रयीणा ँ स्वाहा.
रुद्र यत्ते क्रिवि परं नाम तस्मिन्हुतमस्यमेष्टमसि स्वाहा.. (२०)

हे प्रजापति! इस विश्व में आप के अलावा हमारा अन्य कोई नहीं हैं. आप ही विश्वरूप हैं. हम जिस कामना से यज्ञ करते हैं, आप हमारी उन कामनाओं को परिपूर्ण करने की कृपा कीजिए. यह अमुक का पिता है, हम अमुक के पिता हैं. हम धनों के स्वामी हो जाएं. आप के लिए स्वाहा. रुद्र देव के भीषण व कल्याणकारी रूप के लिए स्वाहा. (२०)

इन्द्रस्य वज्रोसि मित्रावरुणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषा युनज्मि.
अव्यथायै त्वा स्वधायै त्वारिष्टो अर्जुनो मरुतां प्रसवेन जयापाम मनसा समिन्द्रियेण.. (२१)

आप इंद्र देव के वज्र हैं. मित्र और वरुण देव आप के अस्त्रशस्त्र हैं. हम आप को (शत्रुनाश हेतु) नियुक्त करते हैं. आप के लिए स्वाहा. शत्रुनाशक हेतु स्वाहा. अर्जुन हेतु स्वाहा. मरुतों के लिए स्वाहा. हम मन व इंद्रियों से आप के साथ हैं. (२१)

मा त ऽ इन्द्र ते वयं तुराषाडयुक्तासो अब्रह्मता विदसाम.
तिष्ठा रथमधि यं वज्रहस्ता रश्मीन् देव यमसे स्वश्वान्.. (२२)

हे इंद्र देव! हम सब आप की कृपा से ज्ञानी हो जाएं. हम सब आप की कृपा से ब्रह्मज्ञानी हो जाएं. हम सब आप की कृपा से ज्ञाता हो जाएं. जैसे रथ में बैठ कर प्रशिक्षित घोड़ों की लगाम थाम ली जाती है, वैसे ही वज्र हाथ वाले आप यमराज से हमारे प्राण के घोड़ों की लगाम थामिए. (२२)

अग्नये गृहपतये स्वाहा सोमाय वनस्पतये स्वाहा मरुतामोजसे स्वाहेन्द्रस्येन्द्रियाय स्वाहा.
पृथिवि मातर्मा मा हि ँ सीर्मो अहं त्वाम्.. (२३)

गृहपति अग्नि के लिए स्वाहा. वनस्पति सोम के लिए स्वाहा. ओजस्वी मरुद् देव के लिए स्वाहा. इंद्रिय सामर्थ्यदाता इंद्र देव के लिए स्वाहा. हे पृथ्वी माता! हम आप के प्रति हिंसा न करें. हे पृथ्वी माता! आप हमारे प्रति हिंसा न करें. (२३)

ह ꣳ स: शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्.
नृषद्वरसदृतसद्व्योम सदब्जा गोजा ऽ ऋतजा ऽ अद्रिजा ऽ ऋतं बृहत्.. (२४)

हे परमात्मा! आप पवित्र हैं, अंतरिक्ष के होता व यज्ञ वेदी पर प्रतिष्ठित हैं. आप अतिथि जैसे आदरणीय व नेतृत्व में अग्रणी, ऋत में प्रतिष्ठित, जलोत्पादक हैं. आप विशाल सत्य बल संपन्न हैं. (२४)

इयदस्यायुरस्यायुर्मयि धेहि युङ्ङसि वर्चोसि वर्चो मयि धेह्यूर्गस्यूर्जं मयि धेहि.
इन्द्रस्य वां वीर्यकृतो बाहू अभ्युपावहरामि.. (२५)

हे परमात्मा! आप की जितनी आयु है, आप इतनी ही आयु हमें दीजिए. आप जितने वर्चस्वी हैं, आप उतना ही वर्चस्व हमें दीजिए. आप जितने ऊर्जस्वी हैं, आप उतनी ही ऊर्जा हमें दीजिए. आप इंद्र देव की पराक्रमी बाहु जैसे हैं. हम यज्ञीय पदार्थ ले कर आप के पास आते हैं. (२५)

स्योनासि सुषदासि क्षत्रस्य योनिरसि.
स्योनामासीद सुषदामासीद क्षत्रस्य योनिमासीद.. (२६)

हे आसन देव! आप सुखद व सुख से बैठने योग्य हैं. आप बल का मूल स्थान व सुखद हैं. आप सुख से बैठने योग्य व बल का मूल स्थान हैं. (२६)

नि षसाद धृतव्रतो वरुण: पस्त्यास्वा. साम्राज्याय सुक्रतु:.. (२७)

यजमान व्रतधारी हैं और वह अनिष्ट दूर करने में संलग्न हैं. यजमान श्रेष्ठ राज्य प्राप्ति हेतु इस सुयज्ञ को कर रहे हैं. वे प्रजापालक बनें. (२७)

अभिभूरस्येतास्ते पञ्च दिश: कल्पन्तां ब्रह्मँस्त्वं ब्रह्मासि सवितासि सत्यप्रसवो वरुणोसि सत्यौजा ऽ इन्द्रोसि विशौजा रुद्रोसि सुशेव:.
बहुकार श्रेयस्कर भूयस्करेन्द्रस्य वज्रोसि तेन मे रध्य.. (२८)

यजमान शत्रुओं को पराभूत करने वाले हैं. पांचों दिशाएं यजमान के लिए फलीभूत हों. आप ब्रह्मज्ञाता, ब्रह्मा, सविता व सत्य के उत्पादक हैं. आप वरुण, सत्यवान व ओजस्वी हैं. आप इंद्र व विशाल, ओजस्वी और रुद्र हैं. आप अच्छे कर्म वाले हैं. आप बहुत श्रेयस्कर हैं. आप वज्र हैं. आप अपने यजमान को धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (२८)

अग्नि: पृथुर्धर्मणस्पतिर्जुषाणो अग्नि: पृथुर्धर्मणस्पतिराज्यस्य वेतु स्वाहा.
स्वाहाकृता: सूर्यस्य रश्मिभिर्यतध्व ꣳ सजातानां मध्यमेष्ठ्याय.. (२९)

अग्नि विशाल हैं. अग्नि धर्म के पालक हैं. अग्नि यज्ञ में अग्रणी हैं. अग्नि से निवेदन है कि वे हमारा मन जानें. हमारी आहुति को स्वीकारने की कृपा करें. अग्नि के लिए स्वाहा. अग्नि सूर्य की किरणों से स्वयं भी बलवान हों तथा यजमान को

भी राजाओं के मध्य प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. (२९)

सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुभिरिन्द्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाग्निना तेजसा सोमेन राज्ञा विष्णुना दशम्या देवतया प्रसूतः प्र सर्पामि.. (३०)

सविता देव उत्पादक हैं. सरस्वती देवी से, उन की वाणी से हम प्रेरित होते हैं. हम त्वष्टा देव के रूप से व पशुवान पूषा देव से प्रेरित होते हैं. हम सामर्थ्यशाली बृहस्पति व अग्नि के तेज से प्रेरित होते हैं. हम राजा सोम से प्रेरित होते हैं. हम पालक विष्णु से प्रेरित होते हैं. हम देवताओं के दिव्य (कर्म) पथ पर (जाने हेतु) प्रेरित होते हैं. (३०)

अश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व.
वायुः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्क्सोमो अतिस्रुतः.
इन्द्रस्य युज्यः सखा.. (३१)

आप दोनों अश्विनीकुमारों के लिए परिपक्व होइए. आप सरस्वती देवी के लिए परिपक्व होइए. इंद्र देव अन्य देवताओं को योजित करते हैं. आप इंद्र देव के लिए परिपक्व होइए. वायु से पवित्र सोम का यज्ञ में श्रवण हो रहा है. सोम इंद्र देव से जुड़े हुए हैं. सोम इंद्र देव के मित्र (सखा) हैं. (३१)

कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय.
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम ऽ उक्तिं यजन्ति.
उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णे.. (३२)

हे सोम! आप को प्रजा के कल्याण हेतु बरतन में ग्रहण किया जाता है. आप यहां आइए और भोजन कीजिए. यजमान आप को बैठने के लिए कुशासन प्रदान करते हैं. यजमान आप के लिए उक्ति (मंत्रों से) यज्ञ करते हैं. आप को अश्विनीकुमारों के लिए बरतन में ग्रहण किया जाता है. आप को सरस्वती देवी के लिए बरतन में ग्रहण किया जाता है. आप को इंद्र देव के लिए बरतन में ग्रहण किया जाता है. आप को शत्रु नाश हेतु बरतन में ग्रहण किया जाता है. (३२)

युव ꣳ सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा.
विपिपाना शुभस्पती इन्द्रं कर्मस्वावतम्.. (३३)

हे अश्विनीकुमारो! आप दोनों नमुचि राक्षस के पास स्थित सोम रस का भी पान करने वाले हैं. आप रमणीय सोमरस का भी पान करने वाले हैं. इंद्र देव शुभ कर्मा (शुभ काम करने वाले) हैं. आप दोनों इंद्र देव के रक्षक बनने की कृपा करें. (३३)

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्द ꣳ सनाभिः.
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक्.. (३४)

हे इंद्र देव! जिस प्रकार पिता पुत्र की रक्षा करता है, उसी प्रकार अश्विनीकुमारों ने राक्षसों के संपर्क के कारण गलत मंत्रों से अशुद्ध हुए सोमरस को पी कर भी आप की रक्षा की. जब पवित्र मददायी सोमरस का आप ने पान किया तब वाणी की देवी सरस्वती आप के अनुकूल हुईं (अर्थात् अशुद्धता जन्य दोष से नाराज हुईं तत्पश्चात उन की वह नाराजगी दूर हुई). (३४)

ग्यारहवां अध्याय

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः.
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या ऽ अध्याभरत.. (१)

सविता देव सर्वप्रथम मन और बुद्धि को जोड़ते हैं. अग्नि में प्रकाश जगाते हैं. उस प्रकाश से पृथ्वी मंडल को पूरी तरह भर देते हैं. (१)

युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे. स्वर्ग्याय शक्त्या.. (२)

हम सविता देव के साथ मन से जुड़ सकें. हम उन से स्वर्ग के योग्य शक्ति प्राप्त कर सकें. (२)

युक्त्वाय सविता देवान्त्स्वर्यतो धिया दिवम्.
बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्र सुवाति तान्.. (३)

सविता देव सभी को प्रकाशित करने वाले हैं. वे बुद्धि और स्वर्गलोक को प्रकाशित करते हैं. वे अपनी विशाल ज्योति को पूरी तरह विस्तार देते हैं. (३)

युञ्जते मन ऽ उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः.
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक ऽ इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः.. (४)

विशेष रूप से ज्ञानी ऋत्विज् यजमान के विशाल यज्ञ को सफल बनाने के लिए मन और बुद्धि को जोड़ते हैं. वह होता सभी विज्ञानों को जानने वाला है. वही उन्हें धारण भी करता है. सविता देव की स्तुति महिमामयी व संतोषदायी है. (४)

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि श्लोक ऽ एतु पथ्येव सूरेः.
शृण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्रा ऽ आ ये धामानि दिव्यानि तस्थुः.. (५)

हे यजमान दंपती! हम परम शक्ति को नमस्कार करते हुए यज्ञ शुरू करते हैं. हम विशिष्ट श्लोकों से यह यज्ञ संपन्न करते हैं. हमारी यह उपासना सविता देव के पथ में पहुंचने की कृपा करे. अमरता के पुत्र दिव्य धाम में बैठे हुए देवगण हमारी इन स्तुतियों को सुनने की कृपा करें. (५)

यस्य प्रयाणमन्वन्य ऽ इद्ययुर्देवा देवस्य महिमानमोजसा.
यः पार्थिवानि विममे स ऽ एतशो रजा ꣳ सि देवः सविता महित्वना.. (६)

जिस सविता देव के प्रयाण (गमन) महिमा और ओज का अन्य देवता गण अनुकरण करते हैं, वह सविता देव अपनी महिमा से सर्वत्र व्यापक हैं. (६)

देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय.
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु.. (७)

हे सविता देव! आप सभी को यज्ञ के लिए प्रेरित करने की कृपा करें. यज्ञपति को सौभाग्यशाली बनाने की कृपा कीजिए. आप दिव्य और पवित्रकारी हैं. वाणी के स्वामी हैं. हमारी वाणी को मधुरता से संचारित करने की कृपा करें. (७)

इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्य ꣳ सखिविद ꣳ सत्राजितं धनजित ꣳ स्वर्जितम्.
ऋचा स्तोम ꣳ समर्धय गायत्रेण रथन्तरं बृहद्गायत्रवर्त्तनि स्वाहा.. (८)

हे सविता देव! आप यज्ञ को और अधिक ऊर्जामय बनाते हैं. आप मित्रता को जानने वाले और धन जीतने वाले हैं. आप हमारे यज्ञ को बढ़ाइए. हम वैदिक मंत्रों से आप की स्तुति करते हैं. गायत्र साम से रथंतर और बृहत्साम को परिपुष्ट करने की कृपा कीजिए. सविता देव के लिए स्वाहा. (८)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
आददे गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वत्पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वदाभर त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्.. (९)

सविता देव सिरजनहार हैं. हम अश्विनीकुमार की बाहु और पूषा देव के हाथों से गायत्री छंद के प्रभाव से सविता देव को ग्रहण करते हैं. हम सविता देव को अंगिरा ऋषि की भांति ग्रहण करते हैं. त्रिष्टुप् छंद की प्रेरणा से आप अंगिरा ऋषि की भांति पृथ्वी को ऊर्जामय बनाने की कृपा करें. (९)

अभ्रिरसि नार्यसि त्वया वयमग्नि ꣳ शकेम खनितु ꣳ सधस्थ ऽ आ.
जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वत्.. (१०)

आप अभ्रि (मिट्टी खोदने का साधन) हैं. आप नारी हैं. हम आप की कृपा से जगती छंद के प्रभाव से अंगिरा ऋषि की भांति पृथ्वी पर अग्नि को धारण करने की सामर्थ्य पा सकें. (१०)

हस्त ऽ आधाय सविता बिभ्रदभ्रि ꣳ हिरण्ययीम्.
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्या ऽ अध्याभरदानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्.. (११)

सविता देव हाथ में स्वर्णमयी अभ्रि (मिट्टी खोदने का साधन) धारण करते

हैं. अंगिरा ऋषि के समान अग्नि को यज्ञ वेदी पर स्थापित करते हैं. अनुष्टुप् छंद में पढ़े गए मंत्र से उसे भलीभांति पोषित करने की कृपा करें. (११)

प्रतूर्त्तं वाजिन्ना द्रव वरिष्ठामनु संवतम्.
दिवि ते जन्म परममन्तरिक्षे तव नाभिः पृथिव्यामधि योनिरित्.. (१२)

हे अग्नि देव! आप अत्यंत त्वरणशील (शीघ्र कार्य करने वाले) हैं. आप धनवान वरिष्ठ हैं. स्वर्गलोक में आप का जन्म हुआ है. अंतरिक्ष में आप का नाभि स्थल है. पृथ्वीलोक आप की योनि है. आप पृथ्वीलोक पर अधिष्ठित होने की कृपा कीजिए. (१२)

युञ्जाथा ꣳ रासभं युवमस्मिन् यामे वृषण्वसू. अग्निं भरन्तमस्मयुम्.. (१३)

आप दोनों (पुरोहित और यजमान) पर लाभकारी धन बरसे. आप अग्नि को प्रज्वलित करने में समर्थ हैं. आप रासभ (प्रज्वलित अग्नि और मंत्र) को यज्ञ कार्य में जोड़ने की कृपा कीजिए. (१३)

योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे. सखाय ऽ इन्द्रमूतये.. (१४)

इंद्र देव हमारे सखा हैं. हम अपनी रक्षा के लिए बारबार उन का आह्वान करते हैं. (१४)

प्रतूर्वन्नेह्यवक्रामन्नशस्ती रुद्रस्य गाणपत्यं मयोभूरेहि.
उर्वन्तरिक्षं वीहि स्वस्तिगव्यूतिरभयानि कृण्वन् पूष्णा सयुजा सह.. (१५)

हे अग्नि! आप हम पर दया कीजिए. आप तीव्र गतिशील हैं. आप दुष्टों को रुलाने वाले देव के गणपति का पद पाएंगे. आप हमारे यहां यज्ञ में पधारिए. आप यजमानों की राह को सुगम बनाइए. आप पृथ्वी से अंतरिक्ष तक कल्याणकारी हैं. आप हमारी राह निर्भय बनाइए. आप अन्न जल वाले मार्ग तक व्याप्त होइए. (१५)

पृथिव्याः सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वदाभराग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वदच्छेमोग्निं
पुरीष्यमङ्गिरस्वद्भरिष्यामः.. (१६)

हे अभ्रि (यज्ञ से संबंधित सामग्री)! आप पृथ्वी के पालनहार हैं. आप सामर्थ्यवान हैं. आप तेजोमय हैं. आप अग्रगण्य हैं. आप अग्नि को यहां लाने की कृपा कीजिए. अग्नि पोषण करने वाले हैं. वे सामर्थ्यवान और नायक हैं. हम यज्ञ स्थल पर अग्नि की प्रतिष्ठा (स्थापना) करते हैं. (१६)

अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन्वहानि प्रथमो जातवेदाः.
अनु सूर्यस्य पुरुत्रा च रश्मीननु द्यावापृथिवी आततन्थ.. (१७)

अग्नि पहले से ही मौजूद हैं. वे उषाकाल से पूर्व ही दिन को प्रकाशित कर देते

हैं. वे सूर्य की बहुत सी किरणों को प्रकाशित करते हैं. अग्नि लोक की सृष्टि करने वाले हैं. हम अग्नि को स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक में घूमता हुआ देखते हैं. (१७)

आगत्य वाज्यध्वान ꣳ सर्वा मृधो विधूनुते.
अग्नि ꣳ सधस्थे महति चक्षुषा नि चिकीषते.. (१८)

अग्नि यज्ञ को अन्नमय बनाते हैं. वे सभी मार्ग को कंपाते हुए जाते हैं. वे सधे हुए हैं. वे अपने विशाल चक्षु से यज्ञ का निरीक्षण करते हैं. (१८)

आक्रम्य वाजिन् पृथिवीमग्निमिच्छ रुचा त्वम्.
भूम्या वृत्वाय नो ब्रूहि यतः खनेम तं वयम्.. (१९)

हे वाजिन (चेतनायुक्त ऊर्जा)! आप पृथ्वी पर तेजी से विचरते हैं. आप अग्नि की चाह न कीजिए (इच्छा न करिए). आप प्रकाशित होने और भूमि को खोद कर हमें बताने की कृपा कीजिए. ताकि हम भी उसे खोद कर (ऊर्जस्वी पदार्थों को) प्राप्त कर सकें. (१९)

द्यौस्ते पृष्ठं पृथिवी सधस्थमात्मान्तरिक्ष ꣳ समुद्रो योनिः.
विख्याय चक्षुषा त्वमभि तिष्ठ पृतन्यतः.. (२०)

हे वाजिन! स्वर्गलोक में आप का आधार (पृष्ठ) भाग है. पृथ्वी पर आप सधे हुए हैं. अंतरिक्ष में आप की आत्मा है तथा समुद्र योनि है. आप आंखों से व्याख्या करते हैं. आप राक्षसों पर आक्रमण कर के उन का विनाश कीजिए. (२०)

उत्क्राम महते सौभगायास्मादास्थानाद् द्रविणोदा वाजिन्.
वय ꣳ स्याम सुमतौ पृथिव्या ऽ अग्निं खनन्त ऽ उपस्थे अस्याः.. (२१)

हे वाजिन! आप धनदाता हैं. आप सौभाग्य दान करने के लिए ऊपर उठने की कृपा कीजिए. हम आप की कृपा से अच्छी मति वाले हो जाएं. हम पृथ्वी को खोदें. अग्नि को स्थापित करने की कृपा कीजिए. (२१)

उदक्रमीद् द्रविणोदा वाज्यर्वाकः सुलोक ꣳ सुकृतं पृथिव्याम्.
ततः खनेम सुप्रतीकमग्नि ꣳ स्वो रुहाणा अधि नाकमुत्तमम्.. (२२)

यह घोड़ा चंचल और धनदाता है. पृथ्वी का उत्क्रमण कर के आया है. पृथ्वी पर अच्छे लोक रचे हैं. उन्हें अच्छी कृति का रूप दिया है. हम अग्नि को उत्तम सुख के लिए खोदते हैं (जगाते हैं). हम अच्छे सुखों के लिए उत्तम लोक का आरोहण करते हैं. (२२)

आ त्वा जिघर्मि मनसा घृतेन प्रतिक्षियन्तं भुवनानि विश्वा.
पृथुं तिरश्चा वयसा बृहन्तं व्यचिष्ठमन्नै रभसं दृशानम्.. (२३)

हे अग्नि! आप आइए, पधारिए. आप अखिल विश्व में व्यापिए. हम मन से, घी से आप के प्रज्वलित होने की प्रतीक्षा करते हैं. आप तिरछी वय से सब ओर व्यापते हैं. आप दर्शनीय व सधे हुए मन वाले हैं. (२३)

आ विश्वत: प्रत्यञ्चं जिघर्म्यरक्षसा मनसा तज्जुषेत.
मर्यश्री: स्पृहयद्वर्णो अग्निर्नाभिमृशे तन्वा जर्भुराण:.. (२४)

हे अग्नि! आप आइए, आप सर्वत्र व्यापक हैं. हम मन से, घी से आप को प्रज्वलित करते हैं. आप स्पृहणीय (प्यारे) वर्ण वाले व सुनहरी शोभा वाले हैं. आप बारबार चाहे जाते हैं. आप हितकारी और सर्वथा ग्रहण करने योग्य देव हैं. (२४)

परि वाजपति: कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्. दधद्रत्नानि दाशुषे.. (२५)

अग्नि अन्नदाता, कवि और हविदाता को धन देने वाले हैं. आप यजमान को देने के लिए रत्न धारण करते हैं. (२५)

परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्र ꣳ सहस्य धीमहि.
धृषद्वर्णं दिवे दिवे हन्तारं भङ्गुरावताम्.. (२६)

हे अग्नि! हम ब्राह्मण आप के सम्मुख आप की उपासना करते हैं. हम आप से बुद्धि पाने की इच्छा करते हैं. आप गुणधारक हैं. आप प्रतिदिन दुष्टों का नाश करते हैं. हम बारबार आप का वंदन करते हैं. (२६)

त्वमग्ने द्युभिस्त्वमाशुशुक्षणिस्त्वमद्भ्यस्त्वमश्मनस्परि.
त्वं वनेभ्यस्त्वमोषधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे शुचि:.. (२७)

हे अग्नि! आप सभी के रक्षक, स्वर्गिक गुणों वाले, अंधकार को शीघ्र ही दूर करने वाले और प्रतिदिन ही प्रज्वलित होते हैं. आप वन व ओषधियों में उत्पन्न होते हैं. आप मनुष्यों के यहां उत्पन्न होते हैं. आप पवित्र हैं. (२७)

देवस्य त्वा सवितु: प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
पृथिव्या: सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वत्खनामि.
ज्योतिष्मन्तं त्वाग्ने सुप्रतीकमजस्रेण भानुना दीद्यतम्.
शिवं प्रजाभ्यो ऽ हि ꣳ सन्तं पृथिव्या: सधस्थादग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वत्खनाम:.. (२८)

अग्नि सविता देव से उत्पन्न हैं. अग्नि को अश्विनी देव बाहुओं से पुकारते हैं. अग्नि को पूषा देव हाथों से पुकारते हैं. अग्नि को पृथ्वी पर साधा जाता है. अग्नि आप को पृथ्वी को खोद कर (जाग्रत कर के) पुकारते हैं. आप ज्योतिमान हैं. आप शोभावान हैं. आप लगातार सूर्य से प्रदीप्त होते हैं. आप प्रजाजनों का कल्याण चाहते हैं. आप पृथ्वी पर सधे हुए हैं. अंगिरस पृथ्वी को खोद कर (जगा कर) आप को पुकारते हैं. (२८)

अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः समुद्रमभितः पिन्वमानम्.
वर्धमानो महाँ २ आ च पुष्करे दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथस्व.. (२९)

आप जल के आधार और अग्नि की योनि हैं. आप समुद्र की बढ़ोतरी करते हैं. आप महान् व कमल की भांति स्वर्गिक हैं. आप पृथ्वी के परिणाम जितने विस्तृत होने की कृपा कीजिए. (२९)

शर्म च स्थो वर्म च स्थोऽच्छिद्रे बहुले उभे.
व्यचस्वती सं वसाथां भृतमग्निं पुरीष्यम्.. (३०)

आप सुखदायी व स्थायी हैं. आप कवच के समान सुरक्षा करने वाले हैं. आप दोनों हितेच्छु हैं. आप चमकीले, भरणपोषण करने वाले व अग्नि की बढ़ोतरी करने वाले हैं. (३०)

सं वसाथा ꣳ स्वर्विदा समीची उरसा त्मना.
अग्निमन्तर्भरिष्यन्ती ज्योतिष्मन्तमजस्रमित्.. (३१)

आप अग्नि को अपने में बसाइए. अग्नि स्वयं प्रकाशवान हैं. आप उस (हृदय) में प्रज्वलित होते हैं. आप ज्योतिमान व अजस्र प्रकाशित होते हैं. (३१)

पुरीष्योसि विश्वभराऽअथर्वा त्वा प्रथमो निरमन्थदग्ने.
त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत.
मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः.. (३२)

हे अग्नि! आप सर्वव्यापक व विश्व का भरणपोषण करने वाले हैं. सर्वप्रथम अथर्वा ऋषि ने अरणि मंथन से आप को प्रकट किया. उन्होंने आप को सम्मानपूर्वक विश्व के उच्च भाग पर स्थापित किया. (३२)

तमु त्वा दध्यङ्ङृषिः पुत्रऽईधे अथर्वणः. वृत्रहणं पुरन्दरम्.. (३३)

हे अग्नि! दध्यङ् ऋषि अथर्वा ऋषि के पुत्र हैं. अथर्वण ने वृत्रहंता व नगर भेदक को प्रकट किया. (३३)

तमु त्वा पाथ्यो वृषा समीधे दस्युहन्तमम्. धनञ्जयं ꣳ रणेरणे.. (३४)

हे अग्नि! आप सत्पथगामी, बलवान व डाकुओं के नाशक हैं. आप समिधाओं से प्रज्वलित होते हैं और आप हर युद्ध में धन जीतने वाले हैं. (३४)

सीद होतः स्वऽउ लोके चिकित्वान्त्सादया यज्ञ ꣳ सुकृतस्य योनौ.
देवावीर्देवान्हविषा यजास्यग्ने बृहद्यजमाने वयो धाः.. (३५)

हे अग्नि! आप होता रूप में प्रतिष्ठित हैं. आप अपने लोक को प्रकाशित करते हैं. आप यज्ञ संपन्न करते हैं. आप श्रेष्ठ (अच्छे) कार्य करने वाले हैं. आप श्रेष्ठ कर्म

का मूल स्थान हैं. आप देवताओं को देवताओं की तरह हवि से तृप्त करने वाले हैं. आप यज्ञ संपन्न करने की कृपा करें. आप यजमान हेतु धन धारण व आयु धारें. (३५)

नि होता होतृषदने विदानस्त्वेषो दीदिवाँ २ असदत्सुदक्षः.
अदब्धव्रतप्रमतिर्वसिष्ठः सहस्रम्भरः शुचिजिह्वो अग्निः.. (३६)

हमारे होता अग्नि होता सदन में शोभते हैं. अग्नि विद्वान्, तेजस्वी, दिव्य व दिव्य स्थान वासी हैं. वे हजारों का पालनपोषण करने वाले, व्रतशील, अत्यंत पावन व पवित्र जिह्वा वाले हैं. (३६)

स ꣳ सीदस्व महाँ २ असि शोचस्व देववीतमः.
वि धूममग्ने अरुषं मियेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम्.. (३७)

हे अग्नि! आप प्रशंसित, महान्, पवित्र व दिव्य गुणों से संपन्न हैं. आप बहुत सा लाल धुआं फैला कर मार्ग प्रशस्त करने की कृपा कीजिए. (३७)

अपो देवीरुपसृज मधुमतीरयक्ष्माय प्रजाभ्यः.
तासामास्थानादुज्जिहतामोषधयः सुपिप्पलाः.. (३८)

हे अग्नि! आप दिव्य जल व प्रजा के लिए मीठी जलधारा उत्पन्न कीजिए. उन जलधाराओं से रोग नाशक श्रेष्ठ ओषधियां उपजाने की कृपा कीजिए. (३८)

सन्ते वायुर्मातरिश्वा दधातूत्तानाया हृदयं यद्विकस्तम्.
यो देवानां चरसि प्राणथेन कस्मै देव वषडस्तु तुभ्यम्.. (३९)

हे पृथ्वी! आप विशाल हृदय हैं. आप जल व वनस्पति धारण कीजिए. आप देवों में प्राणों का संचार करती हैं. आप किस देव के प्रति कल्याणदायी नहीं हैं. (३९)

सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमासदत्स्वः.
वासो अग्ने विश्वरूप ꣳ सं व्ययस्व विभावसो.. (४०)

हे अग्नि! आप अच्छी तरह उत्पन्न होने वाले हैं. आप ज्वालाओं के साथ वेदी को शोभित करने की कृपा कीजिए. आप सुखद व विभावान (कांतिमान) हैं. आप विश्व रूप वाली पृथ्वी पर वास करते हैं. (४०)

उदु तिष्ठ स्वध्वरावा नो देव्या धिया.
दृशे च भासा बृहता सुशुक्वनिराग्ने याहि सुशस्तिभिः.. (४१)

हे अग्नि! आप उठिए, (वेदी पर) विराजिए और यज्ञ को संपादित कीजिए. आप अपनी दिव्य बुद्धि से हमारा संरक्षण करने की कृपा कीजिए. आप अपनी विशाल किरणों से पधारिए व दर्शन दीजिए. हम अच्छी प्रशंसात्मक स्तुतियों से आप का आह्वान करते हैं. (४१)

ऊर्ध्व ऽ ऊ षु ण ऽ ऊतये तिष्ठा देवो न सविता.
ऊर्ध्वो वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्वाघद्भिर्विह्वयामहे.. (४२)

हे अग्नि! जैसे सविता देव (इतने) ऊपर बैठ कर (इतने) ऊपर से हमारी रक्षा करते हैं, वैसे ही आप हमारी रक्षा करने की कृपा कीजिए. आप ऊपर से अन्न और पोषक पदार्थों के साथ हमारी रक्षा कीजिए. हम यजमान हवि प्रदान करते हुए आप का आह्वान करते हैं. (४२)

स जातो गर्भो असि रोदस्योरग्ने चारुर्विभृत ऽ ओषधीषु.
चित्रः शिशुः परि तमा ᳬ स्यक्तून्प्र मातृभ्यो अधि कनिक्रदद्गाः.. (४३)

हे अग्नि! आप सुंदर और विशेष भरण (पोषण) करने वाली ओषधियों से युक्त हैं. आप पृथ्वी और स्वर्ग के बीच उत्पन्न होते हैं. आप गर्भ स्वरूप हैं. आप अद्भुत लपटों वाले और शिशु रूप हैं. आप अंधेरा दूर करते हैं. आप मातृ स्वरूप के पास से आवाज करते हुए तेज गति से विचरने की कृपा कीजिए. (४३)

स्थिरो भव वीड्वङ्ग ऽ आशुर्भव वाज्यर्वन्.
पृथुर्भव सुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः.. (४४)

हे अग्नि! आप चंचल व वेगवान हैं. आप स्थिर, वेगवान व शक्तिशाली होइए. आप सब को वहन करने वाले हैं. आप सब को सुख प्रदान करने की कृपा कीजिए. (४४)

शिवो भव प्रजाभ्यो मानुषीभ्यस्त्वमङ्गिरः.
मा द्यावापृथिवी अभि शोचीर्मान्तरिक्षं मा वनस्पतीन्.. (४५)

हे अग्नि! आप मनुष्यों के सभी अंगों में व्याप्त हैं. आप मनुष्यों तथा अन्य सभी जीवों के लिए कल्याणकारी होने की कृपा कीजिए. आप स्वर्गलोक को और पृथ्वीलोक को संतप्त न करें. आप अंतरिक्ष व वनस्पति को संतप्त न करें. (४५)

प्रैतु वाजी कनिक्रदन्नानदद्रासभः पत्वा.
भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा.
वृषाग्निं वृषणं भरन्नपां गर्भ ᳬ समुद्रियम्.
अग्न ऽ आ याहि वीतये.. (४६)

हे अग्नि! आप वेगवान हैं. आप सब से आगे प्रस्थान करने की कृपा कीजिए. आप तेज आवाज करते हुए बढ़ने की कृपा कीजिए. भरणपोषण करने वाली अग्नि आगे बढ़े, कहीं रुके नहीं. समुद्र बलवान और शक्तिशाली अग्नि को धारण करे. हे अग्नि! आप हवि ग्रहण करने के लिए आइए. (४६)

ऋत ꣳ सत्यमृत ꣳ सत्यमग्निं पुरीष्यमङ्गिरस्वद्भराम:.
ओषधय: प्रति मोदध्वमग्निमेत ꣳ शिवमायन्तमभ्यत्र युष्मा:.
व्यस्यन् विश्वा ऽ अनिरा ऽ अमीवा निषीदन्नो अप दुर्मतिं जहि.. (४७)

अग्नि सत्यस्वरूप और अमर हैं. सत्यस्वरूप अग्नि को हम अंगिरा ऋषि के समान परिपुष्ट करते हैं. सभी ओषधियां आनंदवर्द्धक हो कर अग्नि देव को प्राप्त होने की कृपा करें. आप हम सभी के प्रति शिवमय (कल्याणकारी) होने की कृपा करें. आप हमारे सभी कष्ट हरिए. आप निरोगी बनाइए. आप विराजिए. आप की कृपा से दुर्बुद्धि हमें छोड़ कर चली जाए. (४७)

ओषधय: प्रति गृभ्णीत पुष्पवती: सुपिप्पला:.
अयं वो गर्भ ऽ ऋत्विय: प्रत्न ꣳ सधस्थमासदत्.. (४८)

हे ओषधियो! आप पुष्पवती व सुफलवती हैं. ऋतु के अनुरूप अग्नि के गर्भ में उत्पन्न होती हैं. अग्नि प्राचीन समय से सधे व विराजे हुए हैं. (४८)

वि पाजसा पृथुना शोशुचानो बाधस्व द्विषो रक्षसो अमीवा:.
सुशर्मणो बृहत: शर्मणि स्यामग्नेरह ꣳ सुहवस्य प्रणीतौ.. (४९)

हे अग्नि! आप विशाल, बलवान व दीप्तिमान हैं. आप द्वेषियों, राक्षसों व रोगों का नाश कीजिए. हमें सुखदायी विशाल महायज्ञ में लगाने की कृपा कीजिए. आप की कृपा से हम अच्छी हवि वाले हों. हमें आंतरिक प्रसन्नता प्राप्त कराइए. (४९)

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन. महे रणाय चक्षसे.. (५०)

हे जल देवो! आप भुवन में सुख के स्रोत व ऊर्जाधारी हैं. आप महान् देखने योग्य कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करें. (५०)

यो व: शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह न:. उशतीरिव मातर:.. (५१)

हे जल देवो! आप कल्याणकारी हैं. रसीले व अपना कल्याणकारी रस हमें प्राप्त कराइए. आप जिस रस से (रोगों का) क्षय करते हैं, उस रस को हमें प्राप्त कराइए. आप जनोपयोगी रस हमें प्राप्त कराने की कृपा कीजिए. (५१)

तस्मा ऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ. आपो जनयथा च न:.. (५२)

हे जल देवो! आप अत्यंत कल्याण करने वाले हैं. हे जल देवो! आप उस रस को सेवन से वैसे ही पुष्ट करिए जैसे माताएं संतान को दुग्ध रस से पुष्ट करती हैं. (५२)

मित्र: स ꣳ सृज्य पृथिवीं भूमिं च ज्योतिषा सह.
सुजातं जातवेदसमयक्ष्माय त्वा स ꣳ सृजामि प्रजाभ्य:.. (५३)

जैसे हमारे मित्र सूर्य अपनी ज्योति के साथ पृथ्वी को प्रकाशित करते हैं, उसी प्रकार

हम प्रजा के कल्याण के लिए अग्नि को प्रकाशित करते हैं. आप सम्यक् रूप से उत्पन्न हैं. आप सर्वविद् हैं. हम यक्ष्मा (रोग) नाश के लिए आप को सिरजते हैं. (५३)

रुद्राः स ᳪ सृज्य पृथिवीं बृहज्ज्योतिः समीधिरे.
तेषां भानुरजस्र ऽ इच्छुक्रो देवेषु रोचते.. (५४)

रुद्रगणों ने पृथ्वी को सिरजा और विशाल ज्योति से लोक को प्रदीप्त किया (चमकाया). सूर्य की अजस्र (लगातार) ज्योति देवताओं को चमकाती है. (५४)

स ᳪ सृष्टां वसुभी रुद्रैर्धीरैः कर्मण्यां मृदम्.
हस्ताभ्यां मृद्वीं कृत्वा सिनीवाली कृणोतु ताम्.. (५५)

धैर्यशाली वसुओं और रुद्रगणों द्वारा कर्मपूर्वक मिट्टी सिरजी गई है (तैयार की गई है). सिनीवाली देवी हाथों से उस मिट्टी को पात्र बनाने लायक तैयार करें तथा पात्र बनाने की कृपा करें. (५५)

सिनीवाली सुकपर्दा सुकुरीरा स्वौपशा.
सा तुभ्यमदिते मह्योखां दधातु हस्तयोः.. (५६)

सिनीवाली देवी सुंदर केशों, सुंदर अंगों व सुंदर आभूषणों वाली हैं. वे देवताओं की माता हैं. वे हम लोगों को लिए हाथों में उखा (पुरोडाश पकाने का पात्र) धारण करने की कृपा करें. (५६)

उखां कृणोतु शक्त्या बाहुभ्यामदितिर्धिया.
माता पुत्रं यथोपस्थे साग्निं बिभर्त्तु गर्भ ऽ आ.
मखस्य शिरो ऽ सि.. (५७)

देवमाता उखा पात्र को शक्ति व सुमतिपूर्वक बाहु से धारण करने की कृपा करें. माता जैसे पुत्र को गोद में बैठाती है, वैसे ही आप अपने गर्भ (बीच) में अग्नि को धारने की कृपा करें. आप यज्ञ के सिर (मुख्य) हैं. (५७)

वसवस्त्वा कृण्वन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद्ध्रुवासि पृथिव्यसि धारया मयि प्रजा ᳪ रायस्पोषं गौपत्य ᳪ सुवीर्य ᳪ सजातान्यजमानाय रुद्रास्त्वा कृण्वन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद्ध्रुवास्यन्तरिक्षमसि धारया मयि प्रजा ᳪ रायस्पोषं गौपत्य ᳪ सुवीर्य ᳪ सजातान्यजमानायादित्यास्त्वा कृण्वन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद्ध्रुवासि द्यौरसि धारया मयि प्रजा ᳪ रायस्पोषं गौपत्य ᳪ सुवीर्य ᳪ सजातान्यजमानाय विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वद्ध्रुवासि दिशोसि धारया मयि प्रजा ᳪ रायस्पोषं गौपत्य ᳪ सुवीर्य ᳪ सजातान्यजमानाय.. (५८)

हे उखा देव! वसुगण गायत्री छंद से अंगिरा के समान आप को निर्मित करने की कृपा करें. आप ध्रुव व पृथ्वी हैं. आप हमारी प्रजा, यजमान व हमारे सजातियों

के लिए धन धारिए. आप हमारी प्रजा का पोषण व उसे गोपति बनाने की कृपा कीजिए. आप हमारी प्रजा को श्रेष्ठ बलशाली बनाने की कृपा कीजिए. रुद्रगण त्रिष्टुप् छंद से अंगिरा के समान आप को निर्मित करने की कृपा करें. आप ध्रुव व अंतरिक्ष के समान हैं. अंगिरा के समान आप को निर्मित करने की कृपा करें. आदित्यगण जगती छंद की सामर्थ्य से अंगिरा के समान आप को निर्मित करने की कृपा करें. आप ध्रुव व स्वर्गलोक हैं. अंगिरा के समान आप को निर्मित करने की कृपा करें. आप विश्वे देवा अनुष्टुप् से अंगिरा के समान आप को निर्मित करने की कृपा करें. आप ध्रुव व दिशा रूप हैं. याजकों के लिए संतान, धन, पराक्रम सजातीय बांधवों का यथोचित सौहार्द दीजिए. (५८)

अदित्यै रास्नास्यदितिष्टे बिलं गृभ्णातु.
कृत्वाय सा महीमुखां मृण्मयीं योनिमग्नये.
पुत्रेभ्यः प्रायच्छददितिः श्रपयानिति.. (५९)

आप उखा की मेखला में हैं. आप बीच के स्थान में ग्रहण किए जाएं. देवमाता पृथ्वी की मिट्टी से अग्नि की आधारभूत उखा बनाने की कृपा करें. मिट्टी से निर्मित इसे पकाने के लिए पुत्रों को देने की कृपा करें. (५९)

वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद्रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वदादित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद्विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वदिन्द्रस्त्वा धूपयतु वरुणस्त्वा धूपयतु विष्णुस्त्वा धूपयतु.. (६०)

हे उखा देव! वसुगण गायत्री छंद से आप को धूप प्रदान करें. वसुगण अंगिरा जैसे आप को धूप प्रदान करें. रुद्रगण त्रिष्टुप् छंद से आप को धूप प्रदान करें. आदित्यगण जगती छंद से आप को धूप प्रदान करें. वैश्वानर अनुष्टुप् छंद से आप को धूप प्रदान करें. इंद्र देव आप को धूप प्रदान करें. वरुण देव आप को धूप प्रदान करें. विष्णु आप को धूप प्रदान करें. (६०)

अदितिष्ट्वा देवी विश्वदेव्यावती पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत् खनत्ववट देवानां
त्वा पत्नीर्देवीर्विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वद्दधतूखे धिषणास्त्वा
देवीर्विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वदभीन्धतामुखे वरूत्रीष्ट्वा
देवीर्विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वच्छ्रपयन्तूखे ग्नास्त्वा
देवीर्विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत्पचन्तूखे जनयस्त्वाच्छिन्नपत्रा
देवीर्विश्वदेव्यावतीः पृथिव्याः सधस्थे अङ्गिरस्वत्पचन्तूखे.. (६१)

हे मिट्टी देव! देवमाता सब की इष्ट व सभी दैवी गुणों की खान हैं. आप भूमि पर सधने की कृपा कीजिए. देवमाता अंगिरा की तरह आप को खोदने की कृपा करें. देवपत्नी सभी दिव्य गुणों के साथ आप को पृथ्वी पर स्थापित (साधने)

करने की कृपा करें. अंगिरा के समान आप को धारने व खोदने की कृपा करें. विश्व देवी सभी दिव्यगुणों की कृपा करें. अंगिरा की तरह आप को प्रज्वलित करने व खोदने की कृपा करें. विश्व देवी दिव्य गुणों सहित धारने की कृपा करें. हे मिट्टी देव! अंगिरा ऋषि की तरह आप को पकाने की कृपा प्रदान करें. विश्व देवी निरंतर गतिशील करने की कृपा प्रदान करें. (६१)

मित्रस्य चर्षणीधृतो ऽ वो देवस्य सानसि. द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्.. (६२)

हम पोषक शक्ति से प्रकाशवान, मित्र देवता के शाश्वत तथा आश्चर्यजनक पदार्थों से युक्त ऐश्वर्य धारण करें. (६२)

देवस्त्वा सवितोद्वपतु सुपाणिः स्वङ्गुरिः सुबाहुरुत शक्त्या.
अव्यथमाना पृथिव्यामाशा दिश ऽ आपृण.. (६३)

हे उखे! सब को पैदा करने वाले सविता अपनी उत्तम भुजाओं और अंगुलियों यानी दिव्य किरणों से, अपनी सामर्थ्य एवं बुद्धि कौशल से आप को प्रकाशित करें. आप पृथ्वी पर दुःखरहित हो कर अपनी अच्छी इच्छाओं और ऊंचे उद्देश्य प्राप्त करें (६३)

उत्थाय बृहती भवोदु तिष्ठ ध्रुवा त्वम्.
मित्रैतां त ऽ उखां परिददाम्यभित्या ऽ एषा मा भेदि.. (६४)

हे उखे! आप गर्त से निकल कर बड़े हों. आप स्थायी हो कर काम करें. हे मित्र देव! हम इस पवित्र बरतन को नष्ट होने के डर से आप को सौंपते हैं. यह टूटे नहीं. यह अच्छी तरह से कार्य करे. (६४)

वसवस्त्वाच्छृन्दन्तु गायत्रेण छन्दसाङ्गिरस्वद्रुद्रास्त्वाच्छृन्दतु त्रैष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वदादित्यास्त्वाच्छृन्दन्तु जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वद्विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा ऽ आच्छृन्दन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्.. (६५)

हे उखे! गायत्री छंद के स्तोत्रों से वसुगण आप को अभिषिक्त (सम्मानित) करें. त्रिष्टुप् छंद से रुद्रगण आप का सम्मान करें. जगती छंद के प्रभाव से आदित्यगण आप का सम्मान करें. अनुष्टुप् छंद की सामर्थ्य से विश्वे देवा अंगिरा के समान आप का सम्मान करें. (६५)

आकूतिमग्निं प्रयुज ꣳ स्वाहा मनो मेधामग्निं प्रयुज ꣳ स्वाहा चित्तं विज्ञातमग्निं प्रयुज ꣳ स्वाहा वाचो विधृतिमग्निं प्रयुज ꣳ स्वाहा प्रजापतये मनवे स्वाहाग्नये वैश्वानराय स्वाहा.. (६६)

अग्नि अच्छे कामों में लगाने वाले हैं. अग्नि के लिए स्वाहा. अग्नि अच्छे कामों में मन और बुद्धि को लगाने वाले हैं. अग्नि के लिए स्वाहा. अग्नि चित्त को विशेष ज्ञान के लिए प्रेरित करते हैं. अग्नि के लिए स्वाहा. अग्निवाणी को विशेष रूप से

धारण करते हैं. अग्नि के लिए स्वाहा. प्रजापति मनु देव के लिए स्वाहा. प्रजापति अग्नि के लिए स्वाहा. प्रजापति वैश्वानर के लिए स्वाहा. (६६)

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम्.
विश्वो राय ऽ इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा.. (६७)

सभी जन देवताओं के नेता परमेश्वर का सखि भाव (उन की कृपा से) पा जाएं. (उन की कृपा से) संसार के सब वैभव पा जाएं. (उन की कृपा से) संसार की सारी शान शौकत पा जाएं. (उन की कृपा से) संसार के तेजों को पा जाएं. परमेश्वर के लिए स्वाहा. (६७)

मा सु भित्था मा सु रिषो ऽ म्ब धृष्णु वीरयस्व सु. अग्निश्चेदं करिष्यथ:.. (६८)

हे उखा देव! आप का कभी भी भेदन न हो. आप कभी भी नष्ट न हों. आप धैर्यशाली वीर, कर्तव्यपरायण हैं. हे उखा देव! आप और अग्नि इस यज्ञ कार्य को संपादित कराने की कृपा करें. (६८)

दृ ꣳ हस्व देवि पृथिवि स्वस्तय ऽ आसुरी माया स्वधया कृतासि.
जुष्टं देवेभ्य ऽ इदमस्तु हव्यमरिष्टा त्वमुदिहि यज्ञे अस्मिन्.. (६९)

हे पृथ्वी देवी! आप असुरों की तरह मायावी रूप बदलने में समर्थ हैं. आप ने कल्याण हेतु उखा का रूप धारण किया है. आप सुदृढ़ होइए व इष्ट हवि का भोग लगाइए. आप आनंद देने व यज्ञ के समाप्त होने तक यज्ञ में उपस्थित रहने की कृपा कीजिए. (६९)

द्रवन्न: सर्पिरासुति: प्रत्नो होता वरेण्य:. सहसस्पुत्रो अद्भुत:.. (७०)

हे अग्नि! आप धनवान, घी पीने वाले, होता, श्रेष्ठ, अद्‌भुत व साहस के पुत्र हैं. आप इस यज्ञ को सफल बनाने की कृपा कीजिए. (७०)

परस्या ऽ अधि संवतो ऽ वराँ २ अभ्यातर. यत्राहमस्मि ताँ २ अव.. (७१)

हे अग्नि! शत्रुओं के साथ संघर्षशील हमारे समीप के सैनिकों की रक्षा करने की कृपा कीजिए. जहां हम हैं, आप उस स्थान की भी रक्षा करने की कृपा कीजिए. (७१)

परमस्या: परावतो रोहिदश्व ऽ इहा गहि.
पुरीष्य: पुरुप्रियोग्ने त्वं तरा मृध:.. (७२)

हे अग्नि! आप रोहित नामक घोड़े की कांति से घिरे हुए हैं. आप यहां पधारने की कृपा कीजिए. आप धनवान व परम प्रिय हैं. आप शत्रुओं का नाश और हमारे यज्ञ को सफल बनाने की कृपा कीजिए. (७२)

यदग्ने कानि कानि चिदा ते दारूणि दध्मसि.
सर्वं तदस्तु ते घृतं तज्जुषस्व यविष्ठ्य.. (७३)

हे अग्नि! आप को कौनकौन सी लकड़ियां (समिधा) समर्पित की जाएं. हे अग्नि! आप उन सभी को घी की आहुति की तरह अत्यंत प्रिय भाव से ग्रहण करने की कृपा करें. (७३)

यदत्त्युपजिह्विका यद्वम्रो अतिसर्पति.
सर्वं तदस्तु ते घृतं तज्जुषस्व यविष्ठ्य.. (७४)

हे अग्नि! जैसे दीमक लकड़ी को खा जाती है, वैसे आप उसे खा जाएं. जैसे घुन लकड़ी को खा जाता है, वैसे ही आप उसे खा जाएं. हे अग्नि! समिधाएं आप को घी की तरह प्रिय हों. आप यज्ञ में उन सब को अत्यंत प्रिय भाव से ग्रहण करने की कृपा करें. (७४)

अहरहरप्रयावं भरन्तोश्वायेव तिष्ठते घासमस्मै.
रायस्पोषेण समिषा मदन्तोग्ने मा ते प्रतिवेशा रिषाम.. (७५)

हे अग्नि! जैसे घुड़साल में हर दिन घोड़े को घास प्रदान करते हैं तथा (घास से) उस का भरणपोषण करते हैं, वैसे ही हम यजमान आप के संरक्षण में रहते हैं. आप वैसे ही धन से हमारा पोषण करने की कृपा कीजिए. हम आप के लिए हर दिन समिधाओं का आहार भेंट करें. हम आप की कृपा से कभी भी दु:खी न हों. सब प्रकार के सुख प्राप्त करें. (७५)

नाभा पृथिव्या: समिधाने अग्नौ रायस्पोषाय बृहते हवामहे.
इरम्मदं बृहदुक्थं यजत्रं जेतारमग्निं पृतनासु सासहिम्.. (७६)

हे अग्नि! आप पृथ्वी की नाभि हैं. आप समिधा रूपी धन से पोषण पाते हैं. हम विशाल अग्नि का बारबार आह्वान करते हैं. हम बड़ी (लंबी) स्तुतियों से आप की प्रशंसा करते हैं. हम यहां विजेता अग्नि का आह्वान करते हैं. हम साहसी विजेता अग्नि का आह्वान करते हैं. हम यहां ऐश्वर्य प्राप्ति हेतु अग्नि का आह्वान करते हैं. (७६)

या: सेना ऽ अभीत्वरीराव्याधिनीरुगणा ऽ उत.
ये स्तेना ये च तस्करास्ताँस्ते अग्नेपि दधाम्यास्ये.. (७७)

हे अग्नि! शत्रुओं की जो सेना युद्ध हेतु तैयार होती है, उसे आप रोगों के मुख में झोंक देते हैं. शत्रुओं की जो सेना युद्ध हेतु तैयार होती, उसे चोर डाकुओं के मुख में झोंक देते हैं. हे अग्नि! हम आप को इसी उद्देश्य के लिए धारण करते हैं. (७७)

द ꣳ ष्ट्राभ्यां मलिम्लूञ्जम्भ्यैस्तस्कराँ २ उत.
हनुभ्या ꣳ स्तेनान् भगवस्ताँस्त्वं खाद सुखादितान्.. (७८)

हे अग्नि! आप दुष्टों को अपनी दाढ़ों से समूल नष्ट करने की कृपा करें. आप डाकुओं को अपने दांतों से समूल नष्ट करने की कृपा करें. आप चोरों को अपनी दाढ़ी से समूल नष्ट करने की कृपा करें. आप गड्ढा खोद कर शत्रुओं को गाड़ दीजिए. आप सत्कर्म की कृपा करें. (७८)

ये जनेषु मलिम्लवः स्तेनासस्तस्करा वने.
ये कक्षेष्वघायवस्ताँस्ते दधामि जम्भयोः.. (७९)

हे अग्नि! जो मनुष्य में मलिन, चोर, जो मनुष्य में डाकू, वनचर डाकू, जो मनुष्यों की कांख में घात कर के मारने वाले हैं, उन्हें आप अपनी दाढ़ों में धारण कर के मार डालिए. (७९)

यो अस्मभ्यमरातीयाद्यश्च नो द्वेषते जनः.
निन्दाद्यो अस्मान्धिप्साच्च सर्वं तं मस्मसा कुरु.. (८०)

हे अग्नि! जो लोग हम से द्वेष करें, आप उन सब का नाश करने की कृपा कीजिए. आप उन सभी का नाश करने की कृपा कीजिए, जो हमारी निडरता में बाधक बनें और जो हमारी निंदा करते हैं. (८०)

स ꣳ शितं मे ब्रह्म स ꣳ शितं वीर्यं बलम्.
स ꣳ शितं क्षत्रं जिष्णु यस्याहमस्मि पुरोहितः.. (८१)

हे अग्नि! आप की कृपा से जिस यजमान के यज्ञ के हम पुरोहित हैं, उस यजमान के वीर्य, बल, ज्ञान व जीतने योग्य क्षात्रबल की बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. आप उस यजमान को विजयशील बनाने की कृपा कीजिए. (८१)

उदेषां बाहू अतिरमुद्वर्चो अथो बलम्.
क्षिणोमि ब्रह्मणा ऽ मित्रानुन्नयामि स्वाँ २ अहम्.. (८२)

हे अग्नि! आप की कृपा से उन दुष्ट शत्रुओं के बाहुबल की बजाय हमारे पराक्रम की बढ़ोतरी हो. आप की कृपा से हमारे अर्थ व बल की बढ़ोतरी हो. अपने ब्रह्मज्ञान से अमित्रों का नाश करें. हम अपने स्वजनों को ऊंचा उठा सकें. (८२)

अन्नपतेन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः.
प्रप्र दातारं तारिष ऽ ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे.. (८३)

हे अग्नि! आप अन्नपति हैं. आप हमें रोग रहित बनाने व पोषकता देने की कृपा कीजिए. हे अग्नि! आप दाता को पोषण देने की कृपा कीजिए. हे अग्नि! आप दोपायों व चौपायों के लिए ऊर्जा धारण की कृपा कीजिए. (८३)

बारहवां अध्याय

दृशानो रुक्म ऽ उर्व्या व्यद्यौद् दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः.
अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः.. (१)

सूर्य पूर्व दिशा में दृष्टिगोचर हो रहे हैं. उन की आज की दिनभर की आयु संघर्षपूर्ण है. वे शोभा के लिए प्रकाशित हो रहे हैं. यजमानों ने जब स्वर्गलोक से सूर्य को प्रकट किया तब हवि ग्रहण करने के लिए वे अग्निरूप में आ गए. (१)

नक्तोषासा समनसा विरूपे धापयेते शिशुमेक ॐ समीची.
द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्विभाति देवा ऽ अग्निं धारयन्द्रविणोदाः.. (२)

सूर्य समान मन से सुबह और दिन की यात्रा करते हैं. एक दूसरे से बिलकुल अलग रूप वाले एक शिशु को ये देव उपयुक्त रीति से पोषित करते हैं. सूर्य स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक के बीच चमकते हैं. वैसे ही धनदाता देवगण अग्नि को धारते हैं. (२)

विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्रासावीद्भद्रं द्विपदे चतुष्पदे.
वि नाकमख्यत्सविता वरेण्योनु प्रयाणमुषसो वि राजति.. (३)

सूर्य विश्व रूप व कवि हैं. वे दोपायों और चौपायों का कल्याण करते हैं. वे वरेण्य हैं. वे सभी को प्रेरित करते हैं. वे उषा देवी के जाने के बाद आकाश में शोभित होते हैं. (३)

सुपर्णोसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ.
स्तोम ऽ आत्मा छन्दा ॐ स्यङ्गानि यजू ॐ षि नाम.
साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः.
सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत.. (४)

हे सविता देव! आप गरुड़ स्वरूप हैं. त्रिवृत् स्तोम आप का सिर है. गायत्री छंद आप के नेत्र हैं. बृहत्साम और रथंतर साम आप के दोनों पंख हैं. पंचदश स्तोम आप की आत्मा हैं. छंद आप के अंग हैं. सब यजु आप के नाम हैं. साम आप का शरीर है. यज्ञायज्ञिय साम आप की पूंछ हैं. धिष्णियों में निहित अग्नि

आप के पंख हैं. आप शुभ गतिवान हैं. आप स्वर्गलोक में उड़िए. आप स्वेच्छा से उड़ान भरिए. (४)

विष्णोः क्रमोसि सपत्नहा गायत्रं छन्द ऽ आरोह पृथिवीमनु विक्रमस्व विष्णोः क्रमोस्यभिमातिहा त्रैष्टुभं छन्द ऽ आरोहान्तरिक्षमनु विक्रमस्व विष्णोः क्रमोस्यरातीयतो हन्ता जागतं छन्द ऽ आरोह दिवमनु विक्रमस्व विष्णोः क्रमोसि शत्रूयतो हन्तानुष्टुभं छन्द ऽ आरोह दिशोनु विक्रमस्व.. (५)

हे अग्नि! आप विष्णु के पदन्यास व शत्रुनाशी हैं. आप गायत्री छंद पर आरूढ़ होने व पृथ्वी का अनुकरण करने की कृपा कीजिए. आप विष्णु देव का क्रम न्यास व शत्रु का अभिमान नष्ट करने वाले हैं. आप त्रिष्टुप् छंद पर आरूढ़ होने तथा अंतरिक्ष का अनुकरण करने की कृपा कीजिए. आप विष्णु का पदन्यास और न करने योग्य आचरण करने वाले के नाशक हैं. आप जगती छंद पर आरूढ़ होने और स्वर्गलोक का अनुकरण करने की कृपा कीजिए. आप विष्णु का पदन्यास तथा शत्रुनाशक हैं. आप अनुष्टुप् छंद पर आरूढ़ होने और सारी दिशाओं का अनुकरण करने की कृपा कीजिए. (५)

अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन्.
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः.. (६)

अग्नि बादल के समान गरजते हैं. स्वर्गलोक से वह पृथ्वी पर व्याप्त होते हैं. वे लताओं को घेर लेते हैं व शीघ्र जलते हैं. वे समिधावान और सब को प्रकाशित करते हैं. वे अपने प्रकाश से सब को प्रकाशित करते हैं. (६)

अग्नेभ्यावर्त्तिन्नभि मा निवर्त्तस्वायुषा वर्चसा प्रजया धनेन.
सन्या मेधया रय्या पोषेण.. (७)

हे अग्नि! आप हमारे सम्मुख पधारते हैं. आप आयु, वर्चस्व, संतान व धन के साथ हमारे पास पधारिए. आप बुद्धि, ऐश्वर्य व पोषण के साथ हमारे पास पधारिए. (७)

अग्ने अङ्गिरः शतं ते सन्त्वावृतः सहस्रं त ऽ उपावृतः.
अधा पोषस्य पोषेण पुनर्नो नष्टमाकृधि पुनर्नो रयिमाकृधि.. (८)

हे अग्नि! आप श्रेष्ठ अंग वाले हैं. हम आप की सैकड़ों, हजारों परिक्रमाएं करते हैं. आप हमें पोषकता देने वाला पोषण व नष्ट हुआ पशुधन और धन प्राप्त कराने की कृपा कीजिए. (८)

पुनरूर्जा निवर्त्तस्व पुनरग्न ऽ इषायुषा पुनर्नः पाह्य ꣳ हसः.. (९)

हे अग्नि! आप हमें ऊर्जस्वी बनाइए. आप हमें बारबार संपन्न व आयु संपन्न

बनाने की कृपा कीजिए. आप बारबार पाप से बचाने की कृपा कीजिए. (९)

सह रय्या निवर्त्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया. विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि.. (१०)

हे अग्नि! आप धन के साथ पधारिए. आप पृथ्वी को जलधार से सींचिए. यह जलधार प्यास बुझाने वाली है. आप पूरे संसार को इस से सींचिए. (१०)

आ त्वाहार्षमन्तरभूर्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः.
विशस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु मा त्वद्राष्ट्रमधिभ्रशत्.. (११)

हे अग्नि! हम ने आप को आमंत्रित किया है. आप उखा के भीतर स्थित व ध्रुव (स्थिर) होइए. आप अविचल हो कर रहिए. सभी आप को चाहें. यज्ञ की कृपा से पूरा राष्ट्र भ्रष्ट (और कलंकित) होने से बचे. (११)

उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यम ꣳ श्रथाय.
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम.. (१२)

हे वरुण! आप हमारे ऊपर, बीच व नीचे के बंधन दूर कीजिए. आप अदिति के पुत्र हैं. हम अदिति के प्रति अनागस हो जाएं. (१२)

अग्रे बृहन्नुषसामूर्ध्वो अस्थान्निर्जगन्वान् तमसो ज्योतिषागात्.
अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्ग ऽ आ जातो विश्वा सद्मान्यप्राः.. (१३)

अग्नि विशाल, प्रज्वलित, ऊषा के आगे स्थित और अंधकार से ज्योति की ओर जाते हैं. वे सूर्य के साथ सामने प्रकटे. वे अंधकार नाशक के साथ प्रकटे. उन्होंने उत्पन्न होते ही सभी लोकलोकांतरों को व्याप्त कर लिया. (१३)

ह ꣳ सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्.
नृषद्वरसदृतसद् व्योमसदब्जा गोजा ऽ ऋतजा ऽ अद्रिजा ऽ ऋतं बृहत्.. (१४)

अग्नि गमनशील, पवित्र स्थान में रहने वाले, धनवर्षक. वे सब को बसाने वाले व अंतरिक्ष में होने वाले हैं. वे देवों के आह्वाहक हैं. वे वेदी में स्थित रहने वाले, अतिथि, सर्वत्र पूज्य हैं. वे यज्ञगृह में रहने वाले हैं. वे मनुष्यों में प्राण के रूप में रहते हैं. वे व्योमवासी हैं और चिनगारी से उत्पन्न हैं. वे ऋत और पत्थर से उत्पन्न हैं. वे विशाल हैं. (१४)

सीद त्वं मातुरस्या ऽ उपस्थे विश्वान्यग्ने वयुनानि विद्वान्.
मैनां तपसा मार्चिषाभि शोचीरन्तरस्या ꣳ शुक्रज्योतिर्विभाहि.. (१५)

हे अग्नि! माता की गोद में बैठने की तरह आप इस आसन पर विराजिए. आप सर्वज्ञ और विद्वान् हैं. आप अपने ताप से इस मचिया को मत तपाइए. आप अपनी भीतरी ज्योति से हमेशा चमकिए. (१५)

अन्तरग्ने रुचा त्वमुखायाः सदने स्वे.
तस्यास्त्व ँ् हरसा तपञ्जातवेदः शिवो भव.. (१६)

हे अग्नि! यह उखा आप का घर है, इस में चमकिए. आप अपने ताप से इसे तपाइए. आप सर्वज्ञ हैं. आप कल्याणकारी होइए. (१६)

शिवो भूत्वा मह्यमग्ने अथो सीद शिवस्त्वम्.
शिवाः कृत्वा दिशः सर्वाः स्वं योनिमिहासदः.. (१७)

हे अग्नि! आप मेरे प्रति भी कल्याणमय हो कर इस उखे के घर में विराजिए. यहां भी कल्याणकारी हो कर ही रहिए. आप सभी दिशाओं को कल्याणकारी बनाइए. अग्नि! यह उखा आप का मूल स्थान है. आप इस में स्थित होने की कृपा कीजिए. (१७)

दिवस्परि प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद् द्वितीयं परि जातवेदाः.
तृतीयमप्सु नृमणा ऽ अजस्रमिन्धान ऽ एनं जरते स्वाधीः.. (१८)

सर्वप्रथम स्वर्गलोक में अग्नि का जन्म हुआ! दोबारा हमारे पास मनुष्यलोक में उन का जन्म हुआ. मेघ के रूप में उन का जन्म हुआ! तीसरी बार निरंतर प्रवाहित होने वाले जलों में उन का जन्म हुआ. वे निरंतर प्रवहमान हैं. (१८)

विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्मा ते धाम विभृता पुरुत्रा.
विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत ऽ आजगन्थ.. (१९)

हे अग्नि! हम आप को तीन प्रकार से तीन रूपों में जानते हैं. आप रक्षक व सर्वत्र व्याप्त हैं. हम आप के परम गुप्त रूप को भी जानते हैं. हम आप के मूल उत्स (स्रोत) को भी जानते हैं, जहां आप इन रूपों में प्रकट हुए हैं. (१९)

समुद्रे त्वा नृमणा ऽ अप्स्वन्तर्नृचक्षा ऽ ईधे दिवो अग्न ऽ ऊधन्.
तृतीये त्वा रजसि तस्थिवा ँ् समपामुपस्थे महिषा अवर्धन्.. (२०)

हे अग्नि! प्रजापति देव सब के कल्याणकारक हैं. वे आप को ईंधनमय बनाते हैं. परमात्मा सर्वद्रष्टा हैं. वही आप को प्रज्वलित करते हैं. आप स्वर्गलोक के स्तन जैसे हैं. आप ही सब की बढ़ोतरी करते हैं. (२०)

अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन्.
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः.. (२१)

अग्नि के गरजने की आवाज मेघ के गरजने की आवाज के समान है. पृथ्वी को मेघ के समान ही भिगाते हैं. समिधावान अग्नि स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को प्रकाशित व उन के मध्य चमकते हैं. (२१)

श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः.
वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा वि भात्यग्र ऽ उषसामिधानः.. (२२)

अग्नि उदारता से धन देने वाले, धनधारी, मनुष्यों को स्वर्ग प्राप्त कराने वाले और सोम के पालक हैं. वे बल के पुत्र, जलों के राजा और प्रदीप्त होने वाले हैं. वे सब से आगे शोभित होने वाले हैं. (२२)

विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ ऽ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः.
वीडुं चिदद्रिमभिनत् परायञ्जना यदग्निमयजन्त पञ्च.. (२३)

अग्नि संसार की पताका और उस का गर्भ हैं. उत्पन्न हो कर वे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को व्याप्त कर लेते हैं. इंद्र देव जैसे देवराज रूप में वे बड़े से बड़े पर्वत को भी भेद देते हैं. पांच व्यक्ति अग्नि की पूजा करते हैं. (२३)

उशिक्पावको अरतिः सुमेधा मर्त्येष्वग्निरमृतो नि धायि.
इयर्त्ति धूममरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेण शोचिषा द्यामिनक्षन्.. (२४)

अग्नि इच्छा करने योग्य, पवित्र, दुष्टों के प्रति प्रेमहीन और श्रेष्ठ बुद्धि वाले हैं. वे अमर व मनुष्यों के इच्छापूरक हैं. उन का धुआं ऊपर की ओर जाता है. वे चमकीले हैं. अग्नि अपनी शोभा स्वर्गलोक तक फैलाते हैं. (२४)

दृशानो रुक्म ऽ उर्व्या व्यद्यौदुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः.
अग्निरमृतो अभवद्वयोभिर्यदेनं द्यौरजनयत्सुरेताः.. (२५)

अग्नि दर्शनीय हैं व रुक्म जैसी आभावाले हैं. अग्नि अपनी आभा से पृथ्वी पर शोभित होते हैं. चमकते हैं. अमर हैं. श्रेष्ठ वीर्य वाले हैं. वे पृथ्वी और स्वर्ग दोनों लोकों के बीच शोभायमान हैं. (२५)

यस्ते अद्य कृणवद्भद्रशोचेपूपं देव घृतवन्तमग्ने.
प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छाभि सुम्नं देवभक्तं यविष्ठ.. (२६)

हे अग्नि! आप शोभादायक हैं. आज यजमान ने आप के लिए विधिविधान और पवित्रतापूर्वक भोग की सामग्री बनाई है. आप घी से युक्त उस सामग्री को ग्रहण करने और अपने यजमानों को स्वर्ग के सुख प्राप्त कराने की कृपा कीजिए. (२६)

आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न ऽ उक्थ ऽ उक्थ ऽ आ भज शस्यमाने.
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवात्युज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः.. (२७)

हे अग्नि! आप यजमान को श्रेष्ठ यशदायी कामों व शास्त्र के पठनपाठन में लगाने की कृपा कीजिए. सूर्य और अग्नि प्रिय हैं. इन की कृपा से हम उन्नतिशील पुत्र और पौत्र प्राप्त करते हैं. इन की कृपा से हम अतीव अभ्युदय को प्राप्त करते हैं. (२७)

त्वामग्ने यजमाना ऽ अनु द्यून् विश्वा वसु दधिरे वार्याणि.
त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो विवव्रुः.. (२८)

हे अग्नि! हम यजमान प्रतिदिन आप का अनुसरण करते हैं. यजमान आप की कृपा से सभी प्रकार के धन प्राप्त करते हैं. आप के साथ हम सभी प्रकार के धन की इच्छा करते हुए उशिजों की तरह गायों के बाड़े में चले जाएं. (२८)

अस्ताव्यग्निर्नरा ꣳ सुशेवो वैश्वानर ऽ ऋषिभिः सोमगोपाः.
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम्.. (२९)

अग्नि यजमानों के द्वारा सेवन योग्य हैं. अग्नि विद्वानों के द्वारा स्तुति किए जाने योग्य हैं. अग्नि नायक और सोम पालक हैं. हम द्वेष रहित स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक का आह्वान करते हैं. हे देव! आप हमें सुवीर बनाइए और हमारे लिए धन धारिए. (२९)

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम्.
आस्मिन् हव्या जुहोतन.. (३०)

हे अग्नि! आप समिधावान हैं. हम आप की परिक्रमा करते हैं. आप हमारे अतिथि हैं. हम घी से आप को जगाते हैं. आप इस में हवि होमने की कृपा कीजिए. (३०)

उदु त्वा विश्वे देवा ऽ अग्ने भरन्तु चित्तिभिः.
स नो भव शिवस्त्व ꣳ सुप्रतीको विभावसुः.. (३१)

हे अग्नि! आप प्राणस्वरूप हैं. आप को अपनी बुद्धि से ऊपर की ओर धारण करने की कृपा करें. आप हमारे प्रति कल्याणकारी होने की कृपा कीजिए. आप सुमुख और ज्योति रूप धन वाले हैं. (३१)

प्रेदग्ने ज्योतिष्मान् याहि शिवेभिरर्चिभिष्ट्वम्.
बृहद्भिर्भानुभिर्भासन्मा हि ꣳ सीस्तन्वा प्रजाः.. (३२)

हे अग्नि! आप ज्योतिष्मान हैं. आप इसी रूप में यहां से प्रस्थान करने की कृपा कीजिए. हम कल्याणकारी स्तुतियों से आप की अर्चना करते हैं. आप की ये बड़ी-बड़ी लपटें सूर्य की तरह चमकती हैं. आप अपनी इन लपटों से अपनी संतान के प्रति हिंसा मत कीजिए. (३२)

अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरुधः समञ्जन्.
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यदा रोदसी भानुना भात्यन्तः.. (३३)

अग्नि के गरजने की आवाज मेघ के गरजने की आवाज के समान है. पृथ्वी को मेघ के समान ही भिगाते हैं. समिधावान अग्नि स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को

प्रकाशित करते हैं. वे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक के मध्य चमकते हैं. (३३)

प्र प्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत्सूर्यो न रोचते बृहद्भाः.
अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ दीदाय दैव्यो अतिथिः शिवो नः.. (३४)

अग्नि द्वारा बुलाने के लिए बोले गए मंत्र को सुनते हैं. अग्नि सूर्य के समान भासित होते हैं. वे युद्ध में पुरु के सहायक रहे. वे राजा, दिव्य और हमारे अतिथि हैं. हमारे प्रति कल्याणकारी होने की कृपा करें. (३४)

आपो देवीः प्रतिगृभ्णीत भस्मैतत्स्योने कृणुध्व ꣳ सुरभा ऽ उ लोके.
तस्मै नमन्तां जनयः सुपत्नीर्मातेव पुत्रं बिभृताप्स्वेनत्.. (३५)

हे जलदेवी! आप इस भस्म को स्वीकारने और इस से लोकों को सुगंधित बनाने की कृपा कीजिए. वरुण देव पत्नियों सहित इस के प्रति नमें तथा इसे उसी प्रकार धारें, जैसे माता पुत्र को धारण करती है. (३५)

अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे. गर्भे सञ्जायसे पुनः.. (३६)

हे अग्नि! जल में आप की सहस्थिति है. आप जल के साथ ओषध धारण करते हैं. वनस्पतियों के गर्भ से बारबार प्रकट होते हैं. (३६)

गर्भो अस्योषधीनां गर्भो वनस्पतीनाम्.
गर्भो विश्वस्य भूतस्याग्ने गर्भो अपामसि.. (३७)

हे अग्नि! आप ओषधियों का गर्भ हैं. आप वनस्पतियों का गर्भ हैं. आप सभी प्राणियों का गर्भ हैं. आप सभी जलों का गर्भ हैं. (३७)

प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने.
स ꣳ सृज्य मातृभिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरा सदः.. (३८)

हे अग्नि! भस्म से आप अपने मूल स्थान पृथ्वी को प्राप्त होइए. आप जल के साथ मिलिए और पुनः ज्योतिष्मान होइए. आप पुनः अपने सदन में प्रवेश कीजिए. (३८)

पुनरासद्य सदनमपश्च पृथिवीमग्ने.
शेषे मातुर्यथोपस्थेन्तरस्या ꣳ शिवतमः.. (३९)

हे अग्नि! आप पुनः अपने सदन में प्रवेश कीजिए. आप पृथ्वी पर ऐसे शयन कर रहे हैं, जैसे संतान मां की गोद में सो रही हो. आप हमारे प्रति कल्याणकारी होने की कृपा कीजिए. (३९)

पुनरूर्जा निवर्त्तस्व पुनरग्न ऽ इषायुषा. पुनर्नः पाह्य ꣳ हसः.. (४०)

हे अग्नि! आप हमें पुनः ऊर्जस्वी और आयुष्मान बनाइए. आप हमें पुनः पाप से बचाइए. (४०)

सह रय्या निवर्त्तस्वाग्ने पिन्वस्व धारया. विश्वप्स्न्या विश्वतस्परि.. (४१)

हे अग्नि! आप हमें पुनः धन के साथ प्राप्त होइए. आप वर्षा की धारा से पृथ्वी पर सारी वनस्पति को बढ़ाने की कृपा करें. (४१)

बोधा मे अस्य वचसो यविष्ठ म ꣳ हिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः.
पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति वन्दारुष्टे तन्वं वन्दे अग्ने.. (४२)

हे अग्नि! आप हमारे इन वचनों को सुनिए. प्रसन्न व्यक्ति आप की और रुष्ट व्यक्ति आप को कोसते हैं. हम आप के तन का वंदन करते हैं. (४२)

स बोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन्.
युयोध्यस्मद् द्वेषा ꣳ सि विश्वकर्मणे स्वाहा.. (४३)

हे अग्नि! आप धन के स्वामी और धनदाता हैं. आप हमारे द्वेषियों को दूर करने की कृपा कीजिए. सर्वकर्मा अग्नि के लिए स्वाहा. (४३)

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः.
घृतेन त्वं तन्वं वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः.. (४४)

हे अग्नि! आप को आदित्य, रुद्र, वसु पुनः प्रज्वलित करने की कृपा करें. अग्नि धन के नेता हैं. वे यज्ञ से यजमान आप को बारबार प्रज्वलित करने की कृपा करें. वे घी से आप अपने शरीर की बढ़ोतरी करने और अपने यजमान की कामनाएं पूरी करने की कृपा करें. (४४)

अपेत वीत वि च सर्पतातो येत्र स्थ पुराणा ये च नूतनाः.
अदाद्यमोवसानं पृथिव्या ऽ अक्रन्निमं पितरो लोकमस्मै.. (४५)

नए पुराने जो भी यमदूत यहां हों वे दूर, बहुत दूर चले जाएं. बहुत दूर हट जाएं. पृथ्वी का यह स्थान यमराज ने स्वयं यज्ञ हेतु हमारे पूर्वजों को देने की कृपा की है. (४५)

संज्ञानमसि कामधरणं मयि ते कामधरणं भूयात्.
अग्नेर्भस्मास्यग्नेः पुरीषमसि चित स्थ परिचित ऽ ऊर्ध्वचितः श्रयध्वम्.. (४६)

हे उषा! आप सम्यक् ज्ञान हैं. आप कामनाएं धारण करती हैं. आप हमारे लिए भी कामना धारण करने वाली हों. आप भस्म और अग्नि की पूरक हैं. धरती पर बालू की पतली रेखाएं बिछाई गई हैं. आप चारों ओर तथा ऊपर की ओर स्थापित होने की कृपा कीजिए. आप यज्ञ को श्रेयस्कर बनाइए. (४६)

अय ꣳ सो अग्निर्यस्मिन्त्सोममिन्द्रः सुतं दधे जठरे वावशानः.
सहस्रियं वाजमत्यं न सप्ति ꣳ ससवान्त्सन्त्स्तूयसे जातवेदः.. (४७)

यह वही अग्नि है, जिसे सोम के रूप में इंद्र देव अपनी जठराग्नि में भरते हैं. यह हजार गुना है. यह अन्नमय, बलदायी और सर्वज्ञ है. हजारों के द्वारा इन की स्तुति की जाती है. (४७)

अग्ने यत्ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्स्वा यजत्र.
येनान्तरिक्षमुर्वाततन्थ त्वेषः स भानुरर्णवो नृचक्षाः.. (४८)

हे अग्नि! आप का जो वर्चस्व स्वर्गलोक में है, वही वर्चस्व पृथ्वीलोक में है. वही वर्चस्व ओषधियों व जलों में है. जिस से आप ने अंतरिक्ष का विस्तार किया वही यह सूर्य है. वह सभी मनुष्यों को देखने वाला है. (४८)

अग्ने दिवो अर्णमच्छा जिगास्यच्छा देवाँ २ ऊचिषे धिष्ण्या ये.
या रोचने परस्तात् सूर्यस्य याश्चावस्तादुपतिष्ठन्त ऽ आपः.. (४९)

हे अग्नि! आप स्वर्गलोक से सीधे जल पाते हैं. देवगण हमारी बुद्धि को ऊंचाई की ओर प्रेरित करते हैं. जो सामने सूर्य के रूप को भासित है और जो नीचे जल के रूप में स्थित है, आप दोनों प्रकार के जलों की बरसात करने की कृपा करते हैं. (४९)

पुरीष्यासो अग्नयः प्रावणेभिः सजोषसः.
जुषन्तां यज्ञमद्रुहोनमीवा ऽ इषो महीः.. (५०)

हे अग्नि! पशुओं का हित साधने वाली, लोक में व्यापक मन के साथ प्रेम रखने वाली, बीमारियां दूर करने वाली, अन्न देने वाली, वर्षा करने वाली, इष्ट सिद्धि करने वाली अग्नियां प्रेमपूर्वक इस यज्ञ का सेवन करने की कृपा करें. (५०)

इडामग्ने पुरुद ꣳ स ꣳ सनिं गोः शश्वत्तम ꣳ हवमानाय साध.
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे.. (५१)

हे अग्नि! आप बहुकर्मा हैं. आप यजमान के लिए गाय के (दूध, दही) घी आदि का दान कीजिए. हमें पुत्र संतान दीजिए. हमारी संतान हमारा और आगे वंश बढ़ाए. अपनी वह कल्याणकारी बुद्धि हमें प्राप्त कराइए. (५१)

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः.
तं जानन्नग्न ऽ आ रोहाथा नो वर्धया रयिम्.. (५२)

हे अग्नि! आप की यह वेदी ऋतु को जन्म देने वाली है. इसी से उत्पन्न हो कर आप चमकते हैं. आप यह जानते हुए इस पर चढ़ने की कृपा कीजिए. आप हमारे धन की बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. (५२)

चिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद.
परिचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद.. (५३)

हे अग्नि! अब आप की स्थापना कर दी गई है. अब आप अंगअंग में रमने की कृपा कीजिए. आप चित्त हैं. अब आप विराजिए. आप को चारों ओर स्थापित कर दिया गया है. आप चित्त से स्थापित होने की कृपा कीजिए. (५३)

लोकं पृण छिद्रं पृणाथो सीद ध्रुवा त्वम्.
इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पतिरस्मिन् योनावसीषदन्.. (५४)

हे अग्नि! लोक को पूरने से जो जगह रह गई आप उन छेदों को भरने की कृपा कीजिए. आप वहां स्थिर हो कर स्थापित होने की कृपा कीजिए. आप को इंद्र देव अग्नि और बृहस्पति देव ने यहां स्थापित किया है. (५४)

ता ऽ अस्य सूददोहसः सोम ꣳ श्रीणन्ति पृश्नयः.
जन्मन्देवानां विशस्त्रिष्वा रोचने दिवः.. (५५)

स्वर्गलोक से जो जल मिलता है, उस से सोम शोभा पाते हैं. देवों के जन्मजन्म और प्रत्येक यज्ञ में यह सोम इस स्वर्गिक जल से परिपक्व होता है. (५५)

इन्द्रं विश्वा ऽ अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः.
रथीतम ꣳ रथीनां वाजाना ꣳ सत्पतिं पतिम्.. (५६)

सभी वाणियां समुद्र के समान विस्तृत हैं. वे वाणियां रथियों में महारथी इंद्र देव की महिमा का गुणगान करती हैं. इंद्र देव बलवानों में सर्वाधिक बलशाली हैं. इंद्र देव पालकों में श्रेष्ठ पालक हैं. (५६)

समित ꣳ सङ्कल्पेथा ꣳ संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ.
इषमूर्जमभि संवसानौ.. (५७)

हे इंद्र देव! हम समान मति वाले हों. हम सब आपस में प्रिय हों. हम सब प्रकाशवान हों. हम सब एक साथ प्रेरित हों. हम सब समान ऊर्जस्वी हों. हमारे यज्ञ का सफलतापूर्वक समापन हो. (५७)

सं वां मना ꣳ सि सं व्रता समु चित्तान्याकरम्.
अग्ने पुरीष्याधिपा भव त्वं न ऽ इषमूर्जं यजमानाय धेहि.. (५८)

हे अग्नि! हमारे मन समान हों. हमारे संकल्प समान हों. हे अग्नि! आप पुरियों के स्वामी हैं. आप हमें ऊर्जस्वी बनाइए. आप यजमान के लिए ऊर्जा धारिए. (५८)

अग्ने त्वं पुरीष्यो रयिमान् पुष्टिमाँ २ असि.
शिवाः कृत्वा दिशः सर्वाः स्वं योनिमिहासदः.. (५९)

हे अग्नि! आप नगरों के स्वामी हैं. आप धनवान हैं. आप पुष्टिमान हैं. आप सभी दिशाओं को कल्याणकारी बनाइए. आप यहां अपने मूल स्थान में प्रतिष्ठित होने की कृपा कीजिए. (५९)

भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ.
मा यज्ञ ꣳ हि ꣳ सिष्टं मा यज्ञपतिं जातवेदसौ शिवौ भवतमद्य नः.. (६०)

हे अग्नि! आप सर्वज्ञ हैं. आप हमें समान मन वाला बनाइए. आप हमें समान चित्त वाला बनाइए. आप हमें समान श्रद्धा वाला बनाइए. आप यज्ञ में हिंसा मत कीजिए. आप यज्ञपति हैं. आप आज हमारे प्रति कल्याणकारी होने की कृपा कीजिए. (६०)

मातेव पुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि ꣳ स्वे योनावभारुखा.
तां विश्वैर्देवैर्ऋतुभिः संविदानः प्रजापतिर्विश्वकर्मा वि मुञ्चतु.. (६१)

जैसे माता पुत्र को धारती है, वैसे ही उखा कल्याणकारी अग्नि को धारती है. समस्त देवगणों और ऋतु द्वारा ऐक्य भाव से प्रेरित उखा को प्रजापति विश्वकर्मा पाश से मुक्त करने की कृपा करें. (६१)

असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य.
अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽ इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु.. (६२)

हे दुष्ट दलन में समर्थ! आप चोरों और तस्करों का नाश करने में समर्थ हैं. आप विशिष्ट शक्तिवान हैं. आप चोरडाकू छोड़ कर अन्य लोग हमें दीजिए. हे देवी! आप के लिए हमारा नमस्कार. (६२)

नमः सु ते निर्ऋते तिग्मतेजो ऽ यस्मयं विचृता बन्धमेतम्.
यमेन त्वं यम्या संविदानोत्तमे नाके अधि रोहयैनम्.. (६३)

हे निर्ऋते! आप तेजस्वी हैं. आप शक्तिमान हैं. आप लोहे जैसी दृढ़ हैं. आप हमें सांसारिक सत्व बंधन से मुक्त कीजिए. यजमान को यमलोक से उत्तम स्वर्गलोक में पहचानने की कृपा कीजिए. (६३)

यस्यास्ते घोर ऽ आसञ्जुहोम्येषां बन्धानामवसर्जनाय.
यां त्वा जनो भूमिरिति प्रमन्दते निर्ऋतिं त्वाहं परिवेद विश्वतः.. (६४)

हे निर्ऋते! आप क्रूर स्वभाव वाली हैं. हम जन्ममरण के बंधन से मुक्त होने के लिए आप को आहुति भेंट करते हैं. भले ही लोग आप को भूमि कहते हैं, पर वे आप को सब ओर से सर्वज्ञ मानते हैं. (६४)

यं ते देवी निर्ऋतिराबबन्ध पाशं ग्रीवास्वविचृत्यम्.
तं ते विष्याम्यायुषो न मध्यादथैतं पितुमद्धि प्रसूतः.
नमो भूत्यै येदं चकार.. (६५)

निर्ऋत देवी उन बंधनों को हटाती हैं जिन पाशों ने आप की गरदन को जकड़ रखा था, आप उन बंधनों से छूटिए. आप पोषक अन्न को ग्रहण कीजिए. आप हमें धन दीजिए. देवी को हमारा नमन. (६५)

निवेशनः सङ्गमनो वसूनां विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः.
देव ऽ इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्.. (६६)

हे अग्नि! आप वासदाता, धनदाता, रूपवान और अभीष्ट फलदाता हैं. आप सविता देव जैसे प्रकाशवान हैं. सत्य रूपी धर्म वाले हैं. युद्ध में इंद्र देव की भांति स्थिर रहने वाले हैं. (६६)

सीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक्. धीरा देवेषु सुम्नया.. (६७)

आप कवि व धीर हैं. देवों के अच्छे मन के लिए आप हल को बैल के जोड़े के साथ जोतते हैं. (६७)

युनक्त सीरा वि युगा तनुध्वं कृते योनौ वपतेह बीजम्.
गिरा च श्रुष्टिः सभरा असन्नो नेदीय ऽ इत्सृण्यः पक्वमेयात्.. (६८)

हे किसानो! आप हल को जोड़िए. बैल के कंधों पर जुआ रखिए. आप खेत को जोतिए. आप बीज बोइए. सृष्टि में अच्छी फसल के लिए स्तुति कीजिए. अन्न भरभर कर तैयार हो. अन्न अच्छी तरह पके. (६८)

शुन ꣳ सु फाला वि कृषन्तु भूमि ꣳ शुनं कीनाशा ऽ अभि यन्तु वाहैः.
शुनासीरा हविषा तोशमाना सुपिप्पला ऽ ओषधीः कर्तनास्मे.. (६९)

भूमि को हल के फाल से अच्छी तरह जोतिए. किसान बैलों के साथ आराम से जाएं. हे वायु! हे सूर्य! आप हवि से प्रसन्न होइए. आप पृथ्वी को जल से सींचिए. आप ओषध उपजाइए. आप पृथ्वी को श्रेष्ठ फलों से पूरिए. (६९)

घृतेन सीता मधुना समंज्यतां विश्वैर्देवैरनुमता मरुद्भिः.
ऊर्जस्वती पयसा पिन्वमानास्मान्त्सीते पयसाभ्याववृत्स्व.. (७०)

विश्व और मरुद्गण हल के फाल को अनुमति देने की कृपा करें. उसे शहद से सींचने की कृपा करें. आप ऊर्जस्वी होइए. आप दूध से दिशाओं को और हमें घी व दूध से सींचिए. (७०)

लाङ्गलं पवीरवत्सुशेव ꣳ सोमपित्सरु.
तदुद्वपति गामविं प्रफर्व्यं च पीवरीं प्रस्थावद्रथवाहणम्.. (७१)

हल फाल युक्त हैं. पृथ्वी को खोदते हैं. सोम के रक्षक और कल्याणकारी हैं. कृषि उत्पादन के साथ ही भेड़, बकरी पुष्ट, गौएं रथ वहन करने वाले उत्तम घोड़े प्रदान करते हैं. (७१)

कामं कामदुघे धुक्ष्व मित्राय वरुणाय च.
इन्द्रायाश्विभ्यां पूष्णे प्रजाभ्य ऽ ओषधीभ्यः.. (७२)

हल सभी कामनाओं का दोहन करने वाले हैं. मित्र देव और वरुण देव के लिए इंद्र देव तथा अश्विनी देव के लिए पूषा देव एवं प्रजागण के लिए ओषधियां उपलब्ध कराने वाले हैं. (७२)

विमुच्यध्वमघ्न्या देवयाना ऽ अगन्म तमसस्पारमस्य. ज्योतिरापाम.. (७३)

मनुष्य अवध्य और यज्ञ के द्वारा देव मार्ग पर ले जाते हैं. आप संसार के पार ले जाने वाले हैं. हम ईश्वर की कृपा से ज्योति को प्राप्त करें. (७३)

सजूरब्दो अयवोभिः सजूरुषा ऽ अरुणीभिः.
सजोषसावश्विना द ꣳ सोभिः सजूः सूर ऽ एतशेन सजूर्वैश्वानर ऽ इडया घृतेन स्वाहा.. (७४)

महीने, दिन और वर्ष से प्रेम रखने वाले के लिए स्वाहा. लाल किरणों से प्रेम रखने वाली उषा देवी के लिए स्वाहा. चिकित्सकीय कार्यों से प्रेम रखने वाले अश्विनी देवों के लिए स्वाहा. घोड़ों से प्रेम रखने वाले सूर्य देवों के लिए स्वाहा. घी से प्रेम रखने वाले अग्नि देव के लिए स्वाहा. (७४)

या ऽ ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा.
मनै नु बभ्रूणामह ꣳ शतं धामानि सप्त च.. (७५)

पहले देवताओं के लिए तीन युग में ओषधियां उत्पन्न हुई हैं. हमें सैकड़ों धाम और सात धान्यों की क्षमता का ज्ञान है. ओषधियां पक कर भूरेपीले रंग की हो जाती हैं. (७५)

शतं वो अम्ब धामानि सहस्रमुत वो रुहः.
अधा शतक्रत्वो यूयमिमं मे अगदं कृत.. (७६)

ओषधियों के सैकड़ों नाम हैं. मां के समान गुण युक्त हैं. उन के सैकड़ों धाम हैं. वे सैकड़ों यज्ञ कराने वाली हैं. आप हमारे अंगों को पुष्ट करने की कृपा कीजिए. (७६)

ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः.
अश्वा ऽ इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः.. (७७)

ओषधियां पुष्पवती हैं. फल उपजाने वाले गुणों से युक्त हैं. ओषधियां हमें आनंद प्रदान करने वाली और घोड़े की तरह वेगवती हैं. रुकावटों (बीमारियों) को तेजी से दूर (नष्ट) करने की कृपा करें. (७७)

ओषधीरिति मातरस्तद्वो देवीरुप ब्रुवे.
सनेयमश्वं गां वास ऽ आत्मानं तव पूरुष.. (७८)

ओषधियां मातापिता के समान और दिव्य गुणों से संपन्न हैं. हम उन के गुणों के बारे में कहते रहते हैं. हे यज्ञ पुरुष! आप से प्राप्त घोड़े, गाय और आत्मिक सुखों का उपभोग करें. (७८)

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता.
गोभाज ऽ इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्.. (७९)

ओषधियों का निवास पीपल और पत्तों में है. आप गो भाजन बनिए. आप आकाश का सेवन कीजिए. आप वर्षा करिए. आप यजमान को अन्नधन संपन्न बनाइए. (७९)

यत्रौषधी: समग्मत राजान: समिताविव.
विप्र: स ऽ उच्यते भिषग्रक्षोहामीवचातन:.. (८०)

जैसे राजा राक्षसों पर विजय पाने के लिए युद्ध में जाते हैं, वैसे ही ओषधियां रोगी और रोग के पास जाती हैं. रोगनाशक होने के ही कारण उन्हें वैद्य और विप्र कहा जाता है. (८०)

अश्वावती ꣳ सोमावतीमूर्जयन्तीमुदोजसम्.
आवित्सि सर्वा ऽ ओषधीरस्मा ऽ अरिष्टतातये.. (८१)

अनिष्ट का निवारण करने के लिए अश्ववती और सोमवती ऊर्जा से हम परिचित हैं. यह ऊर्जा ओजस्विता की पोषक है. (८१)

उच्छुष्मा ऽ ओषधीनां गावो गोष्ठादिवेरते.
धन ꣳ सनिष्यन्तीनामात्मानं तव पूरुष.. (८२)

जैसे गोशाला से गाएं जंगल में जाती हैं, वैसे ही यज्ञ का धुआं वायुमंडल में जाता है. अग्नि के शरीर से निकलती हुई लपट से उन की शक्ति और सामर्थ्य प्रकट होती है. (८२)

इष्कृतिर्नाम वो माताथो यूय ꣳ स्थ निष्कृती:.
सीरा: पतत्रिणी स्थन यदामयति निष्कृथ.. (८३)

आप रोग निवारक हैं. आप माता जैसी हैं. आप विकारनाशक हैं. आप अन्न की भांति मनुष्य को शक्तिमान बनाने की कृपा करें. (८३)

अति विश्वा: परिष्ठा स्तेन ऽ इव व्रजमक्रमु:.
ओषधी: प्राचुच्यवुर्यत्किं च तन्वो रप:.. (८४)

ओषधियां रोग पर वैसे ही आक्रमण करती हैं, जैसे चोर गायों के बाड़े पर आक्रमण करते हैं. ओषधियां शरीर के समस्त रोगों और विकारों को नष्ट करती हैं. (८४)

यदिमा वाजयन्नहमोषधीर्हस्त ऽ आदधे.
आत्मा यक्ष्मस्य नश्यति पुरा जीवगृभो यथा.. (८५)

जैसे वधगृह में ले जाया जा रहा प्राणी वहां पहुंचने से पहले ही अपने को मरा हुआ मान लेता है, वैसे ही इन शक्तिशाली ओषधियों को लेने से पहले हम जब हाथ में रखते हैं, तो राजयक्ष्मा जैसे भीषण रोग भी भाग जाते हैं. (८५)

यस्यौषधीः प्रसर्पथाङ्गमङ्गं परुष्परुः.
ततो यक्ष्मं वि बाधध्व ऽ उग्रो मध्यमशीरिव.. (८६)

जब ओषधि कठोर शरीर के अंगप्रत्यंग में पसरती (फैलती) है तो यक्ष्मा आदि भयंकर रोगों को भी पूरी तरह समाप्त कर देती है. (८६)

साकं यक्ष्म प्र पत चाषेण किकिदीविना.
साकं वातस्य ध्राज्या साकं नश्य निहाकया.. (८७)

ओषधि लेने के साथ ही यक्ष्मा रोग दूर हो जाता है. प्राणवायु की तरह ओषधि के शरीर में व्याप्त होने के साथ ही शेष रोग भी नष्ट हो जाता है. (८७)

अन्या वो अन्यामवत्वन्यान्यस्या ऽ उपावत.
ताः सर्वाः संविदाना ऽ इदं मे प्रावता वचः.. (८८)

हे ओषधियो! आप एक दूसरे के प्रभाव को बढ़ाने की कृपा कीजिए. सभी ओषधियां परस्पर सहयोग और हमारे इन वचनों को सुनने की कृपा करें. (८८)

याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः.
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः.. (८९)

फल वाली, फलहीन, पुष्पहीन, पुष्पवती, बहुत उत्पन्न होने वाली ओषधियां हमें रोगों से मुक्त कराने की कृपा करें. (८९)

मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादुत.
अथो यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देवकिल्बिषात्.. (९०)

हे ओषधियो! आप हमें कुपथ्य और दूषित जल से होने वाले विकारों से मुक्त कीजिए. आप हमें छहों अनुशासन न पालने से उत्पन्न विकारों से भी मुक्त करने की कृपा कीजिए. (९०)

अवपतन्तीरवदन्दिव ऽ ओषधयस्परि.
यं जीवमश्नवामहै न स रिष्याति पूरुषः.. (९१)

स्वर्गलोक से ओषधियां पृथ्वीलोक को प्राप्त होती हैं. जो जीव इन का ठीक से सेवन करता है, वह कभी समय से पहले मरता नहीं है. (९१)

या ऽ ओषधीः सोमराज्ञीर्बह्वीः शतविचक्षणाः.
तासामसि त्वमुत्तमारं कामाय श ৺ हृदे.. (९२)

ओषधि सोम की रानी व बहुगुणा है. वह सैकड़ों विलक्षण गुणों वाली है. वे ओषधियां अभीष्ट सुख देने वाली व हृदय को शक्ति देने में समर्थ हैं. (९२)

या ऽ ओषधीः सोमराज्ञीर्विष्ठिताः पृथिवीमनु.
बृहस्पतिप्रसूता ऽ अस्यै संदत्त वीर्यम्.. (९३)

जो ओषधि सोम की रानी है, वह बहुगुणा है. सैकड़ों विलक्षण गुणों वाली है. ओषधियां अभीष्ट सुख देने वाली हैं. हृदय को शक्ति देने में समर्थ हैं. ओषधियां पुरुष को वीर्यवान बनाने की कृपा करें. (९३)

याश्चेदमुपशृण्वन्ति याश्च दूरं परागताः.
सर्वाः संगत्य वीरुधोस्यै संदत्त वीर्यम्.. (९४)

जो ओषधियां पास हैं, जो दूर हैं, जो विभिन्न रूपों में उगी हुई हैं, वे सभी हमारी प्रार्थनाएं सुनती हैं. सभी ओषधियां साथ मिल कर हमें वीर्य (शक्ति) प्रदान करने की कृपा करें. (९४)

मा वो रिषत् खनिता यस्मै चाहं खनामि वः.
द्विपाच्चतुष्पादस्माक ৺ सर्वमस्त्वनातुरम्.. (९५)

हे ओषधियो! जब हम रोग के उपचार के लिए आप को खोदते हैं तो आप की कृपा से खनन दोष से मुक्त हों. दोपाए, चौपाए और हमारे सभी लोग आप की कृपा से रोग मुक्त हो जाएं. (९५)

ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा.
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त ৺ राजन् पारयामसि.. (९६)

ओषधियां अपने स्वामी सोम राजा के समान ही कहती हैं—राजन्! हम जिसे ब्राह्मण बना देती हैं, वह पार हो जाता है. (९६)

नाशयित्री बलासस्यार्शस ऽ उपचितामसि.
अथो शतस्य यक्ष्माणां पाकारोरसि नाशनी.. (९७)

ओषधियां बलनाशक व रोगों का भी नाश करने वाली हैं. ओषधियां मस्से जैसे रोगों का भी उपचार करने वाली हैं. ओषधियां यक्ष्मा जैसे सैकड़ों रोगों व पके हुए फोड़े का भी नाश करने वाली हैं. (९७)

त्वां गन्धर्वा ऽ अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः.
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत.. (९८)

गंधर्वों, इंद्र देव व बृहस्पति देव ने ओषधियों का खनन किया. राजा सोम ने ओषधियों का खनन किया. वे राजा और विद्वान् हैं. उन्होंने यक्ष्मा रोग से मुक्त किया. (९८)

सहस्व मे अरातीः सहस्व पृतनायतः.
सहस्व सर्वं पाप्मान ꣳ सहमानास्योषधे.. (९९)

हे ओषधियो! आप शरीर के सभी शत्रुओं को दूर करने में समर्थ हैं. उन्हें दूर करने की कृपा कीजिए. हे ओषधियो! आप अपनी सामर्थ्य से हमें सभी कष्टों से मुक्त कराने की कृपा कीजिए. (९९)

दीर्घायुस्त ऽ ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्.
अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्.. (१००)

हे ओषधि! आप का खनन करने वाले दीर्घायु हों. मैं भी आप का खनन करता हूं. मैं भी दीर्घायु होऊं. आप भी दीर्घायु होने की कृपा करें. सैकड़ों अंकुरों से मुक्त होने की कृपा करें. (१००)

त्वमुत्तमास्योषधे तव वृक्षा ऽ उपस्तयः.
उपस्तिरस्तु सोस्माकं यो अस्माँ २ अभिदासति.. (१०१)

हे ओषधि! आप उत्तम हैं. आप के समीप वाले वृक्ष आप के लिए कल्याणकारी हों, जो हमारे प्रति दुर्भावनामय हों, वे भी आप की कृपा से हमारे अनुकूल हो जाएं. (१०१)

मा मा हि ꣳ सीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिव ꣳ सत्यधर्मा व्यानट्.
यश्चापश्चन्द्राः प्रथमो जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (१०२)

जो पृथ्वी के जन्मदाता हैं, जो स्वर्गलोक के रचयिता हैं, जो आदिपुरुष हैं, जो सत्यधर्मा हैं, हम उन के प्रति कभी भी विपरीत न हों. हम कभी भी उन के प्रतिकूल न रहें. जो प्रथम जन्मा है, उस के अलावा हम अन्य किस देव को अपनी आहुति अर्पित करें. (१०२)

अभ्यावर्त्तस्व पृथिवि यज्ञेन पयसा सह. वपां ते अग्निरिषितो अरोहत्.. (१०३)

हे पृथ्वी! यज्ञ से होने वाली बरसात के साथ आप हमारे अनुकूल होने की कृपा कीजिए. आप अग्नि पर आरोहण करने की कृपा कीजिए. (१०३)

अग्ने यत्ते शुक्रं यच्चन्द्रं यत्पूतं यच्च यज्ञियम्. तद्देवेभ्यो भरामसि.. (१०४)

हे अग्नि! आप की जो ज्वाला चमकीली और चंद्रमा जैसी है, आप की जो ज्वाला पवित्र है और यज्ञ से संबंधित है, हम उन्हें आहुति अर्पित करते हैं. (१०४)

इषमूर्जमहमित आदमृतस्य योनिं महिषस्य धाराम्.
आ मा गोषु विशत्वा तनूषु जहामि सेदिमनिराममीवाम्.. (१०५)

अग्नि ऊर्जस्वी, अमरता के मूल व महान् इच्छाएं पूरी करने वाले हैं. हम अग्नि को आमंत्रित करते हैं. वे गायों में और हमारे शरीर में प्रवेश करने की कृपा करें. उन की कृपा से हम निरोगी हो जाएं. (१०५)

अग्ने तव श्रवो वयो महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो.
बृहद्भानो शवसा वाजमुक्थ्यं दधासि दाशुषे कवे.. (१०६)

हे अग्नि! आप प्रसिद्ध धनवान व त्रिकालज्ञ हैं. आप का धुआं यज्ञ होने की सूचना देता हुआ स्वर्गलोक तक जाता है. आप यमजान को अन्नधन प्रदान करते हैं. (१०६)

पावकवर्चाः शुक्रवर्चा ऽ अनूनवर्चा ऽ उदियर्षि भानुना.
पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पृणक्षि रोदसी उभे.. (१०७)

हे अग्नि! आप पवित्र और अत्यधिक वर्चस्व वाले हैं. आप सूर्य रूप में उदय होते हैं. जैसे मातापिता बेटे का पालनपोषण करते हैं, वैसे ही आप स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक दोनों लोकों का पालन करते हैं. (१०७)

ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर्मन्दस्व धीतिभिर्हितः.
त्वे इषः सन्दधुर्भूरिवर्पसश्चित्रोतयो वामजाताः.. (१०८)

हे अग्नि! आप ऊर्जस्वी, सर्वज्ञ हैं. हम अच्छी प्रशंसा से आप को आनंदित करते हैं. आप सब का हित धारिए. यजमान रक्षा साधनों से सुरक्षित और श्रेष्ठ कुल में जन्म लेने वाले हैं. वे आप को अन्नमयी आहुति भेंट करते हैं. (१०८)

इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिरस्मे रायो अमर्त्य.
स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पृणक्षि सानसिं क्रतुम्.. (१०९)

हे अग्नि! आप अविनाशी हैं. यजमान सर्वप्रथम आप को प्रज्वलित करते हैं. आप यजमानों को धन प्रदान कीजिए. आप अपने सुंदर शरीर से शोभित होते हैं. आप यज्ञ में सारी आकांक्षाएं पूर्ण करते हैं. (१०९)

इष्कर्त्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्त ꣳ राधसो महः.
रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसि ꣳ रयिम्.. (११०)

हे अग्नि! आप यज्ञ के कर्ताधर्ता, श्रेष्ठ चिंतन वाले हैं. आप यजमान को महान्

धन प्रदान करते हैं. उस को सौभाग्यशाली और महान् महिमावान बनाते हैं. आप हमारे लिए भौतिक और आध्यात्मिक वैभव धारण करते हैं. (११०)

ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतमग्नि ँ सुम्नाय दधिरे पुरो जना:.
श्रुत्कर्ण ँ सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा.. (१११)

हे अग्नि! आप सत्यवान, महिमाशाली व समस्त विश्व के लिए दर्शनीय हैं. हम नगरवासी अच्छे मन के लिए आप को धारण करते हैं. आप प्रसिद्ध और प्रथम वंदनीय हैं. मनुष्य युगयुग से दिव्य गुणों वाले आप का गुणगान करते हैं. (१११)

आ प्यायस्व समेतु ते विश्वत: सोम वृष्ण्यम्. भवा वाजस्य सङ्गथे.. (११२)

हे सोम! विश्व की तेजस्विता आप को प्रसन्न करे. आप वृद्धि को प्राप्त करने की कृपा करें. आप अन्न की संगति के लिए हमारे पास पधारने की कृपा करें. (११२)

सन्ते पया ँ सि समु यन्तु वाजा: सं वृष्ण्यान्यभिमातिषाह:.
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवा ँ स्युत्तमानि धिष्व.. (११३)

हे सोम! आप पोषक रस और अन्न बरसाने की कृपा करें. आप अमृत से तृप्त कीजिए. आप स्वर्गलोक में विख्यात हैं. आप चिरकाल तक स्थिर होने की कृपा कीजिए. (११३)

आप्यायस्व मदिन्तम सोम विश्वेभिर ँ शुभि:.
भवा न: सप्रथस्तम: सखा वृधे.. (११४)

हे सोम! आप आनंददाता हैं. आप सर्वत्र प्रसन्न होने की कृपा कीजिए. आप शुभ होइए. आप विख्यात और हमारे मित्र हैं. आप बढ़ोतरी पाइए. (११४)

आ ते वत्सो मनो यमत्परमाच्चित्सधस्थात्. अग्ने त्वाङ्कामया गिरा.. (११५)

हे अग्नि! हम आप के पुत्र हैं. आप परम स्थान पर विराजते हैं. हम श्रेष्ठ स्तोत्रों से आप की वाणीमय वंदना करते हैं. (११५)

तुभ्यन्ता ऽ अङ्गिरस्तम विश्वा: सुक्षितय: पृथक्. अग्ने कामाय येमिरे.. (११६)

हे अग्नि! आप श्रेष्ठ अंगों वाले हैं. आप के प्रति पृथ्वी की श्रेष्ठ प्रार्थनाएं अलग से समर्पित की जाती हैं. हम अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए आप की उपासना करते हैं. (११६)

अग्नि: प्रियेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य. सम्राडेको वि राजति.. (११७)

हे अग्नि! आप अपने प्रिय धामों पर स्वेच्छा से सुशोभित हो रहे हैं. आप वर्तमान और भविष्य की सब मनोकामनाओं के पूरक और सम्राट् हैं. आप दीप्तिमान हो कर शोभित हो रहे हैं. (११७)

तेरहवां अध्याय

मयि गृहणाम्यग्रे अग्नि ꣳ रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय.
मामु देवता: सचन्ताम्.. (१)

हे अग्नि! आप धन के उत्पादक, श्रेष्ठ संतति वाले और श्रेष्ठ वीर्य वाले हैं. हम यह सब पाने के लिए आप को आहुतियों से सींचते हैं. आप हमें ग्रहण करने की (स्वीकारने की) कृपा कीजिए. (१)

अपां पृष्ठमसि योनिरग्नेः समुद्रमभितः पिन्वमानम्.
वर्धमानो महाँ २ आ च पुष्करे दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथस्व.. (२)

आप जलधारी, अग्नि का मूल स्थान और समुद्र के साथ वृद्धि पाते हैं. आप महान् हैं. आप पृथ्वी की तरह विस्तृत हों. आप स्वर्गलोक की दिव्यता प्राप्त कीजिए. (२)

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन ऽ आवः.
स बुध्न्या ऽ उपमा ऽ अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः.. (३)

सर्वप्रथम ब्रह्मा उत्पन्न हुआ. उस के बाद शक्ति व्यापक हुई. उस शक्ति ने व्यक्त जगत् को प्रकाशित किया. उस शक्ति ने अव्यक्त जगत् को प्रकाशित किया. सत् इस की विष्ठा, मल और असत् इस का मूल स्थान हुआ. (३)

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्.
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (४)

सर्वप्रथम हिरण्यगर्भ में परम तत्त्व रहा. उसी से सृष्टि उपजी. वे ही एकमात्र पालक थे. उन्होंने पृथ्वी को धारण किया. वही स्वर्गलोक को धारण करते हैं. उन के अलावा हम अन्य किस देव के लिए हवि का विधान करें. (४)

द्रप्सश्चस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च योनिमनु यश्च: पूर्वः.
समानं योनिमनु सञ्चरन्तं द्रप्सं जुहोम्यनु सप्त होत्राः.. (५)

प्रारंभ से ही 'द्रप्स' रस (एक दिव्य रस) देवता को तृप्ति प्रदान करते हैं और पृथ्वी को बढ़ाते हैं. स्वर्गलोक की बढ़ोतरी करते हैं. मूल स्थान को सींचते हैं. द्रप्स

समान मूल स्थान में संचरण करते हैं. सात होता द्रप्स को आहुति प्रदान करते हैं. (५)

नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु.
ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः.. (६)

जो सर्प पृथ्वी का अनुकरण करते हैं, उन्हें नमन. जो सर्प अंतरिक्ष और स्वर्ग का अनुकरण करते हैं, उन्हें भी नमन. (६)

या ऽ इषवो यातुधानानां ये वा वनस्पती ँ१ रनु.
ये वावटेषु शेरते तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः.. (७)

जो राक्षसों के बाण रूप सर्प हैं, जो वनस्पतियों का अनुकरण करने वाले सर्प हैं, उन्हें नमन. जो गड्ढों और निचले भागों में रहते हैं, उन सर्पों को भी नमन. (७)

ये वामी रोचने दिवो ये वा सूर्यस्य रश्मिषु.
येषामप्सु सदस्कृतं तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः.. (८)

जो चमकते हुए स्वर्गलोक में वास करते हैं, जो सूर्य की किरणों में वास करते हैं, जिन का जल के भीतर घर है, उन सर्पों को नमन. (८)

कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ २ इभेन.
तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानो ऽ स्तासि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः.. (९)

हे अग्नि! आप दुष्टों को कष्ट दीजिए. आप राजा की तरह हाथी पर सवार हो कर शत्रुओं पर आक्रमण कीजिए. आप राक्षसों को तपाइए. विस्तृत जाल की तरह आप अपनी सामर्थ्य का जाल और अधिक पसारिए. (९)

तव भ्रमास ऽ आशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः.
तपू ँ ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो वि सृज विष्वगुल्काः.. (१०)

हे अग्नि! आप भ्रमणशील हैं. आप शीघ्र अपनी चमकती हुई लपटों से राक्षसों को भस्म कर दीजिए. हमारी आहुति से आप की लपटें (ऊंचीऊंची) बढ़ गई हैं. आप अपनी उन लपटों से राक्षसों का नाश कर दीजिए. (१०)

प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या ऽ अदब्धः.
यो नो दूरे अघश ँ सो यो अन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरादधर्षीत्.. (११)

हे अग्नि! कोई भी हमें तकलीफ न पहुंचा सके. कोई भी हमें व्यथा न पहुंचा सके. आप हमारे दूर या पास जहां कहीं भी कोई भी दुश्मन हो, उन्हें अपने पाश में बांधने की कृपा कीजिए. (११)

उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ २ ओषतात्तिमहेते.
यो नो अराति ँ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्.. (१२)

हे अग्नि! ऊपर की ओर स्थित रहिए. आप अपने तन का विस्तार कीजिए. आप हमारे अमित्रों को भस्मीभूत कर दीजिए. जो हमारे नीच शत्रु हैं, उन्हें आप सूखी समिधा की भांति जला कर राख कर दीजिए. (१२)

ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने.
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून्.
अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि.. (१३)

हे अग्नि! आप ऊर्ध्वगामी होइए. आप पूरी तरह हमारे शत्रुओं का नाश कीजिए. आप दिव्य कार्यों को खोजिए. (१३)

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम्.
अपा ᳪ रेता ᳪ सि जिन्वति.
इन्द्रस्य त्वौजसा सादयामि.. (१४)

हे अग्नि! आप मूर्धन्य हैं. आप स्वर्गलोक के सब से ऊपरी भाग में प्रतिष्ठित हैं. आप पृथ्वीपालक और जल की पौष्टिकता बढ़ाने वाले हैं. आप को इंद्र देव के ओज से हम यजमान प्रतिष्ठित करते हैं. (१४)

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः.
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्.. (१५)

हे अग्नि! आप पृथ्वी और यज्ञ के राजा, नेता व लोक कल्याण को नियुक्त करने वाले हैं. आप स्वर्गलोक में उच्च स्थान को धारते हैं. आप हव्य वाहक हैं. आप अपनी जिह्वा से हवि को ग्रहण करते हैं. (१५)

ध्रुवासि धरुणास्तृता विश्वकर्मणा.
मा त्वा समुद्र ऽ उद्वधीन्मा सुपर्णो ऽ व्यथमाना पृथिवीं दृ ᳪ ह.. (१६)

हे अग्नि! आप ध्रुव, धारक हैं. आप विश्वकर्मा से विस्तार पाते हैं. समुद्र आप को नष्ट न करे. वायु अवरोधक (रुकावट) न बने. आप व्यथित मत होइए. आप पृथ्वी को दृढ़ता प्रदान कीजिए. (१६)

प्रजापतिष्ट्वा सादयत्वपां पृष्ठे समुद्रस्येमन्.
व्यचस्वतीं प्रथस्वतीं प्रथस्व पृथिव्यसि.. (१७)

प्रजापति आप को समुद्र की पीठ पर स्थापित करें. आप जल में विस्तृत होने की कृपा कीजिए. आप पृथ्वी की ही तरह विस्तृत होइए. (१७)

भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री.
पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ᳪ ह पृथिवीं मा हि ᳪ सीः.. (१८)

आप भूमि जैसी सुखदायी और विश्व को धारण करने वाली अदिति हैं. आप सारे विश्व की धारिका हैं. आप पृथ्वी पर अपनी कृपा कीजिए. आप उसे दृढ़ बनाइए. आप उस पर हिंसा मत होने दीजिए. (१८)

विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय.
अग्निष्ट्वाभि पातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद.. (१९)

हे देवी! समस्त प्राण, अपान, व्यान व उदान शरीरस्थ (वायु के भेद) की प्रतिष्ठा के लिए आप की स्थापना की जाती है. अग्नि आप की रक्षा करें. शीतल शांतिमय साधनों से आप का कल्याण हो. दिव्यता से आप अंगिरा के समान ध्रुव हो कर विराजने की कृपा कीजिए. (१९)

काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि.
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च.. (२०)

हे दूर्वा! आप सभी जगह भलीभांति उग जाती हैं. अपनी तरह हमारी भी संतान और धनवृद्धि की कृपा कीजिए. (२०)

या शतेन प्रतनोषि सहस्रेण विरोहसि.
तस्यास्ते देवीष्टके विधेम हविषा वयम्.. (२१)

हे दूर्वा! हम आप के लिए वैसी ही हवि का विधान करते हैं, जिस से आप सैकड़ों हजारों की संख्या में उग कर बढ़ें. (२१)

यास्ते अग्ने सूर्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः.
ताभिर्नो अद्य सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि.. (२२)

हे अग्नि! सूर्य देव की जो चमकीली किरणें स्वर्गलोक का विस्तार करती हैं, आज उन किरणों से मनुष्यों का विस्तार हो. (२२)

या वो देवाः सूर्ये रुचो गोष्वश्वेषु या रुचः.
इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी रुचं नो धत्त बृहस्पते.. (२३)

हे इंद्र! हे अग्नि! हे बृहस्पति! आप की जो कांति सूर्यरूप में शोभित है, जो गायों, घोड़ों में स्थित है, आप वह सारी कांति हमारे लिए धारण करने की कृपा कीजिए. (२३)

विराड्ज्योतिरधारयत्स्वराड्ज्योतिरधारयत्.
प्रजापतिष्ट्वा सादयतु पृष्ठे पृथिव्या ज्योतिष्मतीम्.
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ.
अग्निष्टेधिपतिस्तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद.. (२४)

विराट् शक्ति ने ज्योति को धारण किया. स्वयं ज्योतिर्मय ने ज्योति को धारण

किया. प्रजापति ज्योतिर्मयी पृथ्वी के पृष्ठ भाग पर विराजने की कृपा करें. वे आप को प्राण, अपान, व्यान, धान सारे विश्व को प्रभूत ज्योति प्रदान करने की कृपा करें. अग्नि आप के अधिपति हैं. आप देवताओं के साथ स्थिर होने की कृपा कीजिए. आप अंगिरा के समान ध्रुव हो कर विराजिए. (२४)

मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू अग्नेरन्तःश्लेषोसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ऽ ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ् मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः.
ये अग्नयः समनसोन्तरा द्यावापृथिवी इमे.
वासन्तिकावृतू अभिकल्पमाना ऽ इन्द्रमिव देवा ऽ अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्.. (२५)

चैत और वैशाख महीने वसंत ऋतु से संबंधित हैं. दोनों ऋतुएं अग्नि को अंदर से जोड़े रखने की कृपा करें. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक आपस में सहयोग करने की कृपा करें. ओषधियां हमारे लिए फलीभूत होने की कृपा करें. समान व्रत वाली अग्नि बड़ेबड़े कामों में सहायता करने की कृपा करें. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक के बीच जो ये अग्नियां हैं, वे समान मन वाली हों. अग्नियां वसंत ऋतु से आवृत हों. वे फलीभूत होने की कृपा करें. सभी देव इंद्र का आश्रय ग्रहण करें. अग्नि देवता के साथ अंगिरा की तरह ध्रुव हो कर विराजिए. (२५)

अषाढासि सहमाना सहस्वारातीः सहस्व पृतनायतः.
सहस्रवीर्यासि सा मा जिन्व.. (२६)

आप अषाढ़ व सहनशील हैं. आप शत्रुओं को पराजित कीजिए. आप सहस्र वीर्य वाले हैं. आप हमें जिताने की कृपा कीजिए. (२६)

मधु वाता ऽ ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः. माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः.. (२७)

वायु मधुरता से बहने की कृपा करे. नदियां मधुरतापूर्वक रहें. सारी ओषधियां मधुरतामय होने की कृपा करें. (२७)

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः. मधु द्यौरस्तु नः पिता.. (२८)

रात्रि मधुर हो. उषा मधुर हो. पृथ्वी मधुमती हो. रज मधुर हो. हमारे पिता स्वर्गलोक मधुमय होने की कृपा करें. (२८)

मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः. माध्वीर्गावो भवन्तु नः.. (२९)

वनस्पतियां हमारे प्रति मधुमान हों. सूर्य हमारे प्रति मधुमान (कृपालु) हों. गाएं हमारे प्रति माधवी (मधुरतामय) होने की कृपा करें. (२९)

अपां गम्भन्त्सीद मा त्वा सूर्योभिताप्सीन्माग्निर्वैश्वानरः.
अच्छिन्नपत्राः प्रजा ऽ अनुवीक्षस्वानु त्वा दिव्या वृष्टिः सचताम्.. (३०)

(हे कूर्म!) आप जल के गर्भ में विराजिए. आप सूर्य के मंडल में विराजिए. सूर्य आप को न तपाए. वैश्वानर भी आप को संतप्त न करें. आप प्रजा का निरंतर निरीक्षण कीजिए. दिव्य दृष्टि सदैव आप को सचेत करती रहे. (३०)

त्रीन्त्समुद्रान्त्समसृपत् स्वर्गानपां पतिर्वृषभ ऽ इष्टकानाम्.
पुरीषं वसानः सुकृतस्य लोके तत्र गच्छ यत्र पूर्वे परेताः.. (३१)

आप ने तीनों लोकों के समुद्र को व्याप्त किया है. आप स्वर्ग के मालिक हैं. आप शक्तिमान हैं. आप इष्टकों (विश्व निर्माण में प्रयुक्त इकाइयों) में शक्ति भरने वाले हैं. आप पशुओं को बसाते हुए उसी लोक में जाइए, जहां अच्छे काम करने वाले पहले ही पहुंच चुके हैं. (३१)

मही द्यौः पृथिवी च न ऽ इमं यज्ञं मिमिक्षताम्. पिपृतां नो भरीमभिः.. (३२)

महान् पृथ्वी और स्वर्गलोक हमारे इस यज्ञ को अपनेअपने अंशों से पूरने की कृपा करें. भरणपोषण करने वाली सामग्रियां हमारी पिपासा शांत करें. (३२)

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे. इन्द्रस्य युज्यः सखा.. (३३)

विष्णु इंद्र देव से जुड़े हुए हैं. वे इंद्र देव के सखा हैं. विष्णु सभी कर्मों को देखते हैं और व्रतों का निर्माण करते हैं. (३३)

ध्रुवासि धरुणेतो जज्ञे प्रथममेभ्यो योनिभ्यो अधि जातवेदाः.
स गायत्र्या त्रिष्टुभानुष्टुभा च देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्.. (३४)

हे उखा! आप ध्रुव व धारक हैं. सर्वज्ञ अग्नि यज्ञ में सर्वप्रथम आप के यहां उत्पन्न हुए. अग्नि, गायत्री, त्रिष्टुप्, अनुष्टुप् आदि छंदों से देवताओं के लिए हवि वहन करने की कृपा करें. (३४)

इषे राये रमस्व सहसे द्युम्न ऽ ऊर्जे अपत्याय.
सम्राडसि स्वराडसि सारस्वतौ त्वोत्सौ प्रावताम्.. (३५)

हे उखा! आप सम्राट्, स्वयं प्रकाशित, सरस्वतीमय व पालन पोषणकर्ता हैं. आप अन्न, यश, साहस और ऊर्जा में रमण करते हैं. आप हमारे पुत्र पौत्रों को भी उस में रमण कराइए. (३५)

अग्ने युक्ष्वा हि ये तवाश्वासो देव साधवः. अरं वहन्ति मन्यवे.. (३६)

हे अग्नि! आप दिव्य गुणों वाले हैं. आप अपने घोड़े रथ में जोतिए. वे आप के रथ के अरों का वहन कर के शीघ्र आप को गंतव्य तक ले जाएं. (३६)

युक्ष्वा हि देवहूतमाँ २ अश्वाँ २ अग्ने रथीरिव. नि होता पूर्व्यः सदः.. (३७)

हे अग्नि! आप हमारे लिए देवताओं को आमंत्रित करने वाले हैं. आप अपने

रथ में घोड़े जोतिए. आप चिरकाल से हमारे होता हैं. आप यज्ञ स्थान में विराजिए. (३७)

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना ऽ अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः.
घृतस्य धारा ऽ अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्ये अग्नेः.. (३८)

सम्यक् रूप से प्रवाहित होने वाली सरिता के समान हमारे हृदय और मन से पवित्र वाणियां प्रवाहित होती हैं. यज्ञ की अग्नि स्वर्णिम प्रकाश वाली है. घी की धाराएं अग्नि के बीच बहा कर उसे स्वर्णिम बना देती हैं. (३८)

ऋचे त्वा रुचे त्वा भासे त्वा ज्योतिषे त्वा.
अभूदिदं विश्वस्य भुवनस्य वाजिनमग्नेर्वैश्वानरस्य च.. (३९)

आप गाए जाते हैं, प्रकाशित हैं, भासित व ज्योतिष हैं. आप की कृपा से सारे लोकों, वैश्वानर और बल को हम समझ सके हैं. (३९)

अग्निर्ज्योतिषा ज्योतिष्मान् रुक्मो वर्चसा वर्चस्वान्.
सहस्रदा ऽ असि सहस्राय त्वा.. (४०)

हे अग्नि! आप ज्योति से ज्योतिष्मान हैं. आप वर्चस्व से वर्चस्वी हैं. आप हजारों के लिए हजार वैभव देने वाले हैं. (४०)

आदित्यं गर्भं पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्.
परि वृङ्ग्धि हरसा माभि म ꣳ स्थाः शतायुषं कृणुहि चीयमानः.. (४१)

आप आदित्य के गर्भ को दूध से सींचिए. आप हजारों रूपों वाले हैं. आप अपने तेज से रोगों का नाश कीजिए. आप यजमान को शतायु और उसे अहंकार से मुक्त कीजिए. (४१)

वातस्य जूतिं वरुणस्य नाभिमश्वं जज्ञान ꣳ सरिरस्य मध्ये.
शिशुं नदीना ꣳ हरिमद्रिबुध्नमग्ने मा हि ꣳ सीः परमे व्योमन्.. (४२)

हे अग्नि! आप वायु के प्रिय, वरुण देव की नाभि, ज्ञान के अश्व और जल के बीच रहते हैं. आप नदियों के शिशु, हरे, जलमय व पर्वत पर चिह्न अंकित करने वाले हैं. आप परम व्योमवासी हैं. आप हिंसा मत कीजिए. (४२)

अजस्रमिन्दुमरुषं भुरण्युमग्निमीडे पूर्वचित्तिं नमोभिः.
स पर्वभिर्ऋतुशः कल्पमानो गां मा हि ꣳ सीरदितिं विराजम्.. (४३)

हे अग्नि! आप अजस्र, शांतिदायी, ऊर्जावान और ऋषियों द्वारा सेवित हैं. आप अन्न से भरणपोषण करने वाले हैं. हम पूर्व से ही मन से आप को नमन करते हैं. आप पर्वों और ऋतु के अनुसार फलते हैं. आप गौ के समान पोषण करते हैं. आप हिंसा मत कीजिए. आप विराजने की कृपा कीजिए. (४३)

वरूत्रीं त्वष्टुर्वरुणस्य नाभिमविं जज्ञाना ꣳ रजसः परस्मात्.
मही ꣳ साहस्रीमसुरस्य मायामग्ने मा हि ꣳ सीः परमे व्योमन्.. (४४)

हे अग्नि! आप विभिन्न रूपों का निर्माण करने वाले हैं. आप वरुण देव की नाभि हैं. आप उच्चलोक में उत्पन्न, महिमावान और परम व्योमवासी हैं. आप हजारों के कल्याणकारी हैं. आप किसी भी प्रकार की हिंसा न कीजिए. (४४)

यो अग्निरग्नेरध्यजायत शोकात्पृथिव्या ऽ उत वा दिवस्परि.
येन प्रजा विश्वकर्मा जजान तमग्ने हेडः परि ते वृणक्तु.. (४५)

हे अग्नि! आप पृथ्वी के शोक से उत्पन्न हुए. आप स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को प्रकाशित करते हैं. स्रष्टा ने आप से ही सृष्टि की रचना की. आप कभी हम पर क्रोध मत करिए. (४५)

चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः.
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ꣳ सूर्य ऽ आत्मा जगतस्तस्थुषश्च.. (४६)

हे अग्नि! मित्र देव और वरुण देव आप के नेत्ररूप हैं. आप अद्‌भुत शक्तिमान हैं. आप स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक और अंतरिक्षलोक को पूरी तरह प्रकाशित कीजिए. सूर्य जड़ और चेतन की आत्मा हैं. वे इसी रूप में उदित हुए हैं. (४६)

इमं मा हि ꣳ सीर्द्विपादं पशु ꣳ सहस्राक्षो मेधाय चीयमानः.
मयुं पशुं मेधमग्ने जुषस्व तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद.
मयुं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु.. (४७)

हे अग्नि! आप दोपायों और पशुओं के प्रति हिंसा न करें. आप हजारों नेत्रों वाले हैं. आप को यज्ञ के लिए प्रकट किया है. आप अन्न व पशुओं की बढ़ोतरी कीजिए. आप हमें वैभव दीजिए. हम सुखी जीवन यापन करें. आप का क्रोध, जो हम से द्वेष करते हैं, उन्हें पीड़ित करें. (४७)

इमं मा हि ꣳ सीरेकशफं पशुं कनिक्रदं वाजिनं वाजिनेषु.
गौरमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद.
गौरं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु.. (४८)

हे अग्नि! आप के घोड़े अत्यंत गतिशील हैं. वे हिनहिना कर अपनी स्फूर्ति दिखाते हैं. आप इन घोड़ों के प्रति हिंसक मत होइए. आप जंगली जानवरों को परेशान कीजिए. आप अपने ज्वालामय शरीर को बढ़ाइए. जो हम से प्रेम नहीं रखते, जो हम से द्वेष रखते हैं, आप का क्रोध उन्हें पीड़ित करे. (४८)

इम ꣳ सहस्र ꣳ शतधारमुत्सं व्यच्यमान ꣳ सरिरस्य मध्ये.
घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हि ꣳ सीः परमे व्योमन्.

गवयमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद.
गवयं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु.. (४९)

हे अग्नि! यह अदिति हजारों सैकड़ों धाराओं का मूल स्रोत है. शरीर के बीच में घी छोड़ने वाली है. घृत का दोहन करने वाली है. परम व्योम में स्थित है. आप अदिति के प्रति हिंसा न कीजिए. जंगली जानवरों की ओर आप को निर्देश दिया जाता है. आप अपने तन की बढ़ोतरी करते हुए उन के साथ विराजिए. जिन से हम द्वेष करते हैं, ऐसों के प्रति आप अपना क्रोध प्रकट कीजिए. (४९)

इममूर्णायुं वरुणस्य नाभिं त्वचं पशूनां द्विपदां चतुष्पदाम्.
त्वष्टुः प्रजानां प्रथमं जनित्रमग्ने मा हि ꣳ सीः परमे व्योमन्.
उष्ट्रमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद.
उष्ट्रं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु.. (५०)

हे अग्नि! आप सर्वप्रथम उत्पन्न हैं. आप वरुण देव की नाभि, पशुओं, दोपायों व चौपायों की त्वचा हैं. आप परम व्योम में स्थित हैं. आप हमारे प्रति हिंसक मत होइए. हम जंगली ऊंटों की ओर आप को निर्देश करते हैं. आप उन के साथ अपने तन की बढ़ोतरी कीजिए. आप उन ऊंटों के प्रति और जो हमारे प्रति द्वेष रखते हैं, उन के प्रति क्रोध कीजिए. (५०)

अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात्सो अपश्यज्जनितारमग्रे.
तेन देवा देवतामग्रमायँस्तेन रोहमायन्नुप मेध्यासः.
शरभमारण्यमनु ते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद.
शरभं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु.. (५१)

अग्नि ने अज (बकरा) को बनाया है. उसी से वह आगे देख सका है. उसी से देवता देवत्व और उसी मेघ से यजमान स्वर्ग को पाते हैं. आप जंगली शरभ (जानवर) का अनुकरण कीजिए. आप उस दिशा में बढ़िए. आप शरभ और जिन से हम द्वेष रखते हैं, उन पर क्रोध कीजिए. (५१)

त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄंः पाहि श्रृणुधी गिरः. रक्षा तोकमुतत्मना.. (५२)

हे अग्नि! आप युवा हैं. आप हमारी वाणीमय उपासनाओं को सुनिए. आप हमारी, यजमानों और हमारी पीढ़ियों की रक्षा कीजिए. (५२)

अपां त्वेमन्त्सादयाम्यपां त्वोद्मन्त्सादयाम्यपां त्वा भस्मन्त्सादयाम्यपां त्वा ज्योतिषि सादयाम्यपां त्वायने सादयाम्यर्णवे त्वा सदने सादयामि समुद्रे त्वा सदने सादयामि सरिरे त्वा सदने सादयाम्यपां त्वा क्षये सादयाम्यपां त्वा सधिषि सादयाम्यपां त्वा सदने सादयाम्यपां त्वा सधस्थे सादयाम्यपां त्वा योनौ सादयाम्यपां त्वा पुरीषे सादयाम्यपां त्वा पाथसि सादयामि. गायत्रेण त्वा छन्दसा सादयामि त्रैष्टुभेन त्वा

छन्दसा सादयामि जागतेन त्वा छन्दसा सादयाम्यानुष्टुभेन त्वा छन्दसा सादयामि पाङ्क्तेन त्वा छन्दसा सादयामि.. (५३)

हे (अपस्या नामक) इष्टके! जल को हम अलग स्थान पर प्रतिष्ठित करते हैं. जल को ओषधियों में प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को भस्म में प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को प्रकाश में प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को उस के घर समुद्र में प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को शरीर में प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को क्षय में प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को आप के घर में प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को आप के मूल स्थान में प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को नगर में प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को पथ में प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को गायत्री छंद से प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को त्रैष्टुभ् छंद से प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को जगती छंद से प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को अनुष्टुप् छंद से प्रतिष्ठित करते हैं. हम जल को पंक्ति छंद से प्रतिष्ठित करते हैं. (५३)

अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपा ꣳ शुरुपा ꣳ शोस्त्रिवृत् त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऽ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः.. (५४)

हे अग्नि! आप प्रथमोत्पन्न हैं. अतः प्राणों में स्थित हैं. प्राण भुवन अग्नि से उत्पन्न हैं. अतः प्राणों के रूप में स्थित हैं. प्राण भुवन से उत्पन्न होने से भौवायन कहे जाते हैं. वसंत ऋतु प्राण से उत्पन्न होती है. वसंत ऋतु से गायत्री उत्पन्न होती है. गायत्री से गायत्र साम उत्पन्न होता है. गायत्री से उपांशु उत्पन्न होता है. उपांशु से त्रिवृत्त, त्रिवृत्त से रथंतर. इन सब के प्रमुख वसिष्ठ ऋषि हैं. प्रजापति से लिए गए सहयोग से हम प्रजाओं के लिए प्राण ग्रहण करते हैं. (५४)

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वार ꣳ स्वारादन्तर्यामोन्तर्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशाद् बृहद् भरद्वाज ऽ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः.. (५५)

हम विश्वकर्मा को इस दक्षिण दिशा में प्रतिष्ठित करते हैं. मन विश्वकर्मा से उत्पन्न हुआ है. मन से ग्रीष्म दिशा उत्पन्न हुई. ग्रीष्म से त्रिष्टुप्, त्रिष्टुप् से स्वार साम तथा स्वार साम से अंतर्याम ग्रह उत्पन्न हुए. अंतर्याम से पंचदश सोम उत्पन्न हुए. पंचदश सोम से बृहत्साम उत्पन्न हुए. इन सब के प्रमुख भरद्वाज ऋषि हैं. प्रजापति से लिए गए सहयोग से हम प्रजाओं के लिए मन ग्रहण करते हैं. (५५)

अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऽ ऋक्सममृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः.. (५६)

हम विश्वव्यचा (सूर्य) को पश्चिम दिशा में प्रतिष्ठित करते हैं. उस से नेत्र उत्पन्न हुए. विश्वव्यचा से वर्षा ऋतु उत्पन्न हुई. वर्षा ऋतु से जगती छंद उत्पन्न हुए. उस से ऋक् व साम उत्पन्न हुए. ऋक् और साम से शुक्र ग्रह उत्पन्न हुए. शुक्र ग्रह से सप्तदश स्तोम उत्पन्न हुए. सप्तदश स्तोम से वैरूप साम का प्रादुर्भाव हुआ. इन सब के प्रमुख जमदग्नि ऋषि हैं. प्रजापति से लिए गए सहयोग से हम प्रजाओं के लिए नेत्र ग्रहण करते हैं. (५६)

इदमुत्तरात् स्वस्तस्य श्रोत्र ꣳ सौव ꣳ शरच्छ्रौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऽ ऐड मैडान्मन्थी मन्थिन ऽ एकवि ꣳ श ऽ एकवि ꣳ शाद्वैराजं विश्वामित्र ऽ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः.. (५७)

उत्तर दिशा में श्रोत्र प्रमुख साधन हैं. श्रोत्र से शरद की उत्पत्ति होती है. शरद से अनुष्टुप् छंद उत्पन्न हुआ. अनुष्टुप् से एडसाम की उत्पत्ति हुई. एडसाम से मंथी उत्पन्न हुआ. मंथी से एकविंश स्तोम की उत्पत्ति हुई. एकविंश से वैराज साम उत्पन्न हुआ. इन सब के प्रमुख विश्वामित्र ऋषि हैं. प्रजापति से लिए गए सहयोग से हम प्रजाओं के लिए श्रोत्र को ग्रहण करते हैं. (५७)

इयमुपरि मतिस्तस्यै वाङ्मात्या हेमन्तो वाच्यः पङ्क्तिर्हैमन्ती पङ्क्त्यै निधनवन्निधनवत ऽ आग्रयण ऽ आग्रयणात् त्रिणवत्रयस्त्रि ꣳ शौ त्रिणवत्रयस्त्रि ꣳ शाभ्या ꣳ शाक्वररैवते विश्वकर्म ऽ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया वाचं गृह्णामि प्रजाभ्यो लोकं ता ऽ इन्द्रम्.. (५८)

सब से ऊपर मति प्रतिष्ठित है. उसी का मति से मनन करते हुए इस की प्रतिष्ठा करते हैं. वाणी से हेमंत ऋतु उत्पन्न हुई. हेमंत से पंक्ति छंद की उत्पत्ति हुई. पंक्ति से निधनवत साम उत्पन्न हुआ. निधनवत साम से आग्रयण उत्पन्न हुआ आग्रयण से त्रिणव की उत्पत्ति हुई. आग्रयण से त्रयस्त्रिंश की उत्पत्ति हुई. त्रिणव और त्रयस्त्रिंश से शाक्वर और रैवत साम उत्पन्न हुए. इन सब के प्रमुख विश्वकर्मा ऋषि हैं. प्रजापति से लिए गए सहयोग से हम प्रजाओं के लिए वाणी को ग्रहण करते हैं. प्रजा के लिए स्तोत्र गान करते हुए हम इंद्र देव का आह्वान करते हैं. (५८)

चौदहवां अध्याय

ध्रुवक्षितिर्ध्रुवयोनिर्ध्रुवासि ध्रुवं योनिमासीद साधुया.
उख्यस्य केतुं प्रथमं जुषाणाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा.. (१)

हे इष्टके! आप ध्रुव, स्थिर स्वभाव वाली, स्थिर मूल स्थान वाली और ध्रुव स्वभाव वाली हैं. आप उखा की पताका का सेवन और उसे स्थिर कीजिए. आप स्थिर श्रेष्ठ स्थान को प्राप्त होइए. अश्विनी देव और देवों के अध्वर्यु आप को इस उत्तम स्थल में प्रतिष्ठित करें. (१)

कुलायिनी घृतवती पुरन्धिः स्योने सीद सदने पृथिव्याः.
अभि त्वा रुद्रा वसवो गृणन्त्विमा ब्रह्म पीपिहि सौभगायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा.. (२)

हे इष्टके! आप कुलवान व घी से युक्त हैं. आप निवास योग्य पृथ्वी के घर में निवास कीजिए. रुद्रगण और वसुगण आप की उपासना करते हैं. आप गणनीय हैं. आप अपने सौभाग्य की बढ़ोतरी हेतु सुरक्षित करें. दोनों अश्विनीकुमार अध्वर्यु के रूप में आप को इस यज्ञ स्थल पर विराजमान कराएं. (२)

स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह सीद देवाना ँ सुम्ने बृहते रणाय.
पितेवैधि सूनव ऽ आ सुशेवा स्वावेशा तन्वा सं विशस्वाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा.. (३)

हे इष्टके! आप शक्ति की रक्षा करती हैं. आप देवताओं के अच्छे मन के लिए रण में प्रतिष्ठित होइए. आप जैसे पिता पुत्र के सुखी जीवन की कामना करते हैं, प्रयास करते हैं, वैसे ही आप हमारे लिए कीजिए. दोनों अश्विनीकुमार देवों के दोनों अध्वर्यु आप को यहां प्रतिष्ठित करते हैं. (३)

पृथिव्याः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वे अभिगृणन्तु देवाः.
स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणायजस्वाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा.. (४)

आप पृथ्वी की नाथ और जल से उत्पन्न हुई हैं. सब देव सब ओर से आप की स्तुति करें. घी की हवि से आनंदित हो कर यहां विराजिए. आप हमें पीढ़ियों सहित

धन दीजिए. देवताओं के दोनों अध्वर्यु दोनों अश्विनीकुमार आप को यहां प्रतिष्ठित करते हैं. (४)

अदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्यन्तरिक्षस्य धर्त्रीं विष्टम्भनीं दिशामधिपत्नीं भुवनानाम्.
ऊर्मिर्द्रप्सो अपामसि विश्वकर्मा त ऽ ऋषिरश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा.. (५)

हम इस इष्टका को आदित्य देव की पीठ पर स्थापित करते हैं. इष्टका अंतरिक्ष को धारण करती है. आप सभी दिशाओं को स्थिरता प्रदान करती हैं. आप भुवनों की पत्नी और जल की तरंगों की तरह हैं. आप के द्रष्टा ऋषि विश्वकर्मा हैं. अश्विनीकुमार देवताओं के पुरोहित (अध्वर्यु) हैं. दोनों अश्विनीकुमार आप को इस स्थान पर प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. (५)

शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू अग्नेरन्त:श्लेषोसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ऽ ओषधय: कल्पन्तामग्नय: पृथङ्मम ज्यैष्ठ्याय सव्रता:.
ये अग्नय: समनसोन्तरा द्यावापृथिवी इमे.
ग्रैष्मावृतू अभिकल्पमाना ऽ इन्द्रमिव देवा ऽ अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्.. (६)

हे इष्टकाओ! आप चमकीली, पवित्र, ग्रीष्म ऋतु जैसी और अग्नि के भीतर जुड़ी हुई हैं. आप स्वर्गलोक तक विस्तार पाएं. आप पृथ्वीलोक तक कल्पित होने की कृपा करें. जल और ओषधियां फल वाली हों. व्रत सहित अग्नियां ज्येष्ठता (बड़प्पन) के लिए प्रेरित करने की कृपा करें. जो अग्नियां हम समान मन वालों के भीतर हैं, वे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को शोभित करने की कृपा करें. ग्रीष्म ऋतु को दोनों ओर से फलीभूत करती हुई इंद्र देव के समान देवताओं में शोभित हों. अपनी दिव्यता से अंगिरा की भांति स्थिरतापूर्वक विराजने की कृपा करें. (६)

सजूर्ऋतुभि: सजूर्विधाभि: सजूर्देवै: सजूर्देवैर्वयोनाधैरग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा सजूर्ऋतुभि: सजूर्विधाभि: सजूर्वसुभि: सजूर्देवैर्वयोनाधैरग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा सजूर्ऋतुभि: सजूर्विधाभि: सजू रुद्रै: सजूर्देवैर्वयोनाधैरग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा सजूर्ऋतुभि: सजूर्विधाभि: सजूरादित्यै: सजूर्देवैर्वयोनाधैरग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा सजूर्ऋतुभि: सजूर्विधाभि: सजूर्विश्वर्देवै: सजूर्देवैर्वयोनाधैरग्नये त्वा वैश्वानरायाश्विनाध्वर्यू सादयतामिह त्वा.. (७)

हे इष्टकाओ! आप ऋतुओं के साथ प्रेममय हैं. आप जलों के साथ प्रेममय हैं. आप देवों के साथ प्रेममय हैं. आयु देने वाले देवों के साथ प्रेममय हैं. आप इंद्रादि देवों के साथ प्रेममय हैं. हम अग्नि की प्रसन्नता के लिए आप को ग्रहण करते हैं. वैश्वानर की प्रसन्नता के लिए अध्वर्यु अश्विनीकुमार आप को यहां प्रतिष्ठित करते हैं. ऋतुओं सहित वसुगणों के साथ आप को अग्नि की प्रसन्नता के लिए प्रतिष्ठित

किया जाता है. जल सहित आप ऋतुओं के साथ प्रेममय हैं. देवताओं सहित आप ऋतुओं के साथ प्रेममय हैं. देवताओं के अध्वर्यु आप को यहां प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. आप ऋतुओं के प्रिय हैं. आप जलों के प्रिय हैं. आप आदित्यों के प्रिय हैं. आप प्राणों से प्रिय हैं. आप ऋतुओं के साथ प्रेममय हैं. आप जलों के साथ प्रेममय हैं. आप रुद्रों के साथ प्रेममय हैं. आप देवताओं के साथ प्रेममय हैं. आप को संसार के कल्याणकारी अग्नि के लिए ग्रहण करते हैं. अध्वर्यु अश्विनीकुमार आप को यहां प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. (७)

प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहि व्यानं मे पाहि चक्षुर्म ऽ उर्व्या विभाहि श्रोत्रं मे श्लोकय. अपः पिन्वौषधीर्जिन्व द्विपादव चतुष्पात् पाहि दिवो वृष्टिमेरय.. (८)

आप हमारे प्राण की रक्षा कीजिए. आप हमारे अपान की रक्षा कीजिए. आप हमारे व्यान की रक्षा कीजिए. आप हमारे नेत्रों की रक्षा कीजिए. आप हमें व्यापक दृष्टि प्रदान कीजिए. आप हमारे कानों को पूर्ण रूप से सामर्थ्यशाली बनाइए. आप उर्वी (पृथ्वी) पर कृपालु होइए. आप पृथ्वी को जल से सींचिए. आप पृथ्वी को ओषधियों से सींचिए. आप दोपायों की रक्षा कीजिए. आप चौपायों की रक्षा कीजिए. आप स्वर्गलोक से हम पर कृपा की बरसात कीजिए. (८)

मूर्धा वयः प्रजापतिश्छन्दः क्षत्रं वयो मयन्दं छन्दो विष्टम्भो वयोधिपतिश्छन्दो विश्वकर्मा वयः परमेष्ठी छन्दो वस्तो वयो विवलं छन्दो वृष्णिर्वयो विशालं छन्दः पुरुषो वयस्तन्द्रं छन्दो व्याघ्रो वयोनाधृष्टं छन्दः सिꣳहो वयश्छदिश्छन्दः पष्ठवाड्वयो बृहती छन्द ऽ उक्षा वयः ककुप् छन्द ऽ ऋषभो वयः सतोबृहती छन्दः.. (९)

प्रजापति ने गायत्री छंद से मूर्धन्य ब्राह्मणों को उत्पन्न किया. प्रजापति ने वय छंद से संरक्षणशील क्षत्रियों को उत्पन्न किया. आयु अधिपति ने विष्टंभ छंद से वैश्य को उत्पन्न किया. विश्वकर्मा ने परमेष्ठ छंद से शूद्र को उत्पन्न किया. प्रजापति ने एक पद छंद से भेड़ को उत्पन्न किया. उन्होंने एक पंक्ति पद छंद से मनुष्य को उत्पन्न किया. उन्होंने विराट् छंद से व्याघ्र को उत्पन्न किया. उन्होंने अतिजगती छंद से सिंह को उत्पन्न किया. उन्होंने बृहती छंद से भारवाही पशु को उत्पन्न किया. उन्होंने ककुप् छंद से उक्षा जाति को उत्पन्न किया. उन्होंने सतोबृहती छंद से ऋषभ (भालू) को उत्पन्न किया. (९)

अनड्वान्वयः पङ्क्तिश्छन्दो धेनुर्वयो जगती छन्दस्त्र्यविर्वयस्त्रिष्टुप् छन्दो दित्यवाड्वयो विराट् छन्दः पञ्चाविर्वयो गायत्री छन्दस्त्रिवत्सो वय ऽ उष्णिक् छन्दस्तुर्यवाड्वयोनुष्टुप् छन्दो लोकं ता इन्द्रम्.. (१०)

प्रजापति ने पंक्ति छंद से सांड़ को उत्पन्न किया. उन्होंने जगती छंद से गाय को उत्पन्न किया. उन्होंने त्रिष्टुप् छंद से त्र्यवि जाति को उत्पन्न किया. प्रजापति ने विराट् से भारवाहक पशुओं को उत्पन्न किया. उन्होंने उष्णिक् से तीन वत्स वाले पशुओं

को उत्पन्न किया. उन्होंने अनुष्टुप् से तुर्यवाट जाति को उत्पन्न किया. इष्टका इस लोक की रक्षा करने की कृपा करे. हम इंद्र देव से इस लोक की रक्षा करने की कृपा करने का अनुरोध करते हैं. (१०)

इन्द्राग्नी अव्यथमानामिष्टकां दृ ꣳ हतं युवम्.
पृष्ठेन द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं च वि बाधसे.. (११)

हे इंद्र देव! हे अग्नि! आप पीड़ाहीन हो कर इष्टका को स्थापित करने की कृपा कीजिए. इष्टका अपने पृष्ठ भाग से स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक व अंतरिक्षलोक को व्याप्त करती है. (११)

विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे व्यचस्वतीं प्रथस्वतीमन्तरिक्षं यच्छान्तरिक्षं दृ ꣳ हान्तरिक्षं मा हि ꣳ सीः.
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय.
वायुष्ट्वाभि पातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्त्मेन तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद.. (१२)

हे इष्टका! विश्वकर्मा आप को पृथ्वी के पृष्ठ भाग पर अधिष्ठित करने की कृपा करें. आप प्रथम अंतरिक्ष को धारण कीजिए. आप अंतरिक्ष का विस्तार कीजिए. आप अंतरिक्ष के प्रति हिंसा मत कीजिए. आप सब के प्राण, अपान, व्यान, उदान की रक्षा व चरित्र की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए अंतरिक्ष को धारण कीजिए. (१२)

राज्यसि प्राची दिग्विराडसि दक्षिणा दिक् सम्राडसि प्रतीची दिक् स्वराडस्युदीची दिगधिपत्न्यसि बृहती दिक्.. (१३)

हे इष्टका! आप रानी हैं. आप पूर्व दिशा में सुशोभित होती हैं. आप विराट् हैं. आप दक्षिण दिशा स्वरूप हैं. आप सम्राट् हैं. आप पश्चिम दिशा स्वरूप हैं. आप स्वयं प्रकाशित हैं. आप उत्तर दिशा स्वरूप हैं. आप सभी विशाल दिशाओं की अधिष्ठाता व पत्नी हैं. (१३)

विश्वकर्मा त्वा सादयत्वन्तरिक्षस्य पृष्ठे ज्योतिष्मतीम्.
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ.
वायुष्टेधिपतिस्तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद.. (१४)

हे इष्टका! विश्वकर्मा आप को अंतरिक्ष के पृष्ठभाग पर विराजमान कराएं. आप ज्योतिष्मती हैं. आप सब के प्राण, अपान व व्यान की रक्षा के लिए ज्योति प्रदान कराएं. वायु आप के इष्ट अधिपति हैं. उन की दिव्यता से आप अंगिरा की भांति स्थिर हो कर विराजने की कृपा करें. (१४)

नभश्च नभस्यश्च वार्षिकावृतू अग्नेरन्तःश्लेषोसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ऽओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ्मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः.

ये अग्नयः समनसोन्तरा द्यावापृथिवी इमे.
वार्षिकावृतू अभिकल्पमाना ऽ इन्द्रमिव देवा ऽअभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्.. (१५)

सावन और भादों दोनों महीने वर्षा ऋतु से संबंधित हैं. आप अग्नि के भीतर जुड़े हुए हैं. हमारे लिए स्वर्गलोक फलीभूत हों. हमारे लिए पृथ्वीलोक फलीभूत हों. हमारे लिए जल फलीभूत हों. हमारे लिए ओषधियां फलीभूत हों. हे इष्टकाओ! आप चमकीली, पवित्र, ग्रीष्म ऋतु जैसी व अग्नि के भीतर जुड़ी हुई हैं. आप स्वर्गलोक तक विस्तार पाएं. आप पृथ्वीलोक तक कल्पित होने की कृपा करें. ओषधियां फलीभूत हों. जल अग्नियां फलीभूत हों. व्रत सहित अग्नियां ज्येष्ठता (बड़प्पन) के लिए प्रेरित करने की कृपा करें. जो अग्नियां हम समान मन वालों के भीतर हैं, वे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को शोभित करने की कृपा करें. ग्रीष्म ऋतु को दोनों ओर से फलीभूत करती हुई इंद्र देव के समान देवताओं में शोभित हों. अपनी दिव्यता से अंगिरा की भांति स्थिरतापूर्वक विराजने की कृपा करें. (१५)

इषश्चोर्जश्च शारदावृतू अग्नेरन्तःश्लेषोसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ऽ ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ्मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः.
ये अग्नयः समनसोन्तरा द्यावापृथिवी इमे. शारदावृतू अभिकल्पमाना ऽ इन्द्रमिव देवा ऽ अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्.. (१६)

शरद ऋतु के आश्विन और कार्तिक ये दो महीने हैं. सावन और भादों ये दोनों मास वर्षा ऋतु से संबंधित हैं. हे ऋतुरूप इष्टकाओ! आप अग्नि के भीतर जुड़े हुए हैं. हमारे लिए स्वर्गलोक फलीभूत हों. हमारे लिए पृथ्वीलोक फलीभूत हों. हमारे लिए जल फलीभूत हों. हमारे लिए ओषधियां फलीभूत हों. हे इष्टकाओ! आप चमकीली, पवित्र, गीष्म ऋतु जैसी व अग्नि के भीतर जुड़ी हुई हैं. आप स्वर्गलोक तक विस्तार पाएं. आप पृथ्वीलोक तक कल्पित होने की कृपा करें. ओषधियां फलीभूत हों. जल व अग्नियां फलीभूत हों. व्रत सहित अग्नियां ज्येष्ठता (बड़प्पन) के लिए प्रेरित करने की कृपा करें. जो अग्नियां हम समान मन वालों के भीतर हैं, वे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को शोभित करने की कृपा करें. ग्रीष्म ऋतु को दोनों ओर से फलीभूत करती हुई इंद्र देव के समान देवताओं में शोभित हों. अपनी दिव्यता से अंगिरा की भांति स्थिरतापूर्वक विराजने की कृपा करें. (१६)

आयुर्मे पाहि प्राणं मे पाह्यपानं मे पाहि व्यानं मे पाहि चक्षुर्मे पाहि श्रोत्रं मे पाहि वाचं मे पिन्व मनो मे जिन्वात्मानं मे पाहि ज्योतिर्मे यच्छ.. (१७)

आप हमारी आयु की रक्षा कीजिए. आप हमारे प्राण की रक्षा कीजिए. आप हमारे अपान की रक्षा कीजिए. आप हमारे व्यान की रक्षा कीजिए. आप हमारे नेत्रों की रक्षा कीजिए. आप हमारे कान की रक्षा कीजिए. आप हमारी वाणी को मधुर बनाइए. आप

हमारे मन को जिताइए. आत्मा का योग कीजिए. ज्योति प्रदान कीजिए. (१७)

मा छन्दः प्रमा छन्दः प्रतिमा छन्दो अस्त्रीवयश्छन्दः पङ्क्तिश्छन्द ऽ उष्णिक् छन्दो बृहती छन्दोनुष्टुप् छन्दो विराट् छन्दो गायत्री छन्दस्त्रिष्टुप् छन्दो जगती छन्दः.. (१८)

हम मन, छंद, प्रमा छंद, प्रतिमा, अस्त्रीवय, पंक्ति, उष्णिक्, बृहती, अनुष्टुप्, विराट्, गायत्री, त्रिष्टुप् और जगती से इष्टका की स्थापना करते हैं. (१८)

पृथिवी छन्दोन्तरिक्षं छन्दो द्यौश्छन्दः समाश्छन्दो नक्षत्राणि छन्दो वाक् छन्दो मनश्छन्दः कृषिश्छन्दो हिरण्यं छन्दो गौश्छन्दोजाछन्दोश्वश्छन्दः.. (१९)

हे इष्टका! हम पृथ्वी, अंतरिक्ष, नक्षत्र, वाक्‌मन, कृषि, हिरण्य, गौ, अजा, अश्व से संबंधित छंद का मनन करते हैं. (१९)

अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता.. (२०)

हम अग्नि, वायु, सूर्य, चंद्र, वसु, रुद्र, आदित्य, मरुत्, विश्वे देवा, बृहस्पति, इंद्र देव व हम वरुण देव को स्मरण कर के इष्टका की स्थापना करते हैं. (२०)

मूर्धासि राड् ध्रुवासि धरुणा धर्त्र्यसि धरणी.
आयुषे त्वा वर्चसे त्वा कृष्यै त्वा क्षेमाय त्वा.. (२१)

हे इष्टका! आप मूर्धन्य स्थिर व धारिका हैं. हम आयु, वर्चस्व, कृषि व कुशलक्षेम के लिए आप की स्थापना करते हैं. (२१)

यन्त्री राड् यन्त्र्यसि यमनी ध्रुवासि धरित्री.
इषे त्वोर्जे त्वा रय्यै त्वा पोषाय त्वा लोकं ता इन्द्रम्.. (२२)

इष्टका धरा के समान स्थिर व यांत्रिक रूप से गतिशील है. आप नियम पालक हैं. हम ऊर्जा, धन, पोषण के लिए आप की उपासना करते हैं. इंद्र देव इस लोक का रक्षण करने की कृपा करें. (२२)

आशुस्त्रिवृद्भान्तः पञ्चदशो व्योमा सप्तदशो धरुण ऽ एकवि ꣳ शः प्रतूर्त्तिरष्टादशस्तपो नवदशोभीवर्त्तः सवि ꣳ शो वर्चो द्वावि ꣳ शः सम्भरणस्त्रयोवि ꣳ शो योनिश्चतुर्वि ꣳ शो गर्भाः पञ्चवि ꣳ श ऽ ओजस्त्रिणवः क्रतुरेकत्रि ꣳ शः प्रतिष्ठा त्रयस्त्रि ꣳ शो ब्रध्नस्य विष्टपं चतुस्त्रि ꣳ शो नाकः षट्त्रि ꣳ शो विवर्त्तोष्टाचत्वारि ꣳ शो धर्त्रं चतुष्टोमः.. (२३)

हे इष्टका! हम आप को त्रिवृत स्तोम से व्याप्त स्थान पर अधिष्ठित करते हैं. हम पंद्रह दिन वाली चंद्रमा की ज्योति का मनन कर के आप की स्थापना करते हैं. हम सप्तदश स्तोम स्वरूप प्रजापति का ध्यान कर के आप की स्थापना करते हैं. हम इक्कीस स्तोम स्वरूप का मनन कर के आप की स्थापना करते हैं. हम अठारह स्तोम

यानी बारह महीने, पांच ऋतु, एक वर्ष रूप अंगों से आप की स्थापना करते हैं. तप स्वरूप उन्नीस स्तोम से देवताओं की स्थापना करते हैं. बारह महीने, सात ऋतु, संवत्सर रूप बीस संख्या वाले देवता का मनन कर के संवत्सर रूप बीस संख्या वाले हम द्वाविंश स्तोम वाले वर्च देवता का ध्यान कर के उस की स्थापना करते हैं. तेईस स्तोम वाले संभरण देवता का ध्यान कर के उस की स्थापना करते हैं. प्रजा को चौबीस स्तोम उपजाते हैं. हम योनि देव का ध्यान कर के आप की स्थापना करते हैं. त्रिणव ओजस्वी देव का ध्यान कर के आप की स्थापना करते हैं. यज्ञ हेतु उपयोगी इकतीस स्तोम का ध्यान कर के आप की स्थापना करते हैं. यज्ञ देवता का ध्यान कर के आप की स्थापना करते हैं. तैंतीस प्रतिष्ठा स्वरूप देव की स्थापना करते हैं. सूर्य वास वाले चौंतीस देव का ध्यान कर के आप की स्थापना करते हैं. ब्रह्म विष्टप पैंतीस देव का स्मरण कर के आप की स्थापना करते हैं. (२३)

अग्नेर्भागोसि दीक्षाया ऽ आधिपत्यं ब्रह्म स्पृतं त्रिवृत्स्तोम ऽ इन्द्रस्य भागोसि विष्णोराधिपत्यं क्षत्र ᳬ स्पृतं पञ्चदश स्तोमो नृचक्षसां भागोसि धातुराधिपत्यं जनित्र ᳬ स्पृत ᳬ सप्तदश स्तोमो मित्रस्य भागोसि वरुणस्याधिपत्यं दिवो वृष्टिर्वात स्पृत ऽ एकवि ᳬ श स्तोमः.. (२४)

इष्टका अग्नि देव का भाग है. आप दीक्षा के आधिपत्य में हैं. ब्राह्मण त्रिवृत स्तोम से मृत्यु से बचे त्रिवृत स्तोम से आप की स्थापना करते हैं. इंद्र देव के भाग हैं. विष्णु के आधिपत्य में हैं. क्षत्रियों की मृत्यु से रक्षा पंचदश स्तोम से हुई. हम पंचदश स्तोम से आप की स्थापना करते हैं. आप मनुष्यों के निरीक्षक देव का भाग हैं. आप धाता के आधिपत्य में हैं. वैश्य सप्तदश स्तोम द्वारा मृत्यु से बचें. हम सप्तदश स्तोम से आप की स्थापना करते हैं. आप मित्र देव का भाग हैं. आप वरुण देव के आधिपत्य में हैं. एकविंश स्तोम से स्वर्गलोक से संबंधित वर्षा की रक्षा हुई एकविंश स्तोम से स्वर्गलोक से संबंधित वायु की रक्षा हुई. एकविंश स्तोम से आप की स्थापना करते हैं. (२४)

वसूनां भागोसि रुद्राणामाधिपत्यं चतुष्पात् स्पृतं चतुर्वि ᳬ श स्तोम ऽ आदित्यानां भागोसि मरुतामाधिपत्यं गर्भा स्पृताः पञ्चवि ᳬ श स्तोमोदित्यै भागोसि पूष्ण ऽ आधिपत्यमोज स्पृतं त्रिणव स्तोमो देवस्य सवितुर्भागोसि बृहस्पतेराधिपत्य ᳬ समीचीर्दिश स्पृताश्चतुष्टोम स्तोमः.. (२५)

हे इष्टके! आप वसुगणों के भाग हैं. इसलिए आप पर रुद्रों का अधिकार है. आप ने चौबीसवें स्तोम द्वारा पशुओं का संरक्षण किया है. हम आप को यहां स्थापित करते हैं. आप आदित्यगण के भाग हैं. इसलिए मरुद्गणों का आप पर अधिकार है. पच्चीसवें स्तोम द्वारा गर्भस्थ भ्रूणों की रक्षा हुई. हम आप को यहां स्थापित करते हैं. हे इष्टके! आप अदिति के भाग हैं. अतः पूषा देव का आप पर अधिकार है. आप ने त्रिणव स्तोम से प्रजाओं के ओज की रक्षा की है. हम उन स्तोम

का ध्यान करते हुए आप को यहां स्थापित करते हैं. हे इष्टके! आप सभी के प्रेरक सविता देव के भाग हैं. आप पर बृहस्पति देव का अधिकार है. आप ने चतुष्टोम स्तोम से सभी दिशाओं की रक्षा की है हम उस स्तोम का ध्यान करते हुए आप की स्थापना करते हैं. (२५)

यवानां भागोस्ययवानामाधिपत्यं प्रजा स्पृताश्चतुश्चत्वारि ꣳ श स्तोम ऽ ऋभूणां भागोसि विश्वेषां देवानामाधिपत्यं भूत ꣳ स्पृतं त्रयस्त्रि ꣳ श स्तोमः.. (२६)

हे इष्टके! आप शुक्लपक्ष की तिथियों के भाग हैं. आप पर कृष्णपक्ष की तिथियों का अधिकार है. आप ने चत्वारिंशत स्तोम से प्रजा की रक्षा की. अतः उस का ध्यान धारण करते हुए हम आप को यहां स्थापित करते हैं. हे इष्टके! आप ऋतुओं के भाग हैं. आप पर देवों का अधिकार है. त्रयस्त्रिंशत स्तोम से आप ने प्राणियों की रक्षा की. अतः हम उस का ध्यान करते हुए आप की यहां स्थापना करते हैं. (२६)

सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू अग्नेरन्तःश्लेषोसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ऽ ओषधयः कल्पन्तामग्नयः पृथङ्मम ज्यैष्ठ्याय सव्रताः. ये अग्नयः समनसोन्तरा द्यावापृथिवी इमे. हैमन्तिकावृतू अभिकल्पमाना ऽ इन्द्रमिव देवा ऽ अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्.. (२७)

मार्गशीर्ष और पौष हेमंत ऋतु के भाग हैं. सावन और भादों ये दोनों मास वर्षा ऋतु से संबंधित हैं. आप अग्नि के भीतर जुड़े हुए हैं. हमारे लिए स्वर्गलोक फलीभूत हों. हमारे लिए पृथ्वीलोक फलीभूत हों. हमारे लिए जल फलीभूत हों. हमारे लिए ओषधियां फलीभूत हों. हे इष्टकाओ! आप चमकीली, पवित्र, ग्रीष्म ऋतु जैसी और अग्नि के भीतर जुड़ी हुई हैं. आप स्वर्गलोक तक विस्तार पाएं. आप पृथ्वीलोक तक कल्पित होने की कृपा करें. ओषधियां फलीभूत हों. जल और अग्नियां फलीभूत हों. व्रतसहित अग्नियां ज्येष्ठता (बड़प्पन) के लिए प्रेरित करने की कृपा करें. जो अग्नियां हम समान मन वालों के भीतर हैं, वे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को शोभित करने की कृपा करें. ग्रीष्म ऋतु को दोनों ओर से फलीभूत करती हुई इंद्र देव के समान देवताओं में शोभित हों. अपनी दिव्यता से अंगिरा की भांति स्थिरतापूर्वक विराजने की कृपा करें. (२७)

एकयास्तुवत प्रजा अधीयन्त प्रजापतिरधिपतिरासीत् तिसृभिरस्तुवत ब्रह्मासृज्यत ब्रह्मणस्पतिरधिपतिरासीत् पञ्चभिरस्तुवत भूतान्यसृज्यन्त भूतानां पतिरधिपतिरासीत्सप्तभिरस्तुवत सप्त ऋषयोसृज्यन्त धाताधिपतिरासीत्.. (२८)

प्रजापति ने वाणी से एक स्तुति की. उस से प्रजापति ने प्रजा उत्पन्न की. वे सब के अधिपति हुए. उन्होंने तीनों (प्राण, अपान, व्यान) से एक स्तुति की. उन्होंने ब्रह्मा को उपजाया. ब्रह्मणस्पति को उस का अधिपति बनाया. उन्होंने पांचों प्राणों

से स्तुति की. उन्होंने पंचभूतों को सिरजा. पंचभूतों के स्वामी उस के अधिपति हुए. उन्होंने सातों से स्तुति की. उन्होंने सप्त ऋषियों को सिरजा. जगत्धारक परमात्मा उस के अधिपति हुए. (२८)

नवभिरस्तुवत पितरोसृज्यन्तादितिरधिपत्न्यासीदेकादशभिरस्तुवत ऋतवो सृज्यन्तार्त्तवा अधिपतय ऽ आसँस्त्रयोदशभिरस्तुवत मासा ऽ असृज्यन्त संवत्सरोधिपतिरासीत् पञ्चदशभिरस्तुवत क्षत्रमसृज्यतेन्द्रोधिपतिरासीत् सप्तदशभिरस्तुवत ग्राम्याः पशवोसृज्यन्त बृहस्पतिरधिपतिरासीत्.. (२९)

परमपिता परमेश्वर ने पितरों को सिरजा. देवताओं की माता अदिति उन की स्वामिनी हैं. देवताओं की माता अदिति की नौ प्राणों से स्तुति की जाती है. नौ प्राणों से ऋतुएं सिरजीं. ऋतुओं के गुण अपनेअपने विषय के अधिपति हैं. उन अधिपतियों की दस प्राणों से स्तुति की गई. परमपिता ने महीनों को सिरजा. वर्ष को उन का अधिपति बनाया. उन की पंद्रह प्राणों से स्तुति की गई. क्षत्रियों को सिरजने वाले की भी प्राणों से स्तुति की गई. इंद्र देव उन के अधिपति हुए. जिस ने गांवों को सिरजा, जिस ने पशुओं को सिरजा, उन की सत्रह प्राणों से स्तुति की गई. बृहस्पति देव को उन का अधिपति बनाया. (२९)

नवदशभिरस्तुवत शूद्रार्यावसृज्येताममहोरात्रे अधिपत्नी आस्तामेकवि ꣳ शत्यास्तुवतैकशफाः पशवोसृज्यन्त वरुणोधिपतिरासीत् त्रयोवि ꣳ शत्यास्तुवत क्षुद्राः पशवोसृज्यन्त पूषाधिपतिरासीत् पञ्चवि ꣳ शत्यास्तुवतारण्याः पशवोसृज्यन्त वायुरधिपतिरासीत् सप्तवि ꣳ शत्यास्तुवत द्यावापृथिवी व्यैतां वसवो रुद्रा ऽ आदित्या ऽ अनुव्यायाँस्त ऽ एवाधिपतय ऽ आसन्.. (३०)

दस और नौ अर्थात् उन्नीस आंतरिक और बाहरी अंगों की तरह ही शूद्रों और आर्यों को सिरजा. दिन और रात उन के स्वामी हुए. इक्कीस अंगों से प्रजापति की स्तुति की गई. अंगों से ही छोटेछोटे पशुओं को सिरजा. वरुण देव उन के स्वामी हुए. तेईस अंगों से उन की स्तुति की गई. उन अंगों से और छोटेछोटे जीवजंतु (पशु) सिरजे. पूषा देव उन के अधिपति हुए. पच्चीस अंगों से उन की स्तुति की गई. उन अंगों से जंगली पशुओं को सिरजा. वायु उन के स्वामी हुए. सत्ताईस अंगों से उन की स्तुति की गई. इन से ही स्वर्गलोक व्याप्त है. इन से ही पृथ्वीलोक व्याप्त हैं. उन में ही आठ वसु, ग्यारह रुद्र व बारह मास वास करते हैं. आदित्य देव उन के स्वामी हुए. (३०)

नववि ꣳ शत्यास्तुवत वनस्पतयोसृज्यन्त सोमोधिपतिरासीदेकत्रि ꣳ शतास्तुवत प्रजा ऽ असृज्यन्त यवाश्चायवाश्चाधिपतय ऽ आसँस्त्रयस्त्रि ꣳ शतास्तुवत भूतान्यशाम्यन् प्रजापतिः परमेष्ठ्यधिपतिरासील्लोकं ता ऽ इन्द्रम्.. (३१)

उनतीस अंगों से परमपिता की स्तुति की गई. उन अंगों से वनस्पति को सिरजा.

सोम उस के स्वामी हुए. इकत्तीस अंगों से परमपिता की स्तुति की गई. उन अंगों से प्रजा को सिरजा. स्त्री और पुरुष को उन का स्वामी बनाया. उस से प्राणी सुखी हुए. प्रजापति परम श्रेष्ठ हैं. वे ही सब के और लोकों के स्वामी हैं. सभी इंद्र देव की स्तुति करते हैं. (३१)

पंद्रहवां अध्याय

अग्ने जातान् प्र णुदा नः सपत्नान् प्रत्यजातान् नुद जातवेदः.
अधि नो ब्रूहि सुमना ऽ अहेडँस्तव स्याम शर्मं स्त्रिवरूथ ऽ उद्भौ.. (१)

हे अग्नि! आप सर्वज्ञ हैं. आप हमारे जो भी विद्रोही उत्पन्न हो चुके हैं, उन का नाश कीजिए. आप अच्छे मन से हम से बोलिए. आप अच्छे मन से हमें सुख प्रदान कीजिए. आप की कृपा से हम सुखी हों. आप यज्ञवेदी में बने रहिए. हम आप ही की कृपा से यज्ञ कर सकें. (१)

सहसा जातान् प्रणुदा नः सपत्नान् प्रत्यजाताञ्जातवेदो नुदस्व.
अधि नो ब्रूहि सुमनस्यमानो वय ꣳ स्याम प्र णुदा नः सपत्नान्.. (२)

हे अग्नि! आप सर्वज्ञ हैं. आप हमारे जो भी शत्रु उत्पन्न हो चुके हैं, उन का नाश कीजिए. आप अच्छे मन से हम से बोलिए. हम आप की कृपा से अच्छे मन वाले हो जाएं. हम शत्रुओं को नष्ट कर के सामर्थ्यशील बन जाएं. (२)

षोडशी स्तोम ऽ ओजो द्रविणं चतुश्चत्वारि ꣳ श स्तोमो वर्चो द्रविणम्.
अग्नेः पुरीषमस्यप्सो नाम तां त्वा विश्वे अभि गृणन्तु देवाः.
स्तोमपृष्ठा घृतवतीह सीद प्रजावदस्मे द्रविणा यजस्व.. (३)

हम सोलह कलाओं वाले स्तोम से आप की स्थापना करते हैं. सोलह कलाओं वाले स्तोम ओज पूर्ण व धनपूर्ण हैं. हम चवालीस शक्तियों वाले स्तोम से आप की स्थापना करते हैं. अग्नि पूर्णतादायी हैं. उन की इस पूर्णता की सभी देवता प्रशंसा करते हैं. हम आप को धीमी आहुति भेंट करते हैं. आप विराजिए और अपनी प्रजा को धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३)

एवश्छन्दो वरिवश्छन्दः शम्भूश्छन्दः परिभूश्छन्द ऽ आच्छच्छन्दो मनश्छन्दो व्यचश्छन्दः सिन्धुश्छन्दः समुद्रश्छन्दः सरिरं छन्दः ककुप्छन्दस्त्रिककुप्छन्दः काव्यं छन्दो अङ्कुपं छन्दोक्षरपङ्क्तिश्छन्दः पदपङ्क्तिश्छन्दो विष्टारपङ्क्तिश्छन्दः क्षुरोभ्रजश्छन्द.. (४)

हम एव छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम वरिव छंद से आप की स्थापना

करते हैं. हम शंभू छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम परिभू छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम आच्छ छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम मन से आप की स्थापना करते हैं. हम व्यच से आप की स्थापना करते हैं. हम सिंधु से आप की स्थापना करते हैं. हम समुद्र से आप की स्थापना करते हैं. हम सरिर से आप की स्थापना करते हैं. हम ककुप् से आप की स्थापना करते हैं. हम त्रिक् ककुप् से आप की स्थापना करते हैं. हम काव्य से आप की स्थापना करते हैं. हम अंकुप् से आप की स्थापना करते हैं. हम अक्षर से आप की स्थापना करते हैं. हम पंक्ति से आप की स्थापना करते हैं. हम पदपंक्ति से आप की स्थापना करते हैं. हम विष्टारपंक्ति से आप की स्थापना करते हैं. हम क्षुरोभ्रज से आप की स्थापना करते हैं. (४)

आच्छच्छन्दः प्रच्छच्छन्दः संयच्छन्दो वियच्छन्दो बृहच्छन्दो रथन्तरञ्छन्दो निकायश्छन्दो विवधश्छन्दो गिरश्छन्दा भ्रजश्छन्दः स ꣳ स्तुप्छन्दोनुष्टुप्छन्द ऽ एवश्छन्दो वरिवश्छन्दो वयश्छन्दो वयस्कृच्छन्दो विष्पर्धाश्छन्दो विशालं छन्दश्छदिश्छन्दो दूरोहणं छन्दस्तन्द्रं छन्दो अङ्काङ्कं छन्दः.. (५)

हम आच्छ छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम प्रच्छ छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम संयच्छ छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम वियच्छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम बृहच्छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम रथंतर छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम निकाय छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम विवध छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम गिर छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम भ्रज छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम स्तुप् छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम अनुष्टुप् छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम एव छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम वरिव छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम वय छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम वयस्कृत छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम विष्पर्द्ध छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम विशाल छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम छदि छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम दूरोहण छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम तंद्र छंद से आप की स्थापना करते हैं. हम अंकांक छंद से आप की स्थापना करते हैं. (५)

रश्मिना सत्याय सत्यं जिन्व प्रेतिना धर्मणा धर्मं जिन्वान्वित्या दिवा दिवं जिन्व सन्धिनान्तरिक्षेणान्तरिक्षं जिन्व प्रतिधिना पृथिव्या पृथिवीं जिन्व विष्टम्भेन वृष्ट्या वृष्टिं जिन्व प्रवयाह्नाहर्जिन्वानुया रात्र्या रात्रीं जिन्वोशिजा वसुभ्यो वसूञ्जिन्व प्रकेतेनादित्येभ्य ऽ आदित्याञ्जिन्व.. (६)

सत्य के लिए रश्मियों का प्रचारप्रसार हो. सत्य की जीत हो. आचरण और धर्म से धर्म की प्रतिष्ठा हो. दिव्यता से दिव्यलोक को पाएं. संधि से अंतरिक्ष के लिए अंतरिक्ष को जीतें. प्रतिधान के माध्यम से पृथ्वी के लिए पृथ्वी को जीतें. वृष्टि के

लिए वर्षा को आनंदित करें. वसुओं के लिए वसुओं को आनंदित करें. प्रकाशवान आदित्यों के लिए आदित्यों को आनंदित करें. (६)

तन्तुना रायस्पोषेण रायस्पोषं जिन्व स ꣳ सर्पेण श्रुताय श्रुतं जिन्वै डेनौषधीभिरोषधीर्जिन्वोत्तमेन तनूभिस्तनूर्जिन्व वयोधसाधीतेनाधीतं जिन्वाभिजिता तेजसा तेजो जिन्व.. (७)

हे इष्टके! तंतुओं से धन को पोसें. धन के लिए धन को पोसें. श्रुतियों के लिए श्रुतियों से स्नेह रखें. ओषधियों के लिए ओषधियों को पुष्ट करें. उत्तम शरीर से शरीर को पुष्ट करें. तेजस्विता के लिए तेजस्वी बनें. (७)

प्रतिपदसि प्रतिपदे त्वानुपदस्यनुपदे त्वा सम्पदसि सम्पदे त्वा तेजोसि तेजसे त्वा.. (८)

हे इष्टके! आप जीवन के मूल आधार हैं. आप अनुपद के अनुपद हैं. आप संपत्ति की संपत्ति हैं. आप तेजोमय हैं. आप तेजों में तेज हैं. (८)

त्रिवृदसि त्रिवृते त्वा प्रवृदसि प्रवृते त्वा विवृदसि विवृते त्वा सवृदसि सवृते त्वा क्रमोस्याक्रमाय त्वा संक्रमोसि संक्रमाय त्वोत्क्रमोस्युत्क्रमाय त्वोत्क्रान्तिरस्युत्क्रान्त्यै त्वाधिपतिनोर्जोर्जं जिन्व.. (९)

हे इष्टके! आप त्रिवृत हैं. हम त्रिवृत के लिए आप को प्रवृत्त करते हैं. आप विवृत हैं. हम विवृत के लिए आप को प्रवृत्त करते हैं. आप संवृत हैं. हम संवृत के लिए आप को प्रवृत्त करते हैं. आप अक्रम हैं. हम अक्रम के लिए आप को प्रवृत्त करते हैं. आप संक्रम हैं. हम संक्रम के लिए आप को प्रवृत्त करते हैं. आप उत्क्रम हैं. हम उत्क्रम के लिए आप को प्रवृत्त करते हैं. आप उत्क्रांत हैं. हम उत्क्रांत के लिए आप को प्रवृत्त करते हैं. (९)

राज्ञ्यसि प्राची दिग्वसवस्ते देवा ऽ अधिपतयोग्निर्हेतीनां प्रतिधर्त्ता त्रिवृत् त्वा स्तोमः पृथिव्या ꣳ श्रयत्वाज्यमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु रथन्तर ꣳ साम प्रतिष्ठित्या ऽ अन्तरिक्ष ऽ ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु.. (१०)

हे इष्टके! आप पूर्व दिशा की रानी हैं. दिशाओं के स्वामी आप सब के पालनहार हैं. अग्नि सब के अधिपति हैं. आप त्रिवृत के प्रतिधारणकर्ता हैं. आप त्रिवृत स्तोम को पृथ्वी पर स्थापित करने की कृपा करें. आज्य और उक्थ आप को दृढ़ीभूत करने की कृपा करें. रथंतर साम आप को अंतरिक्षलोक में प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. ऋषिगण प्रथम उत्पन्न देव को देवों में प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. आप विशिष्ट धारणकर्ता व अधिपति हैं. अधिपति आप को विस्तृत करें. सभी देव यजमान को स्वर्गिक सुख उपलब्ध कराने की कृपा करें. (१०)

विराडसि दक्षिणा दिग्रुद्रास्ते देवा ऽ अधिपतय ऽ इन्द्रो हेतीनां प्रतिधर्त्ता पञ्चदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्या ँ्श्रयतु प्र उगमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु बृहत्साम प्रतिष्ठित्या ऽ अन्तरिक्ष ऽ ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा पथन्तु विधर्त्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु.. (११)

हे इष्टके! आप विराट् हैं और दक्षिण दिशा स्वरूप हैं. रुद्र आप के देव व इंद्र देव अधिपति हैं. आप प्रतिधारणकर्ता हैं. पंचदश स्तोम आप को पृथ्वी पर प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. प्रउग उक्थ आप को स्थिर व सुदृढ़ करें. बृहत्साम आप को अंतरिक्ष में स्थापित करें. ऋषिगण दिव्यलोक में स्थापित करें. वे प्रथम उत्पन्न देव को सब देवों में स्थापित करें. वे दिव्यलोक में स्थापित करें. वे प्रथम उत्पन्न देव को सब देवों में स्थापित करें. (११)

सम्राडसि प्रतीची दिगादित्यास्ते देवा ऽ अधिपतयो वरुणो हेतीनां प्रतिधर्त्ता सप्तदशस्त्वा स्तोमः पृथिव्या ँ्श्रयतु मरुत्वतीयमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु वैरूप ँ् साम प्रतिष्ठित्या ऽ अन्तरिक्ष ऽ ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु.. (१२)

हे इष्टके! आप पश्चिम दिशा के सम्राट् हैं. आदित्य आप के देवता हैं. वरुण आप के अधिपति हैं. आप प्रतिधारणकर्ता हैं. सप्तदश स्तोम दिशा के सम्राट् हैं. मरुत् उक्थ दिशा के सम्राट् हैं. वैरूप साम दिशा के सम्राट् हैं. वह अंतरिक्ष में दृढ़ता हेतु आप को प्रतिष्ठित करें. सृष्टि क्रम में प्रथम जन्मे ऋषि आप को देवलोक में स्थित करें. इस तरह समस्त वसु आदि देवता याजकों को सुखसंपन्न स्वर्गलोक में ले जाएं. (१२)

स्वराडस्युदीची दिङ्मरुतस्ते देवा ऽ अधिपतयः सोमो हेतीनां प्रतिधर्त्तैकवि ँ् शस्त्वा स्तोमः पृथिव्या ँ्श्रयतु निष्केवल्यमुक्थमव्यथायै स्तभ्नातु वैराज ँ् साम प्रतिष्ठित्या ऽ अन्तरिक्ष ऽ ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु.. (१३)

हे इष्टके! आप स्वयं प्रकाशमान हैं. आप उत्तर दिशा स्वरूप हैं. मरुद्गण दिक्पालक हैं. सोम अधिपति हैं. सोम प्रतिधारक हैं. एकविंश स्तोम आप को पृथ्वी पर प्रतिष्ठित करें. निष्केवल्य स्तोम आप को पृथ्वी पर प्रतिष्ठित करें. वैराज साम स्तोम आप को पृथ्वी पर प्रतिष्ठित करें. पहले प्रादुर्भूत ऋषिगण समस्त दिव्यलोक में श्रेष्ठ दैवी गुणों को प्रसारित करें. वांछित निष्पादक और ये प्रमुख उच्च स्वर्गलोक में यजमान को निस्संदेह स्थित करें. अधिपति भी आप को विस्तार दें. इस तरह वे समस्त

वसु आदि देव याजकों को एक विचार होकर स्वर्ग में ले जाएं. (१३)

अधिपत्न्यसि बृहती दिग्विश्वे ते देवा ऽ अधिपतयो बृहस्पतिर्हेतीनां प्रतिधर्त्ता त्रिणवत्रयस्त्रि ꣳ शौ त्वा स्तोमौ पृथिव्या ꣳ श्रयतां वैश्वदेवाग्निमारुते उक्थे अव्यथायै स्तभ्नीता ꣳ शाक्वररैवते सामनी प्रतिष्ठित्या ऽ अन्तरिक्ष ऽ ऋषयस्त्वा प्रथमजा देवेषु दिवो मात्रया वरिम्णा प्रथन्तु विधर्त्ता चायमधिपतिश्च ते त्वा सर्वे संविदाना नाकस्य पृष्ठे स्वर्गे लोके यजमानं च सादयन्तु.. (१४)

हे इष्टके! आप अधिपत्नी, विशाल, दिशा रूप व सब देवों के अधिपति हैं. आप बृहस्पति देव के हेतु व प्रतिधारक हैं. हम त्रिणयवयस्त्रिंशत स्तोम से आप की प्रतिष्ठापना करते हैं. हम पृथ्वी पर आप की प्रतिष्ठापना करते हैं. वैश्वेदेव अग्निमरुत्‌देव उक्थ स्तोत्र के लिए आप की स्थापना करते हैं. शाक्वर साम आप को अंतरिक्ष में प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. रैवत साम आप को अंतरिक्ष में प्रतिष्ठित करने की कृपा करें. पूर्व जन्मे ऋषि दिव्यलोक में श्रेष्ठ दैवी गुणों को व्याप्त करें. वांछित कार्यों के कर्ता मुख्य देव भी आप का विस्तार करें. इस तरह समस्त वसु आदि देव एक विचार से सुख संपन्न हों. (१४)

अयं पुरो हरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्च रथौजाश्च सेनानीग्रामण्यौ.
पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला चाप्सरसौ दङ्क्ष्णवः पशवो हेतिः पौरुषेयो वधः प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः.. (१५)

यह देव हरे केशों वाले हैं. सूर्य की किरणों की भांति हैं. आप रथज्ञान में निपुण हैं, अग्रणी, सेनानायक, ग्रामस्थलों के नायक, यज्ञस्थल के नायक हैं. आप अप्सराओं के नायक हैं. पशु आप के हथियार हैं. आप ताकतवर का भी वध करने में समर्थ हैं. हम सभी देवताओं के साथ अग्नि को नमन करते हैं. वे हमारी रक्षा करें. वे हमें सुख प्रदान करें. जो हम से द्वेष करते हैं और जिन से हम द्वेष करते हैं, उन सब को अग्नि अपने जबड़े में धारने की कृपा करें. (१५)

अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य रथस्वनश्च रथेचित्रश्च सेनानीग्रामण्यौ.
मेनका च सहजन्या चाप्सरसौ यातुधाना हेती रक्षा ꣳ सिप्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः.. (१६)

दक्षिण दिशा में विश्वकर्मा देव को स्थापित किया गया है. विश्वकर्मा देव रथवान, सेनानी, ग्राम रक्षक, अग्रणी व मेनका तथा सहजन्य इन की अप्सराएं हैं. राक्षस इन के अस्त्रशस्त्र हैं. विश्वकर्मा देव हमारी रक्षा करें. अग्नि हमें सुख प्रदान करें. जो हम से द्वेष करते हैं और जिन से हम द्वेष करते हैं, उन सब को अग्नि अपने जबड़े में धारने की कृपा करें. (१६)

अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य रथप्रोतश्चासमरथश्च सेनानीग्रामण्यौ.
प्रम्लोचन्ती चानुम्लोचन्ती चाप्सरसौ व्याघ्रा हेतिः सर्पाः प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः.. (१७)

आदित्य देव सब को प्रकाशित करते हैं. आदित्य देव को पश्चिम दिशा में स्थापित करते हैं. आदित्य देव रथवान, सेनानी, ग्राम रक्षक व अग्रणी हैं. प्रम्लोचन तथा अनुलोचनी इन की दो अप्सराएं हैं. व्याघ्र पशु इन के आयुध हैं. सांप आदि तीखे शस्त्र हैं. आदित्य देव को नमन करते हैं. अग्नि हमारी रक्षा करें. अग्नि हमें सुख प्रदान करें. जो हम से द्वेष करते हैं और जिन से हम द्वेष करते हैं, उन सब को अग्नि अपने जबड़े में धारने की कृपा करें. (१७)

अयमुत्तरात्संयद्वसुस्तस्य तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च सेनानीग्रामण्यौ.
विश्वाची च घृताची चाप्सरसावापो हेतिर्वातः प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः.. (१८)

यह इष्टका देव उत्तर दिशा में प्रतिष्ठित, धन स्वरूप व यज्ञ स्वरूप हैं. इन के हथियार तीक्ष्ण व शत्रुनाशक व अस्त्रशस्त्र विस्तारक हैं. वे अपराजित हैं. वे विश्वपालक व ग्राम पालक हैं. अग्रणी इन की विश्वाची तथा घृताची नामक दो अप्सराएं हैं. जल इन के आयुध हैं. वायु इन के तीक्ष्ण हथियार हैं. अग्नि हमें सुख प्रदान करें. जो हम से द्वेष करते हैं और जिन से हम द्वेष करते हैं, उन सब को अग्नि अपने जबड़े में धारने की कृपा करें. (१८)

अयमुपर्यर्वाग्वसुस्तस्य सेनजिच्च सुषेणश्च सेनानीग्रामण्यौ.
उर्वशी च पूर्वचित्तिश्चाप्सरसाववस्फूर्जन् हेतिर्विद्युत्प्रहेतिस्तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः.. (१९)

यह ऊपर मध्य दिशा में बादल देव हैं. यह देव विजेता, अच्छी सेना वाले, सेनानी, ग्राम प्रमुख व अग्रणी हैं. उर्वशी तथा पूर्वचिति इन की दो अप्सराएं हैं. गर्जना इन के शस्त्र हैं. बिजली इन का तीक्ष्ण आयुध है. अग्नि हमें सुख प्रदान करें. जो हम से द्वेष करते हैं और जिन से हम द्वेष करते हैं, उन सब को अग्नि अपने जबड़े में धारने की कृपा करें. (१९)

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम्.
अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति.. (२०)

अग्नि मूर्धन्य और स्वर्गलोक के स्वामी हैं. पृथ्वी रक्षक हैं. अग्नि जल के रस को पोषित करते हैं. (२०)

अयमग्निः सहस्त्रिणो वाजस्य शतिनस्पतिः. मूर्धा कवी रणीयाम्.. (२१)

अग्नि हजारों के लिए सुखदायी हैं व सैकड़ों संपदाओं से युक्त हैं. वे अन्नाधिपति, मूर्धन्य, कवि व धनपति हैं. (२१)

त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत. मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः.. (२२)

हे अग्नि! अथर्वा ऋषि ने अरणि मंथन से आप को प्रकट किया. आप मूर्धन्य और विश्ववाहक हैं. (२२)

भुवो यज्ञस्य रजसश्च नेता यत्रा नियुद्भिः सचसे शिवाभिः.
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षां जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्.. (२३)

हे अग्नि! आप भुवनलोक में यज्ञ के राजा व नेता हैं. आप सब के कल्याण के लिए अपने घोड़े जोतते हैं. आप स्वर्गलोक में मूर्धन्य स्थान पर विराजमान आदित्य की शोभा धारते हैं. आप हवि वाहक व लपटीली जिह्वा वाले हैं. (२३)

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम्.
यह्वा ऽ इव प्र वयामुज्जिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ.. (२४)

हे अग्नि! आप समिधा से प्रबोधित होते हैं. आप लोगों की ओर उसी प्रकार उन्मुख होते हैं, जैसे दूध पीने के लिए बछड़ा गाय की ओर उन्मुख होता है. उषा काल में प्राणियों के चैतन्य होने की भांति आप चैतन्य होते हैं. जैसे पक्षी आकाश में जाते हैं, वैसे ही आप स्वर्ग की ओर जाते हैं. (२४)

अवोचाम कवये मेध्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे.
गमविष्ठिरो नमसा स्तोममग्नौ दिवीव रुक्ममुरुव्यञ्चमश्रेत्.. (२५)

अग्नि कवि, मेधावी, शक्तिमान व धनवान हैं. हम वचनों से उन की वंदना करते हैं. हम अग्नि की वैसे ही उपासना करते हैं. हम उन की महिमायुक्त उपासना करते हैं. हम स्वर्ग को प्रकाशित करने वाले अग्नि के लिए उपासना करते हैं. (२५)

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः.
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे.. (२६)

अग्नि प्रथम वंदनीय, धारक, होता व यजिष्ठ (यज्ञ करने योग्य) हैं. यज्ञ के लिए इन्हें यज्ञ वेदी पर स्थापित किया गया है. भृगु आदि ऋषियों ने यजमानों के कल्याण के लिए बारबार विलक्षण अग्नि को वनों में प्रज्वलित किया. (२६)

जनस्य गोपा ऽ अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे.
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा द्युमद्विभाति भरतेभ्यः शुचिः.. (२७)

अग्नि मनुष्यों के संरक्षक, चेतनामय, जाग्रत व सुदक्ष हैं. वे अपनी ज्वालाओं

से हवि वहन करते हैं. वे स्वर्गलोक का स्पर्श करते हैं. वे द्युमान व चमकने वाले हैं. भरणपोषण कर्ता व पवित्र हैं और घृत से विशाल होते हैं. (२७)

त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितमन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वने वने.
स जायसे मथ्यमानः सहो महत्त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः.. (२८)

हे अग्नि! आप को अंगिरा ऋषि ने प्रकट किया. छिपे हुए आप को वनवन में खोजा और प्रकट किया. अरणि मंथन से आप उत्पन्न होते हैं. आप को सभी महत्ता वाला बताते हैं. आप शक्तिमान व अंगिरा के पुत्र हैं. (२८)

सखायः सं व्रः सम्यञ्चमिष ꣳ स्तोमं चाग्नये.
वर्षिष्ठाय क्षितीनामूर्जो नप्त्रे सहस्वते.. (२९)

अग्नि हमारे सखा हैं. वे हमें जल से सींचते हैं. हम उन के लिए स्तोत्र गाते हैं. वे ज्येष्ठ हैं और पृथ्वी को ऊर्जस्वी बनाते हैं. (२९)

स ꣳ समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य ऽ आ.
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर.. (३०)

अग्नि समिधा से प्रज्वलित किए जाते हैं. वे शक्तिमान, सब के स्वामी व सुख देने वाले हैं. आप यज्ञवेदी में भलीभांति प्रज्वलित होइए. आप हमें भरपूर धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३०)

त्वां चित्रश्रवस्तम हवन्ते विक्षु जन्तवः.
शोचिष्केशं पुरुप्रियाग्ने हव्याय वोढवे.. (३१)

अग्नि अद्‌भुत व हवि ग्रहण करने वाले हैं. सभी मनुष्यों के लिए अग्नि का आह्वान करते हैं. आप चमकीले केशों वाले हैं. आप अत्यंत प्रिय हैं. हम आप के लिए हवि वहन करते हैं. (३१)

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे.
प्रियं चेतिष्ठमरति ꣳ स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम्.. (३२)

अग्नि प्रिय, इष्ट, हमारे यज्ञ के प्रेरक, सब के दूत व अमर हैं. हम चैतन्य होने के लिए उन का आह्वान करते हैं. (३२)

विश्वस्य दूतममृतं विश्वस्य दूतममृतम्.
स योजते अरुषा विश्वभोजसा स दुद्रवत्स्वाहुतः.. (३३)

आप विश्व के दूत व अमृत स्वरूप हैं. अग्नि यज्ञ से भोजन पाने वाले अपने श्रेष्ठ घोड़ों को रथ में जोतते हैं. अग्नि ओज सहित द्रुत गति से यज्ञ में पहुंचते हैं. (३३)

स दुद्रवत्स्वाहुतः स दुद्रवत्स्वाहुतः.
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां देव ꣳ राधो जनानाम्.. (३४)

अग्नि द्रुत गतिमान हैं. हम उन का आह्वान करते हैं. अग्नि द्रुत गतिमान हैं. हम उन का आह्वान करते हैं. अग्नि यज्ञ के अच्छे ब्रह्मा व सुखदायी हैं. वे वैभव के देव हैं और यजमान को धन देते हैं. (३४)

अग्ने वाजस्य गोमत ऽ ईशानः सहसो यहो. अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः.. (३५)

अग्नि अन्न, गौ के स्वामी, ईश्वर, सर्वज्ञ व शीघ्र प्रदीप्त होने वाले हैं. वे हमारे लिए पृथ्वी पर धन बरसाने की कृपा करें. (३५)

स ऽ इधानो वसुष्कविरग्निरीडेन्यो गिरा. रेवदस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि.. (३६)

अग्नि ईंधनमान, धनवान व कवि हैं. हम वाणी से आप की उपासना करते हैं. आप हमें पवित्र धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (३६)

क्षपो राजन्नुत त्मनाग्ने वस्तोरुतोषसः. स तिग्मजम्भ रक्षसो दह प्रति.. (३७)

हे अग्नि! आप की लपटें विशाल हैं. आप चमकने वाले हैं. आप अपने तीक्ष्ण रूप से राक्षसों के दाहक हैं. आप प्रातः हमारे यज्ञों में बाधक राक्षसों का नाश कीजिए. (३७)

भद्रो नो अग्निराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः. भद्रा ऽ उत प्रशस्तयः.. (३८)

अग्नि हमारे कल्याण के लिए प्रकट होते हैं. हम कल्याण के लिए उन का आह्वान करते हैं. वे हमारे लिए कल्याणकारी व सौभाग्यवर्द्धक धन प्रदान करते हैं. हम कल्याणकारी यज्ञों में उन के लिए स्तोत्र गाते हैं. (३८)

भद्रा उत प्रशस्तयो भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये. येना समत्सु सासहः.. (३९)

अग्नि जिस कल्याणकारी मन से वृत्रों का नाश करते हैं, उस कल्याणकारी मन से हम उन की प्रशस्तियां गाते हैं, ताकि वे उत्साहपूर्वक हमारा कल्याण करें. (३९)

येना समत्सु सासहोव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धताम्. वनेमा ते अभिष्टिभिः.. (४०)

अग्नि जिस उत्साह से आप शत्रुनाश करते हैं, उसी उत्साह से हमारे तन को स्थिर करते हैं. हम आप की अभीष्ट कृपा से सुखी रहें. (४०)

अग्निं तं मन्ये यो वसुरस्तं यं यन्ति धेनवः.
अस्तमर्वन्त ऽ आशवोस्तंनित्यासो वाजिन ऽ इष ꣳ स्तोतृभ्य ऽ आ भर.. (४१)

अग्नि को हम मानते हैं. हम उन के धन तक वैसे ही पहुंचते हैं, जैसे गौएं घर

तक पहुंचती हैं. घोड़े भी रोज अग्नि को देख कर घुड़साल में आते हैं. अग्नि अपने याजकों को भरपूर धन प्रदान करने की कृपा करें (४१)

सो अग्निर्यो वसुर्गृणे सं यमायन्ति धेनवः.
समर्वन्तो रघुद्रुवः स ꣳ सुजातासः सूरय ऽ इष ꣳ स्तोतृभ्य ऽ आ भर.. (४२)

अग्नि अपने धन के साथ ऐसे आते हैं, जैसे गाएं बाड़े में आती हैं. तेजगति वाले घोड़े घुड़साल में आते हैं. संस्कारित यजमान अग्नि की उपासना करते हैं. अग्नि अपने याजकों को भरपूर धन प्रदान करने की कृपा करें. (४२)

उभे सुश्चन्द्र सर्पिषो दर्वी श्रीणीष ऽ आसनि.
उतो न ऽ उत्पुपूर्या उक्थेषु शवसस्पत ऽ इष ꣳ स्तोतृभ्य ऽ आ भर.. (४३)

हे अग्नि! आप चंद्रमा जैसे शांतिदाता हैं. आप घी की हवि ग्रहण करने के लिए दोनों हाथों का उपयोग करते हैं. आप शक्तिमान हैं. हम मंत्रों (उक्थ) द्वारा आप की उपासना करते हैं. आप अपने याजकों को भरपूर धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (४३)

अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्र ꣳ हृदिस्पृशम्. ऋध्यामा त ऽ ओहैः.. (४४)

हे अग्नि! जिस प्रकार प्रार्थनाओं से हम अश्वमेध के अश्व को प्रेरित करते हैं, वैसे ही यज्ञ में हम कल्याणदायी प्रार्थनाओं से हृदय को स्पर्श करते हैं. अग्नि की कृपा से यज्ञ संबंधी संकल्प मजबूत होते हैं. (४४)

अधा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य दक्षस्य साधोः. रथीर्ऋतस्य बृहतो बभूथ.. (४५)

हे अग्नि! आप यज्ञ में कल्याणकारी व फलदायी हैं. आप दक्ष व कार्य साधक हैं. सारथी की भांति आप ऋत के विशाल रथ के संचालक हैं. (४५)

एभिर्नो अर्कैर्भवा नो अर्वाङ्क् स्वर्ण ज्योतिः.
अग्ने विश्वेभिः सुमना ऽ अनीकैः.. (४६)

हे अग्नि! आप स्वर्णिम ज्योति व अच्छे मन वाले हैं. आप स्वर्णिम ज्योति सहित हमारे यहां पधारने व हमारे जीवन को प्रकाशित करने की कृपा कीजिए. (४६)

अग्नि ꣳ होतारं मन्ये दास्वन्तं वसु ꣳ सूनु ꣳ सहसो जातवेदसं विप्रं न जातवेदसम्.
य ऽ ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा.
घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषाजुह्वानस्य सर्पिषः.. (४७)

हे अग्नि! हम आप को होता मानते हैं. आप कर्मशील व दाता हैं. आप धनवान, साहस के पुत्र, सर्वज्ञ व ब्राह्मण हैं. आप हमारा सब कुछ जानते हैं. आप हमारे यज्ञ में ऊपर की ओर गमन करते हैं. आप सब का सहारा हैं. आप घृतपान करते हैं.

घृतपान आप को इष्ट है. आप ज्योतिवर्धक हैं. आप ब्रह्मज्ञानी को हम घी की आहुति भेंट करते हैं. (४७)

अग्ने त्वं नो अन्तम ऽ उत त्राता शिवो भवा वरूथ्य:.
वसुरग्निर्वसुश्रवा ऽ अच्छा नक्षि द्युमत्तम ꣳ रयिं दा:.
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिव: सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्य:.. (४८)

हे अग्नि! आप अन्यतम, ज्ञाता, शिव हमारे संरक्षक हैं. आप धनवान व प्रख्यात हैं. आप अग्रगामी, श्रेष्ठलोक वासी, धनदाता, ज्योतिमान व स्वर्गलोक के प्रकाशक हैं. हम अच्छे मन वाले और अपने सखाओं के कल्याण के लिए आप से निवेदन करते हैं. (४८)

येन ऋषयस्तपसा सत्रमायन्निन्धाना ऽ अग्नि ꣳ स्वराभरन्त:.
तस्मिन्नहं नि दधे नाके अग्निं यमाहुर्मनवस्तीर्णबर्हिषम्.. (४९)

ऋषियों ने तपस्या से अग्नि को प्रज्वलित किया. अपने स्वर से ऋषियों ने अग्नि को प्रज्वलित किया. हम स्वर्गलोक में अग्नि को धारते हैं. हम अग्नि से विस्तृत कुश के आसन पर विराजने का अनुरोध करते हैं. (४९)

तं पत्नीभिरनु गच्छेम देवा: पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यै:.
नाकं गृभ्णाना: सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिव:.. (५०)

हे अग्नि! आप दिव्य गुणों से संपन्न हैं. हम पत्नी, पुत्र, भाई आदि सहित आप का संरक्षण पाएं. हम इन सब के साथ आप का अनुकरण करें. हम स्वर्ग पाने के लिए आप का अनुकरण करें. आप श्रेष्ठकर्मा हैं. आप स्वर्गलोक में प्रकाशित होते हैं. हम आप की कृपा से श्रेष्ठ लोक को प्राप्त करें. (५०)

आ वाचो मध्यमरुहद्भुरण्युरयमग्नि: सत्पतिश्चेकितान:.
पृष्ठे पृथिव्या निहितो दविद्युतदधस्पदं कृणुतां ये पृतन्यव:.. (५१)

हे अग्नि! आप संसार का भरणपोषण करते हैं. आप सत्पति व चैतन्य हैं और पृथ्वी के पृष्ठ भाग पर स्थित हैं. आप स्वर्गलोक को भी द्युतिमान बनाते हैं. हम पवित्र मंत्रों से आप की स्थापना करते हैं. जो शक्तिशाली हमें नष्ट करना चाहते हैं, आप उन्हें नष्ट करने की कृपा करें. (५१)

अयमग्निर्वीरतमो वयोधा: सहस्रियो द्योततामप्रयुच्छन्.
विभ्राजमान: सरिरस्य मध्य ऽ उप प्र याहि दिव्यानि धाम.. (५२)

यह अग्नि वीरतम और वय (आयु) धारक हैं. वे हजारों कार्यों के साधक हैं. वे आलस्य रहित हो कर यजमान का कार्य संपादित करते हैं. वे तीनों लोकों के बीच के दिव्य धाम में हमें पहुंचाने की कृपा करें. (५२)

सम्प्रच्यवध्वमुप सम्प्रयाताग्ने पथो देवयानान् कृणुध्वम्.
पुनः कृण्वाना: पितरा युवानान्वाता ꣳ सीत् त्वयि तन्तुमेतम्.. (५३)

हे ऋषिगणो! आप अग्नि के समीप पधारिए. आप इन्हें प्रज्वलित करने व देवताओं का पथ प्रदर्शित करने की कृपा कीजिए. हमारे पितरों ने पुनः आप को युवा बनाया. पितरों ने पुनः यज्ञों में आप का विस्तार किया. (५३)

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च.
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत.. (५४)

हे अग्नि! आप उद्बुद्ध होइए. आप यजमानों को भी जाग्रत कीजिए. आप अपने इष्टजनों की इच्छापूर्ति कीजिए. सभी देवगण और यजमानगण इस की उत्तर दिशा में अधिष्ठित होने की कृपा करें. (५४)

येन वहसि सहस्रं येनाग्ने सर्ववेदसम्. तेनेमं यज्ञं नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे.. (५५)

हे अग्नि! जिस से आप हजार गुने हो जाते हैं, जिस से आप सब कुछ के ज्ञाता हो जाते हैं, आप उसी से हमारे इस यज्ञ में पधारिए और सभी देवों को लाने की कृपा कीजिए. (५५)

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथा:.
तं जानन्नग्न ऽ आरोहाथा नो वर्धया रयिम्.. (५६)

हे अग्नि! यह आप का मूल स्थान है. इस से यजमान ऋतुकाल के कर्मों के लिए जागते हैं. आप उन को जान कर आरोहण करने व हमारे धन की बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. (५६)

तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू अग्नेरन्त:श्लेषोसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ऽ
ओषधय: कल्पन्तामग्नय: पृथङ्मम ज्यैष्ठ्याय सव्रता:.
ये अग्नय: समनसोन्तरा द्यावापृथिवी इमे.
शैशिरावृतू अभिकल्पमाना ऽ इन्द्रमिव देवा ऽ अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद्ध्रुवे सीदतम्.. (५७)

तप तथा तपस्या के लिए शिशिर ऋतु से आवृत होइए. ये महीने अग्नि के भीतर से जुड़े हैं. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक सुखदायी हैं. ओषधियां आनंददायी हों. अग्नियां संकल्पशील हों. जो अग्नियां समान मन वाली हैं, वे अग्नियां स्वर्गलोक तथा पृथ्वीलोक के बीच स्थापित होने की कृपा करें. जैसे इंद्र देव आश्रय हैं, वैसे ही शिशिर ऋतु से संबंधित देव आश्रय बनें. देवगण अंगिरा ऋषि की तरह ध्रुव हो कर विराजमान होने की कृपा करें. (५७)

परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्ठे ज्योतिष्मतीम्.
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानाय विश्वं ज्योतिर्यच्छ.
सूर्यस्तेधिपतिस्तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवा सीद.. (५८)

हे अग्नि! आप परम इष्ट और ज्योतिष्मान हैं. आप स्वर्गलोक के पृष्ठ में विराजें. सारे विश्व के प्राण, अपान व व्यान के लिए विश्व ज्योति प्रदान करें. सूर्य आप के अधिपति हैं. आप अंगिरा ऋषि की तरह ध्रुव हो कर विराजिए. (५८)

लोकं पृण छिद्रं पृणाथो सीद ध्रुवा त्वम्.
इन्द्राग्नी त्वा बृहस्पति रस्मिन्योनावसीषदन्.. (५९)

इंद्र देव, अग्नि और बृहस्पति देव ने आप को यहां अधिष्ठित किया है. आप लोक के छिद्र पूरिए. आप ध्रुव होइए और यहां विराजने की कृपा कीजिए. (५९)

ता अस्य सूददोहसः सोम ꣳ श्रीणन्ति पृश्नयः.
जन्मन्देवानां विशस्त्रिष्वारोचने दिवः.. (६०)

वे इन सूर्य की किरणें हैं. वे सोमरस को पकाती हैं. सोमरस को शोभा और श्रेष्ठ रंग प्रदान करती हैं. देवताओं के जन्म में स्वर्गलोक को प्रकाशित करती हैं. (६०)

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिरः.
रथीतम ꣳ रथीनां वाजाना ꣳ सत्पतिं पतिम्.. (६१)

सभी इंद्र देव की बढ़ोतरी करते हैं. सभी अपनी वाणी से इंद्र देव के गुण गाते हैं. उन की स्तुति करते हैं. श्रेष्ठ रथी, अन्नस्वामी सत्पति आदि सभी इंद्र देव की स्तुति करते हैं. (६१)

प्रोथदश्वो न यवसेविष्यन्यदा महः संवरणाद्व्यस्थात्.
आदस्य वातो अनुवाति शोचिरध स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति.. (६२)

अग्नि प्रज्वलित हो कर भूखे घोड़े द्वारा घास के लिए की जाने वाली आवाज की तरह आवाज करते हैं. वायु का अनुकरण करते हैं, जिस से और अधिक प्रज्वलित हो जाते हैं. उन का काला धुआं सर्वत्र व्याप्त हो जाता है. (६२)

आयोष्ट्वा सदने सादयाम्यवतश्छायाया ꣳ समुद्रस्य हृदये.
रश्मीवतीं भास्वतीमा या द्यां भास्या पृथिवीमोर्वन्तरिक्षम्.. (६३)

समुद्र के हृदय में व यज्ञ सदन में आप को प्रतिष्ठित किया जाता है. आप किरणमयी व प्रकाशमयी हैं. आप पृथ्वीलोक और अंतरिक्षलोक को अपने प्रकाश से परिपूर्ण कर देते हैं. (६३)

परमेष्ठी त्वा सादयतु दिवस्पृष्ठे व्यचस्वतीं प्रथस्वतीं दिवं यच्छ दिवं दृ ꣳ ह दिवं मा हि ꣳ सीः.
विश्वस्मै प्राणायापानाय व्यानायोदानाय प्रतिष्ठायै चरित्राय.
सूर्यस्त्वाभि पातु मह्या स्वस्त्या छर्दिषा शन्तमेन तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्.. (६४)

आप परम इष्ट हैं. आप विराजिए. आप स्वर्गलोक में स्थापित होइए. आप हमें भी स्वर्गलोक दीजिए. आप हिंसा मत कीजिए. सारे विश्व के लिए प्राण, अपान, व्यान, उदान की प्रतिष्ठा के लिए कृपा कीजिए. सूर्य हमारे चरित्र की रक्षा करने की कृपा करें. आप हमारे कल्याणकारी गुणों को बनाए रखिए. आप अंगिरा ऋषि की तरह ध्रुव रहिए. आप अंगिरा ऋषि की तरह प्रतिष्ठित रहिए. (६४)

सहस्रस्य प्रमासि सहस्रस्य प्रतिमासि सहस्रस्योन्मासि साहस्रोसि सहस्राय त्वा.. (६५)

हे अग्नि! आप हजार का मापदंड हैं. आप हजार की प्रतिमा और हजार स्थानों पर विराजनीय हैं. हम हजारों उच्चगति के लिए आप की उपासना करते हैं. (६५)

सोलहवां अध्याय

नमस्ते रुद्र मन्यव ऽ उतो त ऽ इषवे नमः. बाहुभ्यामुत ते नमः.. (१)

रुद्र देव के लिए नमस्कार. आप के क्रोध को नमन. आप के बाणों के लिए नमस्कार. आप के दोनों बाहुओं के लिए नमस्कार. (१)

या ते रुद्र शिवा तनूरघोरा ऽ पापकाशिनी.
तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि.. (२)

रुद्र देव कल्याणकारी, घोर पापों के भी नाशक, शांत व बलवान हैं. रुद्रदेव हम पर कल्याणकारी कृपा दृष्टि रखें. (२)

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे.
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिꣳ सीः पुरुषं जगत्.. (३)

आप गिरिवासी हैं. आप के हाथ में हमारा भविष्य है. आप अपनी कल्याणकारी शक्ति से हमारा त्राण (कल्याण) कीजिए. आप हिंसा मत कीजिए. आप जगत् और मनुष्यों के प्रति हिंसा मत कीजिए. (३)

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छावदामसि.
यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना ऽ असत्.. (४)

हे रुद्र देव! आप पर्वतवासी हैं. हम आप के प्रति कल्याणकारी वचन बोलते हैं. आप इस सारे जग को यक्ष्मा (रोग) से दूर रखने की कृपा कीजिए. हम आप की कृपा से अच्छे मन वाले हो जाएं. (४)

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्.
अहीँश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्यो ऽ धराचीः परा सुव.. (५)

रुद्र देव अधिवक्ता, प्रथम देव व वैद्य आप सभी हिंसक प्राणियों व नीच प्रवृत्ति वालों को नष्ट करने की कृपा कीजिए. (५)

असौ यस्ताम्रो अरुण ऽ उत बभ्रुः सुमङ्गलः.
ये चैनꣳ रुद्रा ऽ अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो ऽ वैषाꣳ हेड ऽ ईमहे.. (६)

यह सर्वप्रथम तांबे जैसे रंग का होता है. फिर अरुण (लाल) रंग का और उस के बाद भूरे रंग का हो जाता है. ये जो रुद्र देव हैं इन की शक्तियां विभिन्न दिशाओं में फैली हुई हैं. सूर्य की हजारों किरणों की तरह इन की हजारों शक्तियां हैं. हम इन रुद्र देव को नमस्कार करते हैं और अपने प्रति उन की प्रशंसा चाहते हैं. (६)

असौ यो ऽ वसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः.
उतैनं गोपा ऽ अदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः.. (७)

रुद्र देव निरंतर गतिशील रहते हैं वे नीली गरदन वाले हैं और खास प्रकार के लाल रंग वाले हैं. सुबह ही सुबह ग्वाले और पनिहारिनें इन के दर्शन करती हैं. उन के दर्शन हमारे लिए भी सुखकारी हों. (७)

नमो ऽ स्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे.
अथो ये अस्य सत्वानो ऽ हं तेभ्यो ऽ करं नमः.. (८)

नीली गरदन वाले रुद्र देव के लिए नमन. हजारों आंखों वाले रुद्र देव के लिए नमन. वर्षा करने वाले रुद्र देव के लिए नमन. सत्यवान रुद्र देव के लिए नमन. (८)

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्र्योर्ज्याम्.
याश्च ते हस्त ऽ इषवः परा ता भगवो वप.. (९)

रुद्र देव धनुष की प्रत्यंचा को उतार लें. वे धारण किया हुआ अपना धनुष उतारने की कृपा करें. हाथ में जो बाण हैं वे अपनी तीक्ष्णता छोड़ने की कृपा करें. (९)

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ २ उत.
अनेशन्नस्य या ऽ इषव ऽ आभुरस्य निषङ्गधिः.. (१०)

रुद्र देव का धनुष विजयी हो. उन का धनुष प्रत्यंचा हीन हो जाए. उन का धनुष बाण और तरकसहीन हो जाए. इन का तलवार रखने का स्थान रिक्त हो जाए. कहीं भी उन के बाण न दिखाई पड़ें. (१०)

या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः.
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज.. (११)

हे रुद्र देव! आप के हाथ में धनुष है. आप हमें रोग व हिंसा से बचाइए. आप सुखदाता हैं. (११)

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः.
अथो य ऽ इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्.. (१२)

हे रुद्र देव! आप अपने धनुष से सब ओर से, सब प्रकार से हमारी रक्षा कीजिए. अपने बाण हमारे लिए मत धारिए. (१२)

अवतत्य धनुष्ट्व ꣳ सहस्राक्ष शतेषुधे.
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव.. (१३)

हे रुद्र देव! आप हजारों आंखों वाले व सैकड़ों तरकस वाले हैं. आप बाणों के मुंह निकाल दीजिए. बाणों के मुंह हमारे लिए कल्याणकारी हों. हम अच्छे मन वाले हों. (१३)

नमस्त ऽ आयुधायानातताय धृष्णवे.
उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने.. (१४)

आततायियों के लिए आयुध धारण करने वाले रुद्र देव के लिए नमन. आप की दोनों बाहुओं व आप के धनुष और तरकस दोनों के लिए नमन. (१४)

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न ऽ उक्षन्तमुत मा न ऽ उक्षितम्.
मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः.. (१५)

हे रुद्र देव! जो हमारे प्रिय हैं व जो हमारे इष्ट हैं, आप उन की रक्षा करने की कृपा कीजिए. आप हमारे महान् लोगों का वध मत कीजिए. आप हमारे छोटे बच्चों का वध मत कीजिए. आप हमारे मातापिता आदि का वध मत कीजिए. (१५)

मा नस्तोके तनये मा न ऽ आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः.
मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे.. (१६)

हे रुद्र देव! आप हमारे पुत्रों को नष्ट न करें. आप हमारे पौत्रों को नष्ट न करें. आप हमारी आयु को नष्ट न करें. आप हमारी गायों को नष्ट न करें. आप हमारे घोड़ों को नष्ट न करें. आप हमारे वीरों को नष्ट न करें. आप हमारी स्त्रियों को नष्ट न करें. हम सब हविमान हो कर आप का आह्वान कर रहे हैं. (१६)

नमो हिरण्यबाहवे सेनान्ये दिशां च पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यः पशूनां पतये नमो नमः शष्पिञ्जराय त्विषीमते पथीनां पतये नमो नमो हरिकेशायोपवीतिने पुष्टानां पतये नमः.. (१७)

सोने से सज्जित बाहु वाले को नमन. दिशापति को नमन. सेनानी को नमन. वृक्षों को नमन. हरे बालों वाले को नमन. पशुपति को नमन. कोंपल जैसे रंग वाले को नमन. पथपति को नमन. हरे केश वाले को नमन. यज्ञोपवीतधारी को नमन. पुष्टता के स्वामी को नमन. (१७)

नमो बभ्लुशाय व्याधिने ऽ न्नानां पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै जगतां पतये नमो नमो रुद्रायाततायिने क्षेत्राणां पतये नमो नमः सूतायाहन्त्यै वनानां पतये नमः.. (१८)

भूरे रंग वाले को नमन. रोगपति को नमन. अन्नपति को नमन. जगहित हेतु आयुधधारी को नमन. संसारपति को नमन. आततायियों से बचाने वाले को नमन.

क्षेत्रपति को नमन. अवह्य सारथी को नमन. वनों के स्वामी को नमन. रुद्र देव को नमन. रुद्र देव को नमन. रुद्र देव को नमन. (१८)

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणां पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौषधीनां पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय कक्षाणां पतये नमो नम ऽ उच्चैर्घोषायाक्रन्दयते पत्तीनां पतये नमः.. (१९)

लाल रंग वाले स्थापक देव को नमन. वृक्षपति को नमन. भुवनपति को नमन. धनपति को नमन. ओषधिपति को नमन. मंत्रणादाता को नमन. व्यापारपति को नमन. कक्षापति को नमन. उच्चघोष करने वाले को नमन. भयंकर क्रंदन करने वाले को नमन. (१९)

नमः कृत्स्नायतया धावते सत्वनां पतये नमो नमः सहमानाय निव्याधिन ऽ – आव्याधिनीनां पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय स्तेनानां पतये नमो नमो निचेरवे परिचरायारण्यानां पतये नमः.. (२०)

सत्यपति को नमन. चोर नियंत्रक को नमन. रोग नियंत्रक को नमन. उपद्रव नियंत्रक को नमन. अपहरण नियंत्रक को नमन. वनपालक को नमन. रुद्र देव को नमन. (२०)

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूनां पतये नमो नमो निषङ्गिण ऽ इषुधिमते तस्कराणां पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघासद्भ्यो मुष्णतां पतये नमो नमोसिमद्भ्यो नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानां पतये नमः.. (२१)

ठगने और लूटने वालों के नियंत्रक को नमन. गुप्तचरों के नियंत्रक को नमन. उपद्रव नियंत्रक को नमन. चोरपति को नमन. शस्त्रयुक्त शत्रुनाशक को नमन. मूठ पति को नमन. रात्रिपति को नमन. परधन हारक को नमन. (२१)

नम ऽ उष्णीषिणे गिरिचराय कुलुञ्चानां पतये नमो नम ऽ इषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम ऽ आतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च वो नमो नम ऽ आयच्छद्भ्यो ऽ स्यद्भ्यश्च वो नमः.. (२२)

पगड़ीधारी को नमन. पर्वत पर विचरने वाले को नमन. धन हरने वालों केनियंत्रक को नमन. दुष्टों को डराने वाले रुद्र देव को नमन. धनुष बाणधारी को नमन. बाण प्रहरी रुद्र को नमन. धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाने वाले रुद्र को नमन. (२२)

नमो विसृजद्भ्यो विध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमः शयानेभ्य ऽ आसीनेभ्यश्च वो नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः.. (२३)

बाण छोड़ने वाले को नमन. शत्रुवध करने वाले को नमन. सोने वाले को नमन.

जागने वाले को नमन. बैठने वाले को नमन. ठहरने वाले को नमन. दौड़ने वाले को नमन. चित्त में विराजमान रुद्र देव को नमन. (२३)

नम: सभाभ्य: सभापतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्यश्च वो नमो नमऽ-आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नमऽ उगणाभ्यस्तृ ंꣳ हतीभ्यश्च वो नम:.. (२४)

सभा स्वरूप रुद्र देव को नमन. सभापति रुद्र देव को नमन. अश्वपति रुद्र देव को नमन. निरोगपति रुद्र देव को नमन. युद्ध में सहायक रुद्र देव को नमन. शत्रु प्रहरी रुद्र देव को नमन. (२४)

नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नम:.. (२५)

गणों को नमन. गणपति को नमन. व्रतपति को नमन. व्रत के अधिपति को नमन. बुद्धिमान को नमन. बुद्धिमानों को नमन, विविध रूपवान को नमन. बहुत रूपवान को नमन. (२५)

नम: सेनाभ्य: सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो अरथेभ्यश्च वो नमो नम: क्षत्तृभ्य: संग्रहीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्यो अर्भकेभ्यश्च वो नम:.. (२६)

सेना स्वरूप को नमन. सेनापति को नमन. रथवान को नमन. रथहीन को नमन. क्षत्रिय को नमन. संग्रहकर्ता को नमन. महान् स्वरूप को नमन. कनिष्ठ को नमन. (२६)

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नम: कुलालेभ्य: कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्य: पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नम: श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नम:.. (२७)

तरकसकार और रथकार को नमन. कुम्हार और लोहार को नमन. भील और जंगलवासी को नमन. कुत्ता पालक और शिकारियों को नमन. (२७)

नम: श्वभ्य: श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रुद्राय च नम: शर्वाय च पशुपतये च नमो नीलग्रीवाय च शितिकण्ठाय च.. (२८)

कुत्तों को नमन. कुत्तों के स्वामी के लिए नमन. संसार के स्वामी को नमन. रुद्र देव के लिए नमन. विश्व स्वामी को नमन. पशुपति के लिए नमन. पशुपति को नमन. नीली गरदन वाले व नीले कंठ वाले के लिए नमन. (२८)

नम: कपर्दिने च व्युप्तकेशाय च नम: सहस्राक्षाय च शतधन्वने च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेषुमते च.. (२९)

जटामय रुद्र को नमन. मुंडित के लिए नमन. हजारों आंखों वाले के लिए

नमन. सैकड़ों धनुष वाले के लिए नमन. गिरि में सोने वाले के लिए नमन. सभी में व्याप्त के लिए नमन. सुखदाता के लिए नमन. इषुमान (बाणधारी) के लिए नमन. (२९)

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो वृद्धाय च सवृधे च नमो ऽ ग्र्याय च प्रथमाय च.. (३०)

ह्रस्व के लिए नमन. वामन के लिए नमन. विशाल के लिए नमन. वर्ष वालों के लिए नमन. वृद्ध के लिए नमन. आकर्षक युवारूप के लिए नमन. अग्रणी के लिए नमन. प्रथम के लिए नमन. (३०)

नम ऽ आशवे चाजिराय च नमः शीघ्य्राय च शीभ्याय च नम ऽ ऊर्म्याय चा वस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च.. (३१)

तीव्र गति वाले के लिए नमन. शीघ्र कर्म करने वाले के लिए नमन. वेगवान के लिए नमन. लहर वाले के लिए नमन. जल में स्थित के लिए नमन. नदी में व द्वीप पर रहने वाले के लिए नमन. (३१)

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च.. (३२)

ज्येष्ठ के लिए नमन. कनिष्ठ के लिए नमन. पूर्वज के लिए नमन. वर्तमान के लिए नमन. मध्यम के लिए नमन. अप्रौढ़ के लिए नमन. जघन्य और जाग्रत के लिए नमन. (३२)

नमः सोभ्याय च प्रतिसर्याय च नमो याम्याय च क्षेम्याय च नमः श्लोक्याय चावसान्याय च नम ऽ उर्वर्याय च खल्याय च.. (३३)

सौम्य के लिए नमन. प्रत्याक्रमण करने वाले के लिए नमन. न्यायकर्ता के लिए नमन. कुशलक्षेम वाले के लिए नमन. श्लोक वाले के लिए नमन. समापन वाले के लिए नमन. लहरों वाले व संग्रह करने वाले के लिए नमन. (३३)

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमः श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम ऽ आशुषेणाय चाशुरथाय च नमः शूराय चावभेदिने च.. (३४)

वन देव के लिए नमन. कक्ष में स्थित के लिए नमन. काम में स्थित लिए नमन. प्रतिश्रवण में स्थित के लिए नमन. शीघ्रगामी रथ वाले के लिए नमन. शूरवीर व शत्रुओं के हृदय भेदक के लिए नमन. (३४)

नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च.. (३५)

सिर की रक्षा हेतु धारण करने वाले (उपकरण) के लिए नमन. कवचधारी के लिए नमन. रथ के भीतर या हाथी के हौदे में बैठने वाले के लिए नमन. प्रख्यात के लिए नमन. प्रख्यात सेना के लिए नमन. दुंदुभि व वाद्य वाले के लिए नमन. (३५)

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निषङ्गिणे चेषुधिमते च नमस्तीक्ष्णेषवे चायुधिने च नमः स्वायुधाय च सुधन्वने च.. (३६)

धैर्यधारी के लिए नमन. परामर्श (करने में दक्ष) के लिए नमन. बाणधारी के लिए नमन. तरकस धारण करने वाले के लिए नमन. तीक्ष्ण बाणों वाले के लिए नमन. आयुधधारी के लिए नमन. स्वयं के आयुध वाले व सुंदर धनुष वाले के लिए नमन. (३६)

नमः स्रुत्याय च पथ्याय च नमः काट्याय च नीप्याय च नमः कुल्याय च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च.. (३७)

छोटे मार्ग में स्थित रहने के लिए नमन. बड़े मार्ग में स्थित रहने के लिए नमन. कठोर मार्ग में स्थित रहने के लिए नमन. पहाड़ के निचले भाग में स्थित रहने के लिए नमन. पतली नदी वाले के लिए नमन. सरोवर वाले के लिए नमन. नदी में रहने वाले व छोटे तालाब में रहने वाले के लिए नमन. (३७)

नमः कूप्याय चावट्याय च नमो वीध्य्राय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च.. (३८)

कुएं में स्थित रहने वाले के लिए नमन. गड्ढे में रहने वाले के लिए नमन. प्रकाश और धूप में रहने वाले के लिए नमन. बादलों में रहने वाले के लिए नमन. विद्युत में रहने वाले के लिए नमन. वर्षा में रहने वाले व अवर्षा में रहने वाले के लिए नमन. (३८)

नमो वात्याय च रेष्म्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमः सोमाय च रुद्राय च नमस्ताम्राय चारुणाय च.. (३९)

हवा में स्थित के लिए नमन. प्रलय में स्थित के लिए नमन. वास्तुकला में स्थित के लिए नमन. वास्तुकला का पालन करने वाले के लिए नमन. सोम देव के लिए नमन. रुद्र देव के लिए नमन. तांबे जैसे रंग वाले व गुलाबी रंग वाले के लिए नमन. (३९)

नमः शङ्गवे च पशुपतये च नम ऽ उग्राय च भीमाय च नमो ऽ ग्रेवधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय.. (४०)

सींग वाले के लिए नमन. पशुपति के लिए नमन. उग्र के लिए नमन. भीम के लिए नमन. अग्र के लिए नमन. विचारवान के लिए नमन. दूर का विचार करने वाले

के लिए नमन. शत्रुहंता के लिए नमन. शत्रुओं के हनन में लगे हुए के लिए नमन. वृक्ष में स्थित के लिए नमन. हरे केश वाले व तारने वाले के लिए नमन. (४०)

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च.. (४१)

शंभु के लिए नमन. दोनों देवों के लिए नमन. शंकर के लिए नमन. मय के लिए नमन. शिव व उन से इतर देव के लिए नमन. (४१)

नमः पार्याय चावार्याय च नमः प्रतरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमः शष्प्याय च फेन्याय च.. (४२)

समुद्र के इस पार वाले के लिए नमन. समुद्र के उस पार वाले के लिए नमन. पार लगाने वाले के लिए नमन. तीर्थवासी के लिए नमन. तट पर स्थित के लिए नमन. घास में स्थित के लिए नमन. समुद्र में फेन के लिए नमन. (४२)

नमः सिकत्याय च प्रवाह्याय च नमः कि ꣳ शिलाय च क्षयणाय च नमः कपर्दिने च पुलस्तये च नम ऽ इरिण्याय च प्रपथ्याय च.. (४३)

रेत में स्थित के लिए नमन. प्रवाह में स्थित के लिए नमन. पत्थर में स्थित के लिए नमन. जल में स्थित के लिए नमन. कौड़ी, सीप आदि में स्थित के लिए नमन. पुल में स्थित के लिए नमन. तिनकों और श्रेष्ठ पथ में स्थित के लिए नमन. (४३)

नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च.. (४४)

चरागाह में स्थित के लिए नमन. बाड़े में स्थित के लिए नमन. शय्या में स्थित के लिए नमन. घर में स्थित के लिए नमन. हृदय में स्थित के लिए नमन. कठिन राह में स्थित के लिए नमन. काट कर बनाई गई गुफा व गह्वर (गहरा) में स्थित के लिए नमन. (४४)

नमः शुष्क्याय च हरित्याय च नमः पा ꣳ सव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऽ ऊर्व्याय च सूर्व्याय च.. (४५)

सूखी लकड़ी में स्थित के लिए नमन. हरियाली में स्थित के लिए नमन. पुष्प में स्थित के लिए नमन. धूल में स्थित के लिए नमन. अदृश्य में स्थित के लिए नमन. दृश्य में स्थित के लिए नमन. उर्वर व अधिकाधिक में स्थित के लिए नमन. (४५)

नमः पर्णाय च पर्णशदाय च नम ऽ उदुरमाणाय चाभिघ्नते च नम ऽ आखिदते च प्रखिदते च नम ऽ इषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवाना ꣳ हृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम ऽ आनिर्हतेभ्यः.. (४६)

पत्तों में विराजने वाले के लिए नमस्कार. नीचे गिरे हुए पत्तों में विराजने वाले के लिए नमस्कार. उत्पन्न होने के लिए निरंतर प्रयास में रहने वाले के लिए नमस्कार. शत्रुओं के संहारक के लिए नमस्कार. कर्महीन को दुःख देने वाले के लिए नमन. बाण पैदा करने वाले के लिए नमन. धनुष पैदा करने वाले के लिए नमन. देवताओं के हृदय में वास करने वाले के लिए नमन. सृष्टि का चिंतन करने वाले के लिए नमन. पापपुण्य में रहने वालों को विभक्त करने वाले के लिए नमन. (४६)

द्रापे अन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित.
आसां प्रजानामेषां पशूनां मा भेर्मा रोङ्मो च नः किंचनाममत्.. (४७)

हे रुद्र देव! आप पापियों को अधोगति देने वाले हैं. आप अन्न बल के स्वामी हैं. आप नीले और लाल रंग के हैं. आप प्रजा को कष्ट न देने वाले हैं. आप पशुओं को भयभीत नहीं होने देते हैं. आप हमें थोड़ा सा भी रोग ग्रस्त मत होने दीजिए. (४७)

इमा रुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्र भरामहे मतीः.
यथा शमसद् द्विपदे चतुष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे ऽ अस्मिन्ननातुरम्.. (४८)

हम यजमान अपनी बुद्धि रुद्र देव को अर्पित करते हैं. वे वीरों के प्रेरक व अति बलवान हैं. जैसे दोपायों और चौपायों के शांत रहने से गांव शांत रहते हैं, वैसे ही हम सब के शांत और चिंता मुक्त रहने से हमारे गांव भी शांतिमय रहें. (४८)

या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी.
शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे.. (४९)

हे रुद्र देव! आप कल्याण स्वरूप हैं. ओषधि की तरह बीमारी से मुक्त करने वाले हैं. शरीर को ताजगी देने वाले हैं. आप का वह स्वरूप हमारे लिए सुखदायी हो. (४९)

परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्मतिरघायोः.
अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड.. (५०)

हे रुद्र देव! आप हमें अस्त्रशस्त्रों से दूर रखिए. हम दुर्मति होने से बचें. हम क्रोधित होने से बचें. हे मघवन्! आप अपना धनुष और प्रत्यंचा उतार दीजिए. ताकि यजमान निर्भय हो सकें. आप हमारी पीढ़ियों को सुखी बनाने की कृपा कीजिए. (५०)

मीढुष्टम शिवतम शिवो नः सुमना भव.
परमे वृक्ष ऽ आयुधं निधाय कृत्तिं वसान ऽ आ चर पिनाकं बिभ्रदा गहि.. (५१)

हे रुद्र देव! आप अभीष्ट फलदाता व अतीव कल्याण करने वाले हैं. आप

हमारे प्रति कल्याणकारी व अच्छे मन वाले होइए. आप वृक्ष की ठेठ ऊंचाई पर अपने आयुध रख दीजिए. पशुओं की खाल के वस्त्र धारण कर के पधारिए. आप केवल अपना धनुष धारण कर के आइए. (५१)

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवः.
यास्ते सहस्र ꣳ हेतयो ऽ न्यमस्मन्नि वपन्तु ताः.. (५२)

हे रुद्र देव! आप उपद्रवनाशी हैं. आप शुद्ध स्वरूप हैं. आप हमें भाग्यवान बनाइए. आप को नमस्कार. आप के हजारों अस्त्र हमारे हित साधक हों. वे अस्त्र अन्यों (दुश्मनों) पर पड़ें. (५२)

सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः.
तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि.. (५३)

हे रुद्र देव! आप की बाहुओं में हजारों प्रकार के हजारों अस्त्रशस्त्र हैं. आप उन आयुधों का मुंह हमारी ओर से फेरने की कृपा कीजिए. (५३)

असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽ अधि भूम्याम्.
तेषा ꣳ सहस्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि.. (५४)

हे रुद्र देव! आप असंख्य लोगों के नियंत्रक हैं. आप के हजारों गण भूमि पर अधिष्ठित हैं. आप अपने धनुषों को हम से हजारों योजन (दूरी सूचक एक इकाई) दूर रखने की कृपा कीजिए. (५४)

अस्मिन् महत्यर्णवे ऽ न्तरिक्षे भवा ऽ अधि.
तेषा ꣳ सहस्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि.. (५५)

अनेक लोगों को अपने वश में करने वाले रुद्र देव के हजारों गण इस पृथ्वी पर हैं. वे अपने गणों के धनुषों को हम से दूर रखें. (५५)

नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिव ꣳ रुद्रा ऽ उपश्रिताः.
तेषा ꣳ सहस्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि.. (५६)

हे रुद्र देव! आप नीली गरदन व सफेद कंठ वाले हैं. आप स्वर्गलोक में निवास करते हैं. आप अपने धनुषों को हम से हजारों योजन दूर रखिए. (५६)

नीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्वा ऽ अधः क्षमाचराः.
तेषा ꣳ सहस्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि.. (५७)

हे रुद्र देव! आप नीली गरदन वाले और सफेद कंठ वाले हैं. आप नीचे भूमंडल में विचरण करते हैं. आप अपने धनुषों को हम से हजारों योजन दूर रखने की कृपा कीजिए. (५७)

ये वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः.
तेषा ꣳ सहस्त्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि.. (५८)

हे रुद्र देव! आप नीली गरदन वाले हैं. आप का रंग हरा है. आप अत्यंत तेजस्वी हैं. आप वृक्षादि में अधिष्ठित हैं. आप अपने धनुष को प्रत्यंचा हीन बना कर हम से हजारों योजन दूर रखिए. (५८)

ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः.
तेषा ꣳ सहस्त्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि.. (५९)

रुद्र देव! आप भूतों के अधिपति व विशेष शिखा (चोटी) सहित हैं. जो जटाधारी हैं, आप उन के धनुषों को प्रत्यंचा रहित बनाइए. आप उन्हें हम से हजारों योजन दूर कीजिए. (५९)

ये पथां पथिरक्षय ऽ ऐलबृदा ऽ आयुर्युधः.
तेषा ꣳ सहस्त्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि.. (६०)

हे रुद्र देव! आप कई राहों के राहगीरों के रक्षक हैं. अन्न से प्राणियों को पोषण देने वाले व आयुधधारी हैं. जो जीवन के युद्ध में जूझ रहे हैं, आप उन के धनुषों को हम से हजारों योजन दूर कीजिए. आप उन के धनुषों को प्रत्यंचा रहित बनाइए. (६०)

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः.
तेषा ꣳ सहस्त्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि.. (६१)

हे रुद्र देव! जो तीर्थों में हाथ में भाले, बाण आदि ले कर विचरते हैं, आप उन के धनुषों को प्रत्यंचा रहित बना दीजिए. आप उन्हें हम से हजारों योजन दूर कर दीजिए. (६१)

ये ऽ न्नेषु विविध्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्.
तेषा ꣳ सहस्त्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि.. (६२)

हे रुद्र देव! जो पात्रों में अन्न पीने वाले लोगों को परेशान करते हैं, आप उन के धनुषों को प्रत्यंचा रहित बना दीजिए. आप उन के धनुषों को हम से हजारों योजन दूर कर दीजिए. (६२)

य एतावन्तश्च भूया ꣳ सश्च दिशो रुद्रा वितस्थिरे.
तेषा ꣳ सहस्त्रयोजने ऽ व धन्वानि तन्मसि.. (६३)

हे रुद्र देव! जो दिशाओं और बहुत दिशाओं में स्थित रहते हैं, आप उन के धनुषों को प्रत्यंचा रहित बनाइए. आप उन के धनुषों को हम से हजारों योजन दूर रखने की कृपा कीजिए. (६३)

नमो ऽ स्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः.
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः.
तेभ्यो नमो अस्तु ते नो ऽ वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः.. (६४)

हे रुद्र देव! जो स्वर्गलोक में रहते हैं, जो बरसात की तरह बाण बरसाते हैं, हम उन्हें पूर्व दिशा में नमस्कार करते हैं. हम उन्हें पश्चिम दिशा में नमस्कार करते हैं. हम उन्हें उत्तर दिशा में नमस्कार करते हैं. हम उन्हें दक्षिण दिशा में नमस्कार करते हैं. उन रुद्रगण को नमस्कार हो. रुद्रगण द्वारा हमें सुख और रक्षा प्राप्त हो. जो हम से द्वेष भाव रखते हैं, जिन से हम द्वेषभाव रखते हैं. रुद्रगण अपनी दाढ़ में ऐसे लोगों को रख लें (दबा लें). (६४)

नमो ऽ स्तु रुद्रेभ्यो ये ऽ न्तरिक्षे येषां वात ऽ इषवः.
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः.
तेभ्यो नमो अस्तु ते नो ऽ वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः.. (६५)

हे रुद्रगण! अंतरिक्ष में स्थित आप को नमन. आप के बाण हवा की तरह हैं. हम पूर्व दिशा में उन्हें प्रणाम करते हैं. हम पश्चिम दिशा में उन्हें प्रणाम करते हैं. हम दक्षिण दिशा में उन्हें प्रणाम करते हैं. उन्हें नमस्कार. वे हमारी रक्षा करें और हमें सुख प्रदान करें. जो हम से द्वेष करते हैं, जिन से हम द्वेष करते हैं, रुद्रगण उन्हें अपनी दाढ़ में रख लें (दबा लें). (६५)

नमो ऽ स्तु रुद्रेभ्यो ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः.
तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः.
तेभ्यो नमो अस्तु ते नो ऽ वन्तु ते नो मृडयन्तु ते यं द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः.. (६६)

हे रुद्रगण! पृथ्वी पर स्थित आप को नमन. आप के बाण अन्न बरसाते हैं. हम पूर्व दिशा में आप को नमस्कार करते हैं. हम पश्चिम दिशा में आप को नमस्कार करते हैं. हम उत्तर दिशा में आप को नमस्कार करते हैं. हम दक्षिण दिशा में आप को नमस्कार करते हैं. आप हमारी रक्षा करें. आप हमें सुख दें. आप उन्हें दाढ़ में रख लें (दबा लें), जो हम से द्वेष रखते हैं जिन से हम द्वेष रखते हैं. (६६)

सत्रहवां अध्याय

अश्मन्नूर्जं पर्वते शिश्रियाणामद्भ्य ऽ ओषधीभ्यो वनस्पतिभ्यो अधि सम्भृतं पयः.
तां न ऽ इषमूर्जं धत्त मरुतः स ꣳ रराणा अश्मँस्ते क्षुन्मयि त ऽ ऊर्ग्यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु.. (१)

हे मरुद्‌गण! आप हमें अन्न से ऊर्जस्वी बनाने की कृपा करें. आप पत्थरों, ओषधियों, जलों व वनस्पतियों का बल धारिए. उन्हें और अधिक रसपूर्ण बनाइए. आप अन्न धारिए. आप की क्षुधा शांत हो. आप का क्रोध उन लोगों पर हो, जो हम से द्वेष रखते हैं. (१)

इमा मे अग्न ऽ इष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च दश च शतं च शतं च सहस्रं च सहस्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्धश्चैता मे अग्न ऽ इष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिँल्लोके.. (२)

हे अग्नि! ये इष्टकाएं (हवि का सूक्ष्म भाग) हमारे लिए मनोरथपूरक कामधेनु की तरह हो जाएं. ये इष्टकाएं दस गुनी हो जाएं. दस से दस गुनी हो जाएं. सौ की दस गुनी हजार हो जाएं. हजार की दस गुनी हो कर दस हजार हो जाएं. अयुत (दस हजार) की गुनी हो कर नियुत (लाख) हो जाएं. नियुत की दस गुनी हो कर प्रयुत (दस लाख) हो जाएं. प्रयुत की दस गुनी हो कर करोड़ हो जाएं. करोड़ की दस गुनी हो कर दस करोड़ हो जाएं. दस करोड़ की दस गुनी हो कर अरब हो जाएं. समुद्रसमुद्र की दस गुनी मध्य (शंख पद्‌म), मध्य की दस गुनी अंत. अंत की दस गुनी हो कर परार्द्ध संख्या तक बढ़ती जाएं. हे अग्नि! इष्टकाएं इस लोक और परलोक में हमारा कल्याण करें. ये इष्टकाएं हमारे लिए कामधेनु की तरह हो जाएं. (२)

ऋतवः स्थ ऽ ऋतावृध ऽ ऋतुष्ठाः स्थ ऽ ऋतावृधः.
घृतश्च्युतो मधुश्च्युतो विराजो नाम कामदुघा ऽ अक्षीयमाणाः.. (३)

इष्टकाएं सत्य को स्थिर रखती हैं, सत्य की बढ़ोतरी करती हैं, इष्टका सत्य में स्थित रहती हैं. इष्टकाएं सत्य में बढ़ोतरी करती हैं. ये घी व मधु चुआएं. ये शोभित और कामनापूरक हों. कभी क्षीण न हों. (३)

समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परि व्ययामसि. पावको अस्मभ्य ꣳ शिवो भव.. (४)

हे अग्नि! हम आप को समुद्र के कवक से चारों ओर से घेर कर रखते हैं. आप हमें पवित्र बनाने वाले हैं. आप हमारे प्रति कल्याणकारी होइए. (४)

हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि व्ययामसि. पावको अस्मभ्य ꣳ शिवो भव.. (५)

हे अग्नि! हम भ्रूण को लपेटने की तरह आप को हिम के आवरण से चारों ओर से घेर लेते हैं. आप हमें पवित्र बनाने वाले हैं. आप हमारे प्रति कल्याणकारी होइए. (५)

उप ज्मन्नुप वेतसे ऽ वतर नदीष्वा.
अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरागहि सेमं नो यज्ञं पावकवर्ण ꣳ शिवं कृधि.. (६)

हे अग्नि! आप हमारे समीप पधारिए. हे अग्नि! आप बड़वाग्नि के साथ नदी में बहते हैं. हे अग्नि! आप जल के पित्त हैं. मंडूकि को अग्नि का अनुसरण करना चाहिए. आप पृथ्वी से बाहर निकलिए. जल में प्रवेश कीजिए. आप हमारे इस यज्ञ को पवित्र व कल्याणकारी बनाइए. (६)

अपामिदं न्ययन ꣳ समुद्रस्य निवेशनम्.
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ꣳ शिवो भव.. (७)

यह अग्नि जल के आश्रय समुद्र के घर में रहते हैं. आप हमारे शत्रुओं को तपाइए. आप हमारे इस यज्ञ को पवित्र व कल्याणकारी बनाइए. (७)

अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया. आ देवान् वक्षि यक्षि च.. (८)

हे अग्नि! आप पवित्र करने वाले और चमकने वाले हैं. आप देवों को जिह्वा से बुलाइए. आप यज्ञ कराइए. (८)

स नः पावक दीदिवो ऽ ग्ने देवाँ २ इहा वह. उप यज्ञ ꣳ हविश्च नः.. (९)

हे अग्नि! आप पवित्र बनाने वाले हैं. स्वर्गलोक को दीप्तिमय बनाते हैं. आप यहां देवों का आह्वान कीजिए. यज्ञ के समीप विराजने व उन के पास इस हवि को पहुंचाने की कृपा कीजिए. (९)

पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच ऽ उषसो न भानुना.
तूर्वन् न यामन्नेतशस्य नू रण ऽ आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः.. (१०)

हे अग्नि! आप पवित्र करने वाली ज्वालाओं से प्रदीप्त होते हैं. जैसे उषा काल में किरणों से घिरा हुआ सूर्य शोभता है, वैसे ही आप ज्वालाओं से शोभते हैं. जैसे वेगवान घोड़े पर बैठा हुआ सैनिक शोभा देता है, उसी प्रकार आप अपने वेग (तेज) से शोभा पाते हैं. (१०)

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे.
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ꣳ शिवो भव.. (११)

हे अग्नि! आप को नमस्कार. आप की ज्वालाएं चमकीली हैं. आप को नमस्कार. हम आप की अर्चना करते हैं. आप पवित्र करने वाले हैं. जो हमारे द्वेषी हैं, आप उन्हें संतप्त कीजिए. आप हमारे प्रति कल्याणकारी होइए. (११)

नृषदे वेडप्सुषदे वेड् बर्हिषदे वेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट्.. (१२)

मनुष्यों में स्थित अग्नि (जठराग्नि) हेतु आहुति अर्पित है. जलों में स्थित अग्नि (बड़वाग्नि) हेतु आहुति अर्पित है. कुश में स्थित अग्नि हेतु आहुति अर्पित है. (१२)

ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियाना ꣳ संवत्सरीणमुप भागमासते.
अहुतादो हविषो यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य.. (१३)

जो देव देवताओं के यज्ञ में यज्ञीय आहुति ग्रहण करते हैं, वे इस यज्ञ में यज्ञ के भाग हवि को ग्रहण करें. देवगण यज्ञ में बिना बुलाए ही मधु और घी की आहुति को स्वयं ही पीने की कृपा करें. (१३)

ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन् ये ब्रह्मणः पुर ऽ एतारो अस्य.
येभ्यो न ऽ ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या ऽ अधि स्नुषु.. (१४)

जिन देवताओं ने देवाधिदेव की तरह देवत्व का अधिकार पाया, जो ब्राह्मण के सामने विचरते हैं, जिन के बिना शरीर किंचित् (जरा) भी पवित्र नहीं होता वे न स्वर्गलोक में हैं, न पृथ्वी में हैं, बल्कि हर एक में विद्यमान हैं. (१४)

प्राणदा ऽ अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः.
अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ꣳ शिवो भव.. (१५)

हे अग्नि! आप प्राणदाता, अपानदाता, व्यानदाता व वर्चस्वदाता हैं. हे अग्नि! आप वायुदाता व शक्तिदाता हैं. आप के आयुध हमारे शत्रुओं पर पड़ें. आप पवित्र करने वाले हैं. आप हमारे प्रति कल्याणकारी होइए. (१५)

अग्निस्तिग्मेन शोचिषा यासद्विश्वं न्यत्त्रिणम्. अग्निर्नो वनते रयिम्.. (१६)

हे अग्नि! आप की ज्वालाएं शुचिपूर्ण (पवित्र) हैं. हे अग्नि! आप की ज्वालाएं सारे विश्व का कल्याण करने वाली हैं. अग्नि हमें धन प्रदान करने की कृपा करें. (१६)

य इमा विश्वा भुवनानि जुह्वदृषिर्होता न्यसीदत् पिता नः.
स ऽ आशिषा द्रविणमिच्छमानः प्रथमच्छदवराँ २ आ विवेश.. (१७)

जो परम शक्ति इस पूरे विश्व का पालनपोषण और संहार करती है, हम उन से धन की इच्छा करते हुए पहले ही उन्हें भी अपने वश में रखते हैं और हम भी उन के वश में रहते हैं. (१७)

कि ꣳ स्विदासीदधिष्ठानमारम्भणं कतमत्स्वित्कथासीत्.
यतो भूमिं जनयन् विश्वकर्मा वि द्यामौर्णोन्महिना विश्वचक्षाः.. (१८)

परमात्मा किस अधिष्ठान पर आरंभ में अधिष्ठित थे ? इन की उत्पत्ति की क्या कथा है ? वह उत्पादक द्रव्य कैसा था ? वह भूमि पर उत्पन्न हुआ. विश्वकर्मा सारे विश्व का द्रष्टा है. स्वर्गलोक तक व्याप्त है. (१८)

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्.
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव ऽ एकः.. (१९)

वह परम शक्ति संपूर्ण विश्व पर आंख रखने वाली है. वह परम शक्ति सब ओर मुंह वाली है. वह परम शक्ति सब ओर बाहु वाली है. वह परम शक्ति सब ओर सामर्थ्य वाली है. उस परम शक्ति ने अपने बाहुबल की क्षमता से स्वर्ग को बिना आधार के उत्पन्न किया. परमात्मा एक है. (१९)

कि ꣳ स्विद्वनं क ऽ उ स वृक्ष ऽ आस यतो द्यावापृथिवी निष्टतक्षुः.
मनीषिणो मनसा पृच्छतेदु तद्यदध्यतिष्ठद्भुवनानि धारयन्.. (२०)

वह वन कौन सा है, वह वृक्ष कौन सा है, जिस से ईश्वर ने स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक को रचा. आप मनीषियों के मन से पूछिए कि सभी भुवनों को धारते हुए वे स्वयं किस स्थान पर अधिष्ठित हैं. (२०)

या ते धामानि परमाणि यावमा या मध्यमा विश्वकर्मन्नुतेमा.
शिक्षा सखिभ्यो हविषि स्वधावः स्वयं यजस्व तन्वं वृधानः.. (२१)

जिस ने ये परमधाम रचे; जो उन्नत, निम्न और मध्य धाम का रचयिता है; उस सर्जक के प्रति हम अपना सखा भाव प्रकट करते हैं. हम आप के लिए हवि धारते हैं. हम आप के लिए स्वयं यज्ञ करते हैं और आप के तन की बढ़ोतरी करते हैं. (२१)

विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम्.
मुह्यन्त्वन्ये अभितः सपत्ना ऽ इहास्माकं मघवा सूरिरस्तु.. (२२)

हे विश्वकर्मा! हम हवि से आप की बढ़ोतरी करते हैं. आप स्वयं यज्ञ कीजिए. आप पृथ्वी के हित के लिए यज्ञ कीजिए. आप हमारे शत्रुओं को मोहित कीजिए. आप यहां ज्ञानवान सूर्य स्वरूप हैं. (२२)

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे अद्या हुवेम.
स नो विश्वानि हवनानि जोषद्विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा.. (२३)

हम आज अपनी रक्षा के लिए वाचस्पति व विश्वकर्मा को आमंत्रित करते हैं. हम आज अपनी रक्षा के लिए मन जैसे वेगवान को आमंत्रित करते हैं. आप सत्कर्म करने वाले हैं. आप हमारे यज्ञ में हमारे द्वारा भेंट की गई हवि का प्रेम से भोग लगाइए. (२३)

विश्वकर्मन् हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्.
तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्.. (२४)

आप विश्व के रचयिता हैं. आप ने हवियों से इंद्र देव की बढ़ोतरी की. आप ने इंद्र देव को संसार का रक्षक बनाया. आप ने इंद्र देव को अवध्य बनाया. इंद्र देव को मन से नमस्कार करते हैं. हम उन्हें नम कर (झुक कर) नमस्कार करते हैं. इंद्र देव अपूर्व, उग्र और सर्वसमर्थ हैं. (२४)

चक्षुषः पिता मनसा हि धीरो घृतमेने अजनन्नम्नमाने.
यदेदन्ता ऽ अददृहन्त पूर्व ऽ आदिद् द्यावापृथिवी अप्रथेताम्.. (२५)

हमारे पिता (पूर्वजों) ने सृष्टि के आरंभ में स्वर्गलोक तथा पृथ्वीलोक को सुदृढ़ बनाया. सृष्टि के आरंभ में उन का विस्तार किया. पिता ने चक्षु (आंख) आदि सभी इंद्रियों का पालन किया. पिता ने धीर हो कर पृथ्वी को घी से सींचा. (२५)

विश्वकर्मा विमना ऽ आद्विहाया धाता विधाता परमोत सन्दृक्.
तेषामिष्टानि समिषा मदन्ति यत्रा सप्तऋषीन् पर ऽ एकमाहुः.. (२६)

जग की रचना में सृष्टि रचयिता के साथ सात ऋषियों ने अद्वितीय सहयोग किया. वह परम शक्ति एक है. धाता है. विधाता है. पोषक है. सर्वश्रेष्ठ है. उन की कृपा से सभी इष्ट कार्य पूर्ण होते हैं. वे हवि से प्रसन्न होते हैं. (२६)

यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा.
यो देवानां नामधा ऽ एक ऽ एव त ꣳ सम्प्रश्नं भुवना यन्त्यन्या.. (२७)

जो परमेश्वर हमारे पिता हैं, जो सब के जनक हैं, जो विधाता हैं, सब वेदों के धाम हैं, सब विश्व के भुवनों के ज्ञाता हैं, जो देवताओं के नाम धारण करते हैं, भले ही वे एक ही हैं, समस्त भुवन (लोकों) के प्राणी अंततः उन्हीं के लोक में प्राप्त होते हैं. (२७)

त ऽ आयजन्त द्रविण ꣳ समस्मा ऽ ऋषयः पूर्वे जरितारो न भूना.
असूर्त्ते सूर्त्ते रजसि निषत्ते ये भूतानि समकृण्वन्निमानि.. (२८)

उस परमेश्वर ने सब को जना, सभी धनों को उपजाया. समस्त ऋषिगण जिस की उपासना करते हैं. यज्ञ में संपूर्ण वैभव जिसे समर्पित करते हैं, वह परमेश्वर अप्रत्यक्ष रूप से सब में निवास करता है. (२८)

परो दिवा पर ऽ एना पृथिव्या परो देवेभिरसुरैर्यदस्ति.
क ꣳ स्विद् गर्भं प्रथमं दध्र ऽ आपो यत्र देवाः समपश्यन्त पूर्वे.. (२९)

वह परम तत्त्व स्वर्गलोक से परे है. वह परम तत्त्व पृथ्वीलोक व देवताओं से परे है. वह परम तत्त्व असुरों से परे है. जलों ने पहले गर्भ में किसे धारण किया? जहां देवगण पहले उन्हें देखते हैं. (२९)

तमिद्गर्भं प्रथमं दध्र ऽ आपो यत्र देवाः समगच्छन्त विश्वे.
अजस्य नाभावध्येकमर्पितं यस्मिन् विश्वानि भुवनानि तस्थुः.. (३०)

वह परम तत्त्व सभी देवताओं का आश्रय है. सभी उस परम तत्त्व को प्राप्त होते हैं. उस परम तत्त्व ने सर्वप्रथम जल को अपने गर्भ में धारण किया. परमतत्त्व के नाभि में एक ही परम तत्त्व अधिष्ठित है, जिस में सारे भुवन स्थिर होते हैं. (३०)

न तं विदाथ य ऽ इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव.
नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप ऽ उक्थशासश्चरन्ति.. (३१)

उस परम तत्त्व ने सर्वप्रथम ब्रह्मांड को रचा. उसे आप और हम लोग नहीं जानते. वह सब में है भी तथा सब से अलग भी है. कोहरे से ढके बादल की तरह लोग उस परम तत्त्व के बारे में विविध व्यर्थ धारणाओं (भ्रांतियों) से ग्रसित रहते हैं. उस की स्तुति नहीं कर पाते. (३१)

विश्वकर्मा ह्यजनिष्ट देव ऽ आदिद्गन्धर्वो अभवद् द्वितीयः.
तृतीयः पिता जनितौषधीनामपां गर्भं व्यदधात् पुरुत्रा.. (३२)

सर्वप्रथम विश्व का निर्माण करने वाले देवता पृथ्वी पर आए. तत्पश्चात पृथ्वी पर आदि गंधर्व हुए. पृथ्वी पालक ओषधियों में जल उपजाने वाले तीसरे क्रम में हुए. प्रथम रक्षक सभी जलों के गर्भ को विविध रूपों में धारता है. (३२)

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्.
संक्रन्दनो ऽ निमिषएकवीरः शत ꣳ सेना ऽ अजयत् साकमिन्द्रः.. (३३)

इंद्र देव शीघ्रता से शत्रुओं पर हमला करने वाले हैं. बैल जैसे बलवान हैं. घनघोर गर्जना करने वाले हैं. शत्रुओं के लिए क्षोभकारी हैं. पल भर में शत्रुओं को हराने वाले हैं. इंद्र देव अकेले ही ऐसे वीर हैं, जो सैकड़ों शत्रुओं की सेना को एक साथ जीत लेते हैं. (३३)

संक्रन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना.
तदिन्द्रेण जयत तत्सहध्वं युधो नर ऽ इषुहस्तेन वृष्णा.. (३४)

गर्जना से पल भर में शत्रुओं को जीतने वाले हैं. आक्रमण के विविध तरीकों से शीघ्र ही युद्ध में तैयार होने वाले हैं. संगठित शत्रुओं को भी जीतने वाले हैं. इंद्र

देव से जुड़ कर हम उन के साथ साहसपूर्वक, बलपूर्वक हाथ में बाण ले कर शत्रुओं को जीत जाएं. सुखपूर्वक जीवन गुजारें. (३४)

स ऽ इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी स ꣳ स्रष्टा स युध ऽ इन्द्रो गणेन.
स ꣳ सृष्टजित्सोमपा बाहुशर्ध्युग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता.. (३५)

इंद्र देव हाथ में बाणधारी हैं. वे वीरों को संगठित करने वाले, संगठित शत्रुओं को भी जीतने वाले व सोमपायी हैं. शत्रु पर बाण प्रहरी, उग्र व धनुषधारी हैं. वे हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (३५)

बृहस्पते परि दीया रथेन रक्षोहामित्राँ २ अपबाधमानः.
प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्.. (३६)

हे बृहस्पति देव! आप चारों ओर रथ से भ्रमण करते हैं. आप राक्षसों का विनाश करने वाले और मित्रों की बाधाओं को दूर करने वाले हैं. युद्धों में विनाश करने वालों को युद्ध में जीतते हुए हमारे रथों की रक्षा करने की कृपा करें. (३६)

बलविज्ञाय स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान ऽ उग्रः.
अभिवीरो अभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्.. (३७)

इंद्र देव बल के ज्ञाता, युद्ध में स्थिर, प्रकृष्ट (अत्यंत) वीर हैं. वे सामर्थ्यवान, बलशाली, साहसी व वीर हैं. वे प्रसिद्ध बलशाली और शत्रुओं की भूमि जीतने वाले हैं. आप सदैव जीतने वाले रथ पर सवार रहते हैं. (३७)

गोत्रभिदं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्म प्रमृणन्तमोजसा.
इम ꣳ सजाता ऽ अनु वीरयध्वमिन्द्र ꣳ सखायो अनु स ꣳ रभध्वम्.. (३८)

हे देवगण! आप गो नाशकों का भेदन करने वाले, गौओं को जानने वाले, वज्र जैसी भुजाओं वाले और जीतने वाले हैं. ओज से शत्रुओं के नाशक हैं. आप इंद्र को वीरों के योग्य कार्यों के लिए उत्साह दिलाएं. आप स्वयं भी उन का अनुकरण करें. हम इंद्र देव के सखा हैं. (३८)

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानोदयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः.
दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योस्माक ꣳ सेना अवतु प्र युत्सु.. (३९)

इंद्र देव शत्रुओं को पूरी तरह नष्ट करने वाले, क्रोधी व शत्रुओं को पूरी तरह हराने वाले हैं. वे हमारी सेना की रक्षा करें. वे हमारी सेना को पूरा संरक्षण प्रदान करें. (३९)

इन्द्र ऽ आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽ एतु सोमः.
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्.. (४०)

इंद्र देव इन सब के नेता हैं. बृहस्पति और इंद्र दोनों देव सेना का नियंत्रण करते हैं. सोम यज्ञ के सम्मुख रहते हैं. मरुद्गण सेना के आगेआगे रहते हैं. विष्णु दाहिनी ओर रहते हैं. (४०)

इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ ऽ आदित्यानां मरुता ᳪ शर्ध ऽ उग्रम्.
महामनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्.. (४१)

इंद्र वरुण व राजा आदित्य देव की इच्छा के अनुसार वर्षा करते हैं. वे मरुद्गण की इच्छा के अनुसार वर्षा करते हैं. महान् मन वाले लोकों में देवताओं का जयघोष गूंजता है. (४१)

उद्धर्षय मघवन्नायुधान्युत्सत्वनां मामकानां मना ᳪ सि.
उद्वृत्रहन् वाजिनां वाजिनान्युद्रथानां जयतां यन्तु घोषाः.. (४२)

हे इंद्र देव! आप धनवान हैं. आप अपने आयुधों को तीखा कीजिए. वीरों को व घोड़ों को शीघ्र जाने के लिए उत्साहित कीजिए. आप शत्रुनाशक व बलशाली हैं. रथों के जयघोष सब ओर गूंजें. (४२)

अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या ऽ इषवस्ता जयन्तु.
अस्माकं वीरा ऽ उत्तरे भवन्त्वस्माँ २ उ देवा ऽ अवता हवेषु.. (४३)

हमारे इंद्र देव ध्वजों को अच्छी तरह फहराते हैं. हमारे शत्रुओं को जीतें. हमारे बाण शत्रुओं को जीतें. हमारे वीर उत्तरोत्तर विजयी हों. देवगण यज्ञों में हमारी रक्षा करें. (४३)

अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि.
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्.. (४४)

व्याधियां हमारे शत्रुओं के चित्त को लुभाएं. उन के अंगों को ग्रहण करें. निर्दयता से शत्रुओं के चित्र को चबाएं. उन के हृदय में शोक व्यापे. शोक से शत्रु गहन अंधकार में डूब जाएं. (४४)

अवसृष्टा परा पत शरव्ये ब्रह्मस ᳪ शिते.
गच्छामित्रान् प्र पद्यस्व मामीषां कं चनोच्छिषः.. (४५)

ब्रह्मज्ञानमय वचनों से बाण तीखे हो कर अमित्रों पर गिरें. शत्रुओं पर प्रहार करें. उन का उच्छेदन (विनाश) करें. (४५)

प्रेता जयता नर ऽ इन्द्रो वः शर्म यच्छतु.
उग्रा वः सन्तु बाहवो ऽ नाधृष्या यथासथ.. (४६)

हे नरो! इंद्र देव विजयी हों और हमें सुख प्रदान करें. उन की बाहुएं उग्र हों, जिस से वह शत्रुओं पर आक्रमण कर सकें. (४६)

असौ या सेना मरुतः परेषामभ्यैति न ऽ ओजसा स्पर्धमाना.
तां गूहत तमसापव्रतेन यथामी अन्यो अन्यं न जानन्.. (४७)

मरुतों की सेना हमारे वेग के साथ स्पर्द्धा करने वाले शत्रुओं तक पहुंचे, ताकि भ्रम हो जाने के कारण एक दूसरे को जानने में ही असमर्थ हो जाएं तथा अपने ही लोगों का नाश कर दें. (४७)

यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा ऽ इव.
तन्न ऽ इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाहा शर्म यच्छतु.. (४८)

जहां बाण ऐसे गिरे जैसे बिना चोटी वाले बालक गिरते हैं, वहां इंद्र देव हमें सुख प्रदान करें. बृहस्पति देव हमें सुख प्रदान करें. अदिति देव हमें सुख प्रदान करें. स्वामी देव हमें सुख प्रदान करें. (४८)

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम्.
उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु.. (४९)

हम वीर अपने अंगों को कवच से ढकते हैं. वरुण देव इसे दृढ़ बनाए रखें. सोम राजा हैं. वह सब को अमृत से अमर बनाएं. वरुण देव वरीय हैं. वह हमें विजयी करें. देवगण उन्हें आनंदित करें. (४९)

उदेनमुत्तरां नयाग्ने घृतेनाहुत. रायस्पोषेण स ꣳ सृज प्रजया च बहुं कृधि.. (५०)

हे अग्नि! हम यजमान आप के लिए घी से आहुति भेंट करते हैं. आप उस से तृप्त होइए. आप हमें धन से पुष्ट कीजिए. हमारे लिए सुख प्रदान कीजिए. आप हमें बहुत प्रजा (पुत्रपौत्र) से समृद्ध कीजिए. (५०)

इन्द्रेमं प्रतरां नय सजातानामसद्वशी.
समेनं वर्चसा सृज देवानां भागदा ऽ असत्.. (५१)

हे इंद्र देव! आप हमें उत्कृष्टता की ओर ले जाइए. आप हमारे सजातियों को हमारे वश में कीजिए. आप हमें समान वर्चस्वी और देवताओं को उन का भाग देने में समर्थ बनाइए. (५१)

यस्य कुर्मो गृहे हविस्तमग्ने वर्धया त्वम्.
तस्मै देवा ऽ अधि ब्रुवन्नयं च ब्रह्मणस्पतिः.. (५२)

हे अग्नि! हम जिस के घर पर यज्ञ कर्म करते हैं, उन को हवि प्रदान करते हैं, आप उस की बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. सभी देवता उस का वर्चस्व स्वीकारें. सभी ब्रह्मज्ञान के स्वामी हो जाएं. (५२)

उदु त्वा विश्वे देवा ऽ अग्ने भरन्तु चित्तिभिः.
स नो भव शिवस्त्व ꣳ सुप्रतीको विभावसुः.. (५३)

हे अग्नि! सभी देवगण मन से आप का भरपूर विस्तार करने की कृपा करें. आप हमारा कल्याण करें. आप हमें वैभववान बनाइए. (५३)

पञ्च दिशो दैवीर्यज्ञमवन्तु देवीरपामतिं दुर्मतिं बाधमानाः.
रायस्पोषे यज्ञपतिमाभजन्ती रायस्पोषे अधि यज्ञो अस्थात्.. (५४)

पांचों दिशाएं इस दैवीय यज्ञ की रक्षा करें व यजमान की मंदबुद्धि दूर करें. पांचों दिशाएं यजमान की दुर्मति दूर करें. यज्ञपति को धन से पोसें. यज्ञपति को यशस्वी धन से पोसें. यज्ञ में अधिष्ठित होने की कृपा करें. (५४)

समिद्धे अग्नावधि मामहान ऽ उक्थपत्र ऽ ईड्यो गृभीतः.
तप्तं घर्मं परिगृह्यायजन्तोर्जा यद्यज्ञमयजन्त देवाः.. (५५)

यजमान समिधा से अग्नि को प्रदीप्त करते हैं. घी से भरी आहुति अग्नि को प्रदान करते हैं. महान उक्थों (स्तोत्रों) से यज्ञ को सिद्ध किया जाता है. (५५)

दैव्याय धर्त्रे जोष्ट्रे देवश्रीः श्रीमनाः शतपयाः.
परिगृह्य देवा यज्ञमायन् देवा देवेभ्यो अध्वर्यन्तो अस्थुः.. (५६)

सैकड़ों लोग देवताओं की दिव्यता तथा शोभा पाने के लिए यज्ञ करते हैं. देवों को यज्ञ में बुला कर अध्वर्यु यज्ञ करते हैं. उन के धाम को प्राप्त होते हैं. (५६)

वीत ꣳ हविः शमित ꣳ शमिता यजध्यै तुरीयो यज्ञो यत्र हव्यमेति.
ततो वाका ऽ आशिषो नो जुषन्ताम्.. (५७)

यजमान शांत मन से शांत हवियों वाला यज्ञ करते हैं. यह यज्ञ तुरीय (चौथा एवं उत्तम) कहा जाता है. यज्ञ के वाणीमय आशीष तन हमारी इच्छा के अनुकूल फलीभूत होते हैं. (५७)

सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात्सविता ज्योतिरुदयाँ २ अजस्रम्.
तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान्त्सम्पश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः.. (५८)

हरे केशों वाली और सम्मुख स्थित सविता देव की रश्मियां उन के उदय होने से पूर्व ही प्रकट हो जाती हैं. अजस्र (लगातार) ज्योति प्रवाहित होने लगती है. सूर्य का प्रसव (उदय) होते ही विद्वान् समस्त भुवनों को देखने में समर्थ हो जाते हैं. (५८)

विमान ऽ एष दिवो मध्य ऽ आस्त ऽ आपप्रिवान् रोदसी अन्तरिक्षम्.
स विश्वाचीरभि चष्टे घृताचीरन्तरा पूर्वमपरं च केतुम्.. (५९)

सूर्य जगत् को रचने में समर्थ हैं. यह सूर्य मध्यलोक, पृथ्वीलोक तथा अंतरिक्षलोक—तीनों लोकों को अपनी दीप्ति से पूरी तरह भर देते हैं (प्रकाशित

कर देते हैं). सारे विश्व को अपने आश्रय में रखते हैं. सभी जलों को धारते हैं. सर्वद्रष्टा हैं. पूर्व और पश्चात के सभी मनोभावों को जानते हैं. (५९)

उक्षा समुद्रो अरुण: सुपर्ण: पूर्वस्य योनिं पितुराविवेश.
मध्ये दिवो निहित: पृश्निरश्मा विचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ.. (६०)

सूर्य वर्षा द्वारा समुद्र को सींचते हैं. वे समुद्र को धारते हैं. उन का मूल स्थान पूर्व दिशा है. वे अंतरिक्ष में निरंतर भ्रमणशील व स्वर्गलोक के बीच निहित रहते हैं. वे रज की रक्षा करते हैं. वे अद्‌भुत रश्मियों वाले और सर्वत्र भ्रमणशील हैं. (६०)

इन्द्रं विश्वा ऽ अवीवृधन्त्समुद्रव्यचसं गिर:.
रथीतम ‌ं‌ऽ रथीनां वाजाना ‌ं‌ऽ सत्पतिं पतिम्.. (६१)

सभी प्रार्थनाएं इंद्र देव को बढ़ोतरी प्रदान करती हैं. आप समुद्र की तरह विस्तृत, उत्तम रथी, अन्न के स्वामी व पालकों में श्रेष्ठ पालक हैं. (६१)

देवहूर्यज्ञ ऽ आ च वक्षत्सुम्नहूर्यज्ञ ऽ आ च वक्षत्.
यक्षदग्निर्देवो देवाँ २ आ च वक्षत्.. (६२)

यह यज्ञ देवताओं का आह्वान करने वाला है. यह यज्ञ देवताओं के लिए अच्छे मन से हवि वहन करें, देवताओं को सभी सुख प्रदान करे और देवताओं को अधिष्ठित करे. (६२)

वाजस्य मा प्रसव ऽ उद्‌ग्राभेणोदग्रभीत्.
अधा सपत्नानिन्द्रो मे निग्राभेणाधराँ २ अक:.. (६३)

हे इंद्र देव! आप हमारे लिए अन्न उत्पादक हैं. आप हमारा उच्च मार्ग प्रशस्त कीजिए. आप हमारे शत्रुओं को नीचे मार्ग पर पहुंचाइए. उन्हें अधोगति प्रदान कीजिए. (६३)

उद्‌ग्राभं च निग्राभं च ब्रह्म देवा ऽ अवीवृधन्.
अधा सपत्नानिन्द्राग्नी मे विषूचीनान्व्यस्यताम्.. (६४)

हे इंद्र देव! हे अग्नि! आप ब्रह्मज्ञान की बढ़ोतरी कीजिए. आप श्रेष्ठ कर्म करने वालों का उच्च मार्ग प्रशस्त कीजिए. आप हमारे शत्रुओं का सर्वनाश कीजिए. (६४)

क्रमध्वमग्निना नाकमुख्य ‌ं‌ऽ हस्तेषु बिभ्रत:.
दिवस्पृष्ठ ‌ं‌ऽ स्वर्गत्वा मिश्रा देवेभिराध्वम्.. (६५)

यजमान अग्नि से श्रेष्ठ व स्वर्गिक सुख पाएं. हाथ में उखा शोभित हों. देवताओं के साथ दिव्यलोक में जाकर स्वर्गिक सुख अनुभव करें. (६५)

प्राचीमनु प्रदिशं प्रेहि विद्वानग्नेरग्ने पुरो अग्निर्भवेह.
विश्वा ऽ आशा दीद्यानो वि भाह्यूर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे.. (६६)

हे अग्नि! आप पूर्व दिशा का अनुकरण कीजिए. आप अग्रगामी होइए. आप सब का नेतृत्व कीजिए. आप विद्वान् और सब की आस हैं. आप अपनी चमकीली लपटों से सभी दिशाओं को चमकाइए. आप दोपायों तथा चौपायों सभी के लिए बल धारिए. (६६)

पृथिव्या ऽ अहमुदन्तरिक्षमारुहमन्तरिक्षाद्दिवमारुहम्.
दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्वर्ज्योतिरगामहम्.. (६७)

हम पृथ्वी से उच्च अंतरिक्षलोक में चढ़ते हैं. हम उच्च अंतरिक्षलोक से स्वर्गलोक में चढ़ते हैं. स्वर्गलोक से सूर्यलोक की ज्योति को प्राप्त होते हैं. (६७)

स्वर्यन्तो नापेक्षन्त ऽ आ द्या ꣳ रोहन्ति रोदसी.
यज्ञं ये विश्वतोधार ꣳ सुविद्वा ꣳ सो वितेनिरे.. (६८)

जो सुखदायी स्वर्ग के सुख भोगते हैं, वे सांसारिक भोगों की अपेक्षा नहीं करते. वे यज्ञ के धारक वे श्रेष्ठ विद्वान् हैं. वे अपना उज्ज्वल यश फैलाते हैं. वे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक से ऊपर आरोहण करते हैं. (६८)

अग्ने प्रेहि प्रथमो देवयतां चक्षुर्देवानामुत मर्त्यानाम्.
इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति.. (६९)

हे अग्नि! आप प्रथम प्रार्थित हैं. आप मनुष्यों और देवताओं के चक्षु स्वरूप और सब के पथ प्रदर्शक हैं. यज्ञ के इच्छुकों के पापनाशक हैं. आप ऐसे यजमानों को अपनी ज्योति से प्रकाशित करते हैं. उन का कल्याण करते हैं. (६९)

नक्तोषासा समनसा विरूपे धापयेते शिशुमेक ꣳ समीची.
द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्विभाति देवा ऽ अग्निं धारयन् द्रविणोदाः.. (७०)

हे अग्नि! आप रात्रिकाल तथा उषस काल में समान रूप से सुशोभित होते हैं. आप विभिन्न रूप धारते हैं. आप उपयुक्त शिशु के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त हैं. आप पृथ्वीलोक और स्वर्गलोक के बीच में शोभते हैं. आप धनदाता व वैभवधारी हैं. (७०)

अग्ने सहस्राक्ष शतमूर्धञ्छतं ते प्राणाः सहस्रं व्यानाः.
त्व ꣳ साहस्रस्य राय ऽ ईशिषे तस्मै ते विधेम वाजाय स्वाहा.. (७१)

हे अग्नि! आप हजार आंखों, सौ मूर्धा, सौ प्राण वाले हैं. आप हजार प्राण वाले व हजार धन वाले हैं. आप हमारे स्वामी हैं. हम आप के लिए अन्नमय आहुति भेंट करते हैं. आप के लिए स्वाहा. (७१)

सुपर्णो ऽ सि गरुत्मान् पृष्ठे पृथिव्याः सीद.
भासा ऽ न्तरिक्षमापृण ज्योतिषा दिवमुत्तभान तेजसा दिश ऽ उद्दृ ᳪ ह.. (७२)

हे अग्नि! आप सुंदर पंख वाले गरुड़ स्वरूप हैं. आप पृथ्वी तल पर अधिष्ठित होने की कृपा कीजिए. आप अंतरिक्ष को अपनी कांति से पूर्ण करते हैं. आप अपनी ज्योति से स्वर्गलोक को उत्कृष्टता प्रदान करें. आप अपने तेज से दिशाओं को सुदृढ़ता व उत्कृष्टता प्रदान करें. (७२)

आजुह्वानः सुप्रतीकः पुरस्तादग्ने स्वं योनिमा सीद साधुया.
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत.. (७३)

हे अग्नि! हम बहुत नम्रतापूर्वक आप का आह्वान करते हैं. आप हमारे सम्मुख पधारने व मूल स्थान पर सज्जनता से विराजने की कृपा कीजिए. आप इस यज्ञ में अधिष्ठित होने की कृपा कीजिए. आप सभी यजमानों के साथ इस यज्ञ में होने व विराजने की कृपा कीजिए. (७३)

ता ᳪ सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम्.
यामस्य कण्वो अदुहत्प्रपीना ᳪ सहस्रधारां पयसा महीं गाम्.. (७४)

सविता देव! आप वरेण्य व अद्भुत हैं. हम आप का वरण करते हैं. आप विश्व के जन्मदाता हैं. कण्व ऋषि ने सविता देव की किरणें धारण करने वाली हजारों धाराओं से गाय को दुहा. हम आप की सुमति को स्वीकार करते हैं. (७४)

विधेम ते परमे जन्मन्नग्ने विधेम स्तोमैरवरे सधस्थे.
यस्माद्योनेरुदारिथा यजे तं प्र त्वे हवी ᳪ षि जुहुरे समिद्धे.. (७५)

हे अग्नि! आप ने परम स्थान पर जन्म लिया है. हम आप के लिए स्तुतियों का विधान करते हैं. आप श्रेष्ठ स्थान पर विराजमान हैं. आप जिस मूल स्थान से प्रकट होते हैं. उसे यज्ञ के अनुकूल बनाते हैं. हम समिधाओं से आप के लिए आहुतियां समर्पित करते हैं. (७५)

प्रेद्धो अग्ने दीदिहि पुरो नो ऽ जस्रया सूर्म्या यविष्ठ.
त्वा ᳪ शश्वन्त उपयन्ति वाजाः.. (७६)

हे अग्नि! आप प्रदीप्त व हमारे सम्मुख दीप्तिमान होने की कृपा कीजिए. आप यज्ञ में अधिष्ठित व लगातार यज्ञ में अधिष्ठित होने की कृपा कीजिए. आप हमें लगातार अपना प्रकाश प्रदान कीजिए. हम आप को शाश्वत अन्नमय आहुति प्रदान करते हैं. (७६)

अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः क्रतुं न भद्र ᳪ हृदिस्पृशम्. ऋध्यामात ऽ ओहैः.. (७७)

हे अग्नि! हम हृदयस्पर्शी स्तोत्रों से आप के घोड़ों को कल्याणकारी यज्ञ के लिए संवर्धित करते हैं. (७७)

चित्तिं जुहोमि मनसा घृतेन यथा देवा ऽ इहागमन्वीतिहोत्रा ऽ ऋतावृधः.
पत्ये विश्वस्य भूमनो जुहोमि विश्वकर्मणे विश्वाहादाभ्य ꣳ हविः.. (७८)

हम चित्त से यज्ञ करते हैं. हम मन से घी की आहुति भेंट करते हैं. देवगण इस यज्ञ में आने व सत्य की बढ़ोतरी करने की कृपा करें. देवगण विश्वपति, विश्व के रचयिता, विश्वकर्मा व विश्व के संतापहर्ता हैं. हम उन के लिए हवि प्रदान करते हैं. (७८)

सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि.
सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा.. (७९)

हे अग्नि! आप की सात समिधाएं, सात जिह्वाएं व आप के सात ऋषि हैं. आप के सात प्रिय धाम व सात होता हैं. वे आप का सात प्रकार से यजन करते हैं. आप के सात मूल उत्पत्ति स्थान हैं. हम घी से आप के प्रति आहुति अर्पित करते हैं. (७९)

शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च.
शुक्रश्च ऋतपाश्चात्य ꣳ हाः.. (८०)

आप चमकीले, अद्‌भुत ज्योति वाले हैं. आप सत्य रूप ज्योति वाले और ज्योतिष्मान हैं. चमकीले सत्य स्वरूप पश्चिम दिशा वाले मरुत् देव हेतु यह आहुति अर्पित है. (८०)

ईदृङ् चान्यादृङ् च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च. मितश्च सम्मितश्च सभराः.. (८१)

यज्ञ में अर्पित हवि को इस तरह देखने वाले, अन्य दृष्टि से देखने वाले, समान दृष्टि से देखने वाले व सम्मिलित दृष्टि से देखने वाले मरुद्‌गण हेतु यह आहुति अर्पित है. (८१)

ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च. धर्त्ता च विधर्त्ता च विधारयः.. (८२)

मरुद्‌गण सत्य, सत्यवान, ध्रुव, धारक, धर्ता व विधर्ता हैं. वे देव हमारे यज्ञ को विशेष रूप से धारने की कृपा करें. (८२)

ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च. अन्तिमित्रश्च दूरे अमित्रश्च गणः.. (८३)

शुद्धस्वरूप, सत्यरूप, शत्रु सेनाओं के विजेता, श्रेष्ठ सेनाओं वाले, मित्रों के समीप रहने वाले, शत्रुओं को दूर हटाने वाले तथा संघबद्ध रहने वाले ये मरुद्‌गण हमारे इस यज्ञ में पधारें. उन के लिए यह आहुति अर्पित है. (८३)

ईदृक्षास ऽ एतादृक्षास ऽ ऊ षु णः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽ एतन.
मितासश्च सम्मितासो नो अद्य सभरसो मरुतो यज्ञे अस्मिन्.. (८४)

हे मरुद्‌गण! आप विविध कोणों से देखने वाले, समान कोण से देखने वाले,

प्रत्येक समान कोण से देखने वाले मिश्रित कोण से देखने वाले, समान प्रकार के मिश्रित कोण से देखने वाले तथा समान अलंकारों के धारक हैं. आप आज हमारे इस यज्ञ में पधारें. आप के निर्मित यह आहुति अर्पित है. (८४)

स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च. क्रीडी च शाकी चोज्जेषी.. (८५)

आप स्वयं अर्जित तप बल पूर्ण पुरोडाश का सेवन करते हैं. आप शत्रुओं को संताप देने वाले, गृहस्थ धर्म के पालक, क्रीड़ाशाली, बलवान व विजयशील हैं. (८५)

इन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोनुवर्त्मानो ऽ भवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशो मरुतोनुवर्त्मानो ऽ भवन्.
एवमिमं यजमानं दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु.. (८६)

मरुद्गण की सेना इंद्र देव का अनुकरण करती है. वह इंद्र देव की प्रजा जैसी है व इंद्र देव के पथ का अनुकरण करती है. वैसे ही सभी दैवीय गुण मनुष्यों का अनुकरण करें. वैसे ही सभी प्रजा मनुष्यों का अनुकरण करें. (८६)

इम ꣳ स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मध्ये.
उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रिय ꣳ सदनमा विशस्व.. (८७)

हे अग्नि! आप ऊर्जस्वी स्तन व घी से भरे स्रुक का प्रेम से पान करें. आप उस से तृप्त होने की कृपा करें. वह मधुर हैं. आप इस समुद्र सदन में प्रवेश करने की कृपा करें. (८७)

घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम.
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्.. (८८)

हम घी को अग्नि के मुख में समर्पित करना चाहते हैं. यह अग्नि का मूल स्थान है. अग्नि घृत पर अश्रित हैं. वह अग्नि का धाम हैं. हे अध्वर्यु! आप अग्नि के लिए हवि प्रदान कीजिए. उन्हें हवि से मदमस्त बनाइए. उन्हें हवि से बलवान बनाइए. अग्नि से अनुरोध है कि वह हवि को निर्धारित देव तक पहुंचाने की कृपा करें. (८८)

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ २ उदारदुपा ꣳ शुना सममृतत्वमानट्.
घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः.. (८९)

घी जैसा समुद्र है. उस में मधुर लहरें उमड़ रही हैं. ये लहरें अग्नि से एकमेक हो जाती हैं. घी का जो गुप्त नाम है, वह देवों की जिह्वा है. गुप्त नाम अमृत की नाभि है. (८९)

वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः.
उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गो ऽ वमीद्गौर ऽ एतत्.. (९०)

हम इस यज्ञ में घी के नाम को धारण करते हैं. बारबार बोलते हैं. हम यज्ञ में घी के नाम को नमस्कारपूर्वक धारण करते हैं. बारबार बोलते हैं. ब्रह्मा इस यज्ञ में इस नाम को पास से सुनने की कृपा करें. चार सींगों (होता रूपी) वाला घी इस यज्ञ के फल को प्रदान करने की कृपा करे. (९०)

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य.
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२ आविवेश.. (९१)

इस यज्ञ के चार सींग (पुरोहित रूपी), तीन पैर (तीन वेद रूपी), दो सिर (हवि प्रवर्ग्य) व सात हाथ (सात छंद रूपी) हैं. यह यज्ञ तीन प्रकार की संध्याओं में बंधा हुआ, महान् शब्द करने वाला व मनुष्यों का महान् देव है. इस यज्ञ के मनुष्यलोक में अधिष्ठित हैं. (९१)

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्.
इन्द्र ऽ एक ᳪ सूर्य ऽ एकं जजान वेनादेक ᳪ स्वधया निष्टतक्षुः.. (९२)

असुरों से छिपा कर रखे हुए घी को देवताओं ने तीन प्रकार से गायों से प्राप्त कर लिया. एक प्रकार से (एक भाग) इंद्र देव के लिए जना. दूसरे प्रकार से (दूसरा भाग) सूर्य के लिए जना. तीसरे प्रकार से (तीसरा भाग) ब्राह्मणों के लिए जना. (९२)

एता ऽ अर्षन्ति हृद्यात्समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे.
घृतस्य धारा ऽ अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य ऽ आसाम्.. (९३)

जैसे हृदय रूपी समुद्र से भावों की धाराएं फूटती हैं, दुश्मन इन धाराओं को देख नहीं सकता, वैसे ही इस यज्ञ में घी की धाराएं फूटती हैं. इन धाराओं के बीच विद्यमान अग्नि को हम सब ओर से देखते हैं. (९३)

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना ऽ अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः.
एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा ऽ इव क्षिपणोरीषमाणाः.. (९४)

जैसे सम्यक् रूप से नदी बहती है, वैसे ही हमारे अंतःहृदय से पवित्र की जाती हुई वाणी स्रवित होती है. ये वाणियां घी की तरंगों की तरह हैं. यज्ञ की ओर शिकारी से डरे हुए हिरण की तरह भागती हैं. (९४)

सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः.
घृतस्य धारा ऽ अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः.. (९५)

जैसे समुद्र में वायु के वेग से नदियों की धाराएं मिलती हैं, वैसे ही घी की धाराएं तीव्र वेग से यज्ञ की अग्नि में गिरती हैं. जैसे बलवान घोड़ा शत्रुओं की सेना को बेध देता है और पसीने से पृथ्वी को सींचता हुआ प्रस्थान करता है, वैसे ही घी की धाराएं पृथ्वी को सींचती हैं. (९५)

अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासो अग्निम्.
घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः.. (९६)

जैसे समान मन वाली सुंदर स्त्रियां खुश होती हुई अपने पति के पास जाती हैं, वैसे ही घी की धाराएं प्रदीप्त करती हुई अग्नि को प्राप्त होती हैं. अग्नि को व्यापक बनाती हैं. घी की धाराएं सर्वज्ञ अग्नि को प्राप्त होती हैं. अग्नि निरंतर उन धाराओं की कामना करते हैं. (९६)

कन्या ऽ इव वहतुमेतवा ऽ उ अञ्ज्यञ्जाना ऽ अभि चाकशीमि.
यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽ अभि तत्पवन्ते.. (९७)

जैसे सुंदर कन्या रूप वहन करती हुई स्वयंवर में वर के पास पहुंचती है, वैसे ही जहां सोमरस निचोड़ा जाता है, यज्ञ किया जाता है, वहां घी की धाराएं जाती हैं. (९७)

अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त.
इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते.. (९८)

हे देवताओ! यह यज्ञ घी से सिंचित है. श्रेष्ठ स्तुतियुक्त है. जिस यज्ञ में मधुर स्वाद वाली घी की कल्याणमयी धाराएं गिरती हैं, आप ऐसी घृतमयी मधुर आहुतियों को यज्ञ से देवलोक तक पहुंचाने की कृपा कीजिए. (९८)

धामं ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि.
अपामनीके समिथे य ऽ आभृतस्तमश्याम मधुमन्तं त ऽ ऊर्मिम्.. (९९)

हे अग्नि! सभी लोक आप के धाम हैं. आप सब लोकों के आश्रय हैं. समुद्र के हृदय में आप का श्रेष्ठ रूप उपस्थित है. हम आप के मधुर लहरदार रूप को पा सकें. (९९)

अठारहवां अध्याय

वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (१)

यह यज्ञ हमारे लिए अन्नदाता हो. यह यज्ञ हमारे लिए ऐश्वर्यदाता हो. यह यज्ञ हमारे लिए पौरुष हो. यह यज्ञ हमारे लिए प्रबंधकौशल हो. यह यज्ञ हमारे लिए बुद्धि हो. यह यज्ञ हमारे लिए निर्णय क्षमता हो. यह यज्ञ हमारे लिए करने की शक्ति हो. यह यज्ञ हमारे लिए श्लोक हो. यह यज्ञ हमारे लिए श्रवणक्षमता हो. यह यज्ञ हमारे लिए तेजदाता हो. सर्वविधि फलीभूत हो. (१)

प्राणश्च मेपानश्च मे व्यानश्च मेसुश्च मे चित्तं च म ऽ आधीतं च मे वाक् च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रं च मे दक्षश्च मे बलं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (२)

यह यज्ञ हमें प्राण दे. यह यज्ञ हमें अपान दे. यह यज्ञ हमें व्यान दे. यह यज्ञ हमें मुख्य प्राण दे. यह यज्ञ हमें चिंतन दे. यह यज्ञ हमें वाणी दे. यह यज्ञ हमें नेत्र दे. यह यज्ञ हमें कान दे. यह यज्ञ हमें दक्षता दे. यह यज्ञ हमें बल दे. यह यज्ञ सर्वविधि फलीभूत हो. (२)

ओजश्च मे सहश्च म ऽ आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मेङ्गानि च मेस्थीनि च मे परू ँ षि च मे शरीराणि च म ऽ आयुश्च मे जरा च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (३)

इस यज्ञ से हमारा ओज फलीभूत हो. इस यज्ञ से हमारी सहिष्णुता फलीभूत हो. इस यज्ञ से हमारा आत्मबल फलीभूत हो. इस यज्ञ से हमारा दैहिकबल फलीभूत हो. इस यज्ञ से हमारा सुख फलीभूत हो. इस यज्ञ से हमारा कवच फलीभूत हो. इस यज्ञ से हमारी अस्थियों की दृढ़ता फलीभूत हो. इस यज्ञ से हमारी संधियों की दृढ़ता फलीभूत हो. इस यज्ञ से हमारी निरोगता फलीभूत हो. इस यज्ञ से हमारी आयु फलीभूत हो. इस यज्ञ से हमारी परिपक्वता फलीभूत हो. (३)

ज्यैष्ठ्यं च म ऽ आधिपत्यं च मे मन्युश्च मे भामश्च मेमश्च मेम्भश्च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्षिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धं च मे वृद्धिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (४)

यज्ञ हमें फलीभूत हो. ज्येष्ठता हमारे आधिपत्य में रहे. अनीति हमारे नियंत्रण में रहे. क्रोध हम से दूर रहे. दुष्टों का हम प्रतिकार कर सकें. हमारी परिपक्वता में बढ़ोतरी हो. हमारी गरिमा में बढ़ोतरी हो. हमारी वरिष्ठता में बढ़ोतरी हो. हम सर्वत्र प्रथम (श्रेष्ठ) साबित हों. हमारी व्यापकता में बढ़ोतरी हो. हमारी आयु में बढ़ोतरी हो. हमारे बड़प्पन में बढ़ोतरी हो. हमारे वंश में बढ़ोतरी हो. हमारी उत्कृष्टता में बढ़ोतरी हो. यज्ञ हमें (सर्वविध) फलीभूत हो. (४)

सत्यं च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनं च मे विश्वं च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातं च मे जनिष्यमाणं च मे सूक्तं च मे सुकृतं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (५)

यज्ञ फलीभूत हो. सत्य की बढ़ोतरी हो. श्रद्धा की बढ़ोतरी हो. धन की बढ़ोतरी हो. विश्व में स्तर की बढ़ोतरी हो. मनोविनोद की बढ़ोतरी हो. हर्ष स्तर की बढ़ोतरी हो. संतान की बढ़ोतरी हो. सूक्तों में स्तर की बढ़ोतरी हो. यज्ञ सर्वविध फलीभूत हो. (५)

ऋतं च मेमृतं च मेयक्ष्मं च मेनामयच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वं च मेनमित्रं च मेभयं च मे सुखं च मे शयनं च मे सूषाश्च मे सुदिनं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (६)

यज्ञ से हमारे ऋत को बढ़ोतरी मिले. यज्ञ से हमारे अमृत को बढ़ोतरी मिले. यज्ञ से हमारे यक्ष्मा में कमी हो. यज्ञ से हमारे आरोग्य में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से हमारे जीने की क्षमता में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से हमारी आयु में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से हमारे शत्रुओं का अभाव हो. यज्ञ से हमारे अभय में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से हमारे सुख में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से हमारे शयन में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से हमारे संध्याकर्म में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से हमारे सुदिन में बढ़ोतरी हो. यज्ञ हमें सर्वविध फलीभूत हो. (६)

यन्ता च मे धर्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वं च मे महश्च मे संविच्च मे ज्ञात्रं च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरं च मे लयश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (७)

यज्ञ से हम धारक हो जाएं. धैर्य की क्षमता बढ़े. यज्ञ से हमें संसार की सारी महानता प्राप्त हो. यज्ञ से हमें संपूर्ण सामर्थ्य प्राप्त हो. यज्ञ से हमें ज्ञान प्राप्त हो. यज्ञ से उत्पादन की क्षमता में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से खेती के साधनों की क्षमता में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से कष्टों में कमी हो. यज्ञ सर्वविध फलीभूत हो. (७)

शं च मे मयश्च मे प्रियं च मेनुकामश्च मे कामश्च मे सौमनसश्च मे भगश्च मे द्रविणं च मे भद्रं च मे श्रेयश्च मे वसीयश्च मे यशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (८)

यज्ञ से सब सुखों में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से सब आनंद में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से सब प्रकार के आमोदप्रमोद में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से सब अनुकूल कामनाओं में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से सब सौमनस्य कामनाओं में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से सब सौभाग्य में बढ़ोतरी

हो. यज्ञ से सब वैभव में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से सब भद्रता में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से सब श्रेय में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से सब वास सुख में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से सब यश में बढ़ोतरी हो. यज्ञ हमें सर्वविध फलीभूत हो. (८)

ऊर्क् च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतं च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृषिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रं च मऽ औद्भिद्यं च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (९)

यज्ञ हमें फलीभूत हो. यज्ञ से अन्न की प्राप्ति हो. यज्ञ से अच्छी वाणी की प्राप्ति हो. यज्ञ से पेय की प्राप्ति हो. यज्ञ से रस की प्राप्ति हो. यज्ञ से घी की प्राप्ति हो. यज्ञ से मधु की प्राप्ति हो. हम संबंधियों के साथ भोजन करें. हम संबंधियों के साथ पीएं. वर्षा हमारी कृषि को फलीभूत व बढ़ोतरी करे. हम शत्रुओं का भेदन करें. यज्ञ हमें सर्वविध फलीभूत हो. (९)

रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टं च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे पूर्णं च मे पूर्णतरं च मे कुयवं च मेक्षितं च मेन्नं च मेक्षुच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (१०)

यज्ञ से हमारे धन में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से हमारी संपत्ति में बढ़ोतरी हो. हम धन से पुष्ट हों. हम वैभव से पुष्ट हों. हम प्रभु से पुष्ट हों. हम पूर्ण से पुष्ट हों. हम पूर्णतर से पुष्ट हों. हमारे यहां पशुओं के खाद्य में बढ़ोतरी हो. हमारे यहां अक्षय अन्न में व हमारी भूख में भी बढ़ोतरी हो. यज्ञ हमारे लिए सर्वविध फलीभूत हो. (१०)

वित्तं च मे वेद्यं च मे भूतं च मे भविष्यच्च मे सुगं च मे सुपथ्यं च मऽ ऋद्धं च मऽ ऋद्धिश्च मे क्लृप्तं च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (११)

यज्ञ से हमारे वित्त, ज्ञान, अतीत, भविष्य व अच्छे धन को बढ़ोतरी मिले. यज्ञ से हमारे पथ सुगम हों. यज्ञ से हमारे पथ के रोड़े समाप्त हों. यज्ञ से हमारे अच्छे कर्म, सामर्थ्य, सत्य, बुद्धि व सद्बुद्धि में बढ़ोतरी हो. यज्ञ हमारे लिए सर्वविध फलीभूत हो. (११)

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मेणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (१२)

यज्ञ से हमारे धान, जौ, उड़द, तिल, मूंग, चना, प्रियंग (राई), छोटे चावलों में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से हमारे सावां चावल, नीवार, गेहूं, मसूर में बढ़ोतरी हो. यज्ञ हमें सर्वविध फलीभूत हो. (१२)

अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यं च मेयश्च मे श्यामं च मे लोहं च मे सीसं च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (१३)

यज्ञ कर्म से खनिज, मिट्टी, पहाड़ों, पर्वतों, रेत, वनस्पतियों में बढ़ोतरी हो. यज्ञ कर्म से सोने, लोहे, कांसे, सीसे व टिन में बढ़ोतरी हो. यज्ञ हमारे लिए सर्वविध फलीभूत हो. (१३)

अग्निश्च म ऽ आपश्च मे वीरुधश्च म ऽ ओषधयश्च मे कृष्टपच्याश्च मेकृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव ऽ आरण्याश्च मे वित्तं च मे वित्तिश्च मे भूतं च मे भूतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (१४)

इस यज्ञ से अग्नि, जल, पौधे, ओषधियां, कष्ट से पचने वाली ओषधियां हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. इस यज्ञ से आसानी से पचने वाली ओषधियां, गांव के पशु, जंगल के पशु, वित्त, संपत्ति, अतीत व भविष्य की बढ़ोतरी हो. यज्ञ हमें सर्वविध फलीभूत हों. (१४)

वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेर्थश्च म ऽ एमश्च म ऽ इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (१५)

यज्ञ से देवगण हमें धन, संपत्ति, कर्म सामर्थ्य, अर्थ, इष्ट साधन व गति प्रदान करें. यह यज्ञ सर्वविध हमारे लिए फलीभूत हो. (१५)

अग्निश्च म ऽ इन्द्रश्च मे सोमश्च म ऽ इन्द्रश्च मे सविता च म ऽ इन्द्रश्च मे सरस्वती च म ऽ इन्द्रश्च मे पूषा च म ऽ इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म ऽ इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (१६)

यज्ञ से अग्नि, इंद्र देव, सोम और इंद्र देव, सविता देव और इंद्र देव, सरस्वती देवी और इंद्र देव व पूषा देव और इंद्र देव की अनुकंपा में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से बृहस्पति देव और इंद्र देव की अनुकंपा में बढ़ोतरी हो. यज्ञ हमारे लिए सर्वविध फलीभूत हो. (१६)

मित्रश्च म ऽ इन्द्रश्च मे वरुणश्च म ऽ इन्द्रश्च मे धाता च म ऽ इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म ऽ इन्द्रश्च मे मरुतश्च म ऽ इन्द्रश्च मे विश्वे च मे देवा ऽ इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (१७)

यज्ञ से मित्र देव और इंद्र देव, वरुण देव और इंद्र देव, धाता देव और इंद्र देव, त्वष्टा और इंद्र देव व मरुत् और इंद्र देव की अनुकंपा में बढ़ोतरी हो. यज्ञ से विश्व देव और इंद्र देव की अनुकंपा में बढ़ोतरी हो. यह यज्ञ हमारे लिए सर्वविध फलीभूत हो. (१७)

पृथिवी च म ऽ इन्द्रश्च मेन्तरिक्षं च म ऽ इन्द्रश्च मे द्यौश्च म ऽ इन्द्रश्च मे समाश्च म ऽ इन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च म ऽ इन्द्रश्च मे दिशश्च म ऽ इन्द्रश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (१८)

इस यज्ञ से हमारे लिए पृथ्वी देव इंद्र, अंतरिक्ष देव इंद्र, स्वर्गलोक के देव,

वृष्टि देव इंद्र, नक्षत्र देव इंद्र व दिशा देव इंद्र की अनुकंपा में बढ़ोतरी हो. यह यज्ञ सर्वविध हमारे लिए फलीभूत हो. (१८)

अ ꣳ शुश्च मे रश्मिश्च मेदाभ्यश्च मेधिपतिश्च म ऽ उपा ꣳ शुश्च मेन्तर्यामश्च म ऽ ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म ऽ आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (१९)

इस यज्ञ से अंशुग्रह, रश्मिग्रह, अदाभ्यग्रह, उपांशुग्रह, अंतर्याम, इंद्र देव और वायु, मित्र देव और वरुण देव, आश्विनग्रह व प्रतिस्थानग्रह अधिपति होने की कृपा करें. इस यज्ञ से शुक्रग्रह अधिपति होने की कृपा करें. इस यज्ञ से मंथीग्रह अधिपति होने की कृपा करें. यह यज्ञ हमारे लिए सर्वविध फलीभूत हो. (१९)

आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऽ ऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरुत्वतीयाश्च मे निष्केवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (२०)

इस यज्ञ से आग्रयण, विश्व, ध्रुव देव, वैश्वानर, इंद्र देव और अग्नि, महावैश्व देव, मरुत्वतीय देव, निष्केवल्य देव, सावित्र देव, सारस्वत देव हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. इस यज्ञ से पात्नीवत व हारियोजन हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. यज्ञ सर्वविध हमारे लिए फलीभूत हो. (२०)

स्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानि च मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मेधिषवणे च मे पूतभृच्च म ऽ आधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मेवभृथश्च मे स्वगाकारश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (२१)

यज्ञ से स्रुक (घी डालने का पात्र), चमस, वायव्य, द्रोणकलश, पत्थर, अधिषवण (सोम कूटने वाला पत्थर) हमारे अनुकूल हो. यज्ञ से पूतभृत (सोम रखने का पात्र) आह्वनीय पात्र, वेदिका, कुशा, अवभृथ स्नान व शम्युवाक हमारे अनुकूल हो. यज्ञ सर्वविध फलीभूत होने की कृपा करे. (२१)

अग्निश्च मे घर्मश्च मेर्कश्च मे सूर्यश्च मे प्राणश्च मेश्वमेधश्च मे पृथिवी च मेदितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मेङ्गुलय: शक्वरयो दिशश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (२२)

यज्ञ से अग्नि, गरमी, अर्क, सूर्य, प्राण, अश्वमेध, पृथ्वी, अदिति व दिति हमारे अनुकूल होने की कृपा करे. यज्ञ से स्वर्गलोक विराट् पुरुष की अंगुलियां, शक्ति व दिशाएं हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. यह यज्ञ सर्वविध फलीभूत होने की कृपा करे. (२२)

व्रतं च म ऽ ऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मेहोरात्रे ऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (२३)

यज्ञ से व्रत, तप, वर्षा, दिनरात व यज्ञ से ऊर्वष्ठि हमारे अनुकूल होने की कृपा करे. यज्ञ से बृहद्रथंतर हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. यह यज्ञ सर्वविध फलीभूत होने की कृपा करे. (२३)

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च म ऽ एकादश च म ऽ एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म ऽ एकवि ꣳ शतिश्च म ऽ एकवि ꣳ शतिश्च मे त्रयोवि ꣳ शतिश्च मे त्रयोवि ꣳ शतिश्च मे पञ्चवि ꣳ शतिश्च मे पञ्चवि ꣳ शतिश्च मे सप्तवि ꣳ शतिश्च मे सप्तवि ꣳ शतिश्च मे नववि ꣳ शतिश्च मे नववि ꣳ शतिश्च म ऽ एकत्रि ꣳ शच्च म ऽ एकत्रि ꣳ शच्च मे त्रयस्त्रि ꣳ शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (२४)

यज्ञ से हम एक, तीन, पांच, पांच और सात, सात और नौ, नौ और ग्यारह, ग्यारह और तेरह, तेरह और पंद्रह, पंद्रह और सत्रह, उन्नीस और इक्कीस, तेईस और पच्चीस स्तोम इच्छा को फलीभूत करें. यज्ञ से हम पच्चीस और सत्ताईस, सत्ताईस और उनतीस, उनतीस और इकतीस, इकतीस और तैंतीस स्तोम इच्छा को फलीभूत करें. यज्ञ सर्वविध फलीभूत होने की कृपा करे. (२४)

चतस्रश्च मेष्टौ च मेष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे वि ꣳ शतिश्च मे वि ꣳ शतिश्च मे चतुर्वि ꣳ शतिश्च मे चतुर्वि ꣳ शतिश्च मेष्टावि ꣳ शतिश्च मेष्टावि ꣳ शतिश्च मे द्वात्रि ꣳ शच्च मे द्वात्रि ꣳ शच्च मे षट्त्रि ꣳ शच्च मे षट्त्रि ꣳ शच्च मे चत्वारि ꣳ शच्च मे चत्वारि ꣳ शच्च मे चतुश्चत्वारि ꣳ शच्च मे चतुश्चत्वारि ꣳ शच्च मेष्टाचत्वारि ꣳ शच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (२५)

यज्ञ से चार और आठ, आठ और बारह, बारह और सोलह, सोलह और बीस, बीस और चौबीस, चौबीस और अट्ठाईस स्तोम अभीष्ट प्राप्ति की कृपा करें. यज्ञ से अट्ठाईस और बत्तीस स्तोम, बत्तीस और छत्तीस, छत्तीस और चालीस, चालीस और चवालीस व चवालीस और अड़तालीस स्तोम अभीष्ट प्राप्ति की कृपा करें. यज्ञ सर्वविध हमारे लिए फलीभूत हो. (२५)

त्र्यविश्च मे त्र्यवी च मे दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे पञ्चाविश्च मे पञ्चावी च मे त्रिवत्सश्च मे त्रिवत्सा च मे तुर्यवाट् च मे तुर्यौही च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (२६)

यज्ञ से तीन से आधे वर्ष का बछड़ा, तीन वर्ष की बछिया, दो वर्ष का बछड़ा, बछिया, ढाई वर्ष का बछड़ा व बछिया. यज्ञ से तीन वर्ष का बैल व गाय सहायक हो. यज्ञ से साढ़े तीन वर्ष का बैल व गाय सहायक हो. यज्ञ सर्वविध हमारे लिए फलीभूत हो. (२६)

पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च म ऽ उक्षा च मे वशा च म ऽ ऋषभश्च मे वेहच्च मेनड्वाँश्च मे धेनुश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्.. (२७)

यज्ञ से चार वर्ष का बैल और गाय सहायक हो. यज्ञ से सेचन समर्थ बैल और वंध्या गाय सहायक हो, यज्ञ से तंदुरुस्त बैल गर्भ घातिनी गाय सहायक हो. गाड़ी खींचने वाले बैल और हाल ही में ब्याई गाय हमें प्राप्त हो. अभिप्राय यह है कि हमें सब प्रकार का पशु धन मिले. (२७)

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहापिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहाहर्पतये स्वाहाह्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैन ँ्शिनाय स्वाहा विन ँ्श शिन ऽ आन्त्यायनाय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा. इयं ते राण्मित्राय यन्तासि यमन ऽ ऊर्जे त्वा वृष्ट्यै त्वा प्रजानां त्वाधिपत्याय.. (२८)

यह आहुति अन्न रूप चैत्र मास के लिए समर्पित है. यह आहुति प्रसव रूप वैशाख, मास के लिए समर्पित है. यह आहुति जलक्रीड़ा आदि में आनंददायक ज्येष्ठ मास के लिए है. यह आहुति क्रतु रूप आषाढ़ मास के लिए है. यह आहुति चातुर्मास में यात्रा निषेधक वसु रूप श्रावण मास के लिए है. यह आहुति भाद्र मास के लिए है. यह आहुति मनमोहक आश्विन मास के लिए है. यह आहुति कार्तिक मास के लिए है. यह आहुति विष्णु रूप मार्गशीर्ष मास के लिए है. यह आहुति पौष मास के लिए है. यह आहुति माघ मास के लिए है. यह आहुति ऋतुराज रूप फाल्गुन मास के लिए है. हे प्रजापति! आप हमारे मित्र के समान हितैषी हैं. आप यज्ञ आदि के बनाने वाले हैं. ऊर्जा और प्रजा की बढ़ोतरी के लिए हम आप को प्रेमपूर्वक प्रणाम करते हैं. (२८)

आयुर्यज्ञेन कल्पतां प्राणो यज्ञेन कल्पतां चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ँ्श्रोत्रं यज्ञेन कल्पतां वाग्यज्ञेन कल्पतां मनो यज्ञेन कल्पतामात्मा यज्ञेन कल्पतां ब्रह्मा यज्ञेन कल्पतां ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता ँ्स्वर्यज्ञेन कल्पतां पृष्ठं यज्ञेन कल्पतां यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्. स्तोमश्च यजुश्च ऋक् च साम च बृहच्च रथन्तरं च. स्वर्देवा ऽ अगन्मामृता ऽ अभूम प्रजापते: प्रजा ऽ अभूम वेट् स्वाहा.. (२९)

यज्ञ से हमारी उमर बढ़े. प्राणों में तेज और बल बढ़े. नेत्र और कान श्रेष्ठ हों. वाणी उत्कृष्ट हो. आत्मा आनंदमय हो. वेदों के ज्ञाता ब्रह्मा संतोषी हों. यज्ञ से ज्योतिष्मान परम तत्त्व मिले, यज्ञ से स्वर्ग अर्थात् सुख मिले. यज्ञ और स्तुति के मंत्र हमें अभीष्ट फल दें. सभी देव हमें देवत्व प्रदान करें. अर्थात् सुख दें. हम भी प्रजापति परमात्मा के रूप में सुख भोगें. इसी लिए यह आहुति समर्पित है. (२९)

वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीमदितिं नाम वचसा करामहे.
यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश तस्यां नो देव: सविता धर्म साविषत्.. (३०)

पृथ्वी माता अन्न पैदा करती हैं. हम पृथ्वी माता की महिमा को वाणी से गागा कर व्यक्त करते हैं. उस में सारा विश्व और लोक समाए हुए हैं. सविता देव इस पृथ्वी पर हमारी स्थिति को दृढ़तर करने की कृपा करें. (३०)

विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऽ ऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः.
विश्वे नो देवा ऽ अवसागमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे.. (३१)

आज हमारे इस यज्ञ में (सभी) मरुद्‌गण पधारने की कृपा करें. सभी देवगण अपने रक्षा साधनों सहित पधारने की कृपा करें. सभी अग्नियां प्रज्वलित होने की कृपा करें. हमारे लिए सब प्रकार के अन्न, धन प्राप्त कराने की कृपा कराएं. (३१)

वाजो नः सप्त प्रदिशश्चतस्रो वो परावतः.
वाजो नो विश्वैर्देवैर्धनसाताविहावतु.. (३२)

हमारे अन्न, धन की सातों उपदिशाओं और चारों दिशाओं में बढ़ोतरी हो. समस्त देवगण (विश्व) हमारे धनधान्य की रक्षा करने की कृपा करें. (३२)

वाजो नो अद्य प्र सुवाति दानं वाजो देवाँ २ ऋतुभिः कल्पयाति.
वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा ऽ आशा वाजपतिर्जयेयम्.. (३३)

देवगण आप अन्न के अधिष्ठाता हैं. आप हमें अन्नदान करने की प्रेरणा देने की कृपा कीजिए. देवताओं को ऋतु के अनुसार अन्न फलीभूत होता रहे. (३३)

वाजः पुरस्तादुत मध्यतो नो वाजो देवान् हविषा वर्धयाति.
वाजो हि मा सर्ववीरं चकार सर्वा ऽ आशा वाजपतिर्भवेयम्.. (३४)

अन्न हमारे सामने उपजता है. वह हमारे घर के बीच उपजता है. अन्न हवि से देवताओं की बढ़ोतरी करता है. वह ही हम सब को वीर बनाता है. हम आप की कृपा से अन्नपति व आशावादी बनें. (३४)

सम्मा सृजामि पयसा पृथिव्याः सम्मा सृजाम्यद्भिरोषधीभिः.
सोहं वाज ꣸ सनेयमग्ने.. (३५)

हे अग्नि! आप पृथ्वी पर रस से सृजन करते हैं. आप पृथ्वी पर रस, जल और ओषध से सृजन करते हैं. हम अग्नि की कृपा से ओषध और जल पाते हैं. (३५)

पयः पृथिव्यां पय ऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः.
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्.. (३६)

हे अग्नि! आप पृथ्वी पर दूध धारण कीजिए. आप पृथ्वी पर ओषधियों में जीवन धारण कीजिए. आप स्वर्गलोक में दिव्य रस धारण कीजिए. आप अंतरिक्ष में दिव्य रस धारण कीजिए. आप की कृपा से हमारे लिए सभी दिशाएं, प्रदिशाएं पयस्विनी (दूध देने वाली) हो जाएं. (३६)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि.. (३७)

सविता देव के जन्मने (उदय होने) पर अश्विनीकुमारों के बाहुओं से अभिषिंचन किया जा रहा है. पूषा देव के हाथों से अभिषिंचन किया जा रहा है. सरस्वती देवी की वाणी से अभिषिंचन किया जा रहा है. नियामक सत्ता के नियमन से अभिषिंचन किया जा रहा है. अग्नि के साम्राज्य से अभिषिंचन किया जा रहा है. (३७)

ऋताषाड़ृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोप्सरसो मुदो नाम.
स न ऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्य: स्वाहा.. (३८)

अग्नि सत्य से विजय पाते हैं. वे श्रेष्ठ धाम वाले हैं. ओषधियां गंधर्व की अप्सराएं हैं. ये सभी में मोद (प्रसन्नता) का संचार करती हैं. अग्नि इन ब्राह्मणों व क्षत्रियों के रक्षक हों. उन के लिए यह आहुति समर्पित हैं. उन के लिए स्नेहपूर्वक आहुति समर्पित है. उन के लिए स्वाहा. (३८)

स ꣳ हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोप्सरस ऽ आयुवो नाम.
स न ऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्य: स्वाहा.. (३९)

सामवेद की सुंदर ऋचाओं से जिन की स्तुति की जाती है, जो दिन और रात को मिलाते हैं, जिन की किरणें गंधर्व की अप्सराएं हैं, वे हमारी रक्षा करें. वह सूर्य ब्राह्मणों व क्षत्रियों की रक्षा करें. उन के लिए यह आहुति है. उन के लिए स्वाहा. उन के लिए स्नेहपूर्वक आहुति अर्पित है. (३९)

सुषुम्ण: सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम.
स न ऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्य: स्वाहा.. (४०)

सूर्य सुषमा दायक हैं. चंद्र देव सूर्य की किरणों से प्रकाश पाते हैं. नक्षत्रों की रश्मियां गंधर्व अप्सराएं हैं. ये चमकीली हैं. ये ब्राह्मणों व क्षत्रियों की रक्षा करें. इन के लिए आहुति अर्पित है. इन के लिए स्नेहपूर्वक आहुति अर्पित है. इन के लिए स्वाहा. (४०)

इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वस्तस्यापो अप्सरस ऽ ऊर्जो नाम.
स न ऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्य: स्वाहा.. (४१)

गंधर्व वायु स्वरूप हैं. वे भूमि को धारण करने वाले हैं. यह भूमि सर्वव्यापक है. वे गंधर्व शीघ्र गमनशील ऊर्जस्वी हैं. उन से निवेदन है कि वे ब्राह्मणों व क्षत्रियों की रक्षा करें. उन के लिए स्वाहा. जल उन की अप्सराएं हैं. वे हमारी रक्षा करने की कृपा करें. उन के लिए स्वाहा. (४१)

भुज्यु: सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणा ऽ अप्सरस स्तावा नाम.
स न ऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्य: स्वाहा.. (४२)

गंधर्व सुपर्ण रूप व यज्ञ स्वरूप हैं. भोज्य पदार्थों के दाता हैं. गंधर्व ब्राह्मणों व क्षत्रियों की रक्षा करने की कृपा करें. स्तुति नामक दक्षिणा यज्ञ की अप्सरा हैं. उन के लिए यह आहुति समर्पित है. उन के लिए स्वाहा. (४२)

प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरस ऽ एष्टयो नाम.
स न ऽ इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा.. (४३)

गंधर्व प्रजापति, विश्वकर्मा व मन स्वरूप हैं. गंधर्व ब्राह्मणों व क्षत्रियों की रक्षा करने की कृपा करें. ऋक् और साम की एष्टि नामक अप्सरा है. वे हमारी रक्षा करने की कृपा करें. उन के लिए यह आहुति अर्पित है. उन के लिए स्वाहा. (४३)

स नो भुवनस्य पते प्रजापते यस्य त ऽ उपरि गृहा यस्य वेह.
अस्मै ब्रह्मणेस्मै क्षत्राय महि शर्म यच्छ स्वाहा.. (४४)

हे प्रजापति! आप भुवनपति हैं. ऊपर के सारे घर आप की ही कृपा से स्थित हैं. आप ब्राह्मणों व क्षत्रियों को सुख प्रदान कीजिए. आप के लिए स्वाहा. (४४)

समुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा.
मारुतोसि मरुतां गणः शम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहावस्यूरसि
दुवस्वाञ्छम्भूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा.. (४५)

आप समुद्र, नभवान, जल दान करने वाले व भूमि को सुख दान करने वाले हैं. आप के लिए स्वाहा. मरुत् हैं. मरुतों के गण हैं. सुखदायी हैं. सब के आश्रयदाता हैं. दुःख दूर करने वाले हैं. आप बहुत सुखदायी हैं. आप के लिए यह आहुति अर्पित है. आप के लिए स्वाहा. (४५)

यास्ते अग्ने सूर्ये रुचो दिवमातन्वन्ति रश्मिभिः.
ताभिर्नो अद्य सर्वाभी रुचे जनाय नस्कृधि.. (४६)

हे अग्नि! आप से सूर्य स्वर्गलोक को चमकाते हैं. सूर्य की किरणें स्वर्गलोक को चमकाती हैं. उन देव की किरणें आज सभी को चमकाएं व प्रकाशित करें. सभी को तेजस्वी बनाने के लिए प्रकाशित हों. (४६)

या वो देवाः सूर्ये रुचो गोष्वश्वेषु या रुचः.
इन्द्राग्नी ताभिः सर्वाभी रुचन्नो धत्त बृहस्पते.. (४७)

जो देवगण सूर्य के प्रकाश से ज्योतिमान हैं, जो प्रकाश गायों में विद्यमान है, जो प्रकाश घोड़ों में विद्यमान है, इंद्र देव उन से हम सभी को चमकाएं. इंद्र देव उसे हम सभी के लिए धारण करें. अग्नि व बृहस्पति व उसे हम सभी के लिए धारण करें. (४७)

रुचन्नो धेहि ब्राह्मणेषु रुच ꣳ राजसु नस्कृधि.
रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्.. (४८)

हमारे लिए ज्योति धारिए. ब्राह्मणों व क्षत्रियों में ज्योति स्थापित कीजिए. वैश्यों, शूद्रों में ज्योति स्थापित कीजिए. मेरे लिए ज्योति धारिए. मुझे ज्योतिष्मान बनाने की कृपा कीजिए. (४८)

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः.
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ꣳ स मा न ऽ आयुः प्र मोषीः.. (४९)

हे वरुण देव! ब्राह्मणगण मंत्रों से आप का वंदन करते हैं. यजमान सदैव हवियों द्वारा आप की अभिशंसा (प्रशंसा और उपासना) करते हैं. हम यहां सुख चाहते हुए वरुण देव की प्रशंसा और उपासना करते हैं. उन्हें प्रार्थना सुनने के लिए जाग्रत करते हैं. वे हम पर क्रोध न करें. हमारी आयु को कम न करें. (४९)

स्वर्ण घर्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्ण ज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्यः स्वाहा.. (५०)

सोने जैसा प्रकाश उकेरने वाले देव के लिए स्वाहा. सोने जैसे सूर्य के लिए स्वाहा. सोने जैसे चमकने वाले देव के लिए स्वाहा. सोने जैसी ज्योति वाले देव के लिए स्वाहा. सोने जैसे सूर्य वाले देव के लिए स्वाहा. (५०)

अग्निं युनज्मि शवसा घृतेन दिव्य ꣳ सुपर्णं वयसा बृहन्तम्.
तेन वयं गमेम ब्रध्नस्य विष्टप ꣳ स्वो रुहाणा अधि नाकमुत्तमम्.. (५१)

हम अग्नि को घी से युक्त करते हैं. हम घी की आहुतियों से अग्नि की बढ़ोतरी करते हैं. अग्निदिव्य गुण वाले हैं. अग्निवय वहन करते हैं. उस से हम ऊपर बाधा रहित स्वर्गलोक जाते हैं. उत्तम स्वर्गलोक को प्राप्त होते हैं. वहीं अधिष्ठित होते हैं. (५१)

इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याभ्या ꣳ रक्षा ꣳ स्यपह ꣳ स्यग्ने.
ताभ्यां पतेम सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः.. (५२)

हे अग्नि! आप के दोनों पंख अजर हैं. सदैव उड़ने के लिए तत्पर हैं. दोनों पंख से आप राक्षसों का नाश करते हैं. आप उन दोनों पंखों से श्रेष्ठ कर्म करने वालों के उस लोक में प्रस्थान कीजिए, जहां पहले ही उत्पन्न पुरातन ऋषिगण जा चुके हैं. (५२)

इन्दुर्दक्षः श्येन ऽ ऋतावा हिरण्यपक्षः शकुनो भुरण्युः.
महान्त्सधस्थे ध्रुव ऽ आ निषत्तो नमस्ते अस्तु मा मा हि ꣳ सीः.. (५३)

हे अग्नि! आप चंद्रमा जैसे दक्ष, बाज जैसे वेगशाली हैं. आप सत्यवान, सोने जैसे पंख वाले, शक्तिमान, भरणपोषण कर्ता हैं व महान् हैं. ध्रुव (स्थिर), यज्ञ में सध कर रहते हैं. हे अग्नि! आप को नमन! आप हमारे अनुकूल हों. आप हमारे प्रति हिंसा मत कीजिए. (५३)

दिवो मूर्धासि पृथिव्या नाभिरूर्गपामोषधीनाम्.
विश्वायुः शर्म सप्रथा नमस्पथे.. (५४)

हे अग्नि! आप स्वर्गलोक की मूर्धा, पृथ्वीलोक की नाभि, ओषधियों का सारतत्त्व व विश्व का जीवन (आयु) हैं. आप सुखदाता व समस्त पथ में व्याप्त हैं. आप पथप्रदर्शक हैं. हे अग्नि! आप को नमन. (५४)

विश्वस्य मूर्धन्नधितिष्ठसि श्रितः समुद्रे ते हृदयमप्स्वायुरपो दत्तोदधिं भिन्त.
दिवस्पर्जन्यादन्तरिक्षात्पृथिव्यास्ततो नो वृष्ट्याव.. (५५)

हे अग्नि! आप विश्व की मूर्धा पर अधिष्ठित हैं. आप का हृदय समुद्र में आश्रित है. आप जल में व्याप्त हैं. आप समुद्र का भेदन कर के जल निकालिए. आप स्वर्गलोक व बादलों से हमारे लिए वर्षा कीजिए. आप अंतरिक्ष व पृथ्वी से हमारे लिए वर्षा कीजिए. (५५)

इष्टो यज्ञो भृगुभिराशीर्दा वसुभिः. तस्य न ऽ इष्टस्य प्रीतस्य द्रविणेहागमेः.. (५६)

धन इष्ट है. यज्ञ में हम बारबार आप की इच्छा करते हैं. आप हमें भरपूर धनों से आशीर्वाद दीजिए. हम धन से प्रीति रखते हैं. हम धन के लिए उत्तम रीति से यज्ञ संपादित करते हैं. (५६)

इष्टो अग्निराहुतः पिपर्त्तु न ऽ इष्ट ꣳ हविः. स्वगेदं देवेभ्यो नमः.. (५७)

हे अग्नि! आप इष्ट हैं. हम आप का आह्वान करते हैं. हम हवि से तृप्त करते हैं. आप स्वयं प्रकाश व गमनशील हैं. आप हमारी हवि देवों तक पहुंचाने की कृपा करें. (५७)

यदाकूतात्समसुस्त्रोद्धृदो वा मनसो वा सम्भृतं चक्षुषो वा.
तदनु प्रेत सुकृतामु लोकं यत्र ऋषयो जग्मुः प्रथमजाः पुराणाः.. (५८)

हे यजमानो! ज्ञान श्रेष्ठ बुद्धि के स्रोत से उत्पन्न होता है. मानस से निकलता है. चक्षुओं से स्रवित होता है. हम उस का और श्रेष्ठ कर्मों का अनुकरण करें. हम उस लोक को प्राप्त करें, जहां पूर्व में उत्पन्न पुरातन ऋषि पहुंच चुके हैं. (५८)

एत ꣳ सधस्थ परि ते ददामि यमावहाच्छेवधिं जातवेदाः.
अन्वागन्ता यज्ञपतिर्वो अत्र त ꣳ स्म जानीत परमे व्योमन्.. (५९)

हे परम शक्ति! चारों ओर से यज्ञफल हम आप को भेंट करते हैं. अग्नि यजमान को जो फल भेंट करते हैं, वह हम आप के लिए अर्पित करते हैं, अंततोगत्वा यजमान परम व्योम में आता है. उस की गति को आप जानिए. (५९)

एतं जानीथ परमे व्योमन् देवाः सधस्था विद रूपमस्य.
यदागच्छात्पथिभिर्देवयानैरिष्टापूर्त्ते कृणवाथाविरस्मै.. (६०)

हे परम व्योम में स्थित दिव्य शक्तियो! आप यजमान के सधे हुए रूप को जानने की कृपा कीजिए. जब यजमान देवयान (देवताओं के जाने योग्य) पथ से गमन करें, उस समय आप इस यजमान की अभीष्टपूर्ति करने की कृपा कीजिए. (६०)

उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च.
अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्विश्वे देवा यजमानश्च सीदत.. (६१)

हे अग्नि! आप जाग्रत होने व यजमान के अभीष्ट की पूर्ति करने की कृपा कीजिए. आप यजमान के लिए सब सुख सिरजिए. हे विश्वो! यजमान को आप चिरकाल तक स्वर्गलोक में अधिष्ठित करने की कृपा कीजिए. (६१)

येन वहसि सहस्रं येनाग्ने सर्ववेदसम्. तेनेमं यज्ञं नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे.. (६२)

हे अग्नि! आप जिस से हजारों को वहन करते हैं, आप जिस से सब को जानते हैं, आप उसी सामर्थ्य से यज्ञ को ले जाने (पहुंचाने) की कृपा कीजिए. आप देवताओं के गंतव्य पर यजमानों को ले जाने की कृपा कीजिए. (६२)

प्रस्तरेण परिधिना स्रुचा वेद्या च बर्हिषा. ऋचेमं यज्ञं नो नय स्वर्देवेषु गन्तवे.. (६३)

हे अग्नि! पत्थर, परिधि, स्रुक (चम्मच), वेदी, कुशा व ऋचा से आप हमारे इस यज्ञ को देवताओं के गंतव्य की ओर ले जाने की कृपा कीजिए. (६३)

यद्दत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणा:. तदग्निर्वैश्वकर्मण: स्वर्देवेषु नो दधत्.. (६४)

हम ने जो कुछ दूसरों को दान किया है, हम ने जो कुछ प्रतिपूर्ति की है, हम ने जो कुछ दक्षिणा दी है, उसे विश्वकर्मा अग्नि देवताओं के लिए धारने की कृपा करें. (६४)

यत्र धारा ऽ अनपेता मधोर्घृतस्य च या:.
तदग्निर्वैश्वकर्मण: स्वर्देवेषु नो दधत्.. (६५)

जहां मधु व घी की धाराएं लगातार प्रवाहित होती रहती हैं, उन धाराओं को विश्वकर्मा अग्नि देवताओं के लिए धारने की कृपा करें. (६५)

अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म ऽ आसन्.
अर्कस्त्रिधातू रजसो विमानोजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम.. (६६)

अग्नि जन्म से ही सर्वज्ञ हैं. घी उन की आंखें हैं. हवि अमृत है. तीनों धातुओं का सार रज है. वह अजस्र जल का निर्माता है. ग्रीष्म का निर्माता और हवि वही है. (६६)

ऋचो नामास्मि यजू ꣳ षि नामास्मि सामानि नामास्मि.
ये अग्नय: पाञ्चजन्या ऽ अस्यां पृथिव्यामधि.
तेषामसि त्वमुत्तम: प्र नो जीवातवे सुव.. (६७)

ऋचा नामक अग्नि है. यजु नामक अग्नि है. साम नामक अग्नि है. इस पृथ्वी पर जो पंच अग्नियां हैं, उन में आप श्रेष्ठ हैं. आप हम सब को दीर्घ काल तक जिलाने की कृपा कीजिए. (६७)

वार्त्रहत्याय शवसे पृतनाषाह्याय च. इन्द्र त्वा वर्तयामसि.. (६८)

हे इंद्र देव! आप शत्रुओं पर आक्रमण कर के उन का नाश कर देते हैं. आप सामर्थ्यवान हैं. हम बारबार आप का आह्वान करते हैं. (६८)

सहदानुं पुरुहूत क्षियन्तमहस्तमिन्द्र सं पिणक् कुणारुम्.
अभि वृत्रं वर्धमानं पियारुमपादमिन्द्र तवसा जघन्थ.. (६९)

हे इंद्र देव! आप को हजारों यजमान हवि भेंट करते हैं. आप यजमान द्वारा भेंट की गई हवि को ग्रहण करते हैं. आप हमारे नजदीक के शत्रुओं को कुचल दीजिए. आप गालीगलौज करने वाले शत्रुओं को साधनहीन कर दीजिए. आप ऐसे शत्रुओं का नाश कर दीजिए. आप सब ओर आतंक फैला सकते हैं. आप सब ओर से बढ़ोतरी पाने वाले हैं. आप से अनुरोध है कि आप वृत्रासुर को पैर रहित बना दीजिए. आप वृत्रासुर का नाश कर दीजिए. (६९)

वि नऽइन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः.
यो अस्माँ २ अभिदासत्यधरं गमया तमः.. (७०)

हे इंद्र देव! आप से अनुरोध है कि आप युद्धों में हमारे दुश्मनों को नष्ट कर दीजिए. जो शत्रु हमारे साथ युद्ध करने के लिए तैयार खड़े हों, उन्हें आप पतन के गर्त में पहुंचा दीजिए. जो शत्रु हमें दास बनाने की इच्छा रखते हैं, आप उन्हें अंधेरे गर्त में पहुंचा दीजिए. (७०)

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावतऽआ जगन्था परस्याः.
सृक ꣳ स ꣳ शाय पविमिन्द्र तिग्मं वि शत्रून् ताढि वि मृधो नुदस्व.. (७१)

हे इंद्र देव! आप हमारे (कुचाल वाले) चालाक, पर्वत व गुफाओं में छिपे, शेर जैसे खतरनाक व हमारे पास दूर के शत्रुओं को सब ओर से घेर लीजिए. आप हमारे तीखे हथियारों से शत्रुओं को भेदिए व पीछे खदेड़ दीजिए. (७१)

वैश्वानरो नऽऊतयऽआ प्र यातु परावतः. अग्निर्नः सुष्टुतीरुप.. (७२)

हे अग्नि! आप विश्व का कल्याण करने वाले हैं. आप आइए. आप हमारी रक्षा कीजिए. आप हमारी स्तुतियां सुनिए. आप हमारी रक्षा कीजिए. (७२)

पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां पृष्टो विश्वा ओषधीरा विवेश.
वैश्वानरः सहसा पृष्टो अग्निः स नो दिवा स रिषस्पातु नक्तम्.. (७३)

हे अग्नि! आप स्वर्गलोक का आधार हैं. आप से स्वर्गलोक के बारे में पूछा गया. आप से पृथ्वीलोक के बारे में पूछा गया. आप से विश्व की ओषधियों में प्रवेश के बारे में पूछा गया. आप सब का कल्याण करने वाले हैं. हम साहस के साथ आप से पूछते हैं कि आप कौन हैं. आप दिन में व रात्रि में हिंसा से हमारी रक्षा कीजिए. (७३)

अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयि ꣳ रयिवः सुवीरम्.
अश्याम वाजमभि वाजयन्तोश्याम द्युम्नमजराजरं ते.. (७४)

हे अग्नि! आप हमारी सभी कामनाएं फलीभूत करें. आप हमें धनवान, श्रेष्ठ वीर पुत्रों वाला, बलवान व धनवान बनाएं. हम आप से सदा अजर व अमर रहने वाली द्युति (कांति चमक) पाएं. (७४)

वयं ते अद्य ररिमा हि काममुत्तानहस्ता नमसोपसद्य.
यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवानस्रेधता मन्मना विप्रो अग्ने.. (७५)

हे अग्नि! हम सब नमस्कार कर के आज आप के पास पहुंचते हैं. हम हाथ ऊंचे कर के आप को नमस्कार करते हैं. हम यज्ञ में दत्तचित्त हैं. हम मन से आप को हवि भेंट करते हैं. आप इस हवि को ब्राह्मणगणों तक पहुंचाने की कृपा कीजिए. (७५)

धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः.
सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे.. (७६)

हे अग्नि! आप सब के धाम हैं. हे ब्रह्मा! हे बृहस्पति! आप सब के धाम हैं. सभी देवगणों से अनुरोध है कि वे अच्छे मन से किए जा रहे यजमान के इस यज्ञ को शुभ परिणति (परिणाम) प्रदान करने की कृपा करें. (७६)

त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄः पाहि शृणुधी गिरः. रक्षा तोकमुत त्मना.. (७७)

हे अग्नि! आप जौमय व दाता हैं. आप मनुष्यों की रक्षा करें. आप हमारी वाणियां सुनने, हमारी संतान और हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (७७)

उन्नीसवां अध्याय

स्वाद्वीं त्वा स्वादुना तीव्रां तीव्रेणामृताममृतेन.
मधुमतीं मधुमता सृजामि स ꣳ सोमेन.
सोमोस्यश्विभ्यां पच्यस्व सरस्वत्यै पच्यस्वेन्द्राय सुत्राम्णे पच्यस्व.. (१)

हे ओषध देव! आप स्वादिष्ट, स्वादु, तीव्र व अमृतमय हैं. आप को मधु मिश्रित मधुर सोम के साथ मिला कर सृजित करते हैं. आप दोनों अश्विनीकुमारों के लिए पकने की कृपा करें. आप सरस्वती देवी के लिए पकने की कृपा करें. आप संरक्षक इंद्र देव के लिए पकने की कृपा करें. (१)

परीतो षिञ्चता सुत ꣳ सोमो य उत्तम ꣳ हविः.
दधन्वा यो नर्यो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः.. (२)

हे यजमानो! आप सोम को चारों ओर से उत्तम हवि से सींचिए. आप यजमानों के लिए नीति धारण कीजिए. सोम जल के बीच में हैं. पत्थरों से उस को कूट कर सींचा जाता है. (२)

वायोः पूतः पवित्रेण प्रत्यङ्क्सोमो अतिद्रुतः.
इन्द्रस्य युज्यः सखा.
वायोः पूतः पवित्रेण प्राङ्क्सोमो अतिद्रुतः.
इन्द्रस्य युज्यः सखा.. (३)

वायु देव शुद्ध, पवित्र व अति तीव्र गति वाले हैं और इंद्र देव के साथ जुड़ते हैं. इंद्र देव के सखा हैं. वायु शुद्ध, पवित्र व बहुत द्रुत गति वाले हैं. इंद्र देव के सखा हैं. (३)

पुनाति ते परिस्रुत ꣳ सोम ꣳ सूर्यस्य दुहिता. वारेण शश्वता तना.. (४)

सोम पवित्र हैं. चारों ओर से स्रवित (झरते) होते हैं. सोम को पवित्र करते हैं. सूर्य की दुहिता पवित्र करती हैं. श्रद्धा तुम्हें पवित्र बनाती हैं. (४)

ब्रह्म क्षत्रं पवते तेज ऽ इन्द्रिय—सुरया सोमः सुत ऽ आसुतो मदाय.
शुक्रेण देव देवताः पिपृग्धि रसेनान्नं यजमानाय धेहि.. (५)

हे सोम! आप पवित्र तेज झराइए. आप ब्राह्मणों व क्षत्रियों को पवित्र कीजिए. सोम इंद्रिय सामर्थ्य को प्रकट करता है. सरस हो कर सोम और अधिक आनंददायी हो जाता है. यह देवों का देव व चमकीला है. यह यजमानों के लिए रसमय अन्न धारण करता है. (५)

कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय.
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम ऽ उक्तिं यजन्ति.
उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ण ऽ एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा.. (६)

अन्नवान किसान पहले ही अन्न को काट कर रख लेता है, ताकि उस में से पर्याप्त जौ निकल सके. ये यजमान कुश के आसन पर विराजमान हैं. यजमान नमस्कारपूर्वक यज्ञ करते हैं. अश्विनी देवों, सरस्वती देवी, संरक्षक इंद्र देव के लिए आप को उपयाम में ग्रहण किया गया है. वही आप का मूल निवास है. हम तेज, वीर्य व बल के लिए आप को यहां स्थापित करते हैं. (६)

नाना हि वां देवहित ꣳ सदस्कृतं मा स ꣳ सृक्षाथां परमे व्योमन्.
सुरा त्वमसि शुष्मिणी सोम ऽ एष मा मा हि ꣳ सीः स्वां योनिमाविशन्ती.. (७)

आप नाना प्रकार से देवताओं का हित व श्रेष्ठ कार्य करने वाले हैं. आप परम व्योम में स्थित रहते हैं. सुरा तुम बलवती हो. यह सोम अलग स्वभाव का है. आप उस के मूल स्थान में प्रवेश करते हुए उस के प्रति हिंसा मत कीजिए. (७)

उपयामगृहीतोस्याश्विनं तेजः सारस्वतं वीर्यमैन्द्रं बलम्.
एष ते योनिर्मोदाय त्वा नन्दाय त्वा महसे त्वा.. (८)

सोम देव! आप उपयाम में ग्रहण किए गए हैं. अश्विनीकुमार के तेज के लिए व सरस्वती देवी के पराक्रम के लिए आप को स्थापित करते हैं. हमारे लिए वीर्य धारिए. (८)

तेजोसि तेजो मयि धेहि वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि बलमसि बलं मयि धेह्योजोस्योजो मयि धेहि मन्युरसि मन्युं मयि धेहि सहोसि सहो मयि धेहि.. (९)

आप बलवान हैं. हमारे लिए बल धारिए. आप ओजवान हैं. हमारे लिए ओज धारिए. आप मन्यु (उत्साह) हैं. हमारे लिए उत्साह धारिए. आप सहनशील हैं. आप हमारे लिए सहनशीलता धारिए. आप संघर्षशील हैं. आप हमारे लिए संघर्षशीलता धारिए. (९)

या व्याघ्रं विषूचिकोभौ वृकं च रक्षति.
श्येनं पतत्रिण ꣳ सि ꣳ ह ꣳ सेमं पात्व ꣳ हसः.. (१०)

जो व्याघ्र और विषूचिका दोनों की रक्षा करती है, जो भेड़िए की भी रक्षा करती है, जो पतनशील बाज की रक्षा करती है, जो सिंह की रक्षा करती है, वही (शक्ति) यजमानों की भी रक्षा करने की कृपा करे. (१०)

यदापिपेष मातरं पुत्रः प्रमुदितो धयन्.
एतत्तदग्ने अनृणो भवाम्यहतौ पितरौ मया.
सम्पृच स्थ सं मा भद्रेण पृङ्क्त विपृच स्थ वि मा पाप्मना पृङ्क्त.. (११)

दूध पीता हुआ बालक प्रमुदित होता हुआ मां को प्रताड़ित करता है, उसी प्रकार हम मातापिता के ऋण से उऋण होना चाहते हैं. मातापिता कल्याणकारी हैं. आप हमें पापों से दूर या अलग करने की कृपा कीजिए. (११)

देवा यज्ञमतन्वत भेषजं भिषजाश्विना.
वाचा सरस्वती भिषगिन्द्रायेन्द्रियाणि दधतः.. (१२)

देवताओं व वैद्य अश्विनीकुमार ने यज्ञ का विस्तार किया. सरस्वती ने वाणी से इंद्र देव के लिए इंद्रियों में क्षमता धारते हुए यज्ञ का विस्तार किया. (१२)

दीक्षायै रूप ꣳ शष्पाणि प्रायणीयस्य तोक्मानि.
क्रयस्य रूप ꣳ सोमस्य लाजाः सोमा ꣳ शवो मधु.. (१३)

दीक्षा के लिए प्रायणीय (आरंभिक) जौ यज्ञ रूप हैं. खरीदे गए लाजा सोम के लिए कल्याणकारी व मधुमय हैं. (१३)

आतिथ्यरूपं मासरं महावीरस्य नग्नहुः. रूपमुपसदामेतत्तिस्रो रात्रीः सुरासुता.. (१४)

धन और ओषधियों का चूर्ण आतिथ्य रूप है. महान् वीरों के लिए उपयोगी है. तीन रातों तक उपसद (निकट जाने वाले) के रूप में टपकता और सुरा बन जाता है. (१४)

सोमस्य रूपं क्रीतस्य परिस्रुत्परिषिच्यते.
अश्विभ्यां दुग्धं भेषजमिन्द्रायैन्द्र ꣳ सरस्वत्या.. (१५)

खरीदे गए सोम का रूप चारों ओर से टपकता है. वैद्य अश्विनी व सरस्वती देवी इंद्र देव के लिए दूध दुहती हैं. (१५)

आसन्दी रूप ꣳ राजासन्द्यै वेद्यै कुम्भी सुराधानी.
अन्तरऽ उत्तरवेद्या रूपं कारोतरो भिषक्.. (१६)

सोम राजा स्वरूप हैं और राजा के आसन पर विराजमान हैं. वेदी पर सुरा का कुंभ स्थापित किया गया है. दोनों के बीच उत्तरवेदी हैं. भिषक् के रूप में छलने (छानने का यंत्र) को स्थापित किया गया है. (१६)

वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रियम्.
यूपेन यूप ऽ आप्यते प्रणीतो अग्निरग्निना.. (१७)

इस यज्ञ में वेदी से वेदी को प्राप्त किया जाता है. इस यज्ञ में कुशा से कुशा को प्राप्त किया जाता है. इस यज्ञ में इंद्रियों से इंद्रिय ज्ञान प्राप्त किया जाता है. इस यज्ञ में स्तंभ से स्तंभ को प्राप्त किया जाता है. इस यज्ञ में अग्नि से अग्नि को प्राप्त किया जाता है. (१७)

हविर्धानं यदश्विनाग्नीध्रं यत्सरस्वती.
इन्द्रायैन्द्र ꣳ सदस्कृतं पत्नीशालं गार्हपत्यः.. (१८)

अश्विनीकुमार से हवि का धान प्राप्त होता है. सरस्वती देवी से आग्नीध्र प्राप्त होता है. यज्ञ सदन में, पत्नीशाला में तथा गार्हपत्य अग्नि में इंद्र देव के ऐश्वर्य के अनुकूल हवि देवगणों द्वारा प्रस्तुत की जाती है. (१८)

प्रैषेभिः प्रैषानाप्नोत्याप्रीभिराप्रीर्यज्ञस्य.
प्रयाजेभिरनुयाजान् वषट्कारेभिराहुतीः.. (१९)

प्रैष (कष्ट या प्रेरणा) आदि से प्रैष प्राप्त होता है. प्रिय से प्रियदायी की प्राप्ति होती है. यज्ञ से यज्ञ की प्राप्ति होती है. यजन से यज्ञ का अनुकरण करने वाले की प्राप्ति होती है. वषट्कारों से आहुतियों की प्राप्ति होती है. (१९)

पशुभिः पशूनाप्नोति पुरोडाशैर्हवी ꣳ ष्या.
छन्दोभिः सामिधेनीर्याज्याभिर्वषट्कारान्.. (२०)

पशुओं से पशु प्राप्त होते हैं. पुरोडाश से हवि प्राप्त होती है. छंदों से सामधेनी (विशेष प्रकार के मंत्र) की प्राप्ति होती है. यज्ञ से संबंधित क्रियाओं से वषट्कारों को प्राप्त किया जाता है. (२०)

धानाः करम्भः सक्तवः परीवापः पयो दधि.
सोमस्य रूप ꣳ हविष ऽ आमिक्षा वाजिनं मधु.. (२१)

धान, धान की लपसी, सत्तू आदि, जलमय दूध व दही आदि सोम का रूप है. हवि, ईक्षु (गन्ना) आदि, अन्न हवि व शहद आदि सोम का रूप हैं. (२१)

धानाना ꣳ रूपं कुवलं परीवापस्य गोधूमाः.
सक्तूना ꣳ रूपं बदरमुपवाकाः करम्भस्य.. (२२)

धान का रूप ही यज्ञ में अन्न के रूप में प्रयुक्त किया जाता है. चारों ओर उस से ही गोधूम फैलता है. बेर सत्तू के रूप में तैयार किया जाता है. जौ को लपसी के रूप में तैयार किया जाता है. इन्हें हवि के रूप में प्रयोग में लाया जाता है. (२२)

पयसो रूपं यद्यवा दध्नो रूपं कर्कन्धूनि.
सोमस्य रूपं वाजिन ꣳ सौम्यस्य रूपमामिक्षा.. (२३)

जौ दूध और दही दही रूप में है. अन्न सोम से संबंधित इन रूपों को हम पूरी तरह देखना चाहते व चढ़ाना चाहते हैं. (२३)

आश्रावयेति स्तोत्रियाः प्रत्याश्रावो अनुरूपः.
यजेति धाय्यारूपं प्रगाथा ये यजामहाः.. (२४)

स्तोत्र से संबंधित ऋचाएं आश्रावय व प्रत्याश्राव के अनुरूप हैं. यज से संबंधित ऋचाएं धाय्या रूप हैं. 'यजामहे' पद से आरंभ होने वाली ऋचाएं प्रगाथा रूप हैं. (२४)

अर्धऋचैरुक्थाना ꣳ रूपं पदैराप्नोति निविदः.
प्रणवैः शस्त्राणा ꣳ रूपं पयसा सोम ऽ आप्यते.. (२५)

आधी ऋचाओं से उक्थों का बोध होता है. पदों से निविद का बोध होता है. प्रणवों से शस्त्रों के रूप का बोध होता है. दूध से सोम का रूप प्राप्त किया जाता है. (२५)

अश्विभ्यां प्रातःसवनमिन्द्रेणैन्द्रं माध्यन्दिनम्.
वैश्वदेव ꣳ सरस्वत्या तृतीयमाप्त ꣳ सवनम्.. (२६)

अश्विनीकुमारों से प्रातः सवन की प्राप्ति होती है. इंद्र देव और उन से संबंधित मंत्रों से माध्यंदिन सवन की प्राप्ति होती है. सरस्वती देवी विश्वों से संबंधित हैं. उन के माध्यम से तृतीय सवन की प्राप्ति होती है. (२६)

वायव्यैर्वायव्यान्याप्नोति सतेन द्रोणकलशम्.
कुम्भीभ्यामम्भृणौ सुते स्थालीभिः स्थालीराप्नोति.. (२७)

वायव्यों से वायव्य की प्राप्ति होती है. सत् से द्रोणकलश की प्राप्ति होती है. कुंभियों से अंभृण की प्राप्ति होती है. स्थालियों से स्थाली की प्राप्ति होती है. (२७)

यजुर्भिराप्यन्ते ग्रहा ग्रहैः स्तोमाश्च विष्टुतीः.
छन्दोभिरुक्थाशस्त्राणि साम्नावभृथ ऽ आप्यते.. (२८)

यजुमंत्रों से यजु और ग्रहों से ग्रह की प्राप्ति होती है. स्तोत्रों से इष्ट स्तुतियों, छंदों से उक्थ व शस्त्र की प्राप्ति होती है. साम मंत्रों से शस्त्र साम व अवभृथ की प्राप्ति होती है. (२८)

इडाभिर्भक्षानाप्नोति सूक्तवाकेनाशिषः.
शंयुना पत्नीसंयाजान्त्समिष्टयजुषा स ꣳ स्थाम्.. (२९)

यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले अन्न के भक्षण से वर्षा होती है. वाग्सूक्त से आशीष प्राप्त होता है. संयम से पतिपत्नी संबंध में प्रेम प्राप्त होता है. इष्ट यज्ञ से संस्थिति (उत्तम स्थिति) प्राप्त होती है. (२९)

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्.
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते.. (३०)

व्रत से दीक्षा प्राप्त होती है. दीक्षा से दक्षिणा प्राप्त होती है. दक्षिणा से श्रद्धा प्राप्त होती है. श्रद्धा से सत्य प्राप्त किया जाता है. (३०)

एतावद्रूपं यज्ञस्य यद्देवैर्ब्रह्मणा कृतम्.
तदेतत्सर्वमाप्नोति यज्ञे सौत्रामणी सुते.. (३१)

ब्राह्मणों ने यज्ञ के इतने ही रूप का वर्णन किया है. यज्ञ में वह सब प्राप्त किया जाता है. सौत्रामणि यज्ञ में सोम की आहुति से यह सब प्राप्त किया जाता है. (३१)

सुरावन्तं बर्हिषद ँ सुवीरं यज्ञ ँ हिन्वन्ति महिषा नमोभिः.
दधानाः सोमं दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः.. (३२)

हम सुरावान, कुश के आसन पर स्थित व श्रेष्ठवीर को नमस्कारों से मनाते हैं. हम महिमाशाली यज्ञ को नमस्कारों से विस्तृत करते हैं. स्वर्गलोक में विद्यमान देवताओं के लिए सोम धारण करते हुए यजमान इंद्र देव को आनंदित करते और अत्यंत प्रसन्न होते हैं. (३२)

यस्ते रसः सम्भृत ऽ ओषधीषु सोमस्य शुष्मः सुरया सुतस्य.
तेन जिन्व यजमानं मदेन सरस्वतीमश्विनाविन्द्रमग्निम्.. (३३)

ओषधियों में जो इकट्ठा किया गया सोम का रस है, वह तीक्ष्ण और सारवान है. उस सोम रस से यजमान को सरस्वती देवी, अश्विनीकुमारों व अग्नि को आनंदित करना चाहिए. (३३)

यमश्विना नमुचेरासुरादधि सरस्वत्यसुनोदिन्द्रियाय.
इमं त ँ शुक्रं मधुमन्तमिन्दु ँ सोम ँ राजानमिह भक्षयामि.. (३४)

अश्विनीकुमारों ने असुर नमुचि से सोम को पाया. सरस्वती देवी ने इंद्र देव के लिए सोम को निचोड़ा. सोम राजा, चमकीला व मधुर है. हम उस का पान करते हैं. (३४)

यदत्र रिप्त ँ रसिनः सुतस्य यदिन्द्रो अपिबच्छचीभिः.
अहं तदस्य मनसा शिवेन सोम ँ राजानमिह भक्षयामि.. (३५)

जो रसीला सोम यहां मौजूद है, जिस सोम को इंद्र देव ने पीया, हम उस कल्याणकारी सोम का मन से भक्षण करते हैं. सोम राजा हैं. (३५)

पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वाधायिभ्यः स्वधा नमः.
अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरोतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्.. (३६)

पितरों के लिए स्वधा, स्वधा के लिए नमन. पितामहों के लिए स्वधा, स्वधा के लिए नमन. पितामहों के लिए स्वधा, स्वधा के लिए नमन. पितरों ने हवि के रूप में समर्पित आहार को ग्रहण किया. उस आहार को ग्रहण कर के तृप्ति पाई. पितृगण हमें भी तृप्त करते हैं. पितृगण हमारे जीवन को शुद्ध करने की कृपा करें. (३६)

पुनन्तु मा पितरः सोम्यासः पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा.
पुनन्तु मा पितामहाः पुनन्तु प्रपितामहाः पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै.. (३७)

पितृगण हमें पवित्र करने की कृपा करें. पितृगण सौम्य हैं. पितामह हमें पवित्र करने की कृपा करें. प्रपितामह हमें पवित्र करने की कृपा करें. हम पवित्रतापूर्वक सौ वर्ष तक जीएं. अश्विनी देवों की कृपा से हम पूर्णायु पाएं. (३७)

अग्न ऽ आयू ꣳ षि पवस ऽ आ सुवोर्जमिषं च नः. आरे बाधस्व दुच्छुनाम्.. (३८)

हे अग्नि! आप आयुदायक व पवित्रताकारी हैं. आप हमें अच्छा अन्न प्रदान करने की कृपा करें. आप हमारी बाधाओं को दूर करने की कृपा करें. आप दुष्टों को दूर करने की कृपा करें. (३८)

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः.
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा.. (३९)

देवजन हमें पवित्र बनाने की कृपा करें. वे मन से हमारी बुद्धि को पवित्र बनाने की कृपा करें. अग्नि सभी प्राणियों को पवित्र बनाने की कृपा करें. सर्वज्ञ देव हमें पवित्र बनाने की कृपा करें. (३९)

पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव दीद्यत्. अग्ने क्रत्वा क्रतूँ १ रनु.. (४०)

हे अग्नि! आप अपनी पवित्रता से हमें पवित्र बनाने की कृपा करें. आप अपनी तेजस्विता से हमें पवित्र बनाने की कृपा करें. आप स्वर्गलोक तक दीप्तिमान हैं. आप अपने पवित्र कर्मों से यज्ञ को पवित्र बनाने की कृपा कीजिए. (४०)

यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा. ब्रह्म तेन पुनातु मा.. (४१)

हे अग्नि! जो आप का पवित्र स्वरूप है, आप बीच में अपने जिस स्वरूप का

विस्तार करते हैं, आप उस ब्रह्म स्वरूप से हमें पवित्र बनाने की कृपा कीजिए. (४१)

पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः. यः पोता स पुनातु मा.. (४२)

आप पवित्र बनाने वाले हैं. आप आज अपनी पवित्रता से हमें सर्वज्ञ बनाने की कृपा कीजिए. स्वयं पवित्र हैं. हमें पवित्र बनाने की कृपा कीजिए. (४२)

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च. मां पुनीहि विश्वतः.. (४३)

सविता देव आप दोनों व दोनों सवनों से हमें पवित्र बनाने की कृपा करें. आप सब ओर से हमें पवित्र बनाने की कृपा करें. (४३)

वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः.
तया मदन्तः सधमादेषु वय ꣳ स्याम पतयो रयीणाम्.. (४४)

यह विश्वे देवी हमें पवित्र बनाने की कृपा करें. यह विश्वे देवी हमें दिव्यता प्रदान करने की कृपा करें. (४४)

ये समानाः समनसः पितरो यमराज्ये.
तेषाँल्लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम्.. (४५)

यम के राज्य में जो हमारे समान मान वाले और समान मन वाले पितर हैं, उन के लोक में हमारी स्वधा व नमस्कार पहुंचें. हमारा यज्ञ सभी देवताओं के लिए फलीभूत हो. (४५)

ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः.
तेषा ꣳ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिँल्लोके शत ꣳ समाः.. (४६)

जीवों में जो समान मान वाले और समान मन वाले जीव हैं, उन की शोभा मुझे फलीभूत करे. हम इस लोक में सौ वर्षों तक जीएं. हमारे साथ ये जुड़ कर रहें. (४६)

द्वे सृती अशृणवं पितॄणामहं देवानामुत मर्त्यानाम्.
ताभ्यामिदं विश्वमेजत्समेति यदन्तरा पितरं मातरं च.. (४७)

हम ने मनुष्यों के जाने योग्य दो मार्ग सुने हैं. पहला पितृ मार्ग और दूसरा देव मार्ग. इन दोनों मार्गों से ही विश्व का सृजन हुआ है. मातापिता के संयोग से जीवों का निर्माण हुआ है. (४७)

इद ꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ꣳ सर्वगण ꣳ स्वस्तये.
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि.
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त.. (४८)

यह हवि हमारी संतान की बढ़ोतरी करने की कृपा करे. दसों अंगों की बढ़ोतरी

करे. सभी गणों के कल्याण के लिए हो. आत्मसुख देने वाली हो. संतान वृद्धिकारी हो. पशुधन की बढ़ोतरी करे. अभयदायी हो. हे अग्नि! आप हमारी प्रजा की बढ़ोतरी करें. आप हमारे लिए दूध व वीर्य धारिए. (४८)

उदीरतामवर ऽ उत्परास ऽ उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः.
असुं य ऽ ईयुरवृका ऽ ऋतज्ञास्ते नोवन्तु पितरो हवेषु.. (४९)

जो ऊंचे पितर, श्रेष्ठ पितर, मध्यम पितर व सौम्य पितर हैं, वे हमें प्रेरित करने की कृपा करें. शत्रुहीन पितर हमारी रक्षा करने की कृपा करें. सत्य को जानने वाले पितर व पितृगण हवियों में हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (४९)

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा ऽ अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः.
तेषां वय ꣳ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम.. (५०)

हमारे पितर अंगिरस हैं. नई वाणी के प्रेरक, अथर्वा, भृगु व सौम्य हैं. हम उन के प्रति सुमति वाले हैं. याजकों का कल्याण करें. उन के लिए समान मन वाले हों. (५०)

ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः.
तेभिर्यमः स ꣳ रराणो हवी ꣳ ष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु.. (५१)

जो हमारे पूर्व पितर हैं, वे सौम्य, सुखी, सोमरस पीने योग्य, वसिष्ठ हैं. उन के लिए हमारे पितर यम के साथ पधारने की कृपा करें. हवि को ग्रहण करने व शत्रु का नाश करने की कृपा करें. कामना की पूर्ति करने वाले हों. (५१)

त्व ꣳ सोम प्रचिकितो मनीषा त्व ꣳ रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम्.
तव प्रणीती पितरो न ऽ इन्दो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः.. (५२)

हे सोम! आप प्रकृष्ट (अत्यंत) प्रकाशमान हैं. आप मनीषा से श्रेष्ठ मार्ग की ओर ले जाने वाले हैं. आप की प्रीति से धैर्यवान पितरगण ने यज्ञ आदि श्रेष्ठ कार्य किए तथा देवों में सोमरस के प्रति प्रीति उत्पन्न की. (५२)

त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः.
वन्वन्नवातः परिधीँ २ रपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः.. (५३)

सोम! आप पवित्र हैं. पूर्व में हमारे धीर तथा पवित्र पितरों ने ही यज्ञ कर्म संपादित किए. आप विघ्नकारियों को दूर भगाएं. इंद्र देव वीर, अश्वारोही व धनवान हैं. वे हमें ऐश्वर्य प्रदान करने की कृपा करें. (५३)

त्व ꣳ सोम पितृभिः संविदानोनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ.
तस्मै त ऽ इन्दो हविषा विधेम वय ꣳ स्याम पतयो रयीणाम्.. (५४)

हे सोम! आप पूर्वजों के साथ हो कर स्वर्गलोक के सुख विस्तृत कीजिए. आप पूर्वजों के साथ हो कर पृथ्वीलोक के सुख विस्तृत कीजिए. हम आप के लिए हवि का विधान करते हैं. आप और हम भी धनपति हों. (५४)

बर्हिषदः पितर ऽ ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्.
त ऽ आ गतावसा शन्तमेनाथा नः शं योररपो दधात.. (५५)

हे पितरगण! आप कुश के आसन पर विराजते हैं. हम आप के लिए ऊंचेऊंचे स्वर में स्तुति गाते हैं. हम आप के लिए हवि समर्पित करते हैं. आप प्रसन्नता से इस हवि को ग्रहण करने व रक्षा साधनों से इस यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. आप हमारे लिए सुख धारिए. (५५)

आहं पितृन्त्सुविदत्राँ २ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः.
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त ऽ इहागमिष्ठाः.. (५६)

आप श्रेष्ठ ज्ञाता हैं. आप पितरों को अच्छी तरह जानिए. आप संसार के गतिमान चक्र को समझें. जो पितर कुश के आसन पर विराजित हैं, जो पितर स्वधामय सोमरस पीते हैं, वे पितरगण यहां आने की कृपा करें. (५६)

उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु.
त ऽ आ गमन्तु त ऽ इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेवन्त्वस्मान्.. (५७)

हम पितरों व सोमरस के इच्छुक पितरों का आह्वान करते हैं. हम कुश के आसन पर विराजित पितरों का आह्वान करते हैं. पितरगण हमारे प्रिय वचनों व हमारी बोली हुई स्तुतियों को सुनने और हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (५७)

आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः.
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोधि ब्रुवन्तु तेवन्त्वस्मान्.. (५८)

हमारे पितर सोम के समान सौम्य हैं. अग्नि जैसे तेजस्वी हैं. पितरगण देवों के लिए उपयुक्त मार्गों से इस यज्ञ में पधारने की कृपा करें. इस यज्ञ में स्वधा से आनंदित हों. हमारे प्रति उपदेश देने व हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (५८)

अग्निष्वात्ताः पितर ऽ एह गच्छत सदःसदः सदत सुप्रणीतयः.
अत्ता हवी ꣳ षि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयि ꣳ सर्ववीरं दधातन.. (५९)

पितरगण अग्नि के समान तेजस्वी हैं. वे यहां पधारें. यज्ञ सदन में विराजने की कृपा करें. कुश के आसन पर विराजिए. पितर हम यजमान के लिए धन व श्रेष्ठ वीर धारने की कृपा करें. (५९)

ये ऽ अग्निष्वात्ता ये ऽ अनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते.
तेभ्यः स्वराडसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयाति.. (६०)

जो पितर अग्नि के समान तेजस्वी हैं, जो पितर स्वर्गलोक के बीच में हैं, वे पितर स्वधा से आनंदित होते हैं. उन को स्वयं प्रकाशित परमात्मा अच्छी नीयत प्रदान करें. उन के शरीर को आवश्यकता के अनुसार कर्म का फल प्रदान करने की कृपा करें. (६०)

अग्निष्वात्तानृतुमतो हवामहे नाराश ঌ से सोमपीथं य ऽ आशुः.
ते नो विप्रासः सुहवा भवन्तु वय ঌ स्याम पतयो रयीणाम्.. (६१)

जो पितर अग्नि के समान तेजस्वी हैं, जो नीतिवान हैं, हम उन का आह्वान करते हैं. हम प्रशंसित व सोमपान में तीव्र गतिशील पितर का आह्वान करते हैं. वे हमारे ब्राह्मण पितर अच्छी तरह आह्वान योग्य हैं. हम धनों के स्वामी हो जाएं. (६१)

आच्या जानु दक्षिणतो निषद्येमं यज्ञमभि गृणीत विश्वे.
मा हि ঌ सिष्ट पितरः केन चिन्नो यद्व ऽ आगः पुरुषता कराम.. (६२)

हे पितरगणो! हम दाहिने घुटने पर टिक कर आप को आमंत्रित करते हैं. आप इस पूरे यज्ञ में अपना अभिमत प्रकट करने की कृपा करें. आप हम को हिंसित न करें. पितरगण यहां आने और हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (६२)

आसीनासो ऽ अरुणीनामुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय.
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्र यच्छत त ऽ इहोर्जं दधात.. (६३)

पितरगण लाल सूर्यलोक में विराजे हुए हैं. आप हमारे लिए धन धारिए. मनुष्यों के लिए ऐश्वर्य दीजिए. पितर पुत्रों के लिए वैभव दें. ऊर्जा धारण करें. (६३)

यमग्ने कव्यवाहन त्वं चिन्मन्यसे रयिम्.
तन्नो गीर्भिः श्रवाय्यं देवत्रा पनया युजम्.. (६४)

हे अग्नि! कविगण आप की स्तुति करते हैं. आप चिन्मय हैं. आप धन धारिए. आप हमारी उन वाणियों को सुनिए. देवताओं के लिए इस हवि की रक्षा कीजिए. हवि को उन तक पहुंचाइए. (६४)

यो अग्निः कव्यवाहनः पितॄन् यक्षदृतावृधः.
प्रेदु हव्यानि वोचति देवेभ्यश्च पितृभ्य ऽ आ.. (६५)

हे अग्नि! आप हवि वाहक हैं. आप सत्यमय यज्ञ की बढ़ोतरी करने वाले हैं. आप देवताओं व पितरों तक हवि प्रेषित करने की कृपा करें. (६५)

त्वमग्न ऽ ईडितः कव्यवाहनावाड्व्यानि सुरभीणि कृत्वी.
प्रादाः पितृभ्यः स्वधया ते अक्षन्नद्धि त्वं देव प्रयता हवी ঌ षि.. (६६)

हे अग्नि! आप आकांक्षित, कविगणों से स्तुत व हवि वाहक हैं. आप सुगंधित हवि को वहन करने की कृपा करें. देवगण प्रीतिपूर्वक इस हवि को ग्रहण करने की कृपा करें. पितरगण को स्वधामय हवि प्रदान करते हैं. (६६)

ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ २ उ च न प्रविद्म.
त्वं वेत्थ यति ते जातवेद: स्वधाभिर्यज्ञ ꣳ सुकृतं जुषस्व.. (६७)

जो हमारे पितर यहां विराजमान हैं और जो यहां नहीं हैं, जिन पितरों को हम जानते हैं और जिन को नहीं जानते हैं, हे सर्वज्ञ अग्नि! आप उन्हें जानिए. आप स्वधापूर्वक इस यज्ञ को अच्छी तरह संपादित कीजिए. (६७)

इदं पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य ऽ उपरास ऽ ईयु:.
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नून ꣳ सुवृजनासु विक्षु.. (६८)

पितरों को नमन. जो पितर पूर्व में हुए, जो पितर बाद में हुए, जो पार्थिव हैं, जो धर्म पालक हैं, उन सभी पितरों को सादर यह हवि प्राप्त हो. (६८)

अधा यथा न: पितर: परास: प्रत्नासो अग्न ऽ ऋतमाशुषाणा:.
शुचीदयन् दीधितिमुक्थशास: क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरपव्रन्.. (६९)

हे अग्नि! जैसे हमारे पितरों ने देह से मुक्त हो कर ऋतलोक को पाया, पवित्र किया, ज्ञान का विस्तार किया, अज्ञान का भेदन किया, हम भी उन की ही तरह दिव्यलोक को पाएं. (६९)

उशन्तस्त्वा निधीमह्युशन्त: समिधीमहि.
उशन्नुशत ऽ आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे.. (७०)

हे अग्नि! आप यहां विराजिए. हम यज्ञ और अर्थ की कामना से समिधा से आप को प्रज्वलित करते हैं. आप अग्रगामी हैं. आप पितरों को हविग्रहण करने के लिए बुलाने की कृपा करें. (७०)

अपां फेनेन नमुचे: शिर ऽ इन्द्रोदवर्तय:. विश्वा यदजय: स्पृध:.. (७१)

हे इंद्र देव! आप ने जलों के फेन से ही नमुचि के सिर को काट दिया. आप सभी अजेय शत्रुओं से स्पर्द्धा करने वाले हैं. (७१)

सोमो राजामृत ꣳ सुत ऽ ऋजीषेणाजहान्मृत्युम्.
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु.. (७२)

सोम राजा व अमृत हैं. वे हमें मृत्यु से दूर करते हैं. वे यज्ञ से सत्य, बल व इंद्रियों में इंद्र का सामर्थ्य उपलब्ध कराते हैं. वे यज्ञ से दूध, अमृत व मधु उपलब्ध कराते हैं. (७२)

अद्भ्यः क्षीरं व्यपिबत् क्रुङ्डांङ्गिरसो धिया.
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु.. (७३)

प्राण रूपी हंस बुद्धि से जल मिश्रित दूध में से दूध पीता है. ऋत से सत्य की प्राप्ति कराता है. यह इंद्रियों में सामर्थ्य प्रदान कराता है. यह हमें दूध व मधुर पदार्थ की प्राप्ति कराता है. (७३)

सोममद्भ्यो व्यपिबच्छन्दसा ह ꣳ सः शुचिषत्.
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु.. (७४)

आदित्य देव सोम को जलों से पृथक् कर के पीते हैं. ऋत से सत्य की प्राप्ति कराते हैं. यह इंद्रियों में सामर्थ्य प्रदान कराते हैं. यह हमें दूध व मधुर पदार्थ की प्राप्ति कराते हैं. (७४)

अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः.
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु.. (७५)

ब्राह्मणों के साथ प्रजापति निस्सृत अन्न के रस से सोम रूपी दूध को अलग कर के पीते हैं. ऋत से सत्य की प्राप्ति कराते हैं. यह इंद्रियों में सामर्थ्य प्रदान कराते हैं. यह हमें दूध, अमृत व मधुर पदार्थ की प्राप्ति कराते हैं. (७५)

रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम्.
गर्भो जरायुणावृत ऽ उल्बं जहाति जन्मना.
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु.. (७६)

एक ही मार्ग मूत्र छोड़ता है और वही योनि इंद्रिय में प्रवेश कर के वीर्य छोड़ता है. गर्भ जरायु से आवृत हो कर जन्म के साथ ही उस को भेद कर छोड़ देता है. ऋत से सत्य की प्राप्ति कराता है. यह इंद्रियों में सामर्थ्य प्रदान कराता है. यह हमें दूध, अमृत की प्राप्ति कराता है. यह हमें मधुर पदार्थ की प्राप्ति कराता है. (७६)

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्यानृते प्रजापतिः. अश्रद्धामनृतेदधाच्छ्रद्धा ꣳ सत्ये प्रजापतिः.
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु.. (७७)

प्रजापति ने सत्य और असत्य दोनों को अलगअलग रूपों में स्थापित किया प्रजापति ने असत्य को अश्रद्धा व सत्य को श्रद्धा के रूप में स्थापित किया. ऋत से सत्य की प्राप्ति कराता है. यह इंद्रियों में सामर्थ्य प्रदान कराता है. यह हमें दूध, अमृत व मधुर पदार्थ की प्राप्ति कराता है. (७७)

वेदेन रूपे व्यपिबत् सुतासुतौ प्रजापतिः.
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु.. (७८)

प्रजापति ने वेदों से ग्राह्य और अग्राह्य रूप को पीया. ऋत सत्य की प्राप्ति

कराता है. यह इंद्रियों में सामर्थ्य प्रदान कराता है. यह हमें दूध, अमृत व मधुर पदार्थ की प्राप्ति कराता है. (७८)

दृष्ट्वा परिस्रुतो रस ꣳ शुक्रेण शुक्रं व्यपिबत् पय: सोमं प्रजापति:.
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्रमन्धस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु.. (७९)

प्रजापति ने निस्सृत सोम रस को दूध के साथ पीया. प्रजापति ने चमकीला सोम रस को दूध के साथ पीया. यह ऋत से सत्य की प्राप्ति कराता है. यह इंद्रियों में सामर्थ्य प्रदान कराता है. यह हमें दूध, अमृत व मधुर पदार्थ की प्राप्ति कराता है. (७९)

सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिण ऽ ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति.
अश्विना यज्ञ ꣳ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन्.. (८०)

जैसे सीसे के यंत्र से तांत और ऊन आदि को बुना जाता है, वैसे ही मन से मनीषी और कवि इस यज्ञ की वय की बढ़ोतरी करते हैं. अश्विनी देव यज्ञ को संपन्न करते हैं. सविता देव, सरस्वती देवी, वरुण, इंद्र देव के रूप को ओषधियों से पुष्ट करते हैं. (८०)

तदस्य रूपममृत ꣳ शचीभिस्तिस्रो दधुर्देवता: स ꣳ रराणा:.
लोमानि शष्पैर्बहुधा न तोक्मभिस्त्वगस्य मा ꣳ समभवन्न लाजा:.. (८१)

इस यज्ञ के अमृतमय रूप को शची आदि तीनों देवताओं ने धारा. उन्होंने ही इस की खोज की. बहुत प्रकार की घास के लोम उन के शरीर के रोम हुए. यज्ञ में त्वक् को प्रकट किया. लाजा उन का मांस हुआ. (८१)

तदश्विना भिषजा रुद्रवर्तनी सरस्वती वयति पेशो अन्तरम्.
अस्थि मज्जानं मासरै: कारोतरेण दधतो गवां त्वचि.. (८२)

वैद्य अश्विनीकुमार रुद्र जैसे स्वभाव के हैं. उन्होंने और देवी सरस्वती ने इंद्र देव के शरीर को पूरा बनाया. अस्थि, मज्जा, मांस आदि और गायों की त्वचा को धारा. (८२)

सरस्वती मनसा पेशलं वसु नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपु:.
रसं परिस्रुता न रोहितं नग्नहुर्धीरस्तसरं न वेम.. (८३)

सरस्वती देवी ने दोनों अश्विनीकुमारों के साथ मिल कर मन से विशेष सुंदर तथा दर्शनीय शरीर की रचना की, रस (लहू) चुआया, धैर्य से विकार नाशक इस को शरीर में उपजाया. (८३)

पयसा शुक्रममृतं जनित्र ꣳ सुरया मूत्राज्जनयन्त रेत:.
अपामतिं दुर्मतिं बाधमाना ऽ ऊवध्यं वात ꣳ सब्वं तदारात्.. (८४)

सरस्वती देवी और अश्विनीकुमारों ने दूध से चमकीला अमृत उपजाया. मूत्र को उपजाया. वीर्य को उपजाया. अज्ञानवाली बुद्धि दुर्मति जन्य बाधाओं को दूर किया. ऊवध्य और वात को बाहर निकालने का प्रबंध किया. (८४)

इन्द्र सुत्रामा हृदयेन सत्यं पुरोडाशेन सविता जजान.
यकृत् क्लोमानं वरुणो भिषज्यन् मतस्ने वायव्यैर्न मिनाति पित्तम्.. (८५)

इंद्र देव सुरक्षक हैं. उन्होंने हृदय से सत्य को जना. सविता देव ने पुरोडाश से सत्य को जना. वरुण देव ने ओषध से यकृत को ठीक किया. गले की नाड़ी को ठीक किया. वायु ने अस्थि और पित्त को यथावस्थित किया. (८५)

आन्त्राणि स्थालीर्मधु पिन्वमाना गुदाः पात्राणि सुदुघा न धेनुः.
श्येनस्य पत्रं न प्लीहा शचीभिरासन्दी नाभिरुदरं न माता.. (८६)

पात्र थाली और आंतें पीए हुए रसों को गुदा और अन्य भागों तक संचरित करते हैं. हमारे लिए ये अच्छी दुधारू गायों की तरह हैं. श्येन के पंख की तरह हमारा प्लीहा है. नाभि आसंदी संचालक है. उदर माता की तरह है. (८६)

कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः.
प्लाशिर्व्यक्तः शतधार ऽ उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः.. (८७)

कुंभ ने बड़ी आंत को जना. कुंभ में स्थापित सोम से जननेंद्रियों का उद्भव हुआ. शतधारी सोम ने मूल स्रोत को दुहा. कुंभी ने स्वधा को पितरों के लिए भेंट किया. (८७)

मुख ꣳ सदस्य शिर ऽ इत् सतेन जिह्वा पवित्रमश्विनासन्त्सरस्वती.
चप्यं न पायुर्भिषगस्य वालो वस्तिर्न शेपो हरसो तरस्वी.. (८८)

इंद्र देव के इस शरीर में मुख और मस्तक सत्य से पवित्र हैं. सत् से जिह्वा और वाणी पवित्र है. अश्विनीकुमारों और सरस्वती देवी ने इसे पवित्र बनाया है. गुदा मलविसर्जन से शरीर को पवित्र बनाता है. वस्ति और शेष जननेंद्रिय हैं. (८८)

अश्विभ्यां चक्षुरमृतं ग्रहाभ्यां छागेन तेजो हविषा शृतेन.
पक्ष्माणि गोधूमैः कुवलैरुतानि पेशो न शुक्रमसितं वसाते.. (८९)

दोनों अश्विनीकुमारों ने ग्रहों के रूप में दो अमर नेत्र सिरजे. छाग से तेज सिरजा. हवि से नेत्रों में ज्योति सिरजी. गेहूं की बाल और पैरों से लोम सिरजे. नेत्र दोनों पक्षों (शुक्ल और कृष्ण) का संरक्षण करते हैं. (८९)

अविर्न मेषो नसि वीर्याय प्राणस्य पन्था ऽ अमृतो ग्रहाभ्याम्.
सरस्वत्युपवाकैर्व्यानं नस्यानि बर्हिर्बदरैर्जजान.. (९०)

परम शक्ति की नासिका में भेड़ ने बल सींचा. ग्रहों से अमृतमय प्राणों को सांस की राह मिली. सरस्वती ने उपवाक से व्यान को प्रकट किया. पैर से बाहर के लोम उपजाए. (९०)

इन्द्रस्य रूपमृषभो बलाय कर्णाभ्या ꣳ श्रोत्रममृतं ग्रहाभ्याम्.
यवा न बर्हिर्भ्रुवि केसराणि कर्कन्धु जज्ञे मधु सारघं मुखात्.. (९१)

ऋषभ ने इंद्रियों का रूप रचा. कानों में बल बढ़ाया. श्रवण शक्ति वाले कानों की रचना की. जौ तथा कुशा से भौंहों के बालों की उत्पत्ति की. बेर से मुंह में मीठी लार उपजाई. (९१)

आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम.
केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखा सि ꣳ हस्य लोम त्विषिरिन्द्रियाणि.. (९२)

विराट् इंद्र देव के शरीर में उपस्थ भाग के तथा नीचे के भाग के लोम वृक् के लोम रूप हुए. विराट् इंद्र देव के शरीर के व्याघ्र के लोम दाढ़ीमूंछ हुए. सिर पर यश के लिए केश उपजे. शोभा के लिए चोटी बनाई. अन्य इंद्रियों की त्वचा पर बाल सिंह के लोम के रूप में हुए. (९२)

अङ्गान्यात्मन् भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती.
इन्द्रस्य रूप ꣳ शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः.. (९३)

इंद्र देव के अंगों को वैद्य अश्विनीकुमारों ने आत्मा से जोड़ा और सरस्वती ने आत्मा को अंगों से जोड़ा. उन्होंने इंद्र के रूप को सौ वर्ष की आयु तक अनश्वर बनाया. चंद्रमा के साथ ज्योति को अनश्वरता दी. (९३)

सरस्वती योन्यां गर्भमन्तरश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति.
अपा ꣳ रसेन वरुणो न साम्नेन्द्र ꣳ श्रियै जनयन्नप्सु राजा.. (९४)

सरस्वती देवी अश्विनीकुमारों से योनि के बीच में गर्भ धारती हैं. वे अश्विनी की पत्नी हैं. वे इंद्र देव को धारती हैं. जलों के रस के साथ वरुण देव साम से इंद्र देव को पुष्ट करते हैं. जलों में सरस्वती श्रीमान् राजा को जनती हैं. (९४)

तेजः पशूना ꣳ हविरिन्द्रियावत् परिस्रुता पयसा सारघं मधु.
अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोम ऽ इन्दुः.. (९५)

वैद्य अश्विनीकुमार और देवी सरस्वती ने पशुओं के तेज से इंद्र देव के लिए हवि निर्मित की. दूध और घी को मधुमक्खियों के मधु के साथ मिला कर मधुर पेय निर्मित किया. अमृत जैसा शक्तिवर्द्धक सोमरस तैयार किया. (९५)

बीसवां अध्याय

क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि. मा त्वा हि ꣳ सीन्मा मा हि ꣳ सीः.. (१)

हे वेदिके! आप क्षत्रिय का उत्पत्ति स्थान हैं. आप क्षत्रिय की नाभि हैं. यह आसन आप को कष्ट न दे. आप भी हमें कष्ट मत दीजिए. (१)

नि षसाद धृतव्रतो वरुणः पस्त्यास्वा.
साम्राज्याय सुक्रतुः.
मृत्योः पाहि विद्योत्पाहि.. (२)

आप व्रतधारी, वरुण, पालक और साम्राज्य के लिए सैकड़ों यज्ञ करने वाले हैं. आप विद्युत् के उत्पात से रक्षा कीजिए. आप मृत्यु से बचाइए. (२)

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेभिषिञ्चामि.. (३)

हम देवता सविता देव व अश्विनीकुमारों की बाहु हेतु आप को प्रतिष्ठित करते हैं. हम पूषा देव के हाथों के लिए आप को प्रतिष्ठित करते हैं. हम अश्विनीकुमारों की चिकित्सा के तेज से आप को प्रतिष्ठित करते हैं. हम ब्रह्मज्ञान के वर्चस्व हेतु आप को प्रतिष्ठित करते हैं. हम सरस्वती देवी के ओषधि उपचार से आप को प्रतिष्ठित करते हैं. हम अन्न व पराक्रम प्राप्ति हेतु आप को प्रतिष्ठित करते हैं. हम इंद्र देव के इंद्रिय बल व यश हेतु आप का अभिषेक करते हैं. (३)

कोसि कतमोसि कस्मै त्वा काय त्वा.
सुश्लोक सुमङ्गल सत्यराजन्.. (४)

आप कौन हैं? आप कौन से प्रजापति हैं? आप किस के लिए हैं? किस के लिए आप को प्रतिष्ठित किया जाता है? आप की अच्छे श्लोक से स्तुति की जाती है. आप अच्छे कल्याणकारी, सत्यवान व राजा हैं. (४)

शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्च श्मश्रूणि.
राजा मे प्राणो अमृत ꣳ सम्राट् चक्षुर्विराट् श्रोत्रम्.. (५)

हमारा सिर, मुख, केश व मूंछें शोभायुक्त हों. हमारे प्राण राजा,अमृत व सम्राट् हों. हमारे नेत्र सब कुछ देखने वाले हों. हमारे कान विराट् हों. (५)

जिह्वा मे भद्रं वाङ्महो मनो मन्युः स्वराड् भामः.
मोदाः प्रमोदा ऽ अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः.. (६)

हमारी जीभ कल्याणकारी वचन बोले. वाणी महिमा युक्त हो. मन अन्याय पर क्रोध करे. हमारी अंगुलियां आमोदप्रमोद दें. हमारे मित्र हमारे साथ रहें. (६)

बाहू मे बलमिन्द्रिय ँ् हस्तौ मे कर्म वीर्यम्. आत्मा क्षत्रमुरो मम.. (७)

हमारे बाहु और इंद्रियां बल युक्त हों. हमारे दोनों हाथ पुरुषार्थी हों. हमारी आत्मा और हृदय क्षत्रिय धर्म के अनुकूल हों. (७)

पृष्टीर्मे राष्ट्रमुदरम ँ् सौ ग्रीवाश्च श्रोणी.
ऊरू अरत्नी जानुनी विशो मेङ्गानि सर्वतः.. (८)

हमारी पीठ राष्ट्र जैसी हो. पेट, दोनों कंधे, गरदन, दोनों कूल्हे, दोनों जंघाएं, कमर, घुटने आदि हमारे अंग सब ओर से प्रजा का पोषण करें. (८)

नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेपचितिर्भसत्.
आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः.
जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मोस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः.. (९)

हमारी नाभि और चित्त विशिष्ट ज्ञान युक्त हों. हमारी गुदा संतुलित हो. हमारे वृषण आनंद युक्त हों. हमारी स्त्रियों के अंग सौभाग्यशाली हों. जांघों, पैरों से हम धर्माचरण करें. हम समाज में राजा की भांति प्रतिष्ठित हों. (९)

प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु.
प्रत्यङ्गेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन् प्रति प्राणेषु प्रति तिष्ठामि पुष्टे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे.. (१०)

हम क्षत्रियों में प्रतिष्ठा पाते हैं. हम राष्ट्र में प्रतिष्ठा पाते हैं. हम घोड़ों में प्रतिष्ठा पाते हैं. हम गायों में प्रतिष्ठा पाते हैं. हम प्रत्यंगों में प्रतिष्ठा पाते हैं. हम आत्मा में प्रतिष्ठा पाते हैं. हम प्राणों में प्रतिष्ठा पाते हैं. हम पुष्टि में प्रतिष्ठा पाते हैं. हम स्वर्गलोक में प्रतिष्ठा पाते हैं. हम पृथ्वी में प्रतिष्ठा पाते हैं. हम यज्ञ में प्रतिष्ठा पाते हैं. (१०)

त्रया देवा ऽ एकादश त्रयस्त्रि ँ् शाः सुराधसः.
बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे.
देवा देवैरवन्तु मा.. (११)

ग्यारह से तिगुने यानी तैंतीस देव तीन समूह में ऐश्वर्य से युक्त बृहस्पति को पुरोहित बना कर देवताओं के अनुशासन में रहें. देवता अपनी दिव्य सामर्थ्य से हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (११)

प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजू ꣳ षि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोनुवाक्याभिः पुरोनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्कारा ऽ आहुतिभिराहुतयो मे कामान्त्समर्धयन्तु भूः स्वाहा.. (१२)

प्रथम देवता दूसरे के साथ, दूसरे तीसरे देव के साथ युक्त होने की कृपा करें. सत्य को सत्य के साथ जोड़ें. यज्ञ को यज्ञ से जोड़ें. यजुर्वेद को सामवेद के साथ जोड़ें. सामवेद को ऋचाओं से जोड़ें. ऋचाएं पुरोनुवाक्या से युक्त हों. पुरोनुवाक्या यज्ञ मंत्रों से युक्त हों. आहुतियां हमारी कामनाएं सिद्ध करने की कृपा करें. (१२)

लोमानि प्रयतिर्मम त्वङ्म ऽ आनतिरागतिः.
मा ꣳ सं म ऽ उपनतिर्वस्वस्थि मज्जा म ऽ आनतिः.. (१३)

हमारे हर अंग के रोम जागें. हमारी त्वचा नरम व लुभावनी हो. हमारा मांस लचीला हो. अस्थियां पूरे शरीर का आधार बनें. हमारी मज्जा शरीर को नरमाई देने वाली हो. (१३)

यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्.
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ꣳ हसः.. (१४)

हे देवो! आप दिव्यगुणों से ओतप्रोत हों. अग्नि हमें हमारे द्वारा किए गए सभी पापों से मुक्त करें. अग्नि ऐसे सभी कार्यों से हमें बचाने की कृपा करें. (१४)

यदि दिवा यदि नक्तमेना ꣳ सि चकृमा वयम्.
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ꣳ हसः.. (१५)

हम ने यदि दिन में कोई पाप किया हो, हम ने यदि रात में कोई पाप किया हो तो वायु हमारे द्वारा किए गए सभी पापों से हमें मुक्त करें. वायु हमें ऐसे सभी पापों से बचाने की कृपा करें. (१५)

यदि जाग्रद्यदि स्वप्न ऽ एना ꣳ सि चकृमा वयम्.
सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्व ꣳ हसः.. (१६)

जाग्रत अवस्था या सोती हुई अवस्था में जो कोई भी पाप हम ने किया हो तो सूर्य हमें उस पाप से बचाने की कृपा करें. (१६)

यद्ग्रामे यदरण्ये यत्सभायां यदिन्द्रिये.
यच्छूद्रे यदर्ये यदेनश्चकृमा वयं यदेकस्याधि धर्मणि तस्यावयजनमसि.. (१७)

जो ग्राम में, जो जंगल में, जो सभाओं में, जो इंद्रियों में हम ने पाप किए हैं, जो पाप शूद्रों और वैश्यों के साथ किए हैं, अधिकार को धारण करने या उस का निर्वाह करने में जो पाप हम ने किए हैं, उन से हमें मुक्त करने की कृपा करें. (१७)

यदापो अघ्न्या ऽ इति वरुणेति शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च.
अवभृथ निचुम्पुण निचेरुरसि निचुम्पुणः.
अव देवैर्देवकृतमेनोयक्ष्यव मर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराव्णो देव रिषस्पाहि.. (१८)

जल में जो अनुचित हैं, उन के प्रति वरुण देव हमें शाप मुक्त करने की कृपा करें. हे वरुण! आप निरंतर गतिशील हैं. आप अपनी गति मंद करने की कृपा करें. देवताओं के प्रति देव कार्यों में जो पाप किए हैं, आप उन का प्रायश्चित्त कराइए. मनुष्यों के प्रति मानवीय व्यवहार में जो पाप किए हैं. उन से बचाइए. शत्रुओं से रक्षा कीजिए. (१८)

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः.
सुमित्रिया न ऽ आप ऽ ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः.. (१९)

समुद्र के जलों में आप का हृदय स्थित है. आप अंतःकरण से वहीं विराजते हैं. वहां जल के मेल से आप में ओषधियों के गुण समाहित हो जाते हैं. जलमय वे ओषधियां हमारे प्रति मैत्रीपूर्ण हों. जो हम से द्वेष करते हैं तथा जिन से हम द्वेष करते हैं उन के दुर्मित्र होइए. (१९)

द्रुपदादिव मुमुचानः स्विन्नः स्नातो मलादिव.
पूतं पवित्रेणेवाज्यमापः शुन्धन्तु मैनसः.. (२०)

पवित्र किए हुए जल से हम वैसे ही पाप मुक्त हो जाएं, जैसे नहाते ही पसीने और मैल से मुक्त हो जाते हैं. जैसे छलनी से घी छानने पर मैल रहित हो जाता है, वैसे ही आप हमारे पाप छान लीजिए. (२०)

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त ऽ उत्तरम्. देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्.. (२१)

हम अंधकार से ऊपर, स्वर्गलोक व उत्तर दिशा में देखें. हम दिव्यदेव सूर्य की ओर जाएं. हम उत्तम ज्योति प्राप्त करें. (२१)

अपो अद्यान्वचारिष ँ्ं रसेन समसृक्ष्महि.
पयस्वानग्न ऽ आगमं तं मा स ँ्ं सृज वर्चसा प्रजया च धनेन च.. (२२)

हम ने आज जल में संचरण किया है. जल के संसर्ग से हम ने आज अपनेआप को प्रक्षालित किया (धोया) है. हे अग्नि देव! हम जल से पवित्र हो कर आप के पास आए हैं. आप हमारे लिए वर्चस्व, संतान और धन का सृजन कीजिए. (२२)

एधोस्येधिषीमहि समिदसि तेजोसि तेजो मयि धेहि.
समाववर्ति पृथिवी समुषाः समु सूर्यः.
समु विश्वमिदं जगत्.
वैश्वानरज्योतिर्भूयासं विभून् कामान् व्यश्नवै भूः स्वाहा.. (२३)

हे अग्नि! यह समिधा आप की बढ़ोतरी करती है. आप हमारी बढ़ोतरी करते हैं. आप तेजोमय हैं. हमारे लिए तेज धारिए. पृथ्वी हमें उत्तम सुख दे. सूर्य सुख दें. सारे जगत् को सुख दें. हम वैश्वानर की ज्योति हो जाएं. हम उन की कृपा से विविध कामनाओं की पूर्ति करें. अग्नि के लिए स्वाहा. (२३)

अभ्या दधामि समिधमग्ने व्रतपते त्वयि.
व्रतं च श्रद्धां चोपैमीन्धे त्वा दीक्षितो अहम्.. (२४)

हे अग्नि! हम आप के लिए समिधा धारते हैं. आप व्रत पति हैं. हम दीक्षित हैं. आप के प्रति व्रत और श्रद्धा समर्पित करते हैं. आप को प्रज्वलित करते हैं. (२४)

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह.
तँल्लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना.. (२५)

जहां ब्राह्मण और क्षत्रियजन साथसाथ विचरण करते हुए निर्वाह करते हैं. जहां देवगण अग्नि देव के साथ रहते हैं, हम उस पुण्य ज्ञानमय लोक को पाएं. (२५)

यत्रेन्द्रश्च वायुश्च सम्यञ्चौ चरतः सह.
तँल्लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र सेदिर्न विद्यते.. (२६)

जहां इंद्र देव और वायु साथसाथ विचरण करते हैं, हम उस पवित्र और ज्ञानमय लोक को प्राप्त करें. (२६)

अꣳशुना ते अꣳशुः पृच्यतां परुषा परुः.
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः.. (२७)

ओषधियों का रस सोमरस के साथ मिले. आप के कठोर अंग सोम के अंगों के साथ मिलें. आप की गंध सोम के साथ मिले. झरता हुआ रस हमें आनंदित करे. (२७)

सिञ्चन्ति परि षिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च.
सुरायै बभ्र्वै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः.. (२८)

ओषधि का रस इंद्र को प्रसन्न करता व पवित्र करता है. इस रस के लिए 'और क्या और क्या' बोला जाता है. (२८)

धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिनम्. इन्द्र प्रातर्जुषस्व नः.. (२९)

हे इंद्र देव! हम स्तुति के साथ आप को धान, धानमय वस्तुएं, दही, मालपूए

आदि समर्पित कर रहे हैं. आप इन सब को स्वीकारने की कृपा कीजिए. (२९)

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहन्तमम्.
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि.. (३०)

हे मरुद्गण! इंद्र देव वृत्रहंता है. आप उन के लिए बृहत्साम गाइए, जिन्होंने ज्योति उत्पन्न की, अन्न की बढ़ोतरी की, देवों को देवों के लिए जाग्रत किया. (३०)

अध्यर्वो अद्रिभिः सुत ꣳ सोमं पवित्र ऽ आनय. पुनीहीन्द्राय पातवे.. (३१)

हे अध्वर्यु! आप पत्थरों से कूट कर निचोड़े गए पवित्र सोम को अपने पुत्रों के लिए लाइए. इंद्र देव के पीने के लिए आप इसे पवित्र कीजिए. (३१)

यो भूतानामधिपतिर्यस्मिँल्लोका ऽ अधि श्रिताः.
य ऽ ईशे महतो महाँस्तेन गृह्णामि त्वामहं मयि गृह्णामि त्वामहम्.. (३२)

जो प्राणियों के अधिपति हैं, सब लोक जिस के आश्रित हैं, जो ईश्वर हैं, महान् हैं, हम उस महान् को ग्रहण करते हैं. आप हम को ग्रहण कीजिए. हम आप को ग्रहण करते हैं. (३२)

उपयामगृहीतोस्यश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ण ऽ एष ते योनिरश्विभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्णे.. (३३)

हे ओषधि रूप रस! आप को दोनों अश्विनीकुमारों के लिए उपयाम में ग्रहण किया गया है. आप को सरस्वती के उत्तम संरक्षण हेतु ग्रहण किया गया है. आप को इंद्र के उत्तम संरक्षण हेतु ग्रहण किया गया है. यह अश्विनीकुमार, सरस्वती देवी और इंद्र देव का मूल स्थान है. अश्विनीकुमार, सरस्वती देवी और इंद्र देव की कृपा से हमारा संरक्षण हो. (३३)

प्राणपा मे अपानपाश्चक्षुष्पाः श्रोत्रपाश्च मे.
वाचो मे विश्वभेषजो मनसोसि विलायकः.. (३४)

हे ओषधे! आप हमारे प्राण, अपान, नेत्र, कर्ण और वाणी रक्षक हैं, आप सब के वैद्य हैं. आप मन का विलय करने की कृपा करें. (३४)

अश्विनकृतस्य ते सरस्वतिकृतस्येन्द्रेण सुत्राम्णा कृतस्य.
उपहूत ऽ उपहूतस्य भक्षयामि.. (३५)

हे ओषधे! अश्विनी देवों द्वारा संस्कार किए गए, सरस्वती देवी द्वारा पुष्ट किए गए, इंद्र देव द्वारा उत्पन्न किए गए, आप को हम आमंत्रित करते हैं. आप का हम सेवन करते हैं. (३५)

समिद्ध ऽ इन्द्र ऽ उषसामनीके पुरोरुचा पूर्वकृद्वावृधानः.
त्रिभिर्देवैस्त्रि ꣳ शता वज्रबाहुर्जघान वृत्रं वि दुरो ववार.. (३६)

इंद्र देव समिधावान हैं. सब से पहले उषा काल में पूर्व दिशा को प्रकाशित करते हैं. पहले किए की बढ़ोतरी करते हैं. तीन के तिगुने सैकड़ों देवों के साथ आगे बढ़ते हैं. इंद्र देव ने वृत्र को मारा और द्वार खोले. (३६)

नराश ꣳ सः प्रति शूरो मिमानस्तनूनपात्प्रति यज्ञस्य धाम.
गोभिर्वपावान् मधुना समञ्जन् हिरण्यैश्चन्द्री यजति प्रचेताः.. (३७)

आप सब से प्रशंसित, सुखवीर, शरीर के रक्षक व यज्ञ के धाम हैं. गायों का दूध पीने वाले व मीठे घी से पुष्ट हैं. सुनहरी कांति वाले का उत्तम चित्त वाले यजमान यज्ञ करते हैं. (३७)

ईडितो देवैर्हरिवाँ २ अभिष्टिराजुह्वानो हविषा शर्धमानः.
पुरन्दरो गोत्रभिद्वज्रबाहुरा यातु यज्ञमुप नो जुषाणः.. (३८)

इंद्र देवों से उपासित, गतिवान, अभीष्ट, यज्ञ में पूजनीय, हवि हेतु आमंत्रित, शत्रुनगरी भेदक, गोनाशक के नाशक व वज्रबाहु है. इंद्र देव हमारे यज्ञ का सेवन करने की कृपा करें. (३८)

जुषाणो बर्हिर्हरिवान् न ऽ इन्द्रः प्राचीन ꣳ सीदत् प्रदिशा पृथिव्याः.
उरुप्रथाः प्रथमान ꣳ स्योनमादित्यैरक्तं वसुभिः सजोषाः.. (३९)

इंद्र देव तेजोमय, वैभववान, सब के अभीष्ट व प्राचीन हैं. आप पृथ्वी की दिशा में विराजिए. आप आदित्यों और वसुओं के साथ हमारे यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. विशाल कुश के आसन पर विराजिए. (३९)

इन्द्रं दुरः कवष्यो धावमाना वृषाणं यन्तु जनयः सुपत्नीः.
द्वारो देवीरभितो वि श्रयन्ता ꣳ सुवीरा वीरं प्रथमाना महोभिः.. (४०)

जैसे विदुषी और श्रेष्ठ पत्नी पति के साथ शोभा पाती है, वैसे ही देवताओं से शोभित वीरों से युक्त विशाल द्वारों वाले प्रख्यात इंद्र देव विधिविधान से पूर्ण यज्ञ शाला में पधारने की कृपा करें. (४०)

उषासानक्ता बृहती बृहन्तं पयस्वती सुदुघे शूरमिन्द्रम्.
तन्तुं ततं पेशसा संवयन्ती देवानां देवं यजतः सुरुक्मे.. (४१)

उषा देवी विशाल दिन और रात को चमकाती हैं. वे महान् व रसीली हैं. देवों के देव इंद्र देव को भी दीप्तिमान बनाती हैं. (४१)

दैव्या मिमाना मनुषः पुरुत्रा होताराविन्द्रं प्रथमा सुवाचा.
मूर्धन् यज्ञस्य मधुना दधाना प्राचीनं ज्योतिर्हविषा वृधातः.. (४२)

दिव्य कार्य करने वाले यजमान श्रेष्ठ प्रार्थनाओं से यज्ञ के मूर्धन्य देव इंद्र देव की स्थापना करते हैं. होता पूर्व दिशा में स्थित हैं. वे हवि से अग्नि की बढ़ोतरी करते हैं. अग्नि ज्योतिमान हैं. (४२)

तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमाना ऽ इन्द्रं जुषाणा जनयो न पत्नी:.
अच्छिन्नं तन्तुं पयसा सरस्वतीडा देवी भारती विश्वतूर्त्ति:.. (४३)

तीनों देवियां हवि से बढ़ोतरी पाती हैं. वे पत्नी के समान इंद्र देव को पोसती हैं. वे हमारे तंतु को न तोड़ें. सरस्वती देवी, भारती देवी और इड़ा देवी दूध और हवि से हमारा यज्ञ पूर्ण करें. सारे विश्व को विघ्नों से बचाएं. (४३)

त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय वृष्णेपाकोचिष्टुर्यशसे पुरूणि.
वृषा यजन्वृषणं भूरिरेता मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान्.. (४४)

त्वष्टा देव इंद्र देव का बल और परिपक्व धन को धारें. यश से पूजे जाएं. यज्ञ में वर्षा करें और शक्ति दें. देव समान मन वाले हों. यज्ञ के मूर्धन्य देवों को तृप्त करें. (४४)

वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्त्मन्या समञ्जञ्छमिता न देव:.
इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणान: स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन.. (४५)

इंद्र देव हवि से जठराग्नि को पूर्ण करें. यज्ञ को मीठे घी से स्वादिष्ट बनाएं. देवगण बंधनहीन हैं. अपनी सामर्थ्य से प्रकाशमान हैं. वनस्पति के देवता हैं. (४५)

स्तोकानामिन्दुं प्रति शूर ऽ इन्द्रो वृषायमाणो वृषभस्तुराषाट्.
घृतप्रुषा मनसा मोदमाना: स्वाहा देवा ऽ अमृता मादयन्ताम्.. (४६)

इंद्र देव शत्रुओं के प्रति गर्जना करते हैं. वे शूरवीर, शक्तिशाली शत्रुओं के नाशक और घी की आहुति से मन से प्रसन्न होते हैं. इंद्र देव हेतु स्वाहा. इंद्र देव अमृत से सभी को आनंदित करें. (४६)

आ यात्विन्द्रोवस ऽ उप न ऽ इह स्तुत: सधमादस्तु शूर:.
वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वीर्द्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुष्यात्.. (४७)

इंद्र देव हमारी रक्षा के लिए हमारे पास आएं. वह यहां बैठें. उन की यहां स्तुति की जाए. उन के पराक्रम से बड़ेबड़े कार्यों की बढ़ोतरी हुई. वे हमारे बल को स्वर्गलोक जैसा विस्तृत व पुष्ट करें. (४७)

आ न ऽ इन्द्रो दूरादा न ऽ आसादभिष्टिकृदवसे यासदुग्र:.
ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहु: सङ्गे समत्सु तुर्वणि: पृतन्यून्.. (४८)

इंद्र देव दूर या पास जहां कहीं भी हों हमारे पास पधारने की कृपा करें. वे उग्र, बलवान, अभीष्टपूरक, ओजिष्ठ व राजा हैं. वे वज्र जैसी मजबूत भुजा वाले हैं. युद्धों में शत्रुओं का मर्दन करने वाले हैं. (४८)

आ न ऽ इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छार्वाचीनोवसे राधसे च.
तिष्ठाति वज्री मघवा विरप्शीमं यज्ञमनु नो वाजसातौ.. (४९)

इंद्र देव अपने घोड़ों से हमारी रक्षार्थ हमें संपत्ति देने के लिए पधारें. वे वज्र वाले और धनवान हैं. वे यज्ञशाला में पधारें और अपनी अन्नमयी हवि स्वीकारने की कृपा करें. (४९)

त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्.
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः.. (५०)

इंद्र देव त्राता हैं. हम बारबार उन का आह्वान करते हैं. प्रत्येक हवन में उन का आह्वान करते हैं. हम शूरवीर का अच्छी तरह आह्वान करते हैं. वे कल्याणकारी, धनवान और धारणशील हैं. (५०)

इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ २ अवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः.
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम.. (५१)

इंद्र देव अच्छे रक्षक, बहुत सहायकों वाले, सर्व वैभव संपन्न व सर्वज्ञ हैं. वे हम से द्वेष रखने वाले को बाधित करें और हमें निर्भय बनाएं. उन की कृपा से हम अच्छे पराक्रम के पालक हो जाएं. (५१)

तस्य वय ꣳ सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम.
स सुत्रामा स्ववाँ २ इन्द्रो अस्मे आराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोतु.. (५२)

इंद्र देव के प्रति हम सुमतिपूर्वक यज्ञ करने वाले, भद्र व अच्छे मन वाले हो जाएं. वे अच्छे रक्षक व सहायकों वाले हैं. वे दूर होते हुए भी हमारा दुर्भाग्य दूर करने के लिए शीघ्र ही हमारे पास आएं. (५२)

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्याहि मयूररोमभिः.
मा त्वा के चिन्नि यमन् विं न पाशिनोति धन्वेव ताँ २ इहि.. (५३)

इंद्र देव मोर के पंख जैसे रोमों वाले हैं. अपने घोड़ों से यहां आने की कृपा करें. कोई भी जाल फैला कर आप को पाश में बांध न सके. आप बड़े धनुर्धारी की तरह यहां पधारिए. (५३)

एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः.
स न स्तुतो वीरवद्धातु गोमद्यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः.. (५४)

हे इंद्र देव! आप बलवान व वज्र जैसी भुजाओं वाले हैं. वसिष्ठ ऋषि के वंशज मंत्रों से आप की अभ्यर्थना कर रहे हैं. वे इंद्र देव हमारे वीरों व गोधन को अपने संरक्षण में लें. वे सदा हमारा कल्याण करें. (५४)

समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो घर्मो विराट् सुतः.
दुहे धेनुः सरस्वती सोम ꣳ शुक्रमिहेन्द्रियम्.. (५५)

अग्नि को समिधा से प्रज्वलित किया गया है. अश्विनी देव को दीप्यमान बनाया गया है. सरस्वती देवी गाय दुहने की तरह उन के लिए चमकीले महान् सोम का दोहन करती हैं. (५५)

तनूपा भिषजा सुतेश्विनोभा सरस्वती.
मध्वा रजा ꣳ सीन्द्रियमिन्द्राय पथिभिर्वहान्.. (५६)

दोनों वैद्य अश्विनीकुमार हमारे तन के रक्षक हैं. देवी सरस्वती मधुर सोमरस को अनेक मार्गों से वहन करती हुई इंद्र देव के लिए ले जाती हैं. (५६)

इन्द्रायेन्दु ꣳ सरस्वती नराश ꣳ सेन नग्नहुम्.
अधातामश्विना मधु भेषजं भिषजा सुते.. (५७)

यजमान ने सोमरस तैयार किया. देवी सरस्वती ने उस को महान् ओषधि से युक्त बनाया. वैद्य अश्विनीकुमारों ने ओषध स्वरूप उस को धारण किया. (५७)

आजुह्वाना सरस्वतीन्द्रायेन्द्रियाणि वीर्यम्.
इडाभिरश्विनाविष ꣳ समूर्ज ꣳ स ꣳ रयिं दधुः.. (५८)

सरस्वती देवी इंद्र देव का आह्वान करने वाली हैं. सरस्वती देवी ने उन के लिए इंद्रियों में पराक्रम स्थापित किया. इड़ा देवी और अश्विनीकुमारों ने उन के लिए ऊर्जा और धन धारण किया. (५८)

अश्विना नमुचेः सुत ꣳ सोम ꣳ शुक्रं परिस्रुता.
सरस्वती तमा भरद्बर्हिषेन्द्राय पातवे.. (५९)

अश्विनी देवों ने निचोड़े गए चमकीले सोम को ओषधियों के साथ मिलाया. सरस्वती ने नमुची राक्षस से सोम का हरण किया. इंद्र देव के पीने के लिए कुश के आसन पर स्थापित किया. (५९)

कवष्यो न व्यचस्वतीरश्विभ्यां न दुरो दिशः.
इन्द्रो न रोदसी उभे दुहे कामान्त्सरस्वती.. (६०)

अश्विनी, सरस्वती और इंद्र देव ने विराट् यज्ञ से स्वर्गलोक तथा पृथ्वीलोक दोनों का दोहन किया. सारी दिशाओं से अपनी कामनाओं का दोहन किया. (६०)

उषासानक्तमश्विना दिवेन्द्र ꣳ सायमिन्द्रियैः.
सञ्जानाने सुपेशसा समञ्जाते सरस्वत्या.. (६१)

उषा, रात्रि, दिन और सायंकाल में इंद्र देव को अश्विनीकुमार देवी सरस्वती के साथ विशेष बल से युक्त करते हैं. (६१)

पातं नो अश्विना दिवा पाहि नक्त ꣳ सरस्वति.
दैव्या होतारा भिषजा पातमिन्द्र ꣳ सचा सुते.. (६२)

हे अश्विनी देव! आप दिन में हमारी रक्षा करें. हे सरस्वती देवी! आप रात्रि में हमारी रक्षा करें. वैद्य अश्विनीकुमार दिव्य होता हैं. वे सचेत सोम के द्वारा इंद्र देव की रक्षा करें. (६२)

तिस्रस्त्रेधा सरस्वत्यश्विना भारतीडा.
तीव्रं परिस्रुता सोममिन्द्राय सुषुवुर्मदम्.. (६३)

तीन प्रकार से अश्विनी सरस्वती, भारती और इड़ा देवी ने तीव्रता से सोम को इंद्र देव के लिए चुआया है. यह सोम ओषधि से युक्त हैं. (६३)

अश्विना भेषजं मधु भेषजं नः सरस्वती.
इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रिय ꣳ रूप ꣳ रूपमधुः सुते.. (६४)

अश्विनी देव व सरस्वती देवी मीठी ओषधि हमें दें. त्वष्टा देव ने इंद्र देव हेतु यश, शोभा, रूप, मधु और सोम को धारण किया है. (६४)

ऋतुथेन्द्रो वनस्पतिः शशमानः परिस्रुता.
कीलालमश्विभ्यां मधु दुहे धेनुः सरस्वती.. (६५)

इंद्र देव ऋतु के अनुसार वनस्पति और निचोड़ी हुई सामग्रियों से बढ़ोतरी को प्राप्त हुए. अश्विनी देव और सरस्वती देवी ने गाय का दूध निकालने के समान इन के लिए मधुर रस दुहे. (६५)

गोभिर्न सोममश्विना मासरेण परिस्रुता.
समधात ꣳ सरस्वत्या स्वाहेन्द्रे सुतं मधु.. (६६)

हे अश्विनीकुमारो! आप दोनों देवी सरस्वती, गाय के दूध के साथ व सोमरस को ओषधियों के साथ मिलाइए. वह रस इंद्र देव को अर्पित कीजिए. वे इस आहुति को भलीभांति ग्रहण करने की कृपा करें. (६६)

अश्विना हविरिन्द्रियं नमुचेर्धिया सरस्वती.
आ शुक्रमासुराद्वसु मघमिन्द्राय जभ्रिरे.. (६७)

सरस्वती देवी ने अश्विनीकुमार के साथ बुद्धिपूर्वक नमुचि राक्षस से हवि और

धन पाया. उस हवि और श्रेष्ठ धन को इंद्र देव के लिए अर्पित किया. (६७)

यमश्विना सरस्वती हविषेन्द्रमवर्धयन्.
स बिभेद बलं मघं नमुचावासुरे सचा.. (६८)

अश्विनीकुमार और सरस्वती देवी ने उस हवि से इंद्र देव की बढ़ोतरी की. सचेत इंद्र देव ने उस से नमुचि असुर के बल को भेदा. (६८)

तमिन्द्रं पशवः सचाश्विनोभा सरस्वती.
दधाना ऽ अभ्यनूषत हविषा यज्ञ ऽ इन्द्रियैः.. (६९)

अश्विनीकुमार और सरस्वती देवी ने इंद्र देव को पशुओं के दूध, दही और घी से बनी हवि अर्पित की. उस हवि से उन का बल और यज्ञ बढ़ाया. उन दोनों की सब प्रकार से प्रशंसा हुई. (६९)

य ऽ इन्द्र इन्द्रियं दधुः सविता वरुणो भगः.
स सुत्रामा हविष्पतिर्यजमानाय सश्चत.. (७०)

सविता देव, वरुण देव और भग देव ने इंद्र देव की इंद्रियों में बल धारण किया. इंद्र देव ने हविपति की अच्छी तरह रक्षा की. यजमान की मनोकामनाएं पूरी कीं. (७०)

सविता वरुणो दधद्यजमानाय दाशुषे.
आदत्त नमुचेर्वसु सुत्रामा बलमिन्द्रियम्.. (७१)

सविता देव एवं वरुण देव ने यजमानों की प्रसन्नता हेतु धन और बल धारा. इंद्र देव ने नमुचि राक्षस से रक्षा और बल तथा धन ले कर यजमानों को समृद्ध बनाया. (७१)

वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं भगेन सविता श्रियम्.
सुत्रामा यशसा बलं दधाना यज्ञमाशत.. (७२)

यजमानों को क्षत्रियोचित बल और इंद्रियों की सामर्थ्य देने वाले वरुण देव हमारे इस यज्ञ में पधारने की कृपा करें. सौभाग्य और ऐश्वर्यदाता सविता देव तथा यश और बलधारी इंद्र देव हमारे इस यज्ञ में पधारने की कृपा करें. (७२)

अश्विना गोभिरिन्द्रियमश्वेभिर्वीर्यं बलम्.
हविषेन्द्र ꣳ सरस्वती यजमानमवर्धयन्.. (७३)

अश्विनीकुमारों और देवी सरस्वती ने गायों, घोड़ों और हवियों से इंद्र देव और यजमान के पराक्रम शक्ति और वैभव की बढ़ोतरी की. (७३)

ता नासत्या सुपेशसा हिरण्यवर्तनी नरा.
सरस्वती हविष्मतीन्द्र कर्मसु नोवत.. (७४)

सुनहरे पथ पर घूमने वाले विशिष्ट श्रेष्ठ मनुष्य जैसे अश्विनीकुमार देवी सरस्वती और इंद्र देव हम मनुष्यों के यज्ञ में पधारें. हवि ग्रहण करें. सब प्रकार से हमारी रक्षा करें. (७४)

ता भिषजा सुकर्मणा सा सुदुघा सरस्वती.
स वृत्रहा शतक्रतुरिन्द्राय दधुरिन्द्रियम्.. (७५)

अश्विनीकुमार वैद्य व सुकर्मा हैं. सरस्वती देवी अच्छा दोहन करने वाली हैं. वृत्रासुर नाशक सैकड़ों यज्ञ करने वाले इंद्र देव यजमानों के लिए उन की इंद्रियों में सामर्थ्य प्रदान करें. (७५)

युव ꣳ सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा.
विपिपानाः सरस्वतीन्द्रं कर्मस्वावत.. (७६)

हे अश्विनीकुमारो! देवी सरस्वती! आप युवा हैं. आप नमुचि राक्षस से ओषधि रस ले कर विभिन्न प्रकार से इंद्र देव को पान कराइए. सब प्रकार से उन की रक्षा कीजिए. (७६)

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्द ꣳ सनाभिः.
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक्.. (७७)

हे अश्विनीकुमारो! आप यजमान की मातापिता द्वारा पुत्र की रक्षा करने के समान रक्षा करते हैं. इंद्र देव विद्वान् हैं. वे यजमान की प्रार्थनाओं को सुनते हैं. संग्राम में विपत्तिग्रस्त होने पर अश्विनी देव रक्षा करते हैं. इंद्र देव अपनी सामर्थ्य से ओषधियों का पान करते हैं, तो सरस्वती देवी आप की स्तुति करती हैं. (७७)

यस्मिन्नश्वास ऽ ऋषभास ऽ उक्षणो वशा मेषा ऽ अवसृष्टास ऽ आहुताः.
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे हृदा मतिं जनय चारुमग्नये.. (७८)

हे यजमानो! अग्नि अन्न ग्रहण करने वाले हैं. सोम को ग्रहण करने वाले हैं. श्रेष्ठ बुद्धि वाले हैं. आप उन के लिए अपना मन शुद्ध कीजिए. आप उन के लिए अपनी बुद्धि शुद्ध कीजिए. इस से घोड़े सिंचाई योग्य बैल और सुंदर वस्तुओं की प्राप्ति होती है. (७८)

अहाव्यग्ने हविरास्ये ते स्रुचीव घृतं चम्वीव सोमः.
वाजसनि ꣳ रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्.. (७९)

हे अग्नि! हम आप का आह्वान करते हैं. हम आप के मुख में हवि भेंट करते हैं. आप के लिए स्रुवा में घी और पात्र में सोम रहता है. आप हमें अन्न, धन, श्रेष्ठवीर, प्रशंसनीय धन, यश व प्रचुर धन प्रदान कीजिए. (७९)

अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्.
वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्.. (८०)

यजमान हेतु अश्विनी देव ने तेज से नेत्र ज्योति प्रदान की. यजमान हेतु सरस्वती देवी ने प्राण के साथ पराक्रम प्रदान किया. यजमान हेतु इंद्र देव ने वाणी के साथ इंद्रिय सामर्थ्य धारण की. (८०)

गोमदू षु णासत्याश्वावद्यातमश्विना. वर्त्ती रुद्रा नृपाय्यम्.. (८१)

अश्विनीकुमारो! गोमय, अश्वमय और श्रेष्ठ राह वाले इस सोमयाग में पधारने की कृपा कीजिए. आप सत्य में निरत हैं. आप अन्यायियों को पीड़ित कीजिए. (८१)

न यत्परो नान्तरऽआदधर्षद्वृषण्वसू. दुःश ꣳ सो मर्त्यो रिपुः.. (८२)

हे अश्विनीकुमारो! आप ओषधरस की वर्षा करते हैं. जो दुष्ट हो, जो हमारा शत्रु हो, वह हमें पीड़ित न करे. (८२)

ता नऽआ वोढमश्विना रयिं पिशङ्गसन्दृशम्. धिष्ण्या वरिवोविदम्.. (८३)

हे अश्विनीकुमारो! आप सब को धारने वाले हो. आप दोनों हमारे लिए पीली सोने जैसी बढ़ने वाली संपदा प्रदान कीजिए. (८३)

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती. यज्ञं वष्टु धियावसुः.. (८४)

सरस्वती देवी पवित्र हैं. अन्न द्वारा शक्तिशाली कार्य करने वाली हैं. यज्ञ को धारें. धन और बुद्धि बरसाएं. (८४)

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्. यज्ञं दधे सरस्वती.. (८५)]

सरस्वती देवी सत्य वचन और सत्य मार्ग की प्रेरणादायिनी हैं. सुमतियों को चेताने वाली हैं. सरस्वती देवी यज्ञ को धारण करें. (८५)

महो अर्णः सरस्वती प्र चेतयति केतुना. धियो विश्वा वि राजति.. (८६)

सरस्वती देवी सब की बुद्धियों को विशेष रूप से प्रकाशित करती हैं. सरस्वती देवी महान् और ज्ञान का समुद्र हैं. वे ज्ञान की पताका फहराती हैं. (८६)

इन्द्रा याहि चित्रभानो सुताऽइमे त्वायवः. अण्वीभिस्तना पूतासः.. (८७)

हे इंद्र देव! आप अद्भुत हैं. आप अपने पुत्रों के यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. हम ने अंगुलियों से निचोड़ कर आप के लिए सोमरस को पवित्र बनाया है. (८७)

इन्द्रा याहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः. उप ब्रह्माणि वाघतः.. (८८)

हे इंद्र देव! आप मनोयोग से हमारे यज्ञ में पधारिए. हम आप के लिए सोमरस संस्कारित करने वाले हैं. आप आ कर इन हवियों को ग्रहण करने की कृपा कीजिए. (८८)

इन्द्रा याहि तूतुजान उप ब्रह्माणि हरिवः. सुते दधिष्व नश्चनः.. (८९)

हे इंद्र देव! आप अपने हरि नाम के घोड़ों से आवाजाही करते हैं. आप अपने पुत्रों के लिए इस हवि को ग्रहण कीजिए. (८९)

अश्विना पिबतां मधु सरस्वत्या सजोषसा.
इन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ता ꣳ सोम्यं मधु.. (९०)

अश्विनीकुमार देवी सरस्वती के साथ समान मन वाले हों. वे देवी सरस्वती के साथ मधुर सोमरस का पान करें. इंद्र देव सुरक्षक व वृत्र हंता हैं. वे भी सोमरस का पान करें. (९०)

उत्तरार्ध

इक्कीसवां अध्याय

इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय. त्वामवस्युरा चके.. (१)

हे वरुण देव! हमारी प्रार्थना सुनने की कृपा करें. आज जो हम हवन कर रहे हैं, उस से हमें सुख प्रदान करें. हम अपनी रक्षा के लिए आप का आह्वान करते हैं. (१)

तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः.
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ꣳ स मा न ऽ आयुः प्र मोषीः.. (२)

ये यजमान ब्रह्मज्ञानमय ऋचाओं से आप की वंदना कर रहे हैं. आहुतियां अर्पित कर रहे हैं. उन से आप यजमान पर प्रसन्न होइए. वरुण देव बहुप्रशंसित व देव पूजित हैं. आप जाग्रत होइए और हमारी आयु क्षीण मत कीजिए. (२)

त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः.
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳ सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्.. (३)

हे अग्नि! आप विद्वान् हैं. आप आहुतियों को देवताओं तक पहुंचाने वाले हैं. आप यज्ञ में पूजित, बहुत दीप्तिमान व पवित्र हैं. आप वरुण देव को हम पर प्रसन्न कराइए. हमारे सभी द्वेषियों को नष्ट करने की कृपा कीजिए. (३)

स त्वं नो अग्नेवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या ऽ उषसो व्युष्टौ.
अव यक्ष्व नो वरुण ꣳ रराणो वीहि मृडीक ꣳ सुहवो न ऽ एधि.. (४)

हे अग्नि! प्रातः अपने रक्षा साधनों सहित हमारे पास पधारिए. हमारी रक्षा करने व आहुतियों को देवताओं तक पहुंचाने की कृपा कीजिए. आप उन्हें तृप्ति दीजिए. आप अच्छी तरह बुलाने योग्य हैं. आप इस सुखदायक आहुति को स्वीकारने की कृपा कीजिए. (४)

महीमू षु मातर ꣳ सुव्रतानामृतस्य पत्नीमवसे हुवेम.
तुविक्षत्रामजरन्तीमुरूची ꣳ सुशर्माणमदिति ꣳ सुप्रणीतिम्.. (५)

अदिति देवी महामहिमाशालिनी, माता, सुव्रतों वाली, अमर, कभी वृद्ध नहीं होने वाली हैं, सुखदायिनी व नीतिज्ञा हैं. हम अपनी रक्षा हेतु उन का आह्वान करते हैं. (५)

सुत्रामाणं पृथिवीं द्यामनेहस ॐ सुशर्माणमदिति ॐ सुप्रणीतिम्.
दैवीं नाव ॐ स्वरित्रामनागसमस्रवन्तीमा रुहेमा स्वस्तये.. (६)

अदितिमाता भलीभांति रक्षा करने वाली, पृथ्वीलोक से स्वर्गलोक तक विस्तार वाली, अत्यंत सुखदायिनी, अच्छा आसरा (आश्रय) देने वाली, दोषरहित, मृत्यु का भय दूर करने वाली हैं. अपनेआप चलने वाली, बिना छेदों वाली इस नौका में आप की कृपा से हम आरोहण करें. हम अपने कल्याण के लिए उस पर चढ़ते हैं. (६)

सुनावमा रुहेयमस्रवन्तीमनागसम्. शतारित्रा ॐ स्वस्तये.. (७)

यह नाव दोष रहित, बिना छेदों वाली, अपनेआप चलने वाली व सैकड़ों शत्रुओं से त्राण करने वाली है. हम अपने कल्याण के लिए इस पर आरूढ़ (चढ़ने) होने की कृपा करें. (७)

आ नो मित्रावरुणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्. मध्वा रजा ॐ सि सुक्रतू.. (८)

हे मित्र व वरुण देव! आप हमारे यहां गाय के घी से सींचिए. आप हमारे खेतों को मधुर अमृत से सींचिए. (८)

प्र बाहवा सिसृतं जीवसे न ऽ आ नो गव्यूतिमुक्षतं घृतेन.
आ मा जने श्रवयतं युवाना श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमा.. (९)

हे मित्र व वरुण देव! आप दोनों देव हमारी प्रार्थना सुनिए. आप अपनी भुजाएं फैला कर हमें आशीर्वाद व इस जीवन में यश दीजिए. आप हमारे यज्ञ को गाय के घी से व खेत को मधु अमृत से सींचिए. (९)

शन्नो भवन्तु वाजिनो हवेषु देवताता मितद्रवः स्वर्काः.
जम्भयन्तो ऽ हिं वृक ॐ रक्षा ॐ सि सनेम्यस्मद्युयवन्नमीवाः.. (१०)

हे मित्र व वरुण देव! आप हमारे लिए सुखदायी होइए. हम आप के लिए अन्नमय हवि देते हैं. आप हमारे रोग दूर कीजिए. आप हमारे शत्रुओं व राक्षसों का विनाश कीजिए. आप भेड़िए और ऐसे ही हिंसक जीवों को हम से दूर भगाइए. (१०)

वाजे वाजेवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा ऽ अमृता ऽ ऋतज्ञाः.
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः.. (११)

हे मित्र व वरुण देव! आप ब्राह्मण, अमर व सत्यज्ञ हैं. युद्ध में अन्न, बल तथा

धन प्राप्त कीजिए. आप इस यज्ञ में मधुर रस पीजिए. मदमस्त व तृप्त होइए. देवपथों से गमन करने की कृपा कीजिए. (११)

समिद्धो अग्निः समिधा सुसमिद्धो वरेण्यः.
गायत्री छन्द ऽ इन्द्रियं त्र्यविर्गौर्वयो दधुः.. (१२)

हे अग्नि! आप समिधावान हैं. समिधा से आप को अच्छी तरह प्रदीप्त किया गया है. आप वरेण्य हैं. तीनों लोक और तीनों अवस्थाएं, अग्नि और गायत्री छंद आप के शरीर को बल और आयु प्रदान करें. (१२)

तनूनपाच्छुचिव्रतस्तनूपाश्च सरस्वती.
उष्णिहा छन्द ऽ इन्द्रियं दित्यवाड्गौर्वयो दधुः.. (१३)

अग्नि तन की रक्षा करने वाले और पवित्र संकल्प वाले हैं. सरस्वती देवी उष्णिक् छंद और दिव्य हवि को धारण करने वाले अंग हमारे लिए बल और आयु धारण करने की कृपा करें. (१३)

इडाभिरग्निरीड्यः सोमो देवो अमर्त्यः.
अनुष्टुप्छन्द ऽ इन्द्रियं पञ्चाविर्गौर्वयो दधुः.. (१४)

अग्नि प्रार्थनाओं से प्रसन्न होने योग्य हैं. सोम अमर हैं. अनुष्टुप् छंद और पांचों इंद्रिय रूपी गायों से हमारे लिए बल तथा आयु धारण करने की कृपा करें. (१४)

सुबर्हिरग्निः पूषण्वान्त्स्तीर्णबर्हिरमर्त्यः.
बृहती छन्द ऽ इन्द्रियं त्रिवत्सो गौर्वयो दधुः.. (१५)

अग्नि कुश के अच्छे आसन वाले, पुष्टिदायी, विस्तृत आकाश को शुद्ध करने वाले व अमर हैं. बृहती छंद तीन बछड़ों वाली गायों से तथा इंद्रियों से हमारे लिए बल और आयु धारण करने की कृपा करें. (१५)

दुरो देवीर्दिशो महीर्ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः.
पङ्क्तिश्छन्द ऽ इहेन्द्रियं तुर्यवाड्गौर्वयो दधुः.. (१६)

बृहस्पति देव, दूर की देवियां, महिमाशाली ब्रह्मा देव हमारे लिए बल और आयु धारण करने की कृपा करें. पंक्ति, छंद, इंद्रियां, प्राणिमात्र का पोषण करने वाली गायों से हमारे लिए बल तथा आयु धारण करने की कृपा करें. (१६)

उषे यह्वी सुपेशसा विश्वे देवा ऽ अमर्त्याः.
त्रिष्टुप्छन्द ऽ इहेन्द्रियं पष्ठवाड्गौर्वयो दधुः.. (१७)

महान् तथा श्रेष्ठ स्वरूप वाली उषा देवी, सभी देवता एवं अमर देवगण हमारे लिए बल एवं आयु धारण करने की कृपा करें. त्रिष्टुप् छंद इंद्रियां पोषण

का भार वहन करने वाली गाय हमारे लिए बल एवं आयु धारण करने की कृपा करें. (१७)

दैव्या होतारा भिषजेन्द्रेण सयुजा युजा.
जगती छन्द ऽ इन्द्रियमनड्वान्गौर्वयो दधुः.. (१८)

देवताओं के होता, वैद्य इंद्र देव के साथ जुड़ कर रहने वाले हमारे लिए बल और आयु धारण करने की कृपा करें. जगती छंद, इंद्रियां, मन की गाड़ी को खींचने वाली गाय हमारे लिए बल और आयु को धारण करने की कृपा करें. (१८)

तिस्र ऽ इडा सरस्वती भारती मरुतो विशः.
विराट् छन्द ऽ इहेन्द्रियं धेनुर्गौर्न वयो दधुः.. (१९)

इड़ा देवी, सरस्वती देवी और भारती देवी तीनों देवियां, मरुद्गण हमारे लिए बल और आयु धारण करने की कृपा करें. विराट् छंद, इंद्रियां तथा दूध देने वाली गाय हमारे लिए बल एवं आयु धारण करने की कृपा करें. (१९)

त्वष्टा तुरीपो अद्भुत ऽ इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना.
द्विपदा छन्द ऽ इन्द्रियमुक्षा गौर्न वयो दधुः.. (२०)

त्वष्टा देव तेज गति वाले, विलक्षण व मोक्षदाता हैं. इंद्र देव एवं अग्नि पुष्टिवर्द्धक हैं. द्विपद छंद, इंद्रियां मोक्षदायी गायें हमारे लिए बल और आयु धारण करने की कृपा करें. (२०)

शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम्.
ककुप्छन्द ऽ इहेन्द्रियं वशा वेहद्वयो दधुः.. (२१)

वनस्पति हमारे लिए शांतिदायी हो. सविता देव हमारे लिए सौभाग्य उपजाने वाले हों. ककुप् छंद, इंद्रियां एवं अनुशासित गौ हमारे लिए आयु तथा बल धारण करने की कृपा करे. (२१)

स्वाहा यज्ञं वरुणः सुक्षत्रो भेषजं करत्.
अतिच्छन्दा ऽ इन्द्रियं बृहदृषभो गौर्वयो दधुः.. (२२)

यज्ञ के लिए स्वाहा. वरुण देव के लिए स्वाहा. श्रेष्ठ क्षत्रिय के लिए स्वाहा. ओषधियों के लिए स्वाहा. अतिच्छंदा छंद, इंद्रियां विशाल बैल वाली गाय हमारे लिए बल एवं आयु धारण करने की कृपा करें. (२२)

वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुताः.
रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः.. (२३)

वसुदेवगणों की वसंत ऋतु तथा त्रिवृत छंद से स्तुति की गई है. वसुदेवगण की

रथंतर छंद से स्तुति की गई है. हम तेज और हवि को इंद्र देव हेतु स्थापित करते हैं. इंद्र देव हमारे लिए बल और आयु धारने की कृपा करें. (२३)

ग्रीष्मेण ऋतुना देवा रुद्राः पञ्चदशे स्तुताः.
बृहता यशसा बल ꣳ हविरिन्द्रे वयो दधुः.. (२४)

रुद्र देव गणों की पंद्रह प्रार्थनाओं एवं ग्रीष्मऋतु से स्तुति की गई है. विशाल यश व बल से हवि को इंद्र देव हेतु स्थापित करते हैं. इंद्र देव हमारे लिए बल एवं आयु धारने की कृपा करें. (२४)

वर्षाभिर्ऋतुनादित्याः स्तोमे सप्तदशे स्तुताः.
वैरूपेण विशौजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः.. (२५)

आदित्य देवगणों की सत्रह स्तोत्रों एवं वर्षा ऋतु से उपासना की गई है. वैरूप छंद और ओज से हम इंद्र देव हेतु हवि स्थापित करते हैं. इंद्र देव हमारे लिए बल एवं आयु धारने की कृपा करें. (२५)

शारदेन ऋतुना देवा ऽ एकवि ꣳ श ऋभव स्तुताः.
वैराजेन श्रिया श्रिय ꣳ हविरिन्द्रे वयो दधुः.. (२६)

ऋभु देवगणों की इक्कीस स्तोत्रों तथा शरद ऋतु से उपासना की गई है. वैराज छंद श्रिया (लक्ष्मी) की श्री बढ़ाते हैं. हम उस से इंद्र देव हेतु हवि स्थापित करते हैं. इंद्र देव हमारे लिए बल तथा आयु धारने की कृपा करें. (२६)

हेमन्तेन ऋतुना देवास्त्रिणवे मरुत स्तुताः.
बलेन शक्वरीः सहो हविरिन्द्रे वयो दधुः.. (२७)

मरुद् गण की नौ से तिगुने स्तोत्रों और हेमंत ऋतु से उपासना की गई है. शक्वरी छंद और बल से हम इंद्र देव के लिए हवि स्थापित करते हैं. इंद्र देव हमारे लिए बल और आयु धारने की कृपा करें. (२७)

शैशिरेण ऋतुना देवास्त्रयस्त्रि ꣳ शेमृताः स्तुताः.
सत्येन रेवतीः क्षत्र ꣳ हविरिन्द्रे वयो दधुः.. (२८)

हम तीस और तीन देवगणों की रेवती छंद से और शिशिर ऋतु से उपासना करते हैं. हम सत्य और बल से इंद्र देव की स्थापना करते हैं. इंद्र देव हमारे लिए बल और आयु धारने की कृपा करें. (२८)

होता यक्षत्समिधाग्निमिडस्पदेश्विनेन्द्र ꣳ सरस्वतीमजो धूम्रो न गोधूमैः कुवलैर्भेषजं मधुशष्पैर्न तेज ऽ इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (२९)

होता ने अग्नि में समिधाएं प्रज्वलित की हैं. यह यज्ञ अश्विनी देव, इंद्र देव और

सरस्वती देवी के लिए किया जा रहा है. इस यज्ञ से गोधूम ओषधियां, मधु, दूध, सोम व घी प्राप्त होते हैं. होता सब के कल्याण के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (२९)

होता यक्षत्तनूनपात्सरस्वतीमविर्मेषो न भेषजं पथा मधुमता भरन्नश्विनेन्द्राय वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्मभिः पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३०)

होता यजमान के शरीर की रक्षा के लिए यज्ञ करते हैं. यह यज्ञ अश्विनीकुमारों, सरस्वती देवी और इंद्र देव के लिए किया जाता है. देवताओं के लिए अनाज, ओषध, मधु, पेय, घी, दूध, सोम व घी आदि प्राप्त होते हैं. देवगण इन सब को ग्रहण करने की कृपा करें. होता सब के कल्याण के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (३०)

होता यक्षन्नराश ꣳ सन्न नग्नहुं पति ꣳ सुरया भेषजं मेषः सरस्वती भिषग्रथो न चन्द्र्यश्विनोर्वपा ऽ इन्द्रस्य वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्मभिः पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३१)

होता ने अन्न और पुष्टिकारी पदार्थों से यज्ञ किया. यज्ञ में देवताओं को ओषधियां, बेर, अंकुरित धान आदि चढ़ाए गए. इन देवों के लिए मधु, घी, दूध व सोम प्राप्त होते है. होता सब के कल्याण के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (३१)

होता यक्षदिडेडित ऽ आजुह्वानः सरस्वतीमिन्द्रं बलेन वर्धयन्नृषभेण गवेन्द्रियमश्विनेन्द्राय भेषजं यवैः कर्कन्धुभिर्मधु लाजैर्न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३२)

होता ने इड़ा देवी के लिए यज्ञ किया. होता ने इड़ा देवी का आह्वान किया. होता ने इड़ा, सरस्वती देवी, इंद्र और अश्विनीकुमार की बढ़ोतरी के लिए यज्ञ किया. होता ने उन के लिए जौ, बेर, अनाज और इंद्र देव के लिए बलदायी ओषधियां चढ़ाईं. देवताओं के लिए मधु, घी, दूध व दही प्राप्त होते हैं. होता सब के कल्याण के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (३२)

होता यक्षद्बर्हिरूर्णम्म्रदा भिषङ्नासत्या भिषजाश्विनाश्वा शिशुमती भिषग्धेनुः सरस्वती भिषग्दुह ऽ इन्द्राय भेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३३)

होता ने देव वैद्य अश्विनीकुमारों और सरस्वती देवी के लिए कुश का आसन बिछाया. इंद्र देव बछड़े वाली गाय और बच्चे वाली घोड़ी के चिकित्सक हैं. उन के लिए इस यज्ञ में मधु, घी व दूध आदि प्राप्त होते हैं. वे इस को ग्रहण करें. यजमान सब के कल्याण के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (३३)

होता यक्षद्दुरो दिशः कवष्यो न व्यचस्वतीरश्विभ्यां न दुरो दिश ऽ इन्द्रो न रोदसी दुघे दुहे धेनुः सरस्वत्यश्विनेन्द्राय भेषज ‌ꣳ शुक्रं न ज्योतिरिन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३४)

होता ने दिशाओं के द्वार के लिए यज्ञ किया. विद्वान् यजमान ने अश्विनीकुमारों, इंद्र देव तथा देवी सरस्वती के लिए यज्ञ किया. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक देवताओं के लिए ओषधि हुए. वाणी गौ हुई. इन्होंने सभी देवताओं के लिए दिव्य तेज और दिव्य बल प्रदान किया. यज्ञ में देवताओं के लिए मधु, घी व दूध आदि टपकते हैं. देवगण उन्हें ग्रहण करने व यजमान सब के कल्याण हेतु यज्ञ करने की कृपा करें. (३४)

होता यक्षत्सुपेशसोषे नक्तं दिवाश्विना समञ्जाते सरस्वत्या त्विषिमिन्द्रे न भेषज ‌ꣳ श्येनो न रजसा हृदा श्रिया न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३५)

होता ने दिनरात के लिए यज्ञ किया. होता ने अश्विनीकुमारों और सरस्वती देवी के लिए यज्ञ किया. उस यज्ञ से दिनरात में स्थित प्रकाश ने मन एवं श्रिया के साथ मांड, ओषधि तथा श्येन पत्र ने चमक को इंद्र देव में स्थापित किया. उन के लिए मधु, घी व दूध प्राप्त होता है. देवगण उन्हें ग्रहण करने की कृपा करें. यजमान सब के कल्याण के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (३५)

होता यक्षद्दैव्या होतारा भिषजाश्विनेन्द्रं न जागृवि दिवा नक्तं न भेषजैः शूष ‌ꣳ सरस्वती भिषक् सीसेन दुह ऽ इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३६)

दिव्य होता ने देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमारों तथा इंद्र देव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ किया. सरस्वती देवी योग्य वैद्या और दिनरात काम में लगी रहती हैं. उन्होंने सीसा से (धातु) शक्ति और बल को दुहा. उस यज्ञ में देव के लिए मधु, घी और दूध प्राप्त होता है. देवगण उन्हें ग्रहण करने की कृपा करें. यजमान सब के कल्याण के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (३६)

होता यक्षत्तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोपसो रूपमिन्द्रे हिरण्ययमश्विनेडा न भारती वाचा सरस्वती मह ऽ इन्द्राय दुह ऽ इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३७)

होता ने भारती देवी, वाणी देवी और सरस्वती देवी के लिए यज्ञ किया. उस ने इंद्र देव तथा अश्विनीकुमारों के लिए यज्ञ किया. उस ने तीनों गुणों को धारण करने वाले मंत्रों से यज्ञ किया. सरस्वती देवी ज्योतिर्मय स्वरूप वाली हैं. उन्होंने इंद्र देव के लिए बल को दुहा. यज्ञ में इंद्र देव के लिए मधु, घी व दूध प्राप्त होते हैं. वे उन्हें ग्रहण करने की कृपा करें. यजमान सब के कल्याण के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (३७)

होता यक्षत् सुरेतसमृषभं नर्यापसं त्वष्टारमिन्द्रमश्विना भिषजं न सरस्वतीमोजो न जूतिरिन्द्रियं वृको न रभसो भिषग् यशः सुरया भेषज ꣳ श्रिया न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३८)

होता ने त्वष्टा देव के लिए यज्ञ किया. त्वष्टा देव अच्छे वीर्यवाले, बलवान व परोपकारी हैं. होता ने देव वैद्य अश्विनी देवों के लिए यज्ञ किया. होता ने सरस्वती देवी के लिए यज्ञ किया. होता ने चिकित्सा और इन सब देवताओं को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ किया. होता ने वृक, सुरा और मांड की ओषधि के रस से यज्ञ किया. यह यज्ञ वैभवपूर्ण है. ओज, गति, बल तथा यश इंद्र देव में स्थापित किया. इस यज्ञ में घी व दूध देवगण के लिए प्राप्त होते हैं. यजमान सब के कल्याण के लिए यज्ञ करने की कृपा करे. (३८)

होता यक्षद्वनस्पति ꣳ शमितार ꣳ शतक्रतुं भीमं न मन्यु ꣳ राजानं व्याघ्रं नमसाश्विना भाम ꣳ सरस्वती भिषगिन्द्राय दुह ऽ इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३९)

होता ने इंद्र देव, अश्विनी देव और देवी सरस्वती के लिए यज्ञ किया. ये देव वनस्पति को शुद्ध करने वाले, सैकड़ों यज्ञ करने वाले, भीम, राजा, शेर के समान गर्जना करने वाले हैं. उपयुक्त क्रोध वाले हैं. होता ने संस्कारयुक्त अन्न से इन देवों की प्रसन्नता के लिए यज्ञ किया. सरस्वती ने इंद्र देव में क्रोध और बल को दुहा. इस यज्ञ में देवों के लिए मधु, घी व दूध प्राप्त होते हैं. देवगण उन्हें ग्रहण करें. होता सब का कल्याण करने की कृपा करें. (३९)

होता यक्षदग्नि ꣳ स्वाहाज्यस्य स्तोकाना ꣳ स्वाहा मेदसां पृथक् स्वाहा छागमश्विभ्या ꣳ स्वाहा मेष ꣳ सरस्वत्यै स्वाहा ऋषभमिन्द्राय सि ꣳ हाय सहस ऽ इन्द्रिय ꣳ स्वाहाग्निं न भेषज ꣳ स्वाहा सोममिन्द्रिय ꣳ स्वाहेन्द्र ꣳ सुत्रामाण ꣳ सवितारं वरुणं भिषजां पति ꣳ स्वाहा वनस्पतिं प्रियं पाथो न भेषज ꣳ स्वाहा देवा ऽ आज्यपा जुषाणो अग्निर्भेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (४०)

होता ने अग्नि के लिए यज्ञ किया. अग्नि के लिए स्वाहा. स्तोत्रों के लिए स्वाहा. मद के लिए अलग से स्वाहा. अश्विनीकुमारों के लिए स्वाहा. छाग के लिए स्वाहा. देवी सरस्वती के लिए स्वाहा. मेष के लिए स्वाहा. इंद्र देव सिंह के समान शक्तिशाली हैं. इंद्र देव के लिए स्वाहा. ऋषभ के लिए स्वाहा. सविता देव सुरक्षक हैं, उन के लिए स्वाहा. वैद्य वरुण बलदायी है, उन के लिए स्वाहा. वनस्पति को प्रिय अन्न से स्वाहा. देव वैद्य को प्रिय अन्न से स्वाहा. देवगणों के लिए मधु, घी व दूध प्राप्त होते हैं. देवगण उन्हें स्वीकारने की कृपा करें. यजमानगण सब के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (४०)

होता यक्षदश्विनौ छागस्य वपाया मेदसो जुषेता ꣳ हविर्होतर्यज.
होता यक्षत्सरस्वती मेषस्य वपाया मेदसो जुषता ꣳ हविर्होतर्यज.
होता यक्षदिन्द्रमृषभस्य वपाया मेदसो जुषता ꣳ हविर्होतर्यज.. (४१)

होता ने अश्विनीकुमारों के लिए छाग के मेद से यज्ञ किया. आप भी ऐसी ही हवि से यज्ञ करने की कृपा कीजिए. होता ने सरस्वती देवी के लिए मेष के मेद से यज्ञ किया. आप भी ऐसी ही हवि से यज्ञ करने की कृपा करें. होता इंद्र की प्रसन्नता हेतु ऋषभ की वसा को स्थापित करते हैं. होता सब के कल्याण हेतु ऐसा यज्ञ करें. (४१)

होता यक्षदश्विनौ सरस्वतीमिन्द्र ꣳ सुत्रामाणमिमे सोमाः सुरामाणश्छागैर्न मेषैर्ऋषभैः सुताः शष्पैर्न तोक्मभिर्लाजैर्महस्वन्तो मदा मासरेण परिष्कृताः शुक्राः पयस्वन्तोमृताः प्रस्थिता वो मधुश्चुतस्तानश्विना सरस्वतीन्द्रः सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ता ꣳ सोम्यं मधु पिबन्तु मदन्तु व्यन्तु होतर्यज.. (४२)

होता ने अश्विनीकुमारों के लिए सुंदर छागों (ओषधि) से यजन किया. होता ने वैभवशाली इंद्र देव के लिए ऋषभों से यजन किया. होता ने सरस्वती देवी के लिए इन ओषधियों से यजन किया. यजमान देवों के लिए धान, खील, परिष्कृत रसीला मधु चुआने वाला सोम आदि भेंट करते हैं. दोनों अश्विनीकुमार, वैभववान वृत्र नाशक इंद्र देव, सरस्वती देवी इस मधुर सोमरस को पीएं. मदमस्त हों. हे होता! आप भी ऐसा ही यज्ञ कीजिए. (४२)

होता यक्षदश्विनौ छागस्य हविष ऽ आत्तामद्य मध्यतो मेद ऽ उद्भृतं पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या गृभो घस्तां नूनं घासे अज्राणां यवसप्रथमाना ꣳ सुमत्क्षराणा ꣳ शतरुद्रियाणामग्निष्वात्तानां पीवोपवसनानां पार्श्वतः श्रोणितः शितामत ऽ उत्सादतोङ्गादङ्गादवत्तानां करत ऽ एवाश्विना जुषेता ꣳ हविर्होतर्यज.. (४३)

होता ने अश्विनी कुमारों के लिए छाग (ओषधि) के बीच के भाग से यज्ञ किया. द्वेषियों से पहले जिन्हें पौरुष से अन्न ग्रहण करने का अधिकार है, वे देवगण अपने पौरुष से अन्न ग्रहण करने की कृपा करें. अग्नि उस अन्न को पचा कर वायु रूप में सैकड़ों गुना फैला देते हैं. कांख, कमर, गुप्तांग तथा अन्य अंगों को हानि न हो. वे अंग पुष्ट हों. हे होता! सब के कल्याण हेतु यज्ञ करने की कृपा करें. (४३)

होता यक्षत् सरस्वतीं मेषस्य हविष ऽ आवयदद्य मध्यतो मेद ऽ उद्धृतं पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या गृभो घसन्नूनं घासे अज्राणां यवसप्रथमाना ꣳ सुमत्क्षराणा ꣳ शतरुद्रियाणामग्निष्वात्तानां पीवोपवसनानां पार्श्वतः श्रोणितः शितामत ऽ उत्सादतो ऽ ङ्गादङ्गादवत्तानां करदेव ꣳ सरस्वती जुषता ꣳ हविर्होतर्यज.. (४४)

आज होता ने देवी सरस्वती के लिए मेष के बीच के भाग से यज्ञ किया. द्वेषियों

से पहले जिन्हें पौरुष से अन्न ग्रहण करने का अधिकार है, वे देवगण अपने पौरुष से अन्न ग्रहण करने की कृपा करें. अग्नि उस अन्न को पचा कर वायु रूप में सैकड़ों गुना फैला देते हैं. कांख, कमर, गुप्तांग तथा अन्य अंगों को हानि न हो. वे अंग पुष्ट हों. हे होता! सब के कल्याण हेतु यज्ञ करने की कृपा करें. (४४)

होता यक्षदिन्द्रमृषभस्य हविष ऽ आवयदद्य मध्यतो मेद ऽ उद्भृतं पुरा द्वेषोभ्यः पुरा पौरुषेय्या गृभो घसन्नूनं घासे अज्राणां यवसप्रथमाना ꣳ सुमत्क्षराणा ꣳ शतरुद्रियाणामग्निष्वात्तानां पीवोपवसनानां पार्श्वतः श्रोणितः शितामत ऽ उत्सादतो ऽ ङ्गादङ्गादवत्तानां करदेवमिन्द्रो जुषता ꣳ हविर्होतर्यज.. (४५)

आज होता ने इंद्र देव हेतु ऋषभ के बीच के भाग से यज्ञ किया. द्वेषियों से पहले जिन्हें पौरुष से अन्न ग्रहण करने का अधिकार है, वे देवगण अपने पौरुष से अन्न ग्रहण करने की कृपा करें. अग्नि उस अन्न को पचा कर वायु रूप में सैकड़ों गुना फैला देते हैं. कांख, कमर, गुप्तांग तथा अन्य अंगों को हानि न हो. वे अंग पुष्ट हों. हे होता! सब के कल्याण हेतु यज्ञ करने की कृपा करें. (४५)

होता यक्षद्वनस्पतिमभि हि पिष्टतमया रभिष्ठया रशनयाधित. यत्राश्विनोश्छागस्य हविषः प्रिया धामानि यत्र सरस्वत्या मेषस्य हविषः प्रिया धामानि यत्रेन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः प्रिया धामानि यत्राग्नेः प्रिया धामानि यत्र सोमस्य प्रिया धामानि यत्रेन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामानि यत्र सवितुः प्रिया धामानि यत्र वरुणस्य प्रिया धामानि यत्र वनस्पतेः प्रिया पाथा ꣳ सि यत्र देवानामाज्यपानां प्रिया धामानि यत्राग्नेर्होतुः प्रिया धामानि तत्रैतान्प्रस्तुत्येवोपस्तुत्येवोपावस्रक्षद्रभीयस ऽ इव कृत्वी करदेवं देवो वनस्पतिर्जुषता ꣳ हविर्होतर्यज.. (४६)

होता ने वनस्पति देव के लिए यज्ञ किया. बंधे हुए पशु की भांति वनस्पति अपने स्थान पर रहने (स्थिर) की कृपा करें. जहां छाग की हवि अश्विनीकुमार का प्रिय धाम है, जहां मेष की हवि सरस्वती देवी का प्रिय धाम है, जहां ऋषभ की हवि इंद्र देव का प्रिय धाम है, जहां अग्नि का प्रिय धाम है, जहां सोम का प्रिय धाम है, जहां सुरक्षक इंद्र देव का प्रिय धाम है, जहां सविता देव का प्रिय धाम है, जहां वरुण देव का प्रिय धाम है, जहां वनस्पति देव का प्रिय धाम है, जहां घी की हवि पीने वाले का प्रिय धाम है, जहां अग्नि होता हैं, उन का प्रिय धाम है, वहां प्रस्तुत और अप्रस्तुत हो कर देवगण उत्तम हवि ग्रहण करते हैं. आप भी ऐसा ही यज्ञ कीजिए. (४६)

होता यक्षदग्नि ꣳ स्विष्टकृतमयाडग्निरश्विनोश्छागस्य हविषः प्रिया धामान्ययाट् सरस्वत्या मेषस्य हविषः प्रिया धामान्ययाडिन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः प्रिया धामान्ययाडग्नेः प्रिया धामान्ययाट् सोमस्य प्रिया धामान्ययाडिन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामान्ययाट् सवितुः प्रिया धामान्ययाड् वरुणस्य प्रिया धामान्ययाड् वनस्पतेः प्रिया पाथा ꣳ स्ययाड् देवानामाज्यपानां

प्रिया धामानि यक्षदग्नेर्होतुः प्रिया धामानि यक्षत् स्वं महिमानमायजतामेज्या ऽ इषः कृणोतु सो अध्वरा जातवेदा जुषता ꣳ हविर्होतर्यज.. (४७)

होता ने अग्नि हेतु भलीभांति यज्ञ किया. अग्नि ने कृपा की. अश्विनीकुमारों को छाग के धाम समर्पित किए. अश्विनीकुमारों को ऋषभ धाम समर्पित किए. सरस्वती देवी को मेष के धाम समर्पित किए. वरुण देव के प्रिय धाम समर्पित किए. वनस्पति के प्रियधाम समर्पित किए. घी की हवि पीने वालों के लिए प्रिय धाम समर्पित किए. अग्नि सर्वज्ञ हैं. महिमाशाली हैं. वे प्रिय हवि का सेवन करें. यजमानों का कल्याण करें. हे होता गण! आप भी ऐसा ही यज्ञ कीजिए. (४७)

देवं बर्हिः सरस्वती सुदेवमिन्द्रे अश्विना.
तेजो न चक्षुरक्ष्योर्बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (४८)

सरस्वती देवी ने देव सुदेव इंद्र और अश्विनीकुमारों के लिए कुश का आसन दिया. अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव में तेज की स्थापना की. अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव की आंखों में दृष्टि की स्थापना की. इंद्र देव धनधारी हैं. हमारे लिए धन धारें. धन के इच्छुक यजमान उस के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (४८)

देवीर्द्वारो अश्विना भिषजेन्द्रे सरस्वती.
प्राणं न वीर्यं नसि द्वारो दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (४९)

सरस्वती देवी दिव्य द्वार वाली हैं, अश्विनीदेव ने इंद्र देव में प्राण और वीर्य की स्थापना की. अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव की आंखों में दृष्टि की स्थापना की. इंद्र देव धनधारी हैं. हमारे लिए धन धारें. धन के इच्छुक यजमान उस के लिए कल्याणकारी यज्ञ करने की कृपा करें. (४९)

देवी उषासावश्विना सुत्रामेन्द्रे सरस्वती.
बलं न वाचमास्य ऽ उषाभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (५०)

रात्रि देव उषा देवी हैं. सरस्वती देवी ने इंद्र देव में बल की स्थापना की. मुंह में वाणी शक्ति की स्थापना की. अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव की आंखों में दृष्टि की स्थापना की. इंद्र देव धनधारी हैं. हमारे लिए धन धारें. धन के इच्छुक यजमान उस के लिए कल्याणकारी यज्ञ करने की कृपा करें. (५०)

देवी जोष्ट्री सरस्वत्यश्विनेन्द्रमवर्धयन्.
श्रोत्रन्न कर्णयोर्यशो जोष्ट्रीभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (५१)

सरस्वती देवी और अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव में जोश बढ़ाया. इंद्र देव का यश बढ़ाया. दोनों कानों में सुनने की शक्ति स्थापित की. अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव की आंखों में दृष्टि की स्थापना की. इंद्र देव धनधारी हैं. हमारे लिए धन धारें. धन के इच्छुक यजमान उस के लिए कल्याणकारी यज्ञ करने की कृपा करें. (५१)

देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघेन्द्रे सरस्वत्यश्विना भिषजावतः.
शुक्रं न ज्योति स्तनयोराहुती धत्त ऽ इन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (५२)

सरस्वती देवी और अश्विनीकुमार ऊर्जा वाले, मनोकामना पूरक व रसीले हैं. दोनों ने इंद्र देव में शुक्र की स्थापना की. बीच के प्रदेश में ज्योति स्थापित की. अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव की आंखों में दृष्टि की स्थापना की. इंद्र देव धनधारी हैं. हमारे लिए धन धारें. धन के इच्छुक यजमान उस के लिए कल्याणकारी यज्ञ करने की कृपा करें. (५२)

देवा देवानां भिषजा होताराविन्द्रमश्विना.
वषट्कारैः सरस्वती त्विषिं न हृदये मति ꣳ होतृभ्यां दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (५३)

अश्विनीकुमार देवों के देव हैं. वे देवों के चिकित्सक हैं. उन्होंने और सरस्वती देवी ने इंद्र देव में वषट्कार (तेज) व हृदय में बुद्धि की स्थापना की. अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव की आंखों में दृष्टि की स्थापना की. इंद्र देव धनधारी हैं. हमारे लिए धन धारें. धन के इच्छुक यजमान उस के लिए कल्याणकारी यज्ञ करने की कृपा करें. (५३)

देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीरश्विनेडा सरस्वती.
शूषं न मध्ये नाभ्यामिन्द्राय दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (५४)

सरस्वती आदि तीनों देवियों सहित अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव के मध्य भाग में नाभि में बल धारण कराया. अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव की आंखों में दृष्टि की स्थापना की. इंद्र देव धनधारी हैं. हमारे लिए धन धारें. धन के इच्छुक यजमान उस के लिए कल्याणकारी यज्ञ करने की कृपा करें. (५४)

देव ऽ इन्द्रो नराश ꣳ सस्त्रिवरूथः सरस्वत्याश्विभ्यामीयते रथः.
रेतो न रूपममृतं जनित्रमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (५५)

सरस्वती देवी, त्वष्टा देव तथा अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव के लिए प्रशंसा योग्य रथ प्रस्तुत किया. इन देवों ने इंद्र देव में वीर्य की स्थापना की. रूप उपजाया. जननेंद्रिय में उपजाने की शक्ति की स्थापना की. अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव की आंखों में दृष्टि की स्थापना की. इंद्र देव धनधारी हैं. हमारे लिए धन धारें. धन के इच्छुक यजमान उस के लिए कल्याणकारी यज्ञ करने की कृपा करें. (५५)

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो अश्विभ्या ꣳ सरस्वत्या सुपिप्पल ऽ इन्द्राय पच्यते मधु.
ओजो न जूतिर्ऋषभो न भामं वनस्पतिर्नो दधदिन्द्रियाणि वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (५६)

वनस्पति देव देवों के देव और सुनहरे पत्तों वाले फलों के स्वामी हैं. वनस्पति देव अश्विनीकुमारों तथा सरस्वती देवी ने इंद्र देव को अच्छे मीठे फल से पाया. इंद्र देव में ओज तथा बल धारण कराया. अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव की आंखों में दृष्टि की स्थापना की. इंद्र देव धनधारी हैं. हमारे लिए धन धारें. धन के इच्छुक यजमान उस के लिए कल्याणकारी यज्ञ करने की कृपा करें. (५६)

देवं बर्हिर्वारितीनामध्वरे स्तीर्णमश्विभ्यामूर्णम्म्रदाः सरस्वत्या स्योनमिन्द्र ते सदः. ईशायै मन्यु ꣳ राजानं बर्हिषा दधुरिन्द्रियं वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (५७)

सरस्वती देवी और अश्विनीकुमार ने यज्ञसदन में इंद्र देव के लिए कुश का आसन बिछाया. इन्होंने इंद्र देव में मन्यु (क्रोध) तथा वैभव धारण कराया. (५७)

देवो अग्निः स्विष्टकृद्देवान्यक्षद्यथायथ ꣳ होताराविन्द्रमश्विना वाचा वाच ꣳ सरस्वतीमग्नि ꣳ सोम ꣳ स्विष्टकृत् स्विष्ट ऽ इन्द्रः सुत्रामा सविता वरुणो भिषगिष्टो देवो वनस्पतिः स्विष्टा देवा ऽ आज्यपाः स्विष्टो अग्निरग्निना होता होत्रे स्विष्टकृद्यशो न दधदिन्द्रियमूर्जमपचिति ꣳ स्वधां वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (५८)

भलीभांति लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अग्नि, मित्र देव, वरुण देव, इंद्र देव, सविता देव, वनस्पति देव तथा घी पीने वाले अन्य देवों ने अग्नि द्वारा ग्रहण की हुई हवि को ग्रहण किया. देवगण यजमानों द्वारा किए गए यज्ञ से प्रसन्न हुए. देवगण ने यजमानों के लिए यश, इंद्रिय शक्ति, बल तथा पराक्रम धारण किया. (५८)

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन् पक्तीः पचन् पुरोडाशान् बध्नन्नश्विभ्यां छाग ꣳ सरस्वत्यै मेषमिन्द्राय ऋषभ ꣳ सुन्वन्नश्विभ्या ꣳ सरस्वत्या ऽ इन्द्राय सुत्राम्णे सुरासोमान्.. (५९)

इस यजमान ने आज होता अग्नि का वरण किया. सरस्वती देवी के लिए मेष से पुरोडाश पकाया. अश्विनीकुमारों के लिए छाग से पुरोडाश पकाया. इंद्र देव के लिए ऋषभ से पुरोडाश पकाया. सरस्वती देवी तथा अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव हेतु सुरा (ओषधियों का तीखा रस) और सोम भेंट किया. (५९)

सूपस्था ऽ अद्य देवो वनस्पतिरभवदश्विभ्यां छागेन सरस्वत्यै मेषेणेन्द्राय ऋषभेणाक्षँस्तान् मेदस्तः प्रति पचतागृभीषतावीवृधन्त पुरोडाशैरपुरश्विना सरस्वतीन्द्रः सुत्रामा सुरासोमान्.. (६०)

आज वनस्पति देव यज्ञ में पधारें. उन्होंने छाग से अश्विनीकुमारों को प्रसन्न किया. उन्होंने मेष से सरस्वती देवी को प्रसन्न किया. उन्होंने ऋषभ से इंद्र देव को प्रसन्न किया. तीनों देव इस से आनंदित हुए. इन ओषधियों से पुरोडाश पकाया. सरस्वती देवी तथा अश्विनीकुमारों ने इंद्र देव हेतु सुरा (ओषधियों का तीखा रस) और सोम भेंट किया. (६०)

त्वामद्य ऋष ऽ आर्षेय ऋषीणां नपादवृणीतायं यजमानो बहुभ्य ऽ आ सङ्गतेभ्य ऽ एष मे देवेषु वसु वार्यायक्ष्यत ऽ इति ता या देवा देव दानान्यदुस्तान्यस्मा ऽ आ च शास्स्वा च गुरस्वेषितश्च होतरसि भद्रवाच्याय प्रेषितो मानुषः सूक्तवाकाय सूक्ता ब्रूहि.. (६१)

आर्ष ऋषियों के मार्ग पर चलते हुए यजमान ने यज्ञ में सभी देवों का वरण किया. यजमान ने ऐश्वर्य की कामना से यज्ञ किया. इन देवगणों ने यजमान के लिए दिव्य दान किए. हे होताओ! आप सभी देवताओं का आह्वान कीजिए. आप भद्र वाणी से सभी देवताओं का आह्वान कीजिए. आप अच्छे वाणीमय सूत्रों से देवताओं का आह्वान कीजिए. (६१)

बाईसवां अध्याय

तेजोसि शुक्रममृतमायुष्पा ऽ आयुर्मे पाहि. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे.. (१)

हे देव! आप तेजोमय, चमकीले, अमर व आयु की रक्षा करने वाले हैं. आप हमारी आयु की रक्षा कीजिए. सविता देव और अश्विनीकुमार की बाहु तथा पूषा देव के हाथों आप हम पर कृपा दान कीजिए. (१)

इमामगृभ्णन् रशनामृतस्य पूर्व ऽ आयुषि विदथेषु कव्या.
सा नो अस्मिन्त्सुत ऽ आ बभूव ऋतस्य सामन्त्सरमारपन्ती.. (२)

कवियों ने यज्ञ से ज्ञान पाया. ज्ञान से सृष्टि व आयु को जाना. वे हमारे पुत्रों के लिए ऋत को जानें. प्रकृति के रहस्यों को जान जाएं. (२)

अभिधा असि भुवनमसि यन्तासि धर्त्ता.
स त्वमग्निं वैश्वानर ꣳ सप्रथसं गच्छ स्वाहाकृतः.. (३)

हे अश्व! आप दोनों लोकों के धारक, भुवन, नियंत्रक व धारक हैं. आप वैश्वानर अग्नि में आहुति दीजिए. आप आहुतिपूर्वक अपने निर्धारित स्थान तक पहुंचने की कृपा कीजिए. (३)

स्वगा त्वा देवेभ्यः प्रजापतये ब्रह्मन्नश्वं भन्त्स्यामि देवेभ्यः प्रजापतये तेन राध्यासम्.
तं बधान देवेभ्यः प्रजापतये तेन राध्नुहि.. (४)

आप सर्वत्र गमन करने वाले हैं. आप देवों तक स्वयं जाने वाले हैं. आप प्रजापति तक पहुंचने वाले हैं. अग्नि ब्रह्मज्ञानी हैं. हम आप से देवताओं तक पहुंचने की प्रार्थना करते हैं. देवता और प्रजापति हमें सब प्रकार के धन प्रदान करने की कृपा करें. (४)

प्रजापतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीन्द्राग्निभ्यां त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वायवे त्वा जुष्टं प्रोक्षामि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यो जुष्टं प्रोक्षामि.
यो अर्वन्तं जिघा ꣳ सति तमभ्यमीति वरुणः.
परो मर्त्तः परः श्वा.. (५)

प्रजापति सब के प्रिय हैं. हम प्रजापति की संतुष्टि हेतु आप का अभिषेक करते

हैं. इंद्र और अग्नि की संतुष्टि हेतु आप का अभिषेक करते हैं. हम वायु की संतुष्टि हेतु आप का अभिषेक करते हैं. हम विश्वे देव की संतुष्टि हेतु आप का अभिषेक करते हैं. हम सभी देवों की संतुष्टि हेतु आप का अभिषेक करते हैं. यज्ञ की जो चंचल ऊंची उठती हुई लपटें हैं उन्हें जो भी हानि पहुंचाने वाले हों, उन्हें वरुण देव नष्ट करने की कृपा करें. यज्ञ को नुकसान पहुंचाने वाले कुत्तों और ऐसे व्यक्तियों को दूर पहुंचाने की कृपा करें. (५)

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहापां मोदाय स्वाहा सवित्रे स्वाहा वायवे स्वाहा विष्णवे स्वाहेन्द्राय स्वाहा बृहस्पतये स्वाहा मित्राय स्वाहा वरुणाय स्वाहा.. (६)

अग्नि के लिए स्वाहा. सोम के लिए स्वाहा. प्रसन्नता के लिए स्वाहा. सविता के लिए स्वाहा. वायु के लिए स्वाहा. विष्णु के लिए स्वाहा. इंद्र के लिए स्वाहा. बृहस्पति के लिए स्वाहा. मित्र के लिए स्वाहा. वरुण के लिए स्वाहा. (६)

हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहावक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहा स ꣳ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहायनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा.. (७)

हिंकार के लिए स्वाहा. हिंकृत के लिए स्वाहा. क्रंदन के लिए स्वाहा. अवक्रंदन के लिए स्वाहा. कार्य शुरू करने के लिए स्वाहा. कार्य समाप्त करने के लिए स्वाहा. गंध के लिए स्वाहा. सूंघने के लिए स्वाहा. स्थित के लिए स्वाहा. बैठने के लिए स्वाहा. स्थिर के लिए स्वाहा. गतिमान के लिए स्वाहा. आसन ग्रहण करने के लिए स्वाहा. सोने के लिए स्वाहा. जाग्रत के लिए स्वाहा. कूजने के लिए स्वाहा. प्रबुद्ध के लिए स्वाहा. जम्हा के लिए स्वाहा. चैतन्य होने के लिए स्वाहा. उपस्थित के लिए स्वाहा. आगमन के लिए स्वाहा. गमन के लिए स्वाहा. (७)

यते स्वाहा धावते स्वाहोद्द्रावाय स्वाहोद्द्रुताय स्वाहा शूकाराय स्वाहा शूकृताय स्वाहा निषण्णाय स्वाहोत्थिताय स्वाहा जवाय स्वाहा बलाय स्वाहा विवर्त्तमानाय स्वाहा विवृत्ताय स्वाहा विधून्वानाय स्वाहा विधूताय स्वाहा शुश्रूषमाणाय स्वाहा शृण्वते स्वाहेक्षमाणाय स्वाहेक्षिताय स्वाहा वीक्षिताय स्वाहा निमेषाय स्वाहा यदत्ति तस्मै स्वाहा यत् पिबति तस्मै स्वाहा यन्मूत्रं करोति तस्मै स्वाहा कुर्वते स्वाहा कृताय स्वाहा.. (८)

जाते हुए के लिए स्वाहा. दौड़ते हुए के लिए स्वाहा. उत्कर्षशील के लिए स्वाहा. उत्कर्ष हेतु गतिमान के लिए स्वाहा. बैठे हुए के लिए स्वाहा. उठे हुए के लिए स्वाहा. वेगवान के लिए स्वाहा. बल के लिए स्वाहा. बारबार किए जाने के लिए स्वाहा. बारबार किए गए के लिए स्वाहा. कांपने वाले के लिए स्वाहा. कांपने के लिए स्वाहा. सुनने की इच्छा वाले के लिए स्वाहा. सुनने के लिए स्वाहा. देखने के

लिए स्वाहा. देख चुके के लिए स्वाहा. देखनेपरखने के लिए स्वाहा. पलक झपकाने के लिए स्वाहा. जो खाता है, उस के लिए स्वाहा. जो पीता है, उस के लिए स्वाहा. जो मूत्र विसर्जित करता है, उस के लिए स्वाहा. करने वाले के लिए स्वाहा. कर चुके के लिए स्वाहा. (८)

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि. धियो यो नः प्रचोदयात्.. (९)

सविता देव को नमस्कार है. सविता देव वरेण्य, सौभाग्यदायी व देवों को धारण करते हैं. वे बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर उन्मुख करते हैं. वे हमारी बुद्धि को प्रेरित करने की कृपा करें. (९)

हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप ह्वये. स चेत्ता देवता पदम्.. (१०)

सविता देव! आप सोने के हाथों वाले व आप सर्वज्ञ व चित्त में धारण करने योग्य हैं. हम अपनी रक्षा के लिए आप का आह्वान करते हैं. (१०)

देवस्य चेततो महीं प्र सवितुर्हवामहे. सुमति ँ सत्यराधसम्.. (११)

हे सविता देव! आप चैतन्य करते हैं. आप सत्य रूपी धन वाले हैं. हम सुमति (अच्छी बुद्धि) हेतु आप का आह्वान करते हैं. (११)

सुष्टुति ँ सुमतीवृधो राति ँ सवितुरीमहे. प्र देवाय मतीविदे.. (१२)

हे सविता देव! आप सुमति की बढ़ोतरी करते हैं. आप हम को सुष्ठु (श्रेष्ठ) गति प्रदान करने की कृपा कीजिए. हम बुद्धिपूर्वक सविता देव की उपासना करते हैं. (१२)

राति ँ सत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये. आसवं देववीतये.. (१३)

हम सत्पति, धनशील, वैभववान सविता देव की उपासना करते हैं. हम देवताओं को तृप्त करने के लिए सविता देव की उपासना करते हैं. (१३)

देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदेव्यम्. धिया भगं मनामहे.. (१४)

सविता देव वैभववान हैं. सभी देवताओं के हितैषी हैं. सौभाग्य बढ़ाने वाली बुद्धि को पाने के लिए हम उन की उपासना करते हैं. (१४)

अग्नि ँ स्तोमेन बोधय समिधानो अमर्त्यम्. हव्या देवेषु नो दधत्.. (१५)

हे पुरोहित! आप अग्नि को स्तोत्रों से जाग्रत कीजिए. समिधाओं से प्रज्वलित कीजिए. अग्नि अमर हैं. देवताओं के लिए हमारी हवि को धारण करते हैं. (१५)

स हव्यवाडमर्त्य ऽ उशिग्दूतश्चनोहितः. अग्निर्धिया समृण्वति.. (१६)

हे अग्नि! आप हवि वहन करते हैं. आप अमर हैं. आप स्वयं प्रज्वलित होते हैं. आप देवताओं के दूत हैं. आप हितैषी हैं. आप हवि धारण कर के उसे पहुंचाने की कृपा करें. (१६)

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे. देवाँ २ आ सादयादिह.. (१७)

अग्नि दूत व हव्य वाहक हैं. हम सम्मुख ही उन की स्थापना करते हैं. हम उन से अनुरोध करते हैं कि वह यहां पधारें व विराजें और हवि को देवताओं तक पहुंचाएं. (१७)

अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः.
गोजीरया र ꣳ हमाणः पुरन्ध्या.. (१८)

हे अग्नि! आप पवित्र करने वाले हैं. आप ने सूर्य को प्रकटाया. आप जल धारण करने की सामर्थ्य रखते हैं. आप गौ आदि के लिए जीवन धारण करते हैं. गौ आदि आप की कृपा से जल (दूध) धारती हैं. (१८)

विभूर्मात्रा प्रभूः पित्राश्वो ऽ सि हयो ऽ स्यत्यो ऽ सि मयो ऽ स्यर्वा ऽ सि सप्तिरसि वाज्यसि वृषासि नृमणा ऽ असि.
ययुर्नामासि शिशुर्नामास्यादित्यानां पत्वान्विहि देवा ऽ आशापाला ऽ एतं देवेभ्यो ऽ श्वं मेधाय प्रोक्षित ꣳ रक्षतेह रन्तिरिह रमतामिह धृतिरिह स्वधृतिः स्वाहा.. (१९)

हे अग्नि! आप वैभव संपन्न हैं. आप माता हैं. आप पिता हैं. आप अश्व हैं. आप हम हैं. आप गतिशील हैं. आप मय हैं. आप पराक्रमी हैं. आप सुखदायी हैं. आप नम्र हैं. आप शिशु हैं. आप रक्षक हैं. आप आदित्यों की तरह अपनी राह पर चलते हैं. आप दिशापति हैं. आप देवताओं के लिए इस संस्कार संपन्न घोड़े की रक्षा की कृपा कीजिए. यह यहां प्रसन्नता से रमण करें, रमें. यह यज्ञ को धारें. यह स्वयं धारण करने की शक्ति वाले हैं. इन के लिए स्वाहा. (१९)

काय स्वाहा कस्मै स्वाहा कतमस्मै स्वाहा स्वाहाधिमाधीताय स्वाहा मनः प्रजापतये स्वाहा चित्तं विज्ञातायादित्यै स्वाहादित्यै मह्यै स्वाहादित्यै सुमृडीकायै स्वाहा सरस्वत्यै स्वाहा सरस्वत्यै पावकायै स्वाहा सरस्वत्यै बृहत्यै स्वाहा पूष्णे स्वाहा पूष्णे प्रपथ्याय स्वाहा पूष्णे नरन्धिषाय स्वाहा त्वष्ट्रे स्वाहा त्वष्ट्रे तुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रे पुरुरूपाय स्वाहा विष्णवे स्वाहा विष्णवे निभूयपाय स्वाहा विष्णवे शिपिविष्टाय स्वाहा.. (२०)

प्रजापति के लिए स्वाहा. सुख हेतु स्वाहा. सर्वश्रेष्ठ के लिए स्वाहा. विद्या धारण करने हेतु स्वाहा. मन स्वरूप प्रजापति के लिए स्वाहा. चित्त स्वरूप प्रजापति के लिए स्वाहा. विशिष्ट ज्ञात आदित्य के लिए स्वाहा. मध्यादित्य के लिए स्वाहा. सुखदायी के लिए स्वाहा. पवित्र सरस्वती देवी के लिए स्वाहा. विशालवती देवी के लिए स्वाहा. पूषा देव के लिए स्वाहा. श्रेष्ठ पथवाले पूषा

देव के लिए स्वाहा. मानवधारी पूजा देव के लिए स्वाहा. त्वष्टा पूजा देव के लिए स्वाहा. तीव्र पूषा देव के लिए स्वाहा. विविध रूप पूषा देव के लिए स्वाहा. विष्णु हेतु स्वाहा. भूपति देव हेतु स्वाहा. सब के चित्त में स्थित विष्णु देव हेतु स्वाहा. (२०)

विश्वो देवस्य नेतुर्मर्तो वुरीत सख्यम्.
विश्वो राय ऽ इषुध्यति द्युम्नं वृणीत पुष्यसे स्वाहा.. (२१)

सविता देव संसार के नायक हैं. हम उन की मित्रता व संसार के सारे वैभव पाना चाहते हैं. हम पुष्टता चाहते हैं. हम स्वर्गलोक चाहते हैं. सविता देव हेतु स्वाहा. (२१)

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर ऽ इषव्योतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽ ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्.. (२२)

हे ब्राह्मण! आप ब्रह्मवर्चस्वी हैं. राष्ट्र में शूरवीर बाणविद्या में निपुण महारथी क्षत्रिय उत्पन्न हों. तीव्र वेग वाले घोड़े, भार ढोने वाले बैल, दुधारू गाएं लोगों को मिलें. स्त्रियां चरित्रवती और गुणवती हों. वीर विजयी हों. सभी युवा हों. अच्छे वक्ता हों. बादल अच्छे बरसें. ओषधियां फलवती हों. योगक्षेम का भी निर्वाह हो. (२२)

प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा.. (२३)

प्राण को स्वाहा. अपान को स्वाहा. व्यान को स्वाहा. चक्षु को स्वाहा. वाणी को स्वाहा. मन को स्वाहा. (२३)

प्राच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा दक्षिणायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा प्रतीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोदीच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहोर्ध्वायै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहावाच्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा.. (२४)

पूर्व दिशा के लिए स्वाहा. पश्चिम दिशा के लिए स्वाहा. दक्षिण दिशा के लिए स्वाहा. ईशान दिशा के लिए स्वाहा. ऊर्ध्व दिशा के लिए स्वाहा. प्रतीच्य दिशा के लिए स्वाहा. उदीच्य दिशा के लिए स्वाहा. अर्वाच्य दिशा के लिए स्वाहा. अध्वार्य दिशा के लिए स्वाहा. अर्वाच्य दिशा के लिए स्वाहा. उवाच्य दिशा के लिए स्वाहा. ऊर्वाच्य दिशा के लिए स्वाहा. उवाच्य दिशा के लिए स्वाहा. (२४)

अद्भ्यः स्वाहा वार्भ्यः स्वाहोदकाय स्वाहा तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा स्रवन्तीभ्यः स्वाहा स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा कूप्याभ्यः स्वाहा सूद्याभ्यः स्वाहा धार्याभ्यः स्वाहार्णवाय स्वाहा

समुद्राय स्वाहा सरिराय स्वाहा.. (२५)

जलों के लिए स्वाहा. वारि के लिए स्वाहा. उदक के लिए स्वाहा. स्थिर जलों के लिए स्वाहा. प्रवाहितों के लिए स्वाहा. बहते जलों के लिए स्वाहा. कूप जल के लिए स्वाहा. सागर जलों के लिए स्वाहा. धारण योग्य जल के लिए स्वाहा. समुद्र जलों के लिए स्वाहा. सरोवर के लिए स्वाहा. (२५)

वाताय स्वाहा धूमाय स्वाहाभ्राय स्वाहा मेघाय स्वाहा विद्योतमानाय स्वाहा स्तनयते स्वाहावस्फूर्जते स्वाहा वर्षते स्वाहाववर्षते स्वाहोग्रं वर्षते स्वाहा शीघ्रं वर्षते स्वाहोद्गृह्णते स्वाहोद्गृहीताय स्वाहा प्रुष्णते स्वाहा शीकायते स्वाहा प्रुष्वाभ्यः स्वाहा ह्रादुनीभ्यः स्वाहा नीहाराय स्वाहा.. (२६)

वायु के लिए स्वाहा. धुएं के लिए स्वाहा. विद्युत् वाले के लिए स्वाहा. गर्जने वाले के लिए स्वाहा. वर्षक के लिए स्वाहा. कमवर्षक के लिए स्वाहा. अति वर्षक के लिए स्वाहा. शीघ्र वर्षक के लिए स्वाहा. ऊपर उठने वाले के लिए स्वाहा. ऊपर से जलग्राही के लिए स्वाहा. बूंदाबांदी के लिए स्वाहा. घनघोर वर्षक के लिए स्वाहा. गड़गड़ाहट वाले के लिए स्वाहा. कोहरे वाले के लिए स्वाहा. सभी मेघों के लिए स्वाहा. (२६)

अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहेन्द्राय स्वाहा पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवेस्वाहा दिग्भ्यः स्वाहाशाभ्यः स्वाहोर्व्यै दिशे स्वाहार्वाच्यै दिशे स्वाहा.. (२७)

अग्नि के लिए स्वाहा. सोम के लिए स्वाहा. इंद्र के लिए स्वाहा. पृथ्वी के लिए स्वाहा. अंतरिक्ष के लिए स्वाहा. स्वर्ग के लिए स्वाहा. दिशाओं के लिए स्वाहा. उपदिशा के लिए स्वाहा. अपर दिशाओं के लिए स्वाहा. नीच दिशा के लिए स्वाहा. (२७)

नक्षत्रेभ्यः स्वाहा नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाहोरात्रेभ्यः स्वाहार्धमासेभ्यः स्वाहा मासेभ्यः स्वाहा ऋतुभ्यः स्वाहार्तवेभ्यः स्वाहा संवत्सराय स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या ँ स्वाहा चन्द्राय स्वाहा सूर्याय स्वाहा रश्मिभ्यः स्वाहा वसुभ्यः स्वाहा रुद्रेभ्यः स्वाहादित्येभ्यः स्वाहा मरुद्भ्यः स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा मूलेभ्यः स्वाहा शाखाभ्यः स्वाहा वनस्पतिभ्यः स्वाहा पुष्पेभ्यः स्वाहा फलेभ्यः स्वाहौषधीभ्यः स्वाहा.. (२८)

नक्षत्रों के लिए स्वाहा. नक्षत्रों से संबंधित देवताओं के लिए स्वाहा. दिनरात के लिए स्वाहा. अर्द्धमास के लिए स्वाहा. मास के लिए स्वाहा. ऋतुमास के लिए स्वाहा. ऋतु से उत्पन्नों के लिए स्वाहा. वर्ष के लिए स्वाहा. स्वर्ग के लिए स्वाहा. पृथ्वी के लिए स्वाहा. चंद्र के लिए स्वाहा. सूर्य के लिए स्वाहा. किरणों के लिए स्वाहा. वसुओं के लिए स्वाहा. रुद्रों के लिए स्वाहा. आदित्यों के लिए स्वाहा. मरुतों के लिए स्वाहा. सभी देवों के लिए स्वाहा. शाखाओं के लिए स्वाहा.

वनस्पतियों के लिए स्वाहा. पुष्पों के लिए स्वाहा. फलों के लिए स्वाहा. ओषधियों के लिए स्वाहा. (२८)

पृथिव्यै स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्य: स्वाहाद्भ्य: स्वाहौषधीभ्य: स्वाहा वनस्पतिभ्य: स्वाहा परिप्लवेभ्य: स्वाहा चराचरेभ्य: स्वाहा सरीसृपेभ्य: स्वाहा.. (२९)

पृथ्वी के लिए स्वाहा. अंतरिक्ष के लिए स्वाहा. स्वर्ग के लिए स्वाहा. सूर्य के लिए स्वाहा. चंद्र के लिए स्वाहा. नक्षत्रों के लिए स्वाहा. जलों के लिए स्वाहा. ओषधियों के लिए स्वाहा. वनस्पतियों के लिए स्वाहा. चराचर के लिए स्वाहा. रेंगने और रपटने वालों के लिए स्वाहा. (२९)

असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहाभिभुवे स्वाहाधिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा स ꣳ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिव पतयते स्वाहा.. (३०)

असव के लिए स्वाहा. वसव के लिए स्वाहा. विभु के लिए स्वाहा. विवस्वत (सूर्य) के लिए स्वाहा. गणश्री के लिए स्वाहा. गणपति के लिए स्वाहा. अभिभु के लिए स्वाहा. अधिपति के लिए स्वाहा. सामर्थ्यवान के लिए स्वाहा. सर्प के लिए स्वाहा. चंद्र के लिए स्वाहा. ज्योतिवान के लिए स्वाहा. अधिमास के देव के लिए स्वाहा. स्वर्गलोक के पालक के लिए स्वाहा. (३०)

मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोर्जाय स्वाहा सहसे स्वाहा सहस्याय स्वाहा तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहा ꣳ हसस्पतये स्वाहा.. (३१)

चैत मास के लिए स्वाहा. वैशाख मास के लिए स्वाहा. ज्येष्ठ मास के लिए स्वाहा. आषाढ़ मास के लिए स्वाहा. सावन मास के लिए स्वाहा. भादों मास के लिए स्वाहा. आश्विन मास के लिए स्वाहा. कार्तिक मास के लिए स्वाहा. अगहन मास के लिए स्वाहा. पौष मास के लिए स्वाहा. फाल्गुन मास के लिए स्वाहा. अधिमास के लिए संतुलन हेतु स्वाहा. (३१)

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहापिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा स्व: स्वाहा मूर्ध्ने स्वाहा व्यश्नुविने स्वाहान्त्याय स्वाहान्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनस्य पतये स्वाहाधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा.. (३२)

अन्न के लिए स्वाहा. उत्पादक के लिए स्वाहा. जल में उत्पन्न अन्न के लिए स्वाहा. यज्ञ के लिए स्वाहा. मूर्धा में उत्पन्न अन्न के लिए स्वाहा. व्यापक अन्न के लिए स्वाहा. अंतिम उत्पन्न अन्न के लिए स्वाहा. भुवन के लिए स्वाहा. भुवनपति के लिए स्वाहा. अधिपति के लिए स्वाहा. प्रजापति के लिए स्वाहा. (३२)

आयुर्यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहापानो यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा व्यानो यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहोदानो यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा समानो यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा चक्षुर्यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा वाग्यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा मनो यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहात्मा यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा ब्रह्मा यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा ज्योतिर्यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा स्वर्यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा पृष्ठं यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा यज्ञो यज्ञेन कल्पता ꣳ स्वाहा.. (३३)

यज्ञ से आयु वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से प्राण वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से अपान वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से व्यान वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से उदान वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से समान वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से चक्षु बल वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से कर्ण बल वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से वाणी बल वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से मन बल वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से आत्म बल वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से ब्रह्म बल वृद्धि के लिए स्वाहा. ज्योतिर्मय यज्ञ के लिए स्वाहा. स्वयं प्रकाशित यज्ञ के लिए स्वाहा. यज्ञ से यज्ञ वृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से अग्रवृद्धि के लिए स्वाहा. यज्ञ से तृण वृद्धि के लिए स्वाहा. (३३)

एकस्मै स्वाहा द्वाभ्या ꣳ स्वाहा शताय स्वाहैकशताय स्वाहा व्युष्ट्यै स्वाहा स्वर्गाय स्वाहा.. (३४)

एक के लिए स्वाहा. दो के लिए स्वाहा. सौ के लिए स्वाहा. एक सौ के लिए स्वाहा. व्यष्टि के लिए स्वाहा. स्वर्ग के लिए स्वाहा. (३४)

तेईसवां अध्याय

हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक ऽ आसीत्.
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (१)

परमात्मा सोने (हिरण्य) के गर्भ में रहे. वे सब से पहले उत्पन्न हुए. वे सब को उत्पन्न करने वाले व सब के एकमात्र पालक हैं. उन्होंने पृथ्वी व उत्तम स्वर्ग को धारण किया है. परमात्मा के अलावा अन्य किस देव के लिए हवि का विधान करें. (१)

उपयामगृहीतोसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनि: सूर्यस्ते महिमा.
यस्ते ऽ हन्त्संवत्सरे महिमा सम्बभूव यस्ते वायावन्तरिक्षे महिमा सम्बभूव यस्ते दिवि सूर्ये महिमा सम्बभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये स्वाहा देवेभ्य:.. (२)

हवि को प्रजापति देव हेतु उपयाम में ग्रहण किया है. यह आप का इष्ट स्थान है. हम आप को इस में ग्रहण करते हैं. यह आप का मूल स्थान है. सूर्य आप की महिमा है. दिन आप की महिमा का सूचक है. संवत्सर आप की महिमा का सूचक है. वायु आप की महिमा के सूचक हैं. अंतरिक्ष लोक आप की महिमा का सूचक है. स्वर्गलोक आप की महिमा का सूचक है. महिमाशाली प्रजापति के लिए स्वाहा. सब देवगणों के लिए स्वाहा. (२)

य: प्राणतो निमिषतो महित्वैक ऽ इद्राजा जगतो बभूव.
य ऽ ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पद: कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (३)

जो परमात्मा प्राण से जगत् के अधिष्ठाता हैं, जो परमात्मा जल से जगत् के अधिष्ठाता हैं, जो परमात्मा महिमाशाली हैं, जिन परमात्मा से महिमाशाली जग उत्पन्न हुआ, जो परमात्मा दोपायों व चौपायों के स्वामी हैं उन के अलावा हम किस देव के लिए हवि का विधान करें. (३)

उपयामगृहीतोसि प्रजापतये त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिश्चन्द्रमास्ते महिमा.
यस्ते रात्रौ संवत्सरे महिमा सम्बभूव यस्ते पृथिव्यामग्नौ महिमा सम्बभूव यस्ते नक्षत्रेषु चन्द्रमसि महिमा सम्बभूव तस्मै ते महिम्ने प्रजापतये देवेभ्य: स्वाहा.. (४)

हवि को प्रजापति के लिए उपयाम में ग्रहण किया गया है. आप प्रजापति की

इष्ट है. इसीलिए आप को ग्रहण किया गया है. यही आप का मूल स्थान है. चंद्रमा आप की महिमा है. रात्रि आप की महिमा है. संवत्सर आप की महिमा है. पृथ्वी आप की महिमा है. अग्नि आप की महिमा है. नक्षत्रों में जो महिमा है, वह आप की है. चंद्रमा में जो महिमा है, वह आप की है. आप की उस महिमा के लिए स्वाहा. प्रजापति के लिए स्वाहा. देवगणों के लिए स्वाहा. (४)

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः. रोचन्ते रोचना दिवि.. (५)

सूर्य जैसे स्वर्गलोक को प्रकाशित करते हैं और जैसे अपने चारों ओर के ग्रह को जोड़ते हैं, वैसे ही यजमान यज्ञ के सारे साधनों को जोड़ते हैं. (५)

युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे. शोणा धृष्णू नृवाहसा.. (६)

मनुष्य के वाहन में घोड़े जोतने की तरह हवि ले जाने हेतु देवरथ में कामना पूरक हरि नामक घोड़े को जोतिए तथा धृष्णु नामक घोड़े को रथ में जोतने की कृपा कीजिए. (६)

यद्वातो अपो अगनीगन्प्रियामिन्द्रस्य तन्वम्.
एत ꣳ स्तोतरनेन पथा पुनरश्वमावर्त्तयासि नः.. (७)

जब यह अश्व, जो वायु के समान वेगवान है, इंद्र देव के प्रिय जल को प्राप्त होता है, तब यजमानों को चाहिए कि वे अपने लिए उसी मार्ग से उस अश्व को लौटा दें. (७)

वसवस्त्वाञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसा रुद्रास्त्वाञ्जन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसा दित्यास्त्वाञ्जन्तु जागतेन छन्दसा.
भूर्भुवःस्वर्लाजी ३ ञ्छाची ३ न्यव्ये गव्य ऽ एतदन्नमत्त देवा ऽ एतदन्नमद्धि प्रजापते.. (८)

हे यज्ञ रूपी अश्व! वसुगण गायत्री छंद से आप को आंजते हैं. हे यज्ञ रूपी अश्व! रुद्रगण त्रिष्टुभ् छंद से आप को आंजते हैं. हे यज्ञ रूपी अश्व! आदित्यगण जगती छंद से आप को आंजते हैं. भूलोक में स्थित देव से अनुरोध है कि वे इस हवि को ग्रहण करने की कृपा करें. अंतरिक्ष में स्थित देव से अनुरोध है कि वे इस हवि को ग्रहण करने की कृपा करें. स्वर्गलोक में स्थित देव से अनुरोध है कि वे इस हवि को ग्रहण करने की कृपा करें. प्रजापति में स्थित देव से अनुरोध है कि वे इस हवि को ग्रहण करने की कृपा करें. देवगण में स्थित देव से अनुरोध है कि वे इस हवि को ग्रहण करने की कृपा करें. (८)

कः स्विदेकाकी चरति क ऽ उ स्विज्जायते पुनः.
कि ꣳ स्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत्.. (९)

कृपया बताइए कि कौन अकेला विचरता है? कौन बारबार उत्पन्न होता है? शीत की ओषधि क्या है? बीज बोने के लिए कौन सा क्षेत्र सब से बड़ा है? (९)

सूर्य ऽ एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः.
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्.. (१०)

सूर्य अकेले विचरते हैं. चंद्रमा बारबार उत्पन्न होता है. अग्नि शीत की ओषधि है. भूमि बीज बोने का सब से विशाल क्षेत्र है. (१०)

का स्विदासीत्पूर्वचित्तिः कि ॐ स्विदासीद् बृहद्वयः.
का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला.. (११)

यजमान पूछते हैं कि सब से पहले किस का चिंतन करना चाहिए? सब से बड़ा कौन है? सब से बड़ा रक्षक एवं शोभाधारक कौन है? सब के रूपों को निगल जाने वाला कौन है? (११)

द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्व ऽ आसीद् बृहद्वयः.
अविरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला.. (१२)

स्वर्गलोक के बारे में सब से पहले चिंतन करना चाहिए. अश्व सब से विशाल है. पृथ्वी सब से बड़ी रक्षिका है. पृथ्वी सब से ज्यादा शोभा धारने वाली है. रात्रि अपने अंधेरे में सब को छिपा कर रखने वाली है. (१२)

वायुष्ट्वा पचतैरवत्वसितग्रीवश्छागैर्न्यग्रोधश्चमसैः शल्मलिर्वृद्ध्या.
एष स्य राथ्यो वृषा पड्भिश्चतुर्भिरेदगन्ब्रह्मा ऽ कृष्णश्च नोवतु नमोग्नये.. (१३)

वायु हमें परिपक्वता प्रदान करे. वायु काली गरदन वाली अग्नि दे. वटवृक्ष चमस प्रदान करे. शाल्मली वृक्ष (सेमल) बढ़ोतरी प्रदान करे. यह शक्तिमान, सर्वव्यापक, आनंददायक है. अग्नि चारों चरणों में जीवों को पोसें व अग्नि आगमन की कृपा करें. बिना काले यानी सफेद अश्व हमारी रक्षा करने की कृपा करें. अग्नि के लिए नमस्कार. (१३)

स ॐ शितो रश्मिना रथः स ॐ शितो रश्मिना हयः.
स ॐ शितो अप्स्वप्सुजा ब्रह्मा सोमपुरोगवः.. (१४)

रश्मियों से यज्ञ रूपी रथ की प्रशंसा होती है. किरण रूपी घोड़ों से यज्ञ रूपी रथ की प्रशंसा होती है. जल में उत्पन्न जल में शोभा पाते हैं. ब्रह्मा की प्रशंसा सोम को आगे करने के कारण होती है. (१४)

स्वयं वाजिँस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व.
महिमा तेन्येन न सन्नशे.. (१५)

हे यज्ञ ऊर्जा! आप स्वयं बलवान हैं. आप अपने शरीर को फलीभूत कीजिए. आप स्वयं यज्ञ से विस्तृत होइए. आप पदार्थों से जुड़िए. उन्हें प्राणवान बनाने की कृपा कीजिए. आप की महिमा कभी भी नष्ट न हो. (१५)

न वा उ एतन्म्रियसे न रिष्यसि देवाँ २ इदेषि पथिभिः सुगेभिः.
यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र त्वा देवः सविता दधातु.. (१६)

परम शक्ति न मरती है, न क्षीण होती है. वह देवताओं के मार्ग से जाती है. वह सुगम पथ से वहां पहुंचती है, जहां अच्छे कर्म करने वाले लोग रहते है. वहां सविता देव स्वयं इसे धारण करते हैं. (१६)

अग्निः पशुरासीत्तेनायजन्त स एतँल्लोकमजयद्यस्मिन्नग्निः स ते लोको भविष्यति तं जेष्यसि पिबैता ऽ अपः.
वायुः पशुरासीत्तेनायजन्त स एतँल्लोकमजयद्यस्मिन्वायुः स ते लोको भविष्यति तं जेष्यसि पिबैता ऽ अपः.
सूर्यः पशुरासीत्तेनायजन्त स एतँल्लोकमजयद्यस्मिन्त्सूर्यः स ते लोको भविष्यति तं जेष्यसि पिबैता ऽ अपः.. (१७)

अग्नि रूपी पशु से देवताओं ने यजन (यज्ञ) किया. जिस में अग्नि है, वही इस लोक में जीतता है और जीतेगा. यजमान इस ज्ञान को अपनाएं. वायु रूपी पशु से देवताओं ने यज्ञ किया. जिस में वायु प्रबल है, वह जीतता है और जीतेगा. यजमान इस ज्ञान को अपनाएं. सूर्य रूपी पशु से देवताओं ने यज्ञ किया. जिस में सूर्य तत्त्व की प्रधानता होती है, वह जीतता है और जीतेगा. यजमान इस ज्ञान को अपनाएं. (१७)

प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा.
अम्बे अम्बिकेम्बालिके न मा नयति कश्चन.
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्.. (१८)

प्राण के लिए स्वाहा. अपान के लिए स्वाहा. प्राण के लिए स्वाहा. हे अंबे! हे अंबिके! आप हमें किसी अप्रिय स्थिति में न ले जाएं. हे अंबालिके! आप हमें किसी अप्रिय स्थिति में न ले जाएं. ठंडी अग्नि कांपील पेड़ की समिधाओं पर पड़ी है. ठंडी अग्नि श्रेष्ठ हवियों के साथ ठंडी पड़ी हुई है. (१८)

गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसो मम.
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्.. (१९)

आप गणों के स्वामी हैं. हम आप गणपति का आह्वान करते हैं. आप प्रियों के बीच प्रिय हैं. हम आप प्रियपति का आह्वान करते हैं. आप निधियों के बीच प्रिय हैं.

हम निधिपति का आह्वान करते हैं. जगत् को आप ने बसाया है. आप हमारे होइए. आप संसार के गर्भधारी हैं. हम आप की इस गर्भधारण क्षमता को जानें. (१९)

ता ऽ उभौ चतुर: पद: संप्रसारयाव स्वर्गे लोके प्रोर्णुवाथां वृषा वाजी रेतोधा रेतो दधातु.. (२०)

यज्ञ शक्ति और देव शक्ति दोनों से उम्मीद है कि वे अपने चारों पैरों का प्रसार करने की कृपा करें. दोनों शक्तियां स्वर्गलोक एवं पृथ्वीलोक में व्याप्त करने की कृपा करें. दोनों शक्तियां बलवान हैं. वे हमें बलशाली व वीर्यवान बनाएं. हमारे लिए शक्ति और शौर्य धारण करें. (२०)

उत्सक्थ्या अव गुदं धेहि समञ्जिं चारया वृषन्.
य स्त्रीणां जीवभोजन:.. (२१)

हे परम शक्ति! आप दुष्टों का दमन करने वाले व शक्तिमान हैं. जो व्यक्ति स्त्रियों से अपनी आजीविका कमाते हैं, अपना भोजन पाते हैं, आप उन को प्रताड़ना दीजिए. (२१)

यकासकौ शकुन्तिकाहलगिति वञ्चति.
आहन्ति गभे पसो निगल्गलीति धारका.. (२२)

यह जल पक्षी की भांति प्रसन्नतादायी निनाद (आवाज) करता है. यह जल तेजोमय है. यह तेजस्वी जल कलकल निनाद करता है और शक्तिधारी है. (२२)

यकोसकौ शकुन्तक ऽ आहलगिति वञ्चति.
विवक्षत ऽ इव ते मुखमध्वर्यो मा नस्त्वमभि भाषथा:.. (२३)

उपर्युक्त तेज के प्रभाव से बोलने के इच्छुक मुंह पक्षी की तरह निरंतर शब्द करते हैं. उन से निवेदन है कि वे यज्ञ के बारे में निरर्थक बात न करें. (२३)

माता च ते पिता च ते ऽ ग्रं वृक्षस्य रोहत:.
प्रतिलामीति ते पिता गभे मुष्टिमत ꣳ सयत्.. (२४)

हे यजमान! आप के माता और पिता वृक्ष के आगे के भाग से ऊर्ध्व गति पाते हैं. ऊर्ध्वलोक से आप के पूर्वज बादल से वर्षा कर के शोभा बढ़ाते हुए ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो वे कहते हैं, हम आप से प्रसन्न हैं. (२४)

माता च ते पिता च तेग्रे वृक्षस्य क्रीडत:.
विवक्षत ऽ इव ते मुखं ब्रह्मन्मा त्वं वदो बहु.. (२५)

आप के माता और पिता वृक्ष के आगे के भाग पर खेलते हैं. आप बोलने के अधिक इच्छुक प्रतीत होते हैं. आप अधिक मत बोलें. (२५)

ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रापय गिरौ भार ंꣳ हरन्निव.
अथास्यै मध्यमेधता ंꣳ शीते वाते पुनन्निव.. (२६)

हे प्रजापति! आप इस राष्ट्र को ऊंचाइयों तक पहुंचाइए. हे प्रजापति! जैसे किसी भार को पर्वत पर पहुंचा कर (लोग) प्रसन्न होते हैं, उसी प्रकार हम राष्ट्र को ऊंचाई पर पहुंचा कर प्रसन्न होते हैं. जैसे ठंडी हवाओं के बीच से किसान अन्न को साफ करते हैं, उसी प्रकार प्रजापति की कृपा से हम राष्ट्र को पवित्र करें. (२६)

ऊर्ध्वमेनमुच्छ्र्यतादि्गिरौ भार ंꣳ हरन्निव.
अथास्य मध्यमेजतु शीते वाते पुनन्निव.. (२७)

हे प्रजापति! आप इस राष्ट्र को ऊंचाइयों तक पहुंचाइए. हे प्रजापति! जैसे भार को पर्वत पर पहुंचा कर प्रसन्न होते हैं (लोग), उसी प्रकार हम राष्ट्र को ऊंचाई पर पहुंचा कर प्रसन्न होते हैं. जैसे ठंडी हवाओं के बीच से किसान अन्न को साफ करते हैं, उसी प्रकार प्रजापति की कृपा से हम राष्ट्र को पवित्र करें. (२७)

यदस्या ऽ अ ंꣳ हुमेद्याः कृधु स्थूलमुपातसत्.
मुष्काविदस्या ऽ एजतो गोशफे शकुलाविव.. (२८)

यह यज्ञाग्नि पाप भेदक व दुष्ट नाशक है. इस यज्ञाग्नि की स्थूल पृथ्वी पर स्थापना हो जाती है तब ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि धर्म रूपी गाय के चरणों में खुरों की तरह सुशोभित होते हैं. (२८)

यद्देवासो ललामगुं प्रविष्टीमिनमाविषुः.
सक्थ्ना देदिश्यते नारी सत्यस्याक्षिभुवो यथा.. (२९)

जब ऐसी ही (यज्ञ जैसी) परमानंददायी गतिविधि संपन्न होती है तो उन्हें उस परम सत्य की वैसे ही अनुभूति हो जाती है, जैसे स्त्री के अंगों को देख कर स्त्री की पहचान हो जाती है. (२९)

यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं पशु मन्यते.
शूद्रा यदर्यजारा न पोषाय धनायति.. (३०)

जब हिरण खेत में घुस कर जौ (अनाज) खा जाता है तो किसान हिरण की पुष्टता से खुश नहीं होते बल्कि अपनी हानि से दुःखी ही होते हैं. वैसे ही कोई शूद्रा जार से ज्ञानधन पाती है तो उस का पति उस के इस तरह ज्ञान संपन्न होने से प्रसन्न नहीं होता है. (३०)

यद्धरिणो यवमत्ति न पुष्टं बहु मन्यते.
शूद्रो यदर्यायै जारो न पोषमनु मन्यते.. (३१)

जब हिरण खेत में घुस कर जौ (अनाज) खा जाता है तो किसान हिरण की

पुष्टता से खुश नहीं होते बल्कि अपनी हानि से दु:खी ही होते हैं. वैसे ही कोई शूद्रा आर्यजन से ज्ञान पाती है तो उस का पति उस की इस ज्ञान प्राप्ति से ज्ञान पोषण को नहीं मानता. (३१)

दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः.
सुरभि नो मुखा करत्प्र ण ऽ आयू ंꣳ षि तारिषत्.. (३२)

हम शक्तिशाली यज्ञ की अग्नि को विधिविधानपूर्वक संस्कार युक्त बनाते हैं. यज्ञ देव की कृपा हमारे मुखों को सुगंधमय व हमें आयुष्मान बनाए. यज्ञ देव की कृपा हमारा तारण करें. (३२)

गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह.
बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिः शम्यन्तु त्वा.. (३३)

हे यज्ञाग्नि! हम गायत्री, त्रिष्टुप्, जगती, अनुष्टुप्, पंक्ति, बृहती, उष्णिक्, ककुप् छंद व सूचियों से आप को शांत करते हैं. आप शांत होने की कृपा कीजिए. (३३)

द्विपदा याश्चतुष्पदास्त्रिपदा याश्च षट्पदाः.
विच्छन्दा याश्च सच्छन्दाः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा.. (३४)

हे यज्ञाग्नि! जो दो, तीन, चार, छह पद वाले, छंद छंदहीन व छंद छंदयुक्त हैं, वे सूचियों द्वारा आप को शांति प्रदान करें. (३४)

महानाम्न्यो रेवत्यो विश्वा आशाः प्रभूवरीः.
मैघीर्विद्युतो वाचः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा.. (३५)

हे यज्ञाग्नि! सब प्राणियों को धारण करने वाली ऋचाएं, समस्त दिशाएं, 'महानाम्नी' देववाणियां, रेवती नमक ऋचाएं, बादलों की बिजली और श्रेष्ठ वाणियां सूचियों द्वारा आप को शांति प्रदान करें. (३५)

नार्यस्ते पत्न्यो लोम विचिन्वन्तु मनीषया.
देवानां पत्न्यो दिशः सूचीभिः शम्यन्तु त्वा.. (३६)

हे यज्ञाग्नि! यजमान की पत्नियां नेतृत्व करने में समर्थ हैं. हे यजमान! वे नारियां आप के लोमों को बुद्धिपूर्वक चुन कर अलग करने की कृपा करें. देवगणों की पत्नियां व दिशाएं सूची से आप को शांत करने की कृपा करें. (३६)

रजता हरिणीः सीसा युजो युज्यन्ते कर्मभिः.
अश्वस्य वाजिनस्त्वचि सिमाः शम्यन्तु शम्यन्तीः.. (३७)

चांदी, सीसा और सोना विधिविधानपूर्वक यज्ञ में जोड़ा जाता है. वे इस यज्ञ

की सम्यक् रूप से रक्षा करें. वे इस यज्ञ की अग्नि को सम्यक् रूप से शांत करने की कृपा करें. (३७)

कुविदङ्गयवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय.
इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम ऽ उक्तिं यजन्ति.. (३८)

हे सोम! यवमान यानी जौ से पूरी तरह भरी हुई फसल को हम सब बहुत सोचविचार कर सावधानीपूर्वक काटते हैं. हम दया से परिपूर्ण आप को कुश का आसन भेंट करते हैं. आप यहां आने व भोजन करने की कृपा कीजिए. ये यजमान कुश के आसन पर बैठ कर नमस्कारपूर्वक आप के लिए यज्ञ कर रहे हैं. (३८)

कस्त्वा छ्यति कस्त्वा विशास्ति कस्ते गात्राणि शम्यति.
क ऽ उ ते शमिता कविः.. (३९)

कौन आप को आजाद करता है? कौन आप को आदेश (उपदेश) देता है? कौन आप को शांत करता है? कौन आप को सुख देता है? विद्वान् (कवि) परमात्मा ही यह सब करते हैं. (३९)

ऋतवस्त ऽ ऋतुथा पर्व शमितारो वि शासतु.
संवत्सरस्य तेजसा शमीभिः शम्यन्तु त्वा.. (४०)

ऋतुएं ऋतु के अनुसार सुखदायी हों. पर्व सुखद व अनुशासन में रहें. संवत्सर के तेज से सुख मिले. शांतिदायी कर्म आप के लिए सुखद हों. (४०)

अर्धमासाः परूꣳषि ते मासा ऽ आ च्छ्यन्तु शम्यन्तः.
अहोरात्राणि मरुतो विलिष्टꣳ सूदयन्तु ते.. (४१)

हे परम पुरुष! आधे माह पक्ष और मास से आयु क्षीण होती है. मरुद्गण दिनरात आप के दुःख दूर करने की कृपा करें. (४१)

दैव्या अध्वर्यवस्त्वा च्छ्यतु वि च शासतु.
गात्राणि पर्वशस्ते सिमाः कृण्वन्तु शम्यन्तीः.. (४२)

इस यज्ञ के अध्वर्यु (पुरोहित) आप के दोषों का क्षय करें व आप के अनुशासन हेतु मार्गदर्शन करें. इस यज्ञ के अध्वर्यु आप के शरीर उस के जोड़ों को शक्तिमान बनाने की कृपा करें. (४२)

द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं वायुश्छिद्रं पृणातु ते.
सूर्यस्ते नक्षत्रैः सह लोकं कृणोतु साधुया.. (४३)

हे परमात्मा! आप पृथ्वीलोक (यजमान) को परिपूर्ण बनाने की कृपा करें. आप अंतरिक्षलोक के दोष दूर करें. आप अंतरिक्षलोक को परिपूर्ण बनाने की कृपा

करें. आप वायुलोक के दोष दूर करने की कृपा करें. हे परमात्मा! आप वायुलोक को परिपूर्ण बनाने की कृपा करें. सूर्य नक्षत्रों के साथ इस लोक को सज्जनता से पूरित करने की कृपा करें. (४३)

शं ते परेभ्यो गात्रेभ्य: शमस्त्ववरेभ्य:.
शमस्थभ्यो मज्जभ्य: शम्वस्तु तन्वै तव.. (४४)

हे परमात्मा! आप की कृपा से हमारे शरीर के अंग विकारहीन हो जाएं. आप की कृपा से हमारे शरीर की हड्डियां व मज्जा विकारहीन हो जाएं. आप की कृपा से हमारे सुखों का विस्तार हो जाए. (४४)

क: स्विदेकाकी चरति कऽ उ स्विज्जायते पुन:.
कि ꣳ स्विद्धिमस्य भेषजं किम्वावपनं महत्.. (४५)

कौन अकेला विचरता है? कौन बारबार उत्पन्न होता है? हिम की ओषधि कौन सी है? अच्छी तरह बीज बोने का विशाल स्थान कौन सा है? (४५)

सूर्यऽएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुन:.
अग्निर्हिमस्य भेषजं भूमिरावपनं महत्.. (४६)

सूर्य अकेले विचरते हैं. चंद्र देव बारबार उत्पन्न होते हैं. हिम की ओषधि अग्नि है. पृथ्वी बीज बोने का विशाल स्थान है. (४६)

कि ꣳ स्वित्सूर्यसमं ज्योति: कि ꣳ समुद्रसम ꣳ सर:.
कि ꣳ स्वित्पृथिव्यै वर्षीय: कस्य मात्रा न विद्यते.. (४७)

सूर्य के समान ज्योति कौन सी है? समुद्र के समान तालाब कौन सा है? पृथ्वी देवी से भी अधिक वर्षों वाला (पुराना) कौन है? किस की कोई मात्रा (परिमाण) नहीं है? (४७)

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौ: समुद्रसम ꣳ सर:.
इन्द्र: पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते.. (४८)

ब्रह्म देव की ज्योति सूर्य की ज्योति के समान है. स्वर्गलोक समुद्र के समान तालाब है. इंद्र देव पृथ्वी देवी से भी पुराने हैं. गौ माता का कोई परिमाण नहीं है. (४८)

पृच्छामि त्वा चितये देवसख यदि त्वमत्र मनसा जगन्थ.
येषु विष्णुस्त्रिषु पदेष्वेष्टस्तेषु विश्वं भुवनमा विवेशाँ ३.. (४९)

हे देवसखाओ! हम जिज्ञासु हैं. हम मन से आप से पूछते हैं कि क्या विष्णु ने अपने तीन पैरों में विश्व के सभी भुवनों को समा लिया? क्या तीनों लोक विष्णु

के पैरों में (की परिधि में) समा गए. यदि आप इस बात को जानते हैं तो हमें बताने की कृपा कीजिए. (४९)

अपि तेषु त्रिषु पदेष्वस्मि येषु विश्वं भुवनमा विवेश.
सद्य: पर्येमि पृथिवीमुत द्यामेकेनाङ्गेन दिवो अस्य पृष्ठम्.. (५०)

जिन में सारे विश्व के भुवन समा गए, उन तीनों पैरों में भी मैं ही हूं. पृथ्वीलोक के ऊपर जो लोक है, उसे मैं इस एक मन रूपी अंग से जान जाता हूं. स्वर्गलोक के आधार पर लोक है. उसे मैं इस एक मन रूपी अंग से जान जाता हूं. (५०)

केष्वन्त: पुरुष ऽ आ विवेश कान्यन्त: पुरुषे अर्पितानि.
एतद्ब्रह्मन्नुप वल्हामसि त्वा किं स्विन्न: प्रति वोचास्यत्र.. (५१)

किस के अंतस्तल में परम पुरुष आ कर रमण करता है? परम पुरुष के अंतस्तल में किन वस्तुओं को अर्पित किया जाता है? हे ब्राह्मण! हम यजमान यह जानने के इच्छुक हैं. आप कृपया हमारी इन जिज्ञासाओं को वाणी प्रदान करने की कृपा कीजिए. (५१)

पञ्चस्वन्त: पुरुष ऽ आ विवेश तान्यन्त: पुरुषे अर्पितानि.
एतत्त्वात्र प्रतिमन्वानो अस्मि न मायया भवस्युत्तरो मत्.. (५२)

आप यह मानते हैं कि आप यह नहीं जानते. अत: मैं माया से अर्थात् आप को मायापूर्वक प्रत्युत्तर देता हूं कि परम पुरुष पांच महाभूतों व पांच तन्मात्राओं में रमण करता है. परम पुरुष को पांच महाभूत व तन्मात्राएं अर्पित हैं. (५२)

का स्विदासीत्पूर्वचित्ति: किं स्विदासीद् बृहद्वय:.
का स्विदासीत्पिलिप्पिला का स्विदासीत्पिशङ्गिला.. (५३)

हे अध्वर्युगण! सब से पहले क्या जानना चाहिए? सब से बड़ा पक्षी कौन सा है? सब से अद्‌भुत रूप वाला कौन है? वह कौन है, जो सब रूपों को निगल जाता है. (५३)

द्यौरासीत्पूर्वचित्तिरश्व ऽ आसीद् बृहद्वय:.
अविरासीत्पिलिप्पिला रात्रिरासीत्पिशङ्गिला.. (५४)

सब से पहले स्वर्गलोक को जानना चाहिए. सब से बड़ा पक्षी अग्नि रूपी अश्व है. पृथ्वी सब से अधिक रूपों को निगलने वाली है. रात्रि सभी रूपों को निगल जाने वाली होती है. (५४)

का ईमरे पिशङ्गिला का ईं कुरुपिशङ्गिला.
क ऽ ईमास्कन्दमर्षति क ऽ ईं पन्थां वि सर्पति.. (५५)

कौन रूपों को निगल जाती है? कौन शब्द सहित सारे रूपों को निगल जाती है? कौन उछलउछल कर चलता है? कौन सरकसरक कर चलता है? (५५)

अजारे पिशङ्गिला श्वावित्कुरुपिशङ्गिला.
शश ऽ आस्कन्दमर्षत्यहि: पन्थां वि सर्पति.. (५६)

हे अध्वर्युओ! माया सब को निगलती है. वही विचित्र रूपों में शब्द को निगल जाती है. खरगोश उछलता है. विशेषतया सांप मार्ग पर सरकसरक कर चलता है. (५६)

कत्यस्य विष्ठा: कत्यक्षराणि कति होमास: कतिधा समिद्धः.
यज्ञस्य त्वा विदथा पृच्छमत्र कति होतार ऽ ऋतुशो यजन्ति.. (५७)

इस यज्ञ में कितने अन्न हैं? इस यज्ञ में कितने अक्षर हैं? होम कितने (प्रकार के) होते हैं? समिधाएं कितने (प्रकार की) होती हैं? आप यज्ञ (विद्या) को विशेष प्रकार से जानते हैं. हम आप से यह जानना चाहते हैं कि प्रत्येक ऋतु में कितने होता यज्ञ करते हैं. (५७)

षडस्य विष्ठा: शतमक्षराण्यशीतिर्होमा: समिधो ह तिस्रः.
यज्ञस्य ते विदथा प्र ब्रवीमि सप्त होतार ऽ ऋतुशो यजन्ति.. (५८)

इस यज्ञ में छह प्रकार के अन्न हैं. इस यज्ञ में सौ अक्षर हैं. अस्सी प्रकार के होम होते हैं. समिधाएं तीन प्रकार की होती हैं. प्रत्येक ऋतु में सात होता यज्ञ करते हैं. (५८)

को अस्य वेद भुवनस्य नाभिं को द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्.
क: सूर्यस्य वेद बृहतो जनित्रं को वेद चन्द्रमसं यतोजा:.. (५९)

कौन है, जो इस लोक की नाभि को जानता है? कौन है, जो स्वर्गलोक को जानता है? कौन है जो अंतरिक्षलोक को जानता है? कौन है, जो सूर्य की उत्पत्ति को जानता है? कौन है, जो चंद्रमा की उत्पत्ति को जानता है? (५९)

वेदाहमस्य भुवनस्य नाभिं वेद द्यावापृथिवी अन्तरिक्षम्.
वेद सूर्यस्य बृहतो जनित्रमथो वेद चन्द्रमसं यतोजा:.. (६०)

मैं (परमात्मा) इस लोक की नाभि को जानता हूं. मैं स्वर्गलोक को जानता हूं. मैं अंतरिक्षलोक को जानता हूं. मैं सूर्य व चंद्र देव की उत्पत्ति को जानता हूं. (६०)

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्या: पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभि:.
पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वस्य रेत: पृच्छामि वाच: परमं व्योम.. (६१)

हम यजमान पृथ्वी के परम अंत से पूछते हैं. हम यजमान लोक की नाभि से

पूछते हैं. हम यजमान आप से पूछते हैं कि घोड़ों के वीर्य का बल कौन है. हम यजमान पूछते हैं कि वाणी का परम व्योम क्या है? (६१)

इयं वेदि: परो अन्त: पृथिव्या ऽ अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:.
अय ꣳ सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाच: परमं व्योम.. (६२)

यह वेदी पृथ्वी का परम अंत है. यह यज्ञ की नाभि है. यह सोम अश्व के वीर्य का बल है. ब्रह्मा वाणी का परम व्योम है. (६२)

सुभू: स्वयम्भू: प्रथमोन्तर्महत्यर्णवे.
दधे ह गर्भमृत्वियं यतो जात: प्रजापति:.. (६३)

परमात्मा स्वयं उत्पन्न होने वाले हैं. उन्होंने सारे संसार को उपजाया है. सर्वप्रथम उन्होंने महान् अर्णव (समुद्र) में गर्भ धारा. उस गर्भ से प्रजापति ब्रह्मा उत्पन्न हुए. (६३)

होता यक्षत्प्रजापति ꣳ सोमस्य महिम्न:.
जुषतां पिबतु सोम ꣳ होतर्यज.. (६४)

होता ने महिमाशाली सोम से प्रजापति का यजन किया. प्रजापति से निवेदन है कि प्रजापति उस सोमरस को पीने की कृपा करें. आप होताओं से भी निवेदन है कि आप भी ऐसा ही यजन करने की कृपा करें. (६४)

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव.
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय ꣳ स्याम पतयो रयीणाम्.. (६५)

हे प्रजापति! आप के अलावा कोई दूसरा उतने विश्व रूपों वाला नहीं हो सकता. हम जिस कामना से यज्ञ करते हैं, हमारी वह कामना पूर्ण हो. हम धनों के स्वामी हो जाएं. (६५)

चौबीसवां अध्याय

अश्वस्तूपरो गोमृगस्ते प्राजापत्या: कृष्णग्रीव ऽ आग्नेयो रराटे पुरस्तात्सारस्वती मेष्यधस्ताद्धन्वोराश्विनावधोरामौ बाह्वो: सौमापौष्ण: श्यामो नाभ्या ꣳ सौर्ययामौ श्वेतश्च कृष्णश्च पार्श्वयोस्त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ सक्थ्योर्वायव्य: श्वेत: पुच्छ ऽ इन्द्राय स्वपस्याय वेहद्वैष्णवो वामन:.. (१)

घोड़ा, नीलगाय तथा वृषभ प्रजापति देव से संबंधित हैं. काली गरदन वाला अज अग्नि से संबंधित है. सम्मुख स्थित मेष सरस्वती देवी से संबंधित है. नीचे स्थित धन अश्विनी देव से संबंधित है. काली नाभि वाला अश्व सोम और पूषा देव से संबंधित है. काले और सफेद पार्श्व भाग वाले सूर्य और यम देव से संबंधित हैं. अधिक लोम वाले त्वष्टा देव से संबंधित हैं. सफेद पूंछ वाले वायु देव से संबंधित हैं. गर्भ से द्वेष करने वाले इंद्र देव से संबंधित हैं. वामन (ठिगना) पशु विष्णु देव से संबंधित हैं. (१)

रोहितो धूम्ररोहित: कर्कन्धुरोहितस्ते सौम्या बभ्रुररुणबभ्रु: शुकबभ्रुस्ते वारुणा: शितिरन्ध्रोन्यत: शितिरन्ध्र: समन्तशितिरन्ध्रस्ते सावित्रा: शितिबाहुरन्यत: शितिबाहु: समन्तशितिबाहुस्ते बार्हस्पत्या: पृषती क्षुद्रपृषती स्थूलपृषती ता मैत्रावरुण्य:.. (२)

लाल, धुएं जैसे लाल, पके फल जैसे लाल पशु सोम से संबंधित हैं. भूरा लाल, भूरा शुक्र जैसा हरा रंग वरुण देव से संबंधित है. कहींकहीं सफेद छेद वाले और एक ओर सफेद छेद वाले पशु सविता देव से संबंधित हैं. कहींकहीं सफेद बाहु वाले पूरी तरह सफेद बाहु वाले पशु बृहस्पति देव से संबंधित हैं. छोटे चकत्ते वाले व बड़े चकत्ते वाले मित्र देव और वरुण देव से संबंधित हैं. (२)

शुद्धवाल: सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽ आश्विना: श्येत: श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽ अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपा: पार्जन्या:.. (३)

एकदम शुद्ध बालों वाले, संपूर्ण शुद्ध बालों वाले, मणि के समान बालों वाले, शुद्ध बालों वाले अश्विनीकुमारों से संबंधित हैं. सफेद रंग, सफेद आंख, लाल रंग वाले पशु रुद्र देव के लिए और पशुपति के लिए हैं. सफेद कान वाले यम के लिए

रौद्र स्वभाव वाले रुद्र देव के लिए हैं. नभ रूप वाले पर्जन्य देव से संबंधित हैं. (३)

पृश्निस्तिरश्चीनपृश्निरूर्ध्वपृश्निस्ते मारुता: फल्गूर्लोहितोर्णी पलक्षी ता: सारस्वत्य: प्लीहाकर्ण: शुण्ठाकर्णोध्यालोहकर्णस्ते त्वाष्ट्रा: कृष्णग्रीव: शितिकक्षोञ्जिसक्थस्त ऽ ऐन्द्राग्ना: कृष्णाञ्जिरल्पाञ्जिर्महाञ्जिस्त ऽ उषस्या:.. (४)

विचित्र रंग वाले तिरछी रेखा वाले और विचित्र बिंदु वाले मरुद्गण से संबंधित हैं. हलकीफुलकी लाल सफेद ऊन वाली (भेड़ें) सरस्वती देवी से संबंधित हैं. प्लीहा (के रोगी) कान वाले छोटे तथा लाल रंग के कान वाले त्वष्टा देव से संबंधित हैं. काली गरदन वाले, सफेद कांख वाले, लाल जांघों वाले इंद्र देव से संबंधित हैं. अग्नि देव से संबंधित हैं. काले, छोटे एवं बड़े धब्बे वाले पशु उषा देवी से संबंधित हैं. (४)

शिल्पा वैश्वदेव्यो रोहिण्यस्त्र्यवयो वाचेविज्ञाता अदित्यै सरूपा धात्रे वत्सतर्यो देवानां पत्नीभ्य:.. (५)

विश्व देवी के पशु चितकबरे (विचित्र) रंग के हैं. आदित्य देव के अस्त्र अवयव वाणी अज्ञात व सुरूप हैं. धारक देव हेतु हैं. देवताओं की पत्नियों के लिए ये बछियां हैं. (५)

कृष्णग्रीवा ऽ आग्नेया: शितिभ्रवो वसूना ꣳ रोहिता रुद्राणा ꣳ श्वेता ऽ अवरोकिण ऽ आदित्यानां नभोरूपा: पार्जन्या:.. (६)

काली गरदन वाले पशु अग्नि, सफेद भौंहों वाले पशु वसुदेव व लाल रंग वाले पशु रुद्रदेव से संबंधित हैं. सफेद रंग वाले पशु आदित्य देव व नभ जैसे रूप वाले पशु पर्जन्य (बादल) से संबंधित हैं. (६)

उन्नत ऽ ऋषभो वामनस्त ऽ ऐन्द्रावैष्णवा उन्नत: शितिबाहु:शितिपृष्ठस्त ऽ ऐन्द्रा बार्हस्पत्या: शुकरूपा वाजिना: कल्माषा ऽ आग्निमारुता: श्यामा: पौष्णा:.. (७)

ऊंचे, नाटे, शक्तिमान पशु इंद्र देव और विष्णु, उन्नत, सफेद बाहु व सफेद पीठ वाले पशु इंद्र देव और बृहस्पति देव तथा शुक जैसे रूप वाले पशु वाजी देव से संबंधित हैं. चितकबरे पशु अग्नि और मरुद् देव से संबंधित हैं. श्याम रंग वाले पूषा देव से संबंधित हैं. (७)

एता ऽ ऐन्द्राग्ना द्विरूपा ऽ अग्नीषोमीया वामना ऽ अनड्वाह ऽ आग्नावैष्णवा वशा मैत्रावरुण्योन्यत ऽ एन्यो मैत्र्य:.. (८)

दो रूप वाले पशु इंद्र देव और अग्नि से संबंधित हैं. दो रूप वाले पशु सोम और अग्नि व छोटे रूप वाले पशु विष्णु और अग्नि से संबंधित हैं. बांझ पशु मित्र देव और वरुण देव से व अन्य पशु मित्र देव से संबंधित हैं. (८)

कृष्णग्रीवा ऽ आग्नेया बभ्रव: सौम्या: श्वेता वायव्या ऽ अविज्ञाता ऽ अदित्यै सरूपा धात्रे वत्सतर्यो देवानां पत्नीभ्य:.. (९)

काली गरदन वाले अग्नि, भूरे रंग वाले सोम, सफेद रंग वाले वायु से संबंधित हैं. अज्ञात रंग वाले आदित्य देव से संबंधित हैं. सुंदर रंग वाले धाता देव से संबंधित हैं. बछियां देव पत्नियों से संबंधित हैं. (९)

कृष्णा भौमा धूम्रा ऽ आन्तरिक्षा बृहन्तो दिव्या: शबला वैद्युता: सिध्मास्तारका:.. (१०)

काले रंग के पशु भूमि के लिए, धुएं जैसे अंतरिक्ष हेतु विशाल पशु स्वर्ग के लिए, बहुरंगी विद्युत् हेतु और कुष्ठी पशु तारकों के लिए हैं. (१०)

धूम्रान्वसन्तायालभते श्वेतान्ग्रीष्माय कृष्णान्वर्षाभ्योरुणाञ्छरदे पृषतो हेमन्ताय पिशङ्गाञ्छिशिराय.. (११)

धुएं जैसे रंग के पशु वसंत, सफेद जैसे रंग के पशु ग्रीष्म ऋतु व काले जैसे रंग के पशु वर्षा ऋतु के लिए हैं. गुलाब जैसे रंग के पशु शरद ऋतु के लिए, चितकबरे रंग के पशु हेमंत ऋतु व काले, पीले रंग के पशु शिशिर ऋतु के लिए हैं. (११)

त्र्यवयो गायत्र्यै पञ्चावयस्त्रिष्टुभे दित्यवाहो जगत्यै त्रिवत्सा ऽ अनष्टुभे तुर्यवाह ऽ उष्णिहे.. (१२)

डेढ़ वर्ष के गायत्री हेतु, ढाई वर्ष के त्रिष्टुप् के लिए, तीन वर्ष के अनुष्टुप् हेतु, साढ़े तीन वर्ष के उष्णिक् छंद के लिए हैं. (१२)

पष्ठवाहो विराज ऽ उक्षाणो बृहत्या ऽ ऋषभा: ककुभेनड्वाह: पङ्क्त्यै धेनवोतिच्छन्दसे.. (१३)

पीछे से भार ढोने वाले विराज छंद के लिए हैं. वीर्य सिंचक बृहती छंद के लिए हैं. बलवान ककुप् छंद के लिए हैं. गाड़ी खींचने वाले पंक्ति छंद के लिए दूध देने वाले अतिच्छंद के लिए हैं. (१३)

कृष्णग्रीवा ऽ आग्नेया बभ्रव: सौम्या ऽ उपध्वस्ता: सावित्रा वत्सतर्य: सारस्वत्य: श्यामा: पौष्णा: पृश्नयो मारुता बहुरूपा वैश्वदेवा वशा द्यावापृथिवीया:.. (१४)

काली गरदन वाले अग्नि व भूरे सोम से संबंधित हैं. मिश्रित रंग वाले सविता देव व छोटी बछियां सरस्वती देवी से संबंधित हैं. काले रंग के पूषा देव से संबंधित हैं. चितकबरे मरुद्गण से संबंधित हैं. बहुरूप वाले विश्व से संबंधित हैं. वंध्या गाएं स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक से संबंधित हैं. (१४)

उक्ता: सञ्चरा ऽ एता ऽ ऐन्द्राग्ना: कृष्णा वारुणा: पृश्नयो मारुता: कायास्तूपरा:.. (१५)

कहे गए संचरणशील पशु इंद्र देव और अग्नि के लिए हैं. काले रंग के पशु

वरुण देव के लिए चितकबरे रंग के पशु मरुद्गण के लिए व सींगरहित पशु प्रजापति के लिए हैं. (१५)

अग्नयेनीकवते प्रथमजानालभते मरुद्भ्यः सान्तपनेभ्यः सवात्यान्मरुद्भ्यो गृहमेधिभ्यो बष्किहान्मरुद्भ्यः क्रीडिभ्यः स ꣳ सृष्टान्मरुद्भ्यः स्वतवद्भ्योनुसृष्टान्.. (१६)

पहले जन्मे पशु सेनापति जैसे अग्नि के लिए हैं. उत्तम तप करने वाले मरुद्गणों के लिए वायु जैसे गतिमान पशु हैं. गृहमेध मरुद्गणों के लिए चिरप्रसूत पशु हैं. क्रीड़ाकारी मरुद्गणों के लिए अच्छे गुणी पशु हैं. स्वप्रेरित मरुद्गणों के लिए साथ रहने वाले पशु हैं. (१६)

उक्ताः सञ्चरा ऽ एता ऽ ऐन्द्राग्नाः प्राशृंगा माहेन्द्रा बहुरूपा वैश्वकर्मणाः.. (१७)

ऊपर कहे गए संचरणशील पशु इंद्र देव एवं अग्नि के लिए हैं. प्रकृष्ट (श्रेष्ठ) सींग वाले पशु महेंद्र देव आदि के लिए हैं. बहुत से रंगों वाले विश्वकर्मा देव के लिए हैं. (१७)

धूम्रा बभ्रुनीकाशाः पितृणा ꣳ सोमवतां बभ्रवो धूम्रनीकाशाः पितृणां बर्हिषदां कृष्णा बभ्रुनीकाशाः पितृणामग्निष्वात्तानां कृष्णाः पृषन्तस्त्रैयम्बकाः.. (१८)

धुएं जैसे भूरे रंग के पशु पितरों के लिए हैं. धुएं और नेवले जैसे भूरे रंग के सोम गुणों वाले पशु पितरों के लिए हैं. काले और भूरे रंग के कुश के आसन पर बैठे पशु पितरों के लिए हैं. अग्नि विद्या में निपुण पशु पितरों के लिए हैं. काले रंग के चकत्तेदार पशु पितरों के लिए हैं. (१८)

उक्ताः सञ्चरा ऽ एताः शुनासीरीयाः श्वेता वायव्याः श्वेताः सौर्याः.. (१९)

उपर्युक्त पशुओं के साथ ही संचरणशील पशु शुनासीर के लिए हैं. सफेद रंग के पशु वायु देव के लिए हैं. सफेद आभा वाले पशु सविता देव के लिए हैं. (१९)

वसन्ताय कपिञ्जलानालभते ग्रीष्माय कलविङ्कान्वर्षाभ्यस्तित्तिरीञ्छरदे वर्त्तिका हेमन्ताय ककराञ्छिशिराय विककरान्.. (२०)

वसंत ऋतु के लिए चातक, गरमी के लिए चटक व वर्षा के लिए तीतर का निर्धारण किया गया है. लवा शरद ऋतु, ककर व शिशिर ऋतु हेतु विककर पक्षियों का निर्धारण किया गया है. (२०)

समुद्राय शिशुमारानालभते पर्जन्याय मण्डूकानद्भ्यो मत्स्यान्मित्राय कुलीपयान्वरुणाय नाक्रान्.. (२१)

समुद्र हेतु अपने ही बच्चों को मारने वाले पक्षी का निर्धारण किया गया है.

बादल हेतु मंडूक का निर्धारण किया गया है. जलों के लिए मत्स्य, मित्र देव हेतु कुलीपय तथा वरुण देव के लिए नाक्र नामक पशु का निर्धारण किया गया है. (२१)

सोमाय ह ंऽ सानालभते वायवे बलाका ऽ इन्द्राग्निभ्यां क्रुञ्चान्मित्राय मद्गून्वरुणाय चक्रवाकान्.. (२२)

सोम के लिए हंस पक्षी, वायु के लिए बगुली. इंद्र देव और अग्नि के लिए सारस, मित्र देव के लिए क्रौंच तथा वरुण देव हेतु चकवे का विधान किया गया है. (२२)

अग्नये कुटरूनालभते वनस्पतिभ्य ऽ उलूकानग्नीषोमाभ्यां चाषानश्विभ्यां मयूरान्मित्रावरुणाभ्यां कपोतान्.. (२३)

अग्नि के लिए मुरगे व वनस्पतिदेव के लिए उल्लू व अग्नि और सोम हेतु नीलकंठ पक्षी का विधान मिलता है. अश्विनी देवों के लिए मोर व वरुण देव के लिए कबूतर पक्षी का विधान मिलता है. (२३)

सोमाय लबानालभते त्वष्ट्रे कौलीकान्गोषादीर्देवानां पत्नीभ्यः कुलीका देवजामिभ्योग्नये गृहपतये पारुष्णान्.. (२४)

सोम के लिए लबा, त्वष्टा के लिए बया व देव पत्नियों के लिए गोष आदि गुह्यतल पक्षी का विधान मिलता है. देवताओं की बहनों के लिए कुलीक व गृहपति हेतु पारुष्ण का विधान मिलता है. (२४)

अह्ने पारावतानालभते रात्र्यै सीचापूरहोरात्रयोः सन्धिभ्यो जतूर्मासेभ्यो दात्यौहान्त्संवत्सराय महतः सुपर्णान्.. (२५)

दिन के लिए कबूतर और रात्रि के लिए सीचापू का विधान मिलता है. दिन तथा रात की संधि हेतु चमगादड़, मास हेतु कौए व वर्ष हेतु अच्छे पंख वाले (गरुड़) का विधान मिलता है. (२५)

भूम्या ऽ आखूनालभतेन्तरिक्षाय पाङ्क्त्रान्दिवे कशान्दिग्भ्यो नकुलान्बभ्रुकानवान्तरदिशाभ्यः.. (२६)

भूमि के लिए चूहों व अंतरिक्ष के लिए पांत में उड़ने वालों का विधान मिलता है. स्वर्ग के लिए कश व दिशाओं के लिए भूरे रंग के जंतु का विधान मिलता है. (२६)

वसुभ्य ऽ ऋश्यानालभते रुद्रेभ्यो रुरूनादित्येभ्यो न्यङ्कून्विश्वेभ्यो देवेभ्यः पृषतान्त्साध्येभ्यः कुलुङ्गान्.. (२७)

वसुओं के लिए ऋष्य नामक हिरण व रुद्रगणों के लिए रुरु नामक हिरण का

विधान मिलता है. आदित्य के लिए न्यंकु नामक हिरण का विधान मिलता है. विश्वों के लिए चकत्तेदार हिरण व साध्य के लिए कुलुंग हिरण का विधान मिलता है. (२७)

ईशानाय परस्वत ऽ आलभते मित्राय गौरान्वरुणाय महिषान्बृहस्पतये गवयांस्त्वष्ट्र ऽ उष्ट्रान्.. (२८)

ईशान देव हेतु परस्वत मृग, मित्र देव हेतु गौर मृग व वरुण देव हेतु भैंसों का विधान किया गया है. बृहस्पति देव हेतु गायों का और त्वष्टा देव हेतु ऊंटों का विधान किया गया है. (२८)

प्रजापतये पुरुषान्हस्तिन ऽ आलभते वाचे प्लुषीँश्चक्षुषे मशकाञ्छ्रोत्राय भृङ्गाः.. (२९)

प्रजापति हेतु हाथियों वाक् देव हेतु प्लुषी, चक्षु देव हेतु मच्छर व कानों हेतु भंवरों का विधान किया गया है. (२९)

प्रजापतये च वायवे च गोमृगो वरुणायारण्यो मेषो यमाय कृष्णो मनुष्यराजाय मर्कटः शार्दूलाय रोहिदृषभाय गवयी क्षिप्रश्येनाय वर्तिका नीलङ्गोः कृमिः समुद्राय शिशुमारो हिमवते हस्ती.. (३०)

प्रजापति तथा वायु देव हेतु गोमृग, वरुण देव हेतु जंगली मेष, यम हेतु कृष्ण मेष, मनुष्यराज हेतु मर्कट, सिंहराज हेतु लाल मृग, ऋषभ हेतु गाय का विधान किया गया है. बाज हेतु बटेर, नीलांग हेतु कृमि, समुद्र हेतु शिशुमार व हिमवान हेतु हाथी का विधान किया गया है. (३०)

मयुः प्राजापत्य उलो हलिक्ष्णो वृषद ꣳ शस्ते धात्रे दिशां कङ्को धुङ्क्षाग्नेयी कलविङ्को लोहिताहिः पुष्करसादस्ते त्वाष्ट्रा वाचे क्रुञ्चः.. (३१)

प्रजापति के लिए किन्नर (गायनवादन में कुशल) उल को नियोजित करने की कृपा करें. खास तौर का शेर और बिलाव धाता देव हेतु नियोजित करने की कृपा करें. दिशा हेतु कंक को नियोजित करने की कृपा करें. आग्नेय दिशा हेतु धुंक्षा नियोजित करें. चिड़ा, लाल सांप और कमलभक्षी पक्षी त्वष्टा देव हेतु नियोजित करें. वाक् हेतु क्रौंच पक्षी को नियोजित करने की कृपा करें. (३१)

सोमाय कुलुङ्ग ऽ आरण्योजो नकुलः शका ते पौष्णाः क्रोष्टा मायोरिन्द्रस्य गौरमृगः पिद्वो न्यङ्कुः कक्कटस्ते ऽ नुमत्यै प्रतिश्रुत्कायै चक्रवाकः.. (३२)

सोम के लिए कुरंग पशु, पूषा देव के लिए जंगली मेष, नेवला तथा मधुमक्खी हैं. वायु के लिए शृगाल, इंद्र के लिए गौरमृग, अनुमति के लिए न्यंकु व प्रतिश्रुत्क देव के लिए चकवा पक्षी है. (३२)

सौरी बलाका शार्गः सृजयः शयाण्डकस्ते मैत्राः सरस्वत्यै शारिः पुरुषवाक् श्वाविद्भौमी शार्दूलो वृकः पृदाकुस्ते मन्यवे सरस्वते शुकः पुरुषवाक्.. (३३)

सूर्य के लिए बगुला पक्षी है. मित्र देव के लिए चातक, सृजय व शयांडक हैं. सरस्वती देवी के लिए मैना, पृथ्वी देवी के लिए सेही पक्षी व मन्यु देव के लिए सिंह, भेड़िया, सांप हैं. समुद्र के लिए मनुष्यवाची तोता पक्षी है. (३३)

सुपर्णः पार्जन्य ऽ आतिर्वाहसो दर्विदा ते वायवे बृहस्पतये वाचस्पतये पैङ्गराजोलज ऽ आन्तरिक्षः प्लवो मद्गुर्मत्स्यस्ते नदीपतये द्यावापृथिवीयः कूर्मः.. (३४)

पर्जन्य देव (बादल) के लिए गरुड़ पक्षी, वायु के लिए आती, वाहस तथा काष्ठ कुट्ट हैं. वाणीपति बृहस्पति देव के लिए पैंगराज तथा काष्ठ कुट्ट हैं. अंतरिक्ष के लिए अलज है. नदी देव के लिए मत्स्य वाहस तथा काष्ठ कुट्ट हैं. स्वर्गलोक एवं पृथ्वीलोक के लिए कच्छप (कछुआ) है. (३४)

पुरुषमृगश्चन्द्रमसो गोधा कालका दार्वाघाटस्ते वनस्पतीनां कृकवाकुः सावित्रो ह ᳪ सो वातस्य नाक्रो मकरः कुलीपयस्तेकूपारस्य ह्रियै शल्यकः.. (३५)

चंद्र देव हेतु नर हिरण, वनस्पति देव हेतु गोह कालका तथा कठफोड़ा, सविता देव हेतु ताम्रचूर, वायु हेतु व समुद्र देव हेतु नक्र, मगरमच्छ एवं कुलीपय जलचर निर्धारित किया गया है. ह्री देव हेतु सेही को निर्धारित किया गया है. (३५)

एण्यह्नो मण्डूको मूषिका तित्तिरिस्ते सर्पाणां लोपाश ऽ आश्विनः कृष्णो रात्र्या ऽ ऋक्षो जतूः सुषिलीका त ऽ इतरजनानां जहका वैष्णवी.. (३६)

अह्न हेतु हरिणी, सर्प हेतु मेढक, चुहिया तथा तीतर का विधान है. अश्विनीकुमार हेतु लोपाश, रात्रि देवी हेतु कृष्ण मृग व अन्य देवगणों हेतु रीछ, जतू और सुषिलीका का विधान है. विष्णु हेतु जहका निर्धारित है. (३६)

अन्यवापोर्धमासानामृश्यो मयूरः सुपर्णस्ते गन्धर्वाणामपामुद्रो मासां कश्यपो रोहित्कुण्डृणाची गोलत्तिका तेप्सरसां मृत्यवेसितः.. (३७)

अर्द्धमास हेतु अन्यवाय (कोयल), जलों के लिए ऋष्यमृग और मोर, गंधर्वों के लिए सुपर्ण, जलों के लिए केकड़े, महीनों के लिए कछुए का विधान किया गया है. अप्सराओं के लिए रोहित, कृंडृणाची व गोलत्तिका का विधान है. मृत्यु के लिए काले हिरण का विधान किया गया है. (३७)

वर्षाहूर्ऋतूनामाखुः कशो मान्थालस्ते पितृणां बलायाजगरो वसूनां कपिञ्जलः कपोत ऽ उलूकः शशस्ते निर्ऋत्यै वरुणायारण्यो मेषः.. (३८)

वर्षा को बुलाने वालों के लिए ऋतु, पितरों के लिए चूहे, छछूंदर तथा छिपकली, बलदेव के लिए अजगर, वसुओं के लिए कपिंजल व निर्ऋति देव के लिए कबूतर, उल्लू और खरगोश का विधान है. वरुण के लिए जंगली मेष का विधान किया गया है. (३८)

शिवत्र आदित्यानामुष्ट्रो घृणीवान्वार्ध्रीनसस्ते मत्या ऽ अरण्याय सृमरो रुरू रौद्रः क्वयिः कुटरुर्दात्यौहस्ते वाजिनां कामाय पिकः.. (३९)

आदित्यगणों के लिए विचित्र पशु, मति देवी के लिए ऊंट, चील और बकरे, अरण्य देव के लिए गाय, रुद्र देव के लिए रुरु मृग व वाजि देव के लिए क्वयि, कौए और मुरगे का विधान किया गया है. काम देव के लिए कोयल का विधान है. (३९)

खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सि ꣳ हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः.. (४०)

वैश्वे देव के लिए गैंडे, राक्षसों के लिए कुत्ते, गधे और शेर, इंद्र देव के लिए सुअर व मरु देव के लिए सिंह का विधान किया गया है. शरव्य देवी हेतु गिरगिट, पपीहा और शकुनि तथा सभी देवों हेतु पृषत मृग का विधान है. (४०)

पच्चीसवां अध्याय

शादं दद्भिरवकां दन्तमूलैर्मृदं वर्स्वैस्तेगान्द ꣳष्ट्राभ्या ꣳ सरस्वत्या ऽ अग्रजिह्वं जिह्वाया ऽ उत्सादमवक्रन्देन तालु वाज ꣳ हनुभ्यामप ऽ आस्येन वृषणमाण्डाभ्यामादित्याँ श्मश्रुभि: पन्थानं भ्रूभ्यां द्यावापृथिवी वर्तोभ्यां विद्युतं कनीनकाभ्या ꣳ शुक्लाय स्वाहा कृष्णाय स्वाहा पार्याणि पक्ष्माण्यवार्या ऽ इक्षवोवार्याणि पक्ष्माणि पार्या ऽ इक्षव:.. (१)

दांतों से शाद देवता (कोमल घास), दंतमूल (दांत की जड़) से जल में उपजने वाले शैवाल देव (जल में उपजने वाली घास) व दाढ़ों से मिट्टी व दाढ़ों से तेग देव को प्रसन्न करते हैं. जिह्वा के आगे के भाग से सरस्वती देवी व उत्साद देव को प्रसन्न करते हैं. तालु से अवक्रंद देव, ठोड़ी से अन्न देव, मुख से जल देव, अंडकोषों से वृषण देव व दाढ़ीमूंछ से आदित्य देव को प्रसन्न करते हैं. भौंहों से पंथ देव, बरौनियों से स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक, आंख की पुतलियों से विद्युत् देव को प्रसन्न करते हैं. शुक्ल देव के लिए स्वाहा. कृष्ण देव के लिए स्वाहा. पार देव के लिए स्वाहा. अवार देव के लिए स्वाहा. ऊपर के लिए स्वाहा. नीचे के लिए स्वाहा. (१)

वातं प्राणेनापानेन नासिके उपयाममधरेणौष्ठेन सदुत्तरेण प्रकाशेनान्तरमनूकाशेन बाह्यं निवेष्यं मूर्ध्ना स्तनयित्नुं निर्बाधेनाशनिं मस्तिष्केण विद्युतं कनीनकाभ्यां कर्णाभ्या ꣳ श्रोत्र ꣳ श्रोत्राभ्यां कर्णौ तेदनीमधरकण्ठेनाप: शुष्ककण्ठेन चित्तं मन्याभिरदिति ꣳ शीर्ष्णा निर्ऋतिं निर्जर्जल्पेन शीर्ष्णा संक्रोशै: प्राणान् रेष्माण ꣳ स्तुपेन.. (२)

प्राण से वात देव के लिए स्वाहा. अपान से नासिका देव के लिए स्वाहा. ऊपर के होंठ से सत् देव के लिए स्वाहा. ओष्ठ से उपयाम देव के लिए स्वाहा. उत्तर के प्रकाश से अंतर देव के लिए स्वाहा. भीतर के प्रकाश से बाह्य देव के लिए स्वाहा. मूर्धा से निवेश देव के लिए स्वाहा. सिर में स्थित अस्थि से स्तनयित्नु देव के लिए स्वाहा. मस्तिष्क से अशनि देव के लिए स्वाहा. आंख की पुतलियों से विद्युत् देव के लिए स्वाहा. कानों से श्रोत्र देव के लिए स्वाहा. दोनों कानों से देवशक्ति देव के लिए स्वाहा. नीचे के कंठ से तेदनी देव के लिए स्वाहा. ऊपर के सूखे कंठ से जल देव के लिए स्वाहा. नाड़ियों से चित्त देव के लिए स्वाहा. सिर से अदिति देव के लिए स्वाहा. जर्जर सिर से निर्ऋति देव

के लिए स्वाहा. बोलने वाले अंगों से प्राण देव के लिए स्वाहा. चोटी से रेष्म देव के लिए स्वाहा. (२)

मशकान् केशैरिन्द्र ꣳ स्वपसा वहेन बृहस्पति ꣳ शकुनिसादेन कूर्माञ्छफैराक्रमण ꣳ स्थूराभ्यामृक्षलाभिः कपिञ्जलाञ्जवं जङ्घाभ्यामध्वानं बाहुभ्यां जाम्बीलेनारण्यमग्निमतिरुग्भ्यां पूषणं दोर्भ्यामश्विनाव ꣳ साभ्या ꣳ रुद्र ꣳ रोराभ्याम्.. (३)

केशों से मशक देव के लिए स्वाहा. कंधों से इंद्र देव के लिए स्वाहा. पक्षी जैसे वेग से बृहस्पति देव के लिए स्वाहा. खुरों से कर्म देव के लिए स्वाहा. गुल्फों से आक्रमण देव के लिए स्वाहा. गुल्फों के नीचे नाड़ियों से कपिंजल के लिए स्वाहा. जंघाओं से वेग की देवी के लिए स्वाहा. बाहुओं से राह देव के लिए स्वाहा. घुटनों से जंगल देव के लिए स्वाहा. घुटनों से पूषा देव के लिए स्वाहा. नीचे के घुटनों से पूषा देव के लिए स्वाहा. दोनों कंधों से अश्विनी देव के लिए स्वाहा. देह की अन्य शक्तियों से रुद्र देव के लिए स्वाहा (३)

अग्नेः पक्षतिर्वायोर्निपक्षतिरिन्द्रस्य तृतीया सोमस्य चतुर्थ्यदित्यै पञ्चमीन्द्राण्यै षष्ठी मरुता ꣳ सप्तमी बृहस्पतेरष्टम्यर्यम्णो नवमी धातुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यमस्य त्रयोदशी.. (४)

दाईं ओर की पहली अस्थि अग्नि, दूसरी ओर की अस्थि वायु, तीसरी ओर की अस्थि इंद्र देव, चौथी ओर की अस्थि, पांचवीं ओर की अस्थि अदिति देवी व छठी ओर की अस्थि इंद्राणी देवी से संबंधित हैं. सातवीं ओर की अस्थि मरुद् देव, आठवीं ओर की अस्थि बृहस्पति देव नौवीं ओर की अस्थि अर्यमा देव व दसवीं ओर की अस्थि धाता से संबंधित हैं. ग्यारहवीं ओर की अस्थि इंद्र देव से बारहवीं ओर की अस्थि वरुण देव व तेरहवीं ओर की अस्थि यम देव से संबंधित हैं. (४)

इन्द्राग्न्योः पक्षतिः सरस्वत्यै निपक्षतिर्मित्रस्य तृतीयापां चतुर्थी निर्ऋत्यै पञ्चम्यग्नीषोमयोः षष्ठी सर्पाणा ꣳ सप्तमी विष्णोरष्टमी पूष्णो नवमी त्वष्टुर्दशमीन्द्रस्यैकादशी वरुणस्य द्वादशी यम्यै त्रयोदशी द्यावापृथिव्योर्दक्षिणं पार्श्वं विश्वेषां देवानामुत्तरम्.. (५)

बाईं ओर की पहली अस्थि इंद्र देव और अग्नि, दूसरी अस्थि सरस्वती देवी, तीसरी अस्थि मित्र देव, चौथी अस्थि जल देव, पांचवीं अस्थि निर्ऋति देव व छठी अस्थि अग्नि और सोम से संबंधित हैं. सातवीं अस्थि सर्प देव, आठवीं अस्थि विष्णु, नौवीं अस्थि पूषा देव, दसवीं अस्थि त्वष्टा देव व ग्यारहवीं अस्थि इंद्र देव व बारहवीं अस्थि वरुण देव, तेरहवीं अस्थि यम देव, दाहिना भाग स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक बायां भाग सभी देवों व उत्तर भाग अन्य देवों से संबंधित हैं. (५)

मरुता ꣳ स्कन्धा विश्वेषां देवानां प्रथमा कीकसा रुद्राणां द्वितीयादित्यानां तृतीया वायोः पुच्छमग्नीषोमयोर्भासदौ क्रुञ्चौ श्रोणिभ्यामिन्द्राबृहस्पती ऊरुभ्यां मित्रावरुणावल्गाभ्यामाक्रमण ꣳ स्थूराभ्यां बलं कुष्ठाभ्याम्.. (६)

कंधे की अस्थि मरुद्गणों, प्रथम अस्थि विश्वे देवों, दूसरी अस्थि रुद्रगणों, तीसरी अस्थि आदित्यगणों, पूंछ वायु, नितंब अग्नि और सोम से संबंधित हैं. जंघाएं क्रौंच देव व दोनों जंघाएं इंद्र देव और बृहस्पति देव, दोनों जंघाएं मित्र देव वरुण देव से संबंधित हैं. नीचे का भाग आक्रमण से संबंधित है. ऊपर का भाग बल देव से संबंधित है. (६)

पूषणं वनिष्ठुनान्धाहीन्त्स्थूलगुदया सर्पान्गुदाभिर्विह्रुत ऽ आन्त्रैरपो वस्तिना वृषणमाण्डाभ्यां वाजिन ꣳ शेपेन प्रजा ꣳ रेतसा चाषान् पित्तेन प्रदरान् पायुना कूश्माञ्छकपिण्डैः.. (७)

बड़ी आंत पूषा देव, स्थूल गुदा अंधे सर्प देव, सामान्य गुदा अन्य सर्प देवों, बची हुई आंतें विद्युत् देव, वस्ति भाग जल देव, अंडकोष वृषण देव व उपस्थ बल देव से संबंधित हैं. वीर्य प्रजापति देव, पित्त चाष देव, पायु (गुदा) प्रदर देव व शक पिंड कूश्म देव से संबंधित हैं. (७)

इन्द्रस्य क्रोडोदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोदित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ ऽ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन् प्लाशिभिरुपलान् प्लीह्ना वल्मीकान् क्लोमभिग्लौभिर्गुल्मान् हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान् कुक्षिभ्या ꣳ समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना.. (८)

क्रोड इंद्र देव, पैर अदिति देव, हंसली अदिति देव, मेढ्राग्र अदिति देव, हृदय प्रदेश और नाड़ीप्रदेश अंतरिक्ष देव, पेट आकाश देव व फेफड़े चक्रवाक से संबंधित हैं. दोनों वृक्क (गुरदे) पर्वत देव, क्लोम वाल्मीकि देव, क्लोमादि गुल्म, रक्त शिराएं नदी, कांख हृदय, पेट समुद्र व भस्म वैश्वानर से संबंधित हैं. (८)

विधृतिं नाभ्या घृत ꣳ रसेनापो यूष्णा मरीचीर्विप्रुड्भिर्नीहारमूष्मणा शीनं वसया प्रुष्वा अश्रुभिर्ह्रादुनीर्दूषीकाभिरस्ना रक्षा ꣳ सि चित्राण्यङ्गैर्नक्षत्राणि रूपेण पृथिवीं त्वचा जुम्बकाय स्वाहा.. (९)

नाभि विधृति, वीर्य घृत, पकवान जल देव, वसा मरीचि देव, शरीर की गरमाई ओस देव, वसा शनि देव, आंसू फुहार देव गीड़ (आंख की कीच) ह्रादुनी आकाशीय विद्युत् देव से संबंधित हैं. खून के कण रक्षा देव, शारीरिक विभिन्न अंग विभिन्न देवों, शारीरिक सौंदर्य, नक्षत्र देवों व त्वचा पृथ्वी देवी और त्वचा जुंबक देव से संबंधित हैं. (९)

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽ आसीत्.
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (१०)

जो प्रथम जन्मा है, हिरण्यगर्भ में रहा, जो उत्पन्न हुई पीढ़ियों का एकमात्र पालक है, जो पृथ्वीलोक और स्वर्गलोक को धारता है, उस देव के अलावा किस देव के लिए हवि का विधान करें. (१०)

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक ऽ इद्राजा जगतो बभूव.
य ऽ ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (११)

जो अपने प्राणपण से पल भर में इस जगत् का महिमावान शासक हुआ, जो दोपायों और चौपायों का ईश्वर है, महिमावान हम उस देवता के अलावा और किस देवता के लिए हवि का विधान करें ? (११)

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्र ꣳ रसया सहाहुः.
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (१२)

जिन की इस महिमा से हिमवान पर्वतों का निर्माण हुआ, जिस ने यह रसीले समुद्र निर्मित किए, जिन की भुजाएं दसों दिशाओं में फैली हुई हैं, हम उस देवता के अलावा और किस देवता के लिए हवि का विधान करें ? (१२)

य ऽ आत्मदा बलदा यस्य विश्व ऽ उपासते प्रशिषं यस्य देवाः.
यस्य च्छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (१३)

जो आत्मशक्ति दाता और बलशक्ति दाता हैं, सारा विश्व जिस की प्रशंसा करता है, सारा विश्व जिस की उपासना करता है, जिस की छत्रच्छाया अमृत सरीखी सुखदायी है, जिस के बिना मृत्यु जैसा कष्ट होता है, उस के अलावा हम और किस देव के लिए हवि का विधान करें. (१३)

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासो अपरीतास ऽ उद्भिदः.
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे.. (१४)

हम यज्ञ में सब ओर से अबाध रूप से कल्याणकारी व दुर्लभ परिणाम प्राप्त करें. सभी देवगण प्रतिदिन हमारी रक्षा व बढ़ोतरी करें. (१४)

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ꣳ रातिरभि नो निवर्त्तताम्.
देवाना ꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न ऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे.. (१५)

देवगणों की उत्तम बुद्धि हमारे लिए कल्याणकारिणी हो. देवगणों की सरलता हमारे लिए कल्याणकारिणी हो. देवगणों का दान हमारे लिए अनुकूल हो. देवगणों की मित्रता हम को मिले. हम उस मित्रता से लाभ पाएं. हम देवताओं से दीर्घ आयु प्राप्त कर जीएं. (१५)

तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्.
अर्यमणं वरुण छ्व सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्.. (१६)

हम मित्र देव, भग देव, अदिति देव, दक्ष देव, अर्यमा देव, वरुण देव, अश्विनी देवों व सरस्वती देवी को निमंत्रित करते हैं. हम उन का आह्वान करते हैं. वे सौभाग्यदायिनी हैं. वे हम यजमानों का कल्याण करने की कृपा करें. (१६)

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः.
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्.. (१७)

वायु हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. वे हमारे लिए ओषधीय गुणों से युक्त हों. वे हमारे लिए सुखदायी वायु प्रवाहित करने की कृपा करें. माता पृथ्वी, स्वर्गलोक हमारे व सोम चुआने वाले पत्थर हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. आप हमारी प्रार्थना सुनने की कृपा करें और हमारी प्रार्थना के अनुकूल हमें सुखी बनाएं. (१७)

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्.
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये.. (१८)

हम उस परम शक्ति का अपनी रक्षा के लिए आह्वान करते हैं, जिस ने इस जगत् को स्थिर बनाया, जो शक्ति सभी को वशीभूत करने वाली है. पूषा देव हमारे ज्ञान व बुद्धि को बढ़ाने की कृपा करें. परम शक्ति एवं पूषा देव का हम अपने कल्याण के लिए आह्वान करते हैं. (१८)

स्वस्ति न ऽ इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः.
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु.. (१९)

ऐश्वर्यवान इंद्र देव, सर्वज्ञाता पूषा व अनिष्ट नाशक पंखवान गरुड़ इंद्र देव हमारा कल्याण करने की कृपा करें. बृहस्पति देव व उपर्युक्त सभी देव हमारा कल्याण करने वाले हों. (१९)

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः.
अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा ऽ अवसागमन्निह.. (२०)

मरुद्गण शक्तिशाली व वेगवान घोड़ों वाले हैं. अदिति देवी मरुद्गण की माता हैं. मरुद्गण सब का कल्याण करने वाले हैं. अग्नि रूपी जीभ व सूर्य रूपी आंख वाले हैं. वे हमारे लिए सभी देवताओं को साथ ले कर यहां यज्ञ में आने की कृपा करें. (२०)

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः.
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा छ्व सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः.. (२१)

हे यज्ञ रक्षक देवताओ! हम कानों से कल्याणकारी वचन सुनें. हम आंखों से

कल्याणकारी दृश्य देखें. हम स्वस्थ अंगों एवं स्वस्थ शरीर से आप की उपासना और वंदना करते रहें. हम आप की कृपा से पूर्ण आयु प्राप्त करें. देवगण हमारा हित साधने की कृपा करें. (२१)

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्.
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः.. (२२)

हे देवगण! आप की कृपा से हम सौ शरद तक जीएं. आप की कृपा से हम सौ शरद तक स्वस्थ जीएं. आप की कृपा से हम सौ शरद यानी वृद्धावस्था तक जीएं. जैसे पुत्र के लिए पिता होता है, वैसे ही हमें आप का संरक्षण मिले. जीवन के बीच में हम कभी मृत्यु न पाएं. (२२)

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः.
विश्वे देवा ऽ अदितिः पञ्च जना ऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्.. (२३)

स्वर्गलोक, अंतरिक्षलोक, जगत् माता, जगत् पिता व सभी देवगण अविनाशी हैं. पांचों जन और जो कुछ उत्पन्न है, वह अविनाशी है. जो कुछ उत्पन्न होने वाला है, वह अविनाशी है. (२३)

मा नो मित्रो वरुणो अर्यमायुरिन्द्र ऽ ऋभुक्षा मरुतः परि ख्यन्.
यद्वाजिनो देवजातस्य सप्तेः प्रवक्ष्यामो विदथे वीर्याणि.. (२४)

मित्र, वरुण, अर्यमा, आयु, ऋभुक्ष देव, मरुद्गण इंद्र देव कभी भी हम से विमुख न हों. देवताओं में जो बल उपजा है, हम उसी बल और उन के पराक्रम की गाथा बारबार कहते हैं. (२४)

यन्निर्णिजा रेक्णसा प्रावृतस्य रातिं गृभीतां मुखतो नयन्ति.
सुप्राङजो मेम्यद्विश्वरूप ऽ इन्द्रापूष्णोः प्रियमप्येति पाथः.. (२५)

जब संस्कार युक्त ऐश्वर्यमय सब को आवृत्त करने वाले देवताओं के मुख के पास हवि का अन्न ले जाया जाता है, तब अज रूप भी 'मैंमैं' करता हुआ पास आता है. वह इंद्र देव और पूषा देव के इस प्रिय पदार्थ को प्राप्त करता है. (२५)

एष छागः पुरो अश्वेन वाजिना पूष्णो भागो नीयते विश्वदेव्यः.
अभिप्रियं यत्पुरोडाशमर्वता त्वष्टेदेन ꣳ सौश्रवसाय जिन्वति.. (२६)

यह बकरा जब शक्तिशाली घोड़े के सामने लाया जाता है तब यजमान चंचल घोड़े के साथ बकरे को भी मीठा अन्न (पुरोडाश) प्रदान करता है. पुरोडाश सभी को प्रिय लगता है और उस का उत्तम भाग दे कर यश पाया जाता है. (२६)

यद्धविष्यमृतुशो देवयानं त्रिर्मानुषाः पर्यश्वं नयन्ति.
अत्रा पूष्णः प्रथमो भाग ऽ एति यज्ञं देवेभ्यः प्रतिवेदयन्नजः.. (२७)

जब यजमान हवि को तीन देवमार्गों से चारों ओर घोड़े की तरह ले जाते हैं, तब यहां यह अज पोषण का प्रथम भाग पा कर देवताओं के लिए यज्ञ का प्रतिवेदन करता है. (२७)

होताध्वर्युरावया अग्निमिन्धो ग्रावग्राभ ऽ उत श ꣳ स्ता सुविप्रः.
तेन यज्ञेन स्वरंकृतेन स्विष्टेन वक्षणा ऽ आ पृणध्वम्.. (२८)

होता, अध्वर्यु, प्रतिस्थाता, आग्नीध्र, ग्रावस्तोता, प्रशास्ता, विद्वान् ब्रह्मा आदि हे यजमानो! आप उस यज्ञ से इच्छित उद्‌देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रवाहों को पूर्ण करने की कृपा कीजिए. (२८)

यूपव्रस्का उत ये यूपवाहाश्चषालं ये अश्वयूपाय तक्षति.
ये चार्वते पचन ꣳ सम्भरन्त्युतो तेषामभिगूर्त्तिर्न ऽ इन्वतु.. (२९)

खंभे का निर्माण करने वाले, उस को वहन करने वाले लोहे और लकड़ी की फिरकी के निर्माता घोड़े के लिए खंभे बनाने वाले—इन सभी लोगों का कार्य हमारे यज्ञ का हित साधने वाला हो. (२९)

उप प्रागात्सुमन्मेधायि मन्म देवानामाशा ऽ उप वीतपृष्ठः.
अन्वेनं विप्रा ऽ ऋषयो मदन्ति देवानां पुष्टे चकृमा सुबन्धुम्.. (३०)

हम अच्छे मन से यज्ञ का फल पाएं. यह घोड़ा देवताओं की भी इच्छा पूरी करने का सामर्थ्य रखता है. देवताओं को भी आनंदित करता है. देवगण भी इसे अपना मित्र मानते हैं. ब्राह्मण तथा ऋषिगण इस का अनुमोदन करने की कृपा करें. (३०)

यद्वाजिनो दाम सन्दानमर्वतो या शीर्षण्या रशना रज्जुरस्य.
यद्वा घास्य प्रभृतमास्ये तृण ꣳ सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु.. (३१)

इस शक्तिशाली और चंचल को नियंत्रण में रखने के लिए गरदन का बंधन देवताओं को समर्पित हो. इस शक्तिशाली को नियंत्रण में रखने के लिए कमर तथा सिर के बंधन देवताओं को समर्पित हों. इस शक्तिशाली व घास, तृण आदि देवताओं को नियंत्रण में रखने के लिए गरदन का बंधन देवताओं को समर्पित हो. (३१)

यदश्वस्य क्रविषो मक्षिकाश यद्वा स्वरौ स्वधितौ रिप्तमस्ति.
यद्धस्तयोः शमितुर्यन्नखेषु सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु.. (३२)

जिस अश्व का बचाखुचा भाग मक्खियां खाती हैं, जो भाग यजमान के हाथों और अंगुलियों में लगा रहता है, वह सब भी देवताओं के प्रति समर्पित हो. (३२)

यदूवध्यमुदरस्यापवाति य ऽ आमस्य क्रविषो गन्धो अस्ति.
सुकृता तच्छमितारः कृण्वन्तूत मेध ꣳ श्रृतपाकं पचन्तु.. (३३)

यज्ञ के उदर (पेट) में जो अधपचे अन्न, गंध आदि निकल रहे हैं, उन की शांति भलीभांति किए गए यज्ञ के उपचार से हो. वे पचें यह पाचन देवगणों के अनुसार हो. (३३)

यत्ते गात्रादग्निना पच्यमानादभि शूलं निहतस्यावधावति.
मा तद्भूम्यामाश्रिषन्मा तृणेषु देवेभ्यस्तदुशद्भ्यो रातमस्तु.. (३४)

जो आप के अग्नि से पचाए जाते हुए अंग, (दर्द) से शूल इधरउधर दौड़ते हुए गिर गए हैं, उन्हें भूमि पर ही मत पड़ा रहने दीजिए. कहीं वे तिनकों में ही न मिल जाएं. वे भी देवताओं का भोजन बनें. (३४)

ये वाजिनं परिपश्यन्ति पक्वं य ऽ ईमाहुः सुरभिर्निर्हरेति.
ये चार्वतो मा ꣳ सभिक्षामुपासत ऽ उतो तेषामभिगूर्तिर्न ऽ इन्वतु.. (३५)

जो इस अन्न व पुरोडाश को पकता हुआ देखते हैं, जो इस पुरोडाश को सुगंध युक्त बनाते हैं, जो इस अन्न से बने पुरोडाश को मांगते हैं, उन का पुरुषार्थ भी हमारे लिए फलीभूत हो. (३५)

यन्नीक्षणं माँस्पचन्या ऽ उखाया या पात्राणि यूष्ण ऽ आसेचनानि.
ऊष्मण्यापिधाना चरूणामङ्काः सूनाः परि भूषन्त्यश्वम्.. (३६)

जो पुरोडाश को पात्र में बनता (पकता) हुआ देखते हैं, जो पात्र को मांज कर पूरी तरह साफ करते हैं, ऊष्मा को रोकने वाले चरु आदि को गोद में रखते हैं, वे सभी इस यज्ञ को भूषित करने की कृपा करें. (३६)

मा त्वाग्निर्ध्वनयीद्धूमगन्धिर्मोखा भ्राजन्त्यभि विक्त जघ्रिः.
इष्टं वीतमभिगूर्तं वषट्कृत तं देवासः प्रति गृभ्णन्त्यश्वम्.. (३७)

हे पुरोडाश! धुएं वाली आग और गंध आप को पीड़ा न दें. चमकीला उखा आप को पीड़ा न दे. इस प्रकार पके हुए पुरोडाश को देवगण भलीभांति स्वीकार करते हैं. (३७)

निक्रमणं निषदनं विवर्त्तनं यच्च पड्वीशमर्वतः.
यच्च पपौ यच्च घासिं जघास सर्वा ता ते अपि देवेष्वस्तु.. (३८)

हे यज्ञ अश्व! आप का निकलना, बैठना, हिलना, पलटना, खानापीना आदि सभी क्रियाएं देवताओं के ही बीच में हों. (३८)

यदश्वाय वास ऽ उपस्तृणन्त्यधीवासं या हिरण्यान्यस्मै.
सन्दानमर्वन्तं पड्वीशं प्रिया देवेष्वा यामयन्ति.. (३९)

अश्व का वस्त्र, ऊपर का आवरण वस्त्र, अधिवास (नीचे का वस्त्र) सोने के

आभूषण, सिर एवं पैर को बांधने की मेखलाएं आदि सभी देवताओं को प्रसन्न करने की कृपा करें. (३९)

यत्ते सादे महसा शूकृतस्य पार्ष्ण्या वा कशया वा तुतोद.
स्रुचेव ता हविषो अध्वरेषु सर्वा ता ते ब्रह्मणा सूदयामि.. (४०)

हे अश्व! जो आप के पीड़क हैं, जो पीछे और नीचे के भाग के पीड़क हैं, वे त्रुटियां और यज्ञों में हवि संबंधी अन्य त्रुटियां ब्राह्मण स्रुवा की घी की आहुतियों से सुधारते हैं. (४०)

चतुस्त्रि ꣳ शद्वाजिनो देवबन्धोर्वङ्क्रीरश्वस्य स्वधितिः समेति.
अच्छिद्रा गात्रा वयुना कृणोत परुष्परुरनुघुष्या विशस्त.. (४१)

हे यजमानो! यह अश्व देवताओं का बंधु है. यह धारण की क्षमता रखता है. सामर्थ्यवान है. चौंतीस शक्तियों से युक्त हो. शरीर छिद्र रहित (दोष रहित) हो. देवगण इस की सभी कमियों को दूर करने की कृपा करें. (४१)

एकस्त्वष्टुरश्वस्या विशस्ता द्वा यन्तारा भवतस्तथ ऋतुः.
या ते गात्राणामृतुथा कृणोमि ता ता पिण्डानां प्र जुहोम्यग्नौ.. (४२)

वर्ष त्वष्टा (सूर्य) रूप अश्व को बांटता है. वह उसे दो भागों (उत्तरायण व दक्षिणायन) में बांटता है. दोनों भागों को ऋतुओं (छह) में बांटता है. शरीर के अंगों के स्वास्थ्य के लिए ऋतु के अनुसार पदार्थों की आहुति अग्नि में भेंट की जाती है. (४२)

मा त्वा तपत्प्रिय ऽ आत्मापियन्तं मा स्वधितिस्तन्व ऽ आ तिष्ठिपत्ते.
मा ते गृध्नुरविशस्तातिहाय छिद्रा गात्राण्यसिना मिथू कः.. (४३)

हे अश्व! अपना प्यारा आत्मतत्त्व सदा आप धारण करते रहें. वह प्यारा आत्मतत्त्व कभी आप को छोड़ कर न जाएं. बांटने वाली शक्तियां कभी आप के शरीर और अंगों पर अधिकार न कर सकें. अनिपुण व्यक्ति भी आप के शरीर तथा किसी अंग पर तलवार न चला सके. उस की तलवार आप के दोषों पर चले. (४३)

न वा उ एतन्म्रियसे न रिष्यसि देवाँ २ इदेषि पथिभिः सुगेभिः.
हरी ते युञ्जा पृषती अभूतामुपास्थाद्वाजी धुरि रासभस्य.. (४४)

हे अश्व! न आप मारते हैं, न मरते हैं. आप सुगम पथ से देवताओं के पास जाते हैं. घोड़े आप के रथ में जुड़ कर पुष्ट होते हैं. वे शब्द मात्र से ही रथ में जुड़ जाते हैं. घोड़े बहुत वेगवान हैं. (४४)

सुगव्यं नो वाजी स्वश्व्यं पु ꣳ सः पुत्राँ २ उत विश्वापुष ꣳ रयिम्.
अनागास्त्वं नो अदितिः कृणोतु क्षत्रं नो अश्वो वनता ꣳ हविष्मान्.. (४५)

यह अच्छी तरह देवताओं को प्राप्त कराने वाला है. यह हमें अपने वश में रखे, पुत्र व पौत्र प्रदान करे. हम सब को धन से पुष्ट करे व गरीबी व पाप से दूर रखे. हमें बलवान बनाए. हम इस के लिए हविमान हैं. (४५)

इमा नु कं भुवना सीषधामेन्द्रश्च विश्वे च देवा:.
आदित्यैरिन्द्र: सगणो मरुद्भिरस्मभ्यं भेषजा करत्.
यज्ञं च नस्तन्वं च प्रजां चादित्यैरिन्द्र: सह सीषधाति.. (४६)

इंद्र देव तथा सभी देव सभी भुवनों को अपने वश में रखें. आदित्यगण मरुद्गण तथा इंद्र देव अपने गण सहित हमें निरोग रखें. यह यज्ञ इंद्र देव और आदित्यगण सहित हमारे शरीर और प्रजाओं को अपने वश में रखें. (४६)

अग्ने त्वं नो अन्तम ऽ उत त्राता शिवो भवा वरूथ्य:.
वसुरग्निर्वसुश्रवा ऽ अच्छा नक्षि द्युमत्तम ꣳ रयिं दा:.
तं त्वा शोचिष्ठ दीदिव: सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्य:.. (४७)

हे अग्नि! आप अन्यतम, त्राता व कल्याणकारी हैं. हे अग्नि! आप हितैषी हैं. आप हिंसकों व आततायियों से हमारी रक्षा करें. आप प्रख्यात हैं. हमारी रक्षा करें. आप धनवान हैं. हमारी रक्षा करें. आप प्रकाशवान हैं. हमारी रक्षा करें. आप स्वर्गलोक को भी प्रकाशित करते हैं. आप हमें मित्रों सहित धन और वैभव दीजिए. हम अच्छे मन से आप के लिए प्रार्थना करते हैं. (४७)

छब्बीसवां अध्याय

अग्निश्च पृथिवी च सन्नते ते मे सं नमतामदो वायुश्चान्तरिक्षं च सन्नते ते मे सं नमतामद ऽ आदित्यश्च द्यौश्च सन्नते ते मे सं नमतामद ऽ आपश्च वरुणश्च सन्नते ते मे सं नमतामदः.
सप्त स ꣳ सदो अष्टमी भूतसाधनी. सकामाँ २ अध्वनस्कुरु संज्ञानमस्तु मेमुना.. (१)

अग्नि और पृथ्वी देव हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. हमें आनंद प्रदान करने की कृपा करें. वायु और अंतरिक्ष देव हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. हमें आनंद प्रदान करने की कृपा करें. आदित्य और स्वर्गलोक हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. हमें आनंद प्रदान करने की कृपा करें. जल और वरुण देव हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. हमें आनंद प्रदान करने की कृपा करें. सात संसद (अग्नि, वायु, अंतरिक्ष, सूर्य, आकाश, जल और वरुण) और आठवीं पृथ्वी को हमारे अनुकूल बनाने की कृपा करें. आप की कृपा से हमारे यज्ञ सकाम (कामना को फलीभूत करने वाले) हों. आप की कृपा से हमें संज्ञान (श्रेष्ठ पूर्ण ज्ञान) हो. (१)

यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः.
ब्रह्मराजन्याभ्या ꣳ शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च.
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृध्यतामुप मादो नमतु.. (२)

जैसे यह वाणी लोगों के लिए कल्याणकारी होती है, वैसे ही हमारे लिए कल्याणकारी हो. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के लिए आप की वाणी कल्याणकारी हो. दक्षिणा देने वाले देवताओं के प्रिय हों. हमारी इच्छाएं फलीभूत हों. हमें आनंद प्राप्त हो. (२)

बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु.
यद्दीदयच्छवस ऽ ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्.
उपयामगृहीतोसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा.. (३)

हे बृहस्पति देव! आप यज्ञ में लोगों द्वारा पूजनीय हैं. आप स्वर्गलोक में सुशोभित होते हैं. आप सब के स्वामी होने योग्य हैं. आप ऋत और इच्छा शक्ति से सारी प्रजा की रक्षा करते हैं. आप हमें श्रेष्ठ धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. आप

अद्‌भुत हैं. आप को उपयाम पात्र में ग्रहण किया गया है. इसीलिए आप बृहस्पति हैं. उपयाम आप का मूल स्थान है. (३)

इन्द्र गोमन्निहा याहि पिबा सोम ꣳ शतक्रतो.
विद्यद्भिर्ग्रावभिः सुतम्.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा गोमत ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा गोमते.. (४)

हे इंद्र देव! आप गोमान और सैकड़ों यज्ञ करने वाले हैं. आप (यज्ञ में) पधारिए. सोमरस पीने की कृपा कीजिए. हम ने पत्थरों से कूट कर, निचोड़ कर सोमरस तैयार किया है. आप गोमान हैं. हम आप को गोमान इंद्र देव के लिए उपयाम में ग्रहण करते हैं. उपयाम आप का मूल स्थान है. (४)

इन्द्रा याहि वृत्रहन्पिबा सोम ꣳ शतक्रतो.
गोमद्भिर्ग्रावभिः सुतम्.
उपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा गोमत ऽ एष ते योनिरिन्द्राय त्वा गोमते.. (५)

हे इंद्र देव! आप वृत्र नाशक और सैकड़ों यज्ञ करने वाले हैं. आप पधारिए. आप सोमरस पीने की कृपा कीजिए. आप के पुत्रों ने पत्थरों से कूट कर सोमरस आप के लिए तैयार किया है. हम ने आप को गोमान इंद्र देव के लिए उपयाम में ग्रहण किया है. वही आप का मूल स्थान है. (५)

ऋतावानं वैश्वानरमृतस्य ज्योतिषस्पतिम्.
अजस्रं घर्ममीमहे.
उपयामगृहीतोसि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा.. (६)

हे वैश्वानर (अग्नि)! आप ऋतवान (सत्यवान) व अमर हैं. आप प्रकाश के स्वामी हैं. हम आप से अजस्र बल चाहते हैं. आप को उपयाम में ग्रहण किया गया है. आप को अग्नि के लिए उपयाम में ग्रहण किया गया है. वही आप का मूल स्थान है. (६)

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिश्रीः.
इतो जातो विश्वमिदं वि चष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण.
उपयामगृहीतासि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा.. (७)

हम वैश्वानर देव की सुमति जैसी सुमति पाएं. वैश्वानर देव संसार के राजा, संसार की शोभा हैं. व देव संसार का निरीक्षण करते हैं और यहीं उत्पन्न हुए हैं. वे सूर्य के समान प्रकाशवान हैं. हम उन को उपयाम में ग्रहण करते हैं. वही उन का मूल स्थान है. (७)

वैश्वानरो न ऽ ऊतय ऽ आ प्र यातु परावतः.
अग्निरुक्थेन वाहसा.
उपयामगृहीतोसि वैश्वानराय त्वैष ते योनिर्वैश्वानराय त्वा.. (८)

वैश्वानर यहां पधारें, वैश्वानर सब ओर से अपने रक्षा साधनों से हमारी रक्षा करने की कृपा करें. उक्थ रूपी वाहन द्वारा अग्नि की उपासना करते हैं. हम आप को उपयाम में ग्रहण करते हैं. वही आप का मूल स्थान है. (८)

अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः.
तमीमहे महागयम्.
उपयामगृहीतोस्यग्नये त्वा वर्चस ऽ एष ते योनिरग्नये त्वा वर्चसे.. (९)

हे अग्नि! आप ऋषि, पवित्र और पांचों वर्णों के पुरोहित हैं. हम आप को चाहते हैं. हम आप के लिए स्तोत्र गाते हैं और उपयाम में ग्रहण करते हैं. वही आप का मूल स्थान है. आप वर्चस्वी हैं. हम भी अग्नि से वर्चस्व पाना चाहते हैं. (९)

महाँ २ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु.
हन्तु पाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि.
उपयामगृहीतोसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा.. (१०)

हे इंद्र देव! आप महान् और हाथ में वज्र रखते हैं. आप सोलह कलाओं वाले हैं. आप हमें सुख देने की कृपा कीजिए. जो हम से द्वेष करते हैं, आप उन पापियों को नष्ट करने की कृपा करें. इंद्र देव की प्रसन्नता के लिए अग्नि को उपयाम में ग्रहण किया जाता है. वही आप का मूल स्थान है. हम वहीं आप की प्रतिष्ठा करते हैं. (१०)

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः.
अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव ऽ इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे.. (११)

हे यजमानो! इंद्र देव धनवान, आनंददाता, आवास दाता और अन्नदाता हैं. हम आप के पुत्र उसी तरह वाणी से आप को पुकारते हैं, जैसे गाएं बछड़ों के लिए रंभाती हैं. (११)

यद्वाहिष्ठं तदग्नये बृहदर्च विभावसो. महिषीव त्वद्रयिस्त्वद्वाजा ऽ उदीरते.. (१२)

हे यजमानो! आप अग्नि के लिए स्तुति कीजिए. आप विशाल, वर्चस्वी, प्रकाशमान व महारानी की तरह उदार हैं. आप अन्न और बल प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१२)

एह्यू षु ब्रवाणि तेग्न ऽ इत्थेतरा गिरः. एभिर्वर्धास ऽ इन्दुभिः.. (१३)

हे अग्नि! आप आइए. हम आप के लिए इस प्रकार वाणी से उपासना करते हैं. आप सोमरस से बढ़ोतरी पाते हैं. (१३)

ऋतवस्ते यज्ञं वि तन्वन्तु मासा रक्षन्तु ते हविः.
संवत्सरस्ते यज्ञं दधातु नः प्रजां च परिपातु नः.. (१४)

सभी ऋतुएं यज्ञ का विस्तार करने की कृपा करें. मास हमारी हवि की रक्षा करने की कृपा करें. संवत्सर यज्ञ को धारण करने की कृपा करें. हम सभी प्रजाजनों का परिपालन करने की कृपा कीजिए. (१४)

उपह्वरे गिरीणा ꣳ सङ्गमे च नदीनाम्. धिया विप्रो अजायत.. (१५)

पर्वत की कंदराओं, पर्वतों और नदियों के संगम पर ब्राह्मणों में बुद्धि पैदा होती है. (१५)

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे. उग्र ꣳ शर्म महि श्रवः.. (१६)

हे सोम! आप उच्चलोक के हैं. आप स्वर्गलोक में रहते हैं. आप हमें श्रेष्ठ भूमि दीजिए. आप उग्र हैं. आप पृथ्वी पर स्रवित होइए (बहिए). आप सुख प्रदान करने की कृपा कीजिए. (१६)

स न ऽ इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः. वरिवोवित्परि स्रव.. (१७)

हे सोम! आप जलमय हैं. आप यज्ञ में इंद्र देव, वरुण देव व मरुद्गण के लिए स्रवित होइए. (१७)

एना विश्वान्यर्य ऽ आ द्युम्नानि मानुषाणाम्. सिषासन्तो वनामहे.. (१८)

आप आइए. आप मनुष्यों के लिए स्वर्ग के सारे सुख प्रदान कीजिए. आप की कृपा से हम सुखपूर्वक जीवन निर्वाह कर सकें. (१८)

अनु वीरैरनु पुष्यास्म गोभिरन्वश्वैरनु सर्वेण पुष्टैः.
अनु द्विपदानु चतुष्पदा वयं देवा नो यज्ञमृतुथा नयन्तु.. (१९)

हमें वीर पुत्र दीजिए. हमें गायों से पुष्ट बनाइए. हमें अश्व दीजिए. हमें सेवक दीजिए. दोपाए और चौपाए हमारे देवताओं के इस यज्ञ को ऋतु के अनुसार ले जाने की कृपा करें. (१९)

अग्ने पत्नीरिहा वह देवानामुशतीरुप. त्वष्टार ꣳ सोमपीतये.. (२०)

हे अग्नि! देव पत्नियां भी आहुति चाहती हैं. उन के लिए भी आहुति देते हैं. त्वष्टा देव को आप सोमपान के लिए हमारे पास लाने की कृपा कीजिए. (२०)

अभि यज्ञं गृणीहि नो ग्नावो नेष्टः पिब ऋतुना. त्व ꣳ हि रत्नधा ऽ असि.. (२१)

हे अग्नि! आप हमारे लिए श्रेष्ठ धन धारिए. आप हमारे गणमान्य यज्ञ को संपन्न कराइए. आप हमारे लिए रत्न धारिए. आप ऋतु के अनुसार सोमरस पीजिए. (२१)

द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत. नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत.. (२२)

हे अग्नि! आप ऋतु के अनुसार इच्छानुसार सोमरस पीने की कृपा कीजिए. आप धनदाता हैं. आप भी यज्ञ में सोमरस को पीने की इच्छा कीजिए. सोमरस पीने के लिए प्रतिष्ठित होइए. (२२)

तवाय ꣳ सोमस्त्वमेह्यर्वाङ् शश्वत्तम ꣳ सुमना ऽ अस्य पाहि.
अस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्या दधिष्वेमं जठर ऽ इन्दुमिन्द्र.. (२३)

हे इंद्र! आप हमारे यज्ञ में पधारिए और कुश के आसन पर विराजिए. यह आप के पीने योग्य सोमरस है. आप आनंदपूर्वक उसे पीजिए. आप अच्छे मन से उस की रक्षा कीजिए. (२३)

अमेव नः सुहवा ऽ आ हि गन्तन नि बर्हिषि सदतना रणिष्टन.
अथा मदस्व जुजुषाणो अन्धसस्त्वष्टर्देवेभिर्जनिभिः सुमद्गणः.. (२४)

हे देव पत्नियो! आप इस यज्ञ मंडप को अपने घर की तरह समझिए. हम आप का आह्वान करते हैं. आप पधार कर कुश के आसन पर विराजिए. आप आनंदित होइए. आप हवि को ग्रहण करने की कृपा कीजिए. (२४)

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया. इन्द्राय पातवे सुतः.. (२५)

हे सोम! आप स्वादिष्ट और मददायी हैं. आप अपनी पवित्र धाराओं से इंद्र देव के पीने के लिए बहें. (२५)

रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहते. द्रोणे सधस्थमासदत्.. (२६)

हे सोम! आप विलक्षण, सर्वद्रष्टा व रक्षक हैं. आप अपने मूल निवास स्थान द्रोण कलश में स्थापित होने की कृपा कीजिए. (२६)

सत्ताईसवां अध्याय

समास्त्वाग्न ऽ ऋतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऽ ऋषयो यानि सत्या.
सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा ऽ आ भाहि प्रदिशश्चतस्त्रः.. (१)

हे अग्नि! सत्यवादी ऋषिगण हर माह, ऋतु व वर्ष में आप की बढ़ोतरी करते हैं. आप अपनी दिव्यता दीजिए. आप संसार को आलोकित व चारों दिशाओं और उपदिशाओं को आभासित करने की कृपा कीजिए. (१)

सं चेध्यस्वाग्ने प्र च बोधयैनमुच्च तिष्ठ महते सौभगाय.
मा च रिषदुपसत्ता ते अग्ने ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये.. (२)

हे अग्नि! आप यजमान को चेताइए व जगाइए! आप ऊंचे आसन पर विराजिए. आप हमें सौभाग्य प्रदान कीजिए. आप हमें अपनी उपसत्ता और हम ब्राह्मणों को अपना वह यश प्रदान कीजिए. आप हमें मान्यता प्रदान करने की कृपा कीजिए. (२)

त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा ऽ इमे शिवो अग्ने संवरणे भवा नः.
सपत्नहा नो अभिमातिजिच्च स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन्.. (३)

हे अग्नि! ब्राह्मण आप का वरण करते हैं. आप हमारे लिए कल्याणकारी होइए. आप हमारे शत्रुओं का संवरण कीजिए. आप शत्रुओं पर हमें जिताइए. आप की कृपा से हम अपने घर में आलस्य रहित हो कर जागते रहें. (३)

इहैवाग्ने अधि धारया रयिं मा त्वा नि क्रन्पूर्वचितो निकारिणः.
क्षत्रमग्ने सुयममस्तु तुभ्यमुपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः.. (४)

हे अग्नि! आप इधर पधारिए. आप हमारे लिए धन धारण करिए. यजमान आप की आज्ञा का उल्लंघन न करें. क्षत्रिय भी आप के वश में हो जाएं. आप की उपासना में बढ़ोतरी हो. आप के भक्त अविनाशी हों. आप उन की बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. (४)

क्षत्रेणाग्ने स्वायुः स ꣳ रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधेये यतस्व.
सजातानां मध्यमस्था ऽ एधि राज्ञामग्ने विहव्यो दीदिहीह.. (५)

हे अग्नि! क्षत्रियों को आप अपनी आयु व उन्हें अपना वैभव प्रदान कीजिए. मित्र देव के साथ रह कर रचनात्मक कार्य करने का यत्न कीजिए. आप सजातियों के बीच रहने की कृपा कीजिए. आप राजा हैं. आप आइए. आप यज्ञ में प्रज्वलित होने की कृपा कीजिए. (५)

अति निहो अति स्त्रिधोत्यचित्तिमत्यरातिमग्ने.
विश्वा ह्यग्ने दुरिता सहस्वाथास्मभ्य ꣳ सहवीरा ꣳ रयिं दाः.. (६)

हे अग्नि! हत्यारों, अत्याचारियों, स्वेच्छाचारियों, शत्रुओं को साहस के साथ दूर करने की कृपा कीजिए. आप हमें वीर पुत्रों के साथसाथ धन भी प्रदान करने की कृपा कीजिए. (६)

अनाधृष्यो जातवेदा ऽ अनिष्टृतो विराडग्ने क्षत्रभृद्दीदिहीह.
विश्वा ऽ आशाः प्रमुञ्चन्मानुषीर्भियः शिवेभिरद्य परि पाहि नो वृधे.. (७)

हे अग्नि! आप को कोई नहीं हरा सकता. आप सब कुछ जानते हैं. आप अनश्वर, विराट्, क्षात्र धर्म के पोषक व सब की आशा हैं. आप मनुष्यों को कष्ट मुक्त कीजिए. आप हमारा आज कल्याण कीजिए. आप सब ओर से हमारी रक्षा व हमारी बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. (७)

बृहस्पते सवितर्बोधयैन ꣳ स ꣳ शितं चित्सन्तरा ꣳ स ꣳ शिशाधि.
वर्धयैनं महते सौभगाय विश्व ऽ एनमनु मदन्तु देवाः.. (८)

हे बृहस्पति व सविता देव! आप इन यजमानों को बोधित व चेतना प्रदान कीजिए. आप यजमानों के सौभाग्य की बढ़ोतरी कीजिए. सभी देवता यजमान के अनुकूल होने व उन को आनंद प्रदान करने की कृपा करें. (८)

अमुत्रभूयादध यद्यमस्य बृहस्पते अभिशस्तेरमुञ्चः.
प्रत्यौहतामश्विना मृत्युमस्माद्देवानामग्ने भिषजा शचीभिः.. (९)

हे बृहस्पति देव! आप हमें यमराज के घर जाने के डर से मुक्त कीजिए. अश्विनी देव हमारे मृत्यु के भय को दूर करने की कृपा करें. अश्विनी देव ओषधियों के ज्ञाता हैं. वे अग्नि को पवित्र बनाने की कृपा करें. (९)

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त ऽ उत्तरम्.
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्.. (१०)

हे सूर्य! आप देवों के देव हैं. हम अंधकार से ऊपर उठें और आत्मावलोकन करें (अपनेआप को देखें). हमें उत्तरोत्तर सुख मिले. हम सविता देव व सब से उत्तम ज्योति को प्राप्त करें. (१०)

ऊर्ध्वा ऽ अस्य समिधो भवन्त्यूर्ध्वा शुक्रा शोची ंष्यग्नेः.
द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः.. (११)

अग्नि की लपटें पवित्र, चमकीली, ऊपर की ओर जाती हैं. वे लपटें समिधा से ऊर्ध्वगमन करती हैं और स्वर्गलोक तक जाती हैं. अग्नि की लपटें यजमान के लिए श्रेष्ठ प्रतीक हैं. (११)

तनूनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः. पथो अनक्तु मध्वा घृतेन.. (१२)

हे अग्नि! आप देवताओं के देव, सर्वज्ञाता, शरीर रक्षक व असुरनाशक हैं. आप मधुर घी की आहुतियों से अपने पथ पर बढ़ने की कृपा कीजिए. आप हमें भी श्रेष्ठ मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा दीजिए. (१२)

मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो नराश ंसो अग्ने. सुकृद्देवः सविता विश्ववारः.. (१३)

हे अग्नि! आप को प्राणी यज्ञ में मधु (आदि सामग्रियों से) पूजते हैं. आप सर्वप्रिय हैं. आप श्रेष्ठ कार्य करने वाले हैं. आप सभी को प्रिय लगते हैं. (१३)

अच्छायमेति शवसा घृतेनेडानो वह्निर्नमसा. अग्नि ंस्रुचो अध्वरेषु प्रयत्सु.. (१४)

अग्नि! यज्ञ में अध्वर्यु प्रयत्नपूर्वक घी से आहुति प्रदान कर रहे हैं. अग्नि को नमन कर रहे हैं. विभिन्न प्रार्थनाओं से अग्नि के समीप जाते हैं. (१४)

स यक्षदस्य महिमानमग्नेः स ईं मन्द्रा सुप्रयसः. वसुश्चेतिष्ठो वसुधातमश्च.. (१५)

हे अग्नि! आप महिमावान, प्रकाशमान, श्रेष्ठ संपत्तिदाता व धनवान हैं. हम आनंदपूर्वक धनधारी अग्नि को आहुति प्रदान करते हैं. (१५)

द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्ते अग्नेः. उरुव्यचसो धाम्ना पत्यमानाः.. (१६)

हे अग्नि! आप देवों का द्वार, व्रतशील व वर्चस्वी हैं. आप हम सभी की रक्षा करते हैं. (१६)

ते अस्य योषणे दिव्ये न योना उषासानक्ता. इमं यज्ञमवतामध्वरं नः.. (१७)

अग्नि की दो दिव्य देवियां हैं—उषा व रात्रि. ये दोनों देवियां हमारे यज्ञ में अग्नि के साथ विराजने की कृपा करें. (१७)

दैव्या होतारा ऽ ऊर्ध्वमध्वरं नोग्नेर्जिह्वामभि गृणीतम्. कृणुतं नः स्विष्टिम्.. (१८)

दिव्य अध्वर्यु अग्नि और वायु! विधिवत इस यज्ञ को संपन्न कराने की कृपा करें. अग्नि की जिह्वा ऊपर की ओर बढ़ती है. वे हमें भी ऊपर बढ़ने की प्रेरणा देने की कृपा करें. (१८)

तिस्रो देवीर्बर्हिरेद ꣳ सदन्त्विडा सरस्वती भारती. मही गृणाना.. (१९)

इड़ा देवी, सरस्वती देवी और भारती देवी महिमामयी हैं. वे गणमान्य हैं. वे (यज्ञ) सदन में पधारने और कुश के आसन पर विराजने की कृपा करें. (१९)

तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु त्वष्टा सुवीर्यम्. रायस्पोषं वि ष्यतु नाभिमस्मे.. (२०)

त्वष्टा देव! अद्‌भुत, सर्वद्रष्टा, श्रेष्ठ वीर्य वाले और गतिमान हैं. वे देव हमें पोषक धन प्रदान करने की कृपा करें. (२०)

वनस्पतेव सृजा रराणस्त्मना देवेषु. अग्निर्हव्य ꣳ शमिता सूदयाति.. (२१)

हे वनस्पति! आप हमारे और देवताओं के लिए ओषधि उपलब्ध कराएं. अग्नि सुखदायी हैं. वे हमारी आहुति को शोधित करने की कृपा करें. (२१)

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेद ऽ इन्द्राय हव्यम्.
विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम्.. (२२)

हे अग्नि! आप सर्वज्ञ हैं. आप इंद्र देव के लिए हमारी ओर से दी गई आहुति व यज्ञ में सभी देवताओं तक हमारी हवि पहुंचाने की कृपा कीजिए. (२२)

पीवो अन्ना रयिवृधः सुमेधाः श्वेतः सिषक्ति नियुतामभिश्रीः.
ते वायवे समनसो वि तस्थुर्विश्वेन्नरः स्वपत्यानि चक्रुः.. (२३)

वायु अन्न व धन से बढ़ोतरी पाते हैं. वे श्रेष्ठ बुद्धि संपन्न, श्वेत व समान मन वाले हैं. श्रेष्ठ मनुष्य अच्छी संतान पाने के लिए वायु की आराधना करते हैं. (२३)

राये नु यं जज्ञतू रोदसीमे राये देवी धिषणा धाति देवम्.
अध वायुं नियुतः सश्चतः स्वा उत श्वेतं वसुधितिं निरेके.. (२४)

देवी देव को धन के लिए धारण करती है. स्वर्गलोक और पृथ्वी लोक हमारे यज्ञ में हमारे लिए धन धारण करें. वायु धनधारी हैं. सभी उन का सेवन करते हैं. (२४)

आपो ह यद्‌बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्.
ततो देवाना ꣳ समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (२५)

जल अपार है. विश्व को अपने में समाए हुए है. अग्नि को गर्भ में धारण करता है. उस से देवताओं की उत्पत्ति हुई. उन के अलावा हम अब किस देवता के लिए हवि का विधान करें? (२५)

यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्.
यो देवेष्वधि देव ऽ एक ऽ आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (२६)

जिन्होंने पृथ्वी के चारों ओर जल देखा, जिस ने यज्ञ धारण करने वालों को

जना, जो देवों के एकमात्र अधिदेव हैं, उन के अलावा अब हम किस देवता के लिए हवि का विधान करें? (२६)

प्र याभिर्यासि दाश्वा ꣳ समच्छा नियुद्भिर्वायविष्टये दुरोणे.
नि नो रयि ꣳ सुभोजसं युवस्व नि वीरं गव्यमश्व्यं च राधः.. (२७)

हे वायु! आप जिन यजमान के पास घोड़े की गति से जाते हैं, उसी युवा गति से हमारे पास आइए. आप हमें वीर संतान, गोधन व अश्वधन दीजिए. आप हमें धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (२७)

आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्.
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः.. (२८)

हे वायु! आप अपने सैकड़ों और हजारों घोड़ों को रथ में जोत कर इस यज्ञ में जल्दी से पधारिए. हे वायु! इस यज्ञ में आप भी आनंदित होइए और अपने कल्याणकारी साधनों से हमारी भी रक्षा करने की कृपा कीजिए. (२८)

नियुत्वान्वायवा गह्यय ꣳ शुक्रो अयामि ते. गन्तासि सुन्वतो गृहम्.. (२९)

हे वायु! शुक्र ग्रह आप को धारण करना चाहते हैं. आप अपने घोड़े रथ में जोतिए. आप हमारी सुनिए. शीघ्र गंतव्य (यजमान के घर) की ओर पधारिए. (२९)

वायो शुक्रो अयामि ते मध्वो अग्रं दिविष्टिषु.
आ याहि सोमपीतये स्पार्हो देव नियुत्वता.. (३०)

हे वायु! आप को शुक्र ग्रह धारण करना चाहते हैं. हे देव! आप अग्रगण्य हैं. आप स्वर्गलोक से पधारिए. आप मधुर सोमरस का पान करने के लिए तेजी से पधारिए. (३०)

वायुरग्रेगा यज्ञप्रीः साकं गन्मनसा यज्ञम्. शिवो नियुद्भिः शिवाभिः.. (३१)

हे वायु! आप अग्रगामी, यज्ञ से प्रीति रखने वाले व कल्याणकारी हैं. आप अपने कल्याणकारी घोड़ों को रथ में जोतिए. आप अपने मन के साथ इस यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. (३१)

वायो ये ते सहस्रिणो रथासस्तेभिरा गहि. नियुत्वान्त्सोमपीतये.. (३२)

हे वायु! आप के जो हजारों रथ हैं, आप उन में घोड़े जोतिए. आप सोमरस पीने के लिए पधारिए. (३२)

एकया च दशभिश्च स्वभूते द्वाभ्यामिष्टये वि ꣳ शती च.
तिसृभिश्च वहसे त्रि ꣳ शताच नियुद्भिर्वायविह ता विमुञ्च.. (३३)

हे वायु! आप एक, दो, तीन, दस, बीस, तीस, तीन सौ और जितने चाहे, उतने घोड़े जोत कर अपने रथ अभीष्ट कार्य के लिए छोड़िए. (३३)

तव वायवृतस्पते त्वष्टुर्जामातरद्भुत. अवा ꣳ स्या वृणीमहे.. (३४)

हे वायु! आप संकल्पशील, अद्‌भुत व त्वष्टा देव के जमाई हैं. हम आप के रक्षा साधनों का वरण करते हैं. (३४)

अभि त्वा शूर नोनुमोदुग्धा ऽ इव धेनवः.
ईशानमस्य जगतः स्वर्दृशमीशानमिन्द्र तस्थुषः.. (३५)

हे इंद्र देव! आप शूरवीर, संसार के स्वामी, सर्वद्रष्टा व ईश्वर हैं. बिना दुही हुई गाय की तरह हम आप से धन पाना चाहते हैं. (३५)

न त्वावाँ २ अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते.
अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे.. (३६)

हे इंद्र देव! आप जैसा दिव्य कोई देव न कभी पृथ्वी पर पैदा हुआ है और न ही होगा. आप धनवान हैं. आप हमें अश्वायित (घोड़ों से युक्त) कीजिए. आप हमें बलशाली बनाइए. हम आप का आह्वान करते हैं. (३६)

त्वामिद्धि हवामहे सातौ वाजस्य कारवः.
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नरस्त्वां काष्ठास्वर्वतः.. (३७)

हे इंद्र देव! आप सत्पति व वृत्रनाशक हैं. याजक सर्वत्र विजय और अन्न बल पाने के लिए आप का आह्वान करते हैं. (३७)

स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया मह स्तवानो अद्रिवः.
गामश्व ꣳ रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे.. (३८)

हे इंद्र देव! आप अद्‌भुत, वज्रधारी व पृथ्वी पर स्तुत्य हैं. आप हमें गोधन और अश्वमय रथ दीजिए. आप हमें बलवान बनाइए, ताकि हम युद्धों में विजय पा सकें. (३८)

कया नश्चित्र ऽ आ भुवदूती सदावृधः सखा. कया शचिष्ठया वृता.. (३९)

हे इंद्र देव! आप हमारे सखा हैं. आप सदैव बढ़ोतरी पाते हैं. आप हमारी किस पवित्र वृत्ति से प्रसन्न हो कर हम पर कृपा करते हैं. (३९)

कस्त्वा सत्यो मदानां म ꣳ हिष्ठो मत्सदन्धसः. दृढा चिदारुजे वसु.. (४०)

हे इंद्र देव! आप धनवान व सत्यवान हैं. कौन सी वस्तु आप को प्रिय है. आनंददायी है, जिस से आप यजमानों पर धन बरसाते हैं ? (४०)

अभी षु ण: सखीनामविता जरितॄणाम्. शतं भवास्यूतये.. (४१)

हे इंद्र देव! आप हमारे मित्र जैसे हैं. आप हम लोगों की रक्षा के लिए सैकड़ों यत्न करते हैं. (४१)

यज्ञा यज्ञा वो अग्नये गिरा गिरा च दक्षसे.
प्र प्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न श ꣳ सिषम्.. (४२)

हर यज्ञ में अग्नि की स्तोत्रों से उपासना की जाती है. आप अमर, सर्वज्ञ, हमारे प्रिय व मित्र हैं. आप प्रशंसित हैं. (४२)

पाहि नो अग्न ऽ एकया पाह्युत द्वितीयया.
पाहि गीर्भिस्तिसृभिरूर्जां पते पाहि चतसृभिर्वसो.. (४३)

हे अग्नि! आप हमारी रक्षा कीजिए. हम एक स्तुति करते हैं. आप हमारी रक्षा कीजिए. हम दो प्रार्थनाओं से उपासना करते हैं. आप हमारी रक्षा कीजिए. हम तीन प्रार्थनाओं से आप की उपासना करते हैं. आप हमारी रक्षा कीजिए. हम चार प्रार्थनाओं से आप की उपासना करते हैं. आप हमारी रक्षा कीजिए. (४३)

ऊर्जो नपात ꣳ स हिनायमस्मयुर्दाशेम हव्यदातये.
भुवद्वाजेष्वविता भुवद्वृध ऽ उत त्राता तनूनाम्.. (४४)

अग्नि ऊर्जस्वी हैं. हवि देने के लिए उन का आह्वान करते हैं. वे हमारे तन की रक्षा करते हैं और हमारी मनोकामना पूरी करते हैं. (४४)

संवत्सरोसि परिवत्सरोसीदावत्सरोसीद्वत्सरो ऽ सि वत्सरोसि.
उषसस्ते कल्पन्तामहोरात्रास्ते कल्पन्तामर्धमासास्ते कल्पन्तां मासास्ते कल्पन्तामृतवस्ते कल्पन्ता ꣳ संवत्सरस्ते कल्पताम्.
प्रेत्या ऽ एत्यै सं चाञ्च प्र च सारय.
सुपर्णचिदसि तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुव: सीद.. (४५)

हे अग्नि! आप संवत्सर, परिवत्सर, इद्वत्सर व वत्सर हैं. उषा आप की है. दिनरात आप के हैं. आधा मास (पक्ष) आप का है. माह आप के हैं. वर्ष आप के हैं. कल्पांत संवत्सर आदि का आप समुचित विस्तार करते हैं. आप आइए. आप इन सब को संवारिए. आप चित्त की प्राणवायु जैसे हैं. आप ध्रुव (स्थिर) हो कर विराजिए. आप हमारी आहुति अंगीकार कीजिए और देवताओं से अंगीकार कराइए. (४५)

अट्ठाईसवां अध्याय

होता यक्षत्समिधेन्द्रमिडस्पदे नाभा पृथिव्या ऽ अधि.
दिवो वर्ष्मन्त्समिध्यत ऽ ओजिष्ठश्चर्षणीसहां वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (१)

होता (पुरोहित) समिधा से इंद्र देव के लिए यज्ञ करते हैं. यज्ञ पृथ्वी और अंतरिक्ष की नाभि है. स्वर्गलोक में समिधा चमक रही है. इंद्र देव ओजस्वी और विजेता हैं. यजमान से अनुरोध है कि वह उन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. उन से अनुरोध है कि वे हवि ग्रहण करने की कृपा करें. (१)

होता यक्षत्तनूनपातमूतिभिर्जेतारमपराजितम्.
इन्द्रं देव ꣳ स्वर्विदं पथिभिर्मधुमत्तमैर्नराश ꣳ सेन तेजसा वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (२)

इंद्र देव तेजस्वी, शरीर के रक्षक, अपने रक्षा साधनों से जीतने वाले और कभी नहीं हारने वाले हैं. होता उन के प्रति प्रसन्नतादायी आहुतियों से यज्ञ करते हैं. वे आत्मज्ञाता हैं. वे मधुर हवि ग्रहण करने की कृपा करें. होता उन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (२)

होता यक्षदिडाभिरिन्द्रमीडितमाजुह्वानममर्त्यम्.
देवो देवैः सवीर्यो वज्रहस्तः पुरन्दरो वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (३)

इंद्र देव अमर, उपासना के योग्य है. वे देवताओं के सर्वेसर्वा और उन के हाथ में वज्र हैं. वे शत्रुओं के नगर नष्ट करने वाले हैं. होता उन के लिए मधुर प्रार्थनाओं से यज्ञ करने की कृपा करें. वे हवि द्वारा आनंदित होने की कृपा करें. (३)

होता यक्षद्बर्हिषीन्द्रं निषद्वरं वृषभं नर्यापसम्.
वसुभी रुद्रैरादित्यैः सयुग्भिर्बर्हिरासदद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (४)

इंद्र देव धनवर्षक, यजमानों का हित चाहने वाले व बलवान हैं. होता कुश के आसन पर विराज कर उन के लिए यज्ञ करते हैं. वे वसु, रुद्र, आदित्य और अपने साथ के अन्य देवों के साथ कुश के आसन पर बैठ कर हवि ग्रहण करने की कृपा करें. होता उन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (४)

होता यक्षदोजो न वीर्यं ಀ सहो द्वार ऽ इन्द्रमवर्धयन्.
सुप्रायणा ऽ अस्मिन्यज्ञे वि श्रयन्तामृतावृधो द्वार ऽ
इन्द्राय मीढुषे व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (५)

होता ने इंद्र देव हेतु यज्ञ किया. उन्होंने उन की बढ़ोतरी की एवं उन के ओज और वीर्य की बढ़ोतरी की. इस यज्ञ में यज्ञ को बढ़ाने वाले द्वार की ओर देवता अच्छी तरह प्रयाण करें. वे इच्छापूर्ति करने वाले हैं. वे यज्ञ में पधारें. अमृत स्वरूप हवि को ग्रहण करने की कृपा करें. हम उन के लिए यज्ञ करते हैं. होता उन के लिए यज्ञ कीजिए. (५)

होता यक्षदुषे इन्द्रस्य धेनू सुदुघे मातरा मही.
सवातरौ न तेजसा वत्समिन्द्रमवर्धतां वीतामाज्यस्य होतर्यज.. (६)

इंद्र देव के लिए पृथ्वी मां जैसी है, अच्छे दूधवाली गायों जैसी है. होता ने महान् उन के लिए पवित्र यज्ञ किया. होता ने अपने तेज से उन की बढ़ोतरी की. जैसे मां के प्यार से बच्चा दृढ़ बनता है, वैसे ही वे हवि से दृढ़ हों. होता! आप उन के लिए यज्ञ कीजिए. (६)

होता यक्षद्दैव्या होतारा भिषजा सखाया हविषेन्द्रं भिषज्यतः.
कवी देवौ प्रचेतसाविन्द्राय धत्त ऽ इन्द्रियं वीतामाज्यस्य होतर्यज.. (७)

अश्विनीकुमार दिव्य, भिषगाचार्य (चिकित्सक) हमारे सखा, इंद्र देव के वैद्य और कवि हैं. वे श्रेष्ठ चित्त वाले हैं. इंद्र देव के लिए स्वास्थ्य धारण करते हैं. होता देवों ने अश्विनीकुमारों के लिए यज्ञ किया. अश्विनीकुमार हवि ग्रहण करने की कृपा करें. होता उन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (७)

होता यक्षत्तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवो ऽ पस ऽ इडा सरस्वती भारती महीः.
इन्द्रपत्नीर्हविष्मतीर्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (८)

होता ने इड़ा, सरस्वती व भारती के लिए यज्ञ किया. तीनों देवियों के लिए होता ने यज्ञ किया. ये तीनों देवियां तीनों लोकों में तीनों ऋतुओं को धारण करने वाले इंद्र देव की आज्ञा का पालन करती हैं. ये तीनों देवियां ओषधि युक्त हैं. तीनों देवियां हविष्मती हों. यजमान इन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (८)

होता यक्षत्त्वष्टारमिन्द्रं देवं भिषज ಀ सुयजं घृतश्रियम्.
पुरुरूप ಀ सुरेतसं मघोनमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (९)

त्वष्टा देव वैभववान, दानी, रोगनाशक, श्रेष्ठ यज्ञकर्त्ता, शोभाधारी व अनेक रूप वाले हैं. उत्तम वीर्य वाले धनवान त्वष्टा ने इंद्र के लिए शक्तियां धारीं. त्वष्टा देव हवि ग्रहण करने की कृपा करें. होता उन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (९)

होता यक्षद्वनस्पति ꣳ शमितार ꣳ शतक्रतुं धियो जोष्टारमिन्द्रियम्.
मध्वा समञ्जन्पथिभि: सुगेभि: स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (१०)

वनस्पति देव शांतिदाता, सैकड़ों यज्ञ करने वाले, बुद्धि योजक (जोड़ने वाले) और इंद्र देव से संबंधित हैं. वे पथ को सुगम बनाने वाले हैं. यज्ञ को मधुर हवियों से पूरते हैं. वे वनस्पति मधुर हवि को ग्रहण करने की कृपा करें. होता उन वनस्पति देव के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (१०)

होता यक्षदिन्द्र ꣳ स्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदस: स्वाहा स्तोकाना ꣳ स्वाहा स्वाहाकृतीना ꣳ स्वाहा हव्यसूक्तीनाम्.
स्वाहा देवा ऽ आज्यपा जुषाणा ऽ इन्द्र ऽ आज्यस्य व्यन्तु होतर्यज.. (११)

इंद्र देव के लिए स्वाहा. आज्य के लिए स्वाहा. मेद के लिए स्वाहा. स्तोत्र के लिए स्वाहा. स्वाहा करने वाले के लिए स्वाहा. हवि के लिए सूक्त गाने वालों के लिए स्वाहा. देवों के लिए स्वाहा. हवि का पान करने वालों के लिए स्वाहा. इंद्र देव हवि का पान करने की कृपा करें. यजमान इंद्र देव के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (११)

देवं बर्हिरिन्द्र ꣳ सुदेवं देवैर्वीरवत्स्तीर्णं वेद्यामवर्धयत्.
वस्तोर्वृतं प्राक्तोर्भृत ꣳ राया बर्हिष्मतोत्यगाद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज.. (१२)

हे इंद्र देव! देवता अच्छी वेदी पर बढ़ोतरी पाते हैं. देवताओं की भी बढ़ोतरी करते हैं. देवगण कुश के आसन पर विराजने व हवि का भोग लगाने की कृपा करें. यजमान कुश के आसन से युक्त हैं. यजमान ऐश्वर्य पाने व धन धारण करने के लिए यज्ञ करते हैं. (१२)

देवीर्द्वार ऽ इन्द्र ꣳ सङ्घाते वीड्वीर्यामन्नवर्धयन्.
आ वत्सेन तरुणेन कुमारेण च मीवतापार्वाण ꣳ रेणुककाटं नुदन्तां वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (१३)

इंद्र देव देवों के द्वार हैं. सब ने मिल कर उन के पराक्रम व बल की बढ़ोतरी की. इंद्र देव बाल्य, युवा और कुमारावस्था में होने वाले हानिकारी तत्त्वों व धूल भरे बादलों को भी रोकते हैं. वे यजमान को वैभव प्रदान करने व वैभव धारण करने की कृपा करें. वे यजमान के घर में सुखशांति के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. हे यजमानो! आप इंद्र देव के लिए यज्ञ कीजिए. (१३)

देवी उषासानक्तेन्द्रं यज्ञे प्रयत्यह्वेताम्.
दैवीर्विश: प्रायासिष्टा ꣳ सुप्रीते सुधिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज.. (१४)

उषा देवी और रात्रि देवी प्रेमिल हैं. यज्ञ में उन का आह्वान कीजिए. वे यजमानों को अच्छी प्रीति और अच्छी बुद्धि के लिए प्रेरित करती हैं. हे यजमानो! आप

यज्ञ कीजिए ताकि वे आप के लिए धन धारण कर सकें. आप को धन प्रदान कर सकें. (१४)

देवी जोष्ट्री वसुधिती देवमिन्द्रमवर्धताम्.
अयाव्यन्याघा द्वेषा ꣳ स्यान्या वक्षद्वसु वार्याणि यजमानाय शिक्षिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज.. (१५)

देवी जोशीली, धन धारण करने वाली, इंद्र देव की बढ़ोतरी करने वाली, द्वेषों व पापों को दूर करने वाली हैं. यजमान के लिए धन धारने की कृपा कीजिए. यजमान को धन प्राप्ति की शिक्षा दीजिए. यजमान इस सब के लिए यज्ञ करें. (१५)

देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघे पयसेन्द्र मवर्धताम्.
इषमूर्जमन्या वक्षत्सग्धि ꣳ सपीतिमन्या नवेन पूर्वं दयमाने पुराणेन
नवमधातामूर्जमूर्जाहुती ऊर्जयमाने वसु वार्याणि यजमानाय शिक्षिते वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज.. (१६)

देवी ने इंद्र देव को ऊर्जस्वी बनाया. पयस से उन की बढ़ोतरी की. देव अन्न शक्ति से युक्त हैं. देवी जल शक्ति से युक्त हैं. देवी दयामयी, पुरातन तत्त्वों को जानने वाली हैं व नए और पुराने अन्न को धारण करती हैं. वे यजमान के लिए महान् ऐश्वर्य प्रदान करने उस को स्थायित्व प्रदान करने की कृपा करें. देवगण हव्यपान की कृपा करें. यजमान गण इन के लिए यज्ञ करें. (१६)

देवा दैव्या होतारा देवमिन्द्रमवर्धताम्.
हताघश ꣳ सावाभार्ष्टां वसु वार्याणि यजमानाय शिक्षितौ वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज.. (१७)

होता दिव्य है. वह (यज्ञ से) देवी की बढ़ोतरी करने की कृपा करे. होता इंद्र देव की बढ़ोतरी करने की कृपा करें. देव और देवी हमारा वैभव बढ़ाने की कृपा करें. देवी और देव यजमान को वैभव प्रदान कराने के लिए हवि ग्रहण करने की कृपा करें. देव और देवी उस वैभव को स्थायी बनाने की कृपा करें. हे यजमान! आप भी इसीलिए यज्ञ करने की कृपा करें. (१७)

देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीः पतिमिन्द्रमवर्धयन्.
अस्पृक्षद्भारती दिव ꣳ रुद्रैर्यज्ञ ꣳ सरस्वतीडा वसुमती गृहान् वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (१८)

इंद्र देव पालक हैं. तीन देवियों ने उन की बढ़ोतरी की. भारती देवी स्वर्गलोक का व रुद्र यज्ञ का स्पर्श करते हैं. सरस्वती, इड़ा और वसुमती घर का स्पर्श करती हैं. तीनों देवियां यजमान के लिए धन धारने की कृपा करें. यजमान इस के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (१८)

देव ऽ इन्द्रो नराश ꣳ सस्त्रिवरूथस्त्रिबन्धुरो देवमिन्द्रमवर्धयत्.
शतेन शितिपृष्ठानामाहित: सहस्रेण प्रवर्त्तते मित्रावरुणेदस्य होत्रमर्हतो बृहस्पति:
स्तोत्रमश्विनाध्वर्यवं वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज.. (१९)

इंद्र बहुप्रशंसित हैं. तीनों लोकों के बंधु हैं. यज्ञ देव इंद्र देव की बढ़ोतरी की कृपा करें. इंद्र देव सैकड़ों काली पीठ वाली गायों से शोभते हैं. कर्मनिष्ठ वरुण, स्तोता बृहस्पति एवं अध्वर्यु अश्विनीकुमारद्वय इस यज्ञ के होता हैं. देवगण यजमानों को वैभव दें. देवगण यजमानों के लिए धन धारने की कृपा करें. होता इस के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (१९)

देवो देवैर्वनस्पतिर्हिरण्यपर्णो मधुशाख: सुपिप्पलो देवमिन्द्रमवर्धयत्.
दिवमग्रेणास्पृक्षदान्तरिक्षं पृथिवीमदृ ꣳ हीद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज.. (२०)

वनस्पति देव सोने के पत्तों से युक्त, मधुर शाखाओं वाले और उत्तम फलों वाले हैं. वनस्पति इंद्र देव की बढ़ोतरी करने की कृपा करें. वनस्पति देव अपने उग्र त्याग से स्वर्गलोक व अंतरिक्षलोक का स्पर्श करते हैं. वनस्पति देव पृथ्वीलोक में व्याप्त हैं. वनस्पति देव यजमानों को धन देने व धन धारने की कृपा करें. होता इस के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (२०)

देवं बर्हिर्वारितीनां देवमिन्द्रमवर्धयत्.
स्वासस्थमिन्द्रेणासन्नमन्या बर्ही ꣳ ष्यभ्यभूद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज.. (२१)

हे देवगण! इंद्र देव कुश के आसन पर विराजते हैं. हे देवगण! उन की बढ़ोतरी करने की कृपा करें. वे आकाश में स्थित वस्तुओं को अभिभूत करने व यजमान को ऐश्वर्य देने की कृपा करें. उस वैभव को स्थिर करने की कृपा करें. यजमान उस वैभव को पाने के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (२१)

देवो अग्नि: स्विष्टकृद्देवमिन्द्रमवर्धयत्.
स्विष्टं कुर्वन्त्स्विष्टकृत्स्विष्टमद्य करोतु नो वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज.. (२२)

अग्नि इष्ट कार्य की पूर्ति करते हैं. इंद्र देव की बढ़ोतरी करते हैं. इंद्र देव आज हमारे इष्ट कार्य की पूर्ति करने की कृपा करें. (सदैव) इष्ट कार्य की पूर्ति करने की कृपा करें. वे यजमान को वैभव प्रदान करने की कृपा करें. आप यजमान के लिए वैभव धारण करने की कृपा करें. यजमान उन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (२२)

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमान: पचन्पक्ती: पचन्पुरोडाशं बध्नन्निन्द्राय छागम्.
सूपस्था ऽ अद्य देवो वनस्पतिरभवदिन्द्राय छागेन.
अघत्तं मेदस्त: प्रति पचताग्रभीदवी वृधत्पुरोडाशेन.
त्वामद्य ऋषे.. (२३)

अग्नि ने आज होता का वरण किया. पचने योग्य वस्तु व पुरोडाश को पकाया. इंद्र देव के लिए बकरी को बांधा. आज वनस्पति देव ने बकरी के दूध से इंद्र देव की बढ़ोतरी की. आज पुरोडाश पका कर उस से उन की बढ़ोतरी की. हे ऋषि गणो! आप भी ऐसा करने की कृपा कीजिए. (२३)

होता यक्षत्समिधानं महद्यशः सुसमिद्धं वरेण्यमग्निमिन्द्रं वयोधसम्.
गायत्रीं छन्द ऽ इन्द्रियं त्र्यविं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (२४)

होता ने अग्नि और इंद्र देव के लिए यज्ञ किया. दोनों देव महान् यशस्वी, श्रेष्ठ समिधा से युक्त, वरेण्य व आयुधारी हैं. होता गायत्री छंद और इंद्रिय शक्ति के द्वारा उन के लिए आहुति भेंट करते हैं. होता ऊर्जा प्रकाश और उन की किरणों से उन के लिए आहुति भेंट करते हैं. (२४)

होता यक्षत्तनूनपातमुद्भिदं यं गर्भमदितिर्दधे शुचिमिन्द्रं वयोधसम्.
उष्णिहं छन्द ऽ इन्द्रियं दित्यवाहं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (२५)

होता ने इंद्र देव के लिए यज्ञ किया. उन को अदिति देवी ने गर्भ में धारा. वे आयुधारी हैं. होता उष्णिक् छंद में इंद्र देव की स्तुति करते हैं. होता इंद्रियशक्ति से उन को हवि प्रदान करते हैं. वे दित्यवाट् गौ (यज्ञीय प्रक्रिया संचालित करने वाली किरणें) धारने वाले हैं. यजमान उन के लिए आहुति समर्पित करते हैं. प्रयाज देव के साथ वे हमारी हवि ग्रहण करें. (२५)

होता यक्षदीडेन्यमीडितं वृत्रहन्तममिडाभिरीड्य ँ सहः सोममिन्द्रं वयोधसम्.
अनुष्टुभं छन्द ऽ इन्द्रियं पञ्चाविं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (२६)

होता इंद्र देव के लिए यज्ञ करते हैं. वे वृत्रासुरनाशक व सुखदाता हैं. सोम के साथ आनंददाता व आयुधारी हैं. हम अपनी प्रार्थनाओं के द्वारा बारंबार उन की उपासना करते हैं. हम इंद्र देव के लिए यज्ञ करते हैं. हम अनुष्टुप् छंद में उन की स्तुति करते हैं. इंद्रिय शक्ति के द्वारा हम पंचावि गायों (पंचभूतों में व्याप्त किरणें) से उन को आहुति भेंट करते हैं. प्रयाज देव इंद्रादि देवता के साथ आहुति ग्रहण करने की कृपा करें. (२६)

होता यक्षत्सुबर्हिषं पूषण्वन्तममर्त्य ँ सीदन्तं बर्हिषि प्रियेमृतेन्द्रं वयोधसम्.
बृहतीं छन्द ऽ इन्द्रियं त्रिवत्सं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (२७)

होता इंद्र देव के लिए यज्ञ करते हैं. वे कुश के आसन पर विराजते हैं. वे पोषकता से युक्त, अमर हैं, प्रिय हैं, अमृतराज व आयुधारी हैं. हम बृहती छंद में उन की स्तुति करते हैं. हम इंद्रिय शक्ति से उन की स्तुति करते हैं. हम तीन बछड़ों वाली गाय से उन की स्तुति करते हैं. प्रयाज देव इंद्र आदि देव सहित हवि ग्रहण करने की कृपा करें. यजमान आहुति भेंट करने की कृपा करें. (२७)

होता यक्षद्व्यचस्वतीः सुप्रायणा ऽ ऋतावृधो द्वारो देवीर्हिरण्ययीर्ब्रह्माणमिन्द्रं वयोधसम्.
पङ्क्तिं छन्द ऽ इहेन्द्रियं तुर्यवाहं गां वयो दधद्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (२८)

होता इंद्र देव के लिए यज्ञ करते हैं. वे तुर्यवाट्, वाहक (स्वेदज, अंडज, उद्भिज एवं जरायुज चारों योनियों), आयुधारी, ब्रह्मज्ञानी, सुनहरे द्वार जैसे यज्ञ की वेदी वाले व सुगम हैं. होता उन के लिए पंक्ति छंद से स्तुति व इंद्रिय शक्ति से उन की उपासना करते हैं. प्रयाज एवं इंद्र देव आहुति स्वीकार करने की कृपा करें. यजमान गण उन के लिए यज्ञ करें. (२८)

होता यक्षत्सुपेशसा सुशिल्पे बृहती उभे नक्तोषासा न दर्शते विश्वमिन्द्रं वयोधसम्.
त्रिष्टुभं छन्द ऽ इहेन्द्रियं पष्ठवाहं गां वयो दधद्वीतामाज्यस्य होतर्यज.. (२९)

होता ने इंद्र देव के लिए यज्ञ किया. वे आयुधारी हैं. उषा और रात्रि विशाल हैं. वे अच्छे शिल्प वाली और सर्वव्यापक हैं. दोनों देवियां हवि स्वीकारने की कृपा करें. हम त्रिष्टुप् छंद से इन की व इंद्रिय शक्ति से उन की उपासना करते हैं. हम उन के लिए भार सहने वाली पृष्टवाही गौएं धारण करते हैं. प्रयाज एवं इंद्र देव हवि स्वीकारें यजमान उन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (२९)

होता यक्षत्प्रचेतसा देवानामुत्तमं यशो होतारा दैव्या कवी सयुजेन्द्रं वयोधसम्.
जगतीं छन्द ऽ इन्द्रियमनड्वाहं गां वयो दधद्वीतामाज्यस्य होतर्यज.. (३०)

होता इंद्र देव और सहयोगी देवों के लिए यज्ञ करते हैं. इंद्र देव दिव्य, यशस्वी, कवि व आयुधारी हैं. यजमान जगती छंद से उन की उपासना करते हैं. इंद्रिय शक्ति से उन की उपासना करते हैं. प्रयाज सहित इंद्र देव हवि स्वीकारें. यजमान उन के लिए यज्ञ करें. (३०)

होता यक्षत्पेशस्वतीस्तिस्रो देवीर्हिरण्ययीर्भारतीर्बृहतीर्महीः पतिमिन्द्रं वयोधसम्.
विराजं छन्द ऽ इहेन्द्रियं धेनुं गां न वयो दधद्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३१)

होता ने इंद्र देव के लिए यज्ञ किया. पालक इंद्र देव इड़ा, सरस्वती व भारती देवी के साथ हैं. ये देवियां आयुधारी, स्वर्णमयी, विशाल और महिमामयी हैं. हम विराज छंद से इंद्र देव के लिए उपासना करते हैं. हम इंद्रिय शक्ति से इंद्र देव की उपासना करते हैं. हम दुधारू गाएं उन के लिए धारण करते हैं. हम यजमान उन के लिए आहुति भेंट करें. यजमान उन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (३१)

होता यक्षत्सुरेतसं त्वष्टारं पुष्टिवर्धन ꣳ रूपाणि बिभ्रतं पृथक् पुष्टिमिन्द्रं वयोधसम्.
द्विपदं छन्द ऽ इन्द्रियमुक्षाणं गां न वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (३२)

होता ने त्वष्टा और इंद्र देव के लिए यज्ञ किया. दोनों देव पोषकता बढ़ाने वाले हैं, वे रूपधारी व प्राणियों के पालनहार हैं. हम द्विपदा छंद में रची प्रार्थना से उन की उपासना करते हैं. हम इंद्रिय शक्ति से उन के लिए उपासना करते हैं. यजमान

इन दोनों देवों को हवि भेंट करें. यजमान इन दोनों देवों के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (३२)

होता यक्षद्वनस्पति ꣳ शमितार ꣳ शतक्रतु ꣳ हिरण्यपर्णमुक्थिन ꣳ रशनां बिभ्रतं वशिं भगमिन्द्रं वयोधसम्.
ककुभं छन्द ऽ इहेन्द्रियं वशां वेहतं गां वयो दधद्वेत्वाज्यस्य होतर्यज.. (३३)

होता ने इंद्र देव के लिए यज्ञ किया. वनस्पति देव शांतिदायी, सैकड़ों यज्ञ करने वाले, सोने के पत्तों वाले, चाबुकधारी, आयुवर्धक व सौभाग्यदायी हैं. यजमान ने वनस्पति देव के लिए यज्ञ किया. हम यजमान ककुभ छंद से इन दोनों देवों की उपासना करते हैं. इंद्रिय शक्ति से उन की उपासना करते हैं. वंध्या गायों को धारण करते हैं. वनस्पति और इंद्र देव आहुति स्वीकारने की कृपा करें. यजमान इन के लिए हवन करें. (३३)

होता यक्षत्स्वाहाकृतीरग्निं गृहपतिं पृथग्वरुणं भेषजं कविं क्षत्रमिन्द्रं वयोधसम्.
अतिच्छन्दसं छन्द ऽ इन्द्रियं बृहदृषभं गां वयो दधद्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज.. (३४)

होता अग्नि के लिए यज्ञ करते हैं. अग्नि बलवान, आयुधारी, गृहपति, वैद्य, कवि व स्वाहायुक्त हैं. हम छंदस छंद से अग्नि और इंद्र देव की उपासना करते हैं. दोनों देव हवि स्वीकारने की कृपा करें. हम इंद्रिय शक्ति से उन की उपासना करते हैं. यजमान दोनों देवों के लिए यज्ञ करें. (३४)

देवं बर्हिर्वयोधसं देवमिन्द्रमवर्धयत्.
गायत्र्या छन्दसेन्द्रियं चक्षुरिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज.. (३५)

इंद्र देव कुश के आसन पर विराजते हैं. वे आयुवर्द्धक हैं. देवताओं ने उन की बढ़ोतरी की. हम गायत्री छंद से इंद्र देव की उपासना और अपनी नेत्र शक्ति से उन का ध्यान धरते हैं. वे ऐश्वर्य धारण करते हैं. वे धन प्रदान करते हैं. यजमान इंद्र देव के लिए यज्ञ करें. (३५)

देवीर्द्वारो वयोधस ꣳ शुचिमिन्द्रमवर्धयन्.
उष्णिहा छन्दसेन्द्रियं प्राणमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (३६)

हे होता! आप इंद्र देव के लिए यज्ञ करते हैं. देवियों ने उन की आयु व पवित्रता की बढ़ोतरी की. हम उष्णिक् छंद में उन की उपासना करते हैं. हम उन को प्राण देते हैं. वे हमारे लिए धन धारते हैं. वे हमें धन प्रदान करने की कृपा करें. होता उन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (३६)

देवी उषासानक्ता देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम्.
अनुष्टुभा छन्दसेन्द्रियं बलमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज.. (३७)

उषा देवी और रात्रि देवी इंद्र देव की आयुवृद्धि व उन की बढ़ोतरी करने की कृपा करें. हम उन की अनुष्टुप् छंद में उपासना करते हैं. देवियों ने इंद्र देव में बल व आयु की स्थापना की. देव हमारे लिए धन धारते हैं. देव हमें धन प्रदान करें. हे होता! आप उन के लिए यज्ञ करने की कृपा कीजिए. (३७)

देवी जोष्ट्री वसुधिती देवमिन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम्.
बृहत्या छन्दसेन्द्रिय ꣳ श्रोत्रमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज.. (३८)

देवी जोशीली, धनधारिणी और इंद्र देव की आयु बढ़ाती हैं. हम देवताओं की उपासना करते हैं. हम अपनी कर्णशक्ति व अपनी आयुशक्ति इंद्र देव में लगाते हैं. वे हमारे लिए धन धारते हैं. वे हमें धन प्रदान करें. उन के लिए यजमान यज्ञ करें. (३८)

देवी ऊर्जाहुती दुघे सुदुघे पयसेन्द्रं वयोधसं देवी देवमवर्धताम्.
पङ्क्त्या छन्दसेन्द्रिय ꣳ शुक्रमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज.. (३९)

देवी ऊर्जावती हैं. इंद्र देव के लिए अच्छी तरह दूध का दोहन करती हैं. देवी इंद्र देव के लिए आयु धारती और उन की बढ़ोतरी करती हैं. हम पंक्ति छंद में उन की उपासना करते हैं. हम अपना पराक्रम उन को देते हैं. हम अपनी आयु उन के लिए धारते हैं. वे हमारे लिए धन धारते हैं. यजमान उन के लिए हवन करने की कृपा करें. (३९)

देवा दैव्या होतारा देवमिन्द्रं वयोधसं देवौ देवमवर्धताम्.
त्रिष्टुभा छन्दसेन्द्रियं त्विषिमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वीतां यज.. (४०)

दिव्य होता इंद्र देव के लिए यज्ञ करते हैं. वे उन के लिए आयु धारण करते हैं. देवताओं ने उन की बढ़ोतरी की. हम त्रिष्टुप् छंद से उन की उपासना करते हैं. वे हमारे लिए धन धारते हैं. वे हमें धन प्रदान करें. यजमान उन के लिए यज्ञ करने की कृपा करें. (४०)

देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीर्वयोधसं पतिमिन्द्रमवर्धयन्.
जगत्या छन्दसेन्द्रिय ꣳ शूषमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य व्यन्तु यज.. (४१)

तीनों देवियां इंद्र देव के लिए आयु धारती हैं. वे पालक इंद्र देव की बढ़ोतरी करती हैं. हम जगती छंद से उन की उपासना करते हैं. हम अपनी आयु व अपनी इंद्रिय शक्ति उन को अर्पित करते हैं. यजमान उन के लिए यज्ञ करें. (४१)

देवो नराश ꣳ सो देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत्.
विराजा छन्दसेन्द्रिय ꣳ रूपमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज.. (४२)

यज्ञ देव ने इंद्र देव की बहुविध प्रशंसा की. वे उन के लिए आयु धारते हैं. वह

उन की बढ़ोतरी करते हैं. हम विराज छंद से उन की उपासना करते हैं. हम अपना रूप व आयु उन को अर्पित करते हैं. वे धन धारी हैं. वे हमें धन प्रदान करें. यजमान उन के लिए यज्ञ करें. (४२)

देवो वनस्पतिर्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत्.
द्विपदा छन्दसेन्द्रियं भगमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज.. (४३)

वनस्पति देव इंद्र देव के लिए आयु धारते हैं. वनस्पति देव उन की बढ़ोतरी करते हैं. हम द्विपद छंद से उन की स्तुति करते हैं. हम अपना सौभाग्य व अपनी आय उन को सौंपते हैं. वे धनधारी हैं. वे हमें धन प्रदान करें. यजमान उन के लिए यज्ञ करें. (४३)

देवं बर्हिर्वारितीनां देवमिन्द्रं वयोधसं देवं देवमवर्धयत्.
ककुभा छन्दसेन्द्रियं यश ऽ इन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज.. (४४)

इंद्र देव कुश के आसन पर विराजते हैं. बर्हिदेव उन के लिए आयु धारते व उन की बढ़ोतरी करते हैं. हम ककुप् छंद से उन की स्तुति करते हैं. हम अपना यश उन को सौंपते हैं. हम अपनी आयु उन को सौंपते हैं. वे धनधारी हमें धन प्रदान करें. यजमान उन के लिए यज्ञ करें. (४४)

देवो अग्निः स्विष्टकृद्देवमिन्द्रं वयोधसं देवो देवमवर्धयत्.
अतिच्छन्दसा छन्दसेन्द्रियं क्षत्रमिन्द्रे वयो दधद्वसुवने वसुधेयस्य वेतु यज.. (४५)

अग्नि इंद्र देव की वीरता और आयु की बढ़ोतरी करते हैं. हम अतिच्छंद से उन की उपासना करते हैं. हम अपनी वीरता व अपनी आयु उन को सौंपते हैं. वे धनधारी हैं. वे हमें जीवन प्रदान करें. यजमान उन के लिए यज्ञ करें. (४५)

अग्निमद्य होतारमवृणीतायं यजमानः पचन्पक्तीः पचन्पुरोडाशं बध्नन्निन्द्राय वयोधसे छागम्.
सूपस्था ऽ अद्य देवो वनस्पतिरभवदिन्द्राय वयोधसे छागेन.
अघत्तं मेदस्तः प्रतिपचताग्रभीदवीवृधत्पुरोडाशेन. त्वामद्य ऋषे.. (४६)

अग्नि ने आज होता को वरण किया! पचने योग्य वस्तु और पुरोडाश को पकाया. इंद्र देव के लिए बकरी को बांधा. वनस्पति देव ने बकरी के दूध से व पुरोडाश पका कर उन की बढ़ोतरी की. हे ऋषि गणो! आप भी ऐसा करने की कृपा कीजिए. (४६)

उनतीसवां अध्याय

समिद्धो अञ्जन् कृदरं मतीनां घृतमग्ने मधुमत्पिन्वमानः.
वाजी वहन् वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमा सधस्थम्.. (१)

हे अग्नि! आप समिधा को प्रज्वलित करें. आप मतिमान के हृदय के प्रिय भावों को भी देवों तक पहुंचाइए. आप मधुर घी का सेवन कीजिए. आप सर्वज्ञ हैं. आप हवि वहन कर के बलशाली देवता को उसे भेंट कीजिए. (१)

घृतेनाञ्जन्त्सं पथो देवयानान् प्रजानन् वाज्यप्येतु देवान्.
अनु त्वा सप्ते प्रदिशः सचन्ता ꣳ स्वधामस्मै यजमानाय धेहि.. (२)

हे अग्नि! आप देवताओं का पथ घी से अभिषिंचित व उन्हें हवि से आप्यायित (प्रसन्न) कर दीजिए. आप सातों दिशाएं सींच दीजिए. आप यजमान के लिए स्वधा धारिए. (२)

ईड्यश्चासि वन्द्यश्च वाजिन्नाशुश्चासि मेध्यश्च सप्ते.
अग्निष्ट्वा देवैर्वसुभिः सजोषाः प्रीतं वह्निं वहतु जातवेदाः.. (३)

हे अग्नि! आप सर्वज्ञ हैं. आप वसुओं से प्रेम रखते हैं. आप प्रीतिपूर्वक अग्नि को ले जाने व अन्न को पवित्र कीजिए. आप वंदनीय हैं. (३)

स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम्.
देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु.. (४)

देवताओं से युक्त अदिति देवी प्रसन्नता सहित सविता देव को धारण करें. अदिति देवी का कुश का आसन विस्तृत है. अदिति देवी सुखदायी हैं. अदिति देवी पृथ्वी पर अपनी विशालता से फैली हुई हैं. (४)

एता ऽ उ वः सुभगा विश्वरूपा वि पक्षोभिः श्रयमाणा ऽ उदातैः.
ऋष्वाः सतीः कवषः शुम्भमाना द्वारो देवीः सुप्रायणा भवन्तु.. (५)

देवी के द्वार सौभाग्यदाता, बहुत स्वरूप व पंख के आकार वाले हैं. खोलते और बंद करते समय वे उदात्त ध्वनि करते हैं. ऋषि, सती और कवियों द्वारा खोले जाने पर जाने में सुकर हों. (५)

अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि संविदाने.
उषासा वा ꣳ सुहिरण्ये सुशिल्पे ऋतस्य योनाविह सादयामि.. (६)

हे रात्रि और उषा देवी! आप स्वर्णमयी, श्रेष्ठ शिल्पी व ऋत की योनि हैं. हम यहां आप को स्थापित करते हैं. आप मित्र देव और वरुण देव के बीच भ्रमण करती हैं. आप यज्ञ का मुख हैं. आप यज्ञ को ज्योतित (प्रकाशित) करने वाली हैं. (६)

प्रथमा वा ꣳ सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा.
अपिप्रयं चोदना वां मिमाना होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता.. (७)

दोनों देव प्रथम वंदनीय, सारथी युक्त रथ वाले और श्रेष्ठ वर्ण वाले हैं. आप सभी भुवनों को देखते हुए जाते हैं. आप यजमानों को उन के प्रिय कामों के लिए प्रेरित करते हैं. आप दिशाओं और प्रदिशाओं को प्रकाशित करते हैं. (७)

आदित्यैर्नो भारती वष्टु यज्ञ ꣳ सरस्वती सह रुद्रैर्न ऽ आवीत्.
इडोपहूता वसुभिः सजोषा यज्ञं नो देवीरमृतेषु धत्त.. (८)

आदित्य गणों के साथ भारती देवी व रुद्रगणों के साथ सरस्वती देवी हमारे यज्ञ की रक्षा करने की कृपा करें. वसुओं के साथ आमंत्रित इड़ा देवी यज्ञ की रक्षा करने व हमारे लिए अमृत धारने की कृपा करें. (८)

त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरर्वा जायत आशुरश्वः.
त्वष्टेदं विश्वं भुवनं जजान बहोः कर्तारमिह यक्षि होतः.. (९)

त्वष्टा देव ने देवों को चाहने वाली वीर संतान पैदा की. त्वष्टा देव ने शीघ्र जाने वाले अश्व पैदा किए. त्वष्टा देव ने सारा विश्व पैदा किया. त्वष्टा देव बहुरूपी जगत् के कर्ता हैं. होता यज्ञ करने की कृपा करें. (९)

अश्वो घृतेन त्मन्या समक्त उप देवाँ २ ऋतुशः पाथ ऽ एतु.
वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत्.. (१०)

हे वनस्पति देव! आप अग्नि की कृपा से घी से घोड़े को भलीभांति सींचिए. अन्नमय हवि को देवों और उपदेवों के पास पहुंचाने की कृपा कीजिए. आप हवि को अन्य देवों के पास पहुंचाने की कृपा कीजिए. (१०)

प्रजापतेस्तपसा वावृधानः सद्यो जातो दधिषे यज्ञमग्ने.
स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा याहि साध्या हविरदन्तु देवाः.. (११)

हे अग्नि! आप तुरंत उत्पन्न होते ही बढ़ोतरी को प्राप्त हो जाते हैं. आप यज्ञ को धारण कर लेते हैं. आप अग्रगामी हैं. स्वाहा कर के हवि समर्पित किए जाने पर आप उसे स्वीकार करते हैं. आप आगे चलिए. आप हमारा कार्य साधिए. आप की कृपा से देवगण शीघ्र हमारी हवि को स्वीकारने की कृपा करें. (११)

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽ उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्.
श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्.. (१२)

हे मेघ देव! आप की गति बाज पक्षी की गति जैसी है. आप हिरण बाहु की तरह चंचल हैं. आप सर्वप्रथम उत्पन्न हुए. उत्पन्न होते ही आप ने क्रंदन किया. आप समुद्र से उत्पन्न हुए. उत्पन्न होते ही आप स्तुत्य हो गए. आप की महिमा सर्वत्र व्याप्त हो गई. (१२)

यमेन दत्तं त्रित एनमायुनगिन्द्र ऽ एणं प्रथमो अध्यतिष्ठत्.
गन्धर्वो अस्य रशनामगृभ्णात् सूरादश्वं वसवो निरतष्ट.. (१३)

वायु देव ने यम के द्वारा दिए गए घोड़े को रथ में जोता. इंद्र देव सब से पहले इस घोड़े पर बैठे. गंधर्व ने इस की लगाम ग्रहण की. वसुगणों ने इसे सूर्यमंडल से निकाला. (१३)

असि यमो अस्यादित्यो अर्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्रतेन.
असि सोमेन समया विपृक्त ऽ आहुस्ते त्रीणि दिवि बन्धनानि.. (१४)

हे मेघ देव! गुप्त व्रत के कारण आप यम हैं. गुप्त व्रत के कारण आप आदित्य हैं. गुप्त व्रत के कारण आप तीनों लोकों में व्याप्त हैं. आप सोम के साथ एकमेक हैं. स्वर्गलोक में आप के तीन बंधन बताए गए हैं. (१४)

त्रीणि त ऽ आहुर्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सु त्रीण्यन्तः समुद्रे.
उतेव मे वरुणश्छन्त्स्यर्वन् यत्रा त ऽ आहुः परमं जनित्रम्.. (१५)

हे मेघ देव! स्वर्गलोक में तीन बंधन बताए गए हैं. तीन ही बंधन जल में बताए गए हैं. तीन ही बंधन समुद्र में बताए गए हैं. उतने ही बंधन अंतरिक्ष में बताए गए हैं. आप परम जनक हैं. हम वरुण रूप में आप की स्तुति करते हैं. (१५)

इमा ते वाजिन्नवमार्जनानीमा शफाना ꣳ सनितुर्निधाना.
अत्रा ते भद्रा रशना ऽ अपश्यमृतस्य या ऽ अभिरक्षन्ति गोपाः.. (१६)

हे बलवान मेघ देव! आप जिनजिन को सींचते हैं, हम उनउन को देखते हैं. आप के खुरों के निशान हम ने देखे हैं. यहां आप की कल्याणकारी रस्सी है, जो ग्वालों व अमरता की रक्षा करती है. (१६)

आत्मानं ते मनसारादजानामवो दिवा पतयन्तं पतङ्गम्.
शिरो अपश्यं पथिभिः सुगेभिररेणुभिर्जेहमानं पतत्रि.. (१७)

हम आप को मन से जानते हैं. स्वर्गलोक से नीचे की ओर गिरते हुए सूर्य को जानते हैं. आप जब पथ से जाते हैं, तब आप के सिरे नीचे की ओर आते हैं. हम उन सिरों को भी देखते हैं. आप सुगम हैं. (१७)

अत्रा ते रूपमुत्तममपश्यं जिगीषमाणमिष ऽ आ पदे गोः.
यदा ते मर्त्तो अनु भोगमानडादिद् ग्रसिष्ठ ऽ ओषधीरजीगः.. (१८)

हे हवि रूपी वायु! हम यहां आप के यज्ञ करने की इच्छा वाले उत्तम रूप को देखते हैं. आप गो मंडल में जाते हैं. जब आप के लिए हवि का भोग लगाया जाता है तब आप उसे और ओषध रूप हवि को ग्रहण करने की कृपा कीजिए. (१८)

अनु त्वा रथो अनु मर्यो अर्वन्ननु गावोनु भगः कनीनाम्.
अनु व्रातासस्तव सख्यमीयुरनु देवा ममिरे वीर्यं ते.. (१९)

हे अर्वन देव! हमारे रथ आप का अनुकरण करते हैं. हम आप का अनुकरण करते हैं. हमारी गाएं व हमारी कन्याओं के भाग्य आप का अनुकरण करते हैं. हमारे व्रत आप का अनुकरण करते हैं. हम ने आप की मित्रता पाई. देवताओं ने आप के पराक्रम का वर्णन किया है. (१९)

हिरण्यशृङ्गोयो अस्य पादा मनोजवा ऽ अवर ऽ इन्द्र ऽ आसीत्.
देवा ऽ इदस्य हविरद्यमायन् यो अर्वन्तं प्रथमो अध्यतिष्ठत्.. (२०)

हे अर्वन! यह घोड़ा सोने के सींगों वाला है. इस के पैर लोहे के हैं. इस की गति मन जैसी तीव्र है. देवताओं ने इसे हवि के रूप में ग्रहण किया. इंद्र देव सब से पहले इस घोड़े पर बैठे हुए. (२०)

ईर्मान्तासः सिलिकमध्यमासः स ꣳ शूरणासो दिव्यासो अत्याः.
ह ꣳ सा ऽ इव श्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्यमज्ममश्वाः.. (२१)

अश्व पतले मध्यभाग (कमर) वाले, बलवान, पुष्ट जांघों व वक्षस्थल वाले हैं. वे दिव्य और हंसों की तरह एक पांत में चलते हैं. ये घोड़े स्वर्ग में स्वर्गिक आनंद (दिव्यता) पाते हैं. (२१)

तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन्तव चित्तं वात ऽ इव ध्रजीमान्.
तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति.. (२२)

हे अर्वन! आप का शरीर ऊपर की ओर जाने वाला है. चित्त वायु जैसा गतिशील है. आप की पताकाएं जंगलों में दावानल के रूप में विचर रही हैं. (२२)

उप प्रागाच्छसनं वाज्यर्वा देवद्रीचा मनसा दीध्यानः.
अजः पुरो नीयते नाभिरस्यानु पश्चात्कवयो यन्ति रेभाः.. (२३)

हे अर्वन! हवि गतिशील है. मन की तरह तेजी से ऊपर की ओर जाती है. इस का धुआं आगे की ओर ले जाया जाता है. नाभि इस का अनुकरण करती है. पीछेपीछे पाठ करते हुए कविगण चलते हैं. (२३)

उप प्रागात्परमं यत्सधस्थमर्वाँ २ अच्छा पितरं मातरं च.
अद्या देवाञ्जुष्टतमो हि गम्या ऽ अथा शास्ते दाशुषे वार्याणि.. (२४)

हे अर्वन! आप ऊपर परम स्थान की ओर गमन कीजिए. आप मातापिता से मिलिए. यजमान देवताओं से जुड़े देवगण हमें अपार वैभव प्रदान करने की कृपा करें. (२४)

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेद:.
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूत: कविरसि प्रचेता:.. (२५)

हे अग्नि! आप समिधा युक्त और सर्वज्ञ हैं. आप मनुष्यों के यज्ञ में देवताओं को आमंत्रित करने की कृपा कीजिए. हम आप का आह्वान करते हैं. आप हमारे मित्र, चेतनासंपन्न, कवि व देवताओं के दूत हैं. (२५)

तनूनपात्पथ ऽ ऋतस्य यानान्मध्वा समञ्जन्त्स्वदया सुजिह्व.
मन्मानि धीभिरुत यज्ञमृन्धन् देवत्रा च कृणुह्यध्वरं न:.. (२६)

हे अग्नि! आप तन के रक्षक हैं. आप ऋत को अच्छी जिह्वा से सींचते हैं. आप बुद्धि और मनन से यज्ञ की बढ़ोतरी करते हैं. आप हमारे यज्ञ को देवताओं तक पहुंचाने की कृपा कीजिए. (२६)

नराश ꣳ सस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञै:.
ये सुक्रतव: शुचयो धियन्धा: स्वदन्ति देवा ऽ उभयानि हव्या.. (२७)

हे अग्नि! आप प्रशंसित हैं. हम आप की महिमा गाते हैं. आप श्रेष्ठ यज्ञ कर्म वाले, पवित्र, बुद्धिमान हैं. हम दोनों हवियों से आप का गुणगान करते हैं. (२७)

आजुह्वान ऽ ईड्यो वन्द्यश्चा याह्यग्ने वसुभि: सजोषा:.
त्वं देवानामसि यह्व होता स एनान्यक्षीषितो यजीयान्.. (२८)

हे अग्नि! आप देवताओं को बुलाने वाले, प्रार्थनीय, वंदनीय व वसुओं जैसे स्नेहशील हैं. आप आइए. आप देवताओं के होता हैं. आप देवताओं के लिए यज्ञ करने की कृपा कीजिए. (२८)

प्राचीनं बर्हि: प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्नाम्.
व्यु प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम्.. (२९)

ये कुशाएं प्राचीन हैं. पृथ्वी की प्रदिशाओं में फैली हुई हैं. अदिति देवता के विराजमान होने के लिए इन कुशाओं को फैलाया (बिछाया) जाता है. कुशाएं बिछा कर सुख से बैठा जा सकता है. (२९)

व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः.
देवीर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः.. (३०)

जैसे स्त्रियां शृंगार कर के पति को थकान रहित करती हैं, वैसे ही दिव्य द्वार वाली विशाल देवियां देवताओं के लिए सुगमता से प्रयास करने वाली हों. (३०)

आ सुष्वयन्ती यजते उपा के उषासानक्ता सदतां नि योनौ.
दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रिय ꣳ शुक्रपिशं दधाने.. (३१)

यज्ञ में उषा और रात्रि देवी भलीभांति सुशोभित होने की कृपा करें. दोनों देवियां दिव्य कार्य करने वाली, विशाल, आभूषणों से युक्त व कपिश रंग की हैं, वे भलीभांति अधिष्ठित होने की कृपा करें. (३१)

दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्यै.
प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता.. (३२)

विराट् यज्ञ के दो दिव्य होता हैं. वे श्रेष्ठ वाणी बोलने वाले हैं. वे पूर्व दिशा से निकलने वाले सूर्य की किरणों से यज्ञ करते हैं. वे मनुष्यों को यज्ञ आदि श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा देते हैं. (३२)

आ नो यज्ञं भारती तूयमेत्विडा मनुष्वदिह चेतयन्ती.
तिस्रो देवीर्बर्हिरेद ꣳ स्योन ꣳ सरस्वती स्वपसः सदन्तु.. (३३)

हमारे यज्ञ में भारती देवी, इड़ा देवी और सरस्वती देवी पधारने की कृपा करें. तीनों देवियां मनुष्यों को चेताने और कुश के आसन पर विराजने की कृपा करें. (३३)

य ऽ इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपि ꣳ शद्भुवनानि विश्वा.
तमद्य होतरिषितो यजीयान् देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्.. (३४)

हे यज्ञकर्ता विद्वान्! आज आप त्वष्टा देव की पूजा करें, जो स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक आदि सभी लोकों की रचना करते हैं. (३४)

उपावसृज त्मन्या समञ्जन् देवानां पाथ ऽ ऋतुथा हवीꣳषि.
वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन.. (३५)

हे यजमानो! आप देवताओं को पाथेय प्रदान कीजिए. आप देवताओं की आहुतियों को मधुर घी से सींचिए. वनस्पति देव, शमिता देव और अग्नि इन हवियों को ग्रहण करने की कृपा करें. (३५)

सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः.
अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृत ꣳ हविरदन्तु देवाः.. (३६)

हे अग्नि! आप उत्पन्न होते ही देवताओं का नेतृत्व करते हैं. आप देवताओं का आह्वान करते हैं. आप पूर्व दिशा में ज्योति स्वरूप स्थित हैं. देवगण आप के मुख में स्वाहाकार रूप से समर्पित आहुति ग्रहण करते हैं. (३६)

केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या ऽ अपेशसे. समुषद्भिरजायथाः.. (३७)

हे अग्नि! आप अज्ञानी को ज्ञानी बनाते हैं. आप अपरूप को सुंदर रूप प्रदान करते हैं. आप उषा देवी के साथ उत्पन्न होते हैं. (३७)

जीमूतस्येव भवति प्रतीकं यद्वर्मी याति समदामुपस्थे.
अनाविद्धया तन्वा जय त्व ꣳ स त्वा वर्मणो महिमा पिपर्तु.. (३८)

युद्ध के लिए जाते हुए कवचधारी बादल की भांति शोभित होते हैं. वीर घायल हुए बिना जीतें. वह आप की कवच की महिमा आप की रक्षा करने की कृपा करें. (३८)

धन्वना गा धन्वनाजिं जयेम धन्वना तीव्राः समदो जयेम.
धनुः शत्रोरपकामं कृणोति धन्वना सर्वाः प्रदिशो जयेम.. (३९)

धनुष से हम गायों को जीतें. धनुष से हम सदा युद्ध व मार्ग जीतें. धनुष शत्रु का बुरा करने वाला हो. धनुष से हम सारी प्रदिशाओं को जीतें. (३९)

वक्ष्यन्तीवेदा गनीगन्ति कर्णं प्रिय ꣳ सखायं परिषस्वजाना.
योषेव शिङ्क्ते वितताधि धन्वञ्ज्या इय ꣳ समने पारयन्ती.. (४०)

धनुष की प्रत्यंचा को योद्धा कान तक खींचता है. उस समय ऐसा लगता है, जैसे योद्धा उस का मित्र है. वह उस के कान में कुछ कहना चाहती है. वह प्रत्यंचा युद्ध में विजय दिलाने वाली है. वह प्रत्यंचा धनुष पर चढ़ कर अत्यंत आवाज करती है. बाण उस का मित्र है. वह उस से मिलती है. (४०)

ते आचरन्ती समनेव योषा मातेव पुत्रं बिभृतामुपस्थे.
अप शत्रून् विध्यता ꣳ संविदाने आर्त्नी इमे विष्फुरन्ती अमित्रान्.. (४१)

जैसे मां बेटे को गोद में लेती है, वैसे ही प्रत्यंचा बाण को धारण करती है. यह प्रत्यंचा समान मन वाली स्त्री जैसा आचरण करती है. यह डोरी शत्रुओं का संहार करे. यह डोरी झनझनाती हुई अमित्रों का विनाश करने की कृपा करे. (४१)

बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य.
इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्रसूतः.. (४२)

यह तरकस बहुतों का पिता है. बहुत से इस के पुत्र हैं. इस के संरक्षण में रहते हैं. तरकस पीठ पर बंधता है. यह सेना के सभी योद्धाओं पर विजय पाता है. (४२)

रथे तिष्ठन् नयति वाजिनः पुरो यत्र यत्र कामयते सुषारथिः.
अभीशूनां महिमानं पनायत मनः पश्चादनु यच्छन्ति रश्मयः.. (४३)

रथ पर बैठा हुआ अच्छा सारथी जहांजहां चाहता है, वहांवहां अश्वों को ले जाता है. लगाम की भी प्रशंसा की जानी चाहिए. वे घोड़ों के मन को अपने नियंत्रण में रखती हैं, जहां चाहती हैं, वही उन्हें ले कर जाती हैं. (४३)

तीव्रान् घोषान् कृण्वते वृषपाणयोश्वा रथेभिः सह वाजयन्तः.
अवक्रामन्तः प्रपदैरमित्रान् क्षिणन्ति शत्रूँ १ रनपव्ययन्तः.. (४४)

घोड़ों की लगाम जिन के हाथ में है, वे लोग तीव्र घोष करते हैं. घोड़े रथ के साथ जाते हैं. वे अपने पैरों से शत्रुओं को रौंदें. अश्व शत्रुओं का नाश करते हैं. (४४)

रथवाहण ँ हविरस्य नाम यत्रायुधं निहितमस्य वर्म.
तत्रा रथमुप शग्म ँ सदेम विश्वाहा वय ँ सुमनस्यमानाः.. (४५)

रथ वाहन इस का नाम है, जहां आयुध रखे हैं, जहां कवच रखे हैं, अच्छे मन वाले होते हुए हम सभी इस रथ में बैठें. (४५)

स्वादुष ँ सदः पितरो वयोधाः कृच्छ्रेश्रितः शक्तीवन्तो गभीराः.
चित्रसेना ऽ इषुबला ऽ अमृध्राः सतोवीरा ऽ उरवो व्रातसाहाः.. (४६)

हमारे रथ सदन में रहने वाले, पालक, आयुधारी, संरक्षी, सहनशील, शक्तिमान, गंभीर, अच्छी सेना से संपन्न व अतीव बलशाली हैं. वे संकल्पशील और शत्रुओं का मुकाबला करने वाले हैं. (४६)

ब्राह्मणासः पितरः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा.
पूषा नः पातु दुरितादृतावृधो रक्षा माकिर्नो अघश ँ स ईशत.. (४७)

ब्राह्मणगण, पितरगण, व सोमरस पीने वाले हमारी रक्षा करें. कल्याणकारी देव हमारी रक्षा करें. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक हमें पापों से रोकें. पूषा देव हमारी रक्षा करें, अवरोधों व पापों को हम से दूर करें. कोई पापी हम पर शासन न कर पाए. (४७)

सुपर्णं वस्ते मृगो अस्या दन्तो गोभिः सन्नद्धा पतति प्रसूता.
यत्रा नरः सं च वि च द्रवन्ति तत्रास्मभ्यमिषवः शर्म य ँ सन्.. (४८)

बाण अच्छा पंख धारता है. इस के दांत शत्रुओं को ढूंढ़ लेते हैं. यह शत्रुओं पर गिरता है. जहां कहीं शत्रु जाते हैं, वहां यह शत्रुओं पर गिरता है. बाण हमारे लिए अहानिकर व कल्याणकारी हों. (४८)

ऋजीते परि वृङ्ग्धि नोश्मा भवतु नस्तनूः.
सोमो अधि ब्रवीतु नोदितिः शर्म यच्छतु.. (४९)

हे बाण! आप सरल रहिए. आप हम पर मत गिरिए. हमारे तन पत्थर की तरह सख्त हो जाएं. सोम देव हमारी ओर बोलें. अदिति देव हमें सुख देने की कृपा करें. (४९)

आ जङ्घन्ति सान्वेषां जघनाँ २ उप जिघ्नते.
अश्वाजनि प्रचेतसोश्वान्त्समत्सु चोदय.. (५०)

हे अश्व प्रेरक! चाबुक आप घोड़ों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दें. चेते हुए मन वाले घुड़सवार घोड़ों के उभरे अंग पर चोट करते हैं. उन के पुट्ठों पर चाबुक चलाते हैं. चाबुक घोड़ों को प्रेरित करने वाले हों. (५०)

अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः.
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ꣳ सं परि पातु विश्वतः.. (५१)

सांप की तरह बाहु से लिपटता है. प्रत्यंचा के प्रहार को हटाता है. विद्वान् वीर पुरुष सब की सब ओर से रक्षा करता है. वीर सभी शत्रुओं को मार कर रक्षा करता है. (५१)

वनस्पते वीड्वङ्गो हि भूया ऽ अस्मत्सखा प्रतरणः सुवीरः.
गोभिः सन्नद्धो असि वीडयस्वास्थाता ते जयतु जेत्वानि.. (५२)

रथ वनस्पति (लकड़ी) से बना हुआ है. रथ हमारा मित्र हो. सुवीर इस के द्वारा युद्ध में पार पाए. हम गायों से जुड़े रहें. हम वीरतापूर्वक स्थित रहें. वीर सभी को जीत सकें. (५२)

दिवः पृथिव्याः पर्योज उद्भृतं वनस्पतिभ्यः पर्याभृत ꣳ सहः.
अपामोज्मानं परि गोभिरावृतमिन्द्रस्य वज्र ꣳ हविषा रथं यज.. (५३)

हे पुरोहितो! आप स्वर्ग और पृथ्वी के तेज को सर्वत्र फैलाइए. वनस्पति से उगे प्राप्त हुए तेज को सर्वत्र फैलाइए. जल के साथ प्राप्त हुए तेज को सर्वत्र फैलाइए. इंद्र के वज्र की तरह हम रथ को यज्ञीय कार्य में लगाएं. रथ सूर्य की किरणों के समान चमकता है. (५३)

इन्द्रस्य वज्रो मरुतामनीकं मित्रस्य गर्भो वरुणस्य नाभिः.
सेमां नो हव्यदातिं जुषाणो देव रथ प्रति हव्या गृभाय.. (५४)

हे रथ! आप दिव्य, इंद्र के वज्र जैसे व मरुतों की सैन्यशक्ति की भांति दृढ़ हैं. आप मित्र देव के गर्भ व वरुण देव की नाभि हैं. रथ में बैठे देवता हमारे द्वारा भेंट किए गए हवि को ग्रहण कर के तृप्त होने की कृपा करें. (५४)

उप श्वासय पृथिवीमुत द्यां पुरुत्रा ते मनुतां विष्ठितं जगत्.
स दुन्दुभे सजूरिन्द्रेण देवैर्दूराद्दवीयो अप सेध शत्रून्.. (५५)

हे दुंदुभि! आप पृथ्वी व स्वर्गलोक को गुंजाइए. आप को पूरा जगत् जान व मान सके. आप देवों व इंद्र देव से प्रेम रखते हैं. आप शत्रुओं को हम से दूर रखने की कृपा करें. (५५)

आ क्रन्दय बलमोजो न ऽ आधा निष्टनिहि दुरिता बाधमानः.
अप प्रोथ दुन्दुभे दुच्छुना ऽ इत ऽ इन्द्रस्य मुष्टिरसि वीडयस्व.. (५६)

हे दुंदुभि! आप की आवाज सुन कर ही शत्रु क्रंदन करने लगे. आप हमें तेजस्वी बनाइए. आप हमें पापों से दूर कीजिए. आप इंद्र देव की मुट्ठी जैसे मजबूत होइए. हमारी सेना के पास जो शत्रु आए. आप पूरी तरह उन का नाश कीजिए. (५६)

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद्दुन्दुभिर्वावदीति.
समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरोस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु.. (५७)

हे इंद्र देव! हमारे रथों की विजय पताका फहराइए. हम दुंदुभि बजाते हुए लौटें. हमारे समर्पित योद्धा घोड़े घूमते हैं. हमारे रथी जीतें, हमारे लोग जीतें. (५७)

आग्नेयः कृष्णग्रीवः सारस्वती मेषी बभ्रुः सौम्यः पौष्णः श्यामः शितिपृष्ठो बार्हस्पत्यः शिल्पो वैश्वदेव ऽ ऐन्द्रोरुणो मारुतः कल्माष ऽ ऐन्द्राग्नः स ꣳ हितोधोरामः सावित्रो वारुणः कृष्ण ऽ एकशितिपात्पेत्वः.. (५८)

काली गरदन वाला पशु अग्नि, मेषी सरस्वती देवी, भूरे रंग का पशु सोम से, श्याम रंग का पूषा देव से संबंधित है. काली पीठ वाला पशु बृहस्पति देव व शिल्प बहुत से देवों से लाल रंग का पशु इंद्र देव व चितकबरे पशु मरुद् देव, बलवान पशु इंद्र और अग्नि, नीचे सफेद रंग वाले सूर्य देव व एक पैर सफेद और शेष काले अंगों वाले वेगशील पशु वरुण देव से संबंधित हैं. (५८)

अग्नयेनीकवते रोहिताञ्जिरनड्वानधोरामौ सावित्रौ पौष्णौ रजतनाभी वैश्वदेवौ पिशङ्गौ तूपरौ मारुतः कल्माष ऽ आग्नेयः कृष्णोजः सारस्वती मेषी वारुणः पेत्वः.. (५९)

लाल चिह्न वाला वृषभ ज्वाला वाले अग्नि, नीचे स्थान से सफेद रंग वाले दो पशु सविता देव, चांदी जैसे रंग की नाभि वाले दो पशु पूषा देव, ऊपर पीले रंग के सींग वाले दो पशु विश्व से व चितकबरा पशु मरुत् देव से संबंधित है. काला अज अग्नि, मेषी सरस्वती व पतनशील पशु वरुण देव से संबंधित हैं. (५९)

अग्नये गायत्राय त्रिवृते राथन्तरायाष्टकपाल ऽ इन्द्राय त्रैष्टुभाय पञ्चदशाय बार्हतायैकादशकपालो विश्वेभ्यो देवेभ्यो जागतेभ्यः सप्तदशेभ्यो वैरूपेभ्यो द्वादशकपालो मित्रावरुणाभ्यामानुष्टुभाभ्यामेकवि ꣳ शाभ्यां वैराजाभ्यांपयस्या बृहस्पतये पाङ्क्ताय त्रिणवाय शाक्वराय चरुः सवित्र ऽ औष्णिहाय त्रयस्त्रि ꣳ शाय रैवताय द्वादशकपालः प्राजापत्यश्चरुरदित्यै विष्णुपत्न्यै चरुरग्नये वैश्वानराय

द्वादशकपालोनुमत्या ऽ अष्टाकपाल:.. (६०)

गायत्री छंद अग्नि से संबंधित है. त्रिवृत और रथांतर साम से स्तुत है. अष्टाकपाल, पंचदेश, बृहत्साम वाली स्तुति व ग्यारह कपालों वाली हवि इंद्र देव के लिए है. जगती छंद और सत्रह स्तोत्र विश्वों से संबंधित हैं. वैरूप साम वाली स्तुति, बारह कपालों में सुसंस्कृत कर के रखी हुई हवि, अनुष्टुप् छंद वाली स्तुति मित्रावरुण व इक्कीस स्तोत्र वाली स्तुति मित्रावरुण के लिए है. वैरूप साम से मित्रावरुण देव स्तुत है. पंक्तिछंद बृहस्पति देव से संबंधित है. बृहस्पति देव त्रिणव से स्तुत हैं. बृहस्पति शाक्वर साम से स्तुत है. चरु बृहस्पति देव के लिए है. उष्णिक् छंद सविता देव से संबंधित है. सविता देव प्रायश्चित्त व रैवत साम से स्तुत है. बारह कपालों से परिष्कृत हवि सविता देव के लिए रखी है. चरु प्रजापति से संबंधित है. विष्णु की पत्नी और अदिति देव के लिए यज्ञ से संबंधित पदार्थ समर्पित है. वैश्वानर देव के लिए बारह कपालों में परिष्कृत हवि है. अग्नि के लिए बारह कपालों में परिष्कृत और अनुमति देव के लिए आठ कपालों में परिष्कृत हवि है. (६०)

तीसवां अध्याय

देव सवितः प्र सुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय.
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु.. (१)

हे सविता देव! आप प्रमुख उत्पादक व यज्ञ के जनक हैं. आप यज्ञपति को भाग्य प्रदान करने की कृपा कीजिए. आप दिव्य गंधर्व और पवित्र विचारों वाले हैं. आप हमारी विचार वाणी को भी पवित्र बनाने की कृपा कीजिए. आप वाणी पति हैं. आप हमें भी मधुर वचन दीजिए. (१)

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि. धियो यो नः प्रचोदयात्.. (२)

हे सविता देव! आप वरेण्य और देवताओं के लिए सौभाग्य धारते हैं. आप हमारी बुद्धि को भी प्रेरित करने की कृपा कीजिए. (२)

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव. यद्भद्रं तन्न ऽ आ सुव.. (३)

हे सविता देव! आप सब देवों के देव हैं. आप हमारी कमियों को दूर कीजिए. आप जो भी हमारे लिए भद्र है, उसे लाने की कृपा कीजिए. (३)

विभक्तार ꣳ हवामहे वसोश्चित्रस्य राधसः. सवितारं नृचक्षसम्.. (४)

हे सविता देव! हम आप का आह्वान करते हैं. आप संरक्षक, धनवान, प्रेरक व सभी को संपत्ति देने वाले हैं. (४)

ब्रह्मणे ब्राह्मणं क्षत्राय राजन्यं मरुद्भ्यो वैश्यं तपसे शूद्रं तमसे तस्करं नारकाय वीरहणं पाप्मने क्लीब माक्रयाया ऽ अयोगूं कामाय पुँश्चलूमतिक्रुष्टाय मागधम्.. (५)

ब्राह्मण के लिए ब्रह्मज्ञान, क्षत्रिय के लिए रक्षण, वैश्य के लिए पालनपोषण, शूद्र के लिए सेवा कर्तव्य व उपयुक्त हैं. चोर के लिए अंधकार, नरक के लिए वीरघातक, नपुंसक के लिए पाप, खरीद के लिए पुरुषार्थी, काम के लिए व्यभिचारी अच्छी बोलने की शक्ति के लिए प्रमाण देने वाला उपयुक्त होता है. (५)

नृत्ताय सूतं गीताय शैलूषं धर्माय सभाचरं नरिष्ठायै भीमलं नर्माय रेभ ꣳ हसाय कारिमानन्दाय स्त्रीषखं प्रमदे कुमारीपुत्रं मेधायै रथकारं धैर्याय तक्षाणम्.. (६)

अंग चालन हेतु सूत, गीत के लिए नट, धर्म के लिए सभासद, नेतृत्व हेतु क्षमतावान, नरमाई हेतु मधुरभाषी, मनोविनोद हेतु स्वांग करने वाला उपयुक्त रहता है. आनंद प्राप्ति के लिए स्त्रियों के प्रति सख्य भाव, प्रबल मद (से उन्मत्त) के लिए कुमारी (वीरांगना) पुत्र, मेधावी के लिए रथकार और धैर्य के लिए गढ़िया (गढ़ाई करने वाला) उपयुक्त है. (६)

तपसे कौलालं मायायै कर्मार ंछ रूपाय मणिकार ंछ शुभे वप ंछ शरव्याया ऽ इषुकार ंछ हेत्यै धनुष्कारं कर्मणे ज्याकारं दिष्टाय रज्जुसर्जं मृत्यवे मृगयु मन्तकाय श्वनिनम्.. (७)

तपाने के लिए कुम्हार, माया के लिए कारीगर, रूप के लिए मणिकार, शुभ कार्य के लिए काटछांट में प्रवीण, लक्ष्यभेदी बाण के लिए इषुकार, आयुध के लिए धनुषकार, कर्म के लिए ज्याकार (डोरी बनाने वाले), आज्ञा देने हेतु रज्जुसर्जक (रस्सी बनाने वाले), मृत्यु के लिए कसाई, यम के लिए कुत्ते पालक की नियुक्ति की जानी चाहिए. (७)

नदीभ्य: पौञ्जिष्ठ मृक्षीकाभ्यो नैषादं पुरुषव्याघ्राय दुर्मदं गन्धर्वाप्सरोभ्यो व्रात्यं प्रयुग्भ्य ऽ उन्मत्त ंछ सर्पदेवजनेभ्योप्रतिपदमयेभ्य: कितव मीर्यताया ऽ अकितवं पिशाचेभ्यो विदलकारीं यातुधानेभ्य: कण्टकीकारीम्.. (८)

नदियों के लिए नाविक, रीछ आदि के लिए वनचरों (निषाद), शेर की तरह दुर्दम्य पुरुष के लिए प्रबल प्रतापी को, गंधर्व और अप्सराओं के लिए असंस्कारित, शोधार्थी हेतु उन्मत्त को, सांप, मनुष्य और देवों के लिए ज्ञानी को, जुए के लिए जुए में कुशल व्यक्ति को, उन्नति के लिए छलकपट मुक्त को पिशाचों के लिए हृदय विदीर्ण करने वाले राक्षस जैसे लुटेरों के लिए रास्ते में कांटे (रोड़े) अटकाने वालों को नियुक्त किया जाना चाहिए. (८)

सन्धये जारं गेहायोपपति मार्त्यै परिवित्तं निर्ऋत्यै परिविविदान मराध्या ऽ एदिधिषु: पतिं निष्कृत्यै पेशस्कारी ंछ संज्ञानाय स्मरकारीं प्रकामोद्यायोपसदं वर्णायानुरुधं बलायोपदाम्.. (९)

संधि के लिए मित्र को, घर के लिए उपमुखिया को, गरीबी के लिए धनी को, आपातकाल में साधन जुटाने में दक्ष को, सिद्धि के लिए हित को सर्वोपरि मानने वाले, संस्कार हेतु शुद्धिकरण में कुशल को, ज्ञानप्राप्ति हेतु कार्य कुशल को, अचानक काम आ पड़ने पर पास वाले व्यक्ति को, स्वीकार कराने के लिए आग्रह में दक्ष को तथा बल हेतु सहारा देने वाले को नियुक्त करना चाहिए. (९)

उत्सादेभ्य: कुब्जं प्रमुदे वामनं द्वार्भ्य: स्राम ंछ स्वप्नायान्धमधर्माय बधिरं पवित्राय भिषजं प्रज्ञानाय नक्षत्रदर्श माशिक्षायै प्रश्निन मुपशिक्षाया ऽ अभिप्रश्निनं मर्यादायै प्रश्नविवाकम्.. (१०)

शत्रुओं के नाश हेतु तलवार वाले को, मनोरंजन हेतु बौने को, द्वार हेतु मेहनती को नियुक्त किया जाना चाहिए. सपने के लिए चक्षुहीन का, अधर्म के लिए बहरे का अनुकरण करना चाहिए. पवित्रता के लिए वैद्य, अच्छे ज्ञान के लिए नक्षत्र विज्ञानी, अशिक्षा हेतु प्रश्नकर्ता, उपशिक्षा हेतु अभिप्रश्न कर्ता और मर्यादा के लिए प्रश्न कर्त्ता को नियुक्त करना चाहिए. (१०)

अर्मेभ्यो हस्तिपं जवायाश्वपं पुष्ट्यै गोपालं वीर्यायाविपालं तेजसेजपालमिरायै कीनाशं कीलालाय सुराकारं भद्राय गृहप ध्ठ श्रेयसे वित्तधमाध्यक्ष्यायानुक्षत्तारम्.. (११)

भारी वाहन हेतु हाथी पालक को, तेज गति हेतु अश्व पालक को, पुष्टि हेतु ग्वाले को, वीर्य हेतु भेड़ पालक को, तेज हेतु बकरी पालक को, अन्नवृद्धि हेतु किसान को, अमृत जैसे पेय हेतु अमृत विशेषज्ञ को, सुख कल्याण हेतु गृहपति, श्रेय हेतु धनवान को, अध्यक्षता हेतु निरीक्षक को नियुक्त किया जाना चाहिए. (११)

भायै दार्वाहारं प्रभाया ऽ अग्न्येधं ब्रध्नस्य विष्टपायाभिषेक्तारं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारं देवलोकाय पेशितारं मनुष्यलोकाय प्रकरितार ध्ठ सर्वेभ्यो लोकेभ्य ऽ उपसेक्तारमव ऋत्यै वधायोपमन्थितारं मेधाय वासः पल्पूलीं प्रकामाय रजयित्रीम्.. (१२)

अग्नि हेतु लकड़हारे, प्रकाश हेतु अग्नि जलाने वाले, गरमी के लिए जल बरसाने वाले को, स्वर्ग जैसे सुख हेतु चारों ओर से घेरने वाले को, देवलोक हेतु सुंदर आकार बनाने वाले को, मनुष्यलोक हेतु प्रसार करने वाले को, सभी लोकों के लिए संतोष देने वाले को, वध के लिए हल्ला मचाने वाले को नियुक्त किया जाना चाहिए. बुद्धि पाने के लिए वस्त्र क्षालन, शोभा हेतु चित्रकारी के ज्ञाता का अनुकरण करना चाहिए. (१२)

ऋतये स्तेनहृदयं वैरहत्याय पिशुनं विविक्त्यै क्षत्तार मौपद्रष्ट्र्यायानुक्षत्तारं बलायानुचरं भूम्ने परिष्कन्दं प्रियाय प्रियवादिन मरिष्ट्या ऽ अश्वसाद ध्ठ स्वर्गाय लोकाय भागदुघं वर्षिष्ठाय नाकाय परिवेष्टारम्.. (१३)

शत्रु के लिए गुप्त हृदय वाला, वैरी की हत्या हेतु चुगलखोर, भेद के लिए भेद करने वाले को, निरीक्षण के लिए निरीक्षक को, बल हेतु आज्ञा पालक को, क्षेत्र विशेष हेतु भ्रमणशील को, प्रिय के लिए प्रिय बोलने वाले को, अरिष्ट निवारण हेतु घुड़सवार को, स्वर्ग के लिए भाग्यदोहक को अच्छे सुख के लिए सब ओर से वेष्टित (घेरने) वाले को नियुक्त करना चाहिए. (१३)

मन्यवेयस्तापं क्रोधाय निसरं योगाय योक्तार ध्ठ शोकायाभिसर्त्तारं क्षेमाय विमोक्तार मुत्कूलनिकूलेभ्यस्त्रिष्ठिनं वपुषे मानस्कृत ध्ठ शीलायाञ्जनीकारीं निर्ऋत्यै कोशकारीं यमायासूम्.. (१४)

क्रोध लोहे को भी ताप देने वाला होता है. क्रोध की शांति हेतु जग को निस्सार

समझने वाले की नियुक्ति करनी चाहिए. योग के लिए योगी को नियुक्त करना चाहिए. शोक के लिए सांत्वना देने वाले को नियुक्त करना चाहिए. संरक्षण के लिए मुक्ति दाता को नियुक्त करना चाहिए. उतारचढ़ाव हेतु ऊंचनीच में दक्ष को, शरीर हेतु मनोनुकूल आचरण करने वाले को, शालीनता हेतु आंख शुद्ध करने वाले को, नियुक्त किया जाना चाहिए. विपत्ति हेतु संचय नीति को यमनियम आदि हेतु असूया (ईर्ष्या रहित) को नियुक्त किया जाना चाहिए. (१४)

यमाय यमसूमथर्वभ्योवतोका ὂ संवत्सराय पर्यायिणीं
परिवत्सरायाविजातामिदावत्सरायातीत्वरीमिद्वत्सरायातिष्कद्वरीं वत्सराय विजर्जरा ὂ
संवत्सराय पलिक्नीमृभुभ्योजिनसन्ध ὂ साध्येभ्यश्चर्मम्नम्.. (१५)

हे परमात्मा! यम के लिए नियम में समर्थ स्त्री को नियुक्त करना चाहिए. अहिंसकों के लिए अवतोका नामक स्त्री को नियुक्त करना चाहिए. संवत्सर हेतु समय की व्यवस्था जानने वाली की नियुक्ति की जानी चाहिए. परिवत्सर के लिए कुंआरी को, इदावत्सर हेतु गतिशील को, अनुवत्सर हेतु ज्ञानवती को, वत्सर या अनुवत्सर हेतु वृद्धा को, संवत्सर हेतु श्वेत बालों वाली वृद्धा को नियुक्त करना चाहिए. ऋभु हेतु पराजित न होने वाले से मित्रता की जानी चाहिए. साध्य हेतु विशेष धर्म ज्ञानी की नियुक्ति की जानी चाहिए. (१५)

सरोभ्यो धैवरमुपस्थावराभ्यो दाशं वैशन्ताभ्यो वैन्दं नड्वलाभ्यः शौष्कलं पाराय मार्गारमवाराय कैवर्तं तीर्थेभ्य ऽ आन्दं विषमेभ्यो मैनाल ὂ स्वनेभ्यः पर्णकं गुहाभ्यः किरात ὂ सानुभ्यो जम्भकं पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्.. (१६)

तालाब हेतु मछुआरों को, उपवन हेतु सेवकों को, छोटे तालाब हेतु निषादों को, नडवल हेतु मछली से जीविका निर्वाहक को नियुक्त किया जाना चाहिए. पार जाने के लिए रास्ता जानने वाले को, उस पार से इस पार आने वाले के लिए केवट को, तीर्थ के लिए बाड़ बांधने वाले को, असमान स्थान के लिए किनारा लगाने वाले को नियुक्त करना चाहिए. मधुर ध्वनि के लिए तुरही वादक की, गुफाओं के लिए भीलकिरात की, शिखर के लिए प्रचंड व्यक्ति की और पर्वत के लिए छोटे पुरुषों की नियुक्ति की जानी चाहिए. (१६)

बीभत्सायै पौल्कसं वर्णाय हिरण्यकारं तुलायै वाणिजं पश्चादोषाय ग्लाविनं विश्वेभ्यो भूतेभ्यः सिध्मलं भूत्यै जागरणमभूत्यै स्वपनमार्त्यै जनवादिनं व्यृद्धया ऽ अपगल्भ ὂ स ὂ शराय प्रच्छिदम्.. (१७)

बीभत्स (भयंकर/घृणित) कामों के लिए अनगढ़ (निर्दय) लोगों की नियुक्ति की जानी चाहिए. अच्छे वर्ण के लिए सुनार, तौलने के लिए बनिए की नियुक्ति करनी चाहिए. बाद में दोष देने के लिए नाराज व्यक्ति को, सभी प्राणियों के लिए सिद्धिदायक व्यक्ति को नियुक्त करना चाहिए. समृद्धि हेतु जागरणशील

को, असमृद्धि हेतु स्वप्नजीवी को, पीड़ा से मुक्ति के लिए सावधान करने वाले को, उन्नति (बढ़ोतरी) हेतु अभिमान रहित को, बाण निशाने पर साधने के लिए लक्ष्य साधक को नियुक्त करना चाहिए. (१७)

अक्षराजाय कितवं कृतायादिनवदर्शं त्रेतायै कल्पिनं द्वापरायाधिकल्पिन मास्कन्दाय सभास्थाणुं मृत्यवे गोव्यच्छमन्तकाय गोघातं क्षुधे यो गां विकृन्तन्तं भिक्षमाण ऽ उपतिष्ठति दुष्कृताय चरकाचार्यं पाप्मने सैलगम्.. (१८)

जुआ खेलने के लिए द्यूतकार, क्रियाशील हेतु समीक्षा करने वाले, त्रेता के लिए कल्पनाकार, द्वापर हेतु अकल्पनाकार की नियुक्ति की जानी चाहिए. आक्रमण जैसी स्थिति में स्थिर मति वाला ठीक रहता है. मृत्यु की स्थिति में इंद्रियों का अनुकरण कर्ता ठीक रहता है. यमराज हेतु गौ घाती, भूख हेतु भीख मांगने वाले, पाप के निवारण के लिए चरकाचार्य और दुष्टों के लिए कठोर दंड दे सकने वाले की नियुक्ति की जानी चाहिए. (१८)

प्रतिश्रुत्काया ऽ अर्त्तनं घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूक ँ्ठ शब्दायाडम्बराघातं महसे वीणावादं क्रोशाय तूणवध्म मवरस्पराय शङ्खध्मं वनाय वनपमन्यतोरण्याय दावपम्.. (१९)

प्रतिज्ञा के लिए उस को निबाह सकने वाले की नियुक्ति की जानी चाहिए. योजना के लिए उद्घोषक को, विवाद निर्णय हेतु चुप रहने वालों को, बहुवादी हेतु आडंबर का आघात करने वाले को, महिमा हेतु वीणावादक को, भीषण स्वर के लिए ढोल बजाने वाले को, ठीकठीक आवाज हेतु शंख वादक को, वन रक्षार्थ वन रक्षक को, अन्य वनों की रक्षा के लिए दावानल रक्षक को नियुक्त करना चाहिए. (१९)

नर्माय पुँश्चलू ँ्ठ हसाय कारिं यादसे शाबल्यां ग्रामण्यं गणकमभिक्रोशकं तान्महसे वीणावादं पाणिघ्नं तूणवध्मं तान्नृत्तायानन्दाय तलवम्.. (२०)

मनोरंजन हेतु पुरुषों के पीछे चलने वाली, हंसाने में नक्काल, जल जंतुओं को मारने में नीच जाति वालों की नियुक्ति की जानी चाहिए. स्वागतसत्कार के लिए ग्रामीण ज्योतिषी और व्यवहार कुशल व्यक्ति की नियुक्ति की जानी चाहिए. नृत्य हेतु वीणावादक, तालवादक और स्वरवादक की नियुक्ति की जानी चाहिए. आनंद हेतु तालीवादक की नियुक्ति की जानी चाहिए. (२०)

अग्नये पीवानं पृथिव्यै पीठसर्पिणं वायवे चाण्डालमन्तरिक्षाय व ँ्ठ शनर्तिनं दिवे खलति ँ्ठ सूर्याय हर्यक्षं नक्षत्रेभ्य: किर्मिरं चन्द्रमसे किलासमह्ने शुक्लं पिङ्गाक्ष ँ्ठ रात्र्यै कृष्णं पिङ्गाक्षम्.. (२१)

आग से जुड़े कार्य हेतु पुष्ट को, पृथ्वी के लिए आसन पर बैठने वाले को,

वायु को सहने के लिए चांडाल को, अधर में लटकने जैसे काम के लिए बांस पर नृत्य करने वाले को नियुक्त करना चाहिए. स्वर्गलोक हेतु खगोल विज्ञानी को, सूर्य हेतु हरे रंग वाले को, नक्षत्रों के लिए नारंगी रंग जानने वाले को, चंद्रमा हेतु किलास (चर्म रोग विशेष) वाले को, सफेद रंग हेतु पीली आंख वाले को, रात्रि के लिए कालीपीली आंखों वालों को नियुक्त किया जाना चाहिए. (२१)

अथैतानष्टौ विरूपाना लभतेतिदीर्घं चातिह्रस्वं चातिस्थूलं चातिकृशं चातिशुक्लं चातिकृष्णं चातिकुल्वं चातिलोमशं च.
अशूद्रा ऽ अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः मागधः पुँश्चली कितवः क्लीबोशूद्रा ऽ अब्राह्मणास्ते प्राजापत्याः.. (२२)

इस प्रकार इन आठों अति दीर्घ, अतिह्रस्व, अतिस्थूल, अतिकृश, अतिशुक्ल, अतिकृष्ण, रोम रहित व रोम सहित को तथा इन चार प्रकार के चाटुकार, चरित्रहीन, जुआरी, नपुंसक ऐसे ब्राह्मणत्वहीन अशूद्र प्रजापालक को सौंप देना चाहिए. (२२)

इकतीसवां अध्याय

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्.
स भूमि ꣳ सर्वत स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्.. (१)

परम पुरुष हजारों सिर वाला, हजारों नेत्रों वाला व हजारों पैर वाला है. वह परम पुरुष सारे ब्रह्मांड को घेर कर भी दस अंगुली ऊपर अधिष्ठित है. (१)

पुरुष ऽ एवेद ꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्.
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति.. (२)

जो हो चुका है और जो होने वाला है वह परम पुरुष ही है. वह अमरता का स्वामी है. जो अन्न से बढ़ोतरी पाते हैं, उन के भी वही स्वामी हैं. (२)

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः.
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि.. (३)

परम पुरुष अत्यंत महिमावान है. इस के चरणों में सभी प्राणी हैं. इस का एक भाग पृथ्वी पर है, जिस में सब प्राणी हैं और तीन भाग स्वर्गलोक में स्थित हैं. (३)

त्रिपादूर्ध्व ऽ उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत् पुनः.
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि.. (४)

परम पुरुष के तीन पैर ऊर्ध्वलोक में समाए हुए हैं. एक भाग में इहलोक समाहित है. जड़, चेतन सभी इस के इस पैर में समाहित हैं. (४)

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः.
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः.. (५)

उस परम पुरुष से विराट् उपजा. विराट् से सृष्टि उपजी. उस से भूमि पैदा हुई फिर जीव पैदा हुए. (५)

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्.
पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये.. (६)

उस विराट् के यज्ञ से घी प्राप्त हुआ, जिस से सब को आहुति दी जाती है. उसी विराट् से पक्षी, पशु, गांव के जीव, जानवर उपजे. (६)

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऽ ऋचः सामानि जज्ञिरे.
छन्दा ꣳ सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत.. (७)

उस विराट् यज्ञ रूपी पुरुष से ऋग्वेद प्रकटा. उसी से सामवेद प्रकटा. उसी से यजुर्वेद प्रकट हुआ. उसी से अथर्ववेद का प्रादुर्भाव हुआ. (७)

तस्मादश्वा ऽ अजायन्त ये के चोभयादतः.
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽ अजावयः.. (८)

उसी विराट् यज्ञ रूपी पुरुष से दोनों ओर दांतों वाले जीव उपजे. उसी से घोड़े उपजे. उसी से बकरियां उपजीं. उसी से भेड़ आदि उपजे. (८)

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः.
तेन देवा ऽ अयजन्त साध्या ऽ ऋषयश्च ये.. (९)

सब से पहले यज्ञ से बाहर आए उस पुरुष को पूजा. उसी से देवताओं, ऋषियों और साधकों ने यज्ञ को उपजाया. (९)

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्.
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा ऽ उच्येते.. (१०)

संकल्प से प्रकटे विराट् पुरुष का ज्ञानीजन भांतिभांति से वर्णन करते हैं. उस का मुख क्या है ? बाहु क्या है ? जांघ कौन सी है ? पांव क्या कहे जाते हैं. (१०)

ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः.
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रो अजायत.. (११)

ब्राह्मण विराट् पुरुष का मुंह हुए. क्षत्रिय उस की भुजाएं हुए. वैश्य उस की जंघाएं हुईं. शूद्र उस के पैर हुए. (११)

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायतः.
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत.. (१२)

विराट् पुरुष के मन से चंद्रमा, आंखों से सूर्य, कान से वायु और मुख से अग्नि उत्पन्न हुई. (१२)

नाभ्या ऽ आसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत.
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २ अकल्पयन्.. (१३)

परम पुरुष की नाभि से अंतरिक्ष प्रकट हुआ. परम पुरुष के सिर से स्वर्गलोक

प्रकट हुआ. परम पुरुष के पैर से भूमि प्रकट हुई. परम पुरुष के कानों से दिशाएं प्रकट हुईं. परम पुरुष ने अनेक लोक रचे हैं. (१३)

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत.
वसन्तोस्यासीदाज्यं ग्रीष्म ऽ इध्मः शरद्धविः.. (१४)

देवताओं ने परम पुरुष को हवि माना. परम पुरुष को हवि मान कर यज्ञ की शुरुआत की. उस यज्ञ में घी वसंत ऋतु, ईंधन ग्रीष्म ऋतु एवं हवि शरद ऋतु हो गई. (१४)

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः.
देवा यद्यज्ञं तन्वाना ऽ अबध्नन् पुरुषं पशुम्.. (१५)

देवताओं ने जिस यज्ञ का विस्तार किया, उस यज्ञ में परम पुरुष को ही हवि के पशु के रूप में बांधा. उस यज्ञ में सात परिधियां और इक्कीस समिधाएं हुईं. (१५)

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्.
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः.. (१६)

देवताओं ने यज्ञ से यज्ञ किया. उस में धर्म को प्रथम आसन प्राप्त हुआ. जो लोग यज्ञ आदि विधिविधान से जीवन जीते हैं, ऐसे जीवन साधक महिमाशाली होते हैं. ऐसे व्यक्ति स्वर्ग प्राप्त करते हैं. (१६)

अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्त्तताग्रे.
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे.. (१७)

परम पुरुष ने सब से पहले जल का निर्माण किया. तत्पश्चात पृथ्वी का निर्माण किया. इस पृथ्वी का निर्माण जल के रस से हुआ. त्वष्टा देव संसार को रूप धारण कराते हैं. त्वष्टा देव मनुष्यों को देवत्व और अमरता प्रदान करते हैं. (१७)

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्.
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेयनाय.. (१८)

परम पुरुष को जानने से परम तत्त्व की प्राप्ति होती है. वह अंधकार से परे है. वह आदित्य जैसे वर्ण (रंग) का है. उस को जान कर जो मृत्यु के पथ पर जाते हैं, उन्हें उस पथ से मोक्ष की प्राप्ति होती है. इस के अलावा मोक्ष का कोई और मार्ग नहीं है. (१८)

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजायमानो बहुधा वि जायते.
तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन् ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा.. (१९)

प्रजापति गर्भ में संचरण करते हैं. वे अजन्मा हैं. फिर भी बहुत रूपों में प्रकट

होते हैं. उन्हीं में सारे लोक स्थित हैं. धीर पुरुष उस के कारण चारों ओर देखते हैं. (१९)

यो देवेभ्य ऽ आतपति यो देवानां पुरोहितः.
पूर्वो यो देवेभ्यो जातो नमो रुचाय ब्राह्मये.. (२०)

जो सभी देवताओं में सब से पहले प्रकटे, जो तेज संपन्न हैं, उन ब्रह्म को नमस्कार है. आप देवताओं के पुरोहित हैं. आप देवताओं को प्रकाशित करने वाले हैं. (२०)

रुचं ब्राह्मं जनयन्तो देवा ऽ अग्रे तदब्रुवन्.
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा ऽ असन् वशे.. (२१)

जो देवताओं में अग्रणी हैं, जिन के बारे में यह कहा गया है कि वे प्रकाशमय ब्रह्म को प्रकटाते हैं, उस परम पुरुष को ब्रह्मज्ञानी जानते हैं. उस परम पुरुष के वश में सारे देवता रहते हैं. (२१)

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्.
इष्णन्निषाणामुं म ऽ इषाण सर्वलोकं म ऽ इषाण.. (२२)

हे परम पुरुष! श्री और लक्ष्मी आप की पत्नी हैं. दोनों भुजाएं दिन और रात हैं. नक्षत्र आप के रूप हैं. आप सब की इच्छा पूर्ति की सामर्थ्य रखते हैं. आप सभी लोकों की इच्छा पूर्ति करने की कृपा कीजिए. (२२)

बत्तीसवां अध्याय

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः.
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः.. (१)

परम पुरुष ही अग्नि है. वही आदित्य है. वही वायु है. वही चंद्रमा, प्रकाशमान व ब्रह्मज्ञानी है. वही जल और वही प्रजापति है. (१)

सर्वे निमेषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि. नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चं न मध्ये परि जग्रभत्.. (२)

सारे काल उस परम पुरुष से ही यज्ञ में उत्पन्न हुए. उस से ऊपर कोई नहीं है. उस को ऊपर, बीच आदि से कोई भी पार नहीं पा सकते. (२)

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः.
हिरण्यगर्भ ऽ इत्येष मा मा हि ꣳ सीदित्येषा यस्मान्न जात ऽ इत्येषः.. (३)

उस परम पुरुष की कोई प्रतिमा (सानी) नहीं है. आप का यश महान है. आप का नाम अत्यंत महान् है. 'हिरण्यगर्भ', 'मा हिंसीत्', 'यस्मान् जात' इत्यादि मंत्रों में उस परम पुरुष की प्रशंसा और नाम का बारंबार वर्णन किया गया है. (३)

एषो ह देवः प्रदिशोनु सर्वाः पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः.
स एव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः.. (४)

वह परम पुरुष सभी प्रदेशों में व्याप्त है. वह पूर्व और अंत में भी व्याप्त है. वही उत्पन्न हुओं में विद्यमान है. वही उत्पन्न हो रहे प्राणियों में भी विद्यमान है. वही जन्म लेने वालों में भी व्याप्त होगा. वह सभी में सर्वविधि व्याप्त है. (४)

यस्माज्जातं न पुरा किं चनैव य ऽ आबभूव भुवनानि विश्वा.
प्रजापतिः प्रजया स ꣳ रराणस्त्रीणि ज्योती ꣳ षि सचते स षोडशी.. (५)

जिस से पहले कोई उत्पन्न नहीं हुआ, उस परमात्मा से सभी लोक उत्पन्न हुए हैं. वह परम पुरुष प्रजा के साथ रहते हैं. वह परम पुरुष तीन ज्योतियों को धारते हैं. प्रजा के साथ रहने वाले प्रजापति सोलह कलाओं वाले हैं. (५)

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्वः स्तभितं येन नाकः.
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम.. (६)

उस परम पुरुष ने स्वर्ग को उग्र बनाया. उस ने पृथ्वी को दृढ़ बनाया. उस ने स्वर्ग को स्थिर बनाया. उस ने अंतरिक्ष में शोभा रची. हम (उन के अलावा) अब किस देव के लिए हवि का विधान करें ? (६)

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने.
यत्राधि सूर ऽ उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम.
आपो ह यद्बृहतीर्यश्चिदापः.. (७)

जिस को परम पुरुष की शक्ति से ज्ञानी जन मन के द्वारा सब ओर देखते हैं, जहां प्रकाशवान सूर्य उदय हो कर चमकता है, (अब हम उन के अलावा) किस देव के लिए हवि का विधान करें. 'आपो ह यद् बृहतीः' और 'यश्चिदापः' में उसी परम शक्ति का गुणगान किया गया है. (७)

वेनस्तत्पश्यन्निहितं गुहा सद्यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्.
तस्मिन्निद ঌ सं च वि चैति सर्व ঌ स ओतः प्रोतश्च विभूः प्रजासु.. (८)

वह परम पुरुष सभी में गुप्त रूप से मौजूद है, जो सब का आश्रयदाता है, जो सब पर दृष्टि रखता है. सभी प्राणी प्रलय में उस में लीन हो जाते हैं. सभी में वही ओतप्रोत है. प्रजाओं में वही प्रकाशवान है. (८)

प्र तद्वोचेदमृतं नु विद्वान् गन्धर्वो धाम विभृतं गुहा सत्.
त्रीणि पदानि निहिता गुहास्य यस्तानि वेद स पितुः पितासत्.. (९)

परम पुरुष अमर है. विद्वान् पुरुष उस के बारे में कुछ कह सकते हैं. उस का धाम दिव्य है जो गुप्त रूप से सब में विद्यमान है, जिस में तीन पद गुप्त रूप से निहित हैं, जो ज्ञाता और जो पिता का भी पिता है. (९)

स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा.
यत्र देवा ऽ अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त.. (१०)

वह परम पुरुष सब का बंधु है. वह सब को उपजाने वाला, विधाता, आश्रय दाता और सारे लोकों और लोगों का ज्ञाता है. उस के वहां तीसरे धाम में अमर देवता आनंदपूर्वक विचरण करते हैं. (१०)

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशश्च.
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि सं विवेश.. (११)

वह परम पुरुष सभी प्राणियों व समस्त लोकों को घेरे हुए है. वह सभी दिशाओं में व्याप्त है. वह सभी उपदिशाओं को घेरे हुए है. वह अजन्मा व अमर है. सभी ज्ञानी आत्मरूप को जान कर अपने आत्मरूप का इस में समावेश कर देते हैं. (११)

परि द्यावापृथिवी सद्य ऽ इत्वा परि लोकान् परि दिशः परि स्वः.
ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य तदपश्यत्तदभवत्तदासीत्.. (१२)

परम पुरुष स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक में परिव्याप्त है. वह लोकों व दिशाओं में व्याप्त है. वह अपनेआप में परिव्याप्त है. फैले हुए सत्य के तंतु को जान कर ज्ञानी वैसे ही हो जाते हैं और देखते हैं, जैसे पहले थे. (१२)

सदसस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम्. सनिं मेधामयासिष ꣳ स्वाहा.. (१३)

परम पुरुष को सभी पाना चाहते हैं. वह अद्भुत, इंद्र देव का प्रिय व काम्य है. हम उस से (श्रेष्ठ) बुद्धि व (श्रेष्ठ) धन चाहते हैं. परम पुरुष के लिए स्वाहा. (१३)

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते.
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा.. (१४)

हे अग्नि! जिस श्रेष्ठ बुद्धि की देवतागण और पितरगण उपासना करते हैं, उस बुद्धि से आप हमें बुद्धिमान बनाने की कृपा कीजिए. अग्नि के लिए स्वाहा. (१४)

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः.
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा.. (१५)

वरुण, अग्नि व प्रजापति हमें बुद्धि प्रदान करें. इंद्र देव बुद्धि धारण करते हैं. वे हमें बुद्धि प्रदान करें. इन सभी देवों के लिए स्वाहा. (१५)

इदं मे ब्रह्म च क्षत्रं चोभे श्रियमश्नुताम्.
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां तस्यै ते स्वाहा.. (१६)

परम पुरुष हमें यह ब्रह्मज्ञान और क्षात्र तेज इन दोनों से युक्त करें (शोभित करने की कृपा करें). हमें देवता श्रेष्ठ शोभा धारण कराने की कृपा करें. इसी के लिए उन्हें यह आहुति प्रदान करते हैं. (१६)

तैंतीसवां अध्याय

अस्याजरासो दमामरित्रा ऽ अर्चद्धूमासो अग्नयः पावकाः.
शिवतीचयः श्वात्रासो भुरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः.. (१)

यजमान ने जो अग्नियां प्रज्वलित की हैं, वे अजर हैं. वे दुश्मनों से त्राण करने वाली, पूजनीय, धूम्रमय, पवित्र, शीघ्र फल देने वाली व भुवन को पालने वाली हैं. वे वन के समान व्यापक व वायु के समान प्राणदायी हैं. वे अग्नियां सोम की तरह हमारी इच्छा पूरी करने की कृपा करें. (१)

हरयो धूमकेतवो वातजूता ऽ उप द्यवि. यतन्ते वृथगग्नयः.. (२)

अग्नियां हरी हैं. धुएं की पताका वाली और वायु से बढ़ोतरी पाने वाली हैं. स्वर्गलोक में जाने के लिए बारबार प्रयत्न करती हैं. (२)

यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ २ ऋतं बृहत्. अग्ने यक्षि स्वं दमम्.. (३)

हे अग्नि! आप मित्र, वरुण व अन्य देवताओं के लिए यजन करने की कृपा कीजिए. आप सत्यवान व विशाल हैं. आप अपने घर को यज्ञ के शुभ कार्यों से युक्त करने की कृपा कीजिए. (३)

युक्ष्वा हि देवहूतमाँ २ अश्वां २ अग्ने रथीरिव. नि होता पूर्व्यः सदः.. (४)

हे अग्नि! जैसे सारथी रथ में घोड़े जोतता है, वैसे ही देवों को (यज्ञ में) आमंत्रित करने के लिए आप घोड़ों को रथ में जोतिए. आप चिरकाल से ही यज्ञ में बुलाए जाते हैं. (४)

द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे अन्यान्या वत्समुप धापयेते.
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ्छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः.. (५)

रात्रि और दिवस अपने श्रेष्ठ काम के लिए वैसे ही विचरते हैं, जैसे अलगअलग रूपरंग वाली स्त्रियां विचरती हैं. रात्रि हरी (काली) है. रात्रि के स्वधावान चमकीले पुत्र चंद्रमा हुए. दूसरी के श्रेष्ठ वर्चस्वी पुत्र सूर्य हुए. ऐसा देखा (कहा) जाता है. (५)

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः.
यमप्नवानो भृगवो विरुरुचुर्वनेषु चित्रं विभ्वं विशे विशे.. (६)

यह अग्नि अग्रगण्य हैं. यज्ञ में सर्वप्रथम इन्हीं का ध्यान किया जाता है. यह यजमानों के होता व यज्ञ में उपासनीय हैं. यज्ञों में विशेष रूप से इन्हें प्रतिष्ठित किया जाता है. इन अग्नि को अप्नवान, भृगु, विरुरुचु आदि ऋषियों ने वनों में बारबार प्रतिष्ठित किया है. (६)

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रि ꣳ शच्च देवा नव चासपर्यन्.
औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिरस्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त.. (७)

हे यजमानो! तीन हजार, तीन सौ तीस और नौ अर्थात् तैंतीस सौ उनतालीस देवता अग्नि की उपासना करते हैं. देवगण घी की आहुतियों से अग्नि को सींचते हैं. अग्नि के विराजने के लिए कुश का आसन बिछाते हैं. उन्हें होता के रूप में प्रतिष्ठित कर के यज्ञ करते हैं. (७)

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽ आ जातमग्निम्.
कवि ꣳ सम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः.. (८)

अग्नि मूर्धन्य, स्वर्गलोक में भी श्रेष्ठ, पृथ्वीलोक को सूर्य के रूप में जगमगाने वाले व वैश्वानर हैं. वे यज्ञ में उत्पन्न होने वाले, कवि, सम्राट्, यजमान के अतिथि हैं. देवताओं के आह्वाहक हैं. यजमानों ने अपनी रक्षा हेतु पात्र में अग्नि को उपजाया. (८)

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्द्रविणस्युर्विपन्यया. समिद्धः शुक्र ऽ आहुतः.. (९)

अग्नि वृत्र को मारते हैं (नष्ट करते हैं). अग्नि धनवान व प्रकाशमान हैं. समिधा से उन्हें प्रदीप्त किया जाता है. उन को आहुति समर्पित करते हैं. (९)

विश्वेभिः सोम्यं मध्वग्न ऽ इन्द्रेण वायुना. पिबा मित्रस्य धामभिः.. (१०)

हे अग्नि! आप इंद्र देव, वायु, मित्र देव व सभी देवताओं के साथ आइए. आप इन सब के साथ मधुर सोमरस का पान करने की कृपा कीजिए. (१०)

आ यदिषे नृपतिं तेज ऽ आनट् शुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीके.
अग्निः शर्धमनवद्यं युवान ꣳ स्वाध्यं जनयत् सूदयच्च.. (११)

जब अग्नि में अन्न और पवित्र जल से शुद्ध हवि से यजन किया जाता है, तब अग्नि जल से सींचते हैं. यह जल बलशाली बनाता है. यह सुखवर्द्धक, निरंतर प्रवाहित होने वाला, युवा बनाने वाला व जग के लिए उपजाऊ है. (११)

अग्ने शर्ध महते सौभगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु.
सं जास्पत्य ꣳ सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महा ꣳ सि.. (१२)

हे अग्नि! आप हमें अपनी महत्ता प्रदान कीजिए. आप हमारे सौभाग्य में बढ़ोतरी कीजिए. स्वर्गलोक से आप और अधिक यशस्वी हों. आप यजमान जोड़े को प्रेम भाव से जोड़िए. यजमान से शत्रुभाव रखने वालों की साख (प्रतिष्ठा) गिराइए. (१२)

त्वा हि मन्द्रतममर्कशोकैर्ववृमहे महि नः श्रोष्यग्ने.
इन्द्रं न त्वा शवसा देवता वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः.. (१३)

हे अग्नि! आप के लिए महिमामय स्तोत्र गा रहे हैं. आप उन्हें सुनने की कृपा कीजिए. आप विचारक हैं. हम सूर्य की तरह आप का वरण करते हैं. आप इंद्र देव की तरह बलवान और वायु की भांति बलशाली हैं. हम आप को धनधान्य भरी आहुतियों से परिपूर्ण करते हैं. (१३)

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः.
यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वान् दयन्त गोनाम्.. (१४)

हे अग्नि! हम आप के लिए श्रेष्ठ आहुति भेंट करते हैं. शूरवीर आप के प्रिय हो जाते हैं. जो धनवान और ऊर्जावान हैं, उन के प्रति आप दयावान हैं. उन पर गोधन आदि की कृपा करते हैं. (१४)

श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर्देवैरग्ने सयावभिः.
आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम्.. (१५)

हे अग्नि! आप श्रेष्ठ कानों वाले हैं. आप हमारे द्वारा की गई स्तुतियों को सुनते हैं. हम देवताओं के लिए अग्नि में जो आहुति अर्पित करते हैं. आप उस हवि को वहन करते हैं. आप हमारे प्रातःकालीन यज्ञों में मित्र देव व अर्यमा देव के साथ आइए. आप उन के साथ कुश के आसन पर विराजने की कृपा कीजिए. (१५)

विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम्.
अग्निर्देवानामव आवृणानः सुमृडीको भवतु जातवेदाः.. (१६)

अग्नि! आप सर्वज्ञाता, देवों में अदिति देव जैसे (वर्चस्वी), यज्ञ करने योग्य, मनुष्यों के लिए अतिथि जैसे आदरणीय व प्रकाशमान हैं. आप देवताओं तक हमारी हवि पहुंचाने व हमें भरपूर सुख प्रदान करने की कीजिए. (१६)

महो अग्नेः समिधानस्य शर्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये.
श्रेष्ठे स्याम सवितुः सवीमनि तद्देवानामवो अद्या वृणीमहे.. (१७)

हे अग्नि! आप महिमाशाली व समिधावान हैं. हम आप का संरक्षण पाना चाहते हैं. हम अपने कल्याण के लिए मित्र और वरुण देव की उपासना करते हैं. हम सविता देव की कृपा से श्रेष्ठता प्राप्त करें. अर्थात् श्रेष्ठ हो जाएं. हम देवताओं को हवि प्रदान करने के लिए आप का वरण करते हैं. (१७)

आपश्चित्पिप्यु स्तर्यो न गावो नक्षन्नृतं जरितारस्त ऽ इन्द्र.
याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्व ꣳ हि धीभिर्दयसे वि वाजान्.. (१८)

हे इंद्र देव! यजमान यज्ञ में आप का ध्यान करते हैं. आप के लिए मंत्र गाते हैं. आप के लिए जल व शक्ति की बढ़ोतरी करते हैं. आप हमारे पास आइए. आप आने के लिए वायु जैसे वेगशाली घोड़े जोतिए. आप हमें अन्न व बल दीजिए. (१८)

गाव ऽ उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा. उभा कर्णा हिरण्यया.. (१९)

सूर्य की किरणें यज्ञ व पृथ्वी की रक्षा करती हैं. किरणों के दोनों कान स्वर्णमय हैं. (१९)

यदद्य सूर ऽ उदितेनागा मित्रो अर्यमा. सुवाति सविता भगः.. (२०)

आज सूर्य के उदित होने पर निश्छल यजमानों को मित्र और अर्यमा देव श्रेष्ठ कामों में लगाने की कृपा करें. सविता देव सौभाग्यशाली बनाएं. वे श्रेष्ठ कामों में लगाएं. (२०)

आ सुते सिञ्चत श्रिय ꣳ रोदस्योरभिश्रियम्.
रसा दधीत वृषभम्.
तं प्रत्नथायं वेनः.. (२१)

यजमानगण प्रवहमान सोमरस को सिंचित करते हैं. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक के संरक्षण में सोम का प्रवाह बहुत तेज होता है. वह शोभायमान होता है. (२१)

आतिष्ठन्तंपरि विश्वे अभूषञ्छ्रियो वसानश्चरति स्वरोचिः.
महत्तद्वृष्णो असुरस्य नामा विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ.. (२२)

इंद्र देव प्रकाशमान और वैभववान हैं. सभी देवताओं ने मिल कर उन की प्रतिष्ठा की है. सभी देव चारों ओर से घेर कर उन की उपासना करते हैं. वे महान् व विश्वरूप हैं. कई असुरों को मार कर उन्होंने ख्याति पाई है. वे अमर हैं. (२२)

प्र वो महे मन्दमानायान्धसोर्चा विश्वानराय विश्वाभुवे.
इन्द्रस्य यस्य सुमख ꣳ सहो महि श्रवो नृम्णं च रोदसी सपर्यतः.. (२३)

हे यजमानो! इंद्र देव महिमाशाली, सब लोकों के पालक, संपूर्ण जग को उपजाने वाले व मदमस्त बनाने वाले हैं. हम उन की अर्चना करते हैं. इंद्र देव के लिए श्रेष्ठ यज्ञ किए जाते हैं. उन की महिमा सुनी जाती है, जो पृथ्वी और स्वर्ग दोनों लोकों को महान् वैभव प्रदान करते हैं. (२३)

बृहन्निदिध्म ऽ एषां भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः. येषामिन्द्रो युवा सखा.. (२४)

इंद्र देव युवा, हमारे सखा, विशाल व शत्रुनाशी हैं. वे बहु प्रशंसित और सामर्थ्यशाली हैं. (२४)

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः. महाँ २ अभिष्टिरोजसा.. (२५)

हे इंद्र देव! आप महान्, आदरणीय व सब को आनंद देने वाले हैं. आप सोम उत्सव में पधारिए. आहुति ग्रहण कर के प्रसन्न होइए. हमें ओजस्वी बनाइए. हमारे अभीष्ट पूरिए. (२५)

इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद्वर्पणीतिः.
अहन् व्य ꣳस समुशधग्वनेष्वाविर्धेना ऽ अकृणोद्राम्याणाम्.. (२६)

हे इंद्र देव! आप वृत्रासुर, मायावी राक्षसों व दुष्टों का दलन करने वाले हैं. आप आह्लादक और हमारी स्तुतियों को प्रकट करते हैं. (२६)

कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त ऽ इत्था.
सं पृच्छसे समराणः शुभानैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत्ते अस्मे.
महाँ २ इन्द्रो य ऽ ओजसा कदा चन स्तरीरसि कदा चन प्र युच्छसि.. (२७)

हे इंद्र देव! आप महिमाशाली सज्जनों के स्वामी हैं. आप अकेले कहां जाते हैं ? आप इस प्रकार क्यों जाते हैं. अच्छी तरह जाते हुए आप से यह प्रश्न पूछा जाता है. आप के घोड़े हरे रंग के हैं. आप ओजस्वी हैं. आप कभी भी हिंसा आदि नहीं करते हैं. आप हमारे शुभचिंतक और अपने हैं. इसीलिए हम आप से यह सब पूछ रहे हैं. (२७)

आ तत्त ऽ इन्द्रायवः पनन्ताभि य ऽ ऊर्वं गोमन्तं तितृत्सान्.
सकृत्स्वं ये पुरुपुत्रां मही ꣳस सहस्रधारां बृहतीं दुदुक्षन्.. (२८)

हे इंद्र देव! आप गोस्वामियों के घातकों व भूपतियों (भूमिस्वामी) के हत्यारों को मारते हैं. पृथ्वी पर सहस्रों धाराओं वाले सोम को निचोड़ते हैं. उस का दोहन करते हैं. श्रेष्ठ कर्मों वाले आप के पुत्र आप की महिमा का गान करते हैं. (२८)

इमां ते धियं प्र भरे महो महीमस्य स्तोत्रे धिषणा यत्त ऽ आनजे.
तमुत्सवे च प्रसवे च सासहिमिन्द्रं देवासः शवसामदन्ननु.. (२९)

हे इंद्र! हम आप की बुद्धि को धारण करते हैं. आप महान व पृथ्वी का भरणपोषण करने में समर्थ हैं. हम आप की स्तुति करते हैं. उत्सव और प्रसव के समय हमें कष्ट पहुंचाने वाले शत्रुओं का साहसी इंद्र देव दमन करते हैं. देवगण भी आनंदित हो कर इंद्र देव के गुण गाते हैं. (२९)

विभ्राड् बृहत्पिबतु सोम्यं मध्वायुर्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्.
वातजूतो यो अभिरक्षति त्मना प्रजाः पुपोष पुरुधा वि राजति.. (३०)

हे इंद्र देव! आप चमकीले व विशाल हैं. आप सोमरस को पीने की कृपा

कीजिए. सोमरस मधुर है. हम यज्ञ में आप का आह्वान करते हैं. आप अपनी प्रजा की सर्वविधि (सब प्रकार से) रक्षा करते हैं. आप प्रजा का पालनपोषण और उन्हें बहुविधि प्रकाशित करते हैं. (३०)

उदु त्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः. दृशे विश्वाय सूर्यम्.. (३१)

सूर्य सब को प्रकाशित करने वाले, सब कुछ जानने वाले व सारे विश्व को देखने में समर्थ हैं. वे ऊर्ध्वगामी पताका वहन करते हैं. (३१)

येना पावक चक्षसा भुरण्यन्तं जनाँ २ अनु. त्वं वरुण पश्यसि.. (३२)

हे वरुण देव! आप पवित्र बनाने वाले व भरणपोषण करने वाले हैं. आप जिस दृष्टि से देखते हैं. हम भी उसी दृष्टि से (लोगों को) देखने में आप का अनुकरण करें. (३२)

दैव्यावध्वर्यू आ गत ꣳ रथेन सूर्यत्वचा.
मध्वा यज्ञ ꣳ समञ्जाथे.
तं प्रत्नथायं वेनश्चित्रं देवानाम्.. (३३)

हे अश्विनीकुमारो! आप दोनों दिव्य व (यज्ञ के) अध्वर्यु (पुरोहित) हैं. आप सूर्य के समान चमकने वाले रथ से यहां आ जाइए. आप देवताओं के इस यज्ञ को प्रयत्नपूर्वक (अच्छी तरह से) पूर्ण कराइए. (३३)

आ न ऽ इडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरः सविता देव ऽ एतु.
अपि यथा युवानो मत्सथा नो विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा.. (३४)

हे सविता देव! आप बहुप्रशंसित, कल्याणकारी व अन्नदाता हैं. आप हमारे यहां यज्ञ स्थान में पधारने की कृपा कीजिए. आप युवा व जगत् के पालनहार हैं. आप हम सभी को अपनी बुद्धि से तृप्त करने की कृपा कीजिए. (३४)

यदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा ऽ अभि सूर्य. सर्वं तदिन्द्र ते वशे.. (३५)

हे इंद्र देव! आप शत्रुनाशी हैं. सूर्य जैसे अंधेरे का नाश करते हैं, वैसे ही आप वृत्र का नाश करते हैं. हे इंद्र देव! सब कुछ आप के ही वश में है. (३५)

तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य. विश्वमा भासि रोचनम्.. (३६)

हे सूर्य! आप तारक, संसार के लिए दर्शनीय व ज्योति के आविष्कारक हैं. आप अपने प्रकाश से सब को प्रकाशित करने वाले हैं. (३६)

तत्सूर्यस्य देवत्वं तन्महित्वं मध्या कर्तोर्विततꣳ सं जभार.
यदेदयुक्त हरितः सधस्थादाद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै.. (३७)

सूर्य की दिव्यता व महिमा व्यापक है. सूर्य संसार के मध्य विराजमान (स्थित) व विशाल निर्माण और संहार करने वाले हैं. जब वे अलग कर के अपनी हरी किरणों को साधते हैं, तब रात्रि संसार को अंधकार से घेर लेती है. (३७)

तन्मित्रस्य वरुणस्याभिचक्षे सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थे.
अनन्तमन्यद्रुशदस्य पाजः कृष्णमन्यद्धरितः सं भरन्ति.. (३८)

सूर्य मित्र देव और वरुण देव के साथ मनुष्यों को सब ओर से देखते हैं. सूर्य रूपवान हैं. स्वर्गलोक उन के उस रूप को धारण करता है. दूसरा कृष्ण और हरित रूप है. उसे आकाश धारण करता है. (३८)

बण्महाँ २ असि सूर्य बडादित्य महाँ २ असि.
महस्ते सतो महिमा पनस्यतेद्धा देव महाँ २ असि.. (३९)

हे सूर्य! आप बड़े ही महान् हैं. हे आदित्य देव! आप बड़े महान् हैं. महान् होने के कारण ही सभी आप की महिमा गाते हैं. वास्तव में आप सभी देवों में महान् हैं. (३९)

बट् सूर्य श्रवसा महाँ २ असि सत्रा देव महाँ २ असि.
मह्ना देवानामसुर्यः पुरोहितो विभु ज्योतिरदाभ्यम्.. (४०)

हे सूर्य! आप प्रख्यात, महान्, सभी देवों में महान् व असुरनाशक हैं. आप पुरोहित, प्रकाशक व ज्योति के भंडार हैं. (४०)

श्रायन्त ऽ इव सूर्यं विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत.
वसूनि जाते जनमान ऽ ओजसा प्रति भागं न दीधिम.. (४१)

सूर्य से उत्पन्न हो कर उन के संरक्षण में उन की किरणें संसार के वैभव को भोगती हैं, वैसे ही हम अपनी भावी पीढ़ी के लिए ओज और धन को धारण करें. (४१)

अद्या देवा ऽ उदिता सूर्यस्य निर ꣳ हसः पिपृता निरवद्यात्.
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः.. (४२)

हे यजमानो! आज सूर्य की किरणें उदित हो कर हमें पापों व हिंसा से बचाएं. वे मित्र देव, वरुण देव, अदिति देव, समुद्र, पृथ्वी और स्वर्गलोक हम अहिंसक यजमानों की इच्छा पूरी करने की कृपा करें. (४२)

आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च.
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्.. (४३)

काले अंधकार से भरे पथ पर घूमते हुए सविता देव अपने सोने के रथ पर

सवार हो कर लोकों को देखते हुए जाते हैं. सविता देव मनुष्यों को निवेश (काम में लगाते) करते हुए जाते हैं. (४३)

प्र वावृजे सुप्रया बर्हिरेषामा विश्पतीव बीरिट ऽ इयाते.
विशामक्तोरुषसः पूर्वहूतौ वायुः पूषा स्वस्तये नियुत्वान्.. (४४)

यजमान अपने कल्याण के लिए उषाकाल में वायु व पूषा देव को आमंत्रित करते हैं. यजमान इन देवों के लिए कुश के आसन भेंट करते हैं. ये देव ठाटबाट से राजा की तरह पधारते हैं. (४४)

इन्द्रवायू बृहस्पतिं मित्राग्निं पूषणं भगम्. आदित्यान् मारुतं गणम्.. (४५)

हम इंद्र देव, वायु देव, बृहस्पति देव, मित्र देव, अग्निपूषा देव भग देव, आदित्यगण और मरुद्गण का आह्वान करते हैं. (४५)

वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो विश्वाभिरूतिभिः. करतां नः सुराधसः.. (४६)

वरुण देव और मित्र देव संसार के मित्र हैं. वे अपनी पूरी क्षमता से अपने सभी रक्षा साधनों से हमारी रक्षा करने की कृपा करें. ये देव हमें श्रेष्ठ धनों से संपन्न बनाने की कृपा करें. (४६)

अधि न ऽ इन्द्रैषां विष्णो सजात्यानाम्.
इता मरुतो अश्विना.
तं प्रत्नथायं वेनो ये देवास ऽ आ न ऽ इडाभिर्विश्वेभिः सोम्यं मध्वोमासश्चर्षणीधृतः.. (४७)

हे इंद्र देव! हे विष्णु! आप पधारिए. आप सजातीय बंधुओं के बीच अधिष्ठित होइए. मरुद्गण और अश्विनी देव भी अधिष्ठित होने की कृपा करें. सभी देव सर्वद्रष्टा हैं. सभी देव मधुर सोमरस को पीने व हमें धारण करने की कृपा करें. (४७)

अग्न ऽ इन्द्र वरुण मित्र देवाः शर्धः प्र यन्त मारुतोत विष्णो.
उभा नासत्या रुद्रो अध ग्नाः पूषा भगः सरस्वती जुषन्त.. (४८)

हे अग्नि! हे इंद्र देव! हे वरुण देव, हे मित्र देव! हे मरुद्गण! हे विष्णु! आप हमें सुख व सामर्थ्य प्रदान कीजिए. अश्विनीकुमार, रुद्रगण, पूषा, भग, सरस्वती आदि देवता भी हमारे यज्ञ में पधारने की कृपा करें. (४८)

इन्द्राग्नी मित्रावरुणादिति ꣳ स्वः पृथिवीं द्यां मरुतः पर्वताँ २ अपः.
हुवे विष्णुं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं भगं नु श ꣳ स ꣳ सवितारमूतये.. (४९)

हम इंद्र देव, अग्नि, मित्र देव, वरुण देव, अदिति देव, पृथ्वीलोक, स्वर्गलोक, मरुद्गण, पर्वत, जल, विष्णु, पूषा देव, बृहस्पति देव, भग देव व सविता देव

का आह्वान करते हैं. हम सभी देवों से रक्षा साधनों सहित पधारने का अनुरोध करते हैं. (४९)

अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः.
यः श ꣳ सते स्तुवते धायि पज्र ऽ इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ २ अवन्तु देवाः.. (५०)

यजमान हेतु मेह (वर्षा) बरसाने वाले, वृत्रासुर का नाश करने वाले, शत्रुओं को रुलाने वाले, पर्वतवासी इंद्र देव हमारा भरणपोषण व हमारी रक्षा करने की कृपा करें. इंद्र देव वरिष्ठ हैं. उन की हम स्तुति करते हैं. उन की हम उपासना करते हैं. वे हमारी रक्षा करने की कृपा करें. (५०)

अर्वाञ्चो अद्या भवता यजत्रा आ वो हार्दि भयमानो व्ययेयम्.
त्राध्वं नो देवा निजुरो वृकस्य त्राध्वं कर्तादवपदो यजत्राः.. (५१)

हे देवगण! आप हमारा कल्याण व हमारे यज्ञ की रक्षा कीजिए. आज आप हमारे निकट पधारिए. हम डरे हुए यजमानों के हृदय में प्रेम भाव भरिए. आप बुरे कामों व बुरे लोगों से हमारी रक्षा कीजिए. (५१)

विश्वे अद्य मरुतो विश्व ऽ ऊती विश्वे भवन्त्वग्नयः समिद्धाः.
विश्वे नो देवा ऽ अवसा गमन्तु विश्वमस्तु द्रविणं वाजो अस्मे.. (५२)

आज हमारे इस यज्ञ में मरुद्गण सब की रक्षा के लिए पधारने की कृपा करें. अग्नि व विश्व हमारी रक्षा के लिए पधारने की कृपा करें. समिधाओं से इंद्र देव बढ़ोतरी पाएं. सभी देव हमें बल प्रदान करें. सभी देव हमें अन्न व धन प्रदान करने की कृपा करें. (५२)

विश्वे देवाः शृणुतेम ꣳ हवं मे ये अन्तरिक्षे य ऽ उप द्यवि ष्ठ.
ये अग्निजिह्वा ऽ उत वा यजत्रा ऽ आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम्.. (५३)

सभी देव हमारी स्तुतियां सुनने की कृपा करें. जो देव अंतरिक्ष लोक में हैं, जो देव स्वर्गलोक में हैं, वे देव भी हमारी स्तुतियां सुनने की कृपा करें. अग्निमुख वाले देव हमारी दी हुई हवि को स्वीकार करने की कृपा करें. यज्ञ में हम ने कुश के आसन उन के लिए बिछाए हैं. वे कृपया उस पर विराजें. (५३)

देवेभ्यो हि प्रथमं यज्ञियेभ्योमृतत्व ꣳ सुवसि भागमुत्तमम्.
आदिद्दामान ꣳ सवितर्व्यूर्णुषेनूचीना जीविता मानुषेभ्यः.. (५४)

हे सविता देव! आप देवताओं में प्रथम हैं. आप यज्ञ करने वालों को अमृत और उत्तम सौभाग्य प्रदान करते हैं. वे फिर (अंतरिक्ष में) अपनी किरणों का विस्तार करते हैं. मनुष्यों के जीवन के लिए वे यत्न करते हैं. (५४)

प्र वायुमच्छा बृहती मनीषा बृहद्रयिं विश्ववार ꣳ रथप्राम्.

द्युतद्यामा नियुतः पत्यमानः कविः कविमियक्षसि प्रयज्यो.. (५५)

हे पुरोहित! आप वैभवशाली, कवि व रथवान हैं. हम श्रेष्ठ बुद्धि से आप की उपासना करते हैं. आप श्रेष्ठ बुद्धि से यज्ञ करने में अपने को लगाइए. आप वायु की श्रेष्ठ बुद्धि से उपासना कीजिए. (५५)

इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम्. इन्दवो वामुशन्ति हि.. (५६)

हे इंद्र देव! हे वायु! आप के इन पुत्रों ने आप के लिए सोमरस निचोड़ कर तैयार किया है. आप सोमरस को ग्रहण करने के लिए पधारिए. इंद्र देव और वायु देव हमें शांति प्रदान करने की कृपा करें. (५६)

मित्र ꣳ हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्. धियं घृताची ꣳ साधन्ता.. (५७)

मित्र देव और वरुण देव पवित्रतादायी, दक्ष और पाप धोने वाले हैं. हम घी से सींची हुई, साधी हुई बुद्धि से उन की आराधना करते हैं. (५७)

दस्रा युवाकवः सुता नासत्या वृक्तबर्हिषः.
आ यात ꣳ रुद्रवर्त्तनी.
तं प्रत्नथायं वेनः.. (५८)

हे अश्विनीकुमारो! आप युवा व सुंदर हैं. आप आइए और कुश वाले आसन पर विराजिए. आप रुद्र जैसी वृत्ति वाले हैं, आप आइए. हम ने आप के लिए प्रयत्नपूर्वक सोमरस तैयार किया है. आप उसे ग्रहण करने की कृपा कीजिए. (५८)

विदद्यदी सरमा रुग्णमद्रेर्महि पाथः पूर्व्य ꣳ सध्र्यक्कः.
अग्रं नयत्सुपद्यक्षराणामच्छा रवं प्रथमा जानती गात्.. (५९)

अग्रगण्य श्रेष्ठ अक्षर वाले मंत्रों से यजमान देवों की उपासना करते हैं. पत्थरों से कूटकूट कर सोमरस निचोड़ा गया है. विद्वान् इस सोमरस का सेवन करते हैं. (५९)

नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर ऽ एतारमग्नेः.
एमेनमवृधन्नमृता ऽ अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः.. (६०)

हे अग्नि! यजमानों ने वैश्वानर के बिना और किसी को अग्रणी नहीं जाना. यजमानों ने आप को अमर जाना. मनुष्यों ने विभिन्न क्षेत्रों में जीत पाने के लिए वैश्वानर की बढ़ोतरी की (६०)

उग्रा विघनिना मृध ऽ इन्द्राग्नी हवामहे. ता नो मृडात ऽ ईदृशे.. (६१)

हे इंद्र देव! हे अग्नि! आप उग्र व विघ्न नाशक हैं. हम आप दोनों देवों का आह्वान करते हैं. आप इस तरह की स्थितियों में हमें सुख प्रदान करने की कृपा कीजिए. (६१)

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे. अभि देवाँ २ इयक्षते.. (६२)

हे यजमानो! देवताओं द्वारा चाहे गए सोमरस को तैयार कीजिए. सोमरस पवित्र है. आप उस के लिए और स्तुतियां गाइए. (६२)

ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन्ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ.
ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोम ꣳ सगणो मरुद्भिः.. (६३)

हे इंद्र देव! आप धनवान व हरे रंग के घोड़े वाले हैं. मरुद्गण मेधावी हैं. उन्होंने अहि, शंबर आदि शत्रुओं के नाश के लिए आप को प्रेरित किया. गायों को छुड़ाने पर उन्होंने आप की स्तुतियां गाईं. वे सदैव आप का अनुमोदन करते हैं. हे इंद्र देव! आप विप्र हैं. आप पधारिए. आप मरुद्गण के साथ सोमरस को पीने की कृपा कीजिए. (६३)

जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय मन्द्र ऽ ओजिष्ठो बहुलाभिमानः.
अवर्धन्निन्द्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरं दधनद्धनिष्ठा.. (६४)

हे इंद्र देव! आप लोगों द्वारा चाहे गए हैं. आप उग्र, साहसी, बुद्धिमान, वेगवान, ओजवान व बहुत अभिमानी हैं. हे इंद्र देव! (शत्रुनाश हेतु) देव माता अदिति ने आप को गर्भ में धारण किया. मरुद्गणों ने निष्ठापूर्वक आप की स्तुति की है. (६४)

आ तू न ऽ इन्द्र वृत्रहन्नस्माकमर्धमा गहि. महान्महीभिरूतिभिः.. (६५)

हे इंद्र देव! आप वृत्रासुर नाशक व संरक्षणधर्मा हैं. आप हमारे पास पधारिए. आप अपनी महान् महिमा और रक्षाओं के साथ पधारने की कृपा कीजिए. (६५)

त्वमिन्द्र प्रतूर्त्तिष्वभि विश्वा ऽ असि स्पृधः.
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुष्यतः.. (६६)

हे इंद्र देव! आप सभी शत्रुओं के साथ स्पर्धा करते हैं. आप दुष्टों का दलन करते हैं. आप सुख उपजाते हैं. (६६)

अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा.
विश्वास्ते स्पृधः श्रथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि.. (६७)

हे इंद्र देव! जैसे मातापिता अपने शिशु को संरक्षण देते हैं वैसे ही आप हमें संरक्षण दीजिए. जब आप शत्रु से स्पर्द्धा करते हैं. तब सारी शत्रु सेना भयभीत हो जाती है. (६७)

यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः.
आ वोर्वाची सुमतिर्ववृत्याद ꣳ होश्चिद्या वरिवोवित्तरासत्.. (६८)

हे यजमानो! हम देवताओं के प्रति यज्ञ करते हैं. हे आदित्य देव! आप अच्छे

मन वाले हैं. आप सुखदाता हैं. आप हमें सुमति दीजिए. आप शत्रुओं की बुद्धि को हमारे प्रति अनुकूल करने की कृपा कीजिए. (६८)

अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्व ँ्ँ शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्.
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो अघश ँ्ँ स ऽ ईशत.. (६९)

हे सविता देव! आप हमारे घरों व अपने रक्षासाधनों से हमारी रक्षा व हमारा कल्याण कीजिए. आप सोने की जीभ वाले हैं. हम आप को शीश नवाते हैं. (६९)

प्र वीरया शुचयो दद्रिरे वामध्वर्युभिर्मधुमन्तः सुतासः.
वह वायो नियुतो याह्यच्छा पिबा सुतस्यान्धसो मदाय.. (७०)

हे पुरोहितो! आप पत्थरों से कूट कर, निचोड़ कर सोमरस तैयार कीजिए. हे वायु! आप घोड़े जोतिए, रथ लाइए. आप आनंद के लिए सोमरस पीने की कृपा कीजिए. (७०)

गाव ऽ उपावतावतं मही यज्ञस्य रप्सुदा. उभा कर्णा हिरण्यया.. (७१)

हे यज्ञ में बह रही जलधाराओ! आप पृथ्वी की रक्षा कीजिए. हे पुराहितो! आप पत्थरों से कूट कर, निचोड़ कर सोमरस तैयार कीजिए. आप के दोनों कान सोने के बने हुए हैं. आप उन से हमारी स्तुति सुनने की कृपा कीजिए. (७१)

काव्ययोराजानेषु क्रत्वा दक्षस्य दुरोणे. रिशादसा सधस्थ ऽ आ.. (७२)

हे देवगण! आप राजा व दक्ष हैं. आप इस यज्ञ में पधारने व यज्ञ पूरा कराने की कृपा कीजिए. (७२)

दैव्यावध्वर्यू आ गत ँ्ँ रथेन सूर्यत्वचा.
मध्वा यज्ञ ँ्ँ समञ्जाथे.
तं प्रत्नथायं वेनः.. (७३)

हे पुरोहितो! आप दिव्य हैं. आप सूर्य की तरह चमकने वाले रथ से इस यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. हम ने प्रयत्नपूर्वक आप के लिए हवि तैयार की है. (७३)

तिरश्चीनो विततो रश्मिरेषामधः स्विदासी ३ दुपरि स्विदासी ३ त्.
रेतोधा ऽ आसन्महिमान ऽ आसन्त्स्वधा अवस्तात्प्रयतिः परस्तात्.. (७४)

सोम पवित्र हैं. उन की तिरछी किरणों का प्रकाश बहुत दूर तक फैलता है. वे नीचे ऊपर सब ओर व्याप्त हैं. ये किरणें वीर्य धारण करती हैं. ये किरणें महिमामयी हैं. ये ऊपर नीचे सब ओर से संसार को धारण करती हैं. (७४)

आ रोदसी अपृणदा स्वर्महज्जातं यदेनमपसो अधारयन्.
सो अध्वराय परि णीयते कविरत्यो न वाजसातये चनोहितः.. (७५)

स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक में अग्नि को यजमान धारण करते हैं. अग्नि सब को प्रकाशित करते हैं. यज्ञ के लिए हम अग्नि का वरण करते हैं. जैसे घोड़ा सब ओर विचरता है, वैसे ही अग्नि सब ओर विचरते हैं. (७५)

उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा. आङ्गूषैराविवासतः.. (७६)

हे इंद्र देव! आप वृत्रासुर नाशक व आनंददाता हैं. हम श्रेष्ठ उक्थों (मंत्रों) से आप की आराधना करते हैं. (७६)

उप नः सूनवो गिरः शृण्वन्त्वमृतस्य ये. सुमृडीका भवन्तु नः.. (७७)

हम आप के पुत्र हैं. अमर देवता हमारी वाणियां सुनने व हमारे प्रति कल्याणकारी होने की कृपा करें. (७७)

ब्रह्माणि मे मतयः श ꣳ सुतासः शुष्म ऽ इयर्ति प्रभृतो मे अद्रिः.
आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो अच्छ.. (७८)

आप के पुत्रों की बुद्धि सुखदायी है. हम ने पत्थरों से कूट कर सोमरस निचोड़ा है. आप अपने हरे घोड़ों को साधिए, जोतिए और यहां पधारने की कृपा कीजिए. हम आप के लिए उक्थ मंत्र गाते हैं. (७८)

अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ २ अस्ति देवता विदानः.
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध.. (७९)

हे इंद्र देव! आप से अधिक उत्तम कोई नहीं है. आप से ज्यादा धनवान, आप से ज्यादा कोई देवता विद्वान् नहीं है. आप जैसा कोई न उत्पन्न हुआ है, न ही उत्पन्न होगा. आप जैसे कार्य भी न किसी ने किए हैं, न करेंगे. (७९)

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ ऽ उग्रस्त्वेषनृम्णः.
सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः.. (८०)

इंद्र देव भुवनों में ज्येष्ठ, उग्र व शत्रुनाशक हैं. यज्ञ में रक्षा करने वाले सभी देवगण उन को प्रसन्न करते हैं. संसार में इंद्र देव सब का कल्याण करते हैं. (८०)

इमा ऽ उ त्वा पुरूवसो गिरो वर्धन्तु या मम.
पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितोभि स्तोमैरनूषत.. (८१)

हे देवगण! आप बहुत धनवान हैं. आप हमारी वाणी की बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. आप अग्नि जैसे वर्ण (रंग) वाले और पवित्र हैं. हम आप को सर्वविध जानना चाहते हैं. हम सर्वविध आप की स्तुति कर रहे हैं. (८१)

यस्यायं विश्व ऽ आर्यो दासः शेवधिपा अरिः.
तिरश्चिदर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत्सो अज्यते रयिः.. (८२)

जिस का (इंद्र देव का) सारा संसार दास है, सारे आर्य जिस के दास हैं, उदारताहीन लोग उस के लिए दुश्मन हैं. इंद्र देव हमें आयुष्मान बनाने की कृपा करें. वे हमें धनवैभव प्रदान करें, ताकि हम उस धन का उपभोग कर सकें. (८२)

अय ध्ठ सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र ऽ इव प्रपथे.
सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये.. (८३)

इंद्र देव को हजारों ऋषियों ने अपने स्तोत्रों से बलवान बनाया है. वे हजारों कार्य करने में समर्थ हैं. वे समुद्र की भांति विस्तृत हैं. वे अतीव महिमावान व गणमान्य हैं. यज्ञों में ब्राह्मणों के कहे अनुसार उन की महिमा का गुणगान किया जाता है. (८३)

अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्व ध्ठ शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्.
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे रक्षा माकिर्नो अघश ध्ठस ऽ ईशत.. (८४)

हे सविता देव! आप सोने की जीभ वाले और कल्याणदायी हैं. आप हमारे घरों की सब ओर से रक्षा करते हैं. आप हमारी रक्षा कीजिए. पापी हम पर कब्जा न जमा सकें. हम आप को बारबार नमन करते हैं. (८४)

आ नो यज्ञं दिविस्पृशं वायो याहि सुमन्मभिः.
अन्तः पवित्र ऽ उपरि श्रीणानोय ध्ठ शुक्रो अयामि ते.. (८५)

हे वायु! स्वर्गलोक तक छूने (पहुंचने) वाले हमारे इस यज्ञ में आप पधारने की कृपा कीजिए. हम अच्छे मन वाले यजमान आप से आने का अनुरोध करते हैं. सोम पवित्र, चमकीले व अत्यंत शोभादायक हैं. हम ऊपर से धरती पर आए इस सोमरस को आप के पीने के लिए भेंट करते हैं. (८५)

इन्द्रवायू सुसन्दृशा सुहवेह हवामहे.
यथा नः सर्व ऽ इज्जनोनमीवः सङ्गमे सुमना ऽ असत्.. (८६)

हे इंद्र देव! हे वायु! आप अच्छी तरह से आह्वान के योग्य हैं. हम अच्छी तरह आप का आह्वान करते हैं, जिस से हमारे सभी (आत्मीय) जन रोग रहित व श्रेष्ठ मन वाले हो जाएं. (८६)

ऋधगित्था स मर्त्यः शशमे देवतातये.
यो नूनं मित्रावरुणावभिष्टय ऽ आचक्रे हव्यदातये.. (८७)

जो मनुष्य अपने सुख के लिए आप का आह्वान करते हैं, निश्चय ही जो मनुष्य अपने अभीष्ट की पूर्ति के लिए मित्र देव और वरुण देव का आह्वान करते हैं, हवि देने के लिए मनुष्य आप का आह्वान करते हैं. आप उन का अभीष्ट पूरा करने की कृपा कीजिए. (८७)

आ यातमुप भूषतं मध्व: पिबतमश्विना.
दुग्धं पयो वृषणा जेन्यावसू मा नो मर्धिष्टमा गतम्.. (८८)

हे अश्विनीकुमारो! आप यज्ञ में आने की कृपा कीजिए. आप यज्ञ की शोभा बढ़ाइए. आप यज्ञ में दूध और रसों को पीने व धन बरसाने की कृपा कीजिए. (८८)

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता.
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः.. (८९)

हे अश्विनीकुमारो! आप यज्ञ में पधारने, दिव्य तथा सत्यवाणी प्रदान करने की कृपा कीजिए. देवगण मनुष्यों के हितैषी हैं. वे यज्ञ में पंक्ति में पधारें और शत्रुनाश की कृपा करें. (८९)

चन्द्रमा ऽ अप्स्वन्तरा सुपर्णो धावते दिवि.
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृह ꣳ हरिरेति कनिक्रदत्.. (९०)

सोम देव चंद्रमा के भीतर से निकले हैं. सोम देव दीप्तिमान (चमकदार) व रंगबिरंगे हैं. वे घन गर्जना के साथ स्वर्गलोक की ओर दौड़ते हैं. वे हम पर धन की वर्षा करने की कृपा करें. (९०)

देवं देवं वोवसे देवं देवमभिष्टये.
देवं देव ꣳ हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया.. (९१)

हम अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिए देव का आह्वान करते हैं. हम अपनी अभीष्ट सिद्धि के लिए देव को हवि समर्पित करते हैं. हम बुद्धिपूर्वक देवता का आह्वान करते हैं. (९१)

दिवि पृष्टो अरोचताग्निर्वैश्वानरो बृहन्.
क्ष्मया वृधान ऽ ओजसा चनोहितो ज्योतिषा बाधते तमः.. (९२)

वैश्वानर देव स्वर्गलोक के पृष्ठ देश में दीप्त हैं. वैश्वानर देव हवि से बढ़ोतरी पाते हैं. वैश्वानर देव दीप्ति से अंधकार नष्ट करते हैं. (९२)

इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः.
हित्वी शिरो जिह्वया वावदच्चरत्त्रि ꣳ शत्पदा न्यक्रमीत्.. (९३)

हे इंद्र देव! उषा देवी पैर रहित हो कर भी पैर वालों से पूर्व आती हैं. हे अग्नि! सिर रहित होने पर भी प्राणियों के सिर प्रेरित करती हैं. हे अग्नि! मनुष्यों की जिह्वा से बोलती हुई आगे बढ़ती हैं. दिन में सैकड़ों पैरों से बढ़ती हैं. (९३)

देवासो हि ष्मा मनवे समन्यवो विश्वे साक ꣳ सरातयः.
ते नो अद्य ते अपरं तुचे तु नो भवन्तु वरिवोविदः.. (९४)

सभी देव मनन तथा समन्वयशील हैं. सभी देव हमें सभी वैभव प्रदान करने की कृपा करें. सभी देव आज हमें और भविष्य में हमारी पीढ़ियों के लिए वैभव प्रदाता हों. (९४)

अपाधमदभिशस्तीरशस्तिहाथेन्द्रो द्युम्न्याभवत्.
देवास्त ऽ इन्द्र सख्याय येमिरे बृहद्भानो मरुद्गण.. (९५)

इंद्र देव उद्दंडों को दंडित करते हैं. वे हिंसा को दूर भगाते हैं. उन से सभी देवगण मित्रता चाहते हैं. हे मरुद्गण! आप की सभी देवता मित्रता चाहते हैं. हे अग्नि देव! आप की सभी देवगण मित्रता चाहते हैं. (९५)

प्र व ऽ इन्द्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत.
वृत्र ꣳ हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा.. (९६)

हे यजमानो! आप इष्टदेव व मरुद्गण के लिए विस्तृत मंत्र उचारिए. इंद्र देव वृत्रासुरनाशी हैं. वे सौ तीखे बाणों वाले वज्र से वृत्रासुर का नाश करते हैं. वे सैकड़ों यज्ञ कर्ता हैं. (९६)

अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्य ꣳ शवो मदे सुतस्य विष्णवि.
अद्या तमस्य महिमानमायवोनुष्टुवन्ति पूर्वथा.
इमा ऽ उ त्वा यस्यायमय ꣳ सहस्रमूर्ध्व ऽ ऊ षु णः.. (९७)

इंद्र देव सोमरस से मदमस्त हो कर यजमान के बल की बढ़ोतरी करते हैं. वे एवं विष्णु देव यजमान पूर्व ऋषियों की भांति ही आप की महिमा स्तोत्रों से अभिव्यक्त हैं. (९७)

चौंतीसवां अध्याय

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति.
दूरङ्गमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु.. (१)

मन जैसा दूर विचरता है वैसे जाग्रत अवस्था में ही सोते में भी दूर विचरता है. मन दूरगामी, प्रकाशमान, प्रकाश का प्रवर्तक व अकेला प्रकाशमान है. हमारा मन कल्याणकारी संकल्पों से युक्त हो. (१)

येन कर्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति विदथेषु धीराः.
यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु.. (२)

मनीषीगण इसी मन से यज्ञ आदि कार्य संपन्न करते हैं. इसी मन से धीर लोग श्रेष्ठ कार्य में लगते हैं. मन अपूर्व व यजमानों में आदरणीय है. हमारा वह मन कल्याणकारी संकल्पों से युक्त हो जाए. (२)

यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु.
यस्मान्न ऽ ऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु.. (३)

जो सभी प्राणियों में ज्ञानमय, चैतन्य, धैर्यमय व अमृतस्वरूप है, जिस के बिना कोई कार्य नहीं किया जाता है, हमारा वह मन कल्याणकारी संकल्पों से युक्त हो जाए. (३)

येनेदं भूतं भुवनं भविष्यत् परिगृहीतममृतेन सर्वम्.
येन यज्ञस्तायते सप्तहोता तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु.. (४)

जिस अमर मन से सब कुछ जाना जाता है, जिस से भूतकाल, वर्तमानकाल और भविष्यकाल को ग्रहण किया जाता है, जिस से सात पुरोहित (होता) यज्ञ का विस्तार करते हैं, हमारा वह मन कल्याणकारी संकल्पों से युक्त हो जाए. (४)

यस्मिन्नृचः साम यजू ꣳ षि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः.
यस्मिंश्चित्त ꣳ सर्वमोतं प्रजानां तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु.. (५)

जैसे रथ के पहिए में अरे होते हैं, वैसे ही जिस मन में ऋग्वेद, सामवेद और

 632/24

यजुर्वेद के मंत्र प्रतिष्ठित हैं, जिस मन में प्रजाओं के चित्त का ज्ञान ओतप्रोत है, हमारा वह मन कल्याणकारी संकल्पों से युक्त हो जाए. (५)

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्वाजिन ऽ इव.
हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु.. (६)

अच्छा सारथी घोड़ों को नियंत्रण में रखता है. निर्धारित स्थान पर ले जाता है. वैसे ही जो मनुष्यों को नियंत्रण में रखता है, उन्हें निर्धारित स्थान पर ले जाता है. जो हृदय में प्रतिष्ठित है, जो अजर है, जो गतिमान है, हमारा वह मन कल्याणकारी संकल्पों से युक्त हो जाए. (६)

पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम्. यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत्.. (७)

हम अपने पिता इंद्र देव की स्तुति करते हैं. वे महान् और बलवान हैं. उन्होंने वृत्रासुर को मर्दित कर दिया. उन्होंने तीनों लोकों में अपनी शक्ति को प्रतिष्ठित किया. (७)

अन्विदनुमते त्वं मन्यासै शं च नस्कृधि.
क्रत्वे दक्षाय नो हिनु प्र ण ऽ आयू ꣳ षि तारिष:.. (८)

हे अनुमते! आप हमारी इच्छाओं का अनुमोदन व हमारा कल्याण करने की कृपा कीजिए. आप हमारे यज्ञ व हमारी आयु की बढ़ोतरी कीजिए. आप हमें तारिए. (८)

अनु नोद्यानुमतिर्यज्ञं देवेषु मन्यताम्. अग्निश्च हव्यवाहनो भवतं दाशुषे मय:.. (९)

हे अनुमते! आज आप हमारे यज्ञ को देवताओं में मान्यता प्राप्त कराइए. हवि वहन करने वाले अग्नि हमारे प्रति दानशील होने की कृपा करें. (९)

सिनीवालि पृथुष्टुके या देवानामसि स्वसा.
जुषस्व हव्यमाहुतं प्रजां देवि दिदिड्ढि न:.. (१०)

हे सिनीवाली देवी! आप देवताओं की बहन, बहुत केशों वाली व प्रजा का पालन करने वाली हैं. हम ने हवि ग्रहण करने के लिए आप को आमंत्रित किया है. आप हवि ग्रहण करने व हमें संतान प्रदान करने की कृपा करें. (१०)

पञ्च नद्य: सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतस:.
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित्.. (११)

पांच नदियां एक जैसी स्रोत वाली सहित सरस्वती नदी में मिल जाती हैं. वही सरस्वती देश में पांच प्रकार से प्रसिद्ध हुईं. (११)

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऽ ऋषिर्देवो देवानामभव: शिव: सखा.
तव व्रते कवयो विद्मनापसोजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टय:.. (१२)

हे अग्नि! आप प्रथम पूजनीय हैं. अंगिरा ऋषि ने आप को प्रकट किया है. आप देवों के देव हैं. आप हमारे लिए कल्याणकारी हों. आप के व्रत से मरुद्गण कवि और विद्वान् हुए हैं. आप हमारे लिए मित्र हों. आप के व्रत से मरुद्गण ज्ञाता हुए हैं. आप के व्रत से मरुद्गण सर्वद्रष्टा हुए हैं. आप के व्रत से मरुद्गण उत्तम आयुधों से युक्त हुए हैं. (१२)

त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य.
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेष ँ्ठ रक्षमाणस्तव व्रते.. (१३)

हे अग्नि! आप हमारे हैं. आप हमारी रक्षा करने व हमें धनवान बनाने की कृपा कीजिए. आप हमारे शरीर को पुष्ट बनाने की कृपा कीजिए. आप वंदनीय व रक्षक हैं. आप हमारी संतान की रक्षा करने की कृपा कीजिए. हमारी गायों की व लगातार हमारी रक्षा करने की कृपा कीजिए. (१३)

उत्तानायामव भरा चिकित्वान्त्सद्य: प्रवीता वृषणं जजान.
अरुषस्तूपो रुशदस्य पाज ऽ इडायास्पुत्रो वयुनेजनिष्ट.. (१४)

हे अग्नि! आप पृथ्वी से उत्पन्न हैं. ज्ञान पूर्ण कर्म से अग्नि का प्रादुर्भाव हुआ है. वे शीघ्र ही अरणि मंथन से प्रज्वलित होते हैं. वे तेजोमय व अद्भुत हैं. वे वायु से और अधिक प्रसार पाते हैं. (१४)

इडायास्त्वा पदे वयं नाभा पृथिव्या ऽ अधि.
जातवेदो निधीमह्यग्ने हव्याय वोढवे.. (१५)

हे अग्नि! आप सर्वज्ञ हैं. हम पृथ्वी के मध्य नाभि में आप की स्थापना करते हैं. हम हवि रूप निधि आप को समर्पित करते हैं. आप उसे वहन करने की कृपा कीजिए. (१५)

प्र मन्महे शवसानाय शूषमाङ्गूषं गिर्वणसे अङ्गिरस्वत्.
सुवृक्तिभि: स्तुवत ऽ ऋग्मियायार्चामार्कं नरे विश्रुताय.. (१६)

इंद्र देव शक्ति की चाह रखते हैं. वे श्रेष्ठ वाणी वाले हैं. वे विद्वान् हैं. हम अंगिरा ऋषि की ही तरह उन की स्तुति करते हैं. अच्छी स्तुतियों से हम उन की स्तुति करते हैं. मनुष्यों के नेतृत्व के लिए प्रख्यात उन की ऋग्वेद के मंत्रों से अर्चना करते हैं. (१६)

प्र वो महे महि नमो भरध्वमाङ्गूष्य ँ्ठ शवसानाय साम.
येना न: पूर्वे पितर: पदज्ञा ऽ अर्चन्तो अङ्गिरसो गा ऽ अविन्दन्.. (१७)

हे यजमानो! आप महा महिमाशाली इंद्र देव को नमस्कार कीजिए. यजमानो! आप महा महिमाशाली इंद्र देव की प्रसन्नता के लिए हवि भेंट कीजिए, जिस से

हमारे पूर्वजों और पितरों ने अर्चना की. पद जान कर अंगिरस ऋषि की तरह मंत्र गाए और मार्ग दर्शन प्राप्त किया. (१७)

इच्छन्ति त्वा सोम्यास: सखाय: सुन्वन्ति सोमं दधति प्रया ꣳसि.
तितिक्षन्ते अभिशस्तिं जनानामिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रकेत:.. (१८)

हे इंद्र देव! आप सोम जैसा सखाभाव चाहते हैं. आप सोमरस निचोड़ते हैं. आप सोमरस धारण करते हैं. सोम मनुष्यों का कठोर व्यवहार सहते हुए भी सोमरस प्रदान करते हैं. अन्न बल को धारते हैं. (१८)

न ते दूरे परमा चिद्रजा ꣳसि स्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम्.
स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा युक्ता ग्रावाण: समिधाने अग्नौ.. (१९)

हे इंद्र देव! आप के लिए परम (अतीव) दूर स्थान भी दूर नहीं है. आप हरि नामक घोड़ों को जोतिए और हरि की (घोड़े की) तरह आने की कृपा कीजिए. हम आप से अपनी स्थिरता व बल की कामना करते हैं. प्रात: संध्या सवन में यज्ञ किया जा रहा है. यह पत्थर सोम निचोड़ने के लिए है. यह समिधा अग्नि प्रज्वलित करने के लिए है. (१९)

अषाढं युत्सु पृतनासु पप्रि ꣳसि स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम्.
भरेषुजा ꣳसि सुक्षिति ꣳसि सुश्रवसं जयन्तं त्वामनु मदेम सोम.. (२०)

हे सोम! आप युद्धों में बहुत अधिक पराक्रम प्रदर्शित करते हैं. आप शत्रुजयी, सेना, गोपालक, बल रक्षक व उत्तम वास स्थान वाले हैं. आप विजेता, यशस्वी हैं. हे सोम! आप हमें आनंदित करते हैं. हम आप का अनुकरण करते हैं. (२०)

सोमो धेन ꣳसि सोमो अर्वन्तमाशु ꣳसि सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति.
सादन्यं विदथ्य ꣳसि सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै.. (२१)

सोम उन यजमानों को दुधारू गाएं प्रदान करते हैं, जो उन्हें आहुति प्रदान करते हैं. ऐसे यजमानों को वेगवान घोड़े प्रदान करते हैं. वे यजमानों को वीर पुत्र प्रदान करते हैं. सोम घरेलू पुत्र प्रदान करते हैं. वे कर्मशील पुत्र प्रदान करते हैं. वे पितृकर्म में दक्ष व आज्ञापालक पुत्र प्रदान करते हैं. (२१)

त्वमिमा ओषधी: सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गा:.
त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ.. (२२)

हे सोम! आप इन सभी ओषधियों को उपजाते हैं. आप ने जल को उपजाया. आप ने गायों को उपजाया. आप ने अंतरिक्ष का विस्तार किया. आप ने संसार को ज्योतिष्मान बनाया. आप ने अंधकार दूर करने की कृपा की. (२२)

देवेन नो मनसा देव सोम रायो भाग ꣳ सहसावन्नभि युध्य.
मा त्वा तनदीशिषे वीर्यस्योभयेभ्य: प्रचिकित्सा गविष्टौ.. (२३)

हे सोम! आप दिव्य हैं. आप हमें मन से धन प्रदान कीजिए व सौभाग्यवान बनाइए. आप हमें युद्ध में जिताइए. आप को दान देने से कोई नहीं रोक सकता. आप अतीव बलशाली व अतीव अभययुक्त हैं. हे सोम! आप हमें दोनों लोकों (पृथ्वीलोक और स्वर्गलोक) का सुख प्रदान कीजिए. (२३)

अष्टौ व्यख्यत् ककुभ: पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून्.
हिरण्याक्ष: सविता देव ऽ आगाद्दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि.. (२४)

सविता देव आठों लोकों को व्याख्यायित व पृथ्वी को प्रकाशित करते हैं. वे सातों समुद्रों को व तीनों लोकों को प्रकाशित करते हैं. वे विभिन्न योजनाओं को प्रकाशित करते हैं. वे स्वर्णमयी आंखों वाले और यजमानों के लिए अगाध रत्न धारने वाले हैं. वे यजमानों को बहुत धन देने वाले हैं. (२४)

हिरण्यपाणि: सविता विचर्षणिरुभे द्यावापृथिवी अन्तरीयते.
अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि कृष्णेन रजसा द्यामृणोति.. (२५)

सविता देव सोने के हाथों वाले व विलक्षण हैं. वे स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक दोनों लोकों के बीच सूर्य को प्रेरित करते हैं. वे रोगों व अंधकार को नष्ट करते हैं. सूर्य अपनी शोभा से दोनों लोकों को आलोकित करते हैं. (२५)

हिरण्यहस्तो असुर: सुनीथ: सुमृडीक: स्ववां यात्वर्वाङ्.
अपसेधन् रक्षसो यातुधानानस्थाद्देव: प्रतिदोषं गृणान:.. (२६)

सूर्य सोने के हाथों (सुनहरे) वाले हैं. वे प्राणदाता, कल्याणदाता, उत्तम सुखदाता व प्रकाशवान हैं. वे दोषहारक राक्षसों व दुष्टों के नाशक हैं. वे हमारे अनुकूल होने की कृपा करें. (२६)

ये ते पन्था: सवित: पूर्व्यासोरेणव: सुकृता ऽ अन्तरिक्षे.
तेभिर्नो अद्य पथिभि: सुगेभी रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव.. (२७)

हे सविता देव! अंतरिक्षलोक में जो आप के धूल रहित उत्तम पथ हैं, आप की कृपा से हम उन पथों पर चलें. हम आप के उन पथों पर चलते हुए सौभाग्यशाली हों. हम आप के उन पथों पर सुरक्षापूर्वक चल सकें. आप उन पथों पर हमारे लिए संदेश कहने की कृपा करें. (२७)

उभा पिबतमश्विनोभा न: शर्म यच्छतम्. अविद्रियाभिरूतिभि:.. (२८)

हे दोनों अश्विनीकुमारो! आप यज्ञ स्थल में पधारने व सोमपान की कृपा करें. आप हमें सुख प्रदान करने की कृपा करें. आप अपने रक्षा साधनों से हमारी रक्षा

कीजिए व सुख प्रदान कीजिए. (२८)

अप्नस्वतीमश्विना वाचमस्मे कृतं नो दस्त्रा वृषणा मनीषाम्.
अद्यूत्येवसे नि ह्वये वां वृधे च नो भवतं वाजसातौ.. (२९)

हे अश्विनीकुमारो! आप दर्शनीय व शक्तिमान हैं. आप हमारी वाणी को अच्छे कार्य में लगाइए. हे अश्विनीकुमारो! आप हमारी मनीषा (बुद्धि) को अच्छे कार्य में लगाइए. (२९)

द्युभिरक्तुभिः परि पातमस्मानरिष्टेभिरश्विना सौभगेभिः.
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः.. (३०)

हे अश्विनीकुमारो! आप आज ही अपने रक्षा साधनों सहित इस यज्ञ में पधारने व उस की बढ़ोतरी करने की कृपा कीजिए. आप द्वारा प्रदान किए गए धन की रक्षा में मित्र देव, वरुण देव, अदिति देव, सिंधु देव, पृथ्वीलोक हमारी सहायता करें. आप द्वारा प्रदान किए गए धन की रक्षा में स्वर्गलोक हमारी सहायता करें. (३०)

आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च.
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्.. (३१)

सविता देव सुनहरे रथ पर सवार हो कर लोकों को देखते हुए प्रयाण करते हैं. वे पृथ्वी को अंधकार से मुक्त करते हैं. वे मनुष्य व देव आदि सभी को कर्म में व मनुष्य आदि सभी को प्रेरित करते हैं. (३१)

आ रात्रि पार्थिव ꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः.
दिवः सदा ꣳ सि बृहती वि तिष्ठस ऽ आ त्वेषं वर्त्तते तमः.. (३२)

रात्रि देवी पृथ्वीलोक को अंधकार से पूरा करती हैं. वे अंतरिक्षलोक को अंधकार से पूरा करती हैं और स्वर्ग को व्याप्त करती है. इस प्रकार रात्रि देवी सब को अंधकार से व्याप्त हैं. (३२)

उषस्तच्चित्रमा भरास्मभ्यं वाजिनीवति. येन तोकं च तनयं च धामहे.. (३३)

उषा देवी अद्‌भुत हैं. वे हमारे लिए धनवती हों. वे अद्‌भुत धन हमारे लिए धारें. उस धन से हम अपनी संतान का उपयुक्त रीति से भरणपोषण कर सकें. (३३)

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्र ꣳ हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना.
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्र ꣳ हुवेम.. (३४)

हम प्रातःकाल अग्नि, इंद्र देव, मित्र देव, वरुण देव व अश्विनीकुमारों का आह्वान करते हैं. हम प्रातःकाल वनस्पति देव, भग देव, पूषण और रुद्र देव का आह्वान करते हैं. (३४)

प्रातर्जितं भगमुग्र ँ हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्त्ता.
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह.. (३५)

हम प्रातःकाल में अदिति देव का आह्वान करते हैं. वे विजेता, सौभाग्यवान, उग्र व संसार के धारक हैं. यह कहा गया है कि धनवान, गरीब, रोगी, राजा कोई भी हो वे अभीष्ट मनोकामना सिद्धि हेतु सूर्य की उपासना (आराधना) करते हैं. (३५)

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः.
भग प्र नो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम.. (३६)

हे भग देव! आप हमारे पथ के प्रणेता हैं. हे भग देव! आप सत्य रूपी धन के प्रदाता हैं. हे भग देव! आप उन्नतिदायी बुद्धि के प्रदाता हैं. हे भग देव! आप हमारे लिए गाएं उत्पन्न करें. हे भग देव! आप हमारे लिए घोड़े उत्पन्न करें. हे भग देव! आप की कृपा से हम नेतृत्व करने वाली संतान वाले हो जाएं. (३६)

उतेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व ऽ उत मध्ये अह्नाम्.
उतोदिता मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवाना ँ सुमतौ स्याम.. (३७)

हम सूर्य की कृपा से सद्‌बुद्धि वाले व धनवान हो जाएं. हम उन की कृपा से सूर्योदय में धन प्राप्त करें. हम उन की कृपा से मध्याह्न और सूर्यास्त में धन संपन्न हों. (३७)

भग ऽ एव भगवाँ २ अस्तु देवास्तेन वयं भगवन्तः स्याम.
तं त्वा भग सर्व ऽ इज्जोहवीति स नो भग पुर ऽ एता भवेह.. (३८)

हे भग देव! आप धनवान व भाग्यवान हैं. आप की कृपा से हम यजमान भी धनवान और भाग्यवान हो जाएं. यजमान भग देव का आह्वान करते हैं. आप हमारे यहां पधार कर हमारे यज्ञ और सभी इष्ट कार्यों को सफल बनाने की कृपा कीजिए. (३८)

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय.
अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन ऽ आ वहन्तु.. (३९)

हम उषाकाल में यज्ञ व नमन करते हैं. हम उषाकाल में पवित्र गतिविधियां संपन्न करते हैं. जैसे अश्ववान रथ गतिशील रहते हैं, वैसे ही भग देव हमें प्राचीन और श्रेष्ठ धन वाला बनाने की कृपा करें. (३९)

अश्वावतीर्गोमतीर्न ऽ उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः.
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः.. (४०)

जैसे अश्वमयी वीरवती व कल्याणी उषा देवी घी व दूध देती हैं, वैसे ही प्रभात वेला हमारा कल्याण करने की कृपा करें. हमारे लिए घी व दूध दुहें. अज्ञान अंधकारमय बाधाएं सब ओर से दूर करें. आप सभी देवगण सदैव हमारा कल्याण करने की कृपा करें. (४०)

पूषन् तव व्रते वयं न रिष्येम कदा चन. स्तोतारस्त ऽ इह स्मसि.. (४१)

हे पूषा देव! हम स्तोता आप के व्रत में लगें. हम कभी नष्ट न हों. हम यज्ञ में आप की स्तुति करते हैं तथा आप की चाह रखते हैं. (४१)

पथस्पथः परिपतिं वचस्या कामेन कृतो अभ्यानडर्कम्.
स नो रासच्छुरुधश्चन्द्राग्रा धियंधिय ꣳ सीषधाति प्र पूषा.. (४२)

पूषा देव हमारे पथ प्रदर्शक हैं. मंत्र से कामना किए जाने पर वे राक्षसों का नाश करते हैं और शत्रुनाशक साधन प्रदान करते हैं. वे हमारी बुद्धि को श्रेष्ठ कार्यों में साधने की कृपा करें. (४२)

त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा ऽ अदाभ्यः. अतो धर्माणि धारयन्.. (४३)

विष्णु ने अपने तीन पैरों में ही संपूर्ण विश्व को धारण कर लिया. वे उस सामर्थ्य से लोकों को धारते हुए विराजमान हैं. (४३)

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवा ꣳ सः समिन्धते. विष्णोर्यत्परमं पदम्.. (४४)

जो ब्राह्मण जाग्रत हो कर यज्ञ विधान करते हुए जीवन यापन करते हैं, वे ब्राह्मण विष्णु देव के परम धाम को प्राप्त करते हैं. (४४)

घृतवती भुवनानामभिश्रियोर्वी पृथ्वी मधुदुघे सुपेशसा.
द्यावापृथिवी वरुणस्य धर्मणा विष्कभिते अजरे भूरिरेतसा.. (४५)

स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक वरुण देव की शक्ति से सुदृढ़ हुए हैं. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक श्रेष्ठ रूप वाले हैं और वृद्धावस्था रहित हैं. प्रभूत (अत्यंत) सामर्थ्य का मूल स्रोत हैं. पृथ्वी घीमयी, लोकों का आश्रय स्थली, व्यापक व विशेष मधुर रसों के दोहन की सामर्थ्य रखती है. (४५)

ये नः सपत्ना ऽ अप ते भवन्त्विन्द्राग्निभ्यामव बाधामहे तान्.
वसवो रुद्रा ऽ आदित्या ऽ उपरिस्पृशं मोग्रं चेत्तारमधिराजमक्रन्.. (४६)

जो हमारे शत्रु हैं, वे हार जाएं. हम उन शत्रुओं को इंद्र देव और अग्नि की क्षमता से बाधित करें. वसुगण हमारे चित्त को उग्र, पराक्रमी व अधिपति बनाने की कृपा करें. रुद्रगण और आदित्यगण हमारे चित्त को उग्र व पराक्रमी और अधिपति बनाने की कृपा करें. (४६)

आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं मधुपेयमश्विना.
प्रायुस्तारिष्टं नी रपा ꣳ सि मृक्षत ꣳ सेधतं द्वेषो भवत ꣳ सचाभुवा.. (४७)

अश्विनीकुमार नाशरहित (अविनाशी) हैं. आप दोनों ग्यारह से तिगुने (११ × ३ = ३३) देवताओं सहित पधारिए. आप दोनों ग्यारह से तिगुने देवताओं

सहित मधुर पेय पीजिए. आप हमारी रक्षा कीजिए और हमारी आयु बढ़ाइए. आप हमारे पापों व द्वेषियों का नाश कीजिए. आप हमारे सहायक ही रहिए. (४७)

एष व स्तोमो मरुत ऽ इयं गीर्मान्दार्यस्य मान्यस्य कारोः.
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्.. (४८)

हे मरुद्गणो! ये स्तोत्र आप के लिए समर्पित हैं. ये वाणीमयी स्तुतियां आप को आनंदित करने की कृपा करें. ये स्तुतियां माननीय व श्रेष्ठ फलदायी है. आप पधारिए. हमें इष्ट सुख, विद्या, अन्न व आयु प्रदान कीजिए. (४८)

सहस्तोमाः सहच्छन्दस ऽ आवृतः सहप्रमा ऽ ऋषयः सप्त दैव्याः.
पूर्वेषां पन्थामनुदृश्य धीरा ऽ अन्वालेभिरे रथ्यो न रश्मीन्.. (४९)

सात ऋषियों ने स्तुतियों के साथ, छंदों के साथ, प्रमाण के साथ दिव्य सृष्टि का प्रादुर्भाव किया. इन ऋषियों ने पूर्व ऋषियों का अनुसरण किया. इन धीर ऋषियों ने वैसे ही इष्ट गंतव्य तक पहुंचाया जैसे लगाम घोड़ों को अपने इष्ट गंतव्य तक पहुंचाती हैं. (४९)

आयुष्यं वर्चस्य ꣳ रायस्पोषमौद्भिदम्.
इद ꣳ हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम्.. (५०)

यह स्वर्णमय धन आयु, वर्चस्व, धन व पुष्टिवर्द्धक है. यह स्वर्णमय धन भूमि से उत्पन्न है. यह स्वर्णमय धन वर्चस्वदायी है. यह स्वर्णमय धन तेजमय है. यह स्वर्णमय धन हमें विजयश्री दिलाने की कृपा करें. (५०)

न तद्रक्षा ꣳसि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमज ꣳ ह्येतत्.
यो बिभर्ति दाक्षायण ꣳ हिरण्य ꣳ स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः.. (५१)

इस स्वर्णमय धन को राक्षस हिंसित नहीं करते. इस स्वर्णमय धन को पिशाच भी हिंसित नहीं करते. यह स्वर्णमय प्रथम उत्पन्न देवताओं का ओज है, जो दक्षवंशीय ब्राह्मण इसे स्वर्णधन आभूषण के रूप में धारते हैं, उन्हें भी देवता मनुष्यों में दीर्घायु प्रदान करते हैं. (५१)

यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ꣳ शतानीकाय सुमनस्यमानाः.
तन्म ऽ आ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्.. (५२)

दक्षवंशीय (दक्षवंश के ब्राह्मणों) ने अच्छे मन से जिस सोने के धागे को सैकड़ों सेना वाले राजा को बांधा उसे ही हम सौ वर्ष की आयु प्राप्त करने के लिए अपने शरीर पर बांधते हैं. हम वृद्ध व चिरायु हों. (५२)

उत नोहिर्बुध्न्यः शृणोत्वज ऽ एकपात्पृथिवी समुद्रः.
विश्वे देवा ऽ ऋतावृधो हुवानाः स्तुता मन्त्राः कविशस्ता ऽ अवन्तु.. (५३)

अहिर्बुध्न्य, अज, एकपात, पृथ्वी, समुद्र व सभी देवता हमारी स्तुतियां सुनने की कृपा करें. ये सभी देव सच की बढ़ोतरी करने की कृपा करें. हम सभी देव का आह्वान करते हैं. हम सभी देव की स्तुति करते हैं. कवि यजमान के ये सभी देवगण रक्षक हों. (५३)

इमा गिर ऽ आदित्येभ्यो घृतस्नूः सनाद्राजभ्यो जुह्वा जुहोमि.
शृणोतु मित्रो अर्यमा भगो नस्तुविजातो वरुणो दक्षो अ ꣳ शः.. (५४)

हम यह वाणीमय व घीमय आहुति आदित्य गणों के लिए अर्पित करते हैं. हम बुद्धि के जुहू (पलाश की लकड़ी से बना हुआ एक यज्ञपात्र) से आहुति आदित्य गणों के लिए अर्पित करते हैं. आदित्य देव चिर प्रकाशक हैं. मित्र देव, अर्यमा देव, भग देव, वरुण देव, दक्ष देव हमारी विशिष्ट स्तुति सुनने की कृपा करें. (५४)

सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम्.
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो अस्वप्नजौ सत्रसदौ च देवौ.. (५५)

शरीर में विद्यमान सात प्राण सात ऋषि हैं. ये सातों ऋषि आलस्यरहित हो कर शरीर की रक्षा करते हैं. सोते हुए भी ये सातों लोक में जाग्रत आत्मा को प्राप्त होते हैं. इस स्थिति में भी ये निरंतर प्राणियों की रक्षा में लगे रहते हैं. (५५)

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे.
उप प्र यन्तु मरुतः सुदानव ऽ इन्द्र प्राशूर्भवा सचा.. (५६)

हे ब्रह्मणस्पति! आप उठिए. हम देवत्व धारण करना व आप का आगमन चाहते हैं. हे मरुद्गण! आप अच्छे दानकर्ता हैं. आप हमारे समीप पधारने की कृपा कीजिए. हे इंद्र देव! आप भी शीघ्र ही इन के साथ पधारने व हमारे साथ निवास करने की कृपा कीजिए. (५६)

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्.
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा देवा ऽ ओका ꣳ सि चक्रिरे.. (५७)

निश्चित रूप से ब्रह्मणस्पति विधिविधान के साथ उक्थों को (वैदिक मंत्रों को) उचारते हैं. इन मंत्रों में इंद्र देव, वरुण देव, मित्र देव, अर्यमा देव व अन्य देव वास करते हैं. (५७)

ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता सूक्तस्य बोधि तनयं च जिन्व.
विश्वं तद्भद्रं यदवन्ति देवा बृहद्वदेम विदथे सुवीराः.
य ऽ इमा विश्वा विश्वकर्मा यो नः पितान्नपतेन्नस्य नो देहि.. (५८)

हे देवगण! आप संसार के नियंत्रक हैं. आप भलीभांति हमारी आकांक्षा को जानते हैं. आप भलीभांति हमारी प्रार्थना को जानते हैं. आप हमें और हमारी संतानों को पोसते हैं. आप हमें सभी प्रकार के कल्याण उपलब्ध कराइए. आप की कृपा से हमारी संतान वीर व महिमावान हो. आप सब कार्यों के कर्ता, पालक व अन्नपति हैं. (५८)

पैंतीसवां अध्याय

अपेतो यन्तु पणयोसुम्ना देवपीयव:. अस्य लोक: सुतावत:.
द्युभिरहोभिरक्तुभिर्व्यक्तं यमो ददात्ववसानमस्मै.. (१)

चोर व जो अच्छे मन वाले नहीं हैं, वे इस स्थान से दूर चले जाएं. देवताओं के पीड़क इस स्थान से दूर चले जाएं. यह लोक हम देवपुत्रों का है. यम देव दिन और रात में अभिव्यक्त इस उत्तम स्थान को हमारे लिए प्रदान करने की कृपा करें. (१)

सविता ते शरीरेभ्य: पृथिव्याँल्लोकमिच्छतु. तस्मै युज्यन्तामुस्रिया:.. (२)

सविता देव आप के शरीर के लिए पृथ्वीलोक की इच्छा करने की कृपा करें. वे पृथ्वीलोक को पशुओं से जोड़ने की कृपा करें. (२)

वायु: पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा. वि मुच्यन्तामुस्रिया:.. (३)

वायु देव व सविता देव इस स्थान को पवित्र बनाने की कृपा करें. सूर्य देव इस स्थान को वर्चस्वी बनाने की कृपा करें. बंधे हुए गायों और बैलों को खोल दिया जाए. (३)

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता.
गोभाज ऽ इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्.. (४)

पीपल और पलाश वृक्षों पर वास करने वाली ओषधियों से निवेदन है कि वे यजमान को गायों को कांति से युक्त करने की कृपा करें. आप यजमान को पौरुष युक्त करने की कृपा करें. (४)

सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थ ऽ आ वपतु. तस्मै पृथिवि शं भव.. (५)

सविता देव यजमान के शरीर को पृथ्वी माता की गोद में बैठाने की कृपा करें. पृथ्वी माता का हम आह्वान करते हैं. वे उन सब के लिए सुखदायी तथा कल्याणकारी हो. (५)

प्रजापतौ त्वा देवतायामुपोदके लोके नि दधाम्यसौ. अप न: शोशुचदघम्.. (६)

प्रजापति देव को हम जल के पास स्थापित करते हैं. वे इस जल को धारण करने और हमें पवित्र बनाने की कृपा करें. (६)

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते अन्य ऽ इतरो देवयानात्.
चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा ᳪ रीरिषो मोत वीरान्.. (७)

मृत्यु का पथ दूसरा है. उन का पथ देवताओं के पथ से भिन्न है. आप दूसरे पथ से लौट जाने की कृपा करें. आप नेत्रवान हैं. आप श्रवण क्षमता युक्त हैं. आप से अनुरोध है कि आप हमारी प्रजा व वीरों का नाश मत कीजिए. (७)

शं वातः श ᳪ हि ते घृणिः शं ते भवन्त्विष्टकाः.
शं ते भवन्त्वग्नयः पार्थिवासो मा त्वाभि शूशुचन्.. (८)

वायु हमारे लिए सुखदायी हो. सूर्य हमारे लिए सुखदायी हो. इष्टिका देव हमारे लिए कल्याणदायी हो. अग्नि हमारे लिए कल्याणदायी हो. ये सभी पृथ्वी पर किसी को भी सोच एवं संताप न दें. (८)

कल्पन्तां ते दिशस्तुभ्यमापः शिवतमास्तुभ्यं भवन्तु सिन्धवः.
अन्तरिक्ष ᳪ शिवं तुभ्यं कल्पन्तां ते दिशः सर्वाः.. (९)

दिशाएं आप के लिए फलीभूत हों. जल आप के लिए कल्याणकारी हों. समुद्र आप के लिए कल्याणकारी हो. अंतरिक्ष आप के लिए कल्याणकारी हो. दिशाएं आप के लिए फलीभूत हों. (९)

अश्मन्वती रीयते स ᳪ रभध्वमुत्तिष्ठत प्र तरता सखायः.
अत्रा जहीमोशिवा ये असञ्छिवान्वयमुत्तरेमाभि वाजान्.. (१०)

पत्थर वाली नदी बह रही है. आप मित्र उस नदी को लांघने की कोशिश कीजिए. आप उठ कर उस के पार पहुंचिए. इस में जो अकल्याणकारी तत्त्व हैं, उन्हें दूर कीजिए. हम सुख और कल्याणदायी पदार्थ इस नदी से पाएं. (१०)

अपाघमप किल्बिषमप कृत्यामपो रपः.
अपामार्ग त्वमस्मदप दुःष्वप्न्य ᳪ सुव.. (११)

हटाइए, पाप को दूर हटाइए. आप हमारे पाप कर्मों को दूर हटाइए. अपयशदायी कर्मों को आप हम से दूर हटाइए. आप दुःस्वप्नों को हम से (हमारे जीवन से) दूर हटाइए. (११)

सुमित्रिया न ऽ आप ऽ ओषधयः
सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः.. (१२)

जल हमारे अच्छे मित्र हो जाएं. ओषधियां हमारी अच्छी मित्र हो जाएं. जो

हम से द्वेष करते हैं, जिन से हम द्वेष करते हैं, उन दुष्ट अमित्रों के लिए पीड़ादायी होइए. (१२)

अनड्वाहमन्वारभामहे सौरभेय ᳬ स्वस्तये.
स न ऽ इन्द्र ऽ इव देवेभ्यो वह्निः सन्तारणो भव.. (१३)

हम अपने कल्याण हेतु सुरभि पुत्र (गाय के पुत्र बछड़े) का बारबार आह्वान करते हैं. वह इंद्र देव के समान उद्धार करने वाला हो. वह अग्नि देव के समान उद्धार करने वाला हो. (१३)

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त ऽ उत्तरम्.
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्.. (१४)

हम अंधकार से ऊपर प्रकाशमय स्वर्गलोक को देखते हैं. देवता भी उत्तम ज्योतिष्मान सूर्य को देखते हुए परमात्मा को पाते हैं. (१४)

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्.
शतं जीवन्तु शरदः पुरूचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन.. (१५)

हम यह मर्यादा रूपी परिधि जीवों के लिए धारण करते हैं. हम इस मर्यादा रूपी परिधि का अनुसरण करें. हम सौ वर्ष तक उद्देश्यपूर्ण सार्थक जीवन जीएं. यदि इस बीच में मौत आए तो मृत्यु देवगण के पथ में पर्वत जैसी बाधाएं खड़ी कर दें. (१५)

अग्न ऽ आयू ᳬ षि पवस ऽ आ सुवोर्जमिषं च नः. आरे बाधस्व दुच्छुनाम्.. (१६)

हे अग्नि! आप आयु की बढ़ोतरी करने वाले हैं. हे अग्नि! आप पवित्र कार्य संपन्न करने वाले हैं. हे अग्नि! आप हमें ऊर्जादायी इष्ट पदार्थ प्रदान करने की कृपा कीजिए. आप दुष्टों को बाधित कीजिए. (१६)

आयुष्मानग्ने हविषा वृधानो घृतप्रतीको घृतयोनिरेधि.
घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यं पितेव पुत्रमभि रक्षतादिमान्त्स्वाहा.. (१७)

हे अग्नि! आप हवि से बढ़ोतरी पाने वाले हैं. घी आप का मूल स्थान हैं. आप घी रूपी प्रतीक वाले हैं. आप सुंदर गायों का मधुर घी पी कर उसी प्रकार हम यजमान रूपी पुत्रों की रक्षा कीजिए, जैसे पिता पुत्र की रक्षा करता है. आप के लिए स्वाहा. (१७)

परीमे गामनेषत पर्यग्निमहृषत. देवेष्वक्रत श्रवः क ऽ इमाँ २ आ दधर्षति.. (१८)

जो अग्नि को इन परिपूर्ण आहुतियों से हर्षित करते हैं, इन आहुतियों को देवताओं तक पहुंचाते हैं, देवताओं के लिए ऐसे यज्ञ करने वाले यजमान को कोई नहीं हरा सकता. (१८)

क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्यं गच्छतु रिप्रवाहः.
इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्.. (१९)

हम क्रव्याद अग्नि को दूर करते हैं. हम उस से दूर यमराज्य में जाने का निवेदन करते हैं. सर्वज्ञ अग्नि हमारे घरों में होने वाले यज्ञ में बढ़ोतरी पाएं. अग्नि हमारी हवि को वहन करने व उसे देवताओं तक पहुंचाने की कृपा करें. (१९)

वह वपां जातवेदः पितृभ्यो यत्रैनान्वेत्थ निहितान् पराके.
मेदसः कुल्या ऽ उप तान्त्स्रवन्तु सत्या ऽ एषामाशिषः सं नमन्ता ꣳ स्वाहा.. (२०)

हे अग्नि! आप सर्वज्ञ हैं. आप जहां पितर निवास करते हैं, आप उस स्थान को जानते हैं. अतः आप हम से दूर पितरलोकवासी पितरों के लिए हवि वहन करने की कृपा करें. पितरों के पास जल की धाराएं स्रवित होने की कृपा करें. पितरों के आशीर्वाद हमारे प्रति सधे हों. हम पितरों को नमन करते हैं. अग्नि के लिए स्वाहा. (२०)

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी.
यच्छा नः शर्म सप्रथाः.
अप नः शोशुचदघम्.. (२१)

हे पृथ्वी देवी! आप हमारे वास योग्य होने की कृपा कीजिए. आप हमारे लिए सुख प्रदान कीजिए. आप हमें कष्ट मुक्त कीजिए. आप हमारे पापों को हम से दूर करने व हमें पवित्र बनाने की कृपा कीजिए. (२१)

अस्मात्त्वमधि जातोसि त्वदयं जायतां पुनः. असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा.. (२२)

हे अग्नि! आप यजमान द्वारा उपजाए जाते हैं. फिर बारबार यजमान द्वारा उपजाए जाते हैं. यह यजमान स्वर्ग के व लोक के लिए यज्ञ संपादित करते हैं. हे अग्नि! आप के लिए स्वाहा. (२२)

छत्तीसवां अध्याय

ऋचं वाचं प्र पद्ये मनो यजु: प्र पद्ये साम प्राणं प्र पद्ये चक्षु: श्रोत्रं प्र पद्ये.
वागोज: सहौजो मयि प्राणापानौ.. (१)

ऋग्वेद वाणी स्वरूप है. हम उसे प्राप्त करते हैं. यजुर्वेद मन स्वरूप है. हम उसे प्राप्त करते हैं. सामवेद प्राण स्वरूप है. हम उसे प्राप्त करते हैं. हम नेत्रों की सामर्थ्य को प्राप्त करते हैं. हम कानों की सामर्थ्य को प्राप्त करते हैं. वाणी, प्राण व अपान अपनी ऊर्जा सहित हम से स्थापित होने की कृपा करें. (१)

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो वातितृण्णं बृहस्पतिर्मे तद्धातु.
शं नो भवतु भुवनस्य यस्पति:.. (२)

हे बृहस्पति देव! आप हमारे चक्षुओं के दोष दूर करने की कृपा कीजिए. आप हमारे हृदय व मन के दोष दूर करने की कृपा कीजिए. आप हमारे लिए सुखों का विस्तार करने की कृपा कीजिए. आप भुवन के स्वामी हैं. आप हमारे लिए कल्याणदायी होने की कृपा कीजिए. (२)

भूर्भुव: स्व:. तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि. धियो यो न: प्रचोदयात्.. (३)

परमात्मा स्वयंभू, प्राणदायी व स्वयं प्रकाशवान हैं. वे सविता देव वरेण्य और सौभाग्यदायी हैं. हम उन का ध्यान करते हैं. वे हमारी बुद्धियों को प्रेरित करने की कृपा करें. (३)

कया नश्चित्र ऽ आ भुवदूती सदावृध: सखा. कया शचिष्ठया वृता.. (४)

परमात्मा उत्तम व शक्तिमान हैं. वे सदा हमारी बढ़ोतरी करने व हमारे सखा होने की कृपा करें. वे हमें सुखों से आवृत करने की कृपा करें. (४)

कस्त्वा सत्यो मदानां म ꣳ हिष्ठो मत्सदन्धस:. दृढा चिदरुजे वसु.. (५)

हे इंद्र देव! सचमुच कौन आप को मदयुक्त बनाता है. सचमुच आप क्या पीकर हर्षित होते हैं. आप यजमान को दृढ़ बनाइए. आप हमें शाश्वत धन प्रदान करने की कृपा कीजिए. (५)

अभी षु णः सखीनामविता जरितॄणाम्. शतं भवास्यूतिभिः.. (६)

हे इंद्र देव! आप सखा की तरह हमारी रक्षा करने की कृपा कीजिए. आप धन देने की कृपा कीजिए. हम आप के सैकड़ों रक्षा साधनों से रक्षित हों. (६)

कया त्वं न ऽ ऊत्याभि प्र मन्द्र से वृषन्. कया स्तोतृभ्य ऽ आ भर.. (७)

हे परमात्मा! आप अपनी रक्षाओं से किस के लिए आनंद की वर्षा नहीं करते हैं ? आप अपने स्तोताओं को जो भरपूर धन प्रदान करते हैं. वह किस को आनंदित नहीं करता ? (७)

इन्द्रो विश्वस्य राजति. शं नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे.. (८)

इंद्र देव विश्व की शोभा हैं. वे हमारे लिए सुखदायी हैं. वे दोपायों व चौपायों के लिए सुखदायी हैं. (८)

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा.
शं न ऽ इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरुरुक्रमः.. (९)

मित्र देव, वरुण देव, अर्यमा देव हमारे लिए कल्याणदायी हों. इंद्र देव व बृहस्पति देव व जगत्पालक विष्णु हमारे लिए कल्याणकारी हों. (९)

शं नो वातः पवता ꣳ शं नस्तपतु सूर्यः.
शं नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्यो अभि वर्षतु.. (१०)

वायु हमारे लिए कल्याणदायी हों. वे हमें पवित्र बनाने की कृपा कीजिए. सूर्य देव हमारे लिए सुखदायी हो कर तपने की कृपा करें. गड़गड़ाहट करने वाले पर्जन्य देव हमारे लिए कल्याणदायी हो कर बरसात करें. (१०)

अहानि शं भवन्तु नः श ꣳ रात्रीः प्रति धीयताम्.
शं न ऽ इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न ऽ इन्द्रावरुणा रातहव्या.
शं न ऽ इन्द्रापूषणा वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः.. (११)

दिन हमारे लिए कल्याणदायी हो. हम बुद्धिपूर्वक प्रार्थना करते हैं. रात्रि हमारे लिए कल्याणदायी हो. हम बुद्धिपूर्वक प्रार्थना करते हैं. इंद्र देव हमारे लिए कल्याणदायी हों. इंद्र देव हमारी रक्षा करने की कृपा करें. अग्नि हमारे लिए कल्याणदायी हों. वे हमारी रक्षा करने की कृपा करें. इंद्र देव हमारे लिए कल्याणदायी हों. वे हमारी हवि स्वीकारने की कृपा करें. वरुण देव हमारे लिए कल्याणदायी हों व हमारी हवि स्वीकारने की कृपा करें. इंद्र देव हमारे लिए कल्याणदायी हों और रोग दूर करें. पूषा देव हमारे लिए कल्याणदायी हों और रोग दूर करें. (११)

शं नो देवीरभिष्टय ऽ आपो भवन्तु पीतये. शं योरभि स्त्रवन्तु नः.. (१२)

दिव्य जल हमारा कल्याण करे. वह हमारे अभीष्टपूरक हो. जल हमारे पीने के लिए हो. वह हमारे लिए सुखदायी हो व हमारे लिए प्रवाहित होने की कृपा करे. (१२)

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी. यच्छा नः शर्म सप्रथा:.. (१३)

हे पृथ्वी देवी! आप वासयोग्य होने की कृपा करें. आप उत्तम वास प्रदान करने की कृपा करें. आप हमें इच्छित सुख प्रदान कीजिए. आप बहुत अधिक विस्तृत होने की कृपा कीजिए. (१३)

आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽ ऊर्जे दधातन. महे रणाय चक्षसे.. (१४)

जल हमारे लिए कल्याणदायी हो. वह हमारे लिए ऊर्जा धारण करने की कृपा करें. वह हमें ऊर्जस्वी बनाने की कृपा करें. परमात्मा हमें देखने हेतु महती दृष्टि प्रदान करने की कृपा करें. (१४)

यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः. उशतीरिव मातर:.. (१५)

जैसे माताएं सर्वाधिक कल्याणदायी रस से बच्चों को पोसती हैं, वैसे ही आप हम सब को सर्वाधिक कल्याणदायी रस (पोषण हेतु) सेवन कराने की कृपा करें. (१५)

तस्मा ऽ अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ. आपो जनयथा च न:.. (१६)

हे जल देव! हम ने क्षय को जीतने के लिए आप तक गमन किया है. आप हम सब जनों का कल्याण करने की कृपा करें. (१६)

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः.
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि.. (१७)

स्वर्गलोक हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. अंतरिक्षलोक हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. पृथ्वीलोक हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. जल देव हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. ओषधि देव हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. वनस्पति देव हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. सब देवगण हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. परब्रह्म हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. शांति भी हमारे लिए शांतिदायी होने की कृपा करें. (१७)

दृते दृ ꣳ ह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्.
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे.
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे.. (१८)

हे परमात्मा! आप दृढ़ हैं. आप हमें दृढ़ बनाने की कृपा कीजिए. हम मित्रभाव की

दृष्टि से सभी प्राणियों को देख सकें. सभी प्राणी हमें मित्र भाव से देख सकें. (१८)

दृते दृ ध्ठ ह मा.
ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम्.. (१९)

हे परमात्मा! आप सामर्थ्यवान हैं. आप हमें भी सामर्थ्यशाली बनाइए. आप की ज्योति से हम चिरायु हों. आप की ज्योति से हम चिरकाल तक देखें. (१९)

नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे.
अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतय: पावको अस्मभ्य ध्ठ शिवो भव.. (२०)

हे अग्नि! आप को नमस्कार. हम आप की अर्चना करते हैं. आप को नमस्कार है. हम आप की अर्चना करते हैं. आप की ज्वालाएं हमें पवित्र बनाएं. हमारे दुःख हरें. आप हमें पवित्र बनाएं व हमारे लिए कल्याणदायी होने की कृपा करें. (२०)

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे. नमस्ते भगवन्नस्तु यत: स्व: समीहसे.. (२१)

हे परमात्मा! आप को नमस्कार. बिजली की तरह चमकने वाले व गड़गड़ाने वाले परमात्मा आप को नमस्कार. हे भगवन! आप को नमस्कार. हे भगवन! आप को बारबार नमस्कार. (२१)

यतो यत: समीहसे ततो नो अभयं कुरु. शं न: कुरु प्रजाभ्योभयं न: पशुभ्य:.. (२२)

हे भगवन! जिसजिस से आप चाहते हैं, उसउस से हमें निर्भय बनाने की कृपा करें. आप हमारी प्रजा व पशुओं का कल्याण करने की कृपा करें. (२२)

सुमित्रिया न ऽ आप ऽ ओषधय: सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु.
योस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्म:.. (२३)

जल हमारे अच्छे मित्र हो जाएं. हमारे शत्रु के लिए शत्रु हो जाएं. ओषधियां हमारी अच्छी मित्र हो जाएं. हमारे शत्रु के लिए शत्रु हो जाए. जो हम से द्वेष करते हैं, उन के लिए शत्रु हो जाए. जिन से हम द्वेष करते हैं, उन के लिए शत्रु हो जाए. (२३)

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्.
पश्येम शरद: शतं जीवेम शरद: शत ध्ठ श्रृणुयाम शरद: शतं प्र ब्रवाम शरद:
शतमदीना: स्याम शरद: शतं भूयश्च शरद: शतात्.. (२४)

सूर्य जगत् के नेत्र हैं. वे हितकारक हैं. वे जगत् में सर्वत्र विचरते हैं. वे हमारे सामने प्रकट होते हैं. हम सौ शरदों तक उन की कृपा से देखें. हम सौ शरदों तक उन की कृपा से सुनें. हम सौ शरदों तक उन की कृपा से बोलें. हम सौ शरदों तक उन की कृपा से अदीन (दीनता रहित) हों. हम सौ से भी अधिक समय तक सुखी हों. (२४)

सैंतीसवां अध्याय

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
आ ददे नारिरसि.. (१)

सविता देव सभी देवताओं को पैदा करने वाले हैं. हम अश्विनी देव व पूषा देव को उन के हाथों से ग्रहण करते हैं. (१)

युञ्जते मन ऽ उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः.
वि होत्रा दधे वयुनाविदेक ऽ इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः.. (२)

हम परमात्मा से मन और बुद्धि जोड़ते हैं. ब्राह्मण विशाल सर्वव्यापक परमात्मा से अपना मन जोड़ते हैं. परमात्मा सर्वविद हैं. होता उन्हें धारण करते हैं. सविता देव अभिनंदनीय हैं. उन की आराधना करते हैं. (२)

देवी द्यावापृथिवी मखस्य वामद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.. (३)

हम स्वर्गलोक की दिव्य शक्तियों को यज्ञ में आमंत्रित कर के वेदी पर प्रतिष्ठित करते हैं. हम पृथ्वी की दिव्य शक्तियों को यज्ञ में आमंत्रित कर के वेदी पर प्रतिष्ठित करते हैं. हम स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक की दिव्य शक्तियों को पृथ्वी के इस देवयज्ञ में आराधनापूर्वक यज्ञवेदी पर स्थापित करते हैं. हम मिट्‌टी देवी को यज्ञ के शीर्षस्थ (उच्च) स्थान पर प्रतिष्ठित करते हैं. (३)

देव्यो वम्र्यो भूतस्य प्रथमजा मखस्य वोद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.. (४)

अग्नि की लपटें सब से पहले उत्पन्न हुई हैं. वे प्राणियों से भी पहले उत्पन्न हुई हैं. पृथ्वी के इस दिव्य यज्ञ में हम आप को शिरोधार्य करते हैं. हम यज्ञ के लिए आप को यज्ञ के शीर्षस्थ स्थान पर प्रतिष्ठित करते हैं. (४)

इयत्यग्र ऽ आसीन्मखस्य तेद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.. (५)

हम पृथ्वी के दिव्य यज्ञ में आप को अग्र स्थान पर बैठाते हैं. हम यज्ञ के लिए आप को यज्ञ के शीर्षस्थ स्थान पर प्रतिष्ठित करते हैं. (५)

इन्द्रस्यौज स्थ मखस्य वोद्य शिरो राध्यासं देवयजने पृथिव्याः.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.. (६)

हम पृथ्वी के इस दिव्य यज्ञ में इंद्र देव को ओज की तरह यज्ञ के शीर्षस्थ स्थान पर प्रतिष्ठित करते हैं. हम यज्ञ के लिए आप को शीर्ष पर प्रतिष्ठित करते हैं. हम यज्ञ के लिए आप को शीर्ष पर प्रतिष्ठित करते हैं. हम यज्ञ के लिए आप को शीर्ष पर प्रतिष्ठित करते हैं. हम यज्ञ के लिए आप को शीर्ष पर प्रतिष्ठित करते हैं. (६)

प्रैतु ब्रह्मणस्पतिः प्र देव्येतु सूनृता.
अच्छा वीरं नर्यं पङ्क्तिराधसं देवा यज्ञं नयन्तु नः.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.. (७)

ब्रह्मणस्पति देव इस दिव्य यज्ञ में पधारने की कृपा करें. सरस्वती देवी इस दिव्य यज्ञ में पधारने की कृपा करें. श्रेष्ठ वीर को प्रजानुपालक इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. (७)

मखस्य शिरोसि.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखस्य शिरोसि.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखस्य शिरोसि.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.. (८)

हे अग्नि! आप यज्ञ के सिर हैं. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. (८)

अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्याः.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्याः.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्ना धूपयामि देवयजने पृथिव्याः.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.. (९)

हे परमात्मा! आप के लिए पृथ्वी पर किए जा रहे इस दिव्य यज्ञ में हम शक्तिशाली घोड़े को धूपायित (संस्कारमय) करते हैं. हम यज्ञ के लिए आप को यज्ञ के शीर्षस्थ स्थान पर प्रतिष्ठित करते हैं. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. (९)

ऋजवे त्वा साधवे त्वा सुक्षित्यै त्वा.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.
मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे.. (१०)

हे सामर्थ्यशाली देव! हम सत्य और सुरक्षा हेतु आप को साधते हैं. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. यज्ञ के लिए इस दिव्य यज्ञ में ले जाने की कृपा करें. (१०)

यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे.
देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु पृथिव्याः स ꣸ स्पृशस्पाहि.
अर्चिरसि शोचिरसि तपोसि.. (११)

हे सामर्थ्यशाली देव! हम यम देव के लिए आप को प्रतिष्ठित करते हैं. हम यज्ञ देव व सूर्य के लिए आप को प्रतिष्ठित करते हैं. हम सविता देव के लिए आप को मधुर बनाएं. आप पृथ्वी को स्पर्श करने की कृपा करें. आप पृथ्वी की रक्षा करने की कृपा करें. आप पवित्र व तपोमय हैं. हम आप की अर्चना करते हैं. (११)

अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽ आयुर्मे दाः.
पुत्रवती दक्षिणतऽ इन्द्रस्याधिपत्ये प्रजां मे दाः.
सुषदा पश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्मे दाः.
आश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषं मे दाः.

विधृतिरुपरिष्टाद्बृहस्पतेराधिपत्य ऽ ओजो मे दा विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि.. (१२)

हे पृथ्वी! शत्रु आप को हिंसा न पहुंचाए. आप पूर्व दिशा में अग्नि का आधिपत्य स्थापित कराने की कृपा करें. आप हमें आयु प्रदान कीजिए. आप पुत्रवती हो कर दक्षिण दिशा में इंद्र देव के आधिपत्य में रहने की कृपा कीजिए. हमें भी संतान प्रदान करने की कृपा कीजिए. आप सुखदायिनी हैं. हे पृथ्वी! आप पश्चिम दिशा में सविता देव के आधिपत्य में रहने की कृपा करें. आप हमें सम्यक् चक्षु (दृष्टि) प्रदान करने की कृपा करें. आप हमारी विनती पूरी तरह सुनने की कृपा कीजिए. हे पृथ्वी! आप उत्तर दिशा में धातु देव के आधिपत्य में रहने की कृपा कीजिए. हे पृथ्वी! आप हमें धन से पोषित करने की कृपा कीजिए. हे पृथ्वी देवी! आप ऊपर की दिशाओं में बहुत पदार्थ धारिए. आप बृहस्पति देव के आधिपत्य में रह कर हमारे लिए बलदायिनी होइए. आप हमारे सभी शत्रुओं को नष्ट कर दीजिए. आप हमारी रक्षा कीजिए. आप हमारे मन का अश्व हैं. (१२)

स्वाहा मरुद्भिः परि श्रीयस्व दिवः स ꣳ स्पृशस्पाहि. मधु मधु मधु.. (१३)

मरुद्गणों के लिए स्वाहा. स्वर्गलोक को यह हवि चारों ओर से स्पर्श करे. यह हवि हमारी रक्षा करने की कृपा करे. मधुरता की स्थापना हो. (१३)

गर्भो देवानां पिता मतीनां पतिः प्रजानाम्.
सं देवो देवेन सवित्रा गत स ꣳ सूर्येण रोचते.. (१४)

परमात्मा देवताओं के गर्भ, बुद्धियों के पिता और प्रजाओं के पालक हैं. परमात्मा देवों के देव सविता देव संसार को प्रेरित करते हैं. सूर्य सर्वत्र प्रकाशित करते हैं. (१४)

समग्निरग्निना गत सं दैवेन सवित्रा स ꣳ सूर्येणारोचिष्ट.
स्वाहा समग्निस्तपसा गत सं दैव्येन सवित्रा स ꣳ सूर्येणारूरुचत.. (१५)

परमात्मा अग्नि के साथ सविता देव से एकमेक हो कर सूर्यरूप में प्रकाशित होते हैं. अग्नि के साथ सूर्य के लिए स्वाहा. सविता देव सूर्यरूप में शोभित होते हैं. (१५)

धर्ता दिवो वि भाति तपसस्पृथिव्यां धर्ता देवो देवानाममर्त्यस्तपोजाः.
वाचमस्मे नि यच्छ देवायुवम्.. (१६)

परमात्मा स्वर्गलोक के धारक हैं. वे अपने तेज से पृथ्वी पर विभूषित होते हैं. वे पृथ्वी पर देवों के धारक व अपने दिव्य तप और ओज से संपन्न हैं. वे हमें दिव्य वाणी और आयु प्रदान करने की कृपा करें. (१६)

अपश्यं गोपामनिपद्यमानमा च परा च पथिभिश्चरन्तम्.
स सध्रीची: स विषूचीर्वसान ऽ आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्त:.. (१७)

हम सूर्य देव को गोपथ पर आतेजाते हुए देखते हैं. सूर्य देव सर्वरक्षक, सर्वश्रेष्ठ व अविनाशी हैं. सूर्य देव देवताओं के पथ से आनेजाने वाले हैं. वह सूर्य देव सभी लोकों के द्रष्टा हैं. (१७)

विश्वासां भुवां पते विश्वस्य मनसस्पते विश्वस्य वचसस्पते सर्वस्य वचसस्पते.
देवश्रुत्वं देव घर्म देवो देवान् पाह्यत्र प्रावीरनु वां देववीतये.
मधु माध्वीभ्यां मधु माधूचीभ्याम्.. (१८)

परमात्मा सभी भुवनों के पति हैं. विश्व के मन के स्वामी हैं. वे विश्व की वाणियों के स्वामी हैं. वे सभी की वाणियों के पालक हैं और देवताओं में विश्रुत (प्रसिद्ध) हैं. देवों के देव हैं. धर्म मार्ग पर चलने वालों के रक्षक हैं. देवत्व चाहने वालों को संरक्षण प्रदान करते हैं. (१८)

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा. ऊर्ध्वो अध्वरं दिवि देवेषु धेहि.. (१९)

हे परमात्मा! आप हमारे हृदय व मन में हैं. आप स्वर्गलोक में हैं. हे सूर्य! हम आप के लिए उपासना करते हैं. आप हमारे यज्ञ को ऊंचाइयों तक ले जाइए. आप इसे देवताओं हेतु दिव्यलोक तक पहुंचाइए. (१९)

पिता नोसि पिता नो बोधि नमस्ते अस्तु मा मा हि ꣳ सी:.
त्वष्टृमन्तस्त्वा सपेम पुत्रान्पशून्मयि धेहि प्रजामस्मासु
धेह्यरिष्टाह ꣳ सह पत्या भूयासम्.. (२०)

हे परमात्मा! आप हमारे पिता हैं. आप पिता की तरह हमें बोधित (जाग्रत) करते हैं. हमारा आप को नमस्कार. आप किसी भी प्रकार की हिंसा मत कीजिए. आप किसी भी प्रकार की हिंसा मत कीजिए. आप हमारे लिए पुत्र धारिए. आप हमारी रक्षा कीजिए. आप हमारे लिए संतान धारण करें. आप हमारी रक्षा कीजिए. हम इष्ट वचनों से आप की स्तुति करते हैं. हम पालक सहित बारबार आप की उपासना करते हैं. (२०)

अह: केतुना जुषता ꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा.
रात्रि: केतुना जुषता ꣳ सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा.. (२१)

आप कर्मयुक्त, इष्ट साधक व सुप्रकाशवान हैं. आप की ज्योति सहित आप के लिए स्वाहा. आप रात में भी कर्मयुक्त हैं. आप इष्ट साधक हैं. आप सुप्रकाशवान हैं. आप की ज्योति सहित आप के लिए स्वाहा. (२१)

अड़तीसवां अध्याय

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्.
आ ददेदित्यै रास्नासि.. (१)

हे यज्ञ ऊर्जा! हम सविता देव की जीवनदायी प्रेरणा से आप को ग्रहण करते हैं. हम अश्विनी देवताओं की भुजाओं से पूषा देव के हाथों से आप को ग्रहण करते हैं. आप देवताओं की माता अदिति को आवृत करने वाली हैं. (१)

इड ऽ एह्य दित ऽ एहि सरस्वत्येहि. असावेह्यसावेह्यसावेहि.. (२)

हे इड़ा देवी! आप यहां पधारिए. हे अदिति देवी! आप यहां पधारिए. हे सरस्वती देवी! आप यहां पधारने की कृपा कीजिए. (२)

अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या ऽ उष्णीषः. पूषासि घर्माय दीष्व.. (३)

हे यज्ञ ऊर्जा! आप अदिति देव की (मेखला) आवृत्त करने वाली हैं. आप इंद्राणी के सिर का वस्त्र (प्रतिष्ठा सूचक) हैं. आप पोषक हैं. आप यज्ञ जैसे हितकारी कार्यों में अपनी शक्ति को लगाने की कृपा कीजिए. (३)

अश्विभ्यां पिन्वस्व सरस्वत्यै पिन्वस्वेन्द्राय पिन्वस्व.
स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत् स्वाहेन्द्रवत्.. (४)

अश्विनी देव के लिए यह आहुति प्रवाहित हो रही है. आप इसे पीजिए. सरस्वती देवी के पीने के लिए यह आहुति झर रही है. इंद्र देव के पान (पीने) के लिए यह आहुति बह रही है. इंद्र देव के लिए स्वाहा. स्वाहा. स्वाहा. (४)

यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः.
येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवेकः.
उर्वन्तरिक्षमन्वेमि.. (५)

हे सरस्वती देवी! आप का दिव्य ज्ञान सुखदायी, कल्याणदायी व समृद्धिदायी है. आप का दिव्य ज्ञान वैसा ही सुखद और आनंददायी है, जैसे मां का स्तन बच्चे के लिए सुखकारी नींद लाने वाला व आनंद देने वाला होता है. बच्चे में उत्तम बल संचरित करता है और उन में उत्तम गुण पैदा करने वाला होता है. (५)

गायत्रं छन्दोसि त्रैष्टुभं छन्दोसि द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परि गृह्णाम्यन्तरिक्षेणोप यच्छामि.
इन्द्राश्विना मधुनः सारघस्य घर्मं पात वसवो यजत वाट्.
स्वाहा सूर्यस्य रश्मये वृष्टिवनये.. (६)

हे इंद्र देव! जो यजमान गायत्री छंद में आप की स्तुति करते हैं. आप उन के संरक्षक हैं. जो त्रिष्टुभ् छंद में इंद्र देव की उपासना करते हैं. इंद्र देव उन्हें भी संरक्षण देने वाले हैं. हे अश्विनी देव! हम स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक हेतु आप दोनों का परिग्रहण करते हैं. हम आप से आरोग्य (स्वास्थ्य) की कामना करते हैं. हम इंद्र देव और दोनों अश्विनीकुमारों को अंतरिक्षलोक से अपने पास लाना चाहते हैं. आप दोनों अमृत व ऊर्जा बरसाने की कृपा करें. वसुगण उपयुक्त रीति से यज्ञ कार्य का निर्वाह करें. वे सूर्य की किरणों से अच्छी बरसात पाने के लिए उपयुक्त रीति से यज्ञ करने की कृपा करें. (६)

समुद्राय त्वा वाताय स्वाहा सरिराय त्वा वाताय स्वाहा.
अनाधृष्याय त्वा वाताय स्वाहाप्रतिधृष्याय त्वा वाताय स्वाहा.
अवस्यवे त्वा वाताय स्वाहाशिमिदाय त्वा वाताय स्वाहा.. (७)

हे वायु! समुद्र के लिए आप को आहुति प्रदान करते हैं. सभी को संरक्षण प्रदान करने के लिए हम आप को आहुति प्रदान करते हैं. हम अपार शक्ति के लिए आप को आहुति प्रदान करते हैं. सभी के वास (संरक्षण) प्रदाता के लिए हम आहुति प्रदान करते हैं. शांतिदायी वायु के लिए आहुति प्रदान करते हैं. आप हमारी ये सभी आहुतियां स्वीकार करने की कृपा कीजिए. (७)

इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवते स्वाहेन्द्राय त्वादित्यवते स्वाहेन्द्राय त्वाभिमातिघ्ने स्वाहा.
सवित्रे त्व ऽ ऋभुमते विभुमते वाजवते स्वाहा बृहस्पतये त्वा विश्वदेव्यावते स्वाहा.. (८)

हे इंद्र देव! आप धनवान व शक्तिमान हैं. हम आप के लिए आहुति अर्पित करते हैं. आप आदित्यवान (तेजोमय) हैं. आप के लिए आहुति समर्पित है. हे इंद्र देव! आप अभिमान को समाप्त करने वाले हैं. आप के लिए आहुति समर्पित है. सविता देव सत्यवान हैं. वे धनवान व बलवान हैं. उन के लिए आहुति समर्पित है. सभी देवताओं के लिए हितकारी बृहस्पति के लिए आहुति समर्पित है. (८)

यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा. स्वाहा घर्माय स्वाहाः घर्मः पित्रे.. (९)

यम देव पितरगणों एवं अंगिरा से युक्त हैं. यम देव के लिए आहुतियां अर्पित हैं. यज्ञ के विस्तार के लिए आहुति समर्पित है. पितरों को तृप्ति देने के लिए आहुति समर्पित है. (९)

विश्वा ऽ आशा दक्षिणसद्विश्वान् देवानयाडिह.
स्वाहाकृतस्य घर्मस्य मधोः पिबतमश्विना.. (१०)

यज्ञ में होता दक्षिण दिशा में विराजमान हैं. उन होताओं ने सभी दिशाओं में निवास करने वाले देवताओं को आमंत्रित किया है. हे अश्विनीकुमारो! यज्ञ के विस्तार के लिए जो रसमयी आहुतियां समर्पित की जा रही हैं, आप उन्हें पीने की कृपा कीजिए. (१०)

दिवि धा ऽ इमं यज्ञमिमं यज्ञं दिवि धाः. स्वाहाग्नये यज्ञियाय शं यजुर्भ्यः.. (११)

हे यजमानो! आप इस यज्ञ व आहुति को स्वर्गलोक तक पहुंचाइए. यजमान अग्नि के लिए आहुति अर्पित करते हैं. यजमान अपनी सुखशांति के लिए मंत्र पढ़ते हुए आहुतियां समर्पित कर रहे हैं. (११)

अश्विना घर्मं पात ँ हार्द्वानमहर्दिवाभिरूतिभिः.
तन्त्रायिणे नमो द्यावापृथिवीभ्याम्.. (१२)

हे अश्विनीकुमारो! आप अपनी शक्ति से इस यज्ञ की रक्षा करने की कृपा कीजिए. आप अपनी रक्षण शक्तियों के साथ इस हृदय को प्रिय लगने वाले यज्ञ में पधारने की कृपा कीजिए. सूर्य, स्वर्गलोक व पृथ्वीलोक के सभी देवों को नमन है. (१२)

अपातामश्विना घर्ममनु द्यावापृथिवी अम ँ साताम्. इहैव रातयः सन्तु.. (१३)

हे अश्विनीकुमारो! आप आपाततः (पूर्ण और हर रूप से) हमारे यज्ञ की रक्षा करने की कृपा कीजिए. स्वर्गलोक और पृथ्वीलोक के देवता भी आप के साथ यज्ञ का विस्तार करने की कृपा करें. आप अपने निवास स्थल से ही हमें धन प्रदान (भांतिभांति के) करने की कृपा कीजिए. (१३)

इषे पिन्वस्वोर्जे पिन्वस्व ब्रह्मणे पिन्वस्व क्षत्राय पिन्वस्व द्यावापृथिवीभ्यां पिन्वस्व.
धर्मासि सुधर्मामेन्यस्मे नृम्णानि धारय ब्रह्म धारय क्षत्रं धारय विशं धारय.. (१४)

हे परब्रह्म! हम आप का अनुसरण करते हैं, ताकि आप हमारी और यजमानों की रक्षा करें. आप ब्राह्मणों तथा क्षत्रियों की रक्षा कीजिए. आप प्रजा को धर्म से संचालित कीजिए. उस धर्म मार्ग का हम सब भी अनुकरण कर सकें. उस धर्म मार्ग पर चल कर हम कर्तव्य पालन करते हुए अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकें. (१४)

स्वाहा पूष्णे शरसे स्वाहा ग्रावभ्यः स्वाहा प्रतिरवेभ्यः.
स्वाहा पितृभ्य ऽ ऊर्ध्वबर्हिर्भ्यो घर्मपावभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या ँ स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः.. (१५)

प्रेम करने वाले पूषा, शब्द करने वाले प्राणियों, सोम रस पीने वाले देवताओं,

विशेष यज्ञ को पवित्र करने वाले पितरों, पृथ्वीलोक, स्वर्गलोक और दूसरे सभी देवताओं के लिए ये आहुतियां समर्पित हैं. (१५)

स्वाहा रुद्राय रुद्रहूतये स्वाहा सं ज्योतिषा ज्योतिः.
अहः केतुना जुषता ं सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा.
रात्रिः केतुना जुषता ं सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा.
मधु हुतमिन्द्रतमे अग्नावश्याम ते देव घर्म नमस्ते अस्तु मा मा हि ं सीः.. (१६)

हे दिव्य गुण वाली परम शक्ति! यह आहुति रुद्र देव को समर्पित है. ज्योति से ज्योति प्रज्वलित करने के लिए यह आहुति समर्पित है. दिन में तेज से तेज को संयुक्त करने के लिए यह आहुति हैं. रात में तेज से तेज को संयुक्त करने के लिए यह आहुति समर्पित है. आप इन आहुतियों को स्वीकार करते हुए हमारी रक्षा करें. (१६)

अभीमं महिमा दिवं विप्रो बभूव सप्रथाः.
उत श्रवसा पृथिवी ं स ं सीदस्व महाँ २ असि रोचस्व देववीतमः.
वि धूममग्ने अरुषं मियेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम्.. (१७)

हे अग्नि! आप का यश पृथ्वी और स्वर्ग में फैला है. आप प्रज्वलित हो कर सभी देवताओं को तृप्त करते हुए लाल रंग वाला आकर्षक धुआं चारों ओर फैलाएं. (१७)

या ते घर्म दिव्या शुग्या गायत्र्या ं हविर्धाने.
सा त ऽ आप्यायतां निष्ट्यायतां तस्यै ते स्वाहा.
या ते घर्मान्तरिक्षे शुग्या त्रिष्टुब्भ्याग्नीध्रे.
सा त ऽ आ प्यायतां निष्ट्यायतां तस्यै ते स्वाहा.
या ते घर्म पृथिव्या ं शुग्या जगत्या ं सदस्या.
सा त ऽ आ प्यायतां निष्ट्यायतां तस्यै ते स्वाहा.. (१८)

हे अग्नि! आप की चमक स्वर्गलोक, विशेष यज्ञ और गायत्री छंद में फैली है. वह चमक अंतरिक्ष तथा त्रिष्टुप् छंद में भी विद्यमान है. आप की वही चमक पृथ्वी, सभास्थल और जगती छंद में भी है. आप की चमक या यश और भी अधिक फैले इसी उद्देश्य से यह आहुति समर्पित है. (१८)

क्षत्रस्य त्वा परस्पाय ब्रह्मणस्तन्वं पाहि.
विशस्त्वा धर्मणा वयमनु क्रामाम सुविताय नव्यसे.. (१९)

हे परम शक्ति! आप शत्रुओं से हमारी रक्षा करें. क्षत्रियों के बल तथा ब्राह्मणों के ज्ञान की रक्षा करें. प्रजा को धर्म मार्ग पर चलाएं. उत्तम पदार्थ प्रदान करें. श्रेष्ठ मार्ग पर चलने तथा कर्तव्य पालन के लिए हम आप का अनुसरण करते हैं. (१९)

चतु:स्त्रक्तिर्नाभिर्ऋतस्य सप्रथाः स नो विश्वायुः सप्रथाः स नः सर्वायुः सप्रथाः.
अप द्वेषो अप ह्वरोन्यव्रतस्य सश्चिम.. (२०)

हे परम शक्ति! आप चारों दिशाओं में व्याप्त हैं. आप ऋत (सत्य) की नाभि (केंद्र) हैं. आप यज्ञ की प्रथा के संचालक व विख्यात हैं. आप हमें पूर्णायु प्रदान करने की कृपा कीजिए. आप हमें यशस्वी बनाइए व यश सहित सारी आयु प्रदान कीजिए. आप हमें द्वेषियों (द्वेष करने वालों) से दूर कीजिए. आप हमें जन्ममरण के चक्र से मुक्त कीजिए. आप संकल्पशील व कृपालु हैं. (२०)

घर्मैतत्ते पुरीषं तेन वर्धस्व चा च प्यायस्व.
वर्धिषीमहि च वयमा च प्यासिषीमहि.. (२१)

हे यज्ञ देव! आप क्षमतावान व समृद्धिवान हैं. आप की क्षमता और समृद्धि में और भी बढ़ोतरी हो. हम भी आप की क्षमता और समृद्धि की बढ़ोतरी पाएं और उस से आप्यायित (तृप्त) हो जाएं. (२१)

अचिक्रदद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः.
स ॐ सूर्येण दिद्युतदुदधिर्निधिः.. (२२)

हे यज्ञ देव! आप निरंतर सुख बरसाने वाले, दु:खहारी, महान् मित्र व सर्वद्रष्टा हैं. आप सूर्य की तरह द्युतिमान (प्रकाशमान) और उदधि (समुद्र) की तरह गहरे (गंभीर) हैं. आप सुखों का खजाना हैं. (२२)

सुमित्रिया न ऽ आप ऽ ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः.. (२३)

हे यज्ञ देव! जल व ओषधियां हमारे लिए मित्र के समान हों. जो हम से द्वेष रखते हैं या जिन से हम द्वेष रखते हैं, उन के लिए जल और ओषधियां दुर्मित्र (बुरे मित्र) की तरह हानिकर हो जाएं. (२३)

उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त ऽ उत्तरम्.
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्.. (२४)

हे यज्ञ देव! हम तमसलोक से भी अधिक ऊपर उठें. हम ऊर्ध्वलोक में सूर्य जैसे देवों का भी कल्याण करने वाले देवों को देखें. हम श्रेष्ठ ज्योतिमान के दर्शन करें. (२४)

एधोस्येधिषीमहि समिदसि तेजोसि तेजो मयि धेहि.. (२५)

हे यज्ञ देव! आप ज्योतिर्मय (प्रकाशमान) हैं. आप की ज्योति और भी फैले. आप समिधा जैसे तेजस्वी हैं. आप की कृपा से हम भी उस तेज को धारण कर सकें. (२५)

यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे.
तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम्.. (२६)

हे यज्ञ देव! जहां तक स्वर्गलोक का विस्तार है, जहां तक पृथ्वीलोक का विस्तार है, जहां तक सप्त सिंधु (समुद्र) विस्तृत है, वहां तक हम आप से ऊर्जा ग्रहण कर सकें. हम आप की कृपा से इसे ग्रहण करने की सामर्थ्य पा सकें. (२६)

मयि त्यदिन्द्रियं बृहन्मयि दक्षो मयि क्रतुः.
घर्मस्त्रिशुग्वि राजति विराजा ज्योतिषा सह ब्रह्मणा तेजसा सह.. (२७)

जो परम शक्ति और परम तेज से सुशोभित हो कर विराजमान है, जो प्रकाश के साथ शोभती है, जो विविध तेज से तेजोमयी है, वह विशाल परम शक्ति मुझे बलवान और निपुण बनाने की कृपा करे. हमें कार्य करने की शक्ति प्रदान करे. (२७)

पयसो रेत ऽ आभृतं तस्य दोहमशीमह्युत्तरामुत्तरा ꣳ समाम्.
त्विषः संवृक् क्रत्वे दक्षस्य ते सुषुम्णस्य ते सुषुम्णाग्निहुतः.
इन्द्रपीतस्य प्रजापति भक्षितस्य मधुमत ऽ उपहूत ऽ उपहूतस्य भक्षयामि.. (२८)

हे यज्ञ देव! आप की कृपा से बरसात से बरसे हुए अमृतजल से प्रकृति पूरी तरह भर गई है. आप की ही कृपा से हम आगे भी निरंतर अपने लाभ के लिए उस का दोहन कर सकने में समर्थ हो सकें. आप संकल्प सिद्ध करने में दक्ष (कुशल) व प्रकाशमान हैं. हम यज्ञ में आप का आह्वान करते हैं. यज्ञ में दी गई सुखदायी आहुतियां हमारे लिए सुखदायक हैं. इंद्र देव द्वारा पी गई मधुर हवि और प्रजापति द्वारा खाई गई (सेवन की गई) मधुर हवि का, हम उन को अपने पास आमंत्रित कर के, सेवन करना चाहते हैं. (२८)

उनतालीसवां अध्याय

स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः.
पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्याय स्वाहा.. (१)

प्राणों के लिए स्वाहा. प्राणों के अधिपति सहित (प्राणों के लिए) स्वाहा. पृथ्वी के लिए स्वाहा. अग्नि के लिए स्वाहा. अंतरिक्ष देव के लिए स्वाहा. वायु के लिए स्वाहा. स्वर्गलोक के लिए स्वाहा. सूर्य के लिए स्वाहा. (१)

दिग्भ्यः स्वाहा चन्द्राय स्वाहा नक्षत्रेभ्यः स्वाहाद्भ्यः स्वाहा वरुणाय स्वाहा.
नाभ्यै स्वाहा पूताय स्वाहा.. (२)

सभी दिशाओं के देवों के लिए स्वाहा. चंद्र देव के लिए स्वाहा. नक्षत्र देवों के लिए स्वाहा. जल देव के लिए स्वाहा. वरुण देव के लिए स्वाहा. यज्ञ देव की नाभि (केंद्र) के लिए स्वाहा. पवित्र करने वाले सभी देवताओं के लिए स्वाहा. (२)

वाचे स्वाहा प्राणाय स्वाहा प्राणाय स्वाहा.
चक्षुषे स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा.. (३)

वाणी देव के लिए स्वाहा. (बाईं) प्राण वायु के लिए स्वाहा. (दाईं) प्राण वायु के लिए स्वाहा. (बाएं) चक्षु (आंख) के लिए स्वाहा. (दाएं) चक्षु के लिए स्वाहा. (बाएं) कान के लिए स्वाहा. (दाएं) कान के लिए स्वाहा. (३)

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय.
पशूना ꣳ रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीःश्रयतां मयि स्वाहा.. (४)

मन की इच्छा पूरी हो. वाणी सत्य को धारण करे. पशुओं, रूप व अन्न के रस की बढ़ोतरी हो. यश, शोभा व श्रेय बढ़े. हम इन सब की बढ़ोतरी के लिए आहुति अर्पित करते हैं. (४)

प्रजापतिः सम्भ्रियमाणः सम्राट् सम्भृतो वैश्वदेवः स ꣳ सन्नो घर्मः प्रवृक्त स्तेज ऽ उद्यत ऽ आश्विनः पयस्यानीयमाने पौष्णो विष्यन्दमाने मारुतः क्लथन्.
मैत्रः शरसि सन्ताय्यमाने वायव्यो ह्रियमाण ऽ आग्नेयो हूयमानो वाग्घुतः.. (५)

हे यज्ञ देवता! यज्ञ से परिपुष्ट होने वाले प्रजापति देव के लिए स्वाहा. संभ्रांत राजा के लिए स्वाहा. सभी देवों (विश्व देव) के लिए स्वाहा. सन्मार्ग पर चलने वालों के लिए स्वाहा. धर्मपरायणों के लिए स्वाहा. तेजस्वियों के लिए स्वाहा. जल से अभिषिक्त किए जाते हुए अश्विनीकुमारों के लिए स्वाहा. हितकारी पूषा देव के लिए स्वाहा. शत्रुनाशी मरुद्‌गणों के लिए स्वाहा. खेतीबाड़ी की समृद्धि करने वाले मित्र देव के लिए स्वाहा. चलायमान वायु के लिए स्वाहा. अग्नि के लिए स्वाहा. वाग्देवता के लिए स्वाहा. (५)

सविता प्रथमेहन्नग्निर्द्वितीये वायुस्तृतीय ऽ आदित्यश्चतुर्थे चन्द्रमाः पञ्चम ऽ ऋतुः षष्ठे मरुतः सप्तमे बृहस्पतिरष्टमे.
मित्रो नवमे वरुणो दशम ऽ इन्द्र ऽ एकादशे विश्वेदेवा द्वादशे.. (६)

पहले दिन सविता देव के लिए स्वाहा. दूसरे दिन अग्नि के लिए स्वाहा. तीसरे दिन वायु के लिए स्वाहा. चौथे दिन आदित्य देव के लिए स्वाहा. पांचवें दिन चंद्र देव के लिए स्वाहा. छठे दिन ऋत देव (सत्य) के लिए स्वाहा. सातवें दिन मरुद्‌गणों के लिए स्वाहा. आठवें दिन बृहस्पति देव के लिए स्वाहा. नौवें दिन मित्र देव के लिए स्वाहा. दसवें दिन वरुण देव के लिए स्वाहा. ग्यारहवें दिन इंद्र देव के लिए स्वाहा. बारहवें दिन विश्वों के लिए स्वाहा. (६)

उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च. सासह्वांश्चाभियुग्वा च विक्षिपः स्वाहा.. (७)

वायु उग्र, भीम, घनघोर शब्द करने वाले हैं, कंपकंपा देने वाले सभी को हरा देने वाले व शत्रुओं पर आक्रमण करने वाले हैं. शत्रुओं को छिन्नभिन्न कर सकने वाले हैं. उन वायु के लिए हम आहुति समर्पित करते हैं. (७)

अग्नि ꣳ हृदयेनाशनि ꣳ हृदयाग्रेण पशुपतिं कृत्स्नहृदयेन भवं यक्ना.
शर्वं मतस्नाभ्यामीशानं मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्रं देवं वनिष्ठुना वसिष्ठहनुः शिङ्गीनि कोश्याभ्याम्.. (८)

हम यजमान हृदय से अग्नि को प्रसन्न करते हैं. हृदय के आगे के भाग से प्रकाश देव को प्रसन्न करते हैं. पूरे हृदय से पशुपति देव को प्रसन्न करते हैं. हम यकृत से आकाश देव को प्रसन्न करना चाहते हैं. गुरदों से जल देव को प्रसन्न करना चाहते हैं. मन से ईशान देव को प्रसन्न करना चाहते हैं. हम अंतःकरण से महादेव, अंतड़ियों से उग्र देव व हनु से वसिष्ठ को प्रसन्न करना चाहते हैं. हृदय के कोषों से सिद्धि पाना चाहते हैं. (८)

उग्रँल्लोहितेन मित्र ꣳ सौव्रत्येन रुद्रं दौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान् प्रमुदा.
भवस्य कण्ठ्य ꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यं महादेवस्य यकृच्छर्वस्य
वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्.. (९)

लहू से उग्र देव को संतुष्ट करना चाहते हैं. श्रेष्ठ व्रतों से मित्र देव को प्रसन्न करना चाहते हैं. दुराचार दूर कर के उस संकल्प से रुद्र देव को प्रसन्न करना चाहते हैं. हम सदाचार से इंद्र देव को रिझाना चाहते हैं. बल से मरुद्‌गणों को प्रसन्न करना चाहते हैं. श्रेष्ठ कर्मों से साध्य देवों को प्रसन्न करना चाहते हैं. कंठ से भव देव को खुश रखना चाहते हैं. पार्श्व (पीछे) से रुद्र देव, उत्तम आचरण से महा देव, यकृत से शर्व देव व हम नाड़ी से पशुपति को प्रसन्न करना चाहते हैं. (९)

लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा.
मा ꣳ सेभ्यः स्वाहा मा ꣳ सेभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहा रेतसे स्वाहा. पायवे स्वाहा.. (१०)

रोम के लिए स्वाहा. त्वचा के लिए स्वाहा. लहू के लिए स्वाहा. चरबी के लिए स्वाहा. मांस के लिए स्वाहा. नाड़ियों के लिए स्वाहा. हड्डियों के लिए स्वाहा. मज्जा के लिए स्वाहा. वीर्य के लिए स्वाहा. गुदा के लिए स्वाहा. (१०)

आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा संयासाय स्वाहा वियासाय स्वाहोद्यासाय स्वाहा.
शुचे स्वाहा शोचते स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा.. (११)

आयास देव के लिए स्वाहा. प्रयास देव के लिए स्वाहा. संन्यास देव के लिए स्वाहा. वियास देव के लिए स्वाहा. उद्यास देव के लिए स्वाहा. शुच देव के लिए स्वाहा. शोच देव के लिए स्वाहा. शोचमान और शोक देव के लिए स्वाहा. (११)

तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा घर्माय स्वाहा.
निष्कृत्यै स्वाहा प्रायश्चित्यै स्वाहा भेषजाय स्वाहा.. (१२)

तप के लिए स्वाहा. तप्यमान के लिए स्वाहा. तृप्त के लिए स्वाहा. धर्म के लिए स्वाहा. निष्कृति और प्रायश्चित्त के लिए स्वाहा. भेषज के लिए स्वाहा. (१२)

यमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा.
ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्महत्यायै स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यः
स्वाहा द्यावापृथिवीभ्या ꣳ स्वाहा.. (१३)

यम देव के लिए स्वाहा. अंतक के लिए स्वाहा. मृत्यु के लिए स्वाहा. ब्राह्मण के लिए स्वाहा. ब्रह्महत्या की शांति के लिए स्वाहा. विश्वों के लिए स्वाहा. स्वर्गलोक के लिए स्वाहा. पृथ्वीलोक के लिए स्वाहा. (१३)

चालीसवां अध्याय

ईशा वास्यमिद ꣳ सर्वं यत्किं च जगत्यां जगत्.
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम्.. (१)

इस जड़चेतन जगत् में जो कुछ भी है, वह ईश्वर की कृपा से है. उस ईश्वर के द्वारा त्यागे गए का भोग कीजिए. बहुत ज्यादा लालच मत करो. यह धनादि सब किस का है ? (अर्थात् ईश्वर के अलावा किसी का नहीं). (१)

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छत ꣳ समाः.
एवं त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म लिप्यते नरे.. (२)

हे ईश्वर! हम कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करें. इस के अलावा कल्याण का कोई अन्य मार्ग नहीं है. कर्म मनुष्य को लिप्त नहीं करते. (२)

असुर्या नाम ते लोका ऽ अन्धेन तमसावृताः.
ताँस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः.. (३)

जो गहन अंधकार से घिरे रहते हैं, वे लोग असुर्य कहलाते हैं. जो आत्मा का हनन करने वाले हैं, वे लोग प्रेत रूप में वैसे ही लोकों को प्राप्त होते हैं. (३)

अनेजदेकं मनसो जवीयो नैनद्देवा ऽ आप्नुवन् पूर्वमर्शत्.
तद्धावतोन्यानत्येति तिष्ठत्तस्मिन्नपो मातरिश्वा दधाति.. (४)

अजन्मा ईश्वर एक है. वह मन से भी ज्यादा गतिवान और फुरतीला है. देवगण भी इसे प्राप्त नहीं कर पाते हैं. स्थिर रह कर भी वह दौड़ता हुआ गतिशीलों को पछाड़ देता है. वह जल में रहता है. वायु को धारण करता है. (४)

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके. तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः.. (५)

वह (परम तत्त्व) गतिशील है और स्थिर भी है. वह दूर भी है और निकट भी है वह जड़ और चेतन दोनों के भीतर भी है और बाहर भी है. (५)

यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्नेवानुपश्यति.
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न वि चिकित्सति.. (६)

जो सभी प्राणियों (जड़चेतन) में अपने को (आत्मतत्त्व को) देखता है तथा उस का अनुभव करता है, उसे कभी भी कोई भ्रम नहीं होता. (६)

यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः.
तत्र को मोहः कः शोक ऽ एकत्वमनुपश्यतः.. (७)

जिस (स्थिति) में मनुष्य यह जान लेता है कि सभी भूतों में एक ही आत्मतत्त्व है, तब क्या मोह ? क्या शोक ? उसे सर्वत्र एक जैसी स्थिति दिखाई देती है. (७)

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविर ँ शुद्धमपापविद्धम्.
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः.. (८)

वह परमपिता सर्वव्यापक, चमकीला, (दीप्तिमान), काया रहित, नाड़ियों से रहित है. वह घावों से रहित, पवित्र, पाप रहित, विद्वान्, मननशील, सर्वव्यापक व स्वयंभू (स्वयं उत्पन्न होने वाला) है. उस ने सृष्टि के आरंभ से ही सब के लिए यथायोग्य साधन सुविधाओं की व्यवस्था की है. (८)

अन्धं तमः प्र विशन्ति ये संभूतिमुपासते.
ततो भूय ऽ इव ते तमो य ऽ उ सम्भूत्या ँ रताः.. (९)

जो व्यक्ति विनाश की उपासना करते हैं, वे घोर अंधकार में प्रवेश करते हैं. जो संभूति (सृजन) के उपासक हैं, वे भी वैसे ही अंधकार में प्रवेश करते हैं. (९)

अन्य देवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्.
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे.. (१०)

अन्य देवों ने संभव से असंभव के बारे में विशेष रूप से कहा है. हम ने उन धीर पुरुषों से जाना है कि संभव से असंभव का प्रभाव उस से अलग है. (१०)

सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभय ँ सह.
विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्यामृतमश्नुते.. (११)

सृजन और विनाश इन दोनों को साथसाथ ही समझिए. विनाश से मृत्यु को तैरकर और सृजन से अमृत की प्राप्ति की जाती है. (११)

अन्धं तमः प्र विशन्ति येविद्यामुपासते.
ततो भूय ऽ इव ते तमो य ऽ उ विद्याया ँ रताः.. (१२)

जो अज्ञान की उपासना करते हैं, वे गहरे अंधकार में प्रवेश करते हैं. जो ज्ञान की उपासना करते हैं, वे भी फिर वैसे ही गहरे अंधकार में प्रवेश करते हैं. (१२)

अन्य देवाहुर्विद्याया ऽ अन्यदाहुरविद्यायाः.
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे.. (१३)

हम ने धीर पुरुषों से विशेष रूप से जाना है कि विद्या का प्रभाव कुछ और होता है. अविद्या का प्रभाव कुछ और होता है. (१३)

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभय छं सह.
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते.. (१४)

विद्या और अविद्या दोनों को ही साथसाथ समझिए. अविद्या से मृत्यु को पार किया जाता है. विद्या से अमृत तत्त्व को पाया जाता है. (१४)

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्त छं शरीरम्.
ओ३म् क्रतो स्मर. क्लिबे स्मर.
कृत छं स्मर.. (१५)

यह शरीर वायु, अमृत आदि से बना हुआ है. शरीर नाशवान है. हे यजमान! आप ओम् तथा अपनी क्षमता और किए गए कर्मों का स्मरण करो. (१५)

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्.
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम ऽ उक्तिं विधेम.. (१६)

हे अग्नि! आप हमें श्रेष्ठ मार्ग पर ले जाइए. आप हमें ऐसे ही मार्ग से धन दिलाइए. हे विश्व! आप विद्वान् हैं. हम बारबार आप को नमन करते हैं. हम बारबार आप से अनुरोध करते हैं. आप हमें पापों से बचाने की कृपा करें. (१६)

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्.
योसावादित्ये पुरुषः सोसावहम्.
ऊँ खं ब्रह्म.. (१७)

सत्य का मुंह स्वर्णमय पात्र से ढका हुआ है. वह जो आदित्य पुरुष है, वह मैं हूं. आकाश में ओम् रूप में ब्रह्म ही व्याप्त है. (१७)

(यजुर्वेद संपूर्ण)

विश्व बुक्स द्वारा प्रकाशित अन्य वेद

भारतीय साहित्य एवं संस्कृति में वेदों की मान्यता चिरकाल से चली आ रही है. ऋग्वेद जहां विश्व की सब से प्राचीन पुस्तक है, वहीं यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद को इस का पूरक माना जाता है.

ऋग्वेद आर्यों एवं भारतीयों की ही नहीं, विश्व की सब से प्राचीन पुस्तक है. इस का अनुवाद सायण भाष्य पर आधारित है.

सामवेद को वेदत्रयी (ऋक्, यजु और सामवेद) में गिना जाता है. गीता में उपदेशक कृष्ण ने 'वेदानां सामवेदोऽस्मि**' कह कर सामवेद की विशिष्टता की ओर संकेत किया है.**

अथर्ववेद में लौकिक जीवन से संबंधित औषधियों, जादू, टोनोंटोटकों आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है.

अतः सभी वर्गों के पाठकों के लिए मंत्रों सहित चारों वेदों का सायण भाष्य पर आधारित सरल, सरस एवं सुबोध हिंदी अनुवाद पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है.

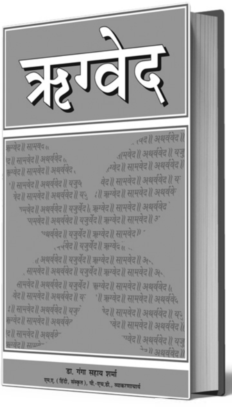

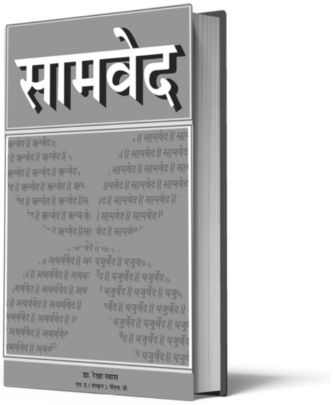

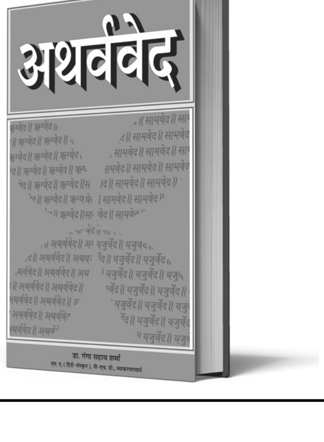

www.vishvbook.com